26/8/73

Ramayana Sateek

by

TULSIDASS

N. K. P. Lucknow

1981

at- 26206

02- 01- 13

तुलसीकृत

रामायण सटीक

अरण्य, किष्किन्धा, सुन्दर, लंका, उत्तर, काण्ड

जिसको

मैनपुरी निवासि श्री सुखदेवलालजी ने संवत १९३५

विक्रम में जगत कल्याण के अर्थ भाषा

टीका रचकर प्रमाणिक श्लोकों से

भूषित किया

इस टीका में सर्वोत्तम गुण यह हैं कि श्रीगोस्वामी तुलसीदासजी महाराज की श्री रामायण के अर्थको अति स्पष्ट रीति से सलिल देश भाषा में वर्णना है न्यूनाधिक नहीं किया पर पदार्थ की शुद्धि माधुर्य्यता अति सगौ य भक्ति भाव को सुलक्षित किया है

वही

परम प्रेमी सीता राम पद पंकज पराग लुब्धक श्री पण्डित द्वारकाप्रसादजी व लाला रघुबरदयालजी की अनुमति से श्री पंडित प्यारेलालजी के उत्तम प्रबंध से शुद्ध होकर पहली बार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के छापेखाने में छपा ॥
अप्रैल सन् १८८१ ई०

विज्ञाप्ति

इस महीने अर्थात् अप्रैल सन् १८८१ ई० पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तय्यार हैं वह इस फ़ेहरिस्त में लिखी हैं और उन का मोल भी बहुत किफ़ायत से घटाकर लिखा है परन्तु व्योपारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिन को व्यापार की इच्छा हो वह छापे खाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम खत भेज कर क़ीमत का निर्णय करलें ॥

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
भाषा (इतिहास)	महाभारत पर्व्व अ-	रामायण तुलसीकृत	नाटक
महा भारत	लेहदा भी हैं	रामायण सटीक मय	प्रबोध चन्द्रोदय
१ पहिले हिस्सा में	१ आदि पर्व्व	मानस दीपिका कोष	रामा भिषेक
आदि पर्व्व सभा पर्व्व	२ सभा पर्व्व	आदि	आनंद रघु नंदन
बन पर्व्व	३ बन पर्व्व	तथा जिल्द बंधी	वेदान्त
२ दूसरे हिस्सा में	४ विराट पर्व्व	तथा मोटे अक्षरों की	योग बाशिष्ठ
विराट पर्व्व उद्योग	५ उद्योग पर्व्व	मय तसवीर व क्षेपक	आनन्दामृत वर्षिणी
पर्व्व भीष्म पर्व्व	६ भीष्म पर्व्व	रामायण तुलसीकृत	सांख्य तत्व कौमुदी
द्रोण पर्व्व	७ द्रोण पर्व्व	सातों काण्ड	काव्य
३ तीसरे हिस्सा में	८ कर्ण पर्व्व	१ बाल काण्ड	सूर सागर
कर्ण पर्व्व शल्य प-	९ शल्य पर्व्व व गदा	२ अयोध्या काण्ड	कृष्ण सागर
र्व्व गदा पर्व्व सौप्ति-	पर्व्व सौप्तिक पर्व्व	३ आरण्य काण्ड	विश्राम सागर
क पर्व्व योशिक प-	मय योशिक व वि-	४ किष्किन्धा काण्ड	प्रेम सागर
र्व्व विशोक पर्व्व	शोक व स्त्री पर्व्व	५ सुन्दर काण्ड	ब्रज बिलास बड़ा व छोटा
स्त्री पर्व्व शान्ति प-	१० शान्ति पर्व्व राज	६ लङ्का काण्ड	कृष्ण प्रिया
र्व्व में राज धर्म्म आ-	धर्म्म व आपद धर्म्म	७ उत्तर काण्ड	विजय मुक्तावली
पद धर्म्म मोक्ष धर्म्म	व मोक्ष धर्म्म व दान ध	रामायण शब्दार्थ को-	अनेकार्थ
४ चौथे हिस्सा में	र्म्म-	रामायण का इतिहास	छन्दो र्णव पिंगल
शान्ति पर्व्व दान ध-	११ अश्वमेध आश्र-	रामायण मानसदीपिका	कविकुल कल्पतरु
र्म्म अश्वमेध आश्रम	म वासिक मुशल प-	रामायण कवितावली	रस राज
वासिक पर्व्व व मौस	र्व्व महा प्रस्थान स्व-	रामायण गीतावली	सत्सई मूल तथा स-
ल पर्व्व व महा प्र-	र्गा रोहन	सटीक	भा विलास
स्थान स्वर्गा रोहन	१२ हरि वंश पर्व्व	विनय पत्रिका बा·मो·	तुलसी शब्दार्थ
पर्व्व हरि वंश पर्व्व	रामायण राम बिलास	विनय पत्रिका बा·शि·	भजनावली

श्रीगणेशायनमः ॥

अथतुलसीदासकृतरामायणआरण्यकांडसटीकलिख्यते ॥
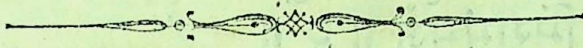
श्लोक अग्रेराममकारमीशमनघंविष्णुं वरेण्यंविभुं ।
मध्येश्रीजनकाधिराजतनयांमायामुकारात्मकां ॥
पश्चाच्चैवमकाररूपमनुजंमार्गेषुसंचारिणं ।
वंदेऽहंप्रणवस्वरूपत्रितयंतत्वत्रयंशाश्वतं ॥

दो० जासु चरित अभिमुख सुखद बिमुख बिमोहन शील ।
द्रवहु उपल जलयान जिहि सचिव सखा कपिभील ॥

अयोध्याकांड पर्य्यन्त तो गुसाईं तुलसीदास जीने जो कथन किया सो बड़े बिस्तार समेत कहा है इस कारण सो ब्यास कथन कहाता है अब इस आरण्य कांड से शेष समस्त रामचरित्र जो कहा है सो सब संक्षेप से कहा है इस कारण यह समास कथन कहाता है जैसा उत्तरकांड मेंकहा है ॥ कहेउं नाथ हरि चरित अनूपा व्यास समास स्वमति अनुरूपा ॥ प्रारंभ इस कांडका जयन्त काककी कथासे हैं अंत में शबरी का मोक्ष है जैसा कहा है ॥ प्रथमकाकसुरपतिसुतकरणी । प्रभु अरुअत्रिभेटपुनिवरणी ॥दो० कहि बराधबधजेहिबिधिदेहतजीशरभङ्ग । वरणि सुतीक्षणप्रीतिपुनिप्रभुअगत्यसतसंग ॥ चौपाई ॥ पुनिप्रभुपंचबटीकरिबासा । भंजी सकल मुनिनकीत्राशा ॥ पुनिलक्षमणउपदेशअनूपा । सूर्पनखा जिमिकीन्हकुरूपा ॥ खरदूषण बधबहुरिबखाना ॥ जिमिसब मर्मदशानन जाना । दशकन्धरमारीचबतकही ॥ जिहि बिधिभईसोपिसबकही । पुनिमायासीताकरहरणा ॥ श्रीरघुबीरबिरहकछुबरणा । पुनि प्रभुगृद्ध क्रियाजिमिकीन्ही ॥ बधिकबंधशबरिहिंगति दीन्ही ॥ इत्यंते ॥ संख्या इस कांड में चौपाइयों की दो पचीसी अथवा पचास चौपाई की है पचीसरचौपाई पीछे दोछन्द हैं समय छन्द अत्रिमुनि की बिनती खरदूषणकेयुद्ध मारीच के प्रेमकेकहेहैं दोहा सोरठाओं का क्रम नहीं है कहीं दो कहीं तीनि कहीं दो तीनि चौपाईं पीछे कहे हैं ॥ श्री रामायनमोनमः ।

मूलंधर्मतरोर्विवेकजलधेः पूर्णेंदुमानन्ददं वैराग्यांबुजभास्करं त्वघहरंध्वांतापहंतापहंमोहांभोधरपुंजपाटनविधौ खेसंभवंशंकरं बंदेब्रह्मकुलंकलंकशमनं श्रीरामभूपप्रियं ॥ १ ॥ सांद्रानंदपयोद सौभगतनुंपीतांबरंसुन्दरं पाणौबाणशरासनंकटिलसत्तूणीरभारां वरं राजीवायतलोचनंधृतजटाजूटेनसंशोभितं सीतालक्ष्मणसंयुतंपथिगतंरामाभिरामंभजे ॥ २ ॥

सो० उमा राम गुण गूढ़ । पंडित मुनि पावहिं बिरति ॥
पावहिं मोह बिमूढ़ । जे हरिभक्त न धर्म रत ॥

आरण्यकांड के प्रारंभ में श्री गुसांई तुलसीदास जी राम चरित्र मानसर के आचार्यवर्य्य श्री शिवजी को प्रणाम करते हैं जो शिवजी चारों बेदों के समान समस्त धर्मरूपी वृक्ष के तो मूल हैं जैसा मनु ने कहा है ॥ बेदोऽखिलोधर्ममूलं ॥ विवेक रूपी समुद्र के उमंगबर्द्धन परिपूर्ण राकेश चन्द्रमा हैं बैरागरूपी कमल बन के प्रकाशक शरद के भास्करही हैं पुनः समस्त पापों के हर्ता हैं जड़ता अंधकार और दैहिक दैविक भौतिक तीनों तापों के हन्ता हैं मोह कहैं अज्ञान रूपी मेघों के समूहों के उत्पाटन बिधिमें खे संभव कहैं प्रचंड पवनही हैं और समस्त जीवों के कल्याण परायण हैं ऐसे ब्रह्मकुल के कलंक शमन और श्रीरामभूप के अत्यन्त प्यारे श्री शिवजी को मैं अभिबंदन करताहूं १ अब अपने इष्टदेव श्री रामचंद्र को प्रणाम करता हूं जिन श्रीरामका सजल सघन मेघके समान तो सुन्दर श्याम शरीर है और सौदामिनी के बर्णका सुन्दर पीतांबर धारण किये हैं दोनों हाथों में धनुर्बाण लिये हैं कटिदेश में तूणीर कसे हैं कमलपत्र के समान बिशाल नेत्र हैं जटाजूट मस्तक पर धारण किये सोहते हैं इस प्रकार सीता लक्ष्मण समेत मार्ग में चले जाते हुये लोकाभिराम श्रीराम को मेरा अभिबंदन है २ शिवजी कहते हैं सुनो हे पार्बती श्रीरामचंद्र के गुण अत्यन्त गूढ़ार्थ हैं जिनको देखि और सुनिकर बिद्वान मुनि जन तो ज्ञान बैराग भक्ति पातेहैं और मूढ़ कहैं आसुरी प्रकृति केलोगतो मोहही पातेहैं जो भगवद्भक्त नहींहैं और धर्म सन्मार्ग में निरत नहीं है सीता स्वयम्बर और राम का बन गमन भरत का प्रेम जो ग्रंथ के प्रारंभ से पहलेही रचे गये हैं उनमें कहीं भी शिव पार्वती और कागभुसुण्डि गरुड़ और याज्ञबल्क्य भरद्वाज के संबाद नहीं रहैं इस कारण उनको प्रकट करने के निमित्त इसकांड में पहलेही सोरठे से शिव पार्वती का संबाद जताया है फिरि किसी कांड के प्रारंभ में ऐसा नहीं कहा है ॥

पुरब भरत प्रीति मैं गाई । मति अनुरूप अनूप सुहाई १

अबप्रभुचरितसुनहुअतिपावन। करतबिपिनसुरनरमुनिभावन २
एक बार चुनि कुसुम सुहाये। निजकर भूषण राम बनाये ३
सीतहिं पहिराये प्रभु सादर। बैठे फटिकशिला पर सुन्दर ४
सुरपति सुत धरि बायस बेषा। शठचाहत रघुपति बलदेषा ५
जिमि पिपीलिका सागर थाहा। महामंद मति पावन चाहा ६
सीता चरण चोंच हति भागा। मूढ़ मंद मति कारण कागा ७
चला रुधिर रघुनायक जाना। सींक धनुष शायक संधाना ८
दो० अतिकृपाल रघुबंश मणि सदा दीनपर नेह।
तासन आइकीन्ह छल मूरख अवगुण गेह ॥ १ ॥

पूर्व अयोध्याकांड में तो हे पार्बती वा हे गरुड़ अथवा हे भरद्वाज तथा हे सब श्रोता हमसबने अपनी अपनी बुद्धिके अनुसार महाभागवत शिरोमणि श्री बिश्वंभर भरत की अतिअनूप सुन्दर सुहाई प्रीति तुमसे कही इसकांड की पहलीही चौपाई में भरत की प्रीतिका अनुकथन अयोध्याकांड में चारो संबादों का संबंध होजाने के निमित्त कहागया है जैसा सीता स्वयम्बरमें इन चारो संवादों का संबंध होजाने के लिये बिश्वामित्र के आगमन में यह चौपाई कहीहै चौ० ॥यहसब चरित कहामैं गाई॥ आगिल कथासुनहु मनलाई॥ जैसे इसचौपाईमें आगिलपद है तैसेही यहां पूर्वपद दियाहै १ सो पूर्वतो भरत की प्रीतिही कही अब इसकांड में प्रभु रामचन्द्र के जो सुहाये अति पावन चरित्र सुनो जो चरित्र सुर मुनि सुखदायक बनमें बास करिके करते हुये २ कि एक समय सुन्दर सुहाये पुष्प चुनिकर अपनी नरनाट्यलीलामें अपनेही हाथों से अति विचित्र भूषण बनाकर बड़े आदरसे अपनी परमबल्लभा श्री सीताजी को पहिराये और उनसमेत एकांत में सुन्दर फटिककी शिलापर बिराजते हुये कोई कहते हैं कि जानकी की जंघा परशीश रखकर सोगये ३।४ ऐसा नरनाट्य चरित्र सर्बेश्वर स्वामीका देखिकर देवराजइंद्र का पुत्र जयंत अपने को सुरपति और रामको रघुपति ही जानिकर काक का बेष धारण करिके महामूढ़ श्री रामचंद्र के बलको देखा चाहता है ५ जैसे चींटी समुद्र थाहै और महापापिष्ठ पावन गतिचाहै ६ सो सीताजी के चरणमें चोंच मारिकर भागा बड़ा मूढ़ मंदमति कपट कागहै ७ जब रुधिरचला रामचन्द्रने जाना तब तो उसको तृणभूत जानि कर तृणही के धनुषमें तृणहीका बाण संधान किया ॥ ८ ॥ दोहा ॥ देखो परम कृपालु श्री रघुबंश शिरोमणि राम जिनका सदैव दीनोंपर प्रेम है तिन स्वामी से आकर छलकिया ऐसा अवगुणों का धाम है ॥ १

प्रेरित मंत्र ब्रह्म शरधावा। चला भाजि बायस भयपावा १

धरिनिजरूपगयउ पितुपाहीं । राम बिमुख राखा तिन नाहीं २
भा निराश उपजी मन त्रासा । यथा चक्र भय ऋषि दुर्बासा ३
ब्रह्म धाम शिवपुर सबलोका । फिराभ्रमितब्यकुलचितशोका ४
काहू बैठन कहा न ओही । राखि को सकै राम कर द्रोही ५
मातु मृत्यु पितुशमन समाना । सुधाहोइ बिष सुनु हरियाना ६
मित्र करहिं शतरिपुकी करणी । ता कहं बिबुधनदी बैतरणी ७
सबजग ताहिं अनल तेताता । जोरघुबीर बिमुख सुनु भ्राता ८
दो० जिमि भाजत शक्रसुत ब्याकुल आरत दीन ।
तिमि तिमि धावत रामशर पाछे परम प्रबीन ॥ २ ॥

मंत्र प्रेरित ब्रह्मशर कहें रामका बाण जो उसके पीछे परा सोतो देखतेही जयंत भयभीतहोकरभागा ॥ १ ॥ अपनाही रूपधरिकर अपने पिता इंद्रके शरणगया रामबिरोधी जानि कर इन्द्रने अपने लोकसे निकारि दिया २ तबतो अतिही निराश हुआ और मनमें बड़ी त्रास उत्पन्न हुई जैसी अंबरीषके अपचार क्रियेसे विष्णु चक्र सुदर्शन के भयसे दुर्बासा ऋषिकी दुर्दशा हुई ३ फिरि महा भयसे ब्याकुल जैसे कोई बूड़ता हुआ सिवार को पकरता है तैसेही ब्रह्मलोक में ब्रह्मा की शरण गया और शिवपुर कहें कैलाश पर रुद्रकी शरणगया और सबदिग्पालोंके लोकोंमेंभी शोक बिकल भ्रमता फिरा ४ परंतु किसी ने उसको बैठने तक को भी न कहा राम बिरोधी की रक्षा कौन करसकताहै ५ जैसा श्रीमद्रामायणमें कहाहै ब्रह्मास्वयंभूचतुराननोवा रुद्रस्त्रिनेत्रस्त्रिपुरांतकोवा।इंद्रोमहेन्द्रःसुरनायकोवा त्रातुंनशक्यायुधिरामवध्यं ॥ मातातो उस की मृत्यु बनि जाती है पिता कालही होजाता है और अमृत उसको हे हरियान गरुड़ बिष होजाता है ६ मित्र उसके साथ बैरियों की करणी करते हैं सुर सरित श्रीगंगा भी उसको यमपुर की नदी वैतर्णी के समान होजाती है ७ हिमागार कहें हिमालय पर्वत उसको अग्नि से भी संतप्त होजाता है जो दुर्बुद्धि श्रीराम से हे गरुड़ बिमुख होता है ॥ ८ ॥ दोहा अब जैसा जैसाही इंद्र का पुत्र जयन्त अति ब्याकुल अतिआरत अति दीन भागता जाता है तैसा तैसाही परम प्रबीण रामबाण उसके पीछे पीछे लगाही चला जाताहैं ॥ २ ॥

नारद देखा बिकल जयन्ता । लागि दया कोमल चित सन्ता १
दूरिहिं ते प्रभुसुयश सुनावा । भजे जात बहु बिधि समुझावा २
पठवा तुरत राम पहं ताही । कहेसि पुकारि प्रणतहित पाही ३

सुनिमुनि बचन नाइपदमाथा । आवा जहं कृपाल रघुनाथा ४
आतुर सभय गहेसि पद जाई । त्राहि त्राहि दयाल रघुराई ५
अतुलित बल अतुलित प्रभुताई । मैं मतिमन्द जानिनहिपाई ६
निजकृतकर्मजनितफलपायउं। अबप्रभुपाहिशरणतकिआयउं ७
सुनि कृपाल अतिआरत बानी । एक नयनकरि तजा भवानी ८
सो० कीन्ह मोहबश द्रोह यद्यपि तिहिं कर बधउचित ।
प्रभु छांडेउ करि छोह कोकृपाल रघुबीर सम ॥ ३ ॥

नारदने जो उस जयन्तको भयसे व्याकुल देखासो देखतेही अत्यन्त दयार्द्र चित्त होगये क्योंकि संतजन अत्यन्त कोमल चित्त होतेहीहैं और पराये दुखहीसे दुखित होतें हैं अपने दुखसुख को तो समानहीं मानतेहैं जैसे गुसांई जी सर्वत्र लिखते हैं ॥ राम भक्तपरहितनिरत॥परदुखदुखीदयाल॥चौ०॥जेहर्षहिंपरसंपतिदेखी॥दुखितहोंहिपरदुखहिं बिशेषी ॥ परदुखद्रवहिंसंतसुपुनीता ॥ और अपने वसतैउसके निवारण का उपायही करतेहैं १ सो दूरिहीसे उसको रामचंद्र का सुयश सुनाया और भागते हीमें अनेक भांति से समुझाया कि ब्रह्मा,शिव,इंद्रादिको में रामके बिरोधी का रक्षक कोई भी तो नहींहै २ ताते तू रामही के पास जा और पुकारि कर यह कहना कि हे शरणागत बत्सल स्वामी मैं आपका अपराधी आपही की शरण आयाहूं मेरी रक्षा कीजिये जब तू ऐसा कहेगा तभी तेरे प्राण बचेंगे क्योंकि रामचंद्र की यह प्रतिज्ञाहै ॥ सकृदेवप्रपन्ना-यतवास्मीतिचयाचते अभयंसर्वभूतेभ्यो ददाम्येतद्व्रतम्मम ॥ ऐसा उपदेश देकर उसको रामही के पास भेजा ३ जयन्त ने नारदके परमहित बचन सुनि कर उनको शीश नवाया और शीघ्रही रामके पास आया ४ अतिही आरत भयभीत आकर रामचंद्रके आगे दण्डवत् गिरकर दोनों चरण पकर लिये और कहा कि हे दयालस्वामी । माम पराधिनम्पाहि ५ अतुल आपका बल और अनन्त प्रभुताकि ॥ ब्रह्माशिवश्शतमखःपरम स्सुराडितितेचापियस्यमहिमार्णवबिप्रशस्ते अर्थात् त्रैलोक्यनाथ ब्रह्मा शिव और शतमख इन्द्रपरम सुराड्क है देवाधिदेव भी आपकी महिमाके पारपानेको महासागरके कणके समान है सोमुझ मतिमंदने न जानि पाई रहै ६ ताते अपनेकिये कर्मका परिपाक फलतोमैं पाचुका अबतो हेस्वामीमेरी रक्षाकरो मैं रक्षणीय हूं क्योंकि आपको अशरण शरण सर्बलोक शरण्य जानिकर आपकी शरण आयाहूं ७ तबतो कृपाल स्वामी ने उसकी अति आरत बाणी सुनकर अपनी दोनो प्रतिज्ञाओं को निबाहते हुये उसको एक नेत्रहीनही करके छोड़ दिया दूसरीप्रतिज्ञा बाराह पुराणे॥ मद्भक्तं स्वपचम्वापि-निन्दांकुर्वन्तियेनराः पद्मकोटिशतेनापि नक्षमामिबसुन्धरे ॥ ८ ॥ सोरठा ॥ अपनी ढीठतासे रामप्रिया श्रीजानकी जीका अपराध किया रहै उचिततो उसका मारनाही रहै तौ भी स्वामीने क्षमाकरके छोड़ि दिया ॥ ३ ॥

रघुपति चित्रकूट बसिनाना । चरित कियेश्रुति सुधा समाना १
बहुरिराम असमन अनुमाना । होइहिभीर सबहि मोहिंजाना २
सकल मुनिन सन बिदा कराई । सीतासहित चले दोउ भाई ३
अत्रि आश्रमहिंप्रभुजबगयऊ । सुनतमहामुनि हर्षितभयऊ ४
पुलकित गात अत्रि उठिधाये । देखि राम आतुर चलि आये ५
करत दंडवत मुनि उर लाये । प्रेम बारि दोउ जन अन्हवाये ६
देखि राम छबि नयन जुड़ाने । सादर निज आश्रम तब आने ७
करि पूजा कहि बचन सोहाये । दिये मूल फल प्रभु मन भाये८
सो० प्रभु आसनआसीन भरि लोचन शोभा निरखि ।
मुनिबर परम प्रवीण जोरिपाणि अस्तुति करत ॥ ४ ॥

इस प्रकार थोरे दिन चित्रकूट में वास करके श्रीरामचद्रने परम मनोहर चरित्र श्रवणानन्ददायक किये १ फिरतो स्वामी ने ऐसा अनुमान किया कि यहांतो निकटताके कारण अयोध्या और जनकपुरबासियों की भीर बनी रहा करैगी क्योंकि ते सब लोग मुझको देखिगयेहैं २ तबतो सब मुनीश्वरों से आज्ञा लेकर सीता समेत दोनो भाई चल दिये ३ सबसे पीछे जब महर्षि ब्रह्मपुत्र अत्रिमुनि के आश्रम को गये तबतो रामचन्द्रका आगमन सुनतेही महा मुनीश्वर हर्षित होगये ४ पुलकित गात शीघ्रही उठि दौरे रामचंद्रने उनको आते देखकर लक्ष्मण समेत दंडवत् प्रणाम किया ५ प्रणाम करते देखकर हृदय से लगालिया और प्रेम के अश्रु त जल सेदोनों भाइयोंको न्हवा दिया ६ रामचन्द्र की दृष्टिचित्तापहारक मनोहर छबि को देखतेही मुनिके नेत्र शीतल होगये आदर समेत अपने आश्रम को ले आये ७ सुन्दर सुहाये मधुर वचन कहि और बिधिवत पूजन करिके प्रभुके भावते परम पावन शुसात्विक मूलफल निवेदन किये ८ ॥ सोरठा ॥ जब परमप्रसन्न रामचंद्र आसन पर बिराजे तबतो नेत्रों भरि कर दिव्य मंगल विग्रह की शोभा को देखकर परम प्रवीण मुनि बर्य्य दोनों हाथों से अंजुलि जोरि कर बिनती करने लगे ॥ ४ ॥

छं०। नमामि भक्त बत्सलं कृपालु शील कोमलं ।
भजामि ते पदांबुजं अकामिनां स्वधामदं ॥ १ ॥
निकाम श्याम सुन्दरं भवांबुनाथ मन्दरं ।
प्रफुल्ल कंज लोचनं मदादि दोष मोचनं ॥ २ ॥
प्रलंब बाहु बिक्रमं प्रभो ऽप्रमेय बैभवं ।

निषंग चाप शायकं धरं त्रिलोक नायकं ॥ ३ ॥
दिनेश वंश मंडनं महेश चाप खंडनं ।
मुनींद्र संत रंजनं सुरारि वृन्द भंजनं ॥ ४ ॥
मनोज बैरि बन्दितं अजादि देव सेवितं ।
बिशुद्ध बोध बिग्रहं समस्त दूषण पहं ॥ ५ ॥
भजेश शक्ति सानुजं सचीपति प्रियानुजं ।
नमामि इंदिरापतिं सुखा करं सतां गतिं ॥ ६ ॥
त्वदंघ्रि मूल ये नरा भजंतिहीन मत्सराः ।
पतंति नो भवार्णवे बितर्क बीचि संकुले ॥ ७ ॥
बिविक्त वासना सदा भजंति मुक्तिदं मुदा ।
निरस्य इन्द्रियादिकं प्रयांतिते गतिं स्वकं ॥ ८ ॥
त्वमेक मद्भुतं प्रभुं निरीह मीश्वरं बिभुं ।
जगत् गुरुंच शाश्वतं तुरीयमेक केवलं ॥ ९ ॥
भजामि भाव बल्लभं कुयोगिनां सुदुर्लभं ।
स्वभक्त कल्प पादपं समस्त सेव्यमस्तकं ॥ १० ॥
अनूप रूप भूपतिं नतोह मुर्बिजा पतिं ।
प्रसीद मे नमामिते पदाब्ज भक्ति देहिमे ॥ ११ ॥
पठन्ति येस्तवं त्विदं नरादरेण ते पदं ।
ब्रजन्तिनात्र संशयं त्वदीय भक्ति संयुतं ॥ १२ ॥

दो० बिनती करि मुनि नाइ शिर कह कर जोरि बहोरि ।
चरण सरोरुह नाथ जनि कबहुं तजै मति मोरि ॥

बात्सल्य गुण आप का केवल अपने अनन्य भक्तोंही पर है यातें जो आप भक्त वत्सल और कृपालु शील कोमल हो तिन तुम्हारे चरण कमलों कोही मैं सदा सेवन करता हूं जो आप अकाम भक्तों को अपना धाम बैकुंठ देतेहो १ अत्यन्त श्याम सुन्दर हो संसार समुद्र को मंदर हो कमल लोचन हो मदादिक दोषों के नाशक हो २ आप की बिशाल भुजाओं का अप्रमाण बैभव है निषंग शरालय चाप धनुष शायक बाण धारण कियेही त्रैलोक्यनायक जगन्नाथ हो ३ दिनेशवंश के

शोभन हो महेश चाप पिनाकक खंडक हो महा मुनींद्र संतजनों के मनो रंजक हो दैत्यादिकों के भंजकहो ४ कामजित् गौरीश बंदितहो ब्रह्मादि समस्तदेव सेवितहो बिशुद्ध बिज्ञान घन सच्चिदानन्द दिब्य मंगल बिग्रह हो समस्त दोषापहारी हो ५ हे सचीपति इन्द्र के अनुज त्रिबिक्रम बामन स्वामी आप को हम सीता लक्ष्मण समेत सेवन करते हैं लक्ष्मी के पति सुख की खानि सत् पुरुषों की गति आपको हम नमते हैं ६ आप के चरणों को जो निर्मत्सर भजते हैं सो कुतर्क बीची संकुल संसार समुद्र में नहीं गिरते हैं ७ समस्त बासना रहित होकर जो आपही को मुक्ति दायक जानि कर भजतेहैं सो इन्द्रियों को निरशन करि अपनी गति को पाते हैं ८ तुम एकही अद्वितीय प्रभु हो निरीह हो इश्वर होसमर्थ हो जगद्गुरुहो सनातन हो तुराय हो एक हो केवल हो ९ भाव बल्लभ हो कुयोगियों को अतिदुर्लभ हो अपने भक्तों को कल्पवृक्ष हो समस्त सेव्य कहें सब देवों के मस्तक हो १० अनूप रूप हो राज राजेन्द्र हो ऐसे सीतापतिको हम नमतेहैं आप मेरे ऊपरप्रसन्न हूजिये और अपने चरणकमलों की भक्ति बरदान दीजिये ११ जो मेरे इस स्तवराज को आदर समेत पाठ करै सो भी आपकी भक्तिसंयुक्त आप का पद निस्संदेह पावें १२ दोहा ॥ इस प्रकार अत्रि मुनि राम की स्तुति करि शीश नवाइ फिरि भी बोले कि हे नाथ आप के चरण कमलों को मेरा मन कभी त्याग न करै ४ ॥

अनुसुय्या के पद गहि सीता । मिली बहोरि सुशील बिनीता १
ऋषि पत्नी मन सुख अधिकाई । आशिष देय निकट बैठाई २
दिब्य बसन भूषण पहिराये । जे नित नूतन अमल सुहाये ३
कहऋषि बधू सरल मृदुवानी । नारि धर्म कछु ब्याज बखानी ४
मातु पिता भ्राता हित कारी । मितसुखप्रद सुनु राजकुमारी ५
अमित दानि भर्ता बैदेही । अधम नारि जो सेव न तेही ६
धीरज धर्म मित्र अरु नारी । आपद काल परखियहि चारी ७
एक धर्म एक ब्रत एकनेमा । काय बचन मन पतिपद प्रेमा ८
सो० सहज अपावन नारि पति सेवत शुभगति लहहिं ।
यश गावहिं श्रुतिचारिअजहुं तुलसिका हरिहिं प्रिय ॥ ५

फिरितो ऋषि की बधू अनुसुय्या के चरण छूकर सीता अतिही नम्र होकर मिली १ ऋषि की पत्नी को अतिही आनन्द हुआ अशीर्वाद देकर अपने पास बैठारि लिया २ दिब्य कहें ब्रह्मलोक के बस्त्राभूषण सीता को पहिराये जो नित्य नवीन और निर्मल सुहायेही बने रहते हैं ३ तिस पीछे ऋषिबधू ने स्त्रियों के

धर्म के आखे से कुछ सीता से बचन कहे ४ सुनु हे सीता स्त्रियों को माता पिता भ्राता इत्यादि तो मित सुख कहैं अल्पकत पयसुखों केही दाता होते हैं अमित सुखों का दाता स्त्रियों को तो पतिही होता है अतिही अधम नारि उसको जानों जो ऐसे सर्बस्वदाता पति का सेवन न करे ६ धीर्य्य और धर्म मित्र और स्त्री ये चारों बिपत्तिकाल ही में परखे जाते हैं ७ स्त्री को तो तन मन बचन से पति के चरणों में प्रेम रखना यही एक धर्म है यही एक ब्रत है यही एक नेम है ॥ सो० स्वाभाविकही अपावन स्त्री केवल पतिही की सेवा से शुभ गति कहैं स्वर्ग के सुख अपने पति के साथ भोगती है देखो चारों वेद यश गावते हैं कि वृन्दा ने महा दुष्ट बिश्वविरोधी जलन्धर अपने पतिही के प्रेम के प्रभाव से अपने पति का भी उद्धार किया और आप भी तुलसी होकर अद्यापि भगवत्प्रिया है ॥ ५ ॥

सुनि जानकी परम सुख पावा । सादर तासु चरण शिर नावा १
तब मुनिसन कह कृपा निधाना । आयसु होइ जाउं बनआना २
संतत मोपर कृपा करेहू । सेवक जानि तजेहु जनि नेहू ३
धर्म धुरंधर प्रभु की बानी । सुनि सप्रेम बोले मुनि ज्ञानी ४
जासु कृपा शिव अज सनकादी । चहत सकल परमारथ बादी ५
ते तुम राम अकाम पियारे । दीन बंधु मृदु बचन उचारे ६
किहिबिधि कहहुं जाहु अब स्वामी । कहहु नाथ तुम अंतर्यामी ७
असकहि प्रभु बिलोकि मुनिधीरा । लोचन जलबह पुलकशरीरा ८
दो० मुनिकी अस्तुति कीन्ह प्रभु दीन सुभग बरदान ।
सुमन वृष्टि नभ संकुल जय जय कृपा निधान ॥ ६ ॥

ऐसा परम हित उपदेश अनुसुय्या का सुनिकर सीताने बड़ा सुखपाया और आदर समेत उनके चरणों को शिरनवाया १ तबतो अत्रिमुनि से रामचन्द्र ने कहा किअब तो आपआज्ञाकरें मैं और बनको जाना चाहताहूं २ सदैव मेरेपर कृपा करतेरहना सदाअपना सेवक जानिकर स्नेह न छोड़देना ३ ऐसे धर्म धुरंधर स्वामीके बचन सुनकर प्रेमसमेत ज्ञानी मुनिबोले ४ जिन आपकी कृपा को ब्रह्मा शिव सनकादिक और समस्त परमार्थ वेत्ता मुनीश्वर चाहतेहैं ५ ते आप अकामजनों के प्यारे दीन जनों के बंधु मेरेसे ऐसे कोमल बचन कहते हो ६ सो भलामैं आपसे हे स्वामी जाने को कैसे कहूं आप तो अंतर्यामी हैं आपही कहिये ७ ऐसे कहिकर अत्रिमुनि के नेत्र राम की ओर देखिकर जलसे भरिआये और शरीर केरोमांच खड़े होगये ८ दोहा तबतो रामचन्द्र ने मुनि की प्रशंसा की और सुन्दर भक्ति बरदान दिया इस प्रकार

देवताओं ने रामचंद्र को चित्रकूट से प्रयान करते जब जाना तब तो फूलों की बर्षा से आकाश भरदिया और जय कृपा निधान स्वामी यह शब्द उच्चारने लगे । ०

मुनि पद कमल नाइ कर शीशा । चले बनहिं सुरनर मुनि ईशा १
बन अनेक सुन्दर गिरि नाना । लांघत चले जाहिं भगवाना २
सरिता बन गिरि अवघट घाटा । पति पहिचानि देहिं सब बाटा ३
जहं जहं जाहिं देव रघुराया । करहिं मेघ नभ तहं तहं छाया ४
मिला असुर बिराध मगु जाता । गर्जा घोर कठोर रिसाता ५
उरग समान जोरि शर साता । आवतहीं रघुबीर निपाता ६
तुरतहिं रुचिर रूप तिहिं पावा । देखि दुखी निज धाम पठावा ७
पुनि आये जहं मुनि शर भंगा । सुन्दर अनुज जानकी संगा ८
दो० देखि राम मुख पंकज मुनि वर लोचन भृंग ।
सादर पान करत अति धन्य जन्म सर भंग ॥ ८ ॥

अत्रि मुनिके चरण कमलों को शीशनाइकर सुरनर मुनि सबके नायक श्रीरामचन्द्र नेदंडकारण्यका प्रयान किया १ तहां अनेक बन अनेक बिंध्याचलके शिखिरों को उल्लङ्घन करते चले जातेहैं २ मार्ग की समस्त नदी और सब बन पर्वत अवघट घाटमें भी अपने स्वामी को पहिचान कर सरल मार्ग देते जाते हैं ३ और जहां जहां श्रीराम चले जाते हैं तहां तहां मेघ भी आकाश में छाया किये जाते हैं ४ तहां किसी महा गह्वर बनमें एक बिराध नाम राक्षस काल प्रेरित आमिला रामको देखिकर क्रोध भरा बड़े कटोर घोररवसे गर्जा ५ साती सर्पों ही के समान बिषधर सात बाण संधानि कर उसको आतेही मारदिया ६ मुकुन्द भगवान के बाणके लगतेही रुचिर कहें अप्राकृत रूप उसने पाया और आनन्त कोटि जन्म से उसको दुखी जानिकर अपने धाम बैकुठ को परम कृपालु स्वामी ने पठादिया ७ तिस पीछे सीता लक्ष्मण समेत शरभंग मुनिके आश्रम में आये ८ दोहा रामचंद्र के मुख को देखकर शरभंग मुनिके नेत्र भ्रमरके समान बड़े प्रेमसे पान करते हैं अर्थात् देखते हैं ऐसा धन्य जन्मका शरभंग है ॥ ८ ॥

कह मुनि सुनु रघुबीर कृपाला । शंकर मानसराज मराला १
जात रहेउं बिरंचि के धामा । सुनेउं श्रवण बन आवत रामा २
चितवत पंथ रहेउं दिन राती । अब प्रभु देखि जुड़ानी छाती ३
नाथ सकल साधन मैं हीना । कीन्ही कृपा जानि जन दीन्हा ४

सो कछु देवन मोर निहोरा। निजपन राखेहु जनमन चोरा ५
तबलगि रहहु दीनहितलागी। जबलगि तुमहिं मिलतहुंनत्यागी६
योग यज्ञ जप तप ब्रत कीन्हा। प्रभु कहं देइ भक्ति बर लीन्हा ७
यहिं बिधि सर रचि मुनि सरभंगा। बैठे हृदय छांड़िसबसंगा ८
दो० सीता अनुज समेत प्रभु नील जलद तन श्याम।
मम उर बसहु निरंतर सगुण रूप श्रीराम ॥ ९ ॥

फिरि सरभंगमुनि रामचंद्रसे बोले किहे रघुबीर हेकृपाल औरहे शंकर मनमानस के राजमराल १ मैंतो ब्रह्मलोकही को जाता रहूं इतनेमें यह सुना कि श्रीरामवनको आतेहैं २ तबसे रातिदिन आपके आनेका मार्ग देखता रहूं अब आपको देखिकर मेरी छाती शीतल हुई ३ हेनाथ मैंतो समस्त साधन हीनहूं आपनेमुझको अपना दीन जन जानिकर यह कृपा करी है ४ सोतो हेदेव कुछमुझही पर थरहाई नहीं है यह तो आप अपना पण सदाही से पालते चले आये हो याही गुण से अपने भक्तों के चित्तको चोरातेहो ५ अब जो मेरे पर थरही करते हो तो तबलग यहां बिराजे रहो जब लग मैं इस शरीर को त्यागकर आपको प्राप्त होजाऊं ६ ऐसे कहिकर जो कुछ योग, यज्ञ, जप, तप ब्रत ब्रह्म लोक प्रदायक किये रहैं सो सब स्वामी को समर्पण करि के सबोंका उत्तम फल भगवद्भक्ति वर मांग लिया ७ इस प्रकार सर रचिकर सर भंग मुनि समस्त संगका त्याग करिके सर पर बैठि गये ८॥ दोहा ॥ देहत्याग समय रामचंद्र से यह वरदान मांगा कि हे स्वामी सीता लक्ष्मण समेत इस मेघश्याम राम रूप करिके मेरे हृदय में निरंतर बास करौ ॥ ९ ॥

असकहि योग अग्नि तनु जारा। राम कृपा बैकुंठ सिधारा १
ऋषि निकाय मुनिवर गति देखी। सुखीभये निज हृदय बिशेषी२
अस्तुति करहिं सकल मुनि वृंदा। जयति प्रणतहित करुणाकंदा३
पुनि रघुनाथ चले बन आगे। मुनिवर वृंद बिपुल संग लागे ४
अस्थि समूह देखि रघुराया। पूछा मुनिन लागि अति दाया ५
तिन कहं सुनहु देव रघुबीरा। प्रणतपाल भंजन भवभीरा ६
जानत हौ पूछहु का स्वामी। सम दर्शी सब अंतर्यामी ७
निशिचर निकर सकल मुनिखाये। सुनि रघुबीरनयन जलछाये८
दो० निशिचर हीन करौं महि भुज उठाइ प्रण कीन्ह।
सकल मुनिन के आश्रमनि जाइ जाइ सुख दीन्ह ॥१०॥

इस प्रकार स्वामी रामचन्द्र से प्रार्थना करिके योगकी अग्निसे अपने पंच भौतिक शरीर को भस्म करदिया और अप्राकृत दिव्य शरीर पाकर भगवत् कृपा से पुनरावर्त्ति वर्जित बैकुंठधाम को चले गये १ उस स्थान के ऋषियों ने जब सरभंग मुनि बर्य्य की ऐसी सद्गति देखी तब तो यह जानिकर कि स्वामी अपने निज भक्तों को ऐसीही गति देतेहैं अपने अपने हृदय में अत्यन्तही हर्षित होगये २ समस्त मुनि वृन्द रामचंद्र की स्तुति करने लगे और जय जय शब्द उच्चारने लगे ३ फिर तो रामचंद्र तहां ते आगे को चले और मुनीश्वरों के वृन्द साथ होलिये ४ तहां एक स्थान पर हाड़ों के ढेर परे देखिकर रामचंद्र ने दयार्द्र चित्त होकर मुनीश्वरों से पूछा ५ उन्हों ने कहा सुनो हे देव हे रघुबीर हे कृपाल हे प्रणतपाल हे भवभीर भंजक स्वामी ६ आप तो जानतेही हो पूछते क्याहो क्योंकि समदर्शीहो गुप्त प्रकट को एकसा ही देखते हो और सबके अंतर्यामी हो ७ राक्षसों के समूहों ने ये सब मुनीश्वर खायेहैं यह सुनतेही रामचंद्र के नेत्र जलसे भरि आये ८ अपनी बिशाल भुजा उठाकरमुनीश्वरों के मध्य सत्य संकल्प किया कि समस्त पृथ्वी को राक्षसहीन करदूंगा मैं सत्यब्रत सत्यसंकल्प हूं यह कहिकर सब मुनीश्वरों के आश्रम में जाकर सबको निर्भय किया ॥ १० ॥

मुनि अगस्तिकरशिष्य सुजाना। नाम सुतीक्षणरत भगवाना १
मन क्रम बचन राम पद सेवक। सपनेहुआन भरोस न देवक२
प्रभु आगमन श्रवणसुनि पावा। करत मनोरथ आतुर धावा ३
हे बिधि दीनबन्धु रघुराया। मोसेशठ पर करि हैं दाया ४
सहित अनुज मोहिं राम गुसाईं। मिलि हैं निज सेवक कीनाईं ५
मोरे जिय भरोस दृढ़ नाहीं। भक्तिबिरति न ज्ञानमनमाहीं ६
नहिं सतसंग योगजप यागा। नहिं दृढ़चरणकमलअनुरागा ७
एकबाणि करुणानिधानकी। सोप्रिय जाके गति न आनकी ८

इसी प्रकार भक्तबत्सल परम कृपालु श्री रामचंद्र स्वामी अपना सौलभ्य गुण दर्शाते हुये द्वादशबर्ष पर्य्यन्त जनस्थान भक्तजनों हीं के आश्रमों में फिरते रहे तिस पीछे अगस्तिमुनि के आश्रम को चले तहां मार्ग में एक अगस्ति मुनि के परम सुजान शिष्य सुतीक्ष्ण ऐसा नाम अनन्य रामपरायण रहते रहें १ तन मन बचन से केवल रामही के सेवक रहें और किसी प्राकृत इतर देवताओं का तो स्वप्न में भी भरोसा नहीं रखते रहें २ सो उन्होंने जो रामचंद्र के आगमन के समाचार सुनि पाये तो शीघ्रही अनेक भांति के मनोऽर्थ करते हुये उठि धाये ३ हे देव दीनदयालु श्री रामचन्द्र मो सारिखे शठपरकैसे कृपाकरेंगे ४ अनुज श्रीलक्ष्मण

समेत रामचंद्र स्वामी अपने निज सेवक की नाईं मेरे को कैसे मिलेंगे ५ मेरे जी में तो दृढ़ भरोसा नहीं होता है क्योंकि न तो मेरे भक्तिहै न बैरागहै न ज्ञानहै ६ न सत्पुरुषों का संग है न योग है न जप है न यज्ञ है और न स्वामी के चरण कमलों में दृढ़ प्रेम है मैं तो समस्त साधन हीन हूं स्वामी की प्राप्ति काकौन अवलम्ब है ७ हां करुणानिधान स्वामी की एक यह सुन्दर बाणि है कि जिस किसी के भगवद्व्यतिरिक्त दूसरे की गति नहीं होतीहै सोई रामको प्यारा होताहै८ ॥ दोहा ॥ बनेतो रघुबर तें बने की बिगरे भरिपूरि तुलसी बने जो और तेंताबनिबे में धूरि सो मैं अनन्य गति अनन्य शरण अनन्य साधन हूं ११ ॥

होइहिं आज सफल मम लोचन । देखि बदनपंकजभवमोचन १
निर्भर प्रेम मगन मुनि ज्ञानी । कहि न जाइ सो दशा भवानी २
दिशि अरुबिदिशिपंथनहिं सूझा । को मैं कहां चलेउंनहिंबूझा ३
कबहुं कि फिरि पाछे सो जाई । कबहुं कि नृत्य करै गुण गाई ४
अबिरल प्रेम भक्तिमुनिपाई । प्रभु देखहिं तरु ओट लुकाई ५
अतिशय प्रीति देखि रघुबीरा । प्रगटे हृदय हरण भव भीरा ६
मुनि मगु मांझअचल होइवैसा । पुलक शरीर पनस फलजैसा ७
तब रघुनाथ निकटचलिआये । देखिदशा निजजन मन भाये ८

धन्य मेरे भाग्य हैं कि भवबन्ध बिमोचन रामचंद्र स्वामी का मुखकमल देखि कर आज मेरे नेत्रसफल होंगे १ अत्यन्त निर्भर प्रेम में बूड़े हुये सुतीक्ष्ण मुनि की दशा हेपार्वति कही नहीं जाती है २ किजिस को नतो मार्ग में दिशा बिदिशा सूझती है न यह जानि पड़ता है कि मैंकौन हूं कहां को जाता हूं ३ कभी तो पीछे को फिर जाते हैंकभी प्रभु के गुणों का गान करिके नृत्य करने लगते हैं ४ ऐसी जो अबिरल कहैं तैलधारा बदविच्छन्न भगवद्भक्ति जो मुनिको प्राप्त हुई उसको राम- चंद्र वृक्ष की ओट में छिपे देखते हैं ५ फिरि तो उनकी अत्यन्त प्रीति देखि कर उनके हृदयही में सीता लक्ष्मण समेत प्रकट हो गये६ तबतो सुतीक्ष्ण अपने इष्ट देव स्वामी को हृदयही में देखिकर उसी ध्यान में अचल होकर मार्गही में प्रेमसे पुलकित शरीर कैसे बैठि गये जैसा पनस कहैं कटहरका फल होता है ७ यहदशा देखि कर राम को अति प्यारे लगे और उनके समीप चले गये ८ ॥ १२ ॥

मुनिहिं राम बहुभांतिजगावा । जागनध्यान जनितसुखपावा १
भूपरूप तब राम दुरावा । हृदय चतुर्भुज रूप दिखावा २
मुनि अकुलाइ उठा तब कैसे । बिकलहीनमणि फणिवरजैसे ३

आगे देखि राम तन श्यामा । सीता अनुज सहित सुखधामा ४
परा लकुट जिमिचरणनलागी । प्रेम मग्न मुनिवर बड़भागी ५
भुज बिशाल गहि लिये उठाई । परम प्रीति राखेउ उरलाई ६
मुनिहिंमिलतइमिसोहकृपाला। कनकतरुहिं जिमिभेटतमाला ७
राम बदन बिलोकि मुनि ठाढ़ा । मानहुं चित्रमांझ लिखिकाढ़ा ८
दो० तब मुनि हृदय धीर धरि गहि पद बारहिं बार ।
निज आश्रम प्रभु आनि करि पूजा बिबिधि प्रकार ॥ १३

सुतीक्ष्ण को रामचन्द्र ने ध्यानसे बहुतेरा जगाया परंतु न जगे उन्होंने ध्यान दर्शनही में बड़ा आनन्द पाया १ तबतो रामचंद्र ने अपना नरराज रूप ध्यान से छिपा लिया और अपना सनातन चतुर्भुज रूप दिखा दिया २ तबतो सुतीक्ष्ण अपने प्रियतम द्विभुज रामरूप तें भिन्न चतुर्भुज रूपको देखि कर कैसे अकुलाय उठे जैसे मणिबिहीन फणिराज सर्प ब्याकुल होजाता है ३ फिरितो सीता लक्ष्मणसमेत उन्ही आनन्द निधान द्विभुज घनश्याम रामको देखि कर लकुटकी नाईं रामके चरणों पर गिरि परे और प्रेममें बूड़ि गये ४ तबतो सुतीक्ष्णको चरणोंपर परा देखि कर अपनी विशाल भुजाओं से उठा लिया और बड़ी प्रीति समेत हृदयसे लगा लिया ६ मुनि को मिलते हुये राम कृपालु कैसे सुन्दर सोहतेहैं मानों सुवर्णके वृक्षको तरुणतमाल ही भेटता है ७ फिरितो रामके मुखारबिन्दको सुतीक्ष्ण कैसे देखतेही रहि गये हैं मानों चित्रहीके लिखे हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ तिस पीछे मुनिने प्रेम प्रबाहको रोंकिकर बारंबार रामके चरणगहे और अपने आश्रममें लाकर अनेक भांतिसे पूजनक्रिया १३ ॥

कहमुनिसुनुप्रभुबिनती मोरी । अस्तुतिकरहुं कवनिबिधितोरी १
श्याम ताम रस दाम शरीरं । जटा मुकुट परिधन मुनि चीरं २
पाणि चाप शर कटि तूणीरं । नौमि निरंतर श्री रघुबीरं ३
अरुण नयन राजीव सुबेषं । सीता नयन चकोर निशेशं ४
हर हृदि मानस राज मरालं । नौमि राम उर बाहु बिशालं ५
निर्गुण सगुण बिषम सम रूपं । ज्ञान गिरा गोतीतमनूपं ६
अमल अखिल मनबद्यमपारं । नौमि राम भंजन महि भारं ७
अतिनागर भवसागरसेतू । त्रातुसदा दिनकरकुलकेतू ८ ॥

इस प्रकार रामचंद्र का पूजन करिके फिरि दोनों हाथ जोरि कर सुतीक्ष्ण बोले सुनो हे स्वामी में आपकी प्रशंसातो किसी भांति से नहीं कर सकता हूं १ जो आप

कमल नालके समान कोमल सुढार श्याम शरीर हो और जटाओंका मुकुट और मुनि चीर बल्कलादि वस्त्र धारण कियेहो कटिदेशमें तूणीर और हाथोंमें धनुषबाण लिये हो ऐसे श्री रघुबीरही को मेरा निरंतर प्रणामहै २ ॥ ३ जोआप कमलपत्र के समान अरुणनयन और सुवेष धारण कियेहो श्री जानकीके नेत्र चकोरोंको परिपूर्ण चंद्रमा के समान आनन्द दायक हो ४ श्री शिवजी के हृदय मानसर के राजहंस हो ऐसे आजानुबाहु रामहीको मेरा प्रणाम है ५ हेयगुणों से तो आप निर्गुण हो और श्रेष्ठ गुणोंसे सगुण हो भक्त अभक्तोंके भेदसे आप विषम हो शरणागत बत्सलता में आप समस्त जीवों को समान हो मन समेत इंद्री और वाणी बुद्धिसे आप परे हो और अद्वितीय हो ६ निर्मल सर्वरूप अनिंद्य अपार हो ऐसे भवभार भंजक रामही को मेरा प्रणामहै ७ अतिही प्रवीणहो संसार सागर के सेतु हो ते तुम रघुकुल के केतु दाशरथी श्री रामही सदा मेरी रक्षा करो ॥ ८ ॥ १४ ॥

जेजानहिं ते जानहु स्वामी। सगुण अगुण उर अंतर यामी १
जोकोशलपति राजिव नयना। करहुसो राम हृदयमम अयना २
सुनिमुनि बचन राम मनभाये। बरकरगहि मुनिबर उरलाये ३
परम प्रसन्न जानि मुनि मोही। जो बर भाव देहुं मैं तोही ४
मुनि कह मै बर कबहुंन याचा। समुझि न परै झूंठका सांचा ५
तुमहिं नीक लागहिं रघुराई। सोमोहिं देहु दास सुख दाई ६
अबिरल भक्तिबिरति बिज्ञाना। होहु सकल गुणज्ञान निधाना ७
प्रभु जो दीन्ह सो बर मैं पावा। अब सो देहु मोहिं जो भावा ८
दो० अनुज जानकी सहित प्रभु चाप बाण धरराम।
मम हिय गगन इंदुइव बसहु सदा निःकाम ॥ १५ ॥

सगुण वा निर्गुण वा अंतर्य्यामी करिकेजेकोई आपको जानतेहैं तेई जानाकरौइस झगड़ेसे क्या प्रयोजनहै मेरे हृदयमें तो जो आप राजराजेंद्र श्री अयोध्याधिपति राम राजीव लोचनहो सोई सदा निवास करो १।२ ऐसे प्रेम परिपूर्ण बचन सुनिकर रामके मनमें अतिहीभाये और बरियाई करके सुतीक्ष्ण को फेरि हृदयसे लगाया फिर बोले ३ अबतुम हेमुनिमुझको परमप्रसन्न जानिकर जो वरभावै सोईमैं तुमकोदूंगा ४ यह सुनिकर सुतीक्ष्ण ने कहाकिहेस्वामी मैंनेतो आपकेबिना और क्रिसीसे कभीबर मांगाही नहींहै मैंनहीं जानताहूं कौनसा बर भला होताहै औरकौनसा नहींहोताहै ५ आपही को जो अच्छा लगै सोई हेभक्तसुखदायक मुझको दीजिये ६ जब सुतीक्ष्ण ने समस्त भार स्वामी सर्वस्वदायकही पर रखिदिया तबतो परमउदार श्रीरामबोले किअबिरल

अनपायनी अव्यभिचारिणी तौमेरे मेंतुम्हारी भक्तिहोय और निर्मल बैराग औबिशुद्ध बिज्ञानहोय समस्तज्ञान और गुणोंके निधान होजाओ ७ ऐसेसमस्तबर पाकर सुतीक्ष्ण बोले कि हे स्वामी आपने अपने भाये जो बरदिये सोतो मैंनेपाये अब जोबर मुझको भावताहै सोभी दीजिये ॥ ८ ॥ दोहा ॥ सीता लक्ष्मण समेत धनुर्बाण धारणकिये मेरे हृदयआकाशमें चंद्रमाके समान इसराम रूपहीसे सदा निवासकीजिये ॥ १५ ॥

एवमस्तु कहि रमा निवासा । हर्षि चले कुंभज ऋषि पासा १
मुनि प्रणाम कीन्हा कर जोरी । सुनहु नाथ एक बिनती मोरी २
बहुत दिवस गुरु दरशन पाये । भये मोहि यहिंआश्रमआये ३
अबप्रभु संग चलहुगुरु पाहीं । तुम कहं नाथ निहोरा नाहीं ४
चले जात प्रभु तव पद कंजा । देखहुं जिन बिराध मदगंजा ५
देखि कृपानिधि मुनि चतुराई । लियेसंग बिहसे दोउ भाई ६
पंथ कहत निज भक्ति अनूपा । मुनि आश्रम पहुंचे सुर भूपा ७
आश्रम दीख महाशुचि सुन्दर । सरित सरोवर कानन भूधर ८
दो० तरुबर बिबिधि बिहंगम बोलत बिबिधि प्रकार ।
बसहिं सिद्धमुनि तपकरहिं महिमा गुण आगार ॥ १६ ॥

एवमस्तु ऐसाहीहोगा यहबरदान देकर लक्ष्मीनिवास रामचंद्र अति प्रसन्न मन अगस्तिमुनिके पासचले १ सुतीक्ष्णने फिरि हाथ जोरिकर प्रणामकिया औरकहा किहे स्वामी मेरी एकबिनती औरहै २ किमेरेको गुरुदेवके दर्शन पाये बहुतदिन हुये हैं जबसे मैं इसआश्रममें आयाहूं तबसे फिरि उनके पासनहीं गयाहूं ३ अबआपके साथ गुरुके पास चलाचाहताहूं इसमें हेनाथकुछ आपकाकार्य्य विशेषनहींहै किंतु मेरेहीको यह बड़ालाभ होगा ४ किमार्ग में चलेजातेहुये आपके चरण कमलोंका दर्शन करता जाऊंगा जिननेअभी इसीजनस्थानमें महादुष्ट हमलोगोंके दुखदाई बिराध कामदमर्द्दन कियाहै ५ जब कृपाल स्वामीने सुतीक्ष्णकी यह चतुराईदेखी तबतो दोनों भाईहंसे और उनको साथही लेलिया चतुराईयहहै किजबसुतीक्ष्ण अगस्ति मुनिसे बिद्या पूर्ण करि चुके तबसनातन परिपाटीके अनुसार उनसे गुरुदक्षिणाको कहा अगस्तिमुनि ने कहा किहमको कुछनहीं चाहिये तुम प्रसन्न रहो जबसुतीक्ष्णने अतिही हठ कियातब अगस्तिने कहा कि हमारे पास ईश्वरको लेकरआना ६ मार्ग में अपनी अनुपम भक्ति सुतीक्ष्णसे कहते हुये अगस्तिके आश्रमके समीप पहुंचे ७ महा पवित्र मुनिका आश्रम देखा और तहांकेसरिता,सरोवर,बन,पर्बत सब सुन्दरदेखे॥ ८ ॥ दोहा॥ वृक्षों परभांति भांतिकेपक्षी बोलतेदेखे औरमहिमा गुणोंके निवासमहामुनि सिद्धतहांतपकरतेहुयेदेखे१६

तुरत सुतीक्षण गुरुपहंगयऊ । करि दंडवत कहत अस भयऊ १
नाथ कोशलाधीश कुमारा । आये मिलन जगत आधारा २
राम अनुज समेत वैदेही । निशि दिन देव जपत हौ जेही ३
सुनतअगस्तितुरत उठिधाये । हरिहिं बिलोकिनैन जलछाये ४
मुनिपद कमल परेदोउ भाई । ऋषि अति प्रेमलिये उर लाई ५
सादर कुशल पूछि मुनि ज्ञानी । आसन पर बैठारे आनी ६
पुनिकरि बहुप्रकारप्रभुपूजा । मोहि सम भाग्यवंत नहिं दूजा ७
जहंलगि रहे अपर मुनिवृंदा । हर्षे सब बिलोकि सुख कंदा ८
दो० मुनि समूह महं बैठे सन्मुख सबकी ओर ।
शरद इंदुतन चितवत मानहु निकर चकोर ॥ १७॥

शीघ्रही सुतीक्ष्ण श्री रामचंद्रके आगमन के मंगल समाचार लेकर अपने गुरुदेव अगस्तिमुनि केपास गये और दंडवत् प्रणाम करिकरिके यह कहते भये १ कि हे नाथ कोशलाधीश श्रीमहाराज दशरथकुमार आप के मिलनेको आयेहैं जो समस्त जगतके आधार हैं २ जिनका राम ऐसा नाम है अपने अनुज लक्ष्मण और बिदेहतनया श्री जानकी समेत हैं जिनको अहर्निशि हे देव आप जपाकरते हो ३यह सुनतेही तो अगस्त्य मुनि शीघ्रही उठिदौरे और रामचंद्रको देखिकर नेत्र जलसे छागये ४ जबराम लक्ष्मण दोनोंभाई अगस्त्यमुनिके चरणकमलोंपर गिरिपरे तबतो ऋषिने बड़े प्रेम समेत उठाकर हृदयसे लगालिया ५ आदर समेत कुशल प्रश्नकरिके आश्रममें लायकर यथोचित आसनों पर बैठाया ६ फिरि अनेक भांति से पूजन किया और कहा कि हेनाथ आज तोमेरे समान दूसरा कोईभी भाग्यवन्त नहींहै ७ औरभी जो मुनीश्वर तहांरहे सोभी आनन्द कन्द श्रीरामचद्रको देखिकरहर्षित होगये ॥८॥ दोहा ॥ मुनीश्वर के समाज में श्री रामचंद्र सबही की ओर सन्मुख बिराजते हैं और समस्त मुनीश्वर चकोरों के समान उनको देखतेहैं ॥ १७ ॥

तब रघुबीर कहा मुनि पाहीं । तुम कहं प्रभु दुराव कछुनाहीं १
तुम जानहु जेहि कारण आयउं । ताते तातन कहि समुझायउं २
अबसो शीख देहु मुनि मोही । जेहि प्रकार मारहुं मुनि द्रोही ३
मुनि मुसुकाने सुनि प्रभुबानी । पूछहु नाथ मोहिं का जानी ४
ऊमरितरु बिशाल तव माया । फल अनेक ब्रह्मांड निकाया ५
जीव चराचर जंतु समाना । भीतर रहहिं न जानहिं आना ६

ते फल भक्षक कठिन कराला । तव डर डरत सदा सो काला ७
ते तुम सकल लोक पति साईं । पूछहु मोहिं मनुज की नाईं ८

तब तो रामचन्द्र ने अगस्ति मुनि से कहा कि हे स्वामी आप तो त्रिकालज्ञ हैं आप से कौन छिपाव है आपतो जानतेही हैं जिस निमित्त मैं सीता लक्ष्मण समेत यहां आयाहूं १ इसी से प्रत्यक्ष नहीं निवेदन किया २ तातें आपऐसा उपदेश करें जिस प्रकार मैं इन मुनिद्रोहियों को मरूं ३ यह सुनिकर अगस्ति मुनि मुसुकाने और बोले हेनाथ मुझको आपक्या जानकर पूंछते हैं ४ गूलर के वृक्ष के समान आप की बिशाल माया है और अनन्त कोटि अंडकटाह उसके फलहैं ५ उनमें सब चराचर जीव जन्तु के समान रहते हैं जो जिसमें रहता है वह उसी को जानता है दूसरे को नहीं ६ उनसब फलोंका भक्षक कठिन कराल काल सोभी आपके डरसे डरताहै ७ ते आप समस्त ब्रह्मांड और लोकपालों केएक स्वामी मुझसे मनुष्य की नाईं पूछते हो ८।१८॥

संतत दासन देहु बड़ाई । ताते मोहिं पूछेहु रघुराई १
है प्रभु परम मनोहर ठाऊं । पावन पंचवटी तेहि नाऊं २
गोदावरी नदी तहं बहही । चारिहु युग प्रसिद्ध सो अहही ३
दंडक बन पुनीत प्रभु करहू । उग्र श्राप मुनिबर कर हरहू ४
बास करहु तहं रघुकुल राया । कीजै सकल मुनिन पर दाया ५
चले राम मुनि आयसु पाई । तुरतहिं पंचबटी नियराई ६
लषण राम सिय चरण निहारी । कानन अघगाभा सुखकारी ७
दिव्यलता द्रुम प्रभु मन भाये । निरखि राम सबभये सुहाये ८
दो० गृद्धराज सन भेंट भइ बहुबिधि प्रीति दृढ़ाइ ।
गोदावरी निकट प्रभु रहे पर्ण गृह छाइ ॥ १६ ॥

हे स्वामी आपसदा अपने दासोंको बड़ाई देते आयेहो इसीसे आपने मुझ से पूछाहै १ हे स्वामी एक परम मनोहर स्थानहै महा पवित्र पंचबटी उसका नामहै २ गोदावरी गंगा तहां बहती है जो चारों युग में प्रसिद्धहै ३ दंडक नाम बनजो भृगुमुनके श्राप से उकठा पड़ाहै उसको पावन कीजिये ४ और तहीं जाकर निवास कीजिये ५ अगस्ति मुनिकी आज्ञा पाकर रामचन्द्र सीता लक्ष्मण समेत तहां ते चल दिये और पंचबटी में आ पहुंचे ६ राम लक्ष्मण सीता के चरणों को देखतेही बनका शापदूरि हुआ और सुन्दर सुहावन होगया ७ दिव्यलता और वृक्ष रामको देखतेही सुहाये होगये ८ दोहा ॥ तहां दशरथ के सखा गृद्धराज जटायु संपाती के छोटे भाई से पिता पुत्र संबंधी पावन प्रीति हुई और गोदावरी के समीपही पर्णशाला छाइकररहे १६ ॥

जबते राम कीन्ह तहँबासा । सुखी भये मुनि बीती त्रासा १
गिरिबन नदीताल छबिछाये । दिनदिन प्रतिअति होहिं सुहाये २
खगमृग वृन्दानन्दित रहहीं । मधुप मधुर गुंजत छबिलहहीं ३
सोबन बरणिन सक अहिराजा । जहां प्रगट रघुबीर बिराजा ४
एकबार प्रभुसुख आसीना । लक्ष्मण बचन कहे छलहीना ५
सुरनर मुनि सचराचर साईं । मैं पूछहुं निजप्रभु की नाईं ६
मोहिं समुझाइ कहहुसोदेवा । सब तजिकरहुं चरणरज सेवा ७
कहहु ज्ञानबिराग अरुमाया । कहहु सोभक्ति करहु जिहिं दाया ८
दो० ईश्वर जीवहिं भेदप्रभु सकल कहहु समुझाइ ।
जातेहोइ चरणरतिशोक मोहभ्रमजाइ ॥ २० ॥

जब से श्रीरामचंद्र ने सीता लक्ष्मण समेत दंडकारण्य में जाकर निवास किया तब से तहां के निवासी सब मुनिजन सुखी होगये क्योंकि उनके समस्त भय जाते रहे १ और तहां के पर्बत बन और नदी तालाव सब छवि से छागये कि दिन दिन प्रति बढ़िबढ़िकर अतिही सुहाये होतेजाते हैं २ जातिजाति के पक्षी और मृगों के वृन्दसदा आनन्दित रहते हैं और भ्रमरों के समूह मधुर गुंजते हुये बड़ी छबि पाते हैं ३ उस बन की शोभा को तो सहस्र मुखों से अहिराज शेष भी नहीं कहि सक्ते हैं जहां अनन्त कोटि अंडकटाह नायक रघुबर्य्य श्रीराम बिराजते हैं ४ एक समय श्रीरामचन्द्र स्वामी परम प्रसन्न एकाग्रचित्त बिराजे रहे ऐसा स्वामी को सव काश देखिकर लक्ष्मण कपटछल हीन बचनबोले ५ हे सुरनरमुनि सचराचर स्वामी मैं कुछ आप से निज प्रभु की नाईं पूछता हूं क्योंकि मेरे तो निज आपही प्रभु हो मैं तो आपको छोड़ि ॥ गुरुपितुमातु न जानहुंकाहू ॥ श्लोक त्वमेवमाताचपितात्वमेवत्वमेवबंधुश्चसखात्वमेव त्वमेवविद्याद्रविणंत्वमेवत्वमेवसर्बंममदेवदेव ६ सो मेरे को समुझाइकर ऐसा परम हित उपदेश कीजिये कि जो सुनिकर समस्त धर्मों को छोड़ि अनन्य शरण अनन्य गति अनन्य प्रयोजन होकर आपही के चरणों का सेवन करूं ७ ज्ञान बैराग कहो और माया का बर्णन करो फिर वह अपनी भक्ति कहो जिससे आप अपने भक्तों पर अनुग्रह करते हो ॥ ८ ॥ दोहा ॥ ईश्वर और जीव में जो ब्यवर्त्तक भेद है सोभी समझाकर कहा जिससे मेरा आपके चरणों में सुदृढ़ प्रीति होवै और शोक मोह भ्रम सब जाता रहै ॥ २० ॥

थोरेहि महंसब कहहुं बुझाई । सुनहु तात मनमति चितलाई १
मैं अरु मोरतोर तै माया । जिहिंबश कीन्हे जीव निकाया २

गो गोचर जहं लगि मन जाई । सो सब माया जानहु भाई ३
ताकर भेद सुनहु तुम सोऊ । बिद्या अपर अबिद्या दोऊ ४
एकदुष्ट अतिशय दुखरूपा । ता बश जीव परा भवकूपा ५
एकरचै जग गुण बश जाके । प्रभुप्रेरित नहिं निज बलताके ६
ज्ञान मान जिहिं एकहु नाहीं । देखहिं प्रभु समान सबमाहीं ७
कहिय तातसो परम बिरागी । तृणसमसिद्धि तीनिगुण त्यागी ८
दो० माया ईश न आप कहं जानि कहै सो जीव ।
बंदि मोक्षप्रद सर्बपर मायाप्रेरक सीव ॥ २१ ॥

ऐसी परमोत्तम लक्ष्मण जीकी प्रश्नको सुनिकर वेदांतवेद्य श्रीरामचंद्र सर्बशास्त्र सिद्धांत बचन बोले सुनो हे तात मैं तुम से थोरेही में तुम्हारे सब प्रश्नों का उत्तर समुझाकर कहता हूं उस को तुम मन,बुद्धि, चित्तलगा कर सुनो १ मैं और मेरा तैं और तेरा यही अहंकार ममकार रूपामाया कहावती है जिसने समस्त जीव निकाय अपने बशीभूत करिराखे हैं २ सो जहां तक गोगोचर पदार्थ हैं अर्थात् जिस को दशहूं इन्द्री जानसक्ती हैं औ जहांतक मनकी दौर है उस सब को हे लक्ष्मण तुममाया ही जानो ३ सो माया दो प्रकार की है एक परा माया तो बिद्या कहावतीहै दूसरी अपरा अबिद्यामाया है ४ एक अपरामाया तो महादुष्टादु:खरूपाही है उसीके बशहो कर जीव इस तमकूप संसार में परा है ५ दूसरी परामाया जो इस संसार को रचती है समस्त गुण उसी के बश हैं सो यह दोनों माया हरिप्रेरित हैं सुतंत्र नहीं भगवद्‌गीतायां ॥ भूमिरापोनलोवायु:खंमनोबुद्धिरेवच अहंकारइतीयंमेभिन्ना:प्रकृतिरष्टधा १ यह अपरामायाकहीहै अपरेयमितिस्त्वन्यांप्रकृतिं बिद्धिमेपरां जीवभूतांमहाबाहोययेदंधार्य्यतेजगत् २ यहपराप्रकृतिहै ६ जो अमानीहै उसको ज्ञानी जानो क्योंकि समस्ता जीवों में एक अपनेही प्रभु को अंतर्यामी समान हो देखता है ७ परम बैरागी उसको कहना चाहिये जो तीनों गुणों को समस्त सिद्धियों समेत तृणके समान त्यागकरै श्रीमद्भागवते ननाकपृष्ठंनचसार्बभौम्यं नयोगसिद्धिंनपुनर्भवंवा सानपारमेष्ठ्यं नरसाधिपत्यं वांछतियत्पादरजप्रपन्ना: ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जो अपने को चेतन समुझकर न तो माया जान सक्ता है और न परतंत्र समुझकर ईश्वर मानसक्ता है उस को जीव कहना चाहिये और जो समस्त जीवों का बंध मोक्ष प्रदायक और माया का प्रेरक स्वामी माधव है सो समस्त स्वाभाविक अनवधिक,ऐश्वर्य,बीर्य,बल,तेज, ज्ञान, यशका सीवां ईश्वर है ॥ २१ ॥

धर्म ते बिरति योग ते ज्ञाना । ज्ञान मोक्ष प्रद बेद बखाना १

जाते बेगि द्रवहुं मैं भाई। सो मम भक्ति भक्त सुखदाई २
सो स्वतंत्र अवलंब न आना। तिहिं आधीन ज्ञान विज्ञाना ३
श्रवणादिक जन भक्ति दृढ़ाहीं। मम लीलारति अतिमनमाहीं ४
संत चरण पंकज अति प्रेमा। मन क्रम बचन भजन दृढ़ नेमा ५
गुरु पितु मातु बन्धु पति देवा। सब मोकहं जानहिं दृढ़ सेवा ६
मम गुण गावत पुलक शरीरा। गद गद गिरा नयन बहनीरा ७
कामादिक मद दंभन जाके। तात निरंतर बश मैं ताके ८
दो० बचन कर्म मन मोरि गति भजन करहिं निः काम।
तिहिं के हृदय कमल महं करहुं सदा विश्राम॥ २२॥

धर्ममें रुचि होने से वैराग्य उत्पन्न होता है और अष्टांग योग अर्थात् शम, दम नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान, धारणा, समाधि के साधनसे ज्ञान होता है जिस ज्ञानको वेद मोक्ष प्रदायक कहते हैं परंतु इनमेंसे मेरी कृपा का कारण भक्ति बिहीन कोईभी नहीं है १ जिससेमैं इस जीव पर शीघ्र कृपा करता हूं सो तोकेवल मेरी भक्तिही है जो मेरे भक्तोंको अनपायन आनन्दकी दाता है २ और सो स्वतंत्र भी हैं दूसरे साधनका अवलम्ब नहीं चाहती है और ज्ञान बिज्ञानादि समस्त मोक्ष साधन उसके आधीन हैं ३ इसी कारण जो मुमुक्षजन श्रेयाभिलाषी हैं सो श्रवणादिक नव लक्षण वा षोड़श लक्षण मेरी भक्तिही को दृढ़ातेहैं और मेरे दिव्य जन्म कर्मोकी लीलाही में सदा प्रीति मानतेहैं श्रीमद्भागवते॥ श्रवणं कीर्त्तनं विस्मोःस्मरणं पादसेवनं अर्चनंबंदनंदास्यं सख्यमात्मनिवेदनं यह नवधा भक्ति है पद्मपुराणेषोड़शधा आदान्तु वैष्णवप्रोक्तं शंखचक्रांकनंहरेः १ धारणंचोर्द्ध्वपुंड्राणां २ तन्मंत्राणांपरिग्रह ३ अर्चनं ४ जपध्यानंच ५। ६ तन्नामस्मरणंतथा ७ कीर्त्तनं ८ श्रवणंचैव ९ बंदनं १० पादसेवनं ११ तत्पादोदकसेवाच १२ तन्निवेदितभोजनं १३ तदीयानांचसेवाच १४ द्वादशी ब्रतमुत्तमं १५ तुलसीरोपनंविष्णोःदेवदेवस्यशार्ङ्गिणः १६ भक्तिःषोडशधाप्रोक्ताभव बन्धबिमुक्तये ४ भगवज्जनों से अति प्रेम रखते हैं मन, बचन, कर्म सेमेराही सेवन दृढ़ नेम पूर्वक करते हैं ५ माता, पिता, गुरू, भाई, स्वामी, सखा और इष्टदेव सब मेरेही को जानते हैं ६ मेरे गुणगाते हुये पुलकित शरीर हो जाते हैं गद गदबाणी और नेत्रों में प्रेम का जल बहने लगता है ७ ऐसा जो मेरा भक्त काम, क्रोध, लोभ मद दंभ रहित होता है हे लक्ष्मण भाई मैं सदा उसके बश रहता हूं॥ ८ दोहा॥ कर्म बचन मनसे जो अनन्यगति औरअकाम मेराभजन करता है उसके हृदयकमल में मधु करके समानमैंसदानिवास करताहूं॥ तस्याहंनप्रणश्यामि सचमेनप्रणश्यति॥ २२॥

भक्ति योगसुनि अतिसुखपावा। लक्ष्मणप्रभुचरणन शिरनावा १

यहिं बिधि गये कछुक दिन बीती । कहतबिराग ज्ञानगुणनीती २
सूर्पनखा रावणकी बहिनी । दुष्टहृदय दारुणजिमि अहिनी ३
पंचबटी सो गइ एक बारा । देखि बिकल भइयुगल कुमारा ४
रुचिर रूप धरि प्रभुपहं जाई । बोली बचन मंद मुसुकाई ५
तुम सम पुरुषन मोसम नारी । यह सुयोगबिधि रचा बिचारी६
तुम अनुरूप पुरुष जगमाहीं । देखेउं खोजि लोकतिहुं नाहीं ७
तातें अबलगि रहीकुमारी । मनमाना कछुतुमहिं निहारी ॥ ८ ॥

ऐसा सर्ब शास्त्रसंमत सिद्धांत भक्ति योग स्वतंत्र सर्बेश्वर अपने स्वामी रामचन्द्र के श्रीमुख से सुनकर लक्ष्मण जी ने अतिही सुख पाया और इस परम लाभके धन्य बाद से उनके चरणों को शिर नवाया १ इसी भांति ज्ञान,बैराग, राजनीति इत्यादि गुणों को कहते कुछ काल ब्यतीत हुआ २ भावी के अनुसार सूर्पनखा नाम रावण की भगनी महादारुण दुष्टहृदय सर्पिणी के समान एक समय उसी पंचबटी में पहुंची तहां राम लक्ष्मण दोनों कुमारों के मनोहर रूप को देखतेही परम व्याकुल हो गई ३ । ४ तबतो परमसुन्दर कपटरूप धरि कर रामचन्द्र के समीप गई और मंद मुसकाती हुई यह बचन बोली ५ कि न तो तुम्हारे समान सुन्दर कोई पुरुष है और न मेरे समान सुन्दर कोई स्त्री है यह तो बिधाता ने हमारा तुम्हाराही संयोग बिचारि कर रचा है ६ तुम्हारे अनुरूपका पुरुष मैंने इससंसार में खोजि देखा तीनोंलोक में कहीं भी नहीं है ७ इससे मैं अभीतक कुमारीही रही हूं अब तुम को देखि कर कुछ मेरा मन मानता ८ ॥ २३ ॥

सीतहिं चितय कही प्रभु बाता । अहै कुमार मोर लघुभ्राता १
गइ लक्ष्मण रिपुभगनी जानी । प्रभु बिलोकि बोले मृदुबानी २
सुन्दरि सुनु मैं उन कर दासू । पराधीन नहिं तोर सुपासू ३
प्रभुसमर्थ कोशलपुर राजा । जोकछु करहिं उनहिं सब छाजा ४
पुनि फिरि राम निकट सोआई । प्रभुलक्ष्मण पहंबहुरि पठाई ५
लक्ष्मण कहा तोहिं सो बरई । जो तृणतोरि लाज परिहरई ६
तब खिसियानि राम पहं गई । रूप भयंकर प्रगटत भई ७
सीतहिं सभय देखि रघुराई । कहा अनुज सन सैन बुझाई ८
दो० लक्ष्मण अति लाघव सन नाककान बिन कीन्ह ।

तिहिं के कर रावण कहं मनहुं चुनौती दीन्ह ॥ २४ ॥

जबउसरंडानेऐसाभूंठ कहाकि मैंअभी तककुमारीहूं तबतोरामचंद्रनेभी॥शठंप्रतिशठं कुर्यात् ॥ के अनुसार सीताकी ओर दृष्टिकरिके उससे कहा कि जैसी तू कुमारीहै तैसाही मेरा यहछोटा भाईभी कुमार है इसको वर ले १ सूर्पनखा तौदोनों भाइयोंके रूपपर आशक्त होहीरही है रामचंद्र के बचन सुनतेही लक्ष्मणके निकट गई लक्ष्मण उसको शत्रु की भगनी जानिकर रामचंद्रकीओर दृष्टिकरिके उससे अतिकोमलवाणी से बोले २ सुनु हे सुन्दरी मैंतो उनका किंकरदास पराधीनहूं तेरासुभीता मेरेपास नहींहोगा ३ रामचंद्र स्वामी सुतंच समर्थ कोशलपुरी के राजा हैं जो कुछ करें उनको सब सोहता है ४ लक्ष्मण केसत्य बचन जानिकर रामचंद्रही के पास फेरिफिरिआई कि लक्ष्मणतो तुम्हारादासहै रामचंद्रने उसको यहकहिकर किनहीं मेराअनुज भाई है लक्ष्मणही के पास फेरि भेजा ५ तबतो लक्ष्मणने उससे कहाकि तेरेको तेरेही समान निर्लज्ज सो भलेही बरै जो तृणके तुल्य लाजको त्यागकरै ६ तबतो खिसियायकर रामचंद्रके पास गई और अपना महाभयंकररूप दिखाती हुई ७ जब रामचद्रने सीताकी सभीत देखा तबतो लक्ष्मण से समुझा कर सैनही में बिरूप करने को कहि दिया ॥ ८ ॥ दोहा ॥ लक्ष्मण ने बड़ीही लाघवता से उसके कर्ण नाशिका छेदन करिके उसके हाथ पर चुपके ही रखदिये मानों रावणको उसके हाथों चुनौतीही भेजदी ॥ २४ ॥

खरदूषण पहं गइ बिलखाता । धिक्धिक् तव बलपौरुष भ्राता १
तिन पूछा सब कहा बुझाई । यातुधान सुनि सेन बुलाई २
चौदह सहस सुभट संगलीन्हे । जिनसपनेहु रणपीठिनदीन्हे ३
धाये निशिचर निकर बरूथा । जनु सपक्ष कज्जल गिरियूथा ४
धूरि पूरि नभमंडल रहेऊ । राम बुझाइ अनुज सन कहेऊ ५
लै जानकिहिं जाहुगिरि कंदर । आवा निशिचर कटक भयंकर ६
रहेहु सजग सुनि प्रभुकी बाणी । चलेसहित सियशर धनुपाणी ७
दीख राम रिपुदल चलि आवा । बिहंसि कठिन कोदंड चढ़ावा ८

छं० कोदंडकठिनचढ़ाइप्रभुसिरजटाबांधतसोहयों ।
मरकतशैलपरलसतिदामिनिकोटिसयुगभुजंगयों ॥
कटिकसिनिषंगविशालभुजगहिचापबिशिषसुधारिकै ।
चितवतमनहुंमृगराजप्रभुगजराजघटानिहारिकै ॥

सो० आइगये बगमेल धरहु धरहु धावहु सुभट ।

यथा बिलोकि अकेल बालरबिहिं घेरहिं दनुज ॥ २५ ॥

तबतो तहां ते रोवती पीटती अपने भाई खरदूषण त्रिशिरा के पासजा पुकारी और बोली कि अरेभाइयो तुम्हारे बलपौरुष को धिक्कार है देखो तुम्हारे होते मेरी यह दशा होगई १ जब उन्हों ने पूछा तबसब बृतान्त उनके आगे उसने कहा सो सुनतेही उन्होंने अपनी सेना बुलाई २ चौदहसहस्र बड़े शूर योधा अपने साथ लिये जिन्होने स्वप्नमें भी रणसे पीठि नहीं फेरीथी ३ अपने स्वामी की आज्ञापाकर राक्षसोंके समूहों के समूह कैसे दौरेहैं मानो पक्षधारी पर्वतही चलेआतेहैं ४ उनके अति वेगसे धूरि करिके आकाश जब पूरितहोगया तबतो रामचंद्रने लक्ष्मणसे समुझाकर कहा ५ कि जानकी को लेकरकिसी पर्बतकी कन्दराको चलेजाओ देखो महाभयङ्कर राक्षसोंका कटक आपहुंचा ६ बहुत सजग रहना ऐसे स्वामी के बचन सुनतेहीं धनुष बाणले कर सीता समेत चलदिये ७ जब रामने देखा किशत्रु का कटक आगया तबतो हंसि कर महा कठिन अपना शार्ङ्ग धनुष चढ़ाया ॥ ८ ॥ छन्द ॥ धनुष चढ़ाइ कर शिर पर जटा जूट बांधते कैसी शोभा देते हैं मानों नीलमणिके पर्वत पर दामिनी दमकती है और उसके शिखर पर द्वय भुजंग लिपटे हैं कटिमें तुणीर कसि धनुषले बाणों को सुधारि सिंह जैसे हाथियों को देखता है ऐसेही शत्रु की सेना को देखने लगे सो० इतने में शत्रु के योधा बगमेल आगये और कहने लगे कि दौरो दौरो पकरो पकरो जैसे अकेला बालसूर्य्य को देखिकर दशसहस्र दैत्य घेरते हैं ॥ २५ ॥

यह आरण्यकांड का पूर्बार्द्धहुआ ॥

रामायनमः

घेरि रहे निशिचर समुदाई। दंडक खग मृग चले पराई १
प्रभु बिलोकिशर सकहिंन डारी। थकित भई रजनीचरधारी २
सचिव बोलि बोले खर दूषण। येकोउन्नृप बालक नर भूषण ३
नाग असुर सुर नर मुनि जेते। देखे सुने रहे हम तेते ४
हम भरि जन्म सुनहु रे भाई। देखी नहिं असि सुन्दरताई ५
यद्यपि भगनी कीन्ह कुरूपा। बध लायकनहिं पुरुष अनूपा ६
देहु तुरत निज नारि दुराई। जीवत भवन जाहु दोउ भाई ७
मोर कहा तुम ताहि सुनावहु। तासु बचन सुनि आतुरआवहु ८
दो० भये मूढ़ सब काल बश जानहिं नहिं रघुवीर।
मशक फूंक किमि मेरु उड़ सुनहु गरुड़ मतिधीर ॥ १ ॥

इस प्रकार जब राक्षसोंने घेरा कर लिया तबतो भयभीत होकर दण्डक बन के पशु पक्षी प्राण ले भागे १ रामचन्द्रके दिव्य मंगलबिग्रहकी अप्राकृत अलौकिक परम मनोहर शोभाको देखिकर समस्त राक्षसों की सेना थकित होगई कोई शस्त्र प्रहार नहीं कर सकतेहैं २ तबतो मंत्रियोंको पास बुलाकर खर दूषण बोले कि येतोदोनों राजकुमार परम सुन्दर कोई नरभूषणही हैं ३ तीनों लोक में जो नाग, नर, मुनि असुर, सुर हमने देखे सुने रहें ४ उन सबमें तो हमने अपने जन्म भरमें भी ऐसी सुन्दरता किसीमें देखी न सुनी है ५ यद्यपि हमारीभगनी इन्होंने बिरूपा करदीहै तोभी ये अनूपम पुरुष बधके योग्य नहीं हैं ६ तातें तुम इनसे जाकर कहो किजो तुमने अपनी भार्य्या छिपा रक्खी है सो हमारे स्वामी खरको दे दो और तुमदोनों भाई जीते जी अपने घर चले जाओ ७ यह हमारा कहा तुम उसको सुनाओ और उसका उत्तर लेकर हमारे पास शीघ्रही आओ ॥ ८ ॥ दोहा ॥ कागभुसुंडि कहते हैं सुनो हे गरुड़ येसब महा मूढ़ काल के बश हैं तातें श्रीरामचन्द्र के प्रभावको नहीं जानते हैं भला मशकोंकी फूंकसे कहीं सुमेरु उड़ सकता है ॥ ५ ॥

दूतन कहा राम सन जाई । सुनत राम बोले मुसुकाई १
आज भयउ बड़ भाग्य हमारा । तुम्हरेप्रभुअसकीन्हबिचारा २
हम क्षत्री मृगया बन करहीं । तुमसे खलमृग खोजतफिरहीं ३
यद्यपिमनुजदनुजकुलघालक । मुनिपालकखलशालकबालक ४
रिपु बलवन्त देखि नहिं डरहीं । एक बारकालहु सन लड़हीं ५
जो न होइ बल घर फिरि जाहू । समरबिमुखमैं हतहुंनकाहू ६
रण चढ़ि करिय कपट चतुराई । रिपु पर कृपा परम कदराई ७
दूतन जाइ तुरत सब कहेऊ । सुनिखर दूषण उरअतिदहेऊ ८

जब खरदूषणके पठाये दूतोंने रामसे जाकरकहा तबतो रामचन्द्र हंसिकर बोले १ आज हमारा कोई बड़ा भाग्यहुआ जो तुम्हारे स्वामियों ने हमारे ऊपर ऐसा बिचार किया २ अब तुम हमारी ओरसे अपने स्वामियों से यह जा कहो कि हमतो क्षत्री बंशके बालकहैं बनमें मृगयाके निमित्त आयेहैं तुम सारिखे खल मृगोहींको खोजते फिरते हैं ३ बलवान शत्रुको भी देखि कर नहीं डरते हैं एक वार कालका भी तो समुहाही कर सकते हैं ४ यद्यपि मनुष्य हैं तथापि दनुजसूदन हैं कान खोले कहे देते हैं मुनि जनोंके पालकऔर उनके बिरोधी खलोंके शालक ऐसेप्रबल बालकहैं ५ तातेजो कुछ बलहो तोतो सामुहा करो और जो बल न हो तो कुशल कुशल अपने घर चले जाओ युद्धसे परान्मुखमें किसीको भी नहीं मारता हूं ६ रण पर चढ़ि कर तो छल और चातुर्य्य करना चाहिये शत्रु पर कृपा करना यहतो अत्यन्त कदरईही

है ७ दूतोंने तुरंतही जाकर ज्योंका त्यों सब कहि दिया सो तो सुनतेही खर दूषणका हृदय अतिही जरि गया ८ ॥ २ ॥

युद्धछंदः

उरदहेउकहेउकिधरहुधावहुबिकटभटरजनीचरा।
शरचापतोमरशक्तिशूलकृपाणपरिघपरशुधरा॥
प्रभुकीन्हधनुषटंकोरप्रथमकठोरघोरभयोमहा।
भयेबधिरव्याकुलयातुधानन्ज्ञानतेहिंअवसररहा॥

दो० सावधान ह्वै धाये जानि सबल आराति।
लागे बर्षण राम पर अस्त्र शस्त्र बहु भांति॥
तिनके आयुध त्रण सम करि काटे रघुबीर।
तानि शरासन श्रवण लगि पुनि छांडे निजतीर॥

तीनों भाइयोंके हृदयतो जरि उठे और बोले कि हे शरचापधारी हे तोमर धारी हे शक्तिधारी हे त्रिशूलधारी हे खड्गधारी हे परिघधारी हे परशुधारी बिकट योधा हो दौरो और जीताही पकरि लाओ ऐसा शब्द सुनि कर प्रथम तो मधुसूदन स्वामीने अपने शार्ङ्ग धनुषकी टंकारही की उसका हुआजो महाकठोर शब्द ताकरिके संपूर्ण राक्षस बधिर व्याकुल होगये जिनको कुछभी ज्ञान उस समय न रहा ॥ दोहा ॥ फिरि तो शत्रु को महा प्रबल जानि सावधान होकर दौरे और अनेक भांतिके अस्त्र और शस्त्रोंकी रामचन्द्र पर वर्षा करने लगे उनके संपूर्ण आयुध रामचन्द्र ने तृणके समान काटि गेरे और अपना धनुष श्रवण पर्य्यन्त तानिकर फेरि अपने बाण उन पर प्रहार किये ॥ २ ॥

तबचलेबाणकराल फुंकरतजनुबहुव्याल।
कोपेसमरश्रीराम चलेविशिषनिशितनिकाम॥ १॥
अवलोकिखरतरतीर मुरिचलेनिशिचरबीर।
एकएककहंनसंवार करैंतातभ्रातपुकार॥ २॥
कोउकहहिंखरकाकीन्ह जोयुद्धइनसनलीन्ह।
येबाणअतिहिंकराल ग्रसैंआइमानहुंकाल॥ ३॥
भयेक्रुद्धतीनौभाइ जोभाजिरणतेजाइ।
तेहिंबधबहमनिजपाणि तबमरणआपनठानि॥ ४॥

आयुधअनेकप्रकार सन्मुखतेकरहिंप्रहार।
रिपुपरमकोपेजानि प्रभुधनुषशरसंधानि ॥ ५ ॥
छांडेबिपुलनाराच लगेकटनबिकटपिशाच।
उरशीशभुजकरचरण जहंतहंलगेमहिपरन ॥ ६ ॥
चिक्करतलागतबाण धरपरतकुधरसमान।
भटकटततनशतखंड पुनिउठतकरिपाखंड ॥ ७ ॥
नभउड़तबहुभुजमुण्ड बिनुमुण्डधावतरुंड।
खगकंककाकशृगाल कटकटहिंकठिनकराल ॥ ८ ॥

तबतो रामके महाकराल बाण कैसे छूटे हैं मानों फुंकरते हुये अनेक सर्प चले आते हैं जब श्रीरामचंद्र संग्राम में कोपित हुये तबतो अतिही तीव्र बिषोपम बाण धनुषसे छूटे १ अतिही तीक्ष्ण बाणोंको आते देखिकर बड़े बड़े राक्षसोंके बीर रणसे भागि चले एक एकको नहीं संवारते हैं कोई पिता को पुकारता है कोई भाई को पुकारता है २ कोई कहते हैं कि खरने यह बुरा किया जो बिना बूझे इनके साथ युद्ध लिया इनके बाणतो अतिही कराल हैं सर्पोंहीके समान आकर ग्रसि लेतेहैं ३ ऐसे अपने दलको रणसे भागते देखिकर तीनों भाई क्रोध भरे बोले किजो संग्रामसे भागै। उसको हम अपने हाथोंसेमारेंगे तबतो अपनामरण निरूपण सबोंने किया ४ अनेक प्रकारके आयुध लेले कर रामचन्द्रके संन्सुख प्रहार करनेलगे इसप्रकार बैरियों को परम कोपित जानि कर अपने धनुषमें बाण संधान किये ५ जब धनुषसे अपार बाण छूटे तबतो महा बिकट राक्षस कटने लगे किसीके हृदय किसीके मस्तक किसीकी भुजा किसीके पहुंचे किसीके चरण जहां तहां पृथ्वीपर गिरने लगे ६ बाणों के लगतेही चिक्कारते हैं और उनके धर पर्बतके समान पृथ्वी पर गिरतेहैं एक एक योधाके शरीरके सौ सौ खंड होजाते हैं और माया कर कर फेरि फिरि उठते हैं० आकाशमें बाण बेधित अनेक भुजा और शिर उड़ते फिरतेहैं और मुंड रहितअनेक रुंड दौरते फिरतेहैं कंक काक पक्षी बिशेष और शृगाल अपना कटकटा शब्द करतेहैं ८

कटकटहिंजंबुकभूतप्रेतपिशाचखप्परसाचहीं
बैतालबीरकपालतालबजाइयोगिनिनाचहीं
रघुबीरबाणप्रचंडखंडेभटनकेउरभुजशिरा
जहंतहंपरहिंउठिउठिलड़हिंधरुधरहुकरहिंभयंकरा १
अंत्रावलीगहिउड़हिंगृद्धपिशाचकरगहिधावहीं

संग्रामपुरबासीमनहुं बहुबालगुड़ीउड़ावहीं
मारेपछारेउरबिदारेबिपुलभटघूर्मितपरे
अवलोकिनिजदलबिकलभटत्रिशिरादिखरदूषणफिरे २
शरशक्तितोमरपरशुशूलकृपाणएकहिबारहीं
करिकोपश्रीरघुबीरपरअगणितनिशाचरडारहीं
प्रभुनिमिषमहंरिपुशरनिवारिप्रचारिडारेशायका
दशदशबिशिषउरमांझमारेसकलनिशिचरनायका ॥ ३

जंबुक कहें शृगालतो कटकटातेहैं और भूत, प्रेत,पिशाच खप्पर भरि भरि रुधिर पान करते हैं बैताल बीरोंके कपालोंकी ताल बजाते हैं योगिनी जहां तहां नाचती फिरती हैं श्रीरामचंद्रके प्रचण्ड बाणोंने योधाओंके हृदय भुजा मस्तकों को जहां तहां काटि चलाया तिन बाणोंके मारे जहां तहां गिरते फिरते हैं और फिरि फिरि उठि उठि कर लड़ते हैं और पकरो मारो ऐसा भयंकर शब्द करते फिरते हैं १ बीरों की आंतोंको गृद्ध पक्षी पकरि कर उड़ते हैं और उनके लटकते हुये छोर पिशाच हाथोंमें पकरि कर दौरते हैं मानों संग्राम पुरबासी अनेक बालक चंगही उड़ाते हैं इस प्रकार कोईतो मारे कोई पछारे कोईके हृदय बिदारे कोई रणभूमि में घूर्मित परे हैं ऐसा अपने दलको व्याकुल देखि कर खर दूषण त्रिशिरा तीनों भाई रामचंद्र के ऊपर दौरे २ बाण बरछी तोमर फरसा त्रिशूल तरवार क्रोध करि करिके रामचंद्रके ऊपर एकही बार अनेक राक्षसोंने प्रहार किये तिन सबकेसबोंने पलमात्रहीमें उनके शस्त्र निवारण करि फेरि उनको प्रचारि कर अपने बाण चलायेतो समस्तनिशाचराधिपोंके हृदयमें दश दश बाण मारि दिये ॥ ३ ॥

महिपरतउठिभटलरतमरतनकरतमायाअतिघनी
सुरडरतचौदहसहसनिशिचरएकश्रीरघुकुलमनी
सुरमुनिसभयअवलोकिमायानाथअतिकौतुककरे
देखतपरस्पररामकरिसंग्रामरिपुदललरिमरे ॥ ४ ॥

दो० राम राम कहि तनु तजहिं पावहिंपदनिर्बान ।
करि उपाय रिपु मारेऊ क्षण महं कृपा निधान ॥
हर्षित सुर बर्षहिं सुमन बाजहिं गगन निशान ।
अस्तुति करि करि सब चले शोभित बिबिध बिमान ॥ २

बाणोंके मारे योधा पृथ्वी पर गिरि गिरि परतेहैं और फिरि उठि उठि कर लरते

हैं मरते नहीं हैं अनेक प्रकारकी माया करते हैं देवता डरते हैं क्योंकि राक्षस तो चौदह सहस्र हैं और श्रीरघुकुलमणि रामचन्द्र अकेलेही हैं इस प्रकार देवताओं को भयभीत देखि कर मायानाथ माधव स्वामी ने बड़ा कौतुक किया कि समस्त शत्रु एक दूसरेको रामही देखनेलगे और परस्परही संग्राम करिके सबके सब नाश होगये ४ एकको एक राम राम पुकारि कर जो मारते हैं और मरते हैं ताते सबके सब निर्बाण पद पाते हैं इस प्रकारका उपायकरिके कृपा निधानस्वामीने क्षण मात्रही में समस्त शत्रु मारि गेरे तबतो हर्षित होकर देवता पुष्प बर्षाने लगे और आकाश में गहगहे बाजे बजाने लगे और रामचन्द्र की स्तुति कर अपने अपने बिमानों पर शोभा देते अपने अपने लोकों को गये ॥ २ ॥

जब रघुबीर समर रिपु जीते। सुर नर मुनि सबके भय बीते १
तब लक्ष्मण सीतहिं लै आये। प्रभु पद परत हर्षि हियलाये २
सीता निरखि श्याम मृदु गाता। परम प्रेम लोचनन अघाता ३
धुवां देखि खर दूषण केरा। सूर्पनखा तब रावण प्रेरा ४
बोली बचन क्रोध करि भारी। देश कोश की सुरति बिसारी ५
करसि पान सोवसि दिन राती। सुधिन तोहिं शिरपरआराती ६
राज्यनीति बिनु धन बिन धर्मा। हरिहिं समर्पे बिनसतकर्मा ७
प्रीति प्रणय बिन मदते गुनी। नाशहिं बेगि नीति असिसुनी ८
दो० सभा माझ्र ब्याकुल परी बहु प्रकार करि रोय।
तोहिं जियत दशकन्धर मोरि कि अस गति होय ॥ ३ ॥

जब श्री रामचन्द्रने संग्राममें समस्त शत्रु जीति लिये तबतो देवता मनुष्य मुनीश्वर सबहीके भय बीति गये १ और लक्ष्मणभी सीताको रामचन्द्रके पास ले आये और दंडवत प्रणाम किया रामचन्द्रने अपने पैरों परते उनको देखि कर हृदयसे लगा लिया २ सीताको रामचन्द्र का परममनोहर श्यामल कोमल अंग देखि देखि कर बड़ा प्रेम बढ़ता है और नेत्र देखने से नहीं अघाते हैं ३ सूर्पनखा रांड़ ने खर दूषण का सेना समेत धुवां देखिकर लंकामें जाकर रावणको पुकारा ४ बड़ाही क्रोध करिके बोली कि अरे रावण देश कोशकीतो तैने एक अंग सुरति बिसारि दीन्ही ५ दिन राति मदिरा पान करिके अचेत सोता रहता है और जो परम प्रबल शत्रु शिर पर आ पहुंचा है उसकी तुझको कुछभी सुधि संभार नहीं है ६ बुधजनोंने सत्य कहाहै कि नीति बिनातो राज्य और धर्म बिना धन तैसेही हरि भगवानके समर्पण बिना किये समस्त सत्कर्म नाशवानही होतेहैं श्रीमद्भागवते तपस्विनोदानपरायशस्विनोमनस्विनो मंत्रविदःसुमंगलाः क्षेमंनविंदंतिबिनायदर्पणंतस्मै सुभद्रश्रवसेनमोनमः ७ ऐसेही नम्रता

बिना प्रीति और अभिमान ते गुणोंका नाश होजाता है नीतिशास्त्र में ऐसा सुना है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ सभाके बीचमें व्याकुल होकर और उच्चस्वर से रोकर गिरिपरी और कहने लगी कि अरे रावण तेरे जीते जी क्या मेरी ऐसी दुर्दशा होजावे ॥ ३ ॥

कह लंकेश कहसि किनिबाता । केहिं तव नाशा कान निपाता १
अवध नृपति दशरथ के जाये । पुरुष सिंह बन खेलन आये २
अतुलितबलप्रताप द्वयभ्राता । खल बधरतसुरमुनिसुखदाता ३
शोभाधाम राम अस नामा । तिहिं केसंगयक नारि ललामा ४
रूपराशि बिधि नारि संवारी । रति शतकोटि तासुबलिहारी ५
तासु अनुज काटे श्रुति नाशा । सुनि तब भगनी करपरिहासा ६
खर दूषण सुनि लगे पुकारा । क्षणमहंसकल कटकउनमारा ७
खर दूषण त्रिशिरा कर घाता । सुनिदशशीश जरे सब गाता ८
दो० सूर्पनखहिं समुझाइ करि बल बोलेसि बहु भांति ।
गयउ भवन अति सोच बस नींद परी नहिं राति ॥ ४ ॥

तब तो लंकेश्वर रावण बोला कि तू बात क्यों नहीं कहती है बता तो यह तेरे नाक कान किसने काटेहैं १ यह सुनि कर सूर्पनखा बोली कि अयोध्या के राजा दशरथ के पुत्र जिनका तेरा राजा अनरण्य के समय से बैर चला आता है वे बड़े पुरुष सिंह महाबीर हैं दंडक बनमें आयेहैं २ अतोल जिनका बल और अतोल प्रताप दोभाई हैं राक्षसों हीको मारते फिरते हैं देव, मुनि गणों के रक्षक हैं श्रीमद्रामायणे ॥ तरुणौरूप संपन्नौसुकुमारौमहाबलौ पुंडरीकबिशालाक्षौचीरकृष्णाजिनांबरौ फलमूलाशनौदांतौतापसौ ब्रह्मचारिणौ पुत्रौदशरथस्यैतौभ्रातरौरामलक्ष्मणौ ३ उनमें शोभाका धाम जोबड़ा भाई है उसका राम ऐसानामहै उसके साथ परमसुन्दरी एक स्त्रीहै ४ बिधाताने समस्त रूपकी राशिही बनाईहै शतकोटि रतिकी सुन्दरता तो उसकी नोछावरिहैं ५ उसरामके छोटेभाई लक्ष्मणने मेरेकान नाक काटेहैं सो केवल तेरी भगनीही जानिकर यह परिहास कियाहै ६ खरदूषण सुनिकर मेरी पुकार लगे उनकोसेना समेत रामनेनाश करदिया तबमैं तेरेपास आईहूं ७ इसप्रकार खरदूषण त्रिशिराकाबध सुनतेही तोरावणकेसबअंग जरिउठे ॥ ८ ॥ दोहा ॥ ऊपर मनसे सूर्पनखा को समुझाकर उससे अनेक भांतिके बल बोलिकर घरको चलागया परंतु अत्यन्त सोचके मारे रातिभर उसको नींद नहीं परी ॥ ४ ॥

सुर नर असुर नाग जगमाहीं । मोरे अनुचर समकोउ नाहीं १
खरदूषण मोहिं सम बलवंता । तिनहिं कोमारै बिनुभगवंता २

सुर रंजन भंजन महि भारा । जो जगदीश लीन्ह अवतारा ३
तो मैं जाइ बैर हठि करिहौं । प्रभु शरते भवसागर तरिहौं ४
होइहि भजन न तामस देहा । मन क्रम बचन मंत्र दृढ़ येहा ५
जो नररूप भूतसुत कोऊ । हरिहौं नारि जीति रणदोऊ ६
चला अकेल यान चढ़ि तहंवा । बस मारीच सिंधु तट जहंवा ७
यहां राम अस युक्ति बनाई । सुनहु उमा सो कथा सुहाई ८
दो० लक्ष्मण गये बनहिंजब लेन मूल फल कंद ।
जनकसुता सन बोले बिहसि कृपा सुखवृंद ॥ ५ ॥

अब रावण परा परा यह सोचता है कि जितने बलवान देवता, मनुष्य असुर, नाग इस संसार में हैं उनमें से मेरे अनुचरों के भी तो समान कोई नहीं है १ खरदूषण तो मेरेभाई मेरेही समान बलवान रहैं उनको बिष्णु भगवान के बिना और कौन मारि सकता है २ सो जो कदाचित् देवताओं की रक्षा और पृथ्वी के भार उतारने को सर्वेश्वर भगवान बिष्णुहीने अवतार लियाहै तो तो मैं हठकरिके उनसे बैरही जाकरूंगा क्योंकि स्वामी के बाणों से मारकर संसारसागर से पार होजाऊंगा ३ । ४ भजनतो इस तामसीदेह से होनहीं सकैगा तन मन बचन से यही दृढ़ मंत्र ठीक है ५ और जो मनुष्य रूप कोई प्राकृतराजकुमार हैं तौउनकी भार्य्याको हरिलूंगा और संग्राम में भी उनको जीतिहीलूंगा ६ ऐसा निश्चय करिके अकेलाही रथको जोति तहां को चला जहां समुद्र के तट पर मारीच नाम राक्षस रहता है ७ अबयहां रामचन्द्र ने जैसी युक्ति बनाई राखी सो हेपार्बती तुम सुहाई कथा सुनो ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जासमय लक्ष्मण कन्द, मूल, फल लेनेको बन में गये तासमय जनकात्मजा श्रीजानकी से हंसिकर कृपा सुखसागर श्रीरामचन्द्र बोले५

सुनहु प्रियाब्रतरुचिर सुशीला । मैंकछु करबललित नरलीला १
तुम पावक महंकरहु निवासा । जबलगिकरहुं निशाचरनाशा २
जबहिंराम असकहाबखानी । प्रभुछबिधरिहिय अनलसमानी ३
निजप्रतिबिम्बराखि तहं सीता । तैसिहि शीलहृदय सुपुनीता ४
लक्ष्मणहूं यह मर्म न जाना । जो कछु चरित रचा भगवाना ५
दशमुख गयउ जहां मारीचा । नाय माथ स्वारथरत नीचा ६
नवनि नीचकी अति दुखदाई । जिमि अंकुश धनुउरगबिलाई ७
भयदायक खलकी प्रियबानी । जिमि अकालके कुसुमभवानी ८

दो० करि पूजा मारीच तब सादर पूछी बात।
कवन हेतु मन व्यग्र अति एकसर आयउ तात॥ ६॥

सुनो हे रुचिरव्रता सुशीला प्रिया मैं अब कुछ अति ललित नरनाट्य लीला किया चाहता हूं १ तुम कुछकाल अग्नि में निवास करो जब तक मैं इन दुष्ट राक्षसों का सेनासमेत नाशकरूं २ जभी रामचन्द्र ने सीता से ऐसा समुझाकर कहा तभी अपने स्वामी की छबि को हृदय में धारण करिके अग्नि में समायगई ३ अपना प्रतिबिम्ब मायारूप सीता तहां छोड़िगई तैसाही रूप तैसाहीशील तैसाही बिशुद्ध हृदय ४ यह जो कुछ चरित्र राम ने रचा उसका भेद लक्ष्मण ने भी नहीं जाना ५ तब तो दशग्रीव रावण तहां पहुंचा जहां मारीच रहे जातिहो स्वार्थ साधक रावण ने मारीच को उलटा शीश नवाया अर्थीदोषंनपश्यति ६ नीच जाति पुरुषकी नवनि भी दुखदाईही होती है जैसे अंकुश नविकरही हाथी को मारता है और धनुष नविकर लक्ष्य को बेधता है सर्प नविहोकरकाटता है बिलाई नविहोकर चूहेकोपकड़ती है ७ दुष्टके प्यारे बचन भी भयदायकही होते हैं जैसे अनऋतु के हे पार्वती पुष्पहोतेहैं ८ दोहा॥ तबतो मारीच ने अपने स्वामी रावण का पूजन करिके आदरसमेत पूछा कि आपका मन व्याकुल कैसा है और आप मेरे पास अकेले कैसे चले आये ६॥

दशमुख सकलकथा तेहिआगे। कहीसहित अभिमान अभागे १
होहुकपटमृग तुम छलकारी। जिहिंबिधिहरिआनहु नृपनारी २
तेहिं तब कहा सुनहु दशशीशा। ते नररूप चराचर ईशा ३
तासन तात बैर नहिं कीजै। मारे मरिय जियाये जीजै ४
मुनि मख राखन गयेकुमारा। बिनु फरशर रघुपति मोहिं मारा ५
शतयोजन आयउं क्षण माहीं। तिन सन बैर किये भलनांहीं ६
भइ मति कीट भृंग की नाई। जहं तहं मैं देखहुं दोउ भाई ७
जो नर तात तदपि अतिशूरा। तिनहिं बिरोधन पाइहि पूरा ८
दो० जिहिं ताड़िका सुबाहुहति खंडेउ हर कोदंड।
खरदूषण त्रिशिरा बधेउ मनुज कि अस बरिबंड॥ ७॥

तबतो दशग्रीव रावण ने सूर्पनखाका बिरूप करना और खरदूषण त्रिशिरा कावध राम लक्ष्मण के हाथों से मारीच के आगे सबकहा और अपना मनोऽर्थ भी अभिमान समेत कहि कर बोला कि तुम मेरे साथ चलिकर छलकारी कपट रूप मृग हो जाओ। जिससे मैं शत्रु की भार्य्या को हरि लेआऊं १।२ तब मारीच ने कहा सुनो हे रावण ते दोनों भाई मनुष्य रूप धारण किये चराचरनायक जगज्जन्मादिकारण बिष्णु

भगवानही हैं मारते ॥ यतःसर्वाणिभूतानिभवंत्यादियुगागमेयस्मिंश्चप्रलयंयांतिपुनरेवयुगक्षये अर्थात् जिससे समस्त जीव सृष्टि की आदि में प्रकट होते हैं और जिस में कल्पांत काल में फेरि लीन होजाते हैं ३ ताके साथ हे तात बैर करना न चाहिये जिसके मारे से समस्त प्राणियों को मरने और जिवाये से जीने परता है ४ मैं उनको भलेप्रकार से जानता हूं कि येही दोनोंभाई बिश्वामित्र मुनिकी यज्ञकीरक्षकोगये रहैं तहां बिनफरके बाण से इन्हीं राम ने मुझको ऐसा फेंका कि सैकड़ो योजन यहां समुद्र के तीर आपरा ताते उनके साथ बैरकरना भला नहीं है ५ । ६ मेरी मतितो तबसे भृङ्गी के पकरेहुये झींगुर कीट विशेष की नाईं होगई है कि जहां तहां मैं उन्हींदोनो भाइयों को देखता हूं ७ और जो मनुष्य ही हैं तौभी बड़े शूर हैं उनसे तो बैरकर कदापि पूरा नहीं पड़ेगा ॥ ८ ॥ दोहा ॥ मेरी बुद्धि में तो उनका मनुष्यहोना नहीं आता है जिसने बालपनही में ताड़िका और सुबाहु को मारिकर महादेव के धनुष को खंडन किया और अब खरदूषण त्रिशिरा को सेना समेतअकेलेही मारा भलामनुष्यभी कहींऐसेप्रबल प्रचंडहोतेहैं ॥ ९ ॥

जाहुभवन कुल कुशल बिचारी । सुनत जरा दीन्हेसि बहुगारी १
गुरुजिमि मूढ़करसि ममबोधा । कहसिनमोहिं समान कोयोधा २
तबमारीच हृदय अनुमाना । नवहिं बिरोधे नहिं कल्याणा ३
शस्त्री मंत्री प्रभु शठ धनी । बैद्य बंदि कबि भानस गुनी ४
उभय भांति देखा निजमरणा । तब ताकेसि रघुनायक शरणा ५
उतरदेत मोहिं बधिहि अभागी । कसन मरहु रघुपति शरलागी ६
असउर आनि दशानन संगा । चला रामपद प्रेम अभंगा ७
मन अति हर्ष जनाव न तेही । आजु देखिहौं परम सनेही ८

प्रेमछंद ॥

निज परम प्रीतम देखि लोचन सफल करि सुख पाइहौं ।
श्रीसहित अनुज समेत कृपा निकेत पद मन लाइहौं ॥
निर्बाण दायक क्रोध जाकर भक्तिऐसहि बशकरी ।
निज पाणि शरसंधानि सोमोहिं बधिहि सुखसागरहरी ॥

दो० ममपाछे धरधावत धरे शरासन बान ।
फिरिफिरि प्रभुहिं बिलोकिहौं धन्यनमोसम आन ॥ ८ ॥

ताते अपने कुलकी कुशल बिचारिकर घरहीको लौटिजाओ ऐसा हित उपदेश

सुनतेही रावण जरिही तो उठा औ उसको दुर्बचन कहनेलगा सत्यहै ॥ उपदेशोहि मूर्षाणांप्रकोपायनशांतये पय:पानंभुजङ्गानां केवलम्विषबर्द्धनम् ॥ १ ॥ गुरूकीनाई मेरा प्रबोध तो करताहै मेरेसमान योधा नहीबताता २ तबतो मारीचने हृदय में बिचारकिया कि इन नौ के साथ बैर बिरोध करने से कल्याण नही होता है ३ शस्त्र धारी १ मंत्री २ स्वामी ३ शठ ४ धनवान ५ बैद्य ६ पूज्य ७ कबि ८ मानसगुणी ९ सो जब मारीच ने दोनोंभांति से अपना मरणही देखा तबरघुनायक श्रीरामचंद्र ही की शरणतकी । ४ । ५ उत्तरदेतेतोयहदुष्टही मेरेको मारिडारैगा ताते मुकुन्दरघुनायक ही के बाण से क्योंनमरूं ६ ऐसाजीमें बिचारिकर रावण के साथ चलदिया और रामही के चरणों में उसका अभंग प्रेम बढ़ा ७ मनमें जो अति हर्ष है सो रावण को नहीं जनावता है कि धन्य मेरे भाग्य आज अपने परमसनेही रामको नेत्रोंभरि कर देखूंगा । ८ ॥ आज अपने परमप्रियतम को देखिकर नेत्रों को सफलकरिके सुख पाऊंगा और अपनी पुरुषकाररूप श्रीसीता और लक्ष्मण समेत कृपानिकेत स्वामी रामचन्द्रके पदपङ्कजों में मन लगाऊंगा निर्बाण कैवल्य मोक्षदायक तो जिन स्वामी का क्रोधही है और भक्तिके अवश्य बश हैं ऐसे सुखसागर स्वयंहरि अपने अभय दायककरकमलोंसेबाण संधानकरके मेरावधकरैंगे ॥ दोहा ॥ जिनस्वामीको बिधि शिव सनकादिक ध्यानमें खोजतेहैं सोस्वामीमेरे पीछे धनुष बाणलिये दौरतेआवेंगे मैं भागता जाऊंगा और फिरिफिरिकर देखूंगा मेरेसमानआजदूसरा कौन धन्य हैं ॥ ८ ॥

सीता लषण सहित रघुराई । जेहिं बन बसहिं मुनिन सुखदाई १
तेहिं बननिकट दशाननगयऊ । तबमारीच कपटमृगभयऊ २
अति बिचित्र कछुबरणिनजाई । कनक देहमणि रचित बनाई ३
सीता परम रुचिर मृग देखा । अंग अंग सुमनोहर वेषा ४
सत्यसंध प्रभु बधि करि येही । आनहु चर्म कहा बैदेही ५
मृगबिलोकि कटि परिकरबांधा । करतल चाप रुचिर शरसांधा ६
प्रभु लक्ष्मणहिं कहासमुझाई । फिरत बिपिननिशिचरसमुदाई ७
सीता केरि करेहु रखवारी । बुधि बिबेक बल समय बिचारी ८
दो० अस कहि चले तहां प्रभु जहां कपट मृग नीच ।
देव हर्ष बिस्मय बिवश चातक बर्षा बीच ॥ ९ ॥

सीता लक्ष्मण समेत मुनिजनों के आनंद दायक श्रीरामचंद्र जिस बन में बास करते रहैं उस बन में जब रावण पहुंचा तब तो मारीच कपटका मृग होगया १ । २ अति चित्र बिचित्र कुछकहाही नहीं जाताहै सुबर्णकी देह, नील,पीत, अरुण, हरित स्वेत श्याम मणि रचित बनाई ३ सीताने जो परमसुन्दर मृगदेखा जिसके अंग अंग

का अति मनोहर बेष है रामचंद्रसे कहा ॥ एनंपश्यजगन्नाथ बहुजन्मापराधिनं ४ ॥ हे सत्यसंकल्प स्वामी इसमृग को मारिकर इसका चर्म ले आइये ५ रामचंद्र ने उस मृग को देख कर कटि देश में परिकर बांधा और हाथ में धनुष तिसमें सुन्दर बाण संधान किया ६ लक्ष्मणसे समझा कर कहा कि अब इस बनमें राक्षस बहुत फिरतेहैं ७ जबतकमैं इसमृग को मार न लाऊं तबतक सीताकी बडी चौकसाई से बुद्धि, बिबेक, बलसे समय को बिचारि कर रक्षा करना क्योंकि अब हम राक्षसों से पूरा वैर बांधि चुकेहैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ ऐसे कहिकर रामचंद्र तो जहां कपटरूप मृग मारीचहै तहां को चले और देवता हर्षविस्मय के वशहुये जैसे बर्षाकाल में पपीहा होता है ६ ॥

प्रभुहिं बिलोकि चला मृग भाजी । धाये राम शरासन साजी १
निगम नेति शिव ध्यान न पावा । माया मृग पाछे सो धावा २
कबहुं निकट पुनि दूरिपराई । कबहुंकि प्रकट कबहुं दुरिजाई ३
प्रकटत दुरत करत छलभूरी । यहिं बिधि गयउ प्रभुहिं लैदूरी ४
तबतकि राम कठिन शरमारा । परा धरणि करि घोरचिकारा ५
लक्ष्मणकर प्रथमहिं लै नामा । पाछेसुमिरेसि मन महं रामा ६
प्राण तजत प्रकटेसि निजदेहीं । सुमिरेसि रामसहित बैदेहीं ७
अंतर प्रेम तासु पहिचाना । मुनि दुर्लभ गतिदीन्हि सुजाना ८
दो० बिपुल सुमन सुर बर्षहिं गावहिं प्रभु गुणगाथ ।
निजपद दीन्ह असुर कहं कृपासिंधु रघुनाथ ॥ १० ॥

रामचंद्र को अपने ऊपर आते देखि मारीच मृग भागा और धनुषमें बाणसंधानि कर रामचंद्र उसके पाछेदौरे १ जिस स्वामीकी अपार महिमा को बेदनेति करकहते हैं और शिवजी जिसको ध्यान में भी कभी नहीं पाते हैं सोई स्वामी कपट रूपी मृगके पाछे दौरता चला जाता है २ ॥ त्यक्त्वासुदुस्त्यजसुरेप्सितराज्यलक्ष्मींधर्मिष्ठ आर्य्यबचसायदगादरण्यं मायामृगंदयितयेप्सितमन्वधावद्वन्दे महापुरुषतेचरणारबिंदम् अबकभीतोमृग निकट होताहै कभी दूरि जाताहै कभी प्रगटता है कभी छिपजाताहै ३ ऐसेही प्रगटते दुरते अनेक छलकरतेकरते रामचन्द्र को आश्रमसे बहुत दूरलेगया ४ तबतो रामने तकिकर महा कठिन बाण से उसको मारा घोर चिक्कारकरि पृथ्वी पर गिरिपरा ५ प्रथम तो पुकारिकर कहा हा लक्ष्मण हा लक्ष्मण तिस पीछेराम राम मंद स्वर से स्मरण करनेलगा ६ प्राण तजते समय अपनी राक्षसी ही देह प्रगट कर दी और सीता समेत रामका स्मरण किया ७ उसका अंतरंग प्रेम पहिचानकर सुजान शिरोमणि रामने मुनि दुर्लभ गति उसको देदी ८ ॥ दोहा ॥ तब तो देवता

पुष्प वर्षाने लगे और रामचंद्र के गुणगण गाने लगे कि अपना निज पद इस अधम असुर को देदिया ऐसा कृपासिंधु दूसरा और कौन है॥ १०॥

खल बधि तुरत फिरे रघुवीरा। सोह चापकर कटि तूणीरा १
आरत गिरा सुनी जब सीता। कह लक्ष्मण सनपरम सभीता२
जाहुबेगि संकट तव भ्राता। लक्ष्मण बिहंसि कहासुनु माता३
भृकुटि बिलास सृष्टि लय होई। सपनेहुं संकट परै कि सोई ४
सौंपिगये रघुपति मोहिं थाती। जो तजिजाहुं तोषनहिंछाती५
मर्म बचन जब सीता बोली। प्रभु प्रेरित लक्ष्मणमति डोली ६
चहुं दिशि रेखा खींचि अहीशा। बार बारनायउ पद शीशा ७
बन दिशि देव सौंपि सबकाहू। चले जहां रावण शशि राहू ८
दो० एकडरत डर रामके दूजे सीय अकेलि।
लषण तेज तन हतभयउ जिमि डाढ़ी दव बेलि॥ ११॥

खल मारीच को मारि कर तुरन्तही रघुवीर श्री रामचन्द्र तहांते फिरे हाथ में धनुष लियेहैं और कटिमें तूणीर कसेहैं १ यहांजब हा लक्ष्मण हा लक्ष्मण ऐसी आरत वाणी सीताने सुनीतबतो परमसभीतने लक्ष्मणसे कहा २ बेगि जाहु हे लक्ष्मण तुम्हारे भाई संकटमें परे तुमको पुकारतेहैं लक्ष्मणने हंसकर कहा सुनो हे माता ३ जिसकी भृकुटीके बिलासहीसे समस्तसृष्टिलय होजातीहै सोस्वामी कहींस्वप्नमें भी संकटमें पर सक्ताहै ४ औरमेरेको रामचन्द्र स्वामी थाती सौंपिगयेहैं जो मैं तुमको छोड़िकर चला जाऊं तोमेरे हृदयमें संतोष नहीं होताहै ५ जबसीतानेदेखा कि ये किसीभांति नहीं जातेहैं औरमेरेको अपना पूर्व संकल्प पूरा करना है जो मैंने सनकादिकों केशाप के उद्धारके लिये जयबिजय अपने द्वारपालोंसे कियाहै औरउसी निमित्त अवतार लेकर इसबनमें आईहूं सो अवश्य जैसेहोगा तैसेपूरा करूंगी सबप्रकारके कष्ट कलंकभी सहूंगी मेरेस्वामी रघुवंश बिभूषण सब संवारि लेवेंगे क्योंकि इसअवतारमें सबमेराही चेष्टित है॥ कृत्स्नं रामायणंकाव्यंसीतायाश्चरितंमहत्॥ यह बिचारि कर परमअबाच्य बचन सीताने जब लक्ष्मणसे कहे तबतो अंतर्यामी सर्वेश्वर स्वामी रामेच्छासे लक्ष्मण की बुद्धि चलि गई ६ उठिकर आश्रम की चारों दिशाओंमें अपने धनुषकी रक्षारूपरेखा करदी औरसीताको प्रणाम किया ७ बनदेव दिशिदेव सबको सौंपिकर रावण कलंकी चन्द्रमा और राहुरामके पास चलिदिये॥ ८॥दोहा॥ एकतो रामचंद्र के डरसे डराते हैं दूसरेसीता अकेलीहै लक्ष्मणके तनका तेज ऐसे हत होगयाहै जैसे दावाग्निसे बेलि जरि जाती है॥ ११॥

शून्य भवन दशकंधर देखा। आवा निकट यती के बेषा १
जाके डर सुरअसुर डेराहीं। निशि न नींद दिन अन्न न खाहीं २
सोइ दशशीश स्वान की नाईं। इत उत चितै चला भंडिहाई ३
जिमि कुपंथ पग दिये खगेशा। रहन तेज बल बुधि लवलेशा ४
करि अनेक बिधि छल चतुराई। मांगी भीख दशानन जाई ५
अतिथिजानिसियकंदमूलफल। दिनलागितेहिंकीन्हबहुरिछल ६
कह दशमुख सुनु सुन्दरि बानी। बांधी भीख न लेहुं सयानी ७
बिधि गति बामकाल कठिनाई। रेखलांघि सिय बाहेर आई ८
दो० बिश्व भरनि अघदल हरनि करनि सकल सुर काज।
जाना नहिं दशशीश तेहिं मूढ़ कपट के साज ॥ १२ ॥

जब रावणने सूना आश्रम देखा तबतो यती त्रिदंडीका वेष धारण करिके सीता केनिकट आया १ देखो जिसरावण लोक रावणके भयसे सुर असुर सभी डरतेरहैं रात्रि कोतो नींद नहीं आती रहै और दिनको पेटभरि अन्ननहीं खाते रहैं २ सोई दश मौलि रावण कुत्तेकी नाईं इधर उधर झांकता भंडिहाई चलाजाताहै ३ जैसे कुमार्ग में चलनेसे हेगरुड़ तेजबुद्धि बलका लवलेश नहीं रहता है तैसी ही रावणकी दशा होगई ४ अनेक भांतिकी छलकी चतुराई करिके अंतकोभीखही जा मांगी ५ तब तो सीता उसको अतिथि संन्यासी जानि कर कान्द,मूल, फल भिक्षादेने लगी उसने फेरि छलकिया ६ बोला कि हे सुन्दरीमैं संन्यासीहूं रेखासे बंधी भिक्षा नहीं लेताहूं ७ बिधि-कीबामगति और कालकी बिपरीततासे रेखा लांघिकर सीताबाहर आगई ॥ ८ ॥ दोहा ॥ बिश्वकी भरनहारी अघरूप राक्षसोंके दलकी हरनहारी समस्त देवताओंके कार्य्यकी करनहारी ऐसी सर्बेश्वरी सीता को रावणने न जाना क्योंकि काल के वश अपनेही कपटके साजके अभिमान में भूला फिरताहै ॥ १२ ॥

नानाबिधि कहिकथा सुनाई। राज नीति भय प्रीति दिखाई १
कह सीता सुनु यती गुसांई। बोलसि बचन दुष्ट की नांई २
तबरावण निज रूप दिखावा। भई सभय जबनाम सुनावा ३
कह सीता धरि धीरज गाढ़ा। आवत प्रभु रे खल रहु ठाढ़ा ४
जिमिहरिबधुहिं क्षुद्रशशचाहा। भयसिकालबश निशिचरनाहा ५
बायसकरै किखगपतिसमता। सिंधुसमानहोहिकिमिसरिता ६

खरिकिहोइ सुरधेनु समाना । जाहु भवन निज सुनु अज्ञाना ७
सुनतबचन दशशीशलजाना । चरणबन्दिमन अति सुखमाना ८
दो० क्रोधवन्त तब रावण लीन्हेसि रथ बैठाइ ।
चला गगन पथ आतुर भयबश हांकिन जाइ ॥ १३ ॥

यतीके बेषमेंही अनेक प्रकार की कथा रावण ने सीताको कहिसुनाई राजनीति भय प्रीति दिखाई १ जब सीता ने कहा कि रे यती गुसांई तू कैसे दुष्टों के सदृश बचन बोलता है २ तब तो रावण ने अपना दशग्रीव रूप दिखा दिया और कहा कि मैं लंकेश्वर रावणहूं यह सुनतेही सीता भयभीत होगई ३ फिरभी सीताने दृढ़ धीरज बांधिकर कहाकि अरेदुष्ट खड़ारहु मेरेप्रभु राघवेंद्र स्वामी आतेहैं ४ जैसे शार्दूल सिंह की वधू को परम छुद्र शृगाल चाहै ऐसेही तेरा काल तेरे मुखसे कहाता है ५ महानीच वायस काग कहीं गरुड़ पक्षिराज की समता कर सकता है और अपार समुद्र के समान कहीं छुद्र नदी होसक्ती है ६ रासभीगधही कामधेनु के समान कैसे होसक्ती है ताते सुन रे अज्ञान कुशल चाहेतो अपने घरही चलाजा ७ ऐसे सीता के बचन सुनिकर रावणलज्जित होगया और मनकरिके सीताके चरणोंको प्रणाम किया उनके उसउपदेशको अतिही हितमाना ८ ॥ दोहा ॥ फिरितो रावण ने अपना उद्धार सीताके हरणही में जानकर क्रोधवन्त होकर बलात्कार से सीताको उठाकर रथ में बैठारि लिया और अति आतुर आकाश मार्ग में चला अति भय के मारे रथ हांका भी नहीं जाता है बनदेव और दिशिदेव सब रावण की भयके मारे देखतेही रहिगये शल्य के सामने जैसे द्रौपदी के हरण में धौमि पुरोहित देखते रहें ॥ १३ ॥

हा जगदीश देव रघुराया । केहिं अपराध बिसारेहु दाया १
आरत हरणशरण सुखदायक । हारघुकुल सरोजदिननायक २
हालक्ष्मण तुम्हार नहिं दोषा । सो फलपायउं कीन्हेउं रोषा ३
कैकेयी मन जोकछु रहेऊ । सोबिधि आजु मोंहि दुख दहेऊ ४
पंचवटी के खग मृग जाती । दुखी भये बनचर बहु भांती ५
बिबिधि बिलाप करति बैदेही । भूरि कृपा प्रभु दूरि सनेही ६
बिपतिमोरि को प्रभुहिं सुनावा । पुरोडास चह रासभखावा ७
सीता कर बिलाप सुनि भारी । भये चराचर जीव दुखारी ८
दो० बहु बिधि करत बिलाप सिय लियेजात दशशीश ।
डरत न खल बर पाइभल जो दीन्हेउं अज ईश ॥ १४ ॥

हा सर्वेश्वर जगदीश्वरोंके देव हा रघुराज कौन अपराध से अपनी दयाबिसारतेहो १ हा आरतिहरण हा शरणसुखदायक हा रघुवंशकमल बन के दिननायक २ हा लक्ष्मण तुम्हारा कुछभी दोष नहींहै जैसा मैंने तुम्हारा अपचार किया तैसाफल पाया ३ कैकेयीके मनमें जो मनोऽर्थ रहा सो आज दैवने मेरेको दुखदिया ४ ऐसा सीताका बिलाप सुनकर पंचबटी के खगमृग जल जन्तु सब दुखी होगये ५ अनेक प्रकार के बिलाप सीता करती जातीहैं और भूरि कृपाकर स्वामी बड़ीदूर हैं ६ मेरी यह बिपत्ति स्वामी को कौन सुनावै देखो पुरोडास यज्ञभाग रासभ गर्दभ खाया चाहता है ७ ऐसा सीताका बिलाप सुनकर चराचर जीव सबदुखीहोगये ८ ॥ दोहा ॥ अनेक भांति बिलाप सीताकरती जातीहैं और रावण लिये जाताहै दुष्टडरतानहींहै बड़े२ बर जो ब्रह्माशिव ने दियेहैं उनके भरोसेपर ॥ १४ ॥

गृद्धराज सुनि आरत बानी। रघुकुल तिलक नारि पहिचानी १
अधम निशाचर लीन्हे जाई। जिमिम्लेच्छ बशकपिलागाई २
अहह प्रथम बल ममतनु नाही। तदपि जाइ देखौं बलताही ३
सीतापुत्रि करसि जनित्राशा। करिहौं यातुधान करनाशा ४
धावा क्रोधवंत खगकैसे। छूटै पवि पर्वत पर जैसे ५
रेरे दुष्ट ठाढ़ किनि होही। निर्भय चला न जानेसि मोही ६
आवत देखि कृतांत समाना। फिरिदशकंध करत अनुमाना ७
कीमैनाक कि खगपति होई। ममबलजान सहित पतिसोई ८
दो० ममभुजबलनहिं जानत आवततपनि सहाइ।
समरचढ़ेते यहपुनि जियतननिजथल जाइ ॥ १५ ॥

गृद्धराज जटायूने आरतबाणी सुनिकर सीता को पहिचानि लिया कि यह तो रघुकुल तिलक श्रीरामचंद्रही की भार्य्या है १ देखो अधम राक्षस इस को लियेजाता है जैसे म्लेच्छ के बश में कपिलागाइ होती है २ हाकष्ट पहिलाबल मेरे शरीर में इससमय नहीं है तो भी चलिकर इसदुष्ट के बल को देखूंगा ३ दूरिही से पुकारि कर कहा हे सीता पुत्री तू भयमतिकर मैं अभी इस दुष्ट का नाशकरूंगा ४ ऐसे कहिकर क्रोधभरा जटायू रावण के ऊपर कैसा बेग से दौरा है जैसे इन्द्र के हाथ से छूटाबज्र पर्वत परगिरता है ५ दूरहीसे रावणको प्रचारि कर कहा अरेदुष्ट अरेदुष्ट खड़ा क्यों नहीं होता है निर्भय कैसा चलाजाताहै क्यातू मेरेको नहीं जानता है ६ इस प्रकार कालही के समान उसको अपनेऊपर आते देखिकर रावणनेफिरिकर देखा और बिचार किया ७ या तो यह मैनाकपर्वतया पक्षिराज गरुडहैसोगरुडतो मेरे बल को अपने स्वामी बिष्णु समेत जानता है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ हां यह सूर्य्य का रथी

अरुण होगा मेरे बल को नहीं जानता है सूर्य्यबंशीराम की सहाय को आता है संग्राम करने से जीता अपने स्थान को कदापि नहीं जायगा ॥ १५ ॥

जाना जठर जटायू एहा । ममकर तीरथ छाड़िहि देहा १
सुनत गृद्ध क्रोधातुर धावा । कहसुनु रावण मोर सिखावा २
तजिजानकिहि कुशल गृह जाहू । नाहिं तो सत्य सुनहु बहुबाहू ३
रामरोष पावक अति घोरा । होइहि शलभ सकल कुल तोरा ४
उतर न देत दशानन योधा । तबहिं गृद्ध धावा करि क्रोधा ५
धरि कच बिरथ कीन्ह महि गिरा । सीतहिं राखि गृद्ध पुनि फिरा ६
दशमुख उठि कृत शर संधाना । गृद्ध आय काटे धनुबाना ७
चोंचिन मारिबिदारेसि देहीं । दंड एक भइ मूर्छा तेहीं ८
दो० जिहिंरावण निजबशकिये मुनिगण सिद्धसुरेश ।
तिहिं रावण सन समर अति धीर बीर गृद्धेश ॥ १६ ॥

जब निकट आया तब तो जाना कि यह तो वृद्धजटायू गृद्ध है मेरे करतीर्थ में प्राणत्याग करने को आता है १ यह सुनतेही गृद्ध क्रोधातुर दौड़ा और कहा कि हे रावण मेरासिखावन सुनो २ अभी कुछ नहीं बिगरा है जानकी को छोड़िकर कुशल मनाते अपने घरको चलेजाओ और जो नहीं मानोगे तो मैं तुमसे सत्य कहता हूं हे महाबाहु ३ रामचंद्र की परम प्रचंड क्रोधाग्नि में तेरासमस्त कुल शलभा हो जायगा ४ जब गृद्धराज ने देखा कि यह तो अपने बलके गर्व में कुछ उत्तरही नहीं देता है तब तो अतिही क्रोधकरिके रावण के ऊपर दौरा ५ उस को केश पकरि कर रथ से गिरा दिया सो पृथ्वीपर जापड़ा और सीता को पुत्री की नाई रथ से उठाकर पृथ्वीपर बैठारि कर रावण की ओर फिरा ६ रावण ने उठिकर ज्यों धनुष में बाण संधान किये त्योंई गृद्धराज ने उस के धनुष बाण तो सब काटिगेरे और अपनी चोंच से उस की देहीं ऐसी घायल करदी कि बर के प्रभाव से मरा तो नहीं परंतु मूर्छाहोगई ॥ ७ ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जिस महाबली रावणने अपने बशमें मुनीश्वर सिद्ध सुरेश कहैं इन्द्रयम बरुण कुबेर इत्यादि सबकरि लिये उसबली रावण के साथ जिसगृद्धराज ने युद्ध किया तो बड़ा धीर और बड़ाबीरही उसकोकहानाचाहिये १६ ॥

कीन्हेसि जब बहुयुद्धखगेशा । थकितभयउ तब जठर गृधेशा १
तब सक्रोध निशिचर खिसियाना । काढ़ेसिपरमकरालकृपाना २
काटेसि पंख परा खग धरणी । समुझि रामकी अद्भुत करणी ३

मन महं गृद्धपरम सुख माना । राम काज लागे मम प्राणा ४
सीतहिं यान चढ़ाइ बहोरी । चला उतायल त्रास न थोरी ५
करति बिलापजातिनभसीता । व्याध बिवश जिमि मृगीसभीता ६
गिरि पर बैठे कपिन निहारी । कहि हरिनामदीन्ह पटडारी ७
यहि बिधिसो सीतहि लैगयऊ । बन अशोकमहंराखतभयऊ ८
दो० जिहिं बिधि कपट कुरंग संगधायचले श्री राम ॥
सोइ छबिसीता राखि उर जपति रहतिहरिनाम ॥ १७॥

जबऐसा हेगरुड़ महा दारुणयुद्ध रावणके साथ बहुत कालतकक्रिया तबतोअति वृद्धगृद्धराज थकित होगया १ रावणनेउसके युद्धसेलज्जित होकर बड़ेक्रोधसे परम कराल अपना चन्द्रहास खड्ग काढ़ि कर उसके पंख काटि दिये गृद्धराज जयराम जयराम कहता हुआ पृथ्वीमें गिरिपरा रामचन्द्र की करणी को बिचिच समुझता हुआ २ । ३ अपने मनमें गृद्धराजने अतिही सुख माना कि धन्यमेरे भाग्य जोमेरे प्राण स्वामी प्राणपति के कामआये ४ रावण सीताको फिरि रथमें चढ़ाकर बड़ाउता-यल चला क्योंकि उसको गृद्धराजके युद्धसे बड़ीभय होगई है ५ अबसीता गृद्धराज पर कृपा कटाक्ष करिके बिलाप करती हुई आकाशमार्ग में चलीजाती हैं जैसीब्या-घा वसभीत मृगीहोतीहै ६ जब ऋष्यमूक पर्बत पर रावण का रथ पहुँचा तबतो सीताने सुग्रीवदि बानरों को उस पर्बत पर बैठादेखि करि कृपाकटाक्षसे हरिनाम उच्चारण करिके अपने कुछ बस्त्राभूषण तहांडारि दियेसोसुग्रीवने यत्नसे रखादिये ७ इस प्रकार रावण सीताको हरिलेगया और अशोक बाटिका में राखता हुआ ॥ ८॥ ॥ दोहा ॥ जिसभांति से कपट मृगके पीछे रामचंद्र धायेहैं सोई स्वामीकी छबिको हृदयमें राखिकर सीता सदाहरि के नामको जपती रहतीहै ॥ १० ॥

रघुपति अनुजहिं आवत देखी । मनमहं चिन्ताकीन्हि बिशेषी १
जनकसुता परिहरी अकेली । आयहु तात बचन ममपेली २
निशिचरनिकर फिरहिं बनमाहीं । मम मनसीता आश्रमनाहीं ३
अहह तात भल कीन्हेहुनाहीं । सियबिहीन ममजीवन काहीं ४
यहितेकवनिबिपति बड़िभाई । खोयहु सियहिं काननहिं आई ५
गहि पदकमलअनुजकर जोरी । कहेउनाथकछुमोरिन खोरी ६
अनुज समेत गये प्रभु तहंवां । गोदावरि तट आश्रम जहंवां ७
आश्रम देखि जानकी हीना । भयेबिकल जिमिप्राकृत दीना ८

दो० कानन रहेउ तड़ाग इव चकचकई सियराम।
रावण निशि बिछुरन कियो दुख बीते चहुंयाम॥ १८॥

रामचंद्र ने जो लक्ष्मणको आते देखा तो मनमें बड़ीही चिन्ताकरी और कहा १ किहेलक्ष्मण तुमने सीता कैसे अकेली छोंड़ी और मेरी आज्ञा भंग करिके कैसे चले आये २ राक्षसोंके समूह इस बनमें फिरते हैं मेरे मनमें तो ऐसा भासता है कि अबसीता आश्रममें नहींहै क्योंकिमैं जिस मृगके मारने को गयारहूं सो भी राक्षसही निकसा ३ हाकष्ट हेतात तुमने भलानहीं किया सीता रहित मेरा जीवन कैसे होगा ४ इससे भी बड़ी और कौनसी बिपत्ति होगी कि वनमें आकर सीता कोभी खोय बैठे ५ जब ऐसे रामचंद्रने कहा तबतो लक्ष्मणने रामचंद्र के दोनों चरणों पर हाथ धरि अंजुल जोरिकर कहा कि हेनाथ आप अंतर्यामी हैं मेरी इसमें कुछभी खोरि नहीं है ६ फिरितो लक्ष्मण समेत रामचंद्र तहां गये जहां गोदावरी गंगाके तीर आश्रमरहै ७ जबआश्रम जानकीविहीन देखा तबतो प्राकृत मनुष्यही की नाईं महा व्याकुल होगये॥ ८॥ दो० काननबनतो तड़ागसरोवरके समान रहै उसमें चक्र चकई के समान सीता राम स्वछन्द विहार करते रहे रावण रूपी निशाके आगमन से दोनों में बियोग होगया सो जब तक रावण रूपी रात्रीरही तबतक दोनों को चारों पहर दुखहीं में ब्यतीत हुये॥ १८॥

हा गुण खानि जानकीसीता। रूप शील ब्रत नेम पुनीता १
लक्ष्मण समुझाये बहु भांती। पूछत चले लता तरु पांती २
हे खगमृग हे मधुकर श्रयनी। तुम देखी सीता मृग नयनी ३
खंजन शुक कपोत मृग मीना। मधुप निकर कोकिलाप्रवीना ४
कुन्द कली दाड़िम दामिनी। कमलशरद शशिअहिभामिनी ५
बरुण पाश मनोज धनु हंसा। करिकेहरि निज सुनतप्रशंसा ६
सुनु जानकी तोहिं बिनु आजू। हर्षे सकल पाइ निज राजू ७
किमिसहिजातअनखतोहिं पाहीं। प्रियाबेगि प्रकटसिकसनाहीं ८
दो० फणि मणि हीन मलीन जिमि मीन त्यागि जिमि बारि।
तिमि ब्याकुल भये लषणतहं रघुवर दशा निहारि॥ १९

अबतो सर्बेच्च शिरोमणि सच्चिदानन्दघन सर्बेश्वरस्वामी रामचन्द्र प्राकृत मनुष्यों की नाईं सीताके बियोगमें बिलाप करने लगे हा समस्त गुणोंकी खानि हा जानकी हा सीते हा रूपशीले हा ब्रत नेमपुनीते तू कहां है १ ऐसा रामचंद्र को बिलाप करते देखिकर लक्ष्मणने बहुत भांति से जब समुझाया तबतो बनबेली और बृक्षावलियों

से परम अज्ञकी नाईं पूछते हुये चले २ हे बनके पक्षियों हे मृगों हे मधुकरों तुम ने कहीं सीता मृगलोचनी देखी है ३ हाय देखो आज ये ममोले और ये शुक ये कपोत ये मृग ये मीन ये मधुकर ये कोकिला ये कुन्दकी कली ये दाड़िम यहदामिनी ये शरदके कमल और चन्द्रमा ये नागिनी यह बरुणपाश यह कामका धनुष येहंस ये हाथी ये सिंह जो हे प्रिया तेरे अंगोंके सामहे मलीन होगये रहें सो सब आज तेरे बिना अपनी अपनी प्रशंसा सुनते हैं अर्थात् तेरे नेत्रोंके सामुहें खंजन ममोला और मृग मीनकमल मलीन रहे और तेरी नासिका के सामुहें शुक तेरे कंठके सामुहें कपोत केशोंके सामुहें मधुकर मधुरस्वर के सामुहें कोकिला दांतोंके सामुहें कुन्दकली और दाड़िम बर्णके सामुहें दामिनी मुख के सामुहें कमल और चंद्रमा बेणीके सामुहें नागिनी और बरुणका पाश भृकुटीके सामुहें काम धनुष चालके सामुहें हंस और हाथी कटिदेशके सामुहे सिंह मलीन रहे ४ ॥ ५ ॥ ६ सुनु हे सीते तेरे बिना आज ये सब अपने अपने राज्यको पाकर बड़े हर्षित हैं ७ सो तेरेसे यह अनख कैसे सहा जाताहै अपने बैरियोंके मानमर्दन करनेको हेप्रिया तू बेगिही क्यों नहीं प्रकट होती है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ ऐसी रामचन्द्र की दशा को देखि कर जैसे मणि बिना सर्प और जल बिना मीन व्याकुल होती हैं ऐसेही व्याकुल लक्ष्मण तहां होगये ॥ १९ ॥

धरिउरधीरबुझावतरामहिं । तजहिं नशोकअधिक सुखधामहिं १
यहिंबिधि खोजतबिलपतस्वामी । मनहुंमहाबिरहीअतिकामी २
पूरण काम राम सुख राशी । मनुजचरित कर अजअबिनाशी ३
सरवरअमित नदी गिरिखोहा । बहुबिधिलपणरामतहंजोहा ४
सोच हिये कछु कहि नहि आवा । टूट धनुष शर आगे पावा ५
कहुं कहुं श्रोणितदेखिय कैसा । श्रावण भादौं जलभरजैसा ६
कहा राम लक्ष्मणहिं बुझाई । काहू युद्ध कीन्ह बहुताई ७
आगे परा गृद्धपति देखा । सुमिरत रामचरण की रेखा ८
दो० कर सरोज शिर परसेउ कृपासिंधु रघुबीर ।
निरखि राम छबि धाम मुख बिगत भई सब पीर ॥ २०

फिरिभी बड़ी धीर धरिके राम को समुझाते हैं तो भी सुख धामको शोक नहीं छोड़ता है अधिक अधिक बढ़ताही जाता है १ इस प्रकार खोजते और महाबिलाप स्वामी करते फिरते हैं मानों कोई अति कामी महा बिरहीहै २ समस्त काम परि-पूर्ण श्रीराम जो अज अबिनाशी हैं सोई मनुष्यकेसे चरित्र करते फिरते हैं ३ अनेक सरोवर नदी पर्वतोंकी खोहें अनेक भांतिसे राम लक्ष्मणने तहां उस महा गह्वरबन

में ढूंढ़े ४ महा सोच मारे कुछ कहा भी नहीं जाता है इतने में एक धनुष और कुछ बाण आगे परे देखे ५ और कहूं कहूं रुधिर श्रावण भादोंके समान भरा देखा ६ तब तो रामने लक्ष्मणसे कहा देखो भाई यहां किसीने बड़ा युद्ध कियाहै ७ आगे चले तो गृद्धराज जटायुको घायल परा देखा कि राम स्वामीहीके चरणोंकी रेखाओंका ध्यान करि रहा है॥ ८ ॥ दोहा ॥ ऐसा देखि कर कृपासागर रघुवीर रामने जोअपना हस्त कमल उसके शिरसे स्पर्श किया सोई महा छबिधाम राम के मुखको देखतेही सब व्यथा गृद्धकी नाश होगई ॥ २० ॥

तब कह गृद्ध बचन धरि धीरा । सुनहु राम भंजन भव भीरा १
नाथदशानन यह गतिकीन्ही । तेहिंखलजनकसुताहरिलीन्हीर२
लै दक्षिणदिशिगयउगुसाईं । बिलपति अति कुररी की नाईं ३
दरश लखि राखे प्रभु प्राना । चलन चहत अब कृपानिधाना ४
राम कहा तनु राखहु ताता । मुख मुसुकाय कहीतेहिं बाता ५
जाकर नाम मरत मुख आवा । अधमहु मुक्त होइ श्रुति गावा ६
सो ममलोचन गोचर आगे । राखहुं नाथ देह केहिं लागे ७
तनु तजि तात जाहु मम धामा । देहु कहा तुम पूरण कामा ८
दो० अबिरल भक्ति मांगि बर गृद्ध गयउ हरि धाम ।
तेहिं की क्रिया यथोचित निजकर कीन्हीराम ॥ २१ ॥

तबतो गृद्धराज ने धीरज धरि के वचन कहे कि सुनो हेराम स्वामी हे भवभीर भंजन १ हे नाथ मेरी यह दशा दशमुख रावण ने करी है और उसी दुष्ट ने छल करिके सीता भी हरी है २ सो लैकरि के दक्षिणदिशा को चला गया है सीता कुररी पक्षी की नाईं बिलाप करती गई है ३ मैंने आपही के दर्शन के निमित्त प्राण राखे रहें अबतो हे कृपालु स्वामी इस शरीर को छोड़िकर चला चाहता हूं ४ तब रामने कहा हे तात आप शरीर को राखिये और मेरे को पिता का सुख दीजिये ५ यह सुनिकर गृद्धराज बोला सुनो हे राम तुम्हारा नाम भी मरणकालमें जिसके मुख से उच्चारण हो सो अधम भी मुक्त हो जाता है ऐसे वेदोंने कहा है॥ सूपनिषधगीतायां ओमित्येकाक्षरंब्रह्मव्याहरन्ममनुस्मरन् । यःप्रयातित्यजन्देहंसयातिपरमांगतिंबालकांड में इस प्रणव का और रामपद का एकही अर्थकिया है ६ तेतुम मेरे नेत्रों के गोचर साक्षात् आगे खड़े हो भला अब में इसको किस निमित्त रक्खूं ७ जब रामनेकहाजो तुम्हारी ऐसीही इच्छा है तो इस हेय शरीर को त्याग कर मेरे परमधाम दिव्य लोक बैकुंठ पुनरावर्त्ति बर्जित को चले जाओ देने को तुम्हें क्या चाहिये तुम तो परिपूर्ण काम हो ॥ ८ ॥ दोहा ॥ तबतो गृद्धराज अविरलभगवद्भक्ति रामसे बरमांगकर

भगवद्धाम को चला गया जैसे भगवद्भक्ति अर्चिरादि मार्ग होकर जाते हैं और उसके शरीर की क्रिया यथोचित कहैं जैसी महाभागवतों की चाहिये अर्थात् ब्रह्म मेध क्रिया जैसी महा भागवत बिदुर की महाराज युद्धिष्ठिर ने करी है तैसीही गृद्धराज के शरीर की आप अपने हाथ से श्रीरामचन्द्र ने करी ॥ २१ ॥

कोमल चित अतिदीनदयाला । कारण बिनु रघुनाथ कृपाला १
गृद्ध अधम खगआमिषभोगी । गति दीन्ही याचत जिहिं योगी २
सुनहु उमाते लोग अभागी । हरि तजि होहिं विषय अनुरागी ३
पुनि सीतहिं खोजत दोउ भाई । चले बिलोकत बन बहुताई ४
संकुललता बिटप बहु कानन । बहु खग मृग तहं गज पंचानन ५
आवत पंथ कबंध निपाता । तेहिं सब कही शाप की बाता ६
दुर्वासा मोहिं दीन्हेउ शापा । प्रभु पद देखि मिटासो पापा ७
सुनु गंधर्ब कहौं मैं तोहीं । मोहिं न सोहाय ब्रह्मकुलद्रोही ८
दो० मन क्रम बचन कपट तजि जो कर भूसुर सेव ।
मोहिं समेत बिरंचि शिव बश ताके सब देव ॥ २२ ॥

महादेव पार्वती प्रति कहते हैं कि रामचंद्र तो अति कोमलचित्त और अतिही दीनदयाल कारण रहितही बड़े कृपाल हैं १ देखो गृद्ध पक्षियों में अधम पावन आमिषका भोक्ता उसको ऐसी उत्तम गति देदी जिसगति को योगीजन याचते हैं २ सुनो हे पार्वती ते लोग बड़ेही मंदभागी हैं जो ऐसे सर्वस्वदाता मेरे स्वामी हरि भगवान को छोड़िकर बिषयासक्त होते हैं ३ इस प्रकार गृद्धराज की क्रिया करिके फिरि तहांते सीता को खोजते हुये दक्षिण दिशा को बन की सघनता देखते हुये चले ४ कैसा गह्वर कानन बन है जो सघनलता और वृक्षों से भरा है जिसमें अनेक भांति के पक्षी मृग मातङ्ग सिंह शार्दूल भरे हैं ५ तहां मार्ग निरोधक कबंध राक्षस को मारा सो तुरतही अपनी गन्धर्ब गतिको प्राप्तहुआ औरअपने शापका वृत्तान्त सब रामचन्द्र से कहा ६ कि दुर्वासा मुनिने मुझकोयह शापदिया रहैअबआपके चरणोंका दर्शन करने से मेरा समस्त पाप नाश होगया ७ यह सुनिकर रामचन्द्र बोले सुन हे गन्धर्ब मैं अपना स्वभाव तुझ से कहताहूं कि मुझ को ब्रह्मकुल का द्रोही नहीं सुहाता है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ मन कर्म बचन से निष्कपट होकर जो द्विजदेवों कीसेवा करता है उसके बश में मुझ समेत ब्रह्मा शिव सब देवता रहते हैं ॥ २२ ॥

कहि निजधर्मताहि समुझावा । निजपद प्रीतिदेखि मनभावा १
रघुपति चरणकमल शिरनाई । गयउ गगन आपनि गति पाई २

ताहि देइ गति राम उदारा । शवरी के आश्रम पगु धारा ३
शवरी देखि राम गृह आये । मुनि के बचन समुझिमन भाये ४
सरसिज लोचनबाहु बिशाला । जटा मुकुटशिरउर बनमाला ५
श्याम गौर सुन्दर दोउ भाई । शवरी परी चरण लपटाई ६
प्रेममग्न मुखबचन नआवा । पुनि पुनिपद सरोज शिर नावा ७
सादर जल लै चरण पखारे । पुनि सुन्दर आसन बैठारे ८
दो० कंदमूल फल सरस अति दिये राम कहं आनि ।
प्रेम सहित प्रभु खायउ बारहिं बार बखानि ॥ २२ ॥

सुनुहे गंधर्वमैंभी अपनेको ऐसा मानताहूं कि॥बिप्रप्रसादाद्धरणीधरोऽहं॥ बिप्रप्रसादात्कमलावरोऽहं क्योंकि जैसे उनके मैं हीएकदेव हूं तैसेहीमैंभी उन्हींको एकदेव मनताहूं येयथामाप्रपद्यंतेतांस्तथैवभजाम्यहं याहीतें मैंब्रह्मण्यदेव कहाताहूं जो उनकी सेवा करताहै सोमेरा सेवकहै और जोउनसे द्वेषरखताहै सोमेरा द्वेषीहै ऐसेनिजधर्म कहिकर उसको आगेको समुझादिया और अपनेमें प्रीति देखिकर बहुत भाया १ तब तोगन्धर्व रामचंद्र के चरणोंको प्रणाम करिके अपने स्थानको चला गया २ इस प्रकार परम उदार रामचंद्र उसको गति देकर मतंगऋषि की शिष्या शवरी के आश्रम को पधारे ३ शवरीने जबरामको अपने आश्रममें आयेदेखे तबतो अपने गुरुदेव मतंगऋषि केबचन अतिहित जाने ४ कैसे परम सुन्दर दोनों भाइयों को देखा कि कमलसे तो जिनके सुहाये नेत्रहैं औरबिशाल आजानु भुजाहैं जटानके मुकुट मस्तकों परहैं उरों में बनमाला तुलसीके पत्रपुष्पोंकी बिराजती हैं ५ सोदेखतेही शवरी चरणोंपर गिरपरी ६ प्रेममें मग्न होगई मुखसे बचन नआया बारबार चरणोंही को शीश नवाया ७ फिरि धीरधरिके वडे आदरसे परम पावन जलसे चरण प्रक्षालन किये और सुन्दर आसन पर बिराजमान किये ॥ ८ ॥ दोहा ॥ अतिही सरस कहैं मधुर मधुर कन्द,मूल, फल स्वामीको निवेदन किये सोरामचन्द्र ने बड़ीही प्रीतिसे बारबार सराहि सराहिके पाये गीतावल्यां घरगुरु गृह प्रियसदन सासुरे जब जहंभई पहुनाई तबतब कहो शवरी केफलनिकी रुचिमाधुरीनपाई ॥ २२ ॥

पाणि जोरि आगेभइ ठाढ़ी । प्रभुहिं बिलोकि प्रीतिअति बाढ़ी १
किहिं बिधि अस्तुति करहुं तुम्हारी । अधमनारिमैं जड़मतिभारी २
अधमते अधम अधमअति नारी । तिनमहं मैंअतिमंद गंवारी ३
कहरघुपति सुनु भामिनि बाता । मानहुं एकभक्ति कर नाता ४
जाति पांति कुल धर्म बडाई । धन परिजन गुणगण चतुराई ५

भक्ति हीन नरसोहहि कैसा । बिनु जल बारिद देखिय जैसा ६
योगि वृंद दुर्लभ गति जोई । तो कहं आजु सुलभ है सोई ७
मम दर्शन फल परम अनूपा । जीव पाव जिहिं सहज स्वरूपा ८
दो० सब प्रकार तव भक्ति दृढ़ मम चरणन अनुराग ।
तवं महिमा जेहि उर बसै तासु परम बड़ भाग ॥ २४ ॥

जब स्वामी उसको परम प्रीतिके समर्पित भोजनसे तृप्तहोचुके तबतो शबरीहाथ जोरिकर रामचंद्रके आगे खड़ीहुई और अपने स्वामीको अपनेपर अनुकूल देखिकर बड़ीही प्रीति बढ़ी १ बोलीकि स्वामी मैं आप की प्रशंसाकैसे कर सकती हूं क्योंकि मैं तो अधम जाति स्त्रीहूं औरमहा जड़बुद्धि हूं २ अधमहूंते अधमतो स्त्रीही होतीहै तिसपर मैंतो उनसेभी अधमहूं क्योंकि अतिही नीचजातिभीलिनी महामंदमति गंवारीहूं ३ जबउसका ऐसा नीचानुसंधान देखा तबतो रामचंद्र स्वामीबोले हेभामिनी मेरी बात सुनुमैंतो केवल भक्तिहीका नाता मानताहूं जाति पांति कुछ नहीं जानताहूं भक्तिहीन बिरंचिक्किनिहोई सबजीवनसमप्रियमोहिसोई भक्तिवत अति नीचहु प्राणी मोहि प्राणप्रियअसिममबाणी श्लोक नमेप्रियश्चतुर्वेदीमत्भक्तःस्वपचःप्रियः तस्मैदेयंततो ग्राह्यंसचपूज्योयथाह्यहंनशूद्राभगवद्भक्ताविप्राभागवतास्मृतासर्ववर्णेषुतेशूद्रायेह्यभक्ता जनार्दने स्वपचोऽपिमहीपाल विष्णुभक्तोद्विजाधिकः विष्णुभक्तिविहीनस्तुद्विजोपिस्वपचाधमः भागवते द्विजाद्विषटगुणयुतादरबिंदनाभ पादारविंदाबिमुखाच्छ्वपचंबरिष्टः ४ जोकोई जातिपांति कुलधर्ममें भी बड़ाहै धनवानहै कुटुंबी है गुणी है चतुरहै सोभी मेरीभक्ति बिहीन ऐसाहै जैसा निर्जल घटापटल होताहै बिद्याबिनयसंपन्नाबिशालकुलसंभवाः अवैष्णवानशोभंतेनिर्गंधाकिंशुकाइव ५ । ६ तातेहेभामिनी जो गति योगियों कोभी दुर्लभहै सोतेरेको आजु सुलभहै ७ क्योंकि मेरेदर्शन का अनूपम फलहै जिससे जीव अपना सौभाविक अप्राकृत सुन्दरश्याम चतुर्भुज दिव्यरूपपाताहै ॥ ८ ॥ दोहा तेरे तो सब प्रकार मेरी दृढ़भक्ति और मेरे में तेरा बिशुद्ध प्रेमहै तेरी महिमा भी जिसके हृदयमें बसे उसकेभी परम बड़भाग्य होंगे ॥ २४ ॥

पुनि बोले प्रभु गिरा सुहाई । जनक सुता की सुधिकहुं पाई १
पंपासरहिं जाहु रघुराई । मुनिबर बिपुल रहे तहं छाई २
ऋषिमतंग महिमा गुण भारी । जीव चराचर रहैं सुखारी ३
बैर न करै काहु सन कोई । जासन बैर प्रीति करु सोई ४
शिखर सुहावन कानन फूले । खग मृग जीव जन्तु अनुकूले ५
करहुसफल श्रम तिन कर जाई । तहं होइहि सुग्रीव मिताई ६

सो सब देव कहिहि रघुबीरा। जानत का पूछहु मति धीरा ७
बार बार प्रभु पद शिरनाई। प्रेम सहित सब कथा सुनाई ८
छं० कहि कथा सकलबिलोकि हरिमुख नयन पद पंकजधरे।
तजि योगपावक देह हरि पद लीन भइजिहिंनहिंफिरे॥
नर बिबिधि कर्म अधर्म बहु मत शोक प्रद सब त्यागहू।
बिश्वास करि कह दास तुलसीरामपद अनुरागहू॥ २॥
दो० जातिहीन अघ जन्म महि मुक्त कीन्हि असिनारि।
महा मंद मन सुख चहसि ऐसे प्रभुहि बिसारि॥ २५॥

इस प्रकार शवरी को समुझा कर फिरि अपनी नरनाट्य लीला करते हुये शवरी से बोले कि हे शवरी तैंने कहीं जनक सुता सीता की भी सुधि पाई है १ यह सुनि कर शवरी मतंग ऋषि के बचनों को स्मरण करिके बोली कि हे स्वामी अब आप यहां से पंपासर को जाइये तहां मुनिजनों के बहुत आश्रम हैं २ और तहांमतंग ऋषि के गुणों के प्रभाव से सब चराचर जीव सुखी रहते हैं३ कोई जीव किसी से बैर नहीं करता है जिनका जिनसे सहज बैर सो भी परस्पर प्रीतिही करते हैं ४ तहां ऋष्यमूक पर्बत के सुन्दर सुहाये शिखर हैं सुन्दर बन फूलि रहे हैं तिनमें खग मृग जाति जाति के बिहार करते हैं ५ तहां तिन मुनिवरों के श्रम को सफल कीजिये तहीं सुग्रीवनाम कपिराज से आप की मित्रता होगी ६ सो सुग्रीव आप से सीता का वृत्तांत सब कहैगा आप सब जानते हो ७ इस प्रकार सब कथा कहि कर स्वामी के चरणों को बार बार प्रणाम किया ॥ ८॥ छन्द ॥ योगाग्नि से पंच भौतिक शरीर का त्याग करिके पुनरावर्त्तिबर्जितभगवत् पद में लीन हो गई ताते हे मनुष्यो असार रूप अधर्म और सार रूप कर्म्मो पासन ज्ञान,योग, बैराग्य समस्त धर्म जो तुम को बहुमत है इन सब का भरोसा इस कलिकाल में छोडि कर बिश्वास पूर्बक गुसाईं तुलसीदास कहते हैं केवल रामही के चरणारबिन्दों का आसरा राखो इस का प्रमाण दूसरे पृष्ठ में लिखा है ॥ दोहा ॥ समस्त पापों की जन्मभूमि ऐसी महानीच जिस की जाति सो भी मुक्त करदी है महामंदमन तू ऐसा कृपालु स्वामी को छोड़िकर कल्याण चाहता है ॥ २५

महाभारते त्यजधर्ममधर्मं चत्यजसत्यानृतेउभौसत्यानृतेउभौत्यक्त्वायेनत्यजसित-त्यज १ अर्थात् धर्मों को भी त्याग कर अधर्मों को भी त्यागकर सत्य को भीत्याग कर अनृत झूंठ को भी त्याग कर धर्म, अधर्म,सत्य, असत्य को जिस ज्ञान से त्याग करे उस ज्ञान को भी त्याग कर १ असारमल्पसारंवासारंसारतरंत्यजेत् भजेत् सारतमंशास्त्रंरत्नाकरमिवामृतं २ अर्थात् शास्त्र कहैबेद में कहे जो सेन यज्ञादिक

कर्म सो असार और स्वर्गादिकों के निमित्त जो कर्म सो अल्पसार ज्ञानयोग सोसार भक्ति योग सो सारतर श्रेयाभिलाषी इन सबों का त्यागकरै सारतम भगवच्चरणप्रपत्ति को भजै २ सर्वगुह्यतमंभूय: शृणुमेपरमंवच: इष्टोसिमेदृढमतिस्ततो वक्ष्यामितेहितं ३ अर्थात् सुनु हे अर्जुन मैंने तेरसे गुह्य ज्ञानयोग कहा और गुह्यतर भक्तियोग भी कहा अब तू गुह्यतम मेरे बचन सुनु तू मेरे अति इष्ट और दृढ़ बुद्धि है तबमैं तेरसे तेरा परमहित कहता हूं ३ सर्वधर्म्मांपरित्यजमामेकंशरणंव्रज ॥ अहंत्वांसर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामिमाशुच ४ अर्थात् हे अर्जुन ऊपर कहे गये जो धर्म उन सबको छाड़ि कर केवल मेरेहीशरण हो जा मैं तेरे को सबपापों से छुटा दूंगा तू किसी बात का शोंच मत करै ऐसे प्रबल प्रमाणों से तुलसी दास कहते हैं कि ये सब धर्म अधर्म शोकदायकही हैं इनको छोड़िकर सर्वोत्तम भगवच्चरणारबिन्दोंही की शरणग्रहण करो संसारसागर के तरनेको भगवच्चरणारबिंदही एक पोतहै ॥ ध्येयं सदापरिभवघ्न मभीष्टदोहंतीर्थास्पदं शिव बिरंचिनतंशरण्यं भृत्यार्त्तिहंप्रणतपालभवाब्धिपोतंवंदे महापुरुषतेचरणारबिंदम् ५ अर्थात् महापुरुष पुरुषोत्तम श्रीमन्नारायण जगज्ज न्मादि कारण हैं तातें उन्ही के चरणारबिंद जगद्ध्येय हैं और अशिवों के नाश कर्त्ता हैं और बांछित फलों के संदोह हैं परमपावनतीर्थ हैं शिव बिरंचि करिके भी नमस्कृत हैं सर्वलोक शरण्य हैं ऐसे हे महापुरुष जगज्जन्मादि कारण स्वामी आप के चरणारबिंदों को मेरा सदा अभिबंदन है ॥

इतिश्रीशुकदेवबिरचितेमानसहंसभूषणेरामचरित्रमानसे आरण्यकांडेतृतीयस्सोपानस्समाप्तः

श्रीगणेशायनमः ॥

अथतुलसीदासकृत रामायणकिष्किंधाकांड सटीकलिख्यते ॥
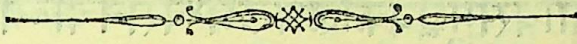
श्लोक वीरौवाणधनुर्धरौसुतरुणौदुष्टेभपंचाननौ ।
शोभाढ्यौकमलेक्षणौनरवरौलोकाभिरामावुभौ ॥
ब्रह्माशंभुसुरेन्द्रवंदितपदौश्रीरामरामानुजौ ।
सीताप्राप्तिपरायणौभवतुमेकल्याणकल्पद्रुमौ ॥

दो० ज्ञान गिरा मन बुद्धिपर निगम नेति सुखकन्द ।
बरणत बिरहिन की दशा ब्रह्म सच्चिदानंद ॥

जो कि यह किष्किन्धा कांड सातों कांडों के मध्य में है इसी कारण सब कांडो से छोटा है इससे जो तीनि कांड पूर्ब कहे गये हैं ते एकते एक छोटे होते आये हैं और जो तीनि कांड इसके पीछे कहेहैं ते एकते एक बड़े होते गये हैं क्योंकि इस राम चरित्र को गुसांई जीने मानसरोवर बर्णन किया है इस निमित्त इसको तड़ागही की आकृति रचाहै तड़ाग के प्राकार ऊपर से जल स्थान तक एकते एक छोटे होते जाते हैं फिरि जल स्थान से ऊपर तक एकतें एक बड़े होते जाते हैं यह रामचरित्र मानसरोवर चारि प्राकार का है उसकी आकृति जो नीचे लिखी है उसके देखने से सब काण्डों के प्राकार प्रत्यक्ष हो जाते हैं यह किष्किन्धाकांड सब कांडों से छोटा है उसमें सब चालीश ४० अष्टपदी हैं उसके प्राकार की चारों दिशा की सोपान दश दश अष्टपदियों की है और यही कांड जलाशयस्थ नीय हैं शेषछहूं कांडोंमें द्वयद्वय दिशाहैं प्रारंभ इसका शबरी के आश्रम से चलिकर पम्पासर कीयात्रा है तहां नारद का आगमन है ॥ फिरि मारुती का मिलाप सुग्रीव की मयित्री बालि का निधन सुग्रीव का राज्य वर्षा शरद का बर्णन राम का सुग्रीव पर कोप सुग्रीव की लक्ष्मण की बांह से शरणागति दूतों का सीता के खोज को भेजना विवर प्रवेश क्षारोदधि के तट संपातिका मिलना समुद्र तरने का उद्योग अंत में है छन्दों का क्रम जो बालकांड से आरण्यकांड पर्य्यन्त अष्टपदियों की पचीसियों पर रहे इसकांड में दश वा बीश अष्टपदियों पर है और अष्टपदियों के इसकांड में चारि दशक हैं ॥

॥ १ ॥ कुन्देंदीवरसुन्दरावतिबलौबिज्ञानधामावुभौ ।
सोभाग्यौबरधन्विनौश्रुतिनुतौगोविप्रवृंदप्रियौ ॥
मायामानुषरूपिणौरघुवरौसद्धर्मवंतौहितौ ।
सीतान्वेषणतत्परौपथिगतौभक्तिप्रदौतौहिनः ॥
॥ २ ॥ ब्रह्मांभोधिसमुद्भवंकलिमलप्रध्वसनंचाव्ययं ।
श्रीमच्छंभुमुखेंदुसुन्दरवरेसंशोभितंसर्वदा ॥
संसारामयभेषजंसुमधुरंश्रीजानकीजीवनं ।
धन्यास्तेकृतिनःपिबंतिसततंश्रीरामनामामृतं ॥ २ ॥
सोरठा मुक्तिजन्ममहिजानिज्ञानखानिअघहानिकर ।
जहंबसशंभुभवानि सोकाशीसेइयकसन ॥ १ ॥
जरतसकलसुरवृंदविषमगरलजेहिंपानकिय ।
तेहिंनभजसिमतिमंदकोकृपालुशंकरसरिस ॥ २ ॥

किष्किन्धाकांड के प्रारंभ में ग्रन्थकार श्री राम लक्ष्मण को प्रणाम करते हैं जो राम लक्ष्मण कुन्द के पुष्प के समान शुक्ल और इन्दीबर नील कमल के समानसुन्दर श्याम हैं अति बलवन्त हैं बिज्ञान के धाम हैं भाग्यशाली हैं दोनों धनुर्धर हैं वेद प्रशंसित हैं गऊ ब्राह्मण के प्रियकर्त्ता हैं कृपा से मनुष्य रूप हैं रघूत्तम हैं सद्धर्म परायण हैं सीता केखोजन में तत्पर हैं तेई हमको भक्ति प्रदहैं १ श्रीरामनाम रूपी अमृतब्रह्म कहैं बेद समुद्र से तो उत्पन्न हुआ है कलिमल नाशक है अव्यय है श्री शिवजी के मुख चन्द्रमा में सदा सोहता है संसार रूपी रोग की औषधि है जानकी का जीवन है धन्यते कृतकृत्य पुरुष हैं जो ऐसे श्री राम नाम परम पावन अमृत को सदा पीते हैं ॥ २ ॥ सोरठा ॥ जो श्रीकाशी को मुक्तिकी तो जन्मभूमि और ज्ञान की खानि पापों की हर्त्ता जानिकर और जहां पार्बती समेत जगद्गुरू श्री शिवजी सदा निवास करते हैं सो काशी कैसे न सेइये १ जिस कालकूट से समस्त इंद्रादि देवता और दानवेंद्र बलि समेत समस्त असुरों के बृन्द जरे जाते रहैं उनका संताप अपने को दुःसह जानि कर जिन परम कृपालु शिवजीने उस महा बिष हालाहल को पानकरि लिया तिनको हे मतिमंद मन क्यों नहीं भजता है भला देखो तो कि इस बिधिप्रपंच में दूसरा और कौन श्री शंकर के समान परम कृपालु है २ ॥

चले राम त्यागा बन सोऊ । अतुलित बल नर केहरि दोऊ १
बिरही इव प्रभुकरत बिषादा । कहत कथा अनेक संबादा २

लक्ष्मण देखहु बनकी शोभा । देखत कहिंकर मन नहिंछोभा ३
नारि सहित सब खग मृग वृंदा । मानहुं मोरि करतहैं निंदा ४
हमहिं देखिमृग निकर पराहीं । मृगीकहहिं तुमकहं भयनाहीं ५
तुम आनन्द करहु मृगजाये । कंचन मृग ये खोजन आये ६
संगलाइ करिणी करिलेहीं । मानहु मोहिं शिखावन देहीं ७
देखहु तात बसंत सुहावा । प्रिया हीन मोहिं भय उपजावा ८
दो० बिरह बिकल बलहीन मोहिं जानेसि निपट अकेल ।
सहित बिपिन मधुकर खगन मदन कीन्ह बगमेल ॥ १ ॥

जब शबरी ने श्रीरामचन्द्र को सीताकी प्राप्तिका यह उपायकहा कि आप पंपासर को जाइये और सुग्रीव बानराधीश से मैत्री कीजिये तहां आप के कार्य्य की सिद्धि होगी तब तो राम लक्ष्मण दोनोंभाई तहांते चलि दिये दंडक बनका त्याग किया किष्किन्धा बन में प्रवेश किया दोनों भाई अप्रमेयबली नृसिंहही हैं १ अति कामी प्राकृत पुरुष बिरही की नाईं सर्वेश्वर स्वामी बिषाद करते जाते हैं और अनेक प्रकारकी बियोगियों कीसी कथा लक्ष्मणसे कहते जातेहैं २ जैसा शबरीने इसबनको कहा रहे तैसेही फूला फरा देखिकर लक्ष्मणसे कहते हैं देखोतो हेभाई इस बनकी शोभाको भला इसको देखि कर किसका मन छोभित न होजावे ३ देखो भाई इस बनमें समस्त खग मृगोंके बृन्द अपनी अपनी स्त्रियों को साथही लिये फिरते हैं सो मानों मेरी निन्दा करतेहैं ४ देखो हेभाई हम तुमको धनुष बाणलिये देखिकर मृगोंके निकर भागि चलतेहैं तबउनकी मृगी उनसे कहती हैं अरे तुमक्यों भागतेहो तुमको इनसे कुछभी तो भयनहींहै ५ तुम आनन्द पूर्वक इस बनमें बिचरो येतो कंचन के मृगोंको खोजते फिरतेहैं ६ ऐसे बुद्धिमान हैंहाथी इसबनके अपनी हथिनियो को संगहीलिये फिरते हैं अकेली नहीं छोड़ते हैं मानों मेरेको शिक्षा देते हैं ७ परम सुहाये इसऋतुराज बसंत कोतो हेतात तुम देखो प्रियारहित यह मेरे को बड़ा भय उपजावता है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ बिरह की बिकलता से बलहीन और प्रियारहित निरा अकेला मेरेको जानिकर बसंत पुष्पितबन और मधुकर शुक पिकादि खगोंकी चतुरंगिनी सेना साथ लेकर बिश्व बिजयी कामने मेरेको आदबाया है ॥ १ ॥

बिटप बिशाल लता उरझानी । बिपुल बितान दियेजनु तानी १
कदलि लता वरध्वजा पताका । देखिन मोहधीर मन जाका २
बिबिधि भांति फूले तरुनाना । जनु बानैत बने बहु बाना ३
कहुंकहुं सुन्दर बिटप सुहाये । जनुभटबिलग बिलगहुइछाये ४

मधुमर मुखर भेरि सहनाई । त्रिबिधि बयारि बसीठी आई ५
चतुरंगिनि सेना संग लीन्हे । बिचरत सबहिं चुनौती दीन्हे ६
लक्ष्मण देखत काम अनीका । रहहिं धीर तिनकी जगलीका ७
यहिंके एक परम बल नारी । तेहिं ते उबर सुभट सो भारी ८
दो० तात तीनि अति प्रबल खल काम क्रोध अरु लोभ ।
मुनि बिज्ञान नियान मन करहिं निमिष महंक्षोभ ॥ २ ॥

देखो हे लक्ष्मण इस बनके बड़े बड़े वृक्षोंपर जो अनेक भांतिकी लताबेलीं उरझाइ रहीहैं तेईमानों कामने अनेक भांतिके बितान तनाइ दियेहैं १ और येजो केरे और तालोंके वृक्ष हैं तेई उसके ध्वजा पताका हैं तिन को देखि करतो सोई न मोहेगा जिसका बड़ाही धीरमन है २ और येजो अनेकरंगोंके नाना प्रकारके वृक्षफूलिरहे हैं तेई मानों कामके स्वेत, पीत, रंग, नील, श्यामबानोंके बानैत बनेहैं ३ और जो कहीं कहीं महा सुन्दर सुहाये वृक्षहैं तेमानों कामके बड़ बीर योधा भिन्न भिन्न छाये हैं ४ मधुकरोंका जो मधुर शब्द होरहा है सोई मानों काम की भेरी सहनाई बाजती हैं शीतल मंन्द सुगन्ध जो बसंतकी पवन बहतीहै सोईमानो बसीठीको आईहैं ५ इस प्रकार अपनी चतुरंगिनी सेनाको साथलिये यह परम प्रबल अपराजित काम इस वन में हे लक्ष्मण सबको कहैं ब्रह्मादिकों कोभी चुनौती दिये निर्भय बिचरता है ६ ऐसी परम दुर्जय इस काम की सेनाको देखिकर जो धीर बने रहते हैं उन्हीकी हे लक्ष्मण धीरों में गणनाहै ७ इस काम का परम मुख्य बलएक स्त्रीही है जो उससे उबरता है सोई बीर गिनाजाता है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ मोहअज्ञानजनित हेतात परम प्रबल ये तीन खल ज्ञानके बिरोधी हैं एक काम दूसरा क्रोध तीसरा लोभ है जो बिज्ञान नियान भी मुनिजन हैं उनके मनमेंभी एकक्षण में छोभकर देते हैं ॥ २ गीतायां ॥ कामएषक्रोधएषरजोगुणसमुद्भवो महासनोमहापाप्माबिद्धेनमिहवैरिण

गुणातीत सचराचर स्वामी । उमा राम सब अन्तर यामी १
कामिन की दीनता दिखाई । धीरन के मन बिरति दृढ़ाई २
क्रोध मनोज लोभ मद माया । छूटहिं सकल राम की दाया ३
सो नरइन्द्रजाल नहिंभूला । जा पर होइ सुनट अनुकूला ४
उमा कहहुं मैंअनुभव अपना । तजिहरिभजनसबै जगसपना ५
पुनि प्रभु गयउ सरोवर तीरा । पम्पा नाम सुभग गम्भीरा ६
संत हृदय जस निर्मल बारी । बांधे घाट मनोहर चारी ७

जहंतहं पियहिं बिबिधि मृगनीरा । जनुउदारगृहयाचकभीरा ८

दो० सुखी मीनगण एक रस अति अगाध जलमाहिं ।
यथा धर्म शीलन के दिन सुख संयुत जाहिं ॥ ३ ॥

शिवजी महाराज कहते हैं सुनो हे प्रिये पार्वती रामचंद्र तो स्थावर जंगम समस्त प्राणियों के स्वामी हैं और समस्त विश्व उन्हीं की बिभूति है सब जीवों के अंतर्यामी हैं और आप समस्त मायक हेय गुण अर्थात् काम,क्रोध,लोभ,मोह, मान मत्सर, शोक, भय, जरा, मृत्यु लेशबर्जितहैं १ यह तो परम कृपाल स्वामीने कामी प्राकृत पुरुषोंकी दीनदशा दिखाकर परम धीर अपने भक्तों के मनमें बिरति दृढ़ाई है जड़ मूर्खों को जो मोहही होताहै यह उनकी आसुरी प्रकृति का दोष है २ काम, क्रोध, लोभ, मद और माया येतो जिसपर रामकी दया होतीहै उसकेही छूटि जाते हैं तोभला राम में कैसे होसकते हैं जैसे जिस मनुष्य पर सुनट अनुकूल होताहै सो पुरुषही जब उसके इन्द्र जाल में नहीं भूलता है तोफिर स्वयं सोईनट अपने इंद्रजाल मेंकैसे भूलैगा३।४ तातेहे पार्वती मैं अपना अनुभव तेरे से कहताहूं कि भगवत्भजनही तो इस संसार में सारहै याहीते संसार कहाताहै उसको छोड़ कर समस्त जग स्वप्न के समान अनित्य असार है ५ इसप्रकार श्री रामचंद्रकामियों की दशा बर्णन करते करते सरोवरके तटपहुंचे पंपाजिसका नाम है अतिही सुभग सुन्दर और बड़ा गम्भीरहै ६ संत कहैंभगवज्जनों के हृदय के समान अति बिशुद्ध निर्मल मधुर शीतल जिसका निरामय जलहै और अतिही मनोहर जिसके चारों घाट रचेहैं ७ अनेक जातिके मृग समूहों के समूह जिसमें जलपान करतेहुये कैसी शोभा देतेहैं जैसे उदार धनाढ्यों केघर याचकों की भीर सदा रहतीहै ८ ॥ दोहा॥ जिस के अतिही अगाध जलमें उसके समस्त मीनगणकैसे सदा सुखी रहतेहैं वैसे धर्म शीलपुरुषोंके समस्त काल सुख संयुक्तही बीतते हैं ॥ ३ ॥

बिकसे सरसिज नाना रंगा । मधुर मुखर गुंजत बहुभृंगा १
बोलत जल कुक्कुट कलहंसा । प्रभु बिलोकिजनुकरत प्रशंसा २
सुन्दर खग गण गिरा सुहाई । जात पथिक जनु लेत बुलाई ३
ताल समीप मुनिनगृह छाये । चहुं दिशि कानन बिटप सुहाये ४
चम्पक बकुल कदम्ब तमाला । पाढर पनस पलास रसाला ५
नव पल्लव कुसुमित तरु नाना । चंचरीक पटली करु गाना ६
शीतल मन्द सुगन्ध सुभाऊ । संतत बहहिं मनोहर बाऊ ७
कहुंकहुंकलकोकिलधुनिकरहीं । सुनिरवसरसध्यानमुनिटरहीं ८

दो० फलके भारन ते बिटप रहे भूमि नियराइ ।
पर उपकारी पुरुष जिमि नवहिं सुसंपति पाइ ॥ ४ ॥

जिसमें सरसिज कहें कमल कल्हार उत्पल शतपत्र इत्यादि अनेक जाति के नील,पीत, अरुण, स्वेतफूलिरहेहैं और उनपर मकरन्द मोहित मधुकरोंके वृन्दमधुर शब्दसे गुंजते हैं १ सुन्दर जलकुक्कुट और हंस कैसे सुहाये बोलि रहेहैं मानों अपने प्राणनाथ प्रभुको आये जानिकर स्तुति करतेहैं २ और अनेक जातिके पक्षियों कीजो धुनि सुन्दर सुहाई होरहीहै उसको सुनकर दाये बाये से पथिक लोग चले आते हैं सो मानों ते सब पक्षी अपनी मनोहर बाणी से उनको बुला लेतेहैं ३ ताल के समीपही मुनिजनों के बाणप्रस्थ और संन्यासी आश्रम बनेहैं तिन के चारों दिशा सुन्दर सुहाये बनके वृक्ष सोहते हैं ४ कहीं चम्पाके वृक्षहैं कहीं बौरश्रीहैं कहीं कदम्ब हैं कहींतमाल हैं कहींपठ हैं कहीं कटहरहैं कहीं ढाकहैं कहीं सुन्दर शाल है इत्यादि और भी जानो ५ ऋतुराज बसंतके प्रभाव से अनेक जाति केवृक्ष तो नबीन पल्लवों से सुन्दर शोभा देरहेहैं और अनेक जाति के फूलों से फूलिरहेहैं तिन पर मधु लुब्ध भ्रमरावली गुंजि रहीहैं ६ और तहां सोभाविकही शीतल मंद सुगन्धित मनोहर सदा पवन बहाकरती है ७ कहीं कहीं कोकिला मधुर धुनि करती हैं जिनके रसीले शब्द को सुनकर मुनिजनभी ध्यानसे चलिजातेहैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ कोई वृक्षफलोंके बोझोंसे प्रथ्वी को नियराय रहेहैंजैसे परोपकारी पुरुष संपति पाकर नमते हैं ॥ ४ ॥

देखि राम अतिरुचिर तलावा । मज्जन कीन्ह परम सुखपावा १
तहंपुनि सकलदेव मुनिआये । अस्तुतिकरि निजधाम सिधाये २
बैठे परम प्रसन्न कृपाला । कहत अनुज सन कथा रसाला ३
बिरहवंत भगवंतहि देषी । नारद मन भा क्षोभ बिशेषी ४
मोर शाप करि अंगीकारा । सहत राम नाना दुख भारा ५
ऐसे प्रभुहिं बिलोकहु जाई । पुनि न बनिहि अस अवसर आई ६
अस बिचारि नारद करबीणा । गये जहांप्रभु सुख असीना ७
स्वागत पूंछि निकट बैठारे । लक्ष्मण सादर चरण पखारे ८

दो० नाना बिधि बिनती करी प्रभु प्रसन्न जिय जानि ।
नारद बोले बचन तब जोरि सरोरुह पानि ॥ ५ ॥

ऐसेअति रुचिर तलावको देखिकर श्रीरामचन्द्रने स्नानक्रिया कैर बड़ासुख पाया१ तहां फेरि समस्त देवता और मुनीश्वर आये प्रथक्प्रथक् रामचंद्र की स्तुति करिके अपनेअपने धामको सिधाये २ अबतो परमप्रसन्न चित्त स्वामी बिराजतेहैं और लक्ष्मण

से सुन्दर २ कथा कहि रहेहैं ३ इसीसमय अपनेस्वामी श्रीरामचंद्रको विरह में विकल देखि कर नारदमुनिके मनमें बड़ाही क्षोभहुआ ४ किदेखो मेरे शापको अंगीकार करिके मेरे स्वामी रामचंद्र अनेक प्रकारके क्लेश सहतेहैं ५ ऐसे भक्तवत्सल स्वामी को चलिकर इसी समय देखा चाहिये फिरि ऐसासमय नहीं बनि परैगा ६ ऐसा बिचारिकर नारद मुनि अपना बीणा लिये रामचंद्रके पास गये ७ रामचंद्र स्वामीने नारदको आया जानि कर कुशलप्रश्न करिके अपने समीप बैठारा और लक्ष्मणने बड़े आदर समेत उनकेचरण पखारे ॥ ८ ॥ दोहा ॥ फिरि तो नारदमुनि ने अपने स्वामी को अपने ऊपर प्रसन्न जानि कर अनेक भांति से स्तुतिकरी औरहाथ जोरिकर रामचंद्रसे बोले ॥ ५ ॥

सुनहु परम उदार रघुनायक । सुन्दर अगम सुगम बरदायक १
देहु एकबर मांगहुं स्वामी । यदपि नाथ तुम अन्तर्यामी २
जानहु मुनि तुम मोर सुभाऊ । जनसन कबहुं न करहुंदुराऊ ३
कवनिबस्तु असिप्रियमोहिंलागी । जोमुनिबरतुमसकहुनमांगी ४
जनकहं कछुअदेय नहिं मोरे । अस बिस्वास तजेहु जनि भोरे ५
तब नारद बोले हर्षाई । अस बर मांगहुं करहुं ढिठाई ६
यद्यपि प्रभु के नाम अनेका । श्रुति कह अधिक एकते एका ७
राम सकल नामनते अधिका । होहु नाथ अघ खगगण बधिका ८
दो० एवमस्तु मुनि सन कहेउ कृपासिंधु रघुनाथ ।
तब नारद मन हर्ष अति प्रभु पद नायउ माथ ॥ ६ ॥

सुनो हे उदारशिरोमणि रघुनायक स्वामी आपतो जो परम सुन्दर अतिअगम बर-दायक हैं उनकेभी सुगम बरदायकहो १ ताते एकबर आपसे मैंभी मांगताहूं यद्यपि आपतो हे नाथ अंतर्यामीहो सोमेरेको देही दीजिये २ ऐसे नारदके ससंकोच बचन सुनिकर श्रीरामचंद्र बोले कि हे नारद तुमतो मेरे सुभावको भले प्रकार जानतेहो कि मैंअपने भक्तोंसे कभी किसी बस्तुका छिपावनहीं करताहूं ३ सोआज मेरेको ऐसीकौन सी बस्तु अति प्यारी लगीहै जिस को हेमुनिवर तुम नहीं मांगि सकतेहो ४ जनको तोकोई भी बस्तुमेरे अदेय नहींहै यह बिश्वास तो हेनारद तुम भूलि करभी त्याग नकरना ५ जब रामचंद्र स्वामीने नारदसे ऐसे मनरंजन बचनकहे तबतो नारदअति ही हर्षित होकर बोले कि हेस्वामी आपसे ढीठता करिके ऐसाबर मांगता हूं ६ कि यद्यपि आपकेतोअनेक नामहैं औरवेद उनका प्रभावएकसेएकका अधिकअधिक करिके कहतेहैं ७ अब मेरेको आप कृपा करिके ऐसा बर दीजिये कि उन सब नामों से आपका रामनाम समस्तपाप पक्षियोंका अति अधिक बधिक होवै ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जब नारद

नेविश्वोपकार रूप ऐसावर मांगा तवतो कृपासिंधु रामचंद्र स्वामीने एवमस्तु कहि दिया और नारदने हर्षित होकर स्वामीके चरणोंको शीश नवाया याहीतें यह राम नाम परम पावन परम मंत्र परम जाप्य परम पाप नाशक सहस्र नामहीके तुल्य सर्व-शास्त्र विख्यातहै रामस्तवराजे श्रीरामेतिपरंजाप्यं तारकंब्रह्मसंज्ञकं ब्रह्महत्यादिपा-पघ्नमितिवेदबिदोबिदुः ॥ ६ ॥ इत्यादि बहवस्सति ॥

अतिप्रसन्न निज नाथहिं जानी। पुनि नारद बोले मृदुबानी १
राम जबहिं प्रेरी निज माया। मोहेउ मोहि सुनहु रघुराया २
तब बिवाह मैं चाहेउंकीन्हा। प्रभु केहिं कारणकरयनदीन्हा ३
सुनुमुनितोहिंकहहुंसहरोषा। भजहिंमोहि तजिसकलभरोसा ४
करहुं सदा तिनकी रखवारी। जिमि बालक पालहिमहतारी ५
गह शिशु अनल अहिहि जब धाई। तेहि राखै जननी अरगाई ६
प्रौढ़ भये तेहिं सुत पर माता। प्रीति करै नहिं पाछिलबाता ७
असबिचारिपंडितमोहिंभजहीं। पायहु ज्ञान भक्तिनहितजहीं ८
दो० काम क्रोध मद लोभ सब प्रबल मोहकी धारि।
तेहि महं अति दारुण दुखद मायारूपी नारि ॥ ७ ॥

फिरितो नारद मुनि अपने स्वामी श्री रामचंद्र को अपने पर अति प्रसन्न जानि कर बड़ी कोमल वाणी से बोले १ कि हे स्वामी जब आप ने अपनी जगन्मोहनी मायाको मेरे पर प्रेरि कर मेरेको मोह करा दिया रहै २ तबमैंने मोहके वश बिवाह करना चाहा रहै सो आपने कौन कारणसेनहीं करने दिया ३ जब नारदने रामचंद्र से ऐसा पूछा तब स्वामीबोले कि सुन हे मुनि मैं तेरेसे हर्ष समेत पैज पूर्वक कहता हूं कि जो मेरे भक्त सबका भरोसा अर्थात् कर्मोपासन ज्ञानका भरोसा छोड़ि कर केवल मदाश्रित होकर मेरेहीको भजते हैं ४ उनकी मैं सदैव ऐसी रक्षा करतारहता हूं जैसे अबोध बालककी निरंतर रक्षा माता करती रहती हैं गीतायां॥अनन्याश्चिंतयंतेमांयेजनाःपर्य्युपासते तेषांनित्याभियुक्तानां योगक्षेमवहाम्यहं ५ जब कभी अजान बालक अग्नि वा सर्पके पकरनेको दौड़ता है तो उसकी रक्षकमाता उसे रोंकिराखती है ऐसेही यदि कोई मेरा भक्त प्रकृति बश कभी मेरे शेषत्वतें बहिर्भूत किसी कामना की अभिलाषा करता है तोमैं उसको उस दुराशासे बचा कर बिमल भक्ति ज्ञान बैराग्य बढ़ाता हूं ६ फिरि बड़े होने पर पुत्रके ऊपर माता प्रीति तो करतीहीहै परंतु भले बुरे आचरणोंसे प्रयोजन नहीं रखती है ऐसेही ज्ञानावलंबी जीवोंपर मेरे को जानो ७ यही बिचारि कर जो पंडित परमार्थ ज्ञाता हैं ते मेरेको सदा सेवन करते हैं ज्ञानी बिज्ञानी होने परभी भक्तिका ही भरोसा रखते है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ काम

क्रोध, लोभ, मदयह सब मोह की प्रबल सेना है तिनमें भी महा दारुण दुखदायक मायारूपी स्त्री होती है ॥ ७ ॥

सुनु मुनि कह पुराण श्रुति संता । मोह बिपिन कहंनारिबसंता १
जप तप नियम जलाशय झारी । होइ ग्रीषम शोषहि तेहि नारी २
काम क्रोध मद मत्सर भेका । इनहिं हर्ष प्रद बर्षा एका ३
दुर्बासना कुमुद समुदाई । तिन कहं सदा शरद सुखदाई ४
धर्म सकल सरसीरुह वृंदा । होइहि मति नहिं देइ दुख मंदा ५
पुनि ममता जवास बहुताई । पलुहै नारि शिशिर ऋतु पाई ६
पाप उलूक निकर सुखकारी । नारि निबिड़ रजनी अंधियारी ७
बुधि बल शील सत्य सब मीना । बंशी समत्रिय कहहिं प्रवीना ८
दो० अवगुण मूल शूल प्रद प्रमदा सब दुख खानि ।
तातें कीन्ह निवारण मैं मुनि अस जिय जानि ॥ ८ ॥

सुनो हे मुनि बेद पुराण और संतजन सब कहते हैं कि मोहके वनको तो पत्र पुष्प फलदायक स्त्री ऋतुराज बसंतहीके समान होती है १ जप, तप, नियमादिक सरोवरोंको स्त्री ग्रीष्म होकर शोषण करती है २ काम, क्रोध, मद मत्सररूपीमेंड़कों को आनन्द बढ़ना स्त्री को हे नारद एक बर्षाही तुम जानो ३ समस्त दुर्बासना रूपी कुमुदोंके समुदाय को स्त्री सदा शरदही के समान सुखदायक होती है ४ । ५ और समस्त धर्मरूपी कमलोंके समूहोंको स्त्री हिमऋतुके समान नाश कर देती है फिरि स्त्री रूपी शिशिरऋतु को पाकर ममतारूपी जवासे की बहुताई बड़ाहोपालव देकर बढ़ती है ६ और समस्त पापरूपी उलूकोंके समूहों को सुखदायक तो स्त्री महा अंधियारी अमासीराचिही जानो ७ बुद्धि,बल, शील, सत्यरूपीमीनों की नाशक प्रवीणजन स्त्री को बंशी के समानही कहते हैं ॥ ८ ॥ समस्त अवगुणों की मूल समस्त शूल दायक समस्त दुःखोंकी खानि प्रमदाही होती है ऐसा मैंने बिचारि कर कि मेरा अनन्य भक्त ऐसे क्लेशोंमें न परै तुमकोहे नारद उस बिवाह करनेसे बचा लिया प्रणहमारसेवकहितकारी यह मैंने अपना प्रण निबाहा ॥ ८ ॥

सुनि रघुपतिकेबचन सुहाये । मुनितनपुलकि नयनभरिआये १
कहहु कवन प्रभुकी अस रीती । सेवक पर ममता अरु प्रीती २
जे न भजहिं अस प्रभु भ्रम त्यागी । ज्ञान रंक मतिमंद अभागी ३
पुनि सादर बोले मुनि नारद । सुनहु राम बिज्ञान बिशारद ४

संतनके लक्षण रघुवीरा । कहहु नाथ भंजन भव भीरा ५
सुनु मुनि संतनके गुण कहहूं । जिनते मैं उनके बश अहहूं ६
षटबिकार तजिअनघअकामा । अचलअकिंचनशुचिसुखधामा ७
सावधान मानद मद हीना । धीर धर्म गति परम प्रवीना ८
दो० गुणागार संसार दुख रहित बिगत संदेह ।
तजि मम चरण सरोज प्रिय जिनके देह न गेह ॥ ९ ॥

ऐसे सुन्दर सुहाये भक्तवत्सल स्वामी रामचन्द्रके बचन सुनतेही नारदका शरीर पुलकित होगया और नेत्र प्रेम केजलसेभरि आये और अपने मनमें कहने लगे १ कहो भला और कौनसे स्वामीकी ऐसी सुन्दर रीति है कि सेवक पर ऐसी ममता और प्रीति करै २ जो ऐसे परम कृपालु स्वामीको समस्त भ्रम छोड़िकर नहींभजते हैंअर्थात्कामैस्तैस्तै हृतज्ञानाःप्रपद्यंतेऽन्यदेवतान्तंतंनियममास्थायप्रकृत्यानियतास्वया उनको ज्ञानशून्य मंदबुद्धि निरे अभागीही जानना चाहिये ३ ऐसा मनमें बिचारि कर फिरि आदर समेत रामचन्द्र से बोले कि हे बिज्ञान बिशारद हे भवभीर भंजक रघुबीर स्वामी आप अपने भक्तजनोंके लक्षण कृपाकरिके मेरेसे कहिये ४ । ५ श्रीरामचन्द्र ने कहा कि सुनो हे नारदमैं अपने भक्तोंके सद्गुण तुमसे कहताहूं जिन गुणोंसे मैं सदाउनके बश रहताहूं ६ मेरे भक्त काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर छहूं बिकारोंका त्याग करिके अनघ अकाम होते हैं कैसीही बिपत्ति में अपने धर्मसे नहीं चलते हैं मेरेही भरोसे पर उपाय शून्य रहते हैं परम पावन बिशुद्ध आचरण होते हैं सदा आनन्दितही रहते हैं ७ सर्बदा सावधान अप्रमत्त रहतेहैंसबकोमान-दायक और आप मानबर्जित होतेहैं बड़े धीर धर्मारूढ़ और परम प्रबीण होतेहैं८ ॥ दोहा ॥ समस्त सद्गुणसागर संसारदुखबर्जित संदेहशून्य होते हैं मेरे चरण कम-लोंको छोड़ि और उनको देह गेह पर्य्यन्त कुछभी प्यारा नहीं होताहै ॥ ९

निजगुणश्रवण सुनतसकुचाहीं । परगुण सुनत अधिक हर्षाहीं १
समशीतलनहिं त्यागहिंनीती । सरलसुभाव सबहिसनप्रीती २
जप तप ब्रत दम संयम नेमा । गुरु गोबिन्द बिप्र पद प्रेमा ३
श्रद्धा क्षमा मयित्री दाया । मुदिता मम पद प्रीति अमाया ४
बिरति बिबेक बिनय बिज्ञाना । बोध यथारथ वेद पुराणा ५
दंभ मान मद करहिं न काऊ । भूलि न देहिं कुमारग पाऊ ६
गावहिंसुनहिं सदाममलीला । हेतुरहितपर हित रतशीला ७

सुनु मुनि साधुनके गुण जेते । कहि न सकहिं शारदश्रुतितेते ८
छं० कहिसकनशारदशेषनारदसुनतपदपंकजगहे ।
असदीनबंधुदयालुअपनेभक्तगुणनिजमुखकहे ॥
शिरनायबारहिंबारचरणनिब्रह्मपुरनारदगये ।
तेधन्यतुलसीदासआशबिहायजेहरिरंगरये ॥
दो० रावणारि यश पावन गावहिं सुनहिं जेलोग ।
राम भक्ति दृढ़ पावहिं बिनु बिराग जप योग ॥ १० ॥

पराये मुखसे अपने गुणोंकी प्रशंसा कानोंसे सुनतेहीतो अतिही सकुचाते हैं और पराये गुणोंको सुनते बड़े प्रसन्न होजातेहैं १ शत्रु मित्र दोनोंमें समानही हितकारी होते हैं शीतल कहें सदा शांतचित्तही रहते हैं नीति कहें श्रुति स्मृति बिहित बिधि निषेध को कदापि त्यागनहीं करते हैं सीधे स्वभाव रहते हैं सबसे प्रीतिही रखते हैं २ जप, तप, ब्रत, दम, संयम, नियम में यथा काल युक्त होते हैं भगवत भागवत, आचार्य्य तीनोंके चरणोंमें सदा प्रेम रखतेहैं ३ परोपकारमें श्रद्धा अपराधियों पर क्षमा सब पर मयित्री और दया रखते हैं आप सदा प्रसन्न रहते हैं और मेरे चरणोंमें तन,मन, बचनसे प्रीति रखतेहैं ४ ज्ञान,वैराग्य, बिनय और बिज्ञान औरबेद पुराणके यथार्थ बोधमें निपुण होते हैं ५ मेरे जन्म कर्मकी लीलाहीको सदा गावते और सुनते हैं और अहेतु पराये हितमें रत रहते हैं ७ सुनो हे नारद मेरे भक्तों के जो गुण हैं उनको तो वेद शारदा भी नहीं कहि सकती है ॥ ८ ॥ छन्द ॥ यह सुनतेही नारदने रामचन्द्रके चरण कमल पकरिलिये और कहा धन्य दीनबंधु स्वामी अपने भक्तोंके गुण अपनेही मुखसे कहे इस प्रकार बारंबार रामके चरणोंको शिरनाइ कर नारद ब्रह्मलोक को चले गये तुलसी दास कहते हैं ते जीव धन्य जो सब आशा छोड़ि कर रामरंग में रंगे हैं ॥ दोहा ॥ रावणारि श्रीरामचन्द्र के परमपावन यशको जे नर वा नारी गावते हैं वा श्रवण करते हैं ते भगवद्भक्ति दृढ़ कहें अबि-चल अनपायनी बिना जप योग साधन के पाते हैं ॥ १० ॥

यह प्रथम दशक किष्किन्धा कांड का हुआ

आगे चले बहुरि रघुराया । ऋष्यमूक पर्बत नियराया १
तहं रह सचिव सहित सुग्रीवा । आवत देखि अतुल बलसींवा २
अति सभीत कह सुनु हनुमाना । पुरुष युगुलबलरूपनिधाना ३
धरि बटु रूप देखु तैं जाई । कहेसि मोहिं निज सैन बुझाई ४
बिप्र रूप धरि कपि तहं गयऊ । माथ नायपूंछत अस भयऊ ५

को तुम श्यामल गौर शरीरा । क्षत्री रूप फिरहु बन बीरा ६
कठिन भूमि कोमल पद गामी । कवनहेतु बन बिचरहु स्वामी ७
कै तुम तीनि देव महं कोऊ । नर नारायण कै तुम दोऊ ८
दो० जग कारण भव तारण भंजन धरणी भार ।
कै तुम अखिल भुवन पति लीन्ह मनुज अवतार ॥ १ ॥

नारद मुनिके जानेके पीछे श्री रघुनाथ स्वामी लक्ष्मण समेत पम्पासरसे आगेचले और ऋष्यमूक पर्वत को नियराये अर्थात् नगिचाये १ तहां उस पर्बत पर बालि के भयसे संचियों समेत सुग्रीव रहता रहै सो जो उसने बड़े बीर बलवान दोनों भाइयोंको धनुर्बाण धारण किये अपनी ओर आते देखा २ सोई अति सभीत होकर बोला कि हे हनुमान देखोतो ये दोनों पुरुष बल और रूपके निधान चले आते हैं ३ तातें तुम बटुबेष धारण करिके इनके समीप जाओ और शत्रु,मित्र, मध्यस्थ का मर्म लेकर मेरेसे अपने सैनोहींसे समुझा कर कहो ४ ऐसी अपने स्वामीकी आज्ञा पाकर बिप्ररूप हो हनूमान तहां गये और उनको शीश नाय कर इस भांति पूछने लगे ५ कि आप श्यामल गौर दिव्य शरीर धारण किये क्षत्रीरूप में बीर बने जो फिरते हो सो आप कौन हो ६ इस महाकठोर भूमि में इनकोमल चरणोंसे हे स्वामी आपकिस निमित्त बिचरते हो ७ मेरे ज्ञान में तो आप देवत्रय में कोऊ कहो वा नर नारायणही आप दोनों हैं ॥ ८ । दोहा ॥ अथवा जो सर्वेश्वर जगज्जन्मादि कारण भवतारण है सोई आप अनन्त कोटि ब्रह्मांडनायक नारायण बासुदेव बिष्णु भगवान ने पृथ्वीके भार उतारनेको यह मनुष्य अवतार लिया है ॥ १ ॥

कौशलेश दशरथ के जाये । हम पितु बचन मानि बन आये १
नाम राम लक्ष्मण दोउ भाई । संग नारि सुकुमारि सुहाई २
यहां हरी निशिचर बैदेहीं । खोजत फिरहिं बिप्र हम तेहीं ३
आपन चरित कहा हम गाई । कहहु बिप्र निज कथा बुझाई ४
प्रभुपहिचानि परेउगहिचरणा । सो सुख उमाजाइनहिंबरणा ५
पुनिधीरजधरि अस्तुति कीन्ही । हर्षहृदयनिज नाथहिंचीन्ही ६
मोर न्याय जो पूछेउं साईं । तुम पूछहु कस नरकी नाईं ७
तव माया बश फिरहुं भुलाना । तातेमैं नहिं प्रभु पहिंचाना ८
दो० एक मंद मैं मोह बश कीश हृदय अज्ञान ।
पुनि प्रभु मोहि बिसारेहु दीनबंधु भगवान ॥ २ ॥

जबकि हनूमानने स्वामीको कुछ पहिचानिही सा लिया और आपेको छिपायेही रहे तबतो तैसेही रामचन्द्र भी अपने पर रूपको छिपातेहुये हनूमान प्रति बोले कि हमतो अयोध्याके राजा दशरथके पुत्र मनुष्य हैं॥ आत्मानंमानुषंमन्येरामंदशरथात्मजं पिताकी आज्ञानुसार चौदह बर्षके लिये बनमें निवास करनेको आये हैं १ मेरा नाम राम और इनका लक्ष्मण है हम दोनों भाई हैं और हमारे साथ अति सुकुमारी परम सुन्दरी राजा बिदेह जनककी पुत्री हमारी भार्य्यारहै २ सो यहां किसीनिशाचर ने छल करिके हरि लीन्ही है उसको हे बिप्र हम खोजते फिरते हैं ३ अपना चरित्र तो हमने तुमसे सब कहि दिया अब हे बिप्र आप अपनी कथा हमसे समुझा कर कहिये कि किस निमित्त इस बन में फिरते हो ४ जो रामचन्द्र ने अपना और लक्ष्मण सीताका नाम लिया सोई हनूमान स्वयंरुद्रावतार अपने इष्टदेव स्वामी को पहिचानि कर चरणों पर गिरि पड़े उस समयका सुख हे पार्बती मेरे से कहा नहीं जाता है ५ फिरि धीरज धरिके बिनतीकरी और निज नायको पहिचानिकर बड़ाही हर्ष हुआ ६ बोले कि हे स्वामी मेरा पुंछना तो न्याय है कि मैं जीवखंड ज्ञान हूं आप अखंड ज्ञान ईश्वर मुझसे मनुष्यकीनाईं कैसे पुंछते हो ७ मैंतो आपकी माया के बश भूला फिरता हूं ताते मैंने आपको नहीं पहिचाना ॥ ८ ॥ दोहा ॥ एक तो मैं मंदजीव अज्ञान के वश और कुटिलहृदय अपना आपही से हूं और तिस पर जो आपसे शरणागत वत्सल स्वामी मेरेका भूलि जावेंतो मेरा हे दीनबंधु भगवान कहां ठिकाना है ॥ २ ॥

यदपि नाथ बहु अवगुण मोरे। सेवक प्रभु परिहरेउ न भोरे १
नाथ जीव तव माया मोहा। सो निस्तरै तुम्हारे छोहा २
तापर मैं रघुबीर दोहाई। जानहुं नहिं कछु भजन उपाई ३
सेवक सुत पितु मातु भरोसे। रहै असोच बनै प्रभु पोषे ४
अस कहि चरण परेउ अकुलाई। निजतनुप्रगटप्रीतिउरछाई ५
तब रघुपति उठाइउर लावा। निज लोचन जलसींचिजुड़ावा६
सुनु कपिजियजनिमानसि ऊना। तैं मम प्रिय लक्ष्मणतैंदूना७
सम दर्शी मोहि कह सब कोई। सेवक प्रिय अनन्य गतिसोई८
दो० सो अनन्य असि जासु की मति न टरै हनुमंत।
मैं सेवक सचराचर रूप राशि भगवंत ॥ ३ ॥

यद्यपि हे स्वामी मेरे अपार दोष हैं परंतु आपने तो कैसेही दोष युक्त अपने सेवक को कभी त्याग नहीं किया है १ क्योंकि जीव तो सदा आप की माया में मोहित है उसका छूटना तो केवल आप के अनुग्रहही से होता है २ तिस पर मैं

तो हे स्वामी आप की शपथ करिके कहता हूं कि भजन पर्य्यन्त को भी माया से भी छूटने का सिद्धोपाय नहीं जानता हूं केवल आप की कृपाही को उपाय मानता हूं ३ सेवक को तो उचित है कि जैसे पुत्र पिता माता के भरोसे पर असोचरहता है उसी प्रकार अपने स्वामी के भरोसे पर असोच रहे स्वामी को तो खरा खोटा कैसाही होय शरणागत पालतेही बनताहै ४ ऐसे कहिकर जो प्रेमाकुल होकर स्वामी के चरणों पर गिरे सोई अपना निज शरीर प्रगट हो गया हृदय में प्रीतिही छाइ रही कपट छूटि गया ५ जब निष्कपट हो गये तबतो रामचन्द्र ने उठाकर हृदय से लगा लिया और अपने नेत्रों के जल से सींचि कर जुड़ा दिया और बोले ६ सुनु हे कपि तू अपने जी में कुछ अपने को हेठा मति मान तू तो मुझे लक्ष्मण भाई से भी दूना प्यारा है क्योंकि मेरेको सबसे अधिक प्यारा सेवकही है ॥ पुनिपुनिसत्य कहौंतोहिंपाहीं ॥ मोहिं सेवक सम प्रिय कोउ नाहीं ७ समदर्शी मुझको सब संसार कहता है परंतु सेवक मेरे को अति प्यारा है क्योंकि सो अनन्य गति अनन्य देव अनन्य प्रयोजन होता है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ अनन्य उसको कहते हैं सुनु हे हनुमान जिस भक्त की ऐसी अचल बुद्धि होती है कि मैं तो सेवक हूं और चराचर रूप को एक राशि होकर मेरे स्वामीही की अंग बिभूति है मेरे स्वामी ते भिन्न कुछ भीनहीं है केवल मैं और मेरा स्वामीही है तीसरा कोई कभी कहीं नभूतोनभविष्यति ॥ ३ ॥

देखि पवनसुत पति अनुकूला । हृदय हर्ष बीते सब शूला १
नाथ शैल पर कपिपति रहही । सो सुग्रीव दास तव अहहीं २
तासन नाथ मयित्री कीजै । दीन जानि तेहि अभय करीजै ३
सो सीता कर खोज कराइहि । जहं तहं मरकट कोटिपठाइहिं ४
यहि बिधि सकलकथा समुझाई । लिये दोऊ निज पीठि चढ़ाई ५
जब सुग्रीव राम कहं देखा । अतिशय जन्म धन्य करिलेखा ६
सादर मिलेउ नाइ पद माथा । भेटें अनुज सहित रघुनाथा ७
कपि कर मन बिचार यह रीती । करिहैं बिधि मोसन ये प्रीती ८
दो० तब हनुमन्त उभय दिशि कहि सब कथा बुझाइ ।
पावक शाखी देइ कर जोरी प्रीति दृढ़ाइ ॥ ४ ॥

हनूमान ने अपने स्वामी रामचन्द्र को अपने पर ऐसा अनुकूल जब देखा तबतो हृदय में अतिही हर्ष हुआ और समस्त शूल बीतिगये १ बोले किहे नाथ इसपर्बत पर हम सब बानरों का पति सुग्रीव आप का दास रहता है २ उसके साथ आप चलि कर मयित्री कीजिये और उसको दीन जानि कर अभय दीजिये ३ सो सीता माता का भी खोज करा देगा देश देश में करोड़ों बानर उनके खोजने को भेजेगा ४

इस प्रकार समस्त कथा कहि कर दोनों भाइयों को अपनी पीठि पर चढ़ा लिया ५ जब सुग्रीव ने रामचन्द्र को देखा तबतो अपने जन्म को अतिहो धन्य माना ६ बड़े आदर समेत रामचंद्र के चरणों को शीश नवाइ कर मिला और लक्ष्मण समेत उनको भेटा ७ इस प्रकार अपने को परम नीच और रामचन्द्र को सर्वोत्तम जानि कर मनमें बिचार करने लगा कि हेदेव मेरे से ये कैसे प्रीति करेंगे ॥ ८ ॥ दोहा ॥ तबतो हनूमान ने राम की कथा सुग्रीवसे और सुग्रीव की कथा रामचन्द्रसे कहिकर अग्निदेव को शाक्षी देकर दोनों में परम दृढ़ प्रीति जोरि दी ४ ॥

कीन्हि प्रीतिकछु बीचन राखा । लक्ष्मण राम चरितसबभाषा१
कह सुग्रीव नयन भरि बारी । मिलिहि नाथ मिथलेश कुमारी २
मंत्रिन सहित यहां यक बारा । बैठ रहौं मैं करत बिचारा ३
गगन पंथ महं देखी जाता । परबश परी बहुत बिलखाता ४
राम राम हा राम पुकारी ।हमहिं देखि दीन्हेउ पट डारी ५
मांगा राम तुरत सो दीन्हा । पट उर लाइ सोच अति कीन्हा ६
कह सुग्रीव सुनहु रघुवीरा । तजहु सोच उर आनहु धीरा ७
सब प्रकार करिहौंसेवकाई। जिहिबिधि मिलिहि जानकीआई८
दो० सखा बचन सुनि हर्षेउ रघुपति करुणा सीव ।
कारण कवन बसहु बन मोहिं कहहु सुग्रीव ॥ ५ ॥

जब हनूमान ने राम और सुग्रीव में ऐसी प्रीति करदी कि उनमें किसी बात का भेद नहीं रहा तबतो लक्ष्मण ने रामचन्द्रका यौवराज्यभंग और वन में निवास और सीता के हरण का दुःख सुग्रीव से सब निवेदन किया १ मित्र का ऐसा परम दुःख सुनतेही सुग्रीव नेत्रों में जल भरि कर बोलाकि हे स्वामी मैं नहो जानताहूं सीता तो मुझको मिली रहै २ एक समय मैं मंत्रियों समेत इसी स्थान पर बैठा हुआ बिचार करता रहूं ३ तब आकाश मार्ग में मैंने उसकोजाते देखा कि परवश परी हुई बड़ा बिलाप करती जाती रहै ४ हा राम हा राम ऐसे पुकारती हुई हम सब की ओर देखि कर एक अपना अंगबस्त्र डारि दिया सो मैंने रखा लिया है ५ यह सुनतेही रामचंद्र ने उस बस्त्र को मागा सुग्रीव ने तुरंतही मंगादिया रामचन्द्र ने उसको पहिचानि और हृदय से लगा कर बड़ा सोच किया ६ तबतो सुग्रीव ने कहा कि हे स्वामी आप सोच का त्यागकरें ७ मैं आपकी सब प्रकार सेवकाई करूंगा जिससे सीता आप को आ मिलेगी ॥ ८ ॥ दोहा ॥ ऐसे अपने मित्र सुग्रीव के बचन सुनि कर करुणासीव रामचंद्र हर्षित होकर बोले कि हे सुग्रीव यह तोमेरे

सेकहो कि तुम इस बनमें कौन कारणसे बसतेहो तुम्हारा देश,कोश,राज्य औरतुम्हारी रानी कहां है ॥ ५ ॥

नाथ बालि अरु मैं द्वय भाई । प्रीति रही कछु बरणि न जाई १
दुंदुभि सुत मायाबी नाऊ। बैर लेन आवा मम गाऊ २
अर्द्ध राति पुर द्वार पुकारा। बाली रिपु बल सहै न पारा ३
धावा बालि देखि सो भागा । मैं पुनि गयउं बन्धु संग लागा ४
गिरि वर गुहा पैठ सो धाई। बालि मोहिं तब कहा बुझाई ५
परखेहु मोहिं एक पखवारा । नहिं आवहुं तो जानेहु मारा ६
मास दिवस तहं रहेउं खरारी । निसरी रुधिर धार तब भारी ७
तबमैंनिज मन कीन्ह बिचारा ।छलि खल प्रबलबालि कहं मारा ८

सुग्रीव बोले सुनो हेनाथ बालि और मैं दोनों भाइयों में परस्पर बड़ीही प्रीति रहै १ दुन्दुभी नाम एक दैत्य बड़ा बलबान जिस को पूर्व बालि ने युद्ध में मारा रहै २ उसका पुत्र मायावी नाम अपने बाप के बैर लेने को पम्पापुर में आया सो आधी राति को पुरके द्वार पर ताल ठोंकि कर गर्जा बालि से शत्रु का बल नसहा गया ३ जो बालि उसके ऊपर पीछे दौरा सोई मायावी बालि को देखतेही भागा और बालि पाछे परा मैं भी भाई को अकेला जाते जानि कर उसके साथही भगा चला गया ४ मायावी बालिकी भयके मारे एकपर्बत की कन्दरा में दौरि पड़ा तब तो बालि ने मेरे से समुझा कर कहा ५ कि तू यहीं रहु मैं जाता हूं पाख भरि मेरा मार्ग यहां देखना इतने में जो न लौटि आऊं तो जानियो कि मारा गया ६ मैंएक मास भरि तहां बैठा उसके आने का मार्ग देखता रहा जब उस कन्दरा से एक बड़ी रुधिर की धारा निकली ७ तब मैंने अपने मन में बिचार किया किशत्रु बड़ा प्रबल मायावी है उसने यह छल करिके बालि को मारि लिया ॥ ८ ॥ ६ ॥

बालि हतेसि मोहिं मारिहि आई । शिला एक दै चलेउंपराई १
पम्पापुर आयउं ततकाला । तन ब्याकुल मन बहुत बिहाला २
मंत्रिन पुर देखा बिनु साईं । दीन्हेउ राज मोहि बरियाईं ३
बाली ताहि मारि गृह आवा । देखि मोहिं जिय भेद बढ़ावा ४
रिपुसम मोहिंमारेसि अतिभारी ।हरि लीन्हेसि सर्बसअरुनारी ५
ताके भय रघुबीर कृपाला । सकल भुवनमहं फिरेउं बिहाला ६
यहां शाप बश आवत नाहीं। तदपि सभीत रहहुं मन माहीं ७

सुनिसेवक दुख दीनदयाला । फरकि उठे दोउ भुजा बिशाला ८
दो० सुनु सुग्रीव मैं मारिहौं बालिहिं एकहि बाण ।
ब्रह्म रुद्र शरणागत गयहु न उबरहिं प्राण ॥ ७ ॥

बालि को तो उस दुष्ट ने मारि लिया अब आकर मेरेको भी मारैगा यह बिचारि कर उस कन्दरा के द्वार पर एक भारी शिला देकर भागि चला १ तुरंतही पम्पापुर में आया शरीर तो मेरा बिकल और मन महा उदास २ इन मंत्रियो ने पुरकोस्वामी रहित जानिकर मेरे को हठि कर राज्य दे दिया ३ तिस पाछे बालि उस मायावी को मारि करजो घर आया तो मुझकोराज्याभिषेक देखि जीमें बड़ाही भेद बढ़ाया ४ शत्रु के समान मुझको अतिही मारा और मेरा सर्वस्व स्त्री समेत हरि लिया और मेरे पीछे परा ५ उस की भय के मारे हे स्वामी समस्त भुवन कहें सप्तद्वीपावती इस पृथ्वी मंडल में महा व्याकुल भागा फिरा सातों द्वीपों में कोई ऐसा खंड और देश और पर्बत वन सरित सरोवर नही है जहां मैं नहीं गया परंतु बालि के मारे कहीं भी मेरे को बिश्राम न मिला ६ यहां इस पर्बत पर मतंग ऋषि के शाप की भय से नहीं आता है तो भी मैं सदा सभीतही रहता हूं ७ ऐसा अपने सेवक का दुख सुनतेही दीन दयालु स्वामीके उसके निबारण के लिये प्रबल प्रचण्ड दोनों बिशाल भुज दण्ड फरकि उठे और बोले ॥ ८ ॥ दोहा ॥ सुनु हे सखा मैं तेरे दुखदाई बालि को एकही बाण से मारूंगा दूसरा बाण नहीं ग्रहण करूंगा यदि स्वयंभू चतुरानन ब्रह्मा वा त्रिनेत्रत्रिपुरांतक रुद्र की भी शरण जा गिरेगा तौभी उसके प्राणोंको कोई भी न बचा सकैगा ॥ ७ ॥

जे न मित्रदुख होहिं दुखारी । तिनहिं बिलोकत पातक भारी १
सेवक शठ नृप कृपण कुनारी । कपटी मित्र शूल सम चारी २
सखा सोच त्यागहु बल मोरे । सब बिधि करब काज मैं तोरे ३
दुंदुभि अस्थिताल दिखराये । बिनु प्रयास रघुनाथ ढहाये ४
देखि अमित बल बाढ़ी प्रीती । बालि बधन कीं भइ प्रतीती ५
लै सुग्रीव संग रघुनाथा । चलेचाप शायक गहि हाथा ६
तब रघुपति सुग्रीव पठावा । गर्जेसि जाय निकट बलपावा ७
सुनतबालि क्रोधातुर धावा । गहिकर चरण नारिसमुझावा ८
दो० कहा बालि सुनु भीरुप्रिय समदर्शी रघुनाथ ।
जो कदापि मोहिं मारिहें तौ पुनि होब सनाथ ॥ ८ ॥

जो कोई अपने मित्रके दुखसे दुखी नहीं होते हैं उन के देखने से भी बड़ापातक होता है १ सेवक शठ सेवक नहींहोता है और स्वामी कृपण स्वामीभी नहीं होता है कुनारी कहें स्वेच्छाचारिणीभार्य्या भार्य्या नहीं होताहै तैसेही कपटीमित्र मित्रभी नहींहोता है ये तो चारि के चारों निरे शूलही होतेहैं २ ताते हे सखा अबतुम मेरे बलके भरोसे पर अपना समस्त सोच दूरि करो मैं तेरे सब प्रकार समस्त कार्य्य पूरे करूंगा ३ जब रामचन्द्र ने बालि के बध से ऐसी सहसा प्रतिज्ञा करी तबतो सुग्रीव ने दुंदुभी दैत्य के हाडो के तालके वृक्ष दिखाये और बोला कि हे स्वामी जोई इन सब ताल वृक्षों को एकही बाणसे बेधैगा सो बालि को मारैगा यह सुनि कर रामचंद्र ने सुग्रीव की प्रतीति निमित्त उन सबको एकही बाण से अनायास काटि कर गिरा दिया ४ ऐसा अप्रमेय बल रामचन्द्र का देखि कर सुग्रीव की राम पर अति प्रीति बढ़ी और बालि के मारने की भी प्रतीति होगई ॥ ५ ॥ जब श्री रामचन्द्र ने जाना कि अब सुग्रीव को बालि के निधन का बिश्वास हमारे हाथ से होगया तब तो सत्य ब्रत सत्यसंध रघुनाथ स्वामी ने धनुष और एकही बाण हाथ में लेलिया और सुग्रीव को साथ लेकर पम्पापुर को चलदिये ६ जब पंपा-पुर के समीप पहुंचे तब तो रामचंद्रने सुग्रीव को भेजा सो रामके बलभरोसे पर पुरके निकट जाकर बालि को प्रचारि कर गर्जा ७ सुग्रीव का प्रचारना सुनतेही बालिक्रोध में भरिगया और सुग्रीव के ऊपर दौरा तब तो तारा उस की रानी उसके पैरोंपर गिरिपरी और अनेक भांति से उसको समुझाया ॥ ८ ॥ दोहा ॥ तब बालि उससे बोला कि सुनु हे भयभीत प्रिया तू शंका मत करै रामचंद्र तो सर्बेश्वर समदर्शी हैं उन के तो सब समानहीं हैं कोई शत्रुमित्र नहीं है और जो शरणागत बत्सलता के बश कदाचित् मेरे को मारेंगे तौभी सनाथ होजाऊंगा ॥ ८ ॥

अस कहि चला महाअभिमानी । तृण समान सुग्रीवहिं जानी १
भिरेयुगुल बाली अति तर्ज्जा । मुष्टक मारि महा धुनि गर्ज्जा २
तब सुग्रीव बिकल होइ भागा । मुष्ट प्रहार बज्र सम लागा ३
मैं जो कहा रघुबीर कृपाला । बंधु न होइ मोर यह काला ४
एक रूप तुम भ्राता दोऊ । तेहि भ्रम ते मारेउं नहिं सोऊ ५
कर परसा सुग्रीव शरीरा । तन भा कुलिश गई सब पीरा ६
मेली कंठ सुमनकी माला । पठवा पुनि बल देइ बिशाला ७
पुनि नाना बिधि भई लड़ाई । बिटप ओट देखत रघुराई ८
दो० बहुछलबल सुग्रीव करिहृदय हारि भयमानि ।
मारा बालिहिं राम तब हृदय मांझ शर तानि ॥ ९ ॥

इस प्रकार अपनी रानी तारा को समुझाकर महा अभिमानी बालि सुग्रीव को तृण के समान जानिकर युद्ध को चला १ संयुग में परस्पर दोनों भाई द्वन्दयुद्धकरने लगे अंत को बालि ने झपटिकर सुग्रीव के एक मुष्टक मारा और महाधुनि से गर्जा २ तब तो सुग्रीव व्याकुलहोकर भागा क्योंकि बालि के मुष्टका प्रहार सुग्रीव के वज्र के समानलगा ३ आकर रामचंद्र से कहा कि हे कृपालु स्वामी मैंने तो आप से पहिले ही कहा रहै कि यह मेरे समान बलका भाई नहीं है किन्तु मेरे से अति प्रबल मेरा कालही है ४ रामचद्र ने सुग्रीव से कहा कि तुम तो दोनों एकही रूप हो युद्ध में पहिचाने नहीं गये इस धोखे से मैंने उसको नहीं मारा ५ यह कहिकर जो सुग्रीव के शरीर पर अपना अभय हस्त कमल फेरा सोई सुग्रीव का शरीरतो वज्र होगया और व्यथा सब जाती रही ६ लक्ष्मणने हाथों से वन के पुष्पों की माला पहिचान के लिये उस के कंठ में पहिराइ दी और अति बिशाल बलदेकर फेरि भेजा ७ फिरि अनेक भांति की दोनों भाइयों में लराई होने लगी उस को एक वृक्षकीओझिल खड़े रामचंद्र देखते हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जब सुग्रीव ने अपने से अनेक छलबल किये और सब भांति हियेहार होकर भयमानी तब तो शरणागतबत्सल रामचंद्र ने बालि के बाण संधान करि के बीच हृदय में मारा ॥ ६ ॥

परा बिकल महि शरके लागे । पुनि उठि बैठ दीख प्रभु आगे १
हृदय प्रीति मुख बचन कठोरा । बोला चितय रामकी ओरा २
धर्म हेतु अबतरेहु गोसाईं । मारा मोहि ब्याध की नाईं ३
मै बैरी सुग्रीव पियारा । कारण कवन नाथ मोहिं मारा ४
सुनत राम अतिकोमल बाणी । बालि शीश परशा निज पाणी ५
अचलकरहुं तनुराखहु प्राणा । तब उठि बोला कृपानिधाना ६
जन्मजन्म मुनि यतन कराहीं । अंत राम कहि आवत नाहीं ७
सोमम लोचन गोचरआवा । बहुरि किप्रभु असबनिहिबनावा ८

सत्यसंध सत्यसंकल्प स्वामी के बाण के मारे अचेत प्रथ्वी पर गिरि पराफिरि संभारि कर उठबैठा और स्वामी को अपने आगे खड़ा देखा १ अपने प्राणनाथ स्वामी को देखिकर हृदय में तो अतिप्रीति बढ़ी परंतु बिषम समय के अनुसार राम की ओर देखिकर मुख से ब्यंगबचन बोला २ आपतो साक्षात् समस्त धर्मों के हेतु कहैं कारण अवतरे हो सो मुझको अधर्म युद्ध से ब्याध की नाई कैसे मारा ३ कौनकारण मैं तो बैरी और सुग्रीव आपका प्यारा हुआ कि जिससे सुग्रीव की पक्ष करिके हेनाथ आपने मेरे को मारा ४ ऐसी अति कोमल बालि की बाणी सुनतेही करुणानिधान रामचंद्र ने उसके शिर पर अपना अभयहस्त रखदिया और कहा ५ कि तू सोच मत

करै मैं तेरे तन को अचल करदूंगा तू प्राण त्यागमत कर तबतो बालि बोला कि हे कृपानिधान स्वामी सुनिये ६ जन्मजन्म प्रति बड़े बड़े मुनि अनेक यत्न करते हैं तौभी अंत्य समय राम ऐसा आप का नाम भी नहीं कहा जाता है ७ ते आपसाक्षात् मेरे नेत्रो के गोचर इस अंत्य समय में आये हो भला ऐसा दुर्लभ बनाव फिरि भी बनि परैगा ॥ ८ ॥

छं० सो नयन गोचर जासु गुण नित नेति कहि श्रुति गावहीं।
जिति पवन मन गो निरस करि मुनि ध्यान कबहुकि पावहीं ॥
मोहिं जानि अति अभिमान वश प्रभु कहेउ राखु शरीरहीं
असकवन शठहठिकाटि सुरतरु बारिकरहिंकरीरहीं ॥१॥
अब नाथ करि करुणा बिलोकहु देहु जो बर मांगहू।
जिहि योनि जन्महु कर्म बशतहं राम पद अनुरागहूं ॥
यह तनय मम सम बिनय बल कल्याण पद तेहिं दीजिये।
गहि बांह सुरनरनाह आपनदास अंगद कीजिये ॥ २ ॥

दो० रामचरण दृढ़ प्रीतिकरि बालिकीन्ह तनत्याग।
सुमुनमाल जिमिकंठते गिरतनजानहि नाग ॥ १० ॥

ते आप मेरे नेत्रों के गोचर हो जिन तुम्हारे गुण गणों को वेद सदा नेति नेति गावते हैं और पवन मनको जीति इन्द्रियो को अपने २ विषयों से रोकि कर बड़े बड़े मुनि कभी कभी ध्यान में पावते हैं सो आपने मेरे को अतिही अभिमान के वश जानि कर शरीर राखने को आज्ञा दी है भला ऐसा कौन शठ होगा जो करील की रक्षा के लिये कल्पवृक्ष को काटिकर उसकी वारि बनावैगा १ अब तो हे नाथ करुणा करिके मेरी ओर देखिये और जो बरदानमें मांगूं सो मुझ को दीजिये जिस योनि में अपने कर्मों के वशमें जन्मा करूं तहां तहां आपके चरणों में प्रेम किया करूं और यह मेरा अंगदनाम पुत्र है मेरेही समान इसमें बिनय और बल है इसको कल्याण पद दीजिये और इसकी बांह पकरि कर अपना दास करि लीजिये ॥ २ दोहा ॥ इस प्रकार रामचन्द्र प्रार्थना करि और भगवच्चरणारबिंदो में दृढ़ प्रीति करिके बालि ने अनायास शरीर त्याग दिया जैसे फूलों की माला को हाथी अपने कंठ से गिरते नहीं जानता है ॥ १० ॥

यहदूसरादशककिष्कन्धाकांडकाऔरपूर्वाद्धहुआ ॥

रामबालि निजधाम पठावा। नगर लोग सब ब्याकुल धावा १
नानाबिधि बिलाप करतारा। छूटेकेश न देह संभारा २

मैं पतितुमहिं बहुत समुझावा । कालबिवश कछुमनहिं नआवा ३
ताराबिकल देखि रघुराया । दीन्ह ज्ञान हरि लीन्हेसि माया ४
अंगद सन कछु कहन न पाये । बीचहि सुरपुर प्राणपठाये ५
उमादारु योषित कीनाईं । सबहि नचावत राम गुसाईं ६
तबसुग्रीवहिं आयसु दीन्हा । मृतककर्म बिधिवत् सब कीन्हा ७
रामकहा अनुजहि समुझाई । राजदेहु सुग्रीवहिं जाई ८
दो० लक्ष्मण तुरत बुलाये पुरजनबिप्र समाज ।
राजदीन्ह सुग्रीव कहं अंगद कहं युवराज ॥ १ ॥

भव भंजन भगवान श्रीरामचंद्र ने बालि को अपने में बड़ी प्रीति देखिकर उसको अपने निजधाम पुनरावर्त्ति वर्जित बैकुंठ को भेजदिया यह सुनतेही नगर के सब लोग महाव्याकुल होकर दौड़े आये १ तारा उसकी रानी अनेक प्रकार के बिलाप करने लगी केश जिस के छूटे हैं और शरीर की जिसको कुछ भी संभार नहीं है २ मैंने तो हे पति तुमको बहुतेरा समुझाया परंतु काल के वश तुम्हारे मन में कुछभी न आया ३ अंगद से भी कुछ न कहने पाये बीचके बीचही सुरलोक बैकुंठ को चले गये ४ तारा को अति बिकल देखिकर रामचंद्र ने उसको ब्रह्मज्ञान अनुग्रह किया और अपनी जगन्मोहनी माया को उसपर से हरि लिया ५ सुनो हे पार्बती रामस्वामी कठपुतरी की नाईं सब संसार को नचावते हैं ६ तारा को ज्ञान देकर सुग्रीव से कहा कि अपने भाई का मृतककर्म करि आओ सो सुग्रीव ने जाकर बिधिवत कहैं वेद बिहित देश काल कुल के अनुसार समस्त मृतककर्म अपने भाई का किया और बिशुद्ध होकर रामचंद्र के पास आया ७ तबतो रामचंद्र ने लक्ष्मण से समुझाकरकहा कि पंपापुर में जाकर सुग्रीव को राज्याभिषेक करो मैं नगर में पिता के बचनसे नहीं जाता हूं समुझाने का यह आशय है कि बालि अंगद को मेरे शरण करिगया है सुग्रीव के पीछे राजधानी अंगद की होगी उसको युवराज करना चाहिये ॥ ८ ॥ दोहा ॥ लक्ष्मण ने जाकर समस्त पुरजन और बिप्र समाज बुलाकर स्वामी की आज्ञानुसार सुग्रीव को राज्य और अंगद को युवराज्य किया ॥ १ ॥

उमा राम सम हित जगमाहीं । गुरुपितुमातु बंधुसुत नाहीं १
सुर नर मुनिसब की यहरीती । स्वारथलागिकरहिं सबप्रीती २
बालित्रास ब्याकुल दिनराती । तनुबिबर्ण चिंता जरछाती ३
सो सुग्रीव कीन्ह कपिराऊ । अति कृपालु रघुबीर सुभाऊ ४
पुनि सुग्रीवहिं लीन्ह बुलाई । बहुप्रकार नृपनीति सिखाई ५

गतग्रीषम बर्षाऋतु आई । रहिहौं निकट शैलपरछाई
अंगद सहित करेहु तुमराजू । संतत हृदय धरेहु ममकाजू
जब सुग्रीव भवनफिरि आये । रामप्रबर्षण गिरि परछाये

दो० प्रथमहिं देवन गिरिगुहा राखी रुचिर बनाइ ।
रामकृपानिधि कछुकदिन बास करैंगे आइ ॥ २ ॥

सुनो हे पार्बती रामचन्द्र के समान इस संसार में जीवका हितकारी गुरु, मात पिता, भाई, बेटा कोई भी तो नहीं है १ रामको छोड़ि सब देवता और नरमु सब की यही रीति है कि अपने स्वार्थ के लियेही प्रीति करते हैं गीतावल्यां ॥ सुर सिद्धमुनीश योगबिद वेद पुराण बखाने॥ पूजा लेत देत पलटे सुखहानि लाभ अनुमा को न संपति देत सेवत लोकहूं यह रीति ॥ दासतुलसी दीनपर एक रामही की प्रीति देखो बालि की त्राश से रातिदिन बिकल रहतारहै और तन जिस का बिवर्णहोगया चिन्त के मारे छाती जरती रहे उस अतिदीन सुग्रीव को कपिराज करदिया ऐसा अति कोम हे पार्बती श्री रामचन्द्र का स्वभाव है ३ । ४ तिस पीछे सुग्रीव को बुलालिया अनेक भांति राजनीति उस को सिखाई और चलते समय कहा ५ कि अब ग्रीष्म गई बर्षा आई सीता की प्राप्ति का उद्योग नहीं होसक्ता है तासे मैं तेरे समीप इस पर पर्णकुटी बनाकर रहूंगा ६ तुम अंगद समेत राज्यकरना और स मेरे कार्य्य को हृदय में धरना ७ रामचन्द्र की आज्ञा पाय सुग्रीव तो अपने घरआ और श्रीरामचंद्र लक्ष्मण समेत प्रवर्षण नाम पर्बत परछाये ॥ ८॥ दोहा ॥ देवता ने उसपर्बत की समस्त गुहा अति रुचिर पहिलेहीसे बनाइ राखी रहै इस निमि कि कृपानिधान राम स्वामी किसी दिन यहां इस पर्वत पर निवासकरैंगे ॥ २ ॥

सुन्दर बन कुसुमित अति शोभा । गुंजत चंचरीक मधु लोभा
कन्द मूल फल परम सुहाये । बहुत भये जबते प्रभु आये
देखि मनोहर शैल अनूपा । रहे तहं अनुज सहित सुर भूपा
मंगल रूप भयो बन तबते । कीन्ह निवास रमा पति जबते
मधुकर खगमृग तनुधरि देवा । करहिं सिद्धसब मुनिकीसेवा
फटिक शिला अति शुभ्र सुहाई । सुख आसीन तहांदोउभाई
कहत अनुज सन कथा अनेका । भक्तिबिरतिनृप नीतिबिबेका
वर्षा काल मेघ नभ छाये । गरजत लागत परम सुहाये

दो० लक्ष्मण देखहु मोर गण नाचत बारिद पेखि ।

गृही बिरति रत हर्ष जिमि बिष्णु भक्त कहं देखि ॥ ३ ॥

सुन्दरता कुसुमित बनकी अति शोभा होरही हैं जहां मधुके लोभसे भ्रमर गुंजि रहे हैं १ और जबसे श्री रामचंद्रने इस वनमें प्रवेश किया है तबसे कन्द,मूल,फल परम स्वादिष्ट सुहाये अनेक जातिके बहुतायत से उत्पन्न होगये २ ऐसा मनोहर अनूप पर्वत देखिकर देवेश्वरेश्वर श्री रामचंद्र लक्ष्मण समेत उस पर रहे ३ मंगल रूपही बन तबसे होगया है जब से साक्षात् लक्ष्मीपति श्रीरामचंद्रने उसमें निवास किया है ४ देवता, सिद्ध,मुनीश्वर,खग, मृग मधुकरोंके शरीर धारधारि कर रामचंद्र की सेवा करते हैं ५ फटिक शिला एक अति उज्वल सुन्दर सुहाई रहे उसपर सुख पूर्वक दोनों भाई विराजमान हुये ६ तहां श्री रामचंद्र लक्ष्मणसे अनेक कथा कहने लगे कभी भक्ति कहते हैं कभी वैराग्य कभी राजनीति कभी ज्ञान वर्णन करते हैं ७ बर्षाकाल के मेघ जो आकाश में छाइ रहे हैं सो गर्जते हुये परम सुहाये लगते हैं उनको देखि कर रामचंद्र लक्ष्मणसे कहते हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ देखोतो हे लक्ष्मण ये मयूर गण मेघों को उठे देखि कर कैसे हर्षित नाचते हैं जैसे वैराग्य रतग्रहस्थ बैष्णवोंको अपने घरमें आये देखि कर हर्षित होते हैं ॥ ३ ॥

घन घुमंडि नभ गर्ज्जत घोरा । प्रिया हीन डरपत मन मोरा १
दामिनि दमकि छिपति घन माहीं । खलकीप्रीतियथाथिरनाहीं २
बरषहिं जलद भूमि नियराये । यथा नवहिं बुध बिद्या पाये ३
बुन्दअघात सहहिं गिरि कैसे । खलके बचन संत सह जैसे ४
क्षुद्र नदी भरि चलीं तराई । जिमि थोरे धन खल इतराई ५
भूमि परत भा ढाबर पानी । जिमि जीवहि माया लपटानी ६
समिटिसमिटिजलभरहिंतलावाजिमिसद्गुणसज्जनपहंआवा ७
सरिता जल जलनिधि महं जाई । होइअचलजिमिजनहरिपाई ८
दो० हरित भूमि तृण संकुल समुझि परै नहिं पंथ ।
जिमि पाषंड बिबाद ते गुप्त होहिं सदग्रंथ ॥ ४ ॥

मेघजो आकाशमें घुमड़ि घुमड़ि कर महा घोर गर्जते हैं उसको सुनि कर प्रिया बिहीन मेरा मन डराता है १ देखो हे लक्ष्मण यह चंचल चपला दामिनी मेघों में दमकि कर उसी क्षण मेघोंहीमें कैसे छिप जाती है जैसे खलों की प्रीति स्थिर नहीं होती है २ जल संकुल मेघ पृथ्वीको नगचाइ कर कैसे झूमि झूमि वर्षते हैं जैसेबुध जन बिद्याको पाकर नमि चलते हैं ३ महा घोर बर्षाकी बूदों की दुस्सह घातको पर्बत कैसे सहते हैं खलोंके परुष बचनोंको जैसे सहन शील संतजन सहते हैं४

क्षुद्र नदी थोड़ेही जलसे अपनी अपनी तराइयोंको भरि कैसी उमगि चली हैं जैसे क्षुद्र जन थोड़ाही धन पाइ कर इतराते हैं ५ पृथ्वी पर गिरतेही बिशुद्ध जल कैसे ढाबर कहें गदरीला होगया है जैसे बिशुद्ध सच्चिदानन्द जीव मायाके बंधन से मलीन हो गया है ६ सब ओरसे जल समिटि समिटि कर तलाव भरते हैं जैसे समस्त सद्गुण सज्जनोंहीके पास आते हैं ७ नदियोंका जल जब तक नदियोंही में रहता है तब तक बिश्राम नहीं पाता है छोटी नदियोंसे बड़ी नदियोंमें जाता है फिरि समुद्र में जाकर अचल हो जाता है जैसे जीव छोटे बड़े देवताओंको भटकते भटकते जब विष्णु भगवान को प्राप्त होता है तब अचल होजाता है बाराहपुराणे । भास्करस्यतु योभक्तःसप्तजन्मांतरंनरःतस्यैवतुप्रसादेनरुद्रेभक्तिःप्रजायते१ शंकरस्यतुयोभक्तःसप्तजन्मांतरंनरःतस्यैवतुप्रसादेन बिष्णुभक्तिप्रजायते २ ॥ दोहा ॥ तृणोंकी संकुलतावसे पृथ्वी हरित हो रही है मार्ग नहीं सूझि परता है जैसे पाषण्ड कुदृष्टियों के विवाद से सद्ग्रन्थ अर्थात् वेदादि सत्यग्रन्थ लोप होजाते हैं ४ ॥

दादुर धुनि चहुं दिशा सुहाई । वेद पढ़हिं जनु बटु समुदाई १
खोजतकतहु मिलहिनहिं धूरी । करहिं क्रोध जिमिधर्महिंदूरी २
शशि सम्पन्न सोह महि कैसी । उपकारी की सम्पति जैसी ३
कृषी निरावहिंचतुरकिशाना । जिमिबुध तजहिंमोहमदमाना ४
देखियत चक्रवाक खगनाहीं । कलह पाइ जिमिधर्म नशाहीं ५
अर्कजवास पात बिनु भयऊ । जिमिसुराज्यखलउद्यमगयऊ ६
बिबिधिजंतु संकुल महिभ्राजा । बढ़ति प्रजाजिमिपाइ सुराजा ७
जहंतहं रहे पथिक थकि नाना । जिमि इंद्रीगण उपजै ज्ञाना ८

दो० कबहुं दिवस मह निबिड़तम कबहुंकि प्रगट पतंग ।
उपजहिं बिनशहिं ज्ञान जिमि पाइसुसंग कुसंग ॥
कबहुं चलै मारुत प्रबल जहं तहं मेघ बिलाहिं ।
जिमि कपूतके जन्मतें सब कुल धर्म नशाहिं ॥ ५ ॥

दादुरों की धुनि चारोंओर हेलक्ष्मण कैसीसुन्दर सुहाई होरहीहै मानोंवेदाध्ययनशालामें बटुसमुदाय बेदोहींका पाठकरि रहेहैं १ धूरितो कहीं ढूंढनेसेभी नहीं मिलती है अतिवर्षाने ऐसे मिटादीहै जैसे क्रोध धर्मको दूरिकरदेतेहैं २ खेतीकी बाढ़िसेसंपन्न पृथ्वी कैसी दिनदिन अधिक शोभा देतीहै जैसे परउपकारीपुरुषोंकी संपदाबढ़ती जातीहै अपनी खेतियोंको चतुर कृषी लोग कैसे निरावते हैं किसमस्त उसके निरोधक तृणोंको दूरि करदेतेहैं जैसेआत्माके निरोधक मोह मदादिकों को बुधजन त्याग करते हैं ४

चक्रवाकपक्षीतो ऐसे अदृश्य होगयेहैं जैसेकलह पाइकरधर्म नाश होजाते हैं ५ ॥ और ऋ रजवासे कैसे पच बिहीन होगयेहैं जैसे सुधर्मी राजाके राज्यमें चोर बटपारियों के उद्यम जाते रहतेहैं ६ अनेक जातिके कृम, कीट, पतंगादि जन्तुवोंसे संकुल पृथ्वी कैसी से.हतीहै जैसे सुराज्यको पाइकर प्रजा बढ़तीहै ७ जलकी बाढ़िसे पथिक लोग जहांके तहां थकित कैसे होरहे हैं जैसेज्ञान होने से समस्त इंद्री अपनेरविषयों से थकित होजातीहैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ कभीतो दिनमें महा अंधेरा होजाताहै और कभी सूर्य्य प्रगट होतेहैं जैसेकुसंगसे ज्ञाननष्ट होजाताहै और सत्संगसे उपजता है कभी प्रबल पवनके वेगसे समस्त मेघ बिलाइ जातेहैं जैसे कुलमें कुपुत्रके जन्मसे समस्त कुलधर्म नाश होजातेहैं यहांवर्षा और शरदकी संधिके कारण दोदोहे कहेहैं ॥ ५ ॥

वर्षा बिगत शरद ऋतु आई । देखहु लक्ष्मण परम सुहाई १
फूले काम सकल महि छाई । जनु बर्षा कृत प्रगट बुढ़ाई २
उदित अगस्त्य पंथ जलशोषा । जिमिलोभहिं शोषहि संतोषा ३
सरिता सर जलनिर्मल सोहा । संत हृदय जस गत मदमोहा ४
रसरस शोषसरित सरपानी । ममता त्यागकरहिं जिमिज्ञानी ५
पंकन रेणु सोह कसि धरणी । नीति निपुण नृपकी जसिकरणी ६
बिनुघननिर्मलसोह अकाशा । हरिजनजिमि परिहरि सबआशा ७
कहुं कहुं वृष्टि शारदी थोरी । कोउ एकपाव भक्ति जिमि मोरी ८
दो० चले हर्ष तजि नगर नृप तापस बणिक भिखारि ।
जिमि हरि भक्तिहिंपाइ श्रम तजत आश्रमी चारि ॥ ६ ॥

वर्षातो बिगत हुई और शरदऋतु का आगमहुआ देखो हे लक्ष्मण यह ऋतु भी बसंतहीके समान परम सुहावनीहै इसमेंभी अनेकजातिके वृक्ष, लता, बेली, कमल कुमुद फूलते फलतेहैं अन्नभी उत्पन्न होतेहैं १ स्वेत स्वेत फूलेहुये कासोंसे समस्त पृथ्वी कैसी छाइ रही है मानो बर्षाऋतु ने अपना बृद्धापनही प्रगट कर दिखाया है २ दक्षिण दिशामें अगस्त्यमुनि के उदय होतेही मार्गों काजल सूखिचला जैसे लोभको संतोष सोखताहै ३ सरिता और सरोवरों का जल कैसा निर्मल सोहताहै जैसा भगवज्जनों का हृदय मद मोहादिवर्जित बिशुद्ध होत है ४ रसरस कहें क्रमक्रमसे थोरा थोरा सरिता और सरोवरों काजल दिन दिन कैसा सूखता जाता है जैसे ज्ञानवान पुरुष शनैःशनैःममता का त्याग करतेहैं ५ अब न तो कहीं कीच है और न धूरिहै कैसी सुन्दर सुहाई प्रथ्वी दीख परती है जैसी नीति निपुण राजा की करणी प्रशंसनीय होतीहै ६ मेघ बिहीन शरदका आकाश कैसा निर्मल सोहता है जैसे समस्त आशाओं का त्याग करिके भगवज्जन परम प्रसन्न शोहतेहैं भागवते ॥ ननाकपृष्ठन्नचसार्बभौम्यं

नपारमेष्ठ्यन्नरसाधिपत्यन्नयोगसिद्धिंनपुनर्भवंवावांछंतियत्पादरजप्रपन्नाः ७ चिचा स्वाति की शारदी बर्षाकहीं कहीं थोरी थोरी होतीहै जैसे असंख्यकोटि जीवों में कोइ एक मेरी भक्ति पाताहै ॥ ८ ॥ दोहा ॥ अबतो राजा औतपस्वी बंजारे औरभिक्षुकअपने अपने उद्यमोंको चले नगर त्याग दिये जैसे भगवद्भक्ति फलको पाकर चारोंआश्रमी अर्थात् ब्रह्मचारी गृहस्थवाणप्रस्थ संन्यासी अपने अपने आश्रमोंके श्रमको त्यागकरदेतेहैं॥

सुखी मीन गण नीर अगाधा। जिमि हरि शरण न एकहु बाधा १
फूले कमल सोह सर कैसे। निर्गुण ब्रह्म सगुण भये जैसे २
गुंजत मधुकर निकर अनूपा। सुन्दर खग मृग नाना रूपा ३
चक्र वाक मन दुख निशि पेखी। जिमि दुर्जन पर संपति देखी ४
चातक रटत तृषा अति ओही। जिमि सुख लहै न शंकर द्रोही ५
शरदातपनि शिशशि अपहरई। संत दरश जिमि पातक टरई ६
देखहिं बिधु चकोर समुदाई। चितवहिं जिमि हरिजन हरि पाई ७
मशक दंश बीते हिमत्राशा। जिमि द्विज द्रोह किये कुलनाशा ८
दो० भूमि जीव संकुल रहे गये शरद ऋतु पाइ।
सद्गुरु मिलैते जाइ जिमि संशय भ्रम समुदाइ ॥ ७ ॥

अल्पजल के जीवों को जल के सूखने का सदा भय रहता है और अगाधजल के मीन गण सदा सुखीही रहते हैं जैसे अन्य देव परायणों को उन के लोकोंसमेत नाश की भय से भय भीत रहते हैं और भगवत् शरणागतों को एक भी बाधा नही होती है अगजगनागअसुरनरदेवा। नाथ सकलजगकालकलेवा ॥ १ रंग रंग के फूले कमलों से सरोवर कैसे सोहते हैं जैसे हेय प्रत्यनीक गुणों से निर्गुण ब्रह्म अपने सौभाविक कल्याण गुणों से सगुण होने से शोभित होता है २ शरद काल में भ्रमरोंकेसमूहते गुंजते हैं और सुन्दर पक्षी और मृगआनन्दित हैंएक चक्रवाकही को रात्रिदेखिकर दुखहोत है जैसे दुर्जनोंको पराई संपदा देखि कर दुखहोता है ३।४ चातक पपीहा अति पिपासासे पुकारताहै उसको सुखकैसे नही मिलताहै जैसे जगत् हितकारी श्री शिव जी का द्रोही कदापि सुख नहींपाता है ५ शरद की आतप को रात्री में चंद्रमा हरता है जैसे भगवज्जनों के दर्शन से पातक टरता है ६ चकोरोंके समुदाय चद्रमा को कैसे देखते हैं जैसे हरिको पाइ कर हरिजन देखते हैं ७ मशक और दंश शरद के शीत से कैसे नाश हो गये जैसे द्विज द्रोह से कुल नाश होता है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ पृथ्वी पर अनेक जातिके जीव रहें शरदको पाइकर कैसे नाशहो गये जैसे सद्गुरु के मिलने से समस्त संशय औरभ्रमोंके समुदायनाश होतेहैं ७ ॥

बर्षा गत निर्मल ऋतु आई । सुधि न तात सीता की पाई १
एक बार कैसेहु सुधि जानौं । कालहुं जीति निमिष महं आनौं २
कतहु होइ जो जीवति होई । तात यतन करि आनहु सोई ३
सुग्रीवहु सुधि मोरि बिसारी । पावा राज्य कोश पुर नारी ४
जेहिं शायक मैं मारा बाली । तेहि शर हतहुं मूढ़कहं काली ५
जासु कृपा छूटहि मद मोहा । ताकहं उमाकि सपनेहु कोहा ६
जानहिंयह चरित्र मुनि ज्ञानी । जिनरघुबीर चरण रति मानी ७
लक्ष्मण क्रोधवंत प्रभु जाना । धनुष चढ़ाइ गहेउ कर बाना ८

दो० तब अनुजहिं समुझावा रघुपति करुणा सींव ।
भय देखाइ लै आवहु तात सखा सुग्रीव ॥ ८ ॥

इस प्रकार वर्षा और शरद के वर्णन के मिस से संग्रह और त्याग के लिये भक्ति ज्ञान, बैराग्य और राजनीत का उपदेश करिके फिरि अपनी नरनाट्य लीला करने लगे बोले कि बर्षा तो बीति गई निर्मल शरद ऋतु भी आ गई परंतु सीताकी सुधि अब तक हे भाई लक्ष्मण कुछ भी तो नहीं पाई १ एक बार जो किसी प्रकार सुधि जानि पाऊं तो काल को भी जीति पल मात्र में ले आऊं २ कहीं होइ पर जीवती होय तो सोई उपाय करूं जिस से लेही आऊं ३ इस सुग्रीव को देखोकि उस नेभी मेरी सुधि बिसार दीहै राज्य, देश, कोश और रानी को पाकर मदोन्मत्त होगयाहै ४ यदि आजही मेरे पैरों न आ परा तो जिस बाण से मैंने बालि को मारा है उसी बाण से काल्ह उस मूढ़ को मारूंगा ५ जिस स्वामीकी कृपा से जीवों के मद, मोह छूटि जातेहैं उसको हे पार्वती स्वप्न में क्रोध कहां होता है ६ ऐसे स्वामी के गूढ़ चरित्रों को ज्ञानी मुनि जानते हैं जिन्हों ने राम के चरणों में प्रीतिमानीहै अज्ञ नो क्या जानै ७ लक्ष्मण ने जो अपने स्वामी रामचन्द्र को सुग्रीव पर क्रोधवन्त जाना सोई अपना धनुष चढ़ा कर हाथ में बाण लिया और सुग्रीव के पास जाने को उद्यत हो गये ॥ ८ ॥ दोहा ॥ तबतो करुणा सींव रामचन्द्र ने लक्ष्मण को समुझाया कि मैंने क्रोध में ऐसा कहा है सुग्रीव को सखा बना कर मारना उचित नहींहै भयदिखा कर ले आना चाहिये ॥ ८ ॥

यहां पवनसुत हृदय बिचारा । राम काज सुग्रीव बिसारा १
निकटजाइचरणनसिरनावा । चारिहु बिधितेहिं कहिसमुझावा २
सुनि सुग्रीव परमभयमाना । बिषय मोर हरि लीन्हेसिज्ञाना ३

अब मारुतसुत दूत समूहा । पठवहु जहं तहं बानर यूहा ४
कहहु पाखमहं आवन जोई । मोरे कर ताकर बधहोई ५
तब हनुमन्त बलाये दूता । सब कर करि सन्मान बहूता ६
भय अरु प्रीति नीति दिखलाई । चले सकल चरणन सिरनाई ७
तिहिं अवसरलक्ष्मण पुरआये । क्रोधदेखि जहंतहं कपिधाये ८
दो० धनुष चढ़ाइ कहेउ तब जारि करहु पुरक्षार ।
ब्याकुल नगर देखि तब आयउ बालि कुमार ॥ ६ ॥

यहां लक्ष्मणके आनेसे पहिलेही हनुमान ने विचाराकि सुग्रीव राज्यमद में रामकेकाज को भूलिगया १ तबतो सुग्रीवके पास जाकर प्रणाम किया और राजनीति के चारोंचरण अर्थात् साम, दाम, भेद,दंडसे उसको समुझाया २ सोतो सुनतेहीसुग्रीव ने बड़ा भयमाना कि देखो इन विषयों ने मेरा सब ज्ञान हरलिया ३ बोला कि सुनो हे हनुमान होगया सोतो होगया अबतुम बेगिही दूतों को सेनाके बुलाने के लिये जहां तहां को भेजो ४ और दूतों से यह कहिदो कि तुम सब यूथपालों से यह कहते जाओ किजो कोई पाखदिन के भीतर सेना समेत पम्पापुर में न पहुंचेगा उस का बध महाराज सुग्रीव के हाथ से होगा ५ तब तो हनूमान ने दूतों को जहां तहां भेजा और उनका बड़ा सन्मान किया ६ भयभी दिखाई प्रीति रीति भी दिखाई ते सब राजाको प्रणाम करिके सेना बुलानेको गये ७ तासमय लक्ष्मण पंपापुर में आये उनको क्रोधवन्त देखकर बानर अपने अपने प्राणलेकरजहां तहां भागे८ दोहा ॥ तब तो लक्ष्मण ने धनुष चढ़ाकर कहा कि कहां भागि कर जाओगे मैं समस्त पुरको जारि कर छार करदूंगा इस प्रकार नगर में खरभर देखकर लक्ष्मण के पास बालिकुमार अंगद आया ॥ ६ ॥

चरणनायशिर बिनतीकीन्ही । लक्ष्मणअभय बांहतेहिं दीन्ही १
क्रोधवन्त लक्ष्मणसुनि काना । कहकपीश अतिशयअकुलाना २
तुम हनुमन्त संगलै तारा । करि बिनती समुझाहु कुमारा ३
तारा सहितजाइ हनुमाना । चरणवन्दि प्रभुसुयश बखाना ४
करि बिनती मन्दिर महं लाये । चरण पखारि पलंग बैठाये ५
तबकपीश चरणनशिरनावा । गहिभुज लक्ष्मण कंठ लगावा ६
पवन तनय सबकथा सुनाई । जिहिंबिधि गये दूत समुदाई ७
सुनतबिनीतबचनसुखपावा । लक्ष्मणतिहिंबहु बिधिसमुझावा ८

दो० हर्षि चलेउ सुग्रीव तब अंगदादि कपि साथ ।
रामानुज आगे किये आये जहं रघुनाथ ॥ १० ॥

आयकर लक्ष्मण के चरणों को शीश नवाया और बिनती करी तबतो लक्ष्मण ने अंगद को अभय बांह दी १ लक्ष्मण को क्रोधवन्त आया सुनि कर सुग्रीव अतिही अकुला कर बोला २ कि हे हनुमान तुम ताराको साथ लेकर जाओ और बिनतीकर के कुमार को समुझाओ ३ तबतो तारा समेत हनुमान ने जाकर लक्ष्मण के चरण बंदिकर रामचंद्र के सुयश का बखान किया ४ और बिनती करके मंदिरमें लेगये चरण पखारि पलंग पर बैठाये ५ तब राजा सुग्रीव ने आकर चरणो को शीश नवाया लक्ष्मणने बांह पकरि कर कंठसे लगालिया ६ तापीछे हनूमान ने सब कथा कही जैसे सेनाके बुलाने को दूतभेजे गयेहैं ७ ऐसे सुन्दर विनीत बचन सुनतेही लक्ष्मण ने बड़ा सुखपाया और सुग्रीव को सबभांति से समुझाया ८ ॥ दोहा ॥ तब तो प्रसन्न होकर राजा सुग्रीव अंगदादि बानरों को साथ ले और श्रीरामानुज लक्ष्मण कुमारको पुरुषकार करके उनकी बांहसे सब श्रीरामचद्र के पास आये ॥ १० ॥

यहतीसरादशककिष्किन्धाकांडकाहुआ ॥ ३ ॥

नाइचरण शिर कह करजोरी । नाथमोहिं कछु नाहिन खोरी १
अतिशय प्रबल देवतवमाया । छूटहि तबहिं करहु जबदाया २
बिषय बश्यसुरनर मुनिस्वामी । मैं पामर पशु कपि अतिकामी ३
नारिनयन शर जाहिन लागा । घोरक्रोध तम निशि जोजागा ४
लोभपाश जेहिं गरन बंधाया । सो नर तुम समान रघुराया ५
यह गुण साधन ते नहिं होई । तुम्हरी कृपा पाव कोइकोई ६
तब रघुपति बोले मुसुकाई । तुमप्रिय मोहिं भरत सम भाई ७
अबसो यतन करहु मनलाई । जिहिंबिधि सीता की सुधिपाई ८
दो० यहिंबिधि करत बतकही आये यूथपयूथ ।
नाना बर्णअतुल बल बानर भालु बरूथ ॥ १ ॥

आइकर सुग्रीवने रामचंद्रके चरणों को प्रणाम किया और अंजलि जोरि करकहा कि हे नाथ इस आपकी आज्ञा भंगमें मेरी कुछभी लाग नहीहै १ हेदेव आप की माया अत्यन्त प्रबलहै जीव अपनी सामर्थ से उससे किसी भांति नहीं छूटि सकता है जब आपही अहेतुकी कृपा करो तभी छूटता है २ इन पांच बिषयों के बशीभूत समस्त देव मनुष्य मुनीश्वर हेस्वामी होरहेहैं तहां भला मेरी कौन गणना है मैंतो पामर अति नीच बानर पशुजाति सुभावही ते अति कामीहूं ३ जिस जीव के नारि

के नेत्रोंके बाण न लगेहों अर्थात् जो कामके बशन हुआहो और जो जीव महाघोर क्रोध की अंधेरी राति में जगा हो अर्थात् जो क्रोधके बशन हो और लोभ के पाश से जिसका गरा न बंधाहो अर्थात् जो काम,क्रोध,लोभ इनतीनोंके बश न हुआ हो सोतो हे स्वामी आपही के समान होगा ४।५ यह काम, क्रोध, लोभ के जीतने का गुण साधनोंसे नहीं होताहै केवल आपही की कृपासे कोई कोई जो आपके अनन्य भक्त हैं तेई पावतेहैं ६ जब सुग्रीवके ऐसे यथार्थ बचन सुने तबतो रामचंद्र मुसुकाय कर बोले कि हे सखा तुमतो मेरे प्यारे भरत के समान पंचम भाई हो ७ अब मन लगाकर ऐसा यत्न करो जिस भांति सीता की सुधि मिलै ८ ॥ दोहा ॥ इस भांति बतकही करतेही जातेहैं किचारों दिशा से बानरों के यूथपोंके यूथ आनेलगे अनेक बर्ण के महाबली बानर और रीछों के समूह ॥ १ ॥

बानर कटक उमा मैंदेखा । सो मूरख जो किय चह लेखा १
आय रामपदनावहिं माथा । निरखि बदन सब होहिंसनाथा २
अस कपि एक न सेनामाहीं । राम कुशल जिहिं पूछी नाहीं ३
यह नहिं कछु प्रभुकी अधिकाई । बिश्वरूप व्यापक रघुराई ४
ठाढ़े जहं तहं आयसु पाई । कह सुग्रीव सबहिं समुझाई ५
राम काज अरु मोर निहोरा । बानर यूथ जाहु चहुं ओरा ६
जनकसुता कहं खोजहु जाई । मास दिवस महं आवहु भाई ७
अवधि बीत जो बिनु सुधिपाये । ताहि बधौं मैं निजकर आये ८
दो० बचन सुनत सब बानर जहं तहं चले तुरंत ।
तब सुग्रीव बुलाये अंगदादि हनुमन्त ॥ २ ॥

बानरों का अपार कटक हेपार्बती मैंने देखा उसको मूर्ख जानिये जोउसका लेखा करै १ आइआइ कर रामचन्द्र के चरणों को मस्तक नवावतेहैं और अपने स्वामी के मुखको देखिकर सनाथ होतेहैं २ ऐसा बानर उस सेनामें एकभी नहीं जिसको राम ने कुशल न पूछीहो ३ यह कुछ रामकी अधिकाई नहीहै क्योंकि रामतो बिस्वरूप और विश्व व्यापकहीहैं ४ जहां तहां आज्ञा पाकर ठाढ़े होगये तबतो सुग्रीव ने सबसे समुझा कर कहा ५ किसुनो भाइयों श्रीरामचन्द्र तो कार्य्य है और मेरे पर तुम्हारी थरहाईहै कि तुम सबबानरोंके समूह चारों ओर को जाओ ६ राजा जनक की पुत्री बैदेहीसीता को खोजो और एक महीने में यहां सब के सब आजाओ ७ और जोकोई तुम अवधि बीतेपर बिना सुधिलिये आवैगा उसको मैं आये पीछे अपने हाथ सेबध करूंगा ८ ॥ दोहा ॥ ऐसे राजा सुग्रीव के बचन सुनतेही समस्त बानर

जिसको जहांकी आज्ञाहुई तेतहां को तुरंतही चलेगये तबपीछेसे सुग्रीवने अंगदादि बानर बुलाये और कहा ॥ २ ॥

सुनहु नील अंगद हनुमाना । जामवंत मति धीर सुजाना १
सकलसुभट मिलि दक्षिण जाहू । सीतासुधि पूछेहुं सब काहू२
आयसु पाइ चरण शिर नाई । चले हर्षि सुमिरत रघुराई ३
पाछे पवनतनय शिरनावा । काज जानि प्रभु निकट बुलावा४
परशा शीश सरोरुह पाणी । कर मुद्रिका दीन्हि सहदानी ५
बहुप्रकार सीतहिं समुझायहु । कहिबल बीर बेगि तुम आयहु६
हनुमत जन्म सफल करिजाना । चलाहृदय धरिकृपा निधाना७
यद्यपि प्रभु जानत सब बाता । राजनीति राखत सुरत्राता ८
दो० चले सकल बन खोजत सरिता सरगिरि खोह ।
राम काज लवलीन मन बिसरा तनकर छोह ॥ ३ ॥

सुनो हेअंगद हेहनूमान हेनलनील हेद्विविद मयंदगय गर्वेश हेजामवान तुमसब मतिधीर औरसुजानहो १ तातें सब सुभट मिलिकर दक्षिण दिशाको जाओ और सीताकी सुधिजो जहां मिलै तहां उससेपूंछो २ इसप्रकार राजाकी आज्ञा पायचरणों को प्रणामकरि हर्षितमन रामचन्द्र का स्मरण करतेहुये चलदिये ३ सबसे पीछे हनूमानने प्रणाम किया रामचंद्र ने कार्य्यकर्ता इन्हींको जानिकर अपनेपास बुलाया ४ शिर पर हनूमानके अपना अभयहस्त फेरा और अपने हाथकी मुद्रिका सीताकी प्रतीतिके लिये देदी सहदानी कहैं चिन्हावारि ५ वहुत प्रकारसे हेहनूमान तुमसीताका प्रबोध कीजियो और उनसे वलबोलिकर बेगिही आइयो मैं तुम्हारा कहा सब पूरा करूंगा ६ ऐसे स्वामीके बचन सुनतेही हनूमान ने तो अपने जन्मको सफल जाना औरहृदय में कृपानिधान स्वामीका प्रताप धारण करिके चल दिये ७ यद्यपि हे पार्वती राम स्वामी सर्बज्ञ शिरोमणिहैं सबकुछ जानतेहैं परंतु नरतनु की लीलामें राजनीति निबाहते हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ अबतो येसब योधामिलिकर पम्पापुर से दक्षिण दिशा को चले समस्त उसदिशाके बनोंको खोजते जातेहैं समस्त नदी सरोवर और पर्वतोंकी कन्दराओं को खोजते जातेहैं केवल रामके काजहीमेंमन लवलीनहै शरीरका भी छोभ किसीको नहींहै ३

कतहुं होइ निशिचर सन भेटा । प्राण लेहिं एक एक चपेटा १
बहुप्रकारगिरिकाननहेरहिं।कोउमुनिमिलहितताहिसब घेरहिं २

लागि तृषा अतिशय अकुलाने। मिलहिनजलबन गहनभुलाने ३
हनूमान कीन्हा अनुमाना । तजन चहत सबबिनुजल प्राना ४
चढ़िगिरिशिखर चहूंदिशि देखा । भूमिबिबर एककौतुकपेखा ५
चक्र वाक बक हंसउडाहीं । बहुतकखग प्रविशहिं तेहिं माहीं ६
गिरितें उतरि पवनसुतआवा । सब कहंलै सो बिबर दिखावा ७
आगे करि हनुमंतहि लीन्हा । पैठे बिबर बिलंब न कीन्हा ८
दो० जाइ दीख उपबन सुभग सर बिकसे बहुकंज ।
मंदिर एक रुचिर तहं बैठि नारि तप पुंज ॥ ४ ॥

एकस्थानपर एकप्रबल राक्षसमिला उसको रावणहै रावणहै ऐसेकहिकर अंगदादि बानरों ने एकहीथक चपेटे में उसके प्राण लेलिये १ इसीभांति अनेक प्रकारसे बन पर्बतोंको देखते हैं और जहां कोईमुनि मिलताहै उसको घेरिकर पूंछतेहैं २ इसी प्रकार एक निर्जल बनमें पहुंचे जहां नतो कोई फलवंतवृक्षहै नकोई जलाशयहै औरन कोई जीवजन्तु है जहां मंडुनामऋषिकाएकपुत्रदशबर्षका जिसकोकिसी बन्यमृगने भक्षण करिलिया था तबसे यह बन उनके शापसे ऐसा होगया रहै तहां प्यास के मारे अतिही ब्याकुल होगये बहुतेरा ढूंढते हैं कहीं जलनहीं मिलताहै महागह्वर बनमें भटकते फिरते हैं ३ हनूमानने बिचारा कि ये सबजल बिना प्राण तजाचाहतेहैं ४ तबतो एकपर्वत के शिखरपर चढ़िकर चारों दिशा को देखा तहांतें एक प्रथिवीके बिबरकहें बिले में ऐसा आश्चर्य्य देखा ५ कितहां चक्रवाक और हंस उड़तेहैं और बहुतेरे पक्षी उसमें प्रवेश करतेहैं ऐसा देखिकर पर्बतसे हनूमान उतरि आये और सबको लेजाकरउस ऋच्छनाम बिबर को दिखाया ७ तबतो सबोंने हनूमानही को आगे करिलिया और बिबर के प्रवेशमें कुछभी बिलंब न किया ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जबउस बिबरके भीतर पहुंचे तबतो तहां सुन्दर उपबन औसुभग सरोवर देखा जिसमें कमल प्रफुल्लित हैं औरएक अतिरुचिर मंदिर देखा तहां एक स्त्री तपकी राशि बैठी देखी ॥ ४ ॥

दूरहिं ते सब तेहिं सिर नावा । पूंछा तब वृत्तांत सुनावा १
तब तेहिंकहा करहु जलपाना । खाहु सरस सुन्दर फलनाना २
मज्जनकीन्ह मधुर फलखाये । तासुनिकट पुनिसबचलिआये ३
तेहिं सब आपनि कथा सुनाई । मैं अब जाउं जहां रघुराई ४
मूंदहु नयन बिबर तजि जाहू । पैहौ सीतहिं जनि पछिताहू ५
नयन मूंदि पुनि देखहिं बीरा । ठाढ़े सकल सिंधु के तीरा ६

सो पुनि गई जहां रघुनाथा । जाइ कमल पद नायउ माथा ७
नाना भांति बिनय तिहिं कीन्ही । अनपायनीभक्ति प्रभुदीन्ही ८
दो० बदरी बन कहं सो गई प्रभु आज्ञा धरि शीश ।
उरधरि रामचरण युग जो बंदित अज ईश ॥ ५ ॥

तब तो उसके समीप जाकर दूरिही तें सबों ने उसके चरणों को शिर नवाया जब उसने पूछा तब समस्त अपनावृत्तांतउसकोसुनाया १ तब तो उसने इनको भूखा प्यासादेखि कर कहा कि प्रथम तो तुम जाकर इस सरोबर का जल पान करो और इस उपबन के सुन्दर सरसफल भोजन करो तब तृप्त होकर मेरे पास आवो २ इस प्रकार उसकी आज्ञा पाकर सबोंने जाकर उस सरोबर में स्नान किया और उस उपबन के अति मधुर फल खाकर उसी के पास फिरि आये ३ तब उसने अपनी सब कथा बानरों को सुनाई कि यह स्थान मय नाम दैत्यों में बिश्वकर्मा का बनाया है उस का पुत्र मायावी हेमा नाम अप्सरा पर आशक्त रहा उसने हेमा को दे दिया मैं उसकी सहेली हूं यहां अब तक रही अब मैं रामचन्द्रके शरण जाती हूं ४ तुम सब नेत्रों को मूंदो मैं तपके बलसे तुम को बिबर से बाहर करदूंगी और तुम अवश्य सीता को पावोगे सोच मत करो ५ उसके कहने के अनुसार बानरों ने नेत्र मूंदि कर फिरि जो देखा तो सबके सब समुद्र केतीर खड़े हैं ६ और हेमाकी सखीनेरामचंद्र के पास जाकरप्रणामकिया ७ अनेक भांति बिनती करी स्वामीने अपने में अनपायनी भक्ति उसको देदी और बदरिकाश्रम के जाने की आज्ञा की ॥ ८ ॥ दोहा ॥ सो अप्सरा रामचन्द्र की आज्ञा माथेमान कर बदरी बनको चली गई रामचंद्र के चरणों को हृदय में धारण करिके जिनको त्रैलोक्य नाथ ब्रह्मा और शिव सदा बंदन करतेहैं ॥ ५ ॥

यहां बिचार कपिन मनमाहीं । बीती अवधि काज कछुनाहीं १
कह अंगद लोचन भरिवारी । दुहुं प्रकार भइ मृत्यु हमारी २
यहां न सुधि सीता की पाई । उहां गयउं मारिहि कपिराई ३
पिता बधे पर मारत मोही । राखा राम निहोरा ओही ४
पुनिपुनि अंगद कह सबपाहीं । मरणभयउ कछु संशय नाहीं ५
जामवंत अंगद दुख देखी । कही कथा उपदेश बिशेषी ६
तात रामकहं नरजनि जानहु । निर्गुण ब्रह्म अजितअजमानहु ७
हम सबसेवक अति बड़भागी । संतत सगुण ब्रह्म अनुरागी ८
दो० निज इच्छा अवतरेउ प्रभु सुर द्विज गो महि लागि ।

सगुणउपसाक मग्न हम रहहिं मोक्षसुखत्यागि ॥ ६ ॥

यहां बानरों के मनमें बड़ा सोच है कि अवधि तो बीतिगई और स्वामी के कार्य्य का कुछ भी पतानहीं है १ नेत्रों में जल भरिकर अंगद ने कहा कि हमारी तोदोनों प्रकार से मृत्यु हुई २ यहां तो कुछ भी सीता की सुधि नहीं पाई और वहां गये पीछे सुग्रीव मारैगा ३ सो सुग्रीव तो मेरे को पिता के मारे पीछेही मारिडारता यह तो रामने मेरे को रक्षा करलियाहै कुछ सुग्रीव की थरहाई नहीं है ४ बारंबार अंगद सबसे कहते हैं कि मृत्यु तो हुई इसमें तो कुछ भी संदेह नहीं है ५ जामवंत ने अंगद का दुख देखि कर बिशेष उपदेश की कथा कही ६ किहे तात रामको तुम मनुष्य मत मानो उनको साक्षात् हेय प्रत्यनीक मयकगुण शून्य निर्गुण परब्रह्म अपराजित अजन्माजानो ७ हम सब उनके सेवक अतिही बड़भागी हैं जो सदैव समस्त कल्याण गुण सागर उसी परब्रह्म के उपासक हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ अपनी इच्छाहो से सर्वेश्वर स्वामी देव, बिप्र, गऊ, पृथिवीके हित के लिये अवतरे हैं हम सब सेवकों को चाहिये कि मोक्ष पर्य्यंत के सुख का त्याग करिके सगुण उपासनाही में निरंतर मग्न रहैं ॥ ६ ॥

यहि बिधि कथा कही बहु भांती । गिरि कन्दरा सुना संपाती १
बाहिर होइ देखि बहु कीशा । मोहिं अहार दीन्ह जगदीशा २
कपि सब उठे गृद्ध कहं देखी । जामवंत मन क्षोभ बिशेषी ३
कह बिचारि अंगद मन माहीं । धन्य जटायु सरिस कोउ नाहीं ४
राम काज कारण तनु त्यागी । हरि पुर गयउ परमबड़भागी ५
सुनि खग हर्ष शोकयुत बानी । आवा निकट कपिन भयमानी ६
तिनहिं अभयकरि पूंछेसि जाई । कथा सकल तिन ताहि सुनाई ७
सुनि संपाति बंधुकी करणी । रघुपति महिमा बहु बिधि बरणी ८
दो० मोहिं लै चलहु सिंधु तट देहुं तिलांजलि ताहि ।
बचन सहाय करब मैं पैहौ खोजहु जाहि ॥ ७ ॥

इस प्रकार अनेक भांतिकी जोकथा जामवन्त अंगदसे कहिरहे हैं उसको पर्वत की कन्दरा में जटायुके बड़े भाई संपाति गृद्धने सुना १ कन्दराके बाहिर हो बहुत से बानरोंको देखिकर मनमेंकहा कि यह तो मुझको भला आहार ईश्वरने दे दिया २ बानरोंने जो पर्वतके समान उस गृद्धको अपनी ओर आते देखा उठि भागे जामवन्तके मनमें बड़ाही सोच हुआ ३ अंगदने अपने मनमें बिचारि के कहा कि गृद्धों के कुलमें जटायु के समान कोई धन्य नहीहै ४ जो रामचन्द्रके कार्य्यके लिये अपने

शरीरको त्यागि कर परम बड़भागी भगवद्धामको चला गया ५ ऐसी हर्ष शोक संयुक्त अंगदकी बाणीको संपाती सुनि कर जो निकट आया सोई बानरोंने बड़ी भयमानी ६ संपातीने उन सबको निर्भय करिके उनसे सब भाई के मरनेका वृत्तान्त पूछा तब उन्होंने सब कथा बिस्तार से संपातीको सुना दी ७ ऐसी सुन्दर अपने भाई जटायु की करणी सुनिकर संपातीने रामचन्द्र की महिमा बहुत भांतिसे बर्णन करी ॥ ८ ॥ दोहा ॥ बोला कि मेरेको समुद्रके तीर ले चलो मैं अपने भाईको तिलांजलि देऊंगा और मैं तुम्हारी बचनोंसेसहायता करताहूं तुम मेरी कथाको सुनिकर सीताको खोजो अवश्य पाओगे ॥ ७ ॥

हम दोउ बंधु प्रथम तरुणाई । गगन गयउंरवि निकटउड़ाई १
तेज न सहिसक सोफिरि आवा । मैं अभिमानी रवि नियरावा २
जरे पंख रवि तेज अपारा । परेउं धरणि करि घोर चिकारा ३
मुनि यक नाम चंद्रमा ओही । लागी दया देखि करि मोही ४
त्रेता ब्रह्ममनुज तनु धरिहैं । तासु नारि निशिचरपति हरिहैं ५
तासु खोज पठउब प्रभु दूता । तिनहिं मिले तुम होउबपूता ६
मुनिकी गिरासत्य भइ आजू । सुनिममबचन करहु प्रभुकाजू ७
गिरि त्रिकूट ऊपर बस लंका । तहं रह रावण सहज अशंका ८
दो० मैं देखहु तुम नाहिन गृद्धहिं दृष्टि अपार ।
बूढ़ भयउं नातरु कछुक करत सहाय तुम्हार ॥ ८ ॥

मैं और मेरा छोटा भाई जटायु प्रथम तरुणाई में सूर्य्यके छूनेको आकाशमें उड़े १ जटायुसे तो जब सूर्य्यका तेज न सहा गया लौटि आया और मैंने अभिमान के मारे सूर्य्यको नगिचाय लिया २ तबतो सूर्य्य के अति अपार तेजसे मेरे पक्ष भस्म होगये और महा घोर चिक्कार करिके पृथ्वी पर गिर परा ३ तबतो एक ऋषिमुनिके पुत्र चंद्रमा नाम साक्षात् ब्रह्माको अवतार मेरी यह दीन दशा देखिकर उनको अति दया लगी ४ बोले कि त्रेतायुगमें साक्षात् परब्रह्म मनुष्यावतार धारण करेंगे उनकी भार्य्या सीताको राक्षसेश्वर रावण हरेगा ५ उसके खोजनेको स्वामी दूत भेजेंगे उनके मिलनेसे तेरा शरीर पवित्र होजायगा इस प्रकार कथा कहते कहते उसके पक्ष यथा पूर्व होगये ६ तब बोला कि देखो मुनिकी बाणी आज सत्य होगई तातें मैं तुम्हारा बचनोंसेसहाय करता हूं सो मेरे बचन सुनि कर स्वामीका कार्य्य करो ७ यहांसे शत योजन पर समुद्रमें त्रिकूट नाम पर्वत पर लंका बसती है उसमें रावण निर्भय रहता है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ मैंतो यहांसे देखता हूं तुम नहीं देखि सकते हो क्योंकि

गृद्धकी अपारदृष्टि होती है बूढ़ा होगया हूं नहींतो तुम्हारा औरभी सहाय करता अब तुम मेरा बचन सुनो ॥ ८ ॥

जो लांघहि शत योजनसागर । करै सो रामकाज मतिआगर १
मोहिं बिलोकि धरहु उर धीरा । राम कृपा कस भयउशरीरा २
पापिहु जाकर नाम सुमिरहीं । अति अपार भवसागर तरहीं ३
तासु दूत तुम तजि कदराई । राम हृदय धरि करहु उपाई ४
असकहि उमागृद्धजब गयऊ । सब के मनअति बिस्मयभयऊ ५
निज निज बल सब काहूं भाषा । पार जान कर संशय राखा ६
जठरभयउंअसकह ऋच्छेशा । अहह न अहहि प्रथमबललेशा ७
जबहिं त्रिबिक्रम भयउ खरारी । तब मैं तरुण रहेउंबलभारी ८

दो० बलि बांधत प्रभु बाढ़ेऊ सो तनु बरणि न जाइ ।
उभय घरी महं दीन्हि मैं सात प्रदक्षिण धाइ ॥ ९ ॥

जो कोई तुम मेंसे शत योजन समुद्र लांघि सकै सो बलवान बुद्धिबान राम के इस कार्य्य को करैगा १ ये मेरे बचन सुनि कर इस समुद्र को दुस्तर मत मानों तुम मेरे को देखि कर धीरज बांधो कि राम की कृपा से मेरा शरीर कैसा यथा पूर्ब हो गया २ महा पापी भी जो उनका नामोच्चारण करतेहैं ते अति अपार संसार सागर के पार हो जाते हैं ३ तिन स्वामी के तुम तो हो और स्वामिही के कार्य्य को आये हो कदरई छोड़िकर रामही के भरोसे पर उपायकरो सब सिद्धही होगा४ ऐसे कहि कर हे पार्बती फिरि तो गृद्ध अपना आपही भाई की तिलांजली के लिये जब उड़ा चला गया तबतो सब के मन में बड़ा बिस्मय हुआ ५ तब तो बैठि कर अपना अपना बल सब ने कहा परंतु पार जाने में संदेहही रहा ६ अब तो मैं बूढ़ा हो गया हा कष्ट पहिले बल का तो लवलेश भी नहीं है ताते असमर्थ हूंऐसा ऋच्छराज जामवन्त ने कहा ७ पूर्ब सतयुग में जब मेरे स्वामी रामचन्द्र बलिके छलने को बामन से त्रिबिक्रम हुये रहें तब मैं तरुण रहा और महा बल रहे ॥८॥ दोहा । बलिके बांधने में जब त्रिबिक्रम स्वामी ने अपना शरीर बढ़ाया किपाताल से ब्रह्मलोक पर्य्यन्त दोही चरणों में नापि लिये ता समय मैंने दोही घरी में उस शरीर के सात प्रदक्षिणा किये रहे ॥ ९ ॥

अंगद कहा जाउं मैं पारा । जिय संशय कछु फिरती बारा १
जामवंत कह तुमसबलायक । पठये किमि सबही करनायक २
कहा ऋच्छपति सुनु हनुमाना । का चुप साधि रहा बलवाना ३

कवनसो काज कठिन जग माहीं । जो नहिं होत तात तुम पाहीं ४
राम काज लगि तव अवतारा । सुनत भयउ पर्बत आकारा ५
जामवंत मैं पूछहुं तोहीं । उचित शिखावन दीजिय मोहीं ६
इतना करहु तात तुम जाई । सीतहि देखि कहेहु सुधिआई ७
तबनिज भुजबलराजिवनयना । कौतुकलागिसंगकपि सयना ८

जब युवराज अंगद ने देखा कि किसी को सामर्थ पार जाने को नहीं है तब आपही बोले कि पारतो मैं जा सकताहूं चला जाऊंगा परंतु फिरती बार जी में कुछ संदेह है १ अंगद के वचन सुनि कर जामवन्त ने कहा कि मैं जानता हूंआप सब योग्य हैं पार जाना और फिर आना आप को कितनी बात है परंतु आप हम सब के स्वामी हैं भला हम सेवक आपही को कैसे जाने देवें २ तबतो जामवन्तने सब यूथपों की ओर देखा कि सब तो अपना अपना बल कहि चुकेहैं हनुमान नहीं बोले ऐसा समुझि कर जामवन्त हनूमान प्रति बोले कि हे बलवान तू कैसी चुपकी साधि गया है ३ ऐसा कठिन कौनसा कार्य है जो तेरे से नहीं हो सकता है ४ तू अपने बल को भूलि गया कि तूने जन्मतेही सूर्य राहु इन्द्र सब का मानमर्द्दन किया रहे और राम का कार्य करने के लिये तो तेरा अवतारही है इतना सुनतेही फूलि कर पर्बत के आकार हो गये और बोले ५ कि हे जामवन्त मैं तेरे से पूंछता हूं मेरे को उचित सिखावन दीजिये कि मैं लंका में जाकर कितना काम करूं ६ तब जामवन्त ने कहा कि हे तात तुमको तो इतनाही कर्तब्य है कि लंका मेंजाओ और सीता को देखि कर उनकी कुशल रामचन्द्र को आय सुनाओ ७ फिरि तो अपनी भुजाओं के बल से राजिवलोचन राम कौतुक के लिये बानरों की सेना को साथ लेकर सब कार्य आपही करि लेवेंगे अर्थात्

छं० कपि सेन संग चढ़ाइ निशिचर मारि सीतहिं आनि हैं ।
त्रैलोक्यपावन सुयश सुर मुनि नारदादि बखानिहैं ॥
जो कहत गावत सुनत समुझत परम पद ते पावहीं ।
रघुवीर चरित पुनीत निशि दिन दास तुलसी गावहीं ॥

दो० भव भेषज रघुनाथ यश सुनहिं जो नर अरु नारि ।
तिन कर सकल मनोरथ सिद्ध करहिं त्रिपुरारि ॥

सो० नालोत्पल दल श्याम काम कोटि शोभा अधिक ।
सुनिय तासु गुणग्राम जासु नाम अघ खग बधिक॥१०॥

बानरों की सेना को साथ लेकर राक्षसों कोमारि कर सीताको ले आवेंगे त्रैलोक्य

पावन स्वामी के सुयश को नारदादिक मुनि अपने अपने प्रवन्धों में बखानेगे जो मनुष्य श्रीरामचंद्र के चरित्रों को कहते गावते सुनते समुझते हैं ते परमपद पावते हैं याहीतें रघुवीर रामचंद्रके पावन चरित्रों को निशिदिन तुलसीदास भी गाते हैं ८ दोहा ॥ भव कहैं बारंबार जन्मरूपी रोग को औषधि रूपी श्री राम यश को जे नर वा नारी सुनते हैं उनके समस्त मनोऽर्थों को त्रिपुरमर्द्दन श्री शिवजी परिपूर्ण करते हैं ॥ सोरठा ॥ नील कमलके शदृस सुन्दर श्याम और कोटिकाम सेभी अधिक सौन्दर्य्य संपन्न ऐसे श्रीरामचंद्र के गुणग्रामों को सदाश्रवण कीजिये जिनका नामपाप पक्षियों का बधिक है ॥ १० ॥

यह चौथा दशक किष्किंधाकांड का हुवा ॥ ४ ॥

इति श्री शुकदेवकृत मानसहंसभूषणे रामचरित्रमानसे किष्किंधाकांडे चतुर्थस्सोपानस्समाप्तः

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

अथतुलसीदासकृतरामायणसुन्दरकांडसटीकलिख्यते
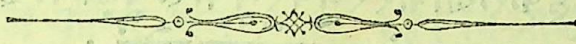
श्लो० यःसिंधुंकृपयाकरोतिचुलकंज्वालानलंशीतलं ।
शत्रुम्मित्रगिरिं शिलाशकलवद्धालाहलंचामृतं ॥
रक्षांयामिशकीकरोतिप्लवगान्कालेवशंवीर्य्यवान् ।
तंगोविप्रहितंसुरारिशमनंसीतापतिंसंश्रये ॥ १ ॥

दो० जिन नरतनु बोहित दियो अरु सत गुरु कठ हार ।
सोइ निज कृपासमीरते राम लगाइहि पार ॥

यह श्रीमद्रामायणका पांचवा कांड है रामायणमें पंच प्राण के समान भासता है क्योंकि इसमें पांच भगवत्प्रपन्न पंच प्राण हैं प्रथम प्राण वायुपुत्र हनुमान्, द्वितीय जनकात्मजा सीता, त्रितीय पौलस्त्य बिभीषण, चतुर्थ शुकदूत, पंचम वरुणालय समुद्र है और इसका नाम सुन्दर इस कारणसे है कि इसकी आदि मध्य अवसान सुन्दर वनहीमें है और इसके सब इतिहास भी सुन्दरहैं और इसको अति सुन्दर छन्द काव्य अलंकार अनुप्रास समेत सब कांडोंसे सुन्दर श्रीबाल्मीकि परम ऋषिने रचाहै और कहाहै ॥ सुन्दरेसुन्दरीसीतासुन्दरेसुन्दरीकथा सुन्दरेसुन्दरोरामः सुन्दरेकिन्नसुन्दरं और इसकांड में पचपन ५५ चौपाई हैं इसके पूर्वार्द्ध में त्रिकूटाचलपर हनुमान के जानेकी कथा जानिकर उसको किष्किन्धाकांड की रीतिपर चौपाइयोंके तीनिहीदशक में पूराकिया फिरि उत्तरार्द्ध को पचीस २५ चौपाइयों में समाप्त किया आदि में इस के समुद्र तरनेका उद्योग, मैनाकदर्शन, छायाग्राही का बध, समुद्रतरण, लंकादर्शन लंकाप्रवेश, बिभीषणसमागम, सीतादर्शन, दशग्रीवागमन, त्रिजटा स्वप्न, सीता प्रबोध, बन बिध्वन्सन, अक्षबध, हनुमानबंधन, रावणप्रबोध, लंकादहन, समुद्रपुनरुल्लङ्घन, मधुबन प्रवेश, सीताकुशलनिवेदन, सकटकश्रीरामप्रयाण, समुद्रतटनिवास इतिपूर्वार्द्ध लंका खरभर, मंदोदरीरावणसंबाद, रावणसभा, बिभीषणमंत्र, बिभीषण अपमान, बिभीषण आगमन, बिभीषणशरणागत, लंकाराज्याभिषेक, समुद्र तरणउद्योग, शुकदूतकथा, समुद्र हि, नम्र समुद्रपीड़ाहरण अंतमें है ॥

श्लो० शांतंशाश्वतमप्रमेयमनघंनिर्वाणशांतिप्रदं ।
ब्रह्माशंभुफणींद्रसेव्यमनिशंवेदांतवेद्यंविभुं ॥
रामाख्यंजगदीश्वरंसुरगुरुंमायामनुष्यंहरिं ।
बन्देऽहंकरुणाकरंरघुबरंभूपालचूडामणिं ॥ १ ॥
अतुलितबलधामंस्वर्णशैलाभदेहं ।
दनुजबनकृशानुंज्ञानिनामग्रगण्यं ॥
सकलगुणनिधानंबानराणामधीशं ।
रघुपतिबरदूतंबातजातंनमामि ॥ २ ॥

सुन्दरकांड के प्रारंभ में गुसाईं तुलसीदासजी राजाधिराज श्री रामचन्द्र को सर्वेस्वर स्वयंहरि दर्शाते हुये वंदना करते हैं जो श्रीरामशांत कहें बिशुद्ध सत्वात्मक सौशील्यबात्सल्यदयार्द्रचित्त, शाश्वतकहेंसनातन आदिअंतरहित अनादिनिधनं विष्णुं सर्वलोकमहेश्वरं। अप्रमेय कहें प्रमाणशून्य अनघकहें अपहतपाप्मा निर्वाणमोक्ष और शांतिके दाताहैं और जगद्धाता ब्रह्मा जगदन्तक शंभु जगदाधार शेष इनतीनों करिके निरंतर से ब्यमान हैं वेदांत में सर्वनामों से रामही वेद्य हैं औरसर्व शक्तिमानहैं लोकमें राम करिके प्रसिद्धहैं जगत्के एक ईश्वरहैं समस्त देवशिखामणि हैं कृपा करिके मनुष्यरूप धारण कियेहैं साक्षात् हरि बिष्णुही हैं ऐसेकरुणाकर रघुबर समस्त भूपाल शिरोमणि श्रीरामचंद्र को मेरा अभिवंदन है १ अब हनूमान कोप्रणाम करतेहैं जो हनूमान अतोल बलके धामहैं सुबर्णके पर्वतके समान जिनका शरीरहै राक्षसोंके वंशके बनको प्रचंड अग्निहैं ज्ञानमानों में अग्रगण्यहैं समस्त गुणोंके समुद्र हैं बानरकुलमें प्रधान हैंश्री रामचंद्र के उत्तमदूत हैं तिन पवन पुत्रकोमेरा प्रणामहै२ ॥ दोहा ॥ बारबराबरिबारि है तापरबहुतबयारि । रघुबरपारउतारि हैं अपनी ओर निहारि ॥ बारके बराबरि तो पापोंके बोझेसे करनी रूपीनावकी पाररहि गईहै ताहूपर तृष्णा की प्रचंड पवन बहतीहै बूड़नेमें कौन संदेह है श्रीरामचंद्रही अपनी ओर देखिकर पार करेंगे अर्थात मैं तो बिगारिही चुकाहूं रामही के बनाये बनैगी

जामवंत के बचन सुहाये। सुनि हनुमान हृदय अति भाये १
तब लगिमोहिं परखियहु भाई। सहि दुख कन्दमूल फलखाई २
जब लगि आवहुं सीतहिं देखी। होइ काज मोहिं हर्ष बिशेषी ३
असकहिनाइ सबनकहं माथा। चलेउहर्षि हिय धरिरघुनाथा ४
सिंधु तीर यक सुन्दर भूधर। कौतुक कूदि चढ़ेउ ता ऊपर ५

बारबार रघुबीर संवारी । तर्केउ पवन तनय बल भारी ६
जिमि अमोघ रघुपति करबाना । ताही भांति चला हनुमाना ७
जलनिधि रघुपतिदूत बिचारी । कह मैनाक होहु श्रम हारी ८
दो० हनूमान कर परसि करि कीन्हेसि ताहि प्रणाम ।
राम काज कीन्हे बिना मोहिं कहां बिश्राम ॥ १ ॥

जामवन्तके अति सुन्दर सुहाये बचन सुनिकर हनुमानके हृदयमें अतिहीभाये १ हाथ जोरि कर सबसे बोले कि हे भाइयो तबलों तुम मेरा मार्ग कन्द, मूल, फल खाय कर और अपने पर क्लेश सहि कर यहीं देखते रहना २ जबलों मैं सीता को देखिकर लौटिआऊं जिसमें स्वामीकातो कार्य्य और विशेषकर मेरेको हर्ष होवे ३ ऐसे कहि और सबको शीश नवाइ हर्षित हृदय में श्री रामचन्द्र को धारण करिके लंका की प्रयाण किया ४ समुद्रके तीर सुन्दर एक पर्बत देखि कर अनायास उसपर चढ़ि गये ५ बारंबार श्रीरामचन्द्रको स्मरण करिके पवनपुत्र हनूमान बड़े बलसे कूदे ६ जैसे अमोघ कहैं सफल अप्रतिहत श्री रामचंद्रका बाण जाताहै उसीभांति हनूमान लंका को चले ७ समुद्रने सगरबंशी साक्षात् अपने स्वमी रामचंद्र के दूत को जाते जानि कर मैनाक नाम पर्बतसे जो इन्द्रकी भयके मारे समुद्रही में रहताहै उससे कहा कि हे मैनाक तू रामचंद्रके दूतको मेरे मध्य बिश्राम दे समुद्रके बचन मानि कर मैनाक तुरंतही प्रगट होगया ॥ ८ ॥ दोहा ॥ हनूमान ने उसको हाथसे स्पर्श करिके प्रणाम किया और कहा कि मेरे को रामचंद्र स्वामी के कार्य्य बिना किये बिश्राम कहां है ॥ १ ॥

निशिचर एक सिंधु महं रहई । करि माया नभके खग गहई १
सोइछल हनूमानसनकीन्हा । तासु कपट कपितुरतहिंचीन्हा २
ताहि मारि मारुत सुत वीरा । बारिधि पार गयउ मतिधीरा ३
तहां जाय देखी बन शोभा । गुंजत चंचरीक मधु लोभा ४
नाना तरु फल फूल सुहाये । खग मृग वृंद देखि मन भाये ५
शैल बिशाल देखि यक आगे । तापर धाय चढ़ा भय त्यागे ६
गिरिपर चढ़ि लंकाकपि देखी । कहिन जाय अति दुर्गबिशेषी ७
अतिउतंग जलनिधिचहुं पासा । कनक कोटकर परमप्रकाशा ८
दो० पुर रखवारे देखि बहु कपि मन कीन्ह बिचार ।
अति लघु रूप धरहुं निशि नगर करहुं पैसार ॥ २ ॥

एक छायाग्राही राक्षस समुद्र में रहता रहै सो अपनी मायासे समुद्र पर उड़ते हुये पक्षियोंकी छाया देखि कर उनको पकरि लेता रहै १ सोई छल उसने कालके बश कालके काल रामचन्द्रके दूत हनूमानके साथकिया रामकी कृपासे उसका कपट हनूमानने तुरंतही जानिलिया २ परम प्रचण्ड बेगकी गतिकी झपटमें उसको चरण प्रहारहीसे मारते हुये महावीर पवनपुत्र समुद्र के पार होगये ३ तहां जायकर उस उपद्वीपके बनकी शोभा देखी जिसमें मधुके लोभसे भ्रमर गुंजारि रहेहैं ४ नानाजाति बृक्षोंके समूह देखे जिनमें सुन्दर सुहाये फल फूल शोभा दे रहे हैं नाना जाति के पक्षी बोलि रहे हैं और मृग बृन्द बिहार करते हैं ५ आगे चलिकर एक बड़ा पर्वत देखा उस पर निर्भय चढ़ि गये ६ पर्वत पर चढ़िकर हनूमान ने बिश्व बिख्यात लंकाको देखा कही नहीं जाती है जैसी कि बिशेष दुर्गम है ७ अतिशे उतंग ऊंची है और चारों पास त्रिकूटाचल पर समुद्र से घिरी है सुबर्ण के कोट का परम प्रकाश हो रहा है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ बड़े बड़े अपार योधा पुर की रक्षा करि रहे हैं उनको देखिकर हनूमानने बिचार किया कि दिनमेंतो ठीक नहीं लगेगा ताते अति छोटा रूप धरूं और रात्रिको नगरमें प्रबेश करूं ॥ २ ॥

अति लघु रूप धरा हनुमाना । पैठा नगर सुमिरि भगवाना १
मन्दिर मन्दिर प्रति कर शोधा । देखे जहं तहं अगणित योधा २
गयउ दशानन मन्दिरमाहीं । अतिबिचित्र कहिजात सो नाहीं३
शयन किये देखा कपि तेहीं । मन्दिर महं न दीख बैदेही ४
सोचय लागु कहां अब जाऊं । कहां दरश सीता कर पाऊं ५
निशिचर घोर भयानक रहहीं । सीताकी सुधिकोउनहिंकहहीं ६
पूछहुं काहि करहुं का भाई । जनकसुता को देइ दिखाई ७
भवन एक पुनि दीख सुहावा । हरिमन्दिर तहं भिन्नबनावा ८
दो० रामायुध अंकित गृह शोभा बरणि न जाइ ।
नव तुलसी के वृंद तहं देखि हर्ष कपिराइ ॥ ३ ॥

ऐसा बिचार करि के हनूमान ने अतिही छोटा रूप धारण किया और भगवान श्री रामचंद्र का स्मरण करिके लंका में प्रवेश किया १ रातिही में लंका का एकएक घर मंदिर मंदिर प्रति देखि लिया जहां देखा तहां अगणित योधाही देखे २ फिरते फिरते दशमुख रावण के मंदिर में गये ऐसा बिचित्र बना है कि कहाही नहीं जाता है ३ तहां रावण को तो सोतेहुये देखा परंतु सीता को तहां भी न देखा ४ तब तो सोचने लगे कि अब कहां जाऊं और कहां सीता को पाऊं ५ इस लंका में तो सब महा घोर उग्रतामसीराक्षसही रहते हैं तो कोई सीता की चर्चा भी नहीं

चलाते हैं ६ किससे पूछूं क्या करूं कौन सीता को दिखा देवै ० इस प्रकार सोच में मग्न फिरते फिरते एक परम सुन्दर मंदिर देखा जिस में एक हरिमंदिर है उसका शंखचक्र से अग्रगण्य बनावही भिन्न है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ रामायुध कहे भगदायुध कर्थात् शंख,चक्र,गदा, खड्ग,शार्ङ्ग,धनुष, पंचायुधों से अंकितहै और नवीन तुलसिका के वृन्द सोहते हैं उन को तो देखते ही हनूमान हर्षित होगये क्योंकि ये ही मुख्य चिन्हहरिमंदिरों केभागवत में कहे हैं॥ अन्यानिचेहद्विजदेवदेवैःकृतानि नानायतन विष्णोः प्रत्यंगमुख्यांकितमंदिराणि यद्दर्शनात्कृष्णमनुस्मरंति प्रथमाध्याये २३ अर्थात् और जो इस पृथ्वी पर द्विजदेव कहें ऋषि और देवताओं के बनाये हुये नाना प्रकार के बिष्णुमंदिर अंगअंगमें वर्त्तमानजो भगवदायुध तिनमें मुख्य सुदर्शन चक्र और पांच जन्यशंख तिन करिके अंकित बिष्णुमंदिर जिनकादर्शन करतेही कृष्ण का स्मरण होता है ॥ ३ ॥

लंका निशिचर निकर निवासा। यहां कहां सज्जन कर बासा १
मन महं तर्क करन कपि लागा। तेही समय बिभीषण जागा २
राम राम तेहिं सुमिरण कीन्हा। हृदय हर्ष कपि सज्जन चीन्हा ३
यहिं सन हठि करिहौं पहिचानी। साधु ते होइ न कारज हानी ४
बिप्र रूप धरि बचन सुनावा। सुनत बिभीषण उठि तहं आवा ५
करि प्रणाम पूंछी कुशलाई। कहहु बिप्र निज कथा बुझाई ६
कीतुम हरिदासन महं कोई। मोरे हृदय प्रीति अति होई ७
की तुम राम दीन अनुरागी। आये मोहिं करन बड़ भागी ८
दो० तब हनुमन्त कही सकल राम कथा निज नाम।
सुनतयुगलतनपुलक अति मग्न सुमिरि गुणग्राम ॥ ४ ॥

जब ये मुख्य चिन्ह हरिमंदिरही के देखे तबतो बड़ा संदेह किया कि लंकामें तो राक्षसों के समूहों का निवास है यहां भगवज्जन का बास कहां १. इस प्रकार हनुमान अपने मन मेंबिचारते ही हैं कि उसी समय बिभीषण जागिपरे २ श्रीराम कृष्ण नारायण बसुदेव ऐसा जो बिभीषण ने स्मरण किया सुनतही हृदय हर्षित हो गये सज्जनही जानिलिया ३ मन में कहा कि इन से तो मैं अवश्य पहिचानि करूंगा हरिजन से तो कार्य्य की हानि होनीही नहीं है ४ तो भी बिप्र वेष धारण करिके जो बचन सुनाये सुनतेही बिभीषण उठि आये ५ ब्राह्मण देखिकर प्रणाम किया और कुशल पूंछि के कहा कि हे बिप्र अपनी कथा कहो तुम इसरात्री में मेरे पास कैसे आये या तो तुम कोई भगवद्दासों में हो क्योंकि मेरे हृदय में तुम्हारे परबड़ी प्रीति उत्पन्न होती है ६। ७ और यादीनबत्सल आप स्वयंभगवान

ही हो मुझ को कृतार्थ करनेको आये हो ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जब हनुमान ने बिभीषण की भगवत भागवत दोनों पर ऐसी परम प्रीति देखी तब तो उनको परम साधु जानिकर उन से समस्त राम कथा कही और अपना नाम भी कहि दिया सो सुनते ही दोनो के शरीर पुलकित होगये और भगवद् गुणों का स्मरण करिके मग्नहोगये ॥ ४ ॥

सुनहुपवनसुतरहनि हमारी । जिमि दशनन महं जीहबिचारी १
तातकबहुं मोहिं जानि अनाथा । करिहहिं कृपा भानुकुलनाथा २
तामस तनु कछु साधन नाहीं । प्रीति न पदसरोज मनमाहीं ३
अबमोहिं भाभरोस हनुमंता । बिनु हरिकृपा मिलहिनहिंसंता ४
जो रघुबीर अनुग्रह कीन्हा । तौ तुम मोहिं दरश हठिदीन्हा ५
सुनहु बिभीषण प्रभु की रीती । करत सदा सेवक पर प्रीती ६
कहहु कवन मैं परमकुलीना । कपिचंचलसबही बिधि हीना ७
प्रात लेत जोनाम हमारा । तेहि दिन ताहि न मिलहि अहारा ८
दो० अस मैं अधम सखा सुनहु मोहू पर रघुबीर ।
करी कृपा सोइ सुमिरि गुण भरे बिलोचन नीर ॥ ५ ॥

फिरितो बिभीषण बोले किसुनो हेहनुमान हमारी रहनि तो इस लंका में ऐसे हैं जैसे दांतोंमें बिचारी जिह्वा रहतीहै १ हेतात कभी मेरे को अनाथ जानि कर भानु कुलनाथ रामचंद्र मेरेऊपर कृपा करैंगे २ तामसी तो मेरा शरीर है उससे न तो कुछ साधन होसक्ता है न स्वामी के चरणकमलों में प्रीतिही है ३ परंतु अब मेरे मनमें भरोसा हुआ किरामकी अहेतुकी कृपा बिनाभागवतों का सत्संग नहीं मिलता है ४ जब श्री रामचंद्रने मेरेऊपर अनुग्रह किया तबतो तुमने हठिकर मेरे को दर्शन दिया ५ तबतो हनुमाननें कहा हेबिभीषण स्वामीकी यहरीतिहै किअपने सेवकों पर सदाही प्रीति करतेहैं ६ कहो तोमैं कहांका बड़ा कुलीनहूं बानर जाति अति चंचल सबही भांति से हीन हूं ७ ऐसा मंद मेरा जो कोई प्रातःकाल नाम लेवै उसको उस दिन आहारही नहीं मिलता है ॥ ८ ॥ दोहा ऐसा मैं अधम हे सखा सुनो सो मेरे ऊपर भी तो स्वामी रामचंद्र ने कृपाही करी सोई रामके गुणों का स्मरण करि करिके नेत्रोंमें जल भरि आया ॥ ५ ॥

जानतहूं असस्वामि बिसारी । जड़ मतिकाहेन होहिं दुखारी १
यहिबिधि कहत रामगुणग्रामा । पावा श्रवण सुखद बिश्रामा २
पुनि सबकथा बिभीषणकही । जिहिबिधि जनकसुता तहंरही ३

तब हनुमंत कहा सुनु भ्राता । देखा चहौं जानकी माता ४
युक्ति बिभीषण सकल सुनाई । चला पवनसुत बिदा कराई ५
धरिसोइरूप गयउ पुनि तहंवां । बनअशोक सीता रहे जहंवां ६
देखि मनहि मन कीन्ह प्रणामा । बैठे बीति गई निशि यामा ७
कृशतन शिश जटा एक बेणी । जपति हृदय रघुपति गुणश्रेणी ८
दो० निज पद नयन दिये मन राम कमल पद लीन ।
परम दुखित भा पवन सुत देखि जानकी दीन ॥ ६

जानि बूझिकर भी ऐसे भक्तवत्सल स्वामीके विसारनेहारे जड़बुद्धि अभागे भला हेसखा कैसे दुखी न होवैं १ इस प्रकार श्री रामचंद्र के गुणग्राम बिभीषण से कहते सुनते हनुमान और बिभीषण ने संत समागम का श्रवणानन्ददायक सुन्दर बिश्राम पाया २ तिसपीछे बिभीषणने सोसब कथा कही जिस प्रकार सीता बड़ी रखवाली से तहां रहती रहे ३ तबतो हनुमानने कहा सुनो हेसखा अवतोमैं अपनी जगज्जननी सीता माताको देखा चाहता हूं ४ यह सुनिकर बिभीषणने सीताके रहनेका स्थान और तहांजानेकी युक्तिसब हनुमानको कहि सुनाई सुनतेही हनुमान बिभीषणसे बिदा होकरचल दिये ५ सोई लघुरूप धारण करिके तहांगये जहां अशोकबाटिकामें सीता रहतीहै ६ देखिकर मनहीमन में प्रणाम करिलिया और किसी अशोकवृक्षपर जाबैठे इतने में एक प्रहर राति बीति गई ७ सीता को कैसा देखा कि अतिही दूबरी हो रहीहै और केशोंकी लटोंकी एक बेणी होगईहै और हृदय में श्रीरामचन्द्र के गुणों की श्रेणी को जपि रहीहै ॥ ८ ॥ दोहा ॥ नेत्रतो अपने चरणोंमें दिये हैं और मन राम स्वामी के चरणों में लवलीन किये हैं ऐसी परम दीनदशा जनकाधिराजतनया को देखिकर पवनपुत्र हनुमान अतिही दुखी होगये ६ ॥

तरु पल्लव महं रहेउ लुकाई । करत बिचार करहुं का भाई १
तिहिं अवसर रावण तहं आवा । संग नारि बहु किये बनावा २
बहुबिधि खलसीतहि समुझावा । साम दाम भयभेद दिखावा ३
कह रावण सुनु सुमुखि सयानी । मन्दोदरी आदि सबरानी ४
तव अनुचरी करहु प्रण मोरा । एक बार बिलोकु मम ओरा ५
तृण धरि ओट कहति बैदेही । सुमिरि अवधपति परम सनेही ६
शठशूने हरि आनेसि मोहीं । अधम निलज्ज लाज नहिं तोहीं ७
सुनुदशमुखखद्योत प्रकाशा । कबहुं कि नलिनीकरहिं बिकाशा ८

दो० आपुहि सुनि खद्योत सम रामहिं भानु समान ।
परुषबचन सुनिकाढ़िअसि बोला अति खिसियान ॥ ७ ॥

स्वामी के कार्य्य के सिद्ध के अर्थ अशोक के पल्लव में छिपि कर बैठि रहे और विचार करने लगे कि क्या करूं १ उसी समय स्वप्न में रावण ने राम का भेजा एक वानर लंका में आया देखा और उठि कर अनेक रानियों को बड़े बनाव समेत साथलेकर सीता के पास आया २ अनेक भांति से उस दुष्ट ने सती शिरोमणि सीता को समुझाया साम, दाम, भय, भेद दिखाया ३ कहा कि हे सुमुखि हे सयानी मंदोदरी इत्यादि समस्त रानियों को मैं तेरी अनुचरी करूंगा यह मेरा प्रण है तू एक बार अपनी विलोकनि से प्रसन्न होकर मेरीओर देख ४ । ५ तब तो तृण ओट रख कर सीता ने अपने प्राणपति परमसनेही रामचन्द्र का स्मरण करिके रावण से कहा ६ कि सुनु हे खद्योत कहैं पटबीजना के प्रकाश से कहीं कमलनी विकाशकरती है ७ अरे शठ तू सूने में मुझ को चुरा लाया और स्त्रियों में वीर बनता है अधम निलज्ज तेरे को लाज भी नहीं आती है ८॥ दोहा ॥ इस प्रकार जब रावण ने सीता केमुख से अपने को खद्योत और धुन्यर्थ से राम को सूर्य्य के समान सुना और शठ चोर अधम निलज्ज ऐसेकटु बचनसुने तबतो अतिही सब रानियों के सामुहें खिसियाइ गया और अपना चंद्रहास्य खड्ग काढ़ि कर सीता से यह बचन बोला ॥ ७ ॥

सीतातैं मम कृत अपमाना । काटहुं तव शिर कठिन कृपाना १
नाहि तो सपदि मानुमम बानी । सुमुखिहोति नतु जीवन हानी २
श्याम सरोजदामसमसुन्दर । प्रभुभुज करिकरसमदशकन्धर ३
सो भुज कंठकितव असिघोरा । सुनुशठअस प्रमाण प्रणमोरा ४
चन्द्रहास हरु मम परितापा । रघुपति बिरह अनल संतापा ५
सुनत बचन पुनि मारनधावा । मयतनया कहिनीति बुझावा ६
कहेसिसकल निशिचरी बोलाई । सीतहि बहुबिधित्राशेहुजाई ७
मास दिवस महं कहा न माना । तो मैं मारब कठिन कृपाना ८

दो० भवन गयउ दशकन्धर यहां निशिचरी वृंद ।
सीतहि त्रास दिखावहिं धरहिं रूप बहु मन्द ॥ ८ ॥

हे सीते तूने मेरा सब रानियों के आगे बड़ा अपमानकिया मै तेरे शिर को महा कठिन इस खड्ग से काटूगा १ नही तो शीघ्रही मेरे बचन को मानि ले समुझि हे सुमुखि नहीं तो जीवन कीहानि होगी २ यह सुनिकर सीता बोली कि सुनु रे रावण

श्री राम चन्द्र की जो भुजा सुन्दर श्याम है और कमलनाल के समान कोमल है हाथी के सुण्ड दण्ड के समान सुन्दर सुढार है मेरे इस कंठ पर भुजा तो सोई होगी नहीं तो यह तेरा खड्गही होगा ऐसा मेरा भी प्रण है ३।४ यह कहि कर खन से बोली हे चद्रहास तू मेरे इस परिताप को हरि ले मेरे को राम की बिरह की अग्नि का बड़ाही संताप है ५ ऐसे सीता के बचन सुनतेही रावण मारने को दौरा मंदोदरी ने पकरि लिया नीति कहिकर उसको समुझाया ६ तबतो राक्षसियें को बुला कर कहा कि सीता को अनेक भांति से त्रास दिखाओ ७ यदि एक मास में कहा न मानेगी तो मैं निःसंदेह इसी खड्ग से उस को मारूंगा ॥८॥ ऐसे कहि कर रावण तो घरको चला गया और यहां राक्षसियें के समूह सीता को त्रास देने लगीं और महा भयंकर रूप दिखाने लगीं ॥ ८ ॥

त्रिजटा नाम राक्षसी एका। राम चरण रति निपुण बिबेका १
सबसन बोलि सुनायसि सपना। सीतहिं सेइ करहु हित अपना २
सपने बानर लंका जारी। यातुधान सेना सब मारी ३
खर आरूढ़ नग्न दशशीशा। मुण्डित शिर खंडित भुज बीशा ४
यहिं बिधि सो दक्षिण दिशि जाई। लंका मनहुं बिभीषण पाई ५
नगर फिरी रघुवीर दुहाई। तब प्रभु सीतहिं बोलि पठाई ६
यह सपना मैं कहहु पुकारी। होइहि सत्य गये दिन चारी ७
तासु बचन सुनि ते सब डरीं। जनक सुता के चरणन परीं ८

दो० जहं तहं गईं सकल मिलि सीता के मनसोच।
मास दिवस बीते मोहिं मारिहि निशिचर पोच ॥ ९ ॥

इतने में त्रिजटा नामा एक राक्षसी भगवद्भक्तिमें रत और ज्ञानमें निपुण सोतिसे उठि आई सबको बुलाकर स्वप्नसुनाया और कहाकि अभीसे सीताकी सेवा करके अपना हित करि राखो १।२ सुनो स्वप्नमें रामके भेजेहुये एक बानरने समस्त लंकाको जरा दिया और राक्षसी सेनाको बधकिया ३ रावण मुंडित शिर खंडित भुजा निरामैंगागर्धभा रूढ़ दक्षिण दिशा को चलाजाता है और मानों लंका बिभीषणने पाईहै ४।५ नगर में रामचन्द्रको दुहाई फिरती है और रामचन्द्रने सीताको बुलाइ भेजाहै ६ सोमैं पुकारि सबसे कहेदेतीहूं कि थोरेही दिनोंमें यह मेरास्वप्न सत्य होजायगा ७ उसके बचन सुनतेही सब राक्षसी डरि गईं और सीताके पैरों परने लगीं कि माता हमारा अपराध क्षमा करो हमतो पराधीनहैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ ऐसे कहि करते तो जहां तहां जाकर

सो रहीं और सीता को बड़ा सोच उत्पन्न हुआ कि महीने पीछे मेरेको यह नीच निशाचर मारैगा ॥ ६ ॥

त्रिजटा सन बोली करजोरी। मातु बिपति संगिनि तूमोरी १
तजहुं देह करु बेगि उपाई। दुसह बिरह अब सहा न जाई २
आनु काठ रचु चिता बनाई। मातु अनल पुनि देहु लगाई ३
सत्य करहु ममप्रीति सयानी। सुनैको श्रवण शूल समबानी ४
सुनतबचनपदगहिसमुझायसि। प्रभुप्रतापबलसुयशसुनायसि ५
निशिनअनलमिलराजकुमारी। असकहिसोनिजभवनसिधारी ६
कहसीता बिधिभाप्रतिकूला। मिलहिनपावकमिटहि नशूला ७
देखि परम बिरहाकुल सीता। सोक्षण कपिहिं कल्पसम बीता ८
दो० कपिकरि हृदय बिचार दीन्ह मुद्रिका डारि तब।
जनु अशोक अंगार दीन्ह हर्षि उठिकर गहेउ ॥ १० ॥

त्रिजटासे हाथ जोरिके बोली कि हेमाता इसबिपति में बिपत्ति संगिनि मेरीतुही है १ सुनु हेत्रिजटे मैं देह त्यागकिया चाहतीहूं तूबेगि यत्नकरु कि काष्ठलाकर चिता रचिदे और अग्नि उसमें लगादे यहदुस्सह रामबियोग अब मेरेसे नहीं सहाजाता है २।३ यह कार्य्यतो मेरा अवश्यही करो यहीमेरी प्रतिज्ञाहै ऐसीश्रवणों को शूलके समान सीताकी अतिदीन बाणी कौन सुनि सकताहै ४ सो सुनतेही त्रिजटा सीताके चरणोंपर गिरपरी और अनेक भांति समुझाया रामका बल प्रतापऔर सुयश सुनाया और कहाकि धीरज कर अभीराति कोतो अग्नि नही मिलसकती है ऐसा कहिकर सोभी आपने घरको चली गई ५।६ तबतो सीता ने कहा किमेरेपर दैवही प्रतिकूल होगयाहै न अग्नि मिले न यहशूल मिटै ७ इस प्रकार जो सीताको परम बिरहमें ब्याकुल देखा सोक्षण हनुमान को कल्पके समान ब्यतीत हुआ ॥ ८ ॥ फिरितो हनुमान ने बिचार किया कियह बड़ा सुन्दर समय है यह जानिकर वृक्षके ऊपरसे ही श्रीरामचन्द्र कीमुद्रिका सीताके आगेडारिदी सीताने जानाकि अशोकही ने अंगारदिया शीघ्रही उठिकर बड़ी प्रसन्नतासे हाथमें लेली ॥ १० ॥

तब देखी मुद्रिका मनो हर। राम नाम अंकित अति सुन्दर १
चकित चित्त मुदरी पहिचानी। हर्ष बिषाद हृदय अकुलानी २
जीति कोसकै अजय रघुराई। माया ते असि रचीन जाई ३
सीता मन बिचार कर नाना। मधुर बचन बोले हनुमाना ४

आदिहि ते सब कथा सुनाई । लागे श्रवण सुनन मन लाई ५
श्रवणामृत जिन कथा सुनाई । कहेउ सो प्रगट होत किनि आई ६
तब हनुमंत निकट चलि गयऊ । फिरि बैठी मन बिस्मय भयऊ ७
रामदूत मैं मातु जानकी । सत्य शपथ करुणा निधान की ८
दो० कपि के बचन सप्रेम सुनि उपजा मन बिश्वास ।
जाना मन क्रम बचन यह कृपा सिंधु कर दास ॥ ११ ॥

जब हाथ में ली तबतो मनोहर मुद्रिका देखी कि राम नाम से अंकित और अति सुन्दर है १ सो तो देखतेही चकित चित्त हो गई मुद्रका को पहिचानि कर हर्ष बिषाद बश हृदय में अकुल इ उठी २ बिचारती है कि जीति तो स्वामी को कौन सकता है अजय अपराजित हैं ॥ अपराजितस्सर्वसहोनियन्तानियमोयमः और कोई देव दानव, नर, मुनि अपना माया से ऐसी बना भी नहीं सकता है ३ इस प्रकार सीता अपने मन में बिचार करती हैं कि ऊपर से अति मधुर बचन हनुमान बोले ४ आदिहीं से समस्त राम चरित्र मुद्रिका डारने पर्य्यन्त सीता को सुनाया उनको सीता मन लगा कर सुनने लगी ५ सुनि कर बोली कि जिस ने यह श्रमणामृत कथा मेरे को सुनाई है सो मेरे आगे प्रगट क्यों नहीं होता है ६ तबतो हनुमान सीता के निकट चले गये एक बानर रूप आते देखि कर सीता के मन में बड़ा बिस्मय हुआ कि छल तो नहीं है पीठि दे बैठी ७ तबतो अति बिनीत बचनहनुमान हाथ जोरि कर बोले कि हे माता मैं तो अपने स्वामी रामचन्द्र का दूत हूं करुणानिधान राम की सत्य शपथ करताहूं तू बिश्वास मान शंका मत करै ॥ ८ ॥ दोहा ॥ हनुमान के ऐसे प्रेम भरे बचन सुनि कर मन में बिश्वास हुआ और जान लिया कि तन, मन, बचन से यह कृपासिंधु राम का दासही है ॥ ११ ॥

हरिजन जानिप्रीतिअति बाढ़ी । सजलनयन रोमावलि ठाढ़ी १
बूड़ति बिरह जलधिहनुमाना ।भयहु तात मोहि कह जलयाना २
अब कहु कुशलजाउ बलिहारी । अनुज सहित सुख भवन खरारी ३
कोमल चित कृपालु रघुराई । कपि केहि हेतु धरी निठुराई ४
सहजबानिसेवकसुख दायक ।कबहुं कि सुरति करत रघुनायक ५
कबहुंनयनमम शीतल ताता । होइहिं निरखि श्याममृदु गाता ६
बचनन आव नयन भरि बारी । अहह नाथ मोहिं निपट बिसारी ७
कह कपि हृदय धीर धरु माता । सुमिरि राम सेवकसुखदाता ८

दो० निशिचर निकर पतंग सम रघुपति बाण कृशानु ।
जननीउर धीरज धरहु जरे निशाचर जानु ॥ १२ ॥

भगवत्प्रपन्न जानि कर तो सीता की प्रीति हनुमान पर अतिही बाढ़ी कि नेत्रों में जल भरि आया और रोमावली खड़ी हो गई १ बोली कि हे तात हनुमान इस रामबिरह के महासागर में बूड़ती देखि तू मेरे को जलयान हो गया २ तेरीबलि जाऊं अब यह तो कहु कि सुखनिधान श्रीरामचंद्र लक्ष्मण समेत कुशल तो हैं ३ अति कोमल चित्त बड़े कृपालु प्रणतपाल रघुनाथ स्वामी ने कौन कारण से मेरे पर ऐसी निठुराई अंगीकार की है ४ सेवक सुखदायक जिन स्वामी की सहज बानि है ते रघुनायक स्वामी भला कभी मेरा भी स्मरण करते हैं ५ हे हनुमान कभी ऐसा भी होगा कि स्वामी के श्यामल कोमल सुन्दर गात को देखि कर मेरे ये नेत्र शीतल होंगे ६ ऐसा कहि कर नेत्रों में जल भरि लिया और मुख से कुछ भी बचन नहीं आये केवल इतनाही कहा कि हे नाथ मेरे को आपने निपटही बिसारिदिया यह कहि कर मष्ट हो रही ७ ऐसी बिकल दशा सीता की देखि कर हनुमान ने कहा कि हे माता राम सेवक सुख दाताही हैं उनको स्मरण करके हृदय में धीरज धारण करो ८ ॥ दोहा ॥ ये राक्षसों के समूह जो इस लंका में शलभा के समान असंख्य भरे हैं इन को रामचंद्रके बाण परम प्रज्वलित अग्निही के समान हैं यह बिचारि कर हे माता धीरज धरो इन सब को तो तुम जरेही जानो ॥ १२ ॥

जो रघुवीर होत सुधिपाई । करते नहिं बिलंब रघुराई १
अबहिं मातु मैं जाउं लिवाई । प्रभु आयसु नहिं रामदुहाई २
कछुक दिवस जननी धरुधीरा । कपिन सहित ऐहैं रघुवीरा ३
निशिचर मारि तोहिंलैजैहैं । तिहुंपुर नारदादि यशगैहैं ४
कहुसुतकपि सबतुमहिंसमाना । यातुधानअति भटबलवाना ५
मोरे हृदय परम संदेहा । सुनिकपि प्रगट कीन्ह निजदेहा ६
कनक भूधरा कार शरीरा । समर भयंकर अति रणधीरा ७
सीता मन भरोस जब भयऊ । तब लघुरूपपवन सुत लयऊ ८
दो० सुनुमाता शाखामृगहिं नहिंबलबुद्धिबिशाल ।
प्रभुप्रताप ते गरुड़ही खाइपरम लघुव्याल ॥ १३ ॥

जो श्रीरामचन्द्र ने तेरे नियत स्थान की कुछ भी सुधिपाईहोती तौतो किंचित् बिलंबन हीं करते १ लिवाइ तो मैं तेरे को अभीजाऊं परंतु रामकोशपथ करताहूं कि मेरे को स्वामी की ऐसी आज्ञा नहींहै २ ताते अब धीरही दिन हे माता और

धीरज धरो बानरों की सेना समेत श्रीरामलक्ष्मण दोनों भाई आवेंगे ३ अपने पुरुषार्थ से राक्षसों को मारिके तेरे को लेजावेंगे जिस का परम पावन यश त्रैलोकनिवासी नारदादिक महर्षि गायाकरेंगे ४ जबहनुमान ने कहा कि बानरों की सेना से राक्षसों को जीतेंगे तब तो सीताने कहा कि हे तात कहो समस्त बानर तो तेरेही समान होंगे और राक्षस तो बड़ेबीर और अतिही बलवान हैं ५ यहतो मेरे हृदय में बड़ा ही संदेह है यह सुनिकर हनुमान ने अपना निज शरीर सीता को दिखाया ६ कनक भूधर कहें सुमेरु के आकारतो अति बड़ा शरीर है और संग्राममें भयंकर बड़ा ही रणधीर है ७ जब सीता के मन में भरोसाहोगया तब तो फिर हनुमान् अति छोटे होगये ॥ ८ ॥ दोहा ॥ बोले कि सुनो हे माता हम तो शाखामृग हैं हमारे को कुछ बुद्धि और बल विशेष नहीं है परंतुस्वामी रामचन्द्र के प्रताप से गरुड़को भी परम छोटा सर्पलाही खा सक्ता है ॥ १३ ॥

मन संतोष सुनत कपि बानी । भक्ति प्रताप तेज बल सानी १
आशिष दीन्हि रामप्रियजाना । होहु तात बल बुद्धि निधाना २
अजर अमर गुणनिधि सुतहोहू । करहु बहुत रघुनायकछोहू ३
करहु कृपाप्रभु असपुनिकाना । निर्भर प्रेम मग्न हनुमाना ४
बारबार नायउ पदशीशा । बोला बचन जोरि कर कीशा ५
सुनुमाता मोहिं अतिशय भूखा । लागिदेखि सुन्दरफलरूखा ६
सुनुसुत बिपिन करहिं रखवारी । परम सुभट रजनीचरभारी ७
तिनकर भयमाता मोहिं नाहीं । जो तुम सुखमानहु मनमाहीं ८
दो० देखि बुद्धि बल निपुण कपि कहेउजानकीजाहु ।
रघुपति चरणहृदयधरि तातमधुरफलखाहु ॥ १४ ॥

ऐसीभक्ति, प्रताप, तेज, बल परिपूर्ण हनुमान की वाणी सुनतही सीता के मनको संतोष होगया १ तबतो हनुमान को श्रीरामचन्द्र का परम प्रिय जानि के आशीर्वाद दिया कि हे तात तुम बल और बुद्धि के निधान होजाओ २ अजर कहैं कभीजरा अवस्था न हो और अमर होजाओ और समस्त गुणों के निधान होजाओ और रघुनायक श्रीरामचन्द्र स्वामी तेरे पर सदा अधिक कृपाकरतेरहैं ३ समस्त आशीर्वादों के पीछे जो यह आशीर्वाद दियाकि रघुनाथ सदाकृपा करते रहैं सो आशीर्वाद सुनि कर तो निर्भर प्रेम में हनुमान मग्न होगये ४ बारम्बार सीता के चरणों को शीश नवाया और हाथ जोरिकर बोले ५ सुनु हे माता मेरे को ये सुन्दर फल औरवृक्षों को देखिकर बड़ीही भूखलगी है ६ तब तो सीताबोली सुन हे पुत्र इस बन कीतो बड़े बड़े भारीयोधा बहुत राक्षस रखवारी करते ७ यह सुनिकर हनुमान ने कह

कि हे माता जो तुम अपने मनमें सुखमानो तो उनकी तो भयमेरे को कुछ भी नहीं है ॥ १३ ॥ दोहा ॥ तब तो सीता ने हनुमान को बल और बुद्धि दोनों में निपुण जानि कहि दिया कि जाओ और श्रीरामचन्द्र के चरण कमल हृदय में धरिके निर्भय इस बन के मधुर मधुर फलखाओ ॥ १४ ॥

चला नाय शिर पैठेउ बागा । फल खायसि तरुतोरन लागा १
रहे तहां बहु भट रखवारे । कछु मारे कछु जाइ पुकारे २
नाथ एक आवा कपि भारी । तेहिं अशोक बाटिका उजारी ३
सुनि रावण पठये भट नाना । तिनहिं देखि गर्जा हनुमाना ४
सब रजनीचर कपि संहारे । गये पुकारत कछु अधमारे ५
पुनि पठवा तेहिं अक्ष कुमारा । चला संग लै सुभट अपारा ६
आवत देखि बिटपगहि तर्जा । ताहि निपाति महा धुनि गर्जा ७
रहे महा भट तेहि के संगा । गहि गहि कपि मर्दै निजअंगा ८
दो० कछु मारे मछु मर्देसि कछुक मिलायसि धूरि ।
कछु पुनि जाइ पुकारे प्रभु मर्कट बल भूरि ॥ १५ ॥

जो सीता माताकी आज्ञा पाई तुरतही शीश नवायकर चलि दिये औरबाटिका में प्रवेश किया प्रथम तृप्त होकर मन भावते फलखाये फिरितो कुछ स्वामीके बिशेष कार्य्य करनेके लिये वृक्षोंको तोरने लगे १ और जो बड़े बीर उसके रक्षक रहे कुछ तो जीसे मारि डारे कुछ रावणसे जा पुकारे २ कि हेनाथ एक बड़ा भारी बलवान बंदर आया है उसने हमको मारि कर समस्त बाटिका उजारि दी ३ यह सुनिकर रावणने बहुतसे योद्धाओंकी भीर भेजी उनको आया देखिकर हनुमान अतिही गर्जे ४ तो सबके सब हनुमानने संहारि लिये जो कुछ अधमरे भागि गये ते रावण के पास फिर जा पुकारे ५ तब तो रावणने अपने पुत्र अक्ष को भेजा सो अपार योधा अपने साथ लेचला ६ उसको आते देखि कर हनुमान एक वृक्षको लेकर उसके ऊपर दौरे और उसी वृक्षके प्रहारसे उसको मारिकर बड़ी धुनिसे गर्जे ७ जो बड़े बड़े योधा उसके साथ रहे उनकोतो हनुमानने पकरि पकरि अपने शरीरहीसे मलिदिया॥ ८ ॥ दोहा ॥ उनमेंसे कुछतो मारे कुछ मींजि डारे कुछ लातोंसे धूरिमें मिलादिये कुछ अधमारे फिरि जा पुकारे कि हे स्वामी बंदरतो कोई बड़ाही बलवान है ॥ १५ ॥

सुत बध सुनि लंकेश रिसाना । पठयसि मेघनाद बलवाना १
मारेसि जनि सुत बांधेसिताही । देखहुं कीश कहां करआही २

चला इन्द्रजित अतुलित योधा। बंधु निधन सुनि उपजा क्रोधा ३
कपि देखा दारुण भट आवा। कट कटाइ गर्जा अरु धावा ४
रहे महा भट तिहिके संगा। गहि गहि कपि मर्दै निजअंगा ५
तिनहिंनिपाति ताहिसन बाजा। भिरे युगलमानहुंगजराजा ६
मुष्टिक मारि चढ़ा तरु जाई। ताहि एक क्षण मूर्छा आई ७
उठि बहोरि कीन्हेसिबहु माया। जीतिनजाइ प्रभंजनजाया ८
दो० ब्रह्मबाण तब सांधा कपि मन कीन्ह विचार।
जोन ब्रह्म शर मानहुं महिमा घटै अपार॥ १९॥

अपने पुत्र अक्षका बध सुनतेही रावण अतिही रिसाना तब ज्येष्ठ पुत्र इन्द्रजीत मेघनादको भेजा और कहा १ कि मारनातो नहीं है पुत्र उसको बांधि ला देखें तो कि कहांका और किसका भेजा यह बानर है २ पिताकी आज्ञा पाकर मेघनाद महाबली योधा चला भाईका निधन सुनिकर बड़ाक्रोध उत्पन्नहुआ ३ हनूमान देखा कि अबतो महादारुण योधा आया अपना बानरी कटकटा शब्द करिके गर्जा और उठि दौरा ४ जो उसके साथ बड़े बड़े योधा रहें उनको तो पकरि के हनूमानने अपने अंगहीसे मर्दि दिया ५ उनको मारिकर मेघनादसे जा जुटे तो दोनों अपना अपना बल करि करिके कैसे लरतेहैं मानों दोनों गजराजही हैं ६ फिरितो हनुमान मेघनादके हृदयमें एक मुष्टिक मारि के बृक्ष पर चढ़ि गये क्योंकि उसको क्षण मात्र मूर्छा होगई ७ फिरतो उसने उठिकर अनेक अपनी आसुरी माया करी किसीप्रकार पवनपुत्र हनुमान जीते न गये॥ ८॥ दोहा॥ तबतो उसने ब्रह्मबाण का प्रयोग करिके संधान किया हनुमानने सोचा कि जो इस ब्रह्मबाणको नहीं मानता हूं तो इसकी जो अपार महिमा है उसमें न्यूनता होजायगी॥ १९॥

ब्रह्म बाण तब कपि कहं मारा। परती बार कटक संहारा १
तिहिं देखाकपि मूर्छित भयऊ। नागपाश बांधेसि लै गयऊ २
जासु नाम जपिसुनहु भवानी। भव बंधन काटहिं नर ज्ञानी ३
तासु दूत किमि बंधन आवा। प्रभुकारज लगि आप बंधावा ४
कपि बंधनसुनिनिशिचर धाये। कौतुक लागि सभा सबआये ५
दशमुख सभादीख कपिजाई। कहिन जाइ कछुअति प्रभुताई ६
करजोरेसुर दिशिप बिनीता। भृकुटिबिलोकहिंसकल सभीता ७
देखिप्रताप नकपिमन शंका। जिमिअहि गणमहं गरुड़अशंका ८

दो० कपिहिं बिलोकि दशानन बिहसि कहा दुर्बाद।
सुतबध सुरति कीन्हि तब उपजा हृदय बिषाद ॥ १७॥

जब ब्रह्मबाणसे हनुमान को मेघनादने मारा परतौबार भी हनुमानने सेनाका संहार किया १ मेघनादने जाना कि बानर मूर्छित होगया ऐसा न हो कि मरजावे तबतो नागपाशसे बांधिकर पिताके पास लेगया २ जिस स्वामीके नामही को जपिकर सुनो हे पार्वती महा कठिन संसार बंधनको ज्ञानी काटते हैं उस स्वामी का दूतभला कैसे किसीके बंधनमें आसकता है उसने अपने स्वामीके कार्य्य करने के लिये आप अपनेको बंधादिया ३।४ बानर का बंधन सुनिकर निशाचर दौरे देखनेके लिये सब राज सभामें आये ५ दशग्रीव रावण की सभा हनुमानने जाकर देखी जिसकी अति प्रभुताई कुछकही हो नहीं जातीहै हाथ जोरे हुये दिशिपाल अर्थात् इंद्र, वरुण, यम कुबेरसब देवताओं समेत जिसके आगे खडेहैं और परम सभीत उसकी भृकुटी के बिलासको देख रहेहैं ७ ऐसा महा प्रतापभी देखिकर हनुमानका मन न डराया जैसे सर्पोंकेयूथमें गरुडअशंक होता है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ हनुमानको आया देखिकर रावण ने हंसिकर कुछदुर्वचन कहे फिरितौपुत्रकेबधको स्मरणकरिकेहृदयमें बिषादहीहोगया१७

कह लंकेश कवन तैं कीशा। केहिके बल घालेसि बन खीशा १
कीधौंश्रवण सुना नहिं मोहीं। देखत अतिअशंक कपि तोहीं २
मारेनिशिचर केहिअपराधा। सुनु शठ तोहिन प्राणकी बाधा ३
सुनु रावण ब्रह्मांड निकाया। पाइ जासुबल बिरचति माया ४
जेहिबल शेष धरत सहसानन। अंडकोश समेत गिरि कानन ५
जाके बल बिरंचि हरि ईशा। पालत सृजत हरत दशशीशा ६
हरकोदंड कठिन जेहि भंजा। तुमहिं सहितनृप दलमद गंजा ७
खरदूषण त्रिशिरा अरुबाली। बधे सकलअतुलित बल शाली ८

दो० जाके बल लवलेशते जितेहु चराचर झारि।
तासुदूत मैं जासु तुम हरिआनेहु प्रिय नारि ॥ १८ ॥

रावणने कहा अरे बंदर तूकौन है और किसके बलसे मेरावन तूने उजारि दिया १ क्या तूने मेरेको कानोंसे नहीं सुनाहै मैंतेरे को अति अशंक हो देखता हूं २ और तूने येराक्षस कौन अपराधसे मारे क्या तेरेको अपने प्राणोंका डर नहींहै ३ हनुमान ने कहा सुनु रेरावण मैं उस स्वाभाविक अपार बलसागर बलवान्का दूतहूं जिसकेबल की पायकर जगन्मूला माया अनन्त कोटि ब्रह्माण्डोंके समूहोंको रचाकरतीहै ४ फिरि जिसके बलसे फणिराज भगवाधार शेषआपने सहस्र फणोंपर पर्वत बनों समेतअंड

काशको धारण करतेहैं ५ और जिसके बलसे ब्रह्मा सृष्टिको रचतेहैं रुद्र संहारते हैं तैसेही आपही विष्णु होकर अपने परस्वरूपके बलसे पालन करतेहैं बिष्वक्सेनसंहितायां॥ चतुर्मुखस्तुभगवान्सृष्टिकार्य्येनियोजित: शंकराख्योमहायोगीसंहारेविनियोजित: पालनायस्वयमेवप्रादुर्भूतोहरि: अर्थात् हरिनारायण ने सृजनके निमित्त ब्रह्माको नियत किया और संहारके लिये रुद्रको पालन के लिये आपही प्रगट हुये ६ जिसने महाकठोर शिवके धनुष कोतोरा और तेरेसमेत सब राजाओंका गर्वदूरिकिया ७ तेरे भाई खरदूषण त्रिशिरा और तेरेही मित्र बालि बलशालि को मारा ॥ ८ ॥ दोहा ॥ और उसीके बलके लवलेश को पाइकर तैनेभी समस्त चराचर जीतिलिये उसीका मैं दूतहूं और उसीकाबल रखताहूं जिसकी तू परम प्रिया को चुरा लायाहै ॥१८ ॥

जानत मैं तुम्हारि प्रभुताई । सहसबाहु सन परी लराई १
समर बालिसनकरियशपावा । सुनिकपिबचनबिहंसिबहलावा २
खायउं फल मोहिं लागिभूखा । कपि स्वभावते तोरेउंरूखा ३
जिनमोहिं मारा तिन मैंमारा । तापर बांधेउ तनय तुम्हारा ४
मोहिं न कछु बांधेकी लाजा । कीन्ह चहहुं निजप्रभु करकाजा ५
बिनती करहुं जोरि कर रावण । सुनहु मान तजिमोर शिखावन ६
जाके डर अतिकाल डराई । जोसुर असुर चराचर खाई ७
ता सन बैर कबहुं नहिं कीजै । मोरे कहे जानकी दीजै ८
दो० प्रणत पाल रघुवंशमणि करुणा सिंधु खरारि ।
शरण गये प्रभुराखि हैं तव अपराध बिसारि ॥ १६ ॥

तुम्हारी प्रभुताई को तोमैंभली भांति जानता हूं सहस्रबाहुको तुमनेजैसा कुछबिजय कियां रहै सोक्या मैंनहीं जानताहूं १ फिरि हमारे राजा बालिसे युद्धकरिके जैसायश पाया सोभी जानताहूं ऐसे हनुमान के बचन हंसीहीमें उड़ादिये २ आया तो मैं तेरे यहांरहूं खानेकौन के घरजाता भूखलगे परतेरेही बागके फल खाये और अपनी जाति के सुभाव से वृक्षोंकोतोरा ३ और जिन्होंने मेरे को मारा उनको मैंनेभी मारा तिसपर तुम्हारे पुत्र मेघनाद ने मेरेको अधिक बांधा है उसका पलटा लेना है ४ मेरे को कुछ बांधने की लाज भी नहींहै जैसेहोगा अपने स्वामीका कार्य्य किया चाहता हूं ५ तातें हाथ जोरि कर हे रावण मैं तेरी बिनती करता हूं मानको छोड़ि कर मेरा शिखावन सुनो ६ जिनके डरसे कालभी डराता है जो सुर असुर और चराचरों को खाता है ७ उससे हे रावण कभी बैर न करना चाहिये तातें मेरे कहेसे सीताको देदेना

चाहिये ॥ ८ ॥ रामचन्द्र स्वामी प्रणतपाल और करुणा सिंधु हैं जबतू सीताको साथ लेकरउनकेशरण जायगा तबतो तेरे सब अपराधों कोभूलिकरतेरीरक्षा होकरेंगे ॥ १६ ॥

यदपि कही कपिअति हितबानी । भक्तिबिबेक धर्मनय सानी १
बोला बिहसि महा अभिमानी । मिलाहमहिं कपि बड़गुरुज्ञानी २
मृत्यु निकट आई खलतोहीं । लागेसि अधम शिखावन मोहीं ३
उलटा होइ कहा हनुमाना । मति भ्रम प्रगट तोरिमैं जाना ४
सुनिकपि बचनकहतखिसियाना । बेगि न हतहु मूढ़के प्राना ५
सुनत निशाचर मारन धाये । सचिवन सहित बिभीषण आये ६
माथ नाइ करि बिनय बहूता । नीति बिरोध न मारिय दूता ७
आन दंड कछु करिय गुसाईं । सबहीं कहा मंत्र भल साईं ८
दो० कपिकी ममता पूंछि पर सबहि कहा समुझाइ ।
तेल बोरि पट बांधि पुनि पावक देहु लगाइ ॥ २० ॥

यद्यपि हनुमान ने रावणके अति हितकी भक्ति,ज्ञान, बैराग,धर्म, नीति की भरी बात कही १ उसको सुनतेहीमहा अभिमानी बड़ाहंसा और बोला किआजतो हमको यह बंदर क्या बड़ाही ज्ञानी गुरू मिला २ अरे शठ तेरीमृत्यु समीप आगई है तू मेरेको शिक्षा करताहै ३ हनुमानने कहा मृत्यु तो आईही परंतु आईतेरी है उलटी मेरी बताता है ताते मैंने जानि लिया कि प्रत्यक्ष तेरीमतिका भ्रम है ४ ऐसे हनुमानके बचन सुनिकर अतिही खिसियाइगया और बोला कि कोईहै नहीं इसको बेगिही क्यों नहींमारते हो ५ रावणके बचन सुनतेही राक्षस मारने को दौरे इतने में मंत्रियों समेत बिभीषण आगये ६ रावण को शीश नवाइ और बड़ी बिनती करि करिके बोले किहे राजन् नीति बिरोध दूतको मारनान चाहिये ७ और कुछ दण्ड दीजिये यहसुनि कर सब सभासदों ने कहा कि हे महाराज यही मंत्रभला है ॥ ८ ॥ ॥ दोहा ॥ तबतो रावणने सबको समुझा करकहा किबंदरों कीममता पूंछपर होतीहै तातेएक काम करो कितेलमें बस्त्र बोरि बोरि कर इसकी पूंछमें बांधो और लंकामें सब औरफिरा करअग्नि लगादो ॥ २० ॥

॥ यह दूसर दशक सुन्दरा कांड काहुआ ॥

यातुधान सुनि रावण बचना । लागे रचन मूढ़ सोइ रचना १
रहान नगर बसन घृत तेला । बाढ़ी पूंछ कीन्ह कपि खेला २
बाजहिं ढोल देहिं सब तारी । नगर फेरि पुनि पूंछि प्रजारी ३

पावक जरत देखि हनुमंता । भयउ परम लघु रूप तुरंता ४
नमुकि चढ़ेउ पुनि कनक अटारी । भईं सभीत निशाचर नारी ५
देह बिशाल परम हरुवाई । मंदिर ते मंदिर पर जाई ६
जारा नगर निमिषएक माहीं । एक बिभीषण कर गृह नाहीं ७
उलटि पलटि लंका सबजारी । कूदि परा पुनि सिंधु मझारी ८
दो० पूंछ बुझाई खोई श्रम धरि लघुरूप बहोरि ।
जनक सुता के आगे ठाढ़ भयउ कर जोरि ॥ २१ ॥

यातुधान कहे राक्षस रावणके बचन सुनकर महामूढ़ सोई रचना रचने लगे १ ते। जैसेजैसे हनुमानकी पूंछमें सोचिक्कनबस्त्रबांधतेजातेहैं तैसेही हनुमान पूंछ बढ़ाते हैं यहांतक किलंका भरेमें न तो बस्त्रढूंढ़ा मिला न तैल घृतमिला ऐसाखेल हनुमान ने किया २ अबतो ढोल बजते जातेहैं और तागी पीटते जातेहैं इस प्रकार हनुमान को नगरके चारोंओर फेरि राजसभामें लाकर पूंछमें आगि देदी ३ अग्निको प्रज्वलित पूंछमें देखि कर हनुमान तुरंतही परम लघु होगये और नमहोकर सुन्दर कनककी अटारियों पर चढ़िगये सो देखतेही राक्षसी सभीत होगईं ४ । ५ फिरि बिशाल रूप होकर अति हरुवाईसे मंदिरतें मंदिरों पर जा जाकर पलमात्र में समस्त नगर जरा दिया एक बिभीषण का घर बचादिया ६ । ७ इसप्रकार उलटि पलटि कर हनुमान ने लंकाको जराया और फिरि समुद्र मेंकूदिपरे ॥ ८ ॥ दोहा ॥ तहां पूंछि को बुझाइ और श्रमको दूरिकरि फेरि लघुरूप होकर सीताके आगे हाथ जोरि खड़े होगये २१॥

मातु मोहिं दीजै कछु चीन्हा । जैसे रघुनायक मोहिं दीन्हा १
चूड़ामणि उतारि तब दीन्हीं । हर्ष समेत पवनसुत लीन्हीं २
कहेहु तात अस मोर प्रणामा । सब प्रकार प्रभु पूरण कामा ३
दीन दयाल बिरद संभारी । हरहु नाथ मम संकट भारी ४
तात शक्रसुत कथा सुनायहु । बाण प्रताप प्रभुहि समुझायहु ५
मासदिवसमहंनाथनआवहिं । तौपुनिमोहिं जियतनहिंपावहिं ६
कहुसुत केहिबिधि राखहुं प्राणा । तुमहूं तात कहत अबजाना ७
तोहिं देखिशीतलभइ छाती । पुनिमोकहं सोइ दिन सोइराती ८
दो० जनक सुतहिं समुझाइ करि बहु बिधि धीरज दीन्ह ।
चरण कमल शिर नाय कपि गमन रामपहं कीन्ह २२ ॥

बड़ी नम्रताके साथ हाथजोरि कर बोले हेमाता आपभी मेरेको यहां आने का कुछ चिन्ह दीजिये जैसे रघुनाथ स्वामी ने मेरेको दियाहै १ तबतो सीताने मस्तक से चूड़ामणि उतारिकर हनुमान को देदी औरकहा २ कि हेतात स्वामीसे मेराप्रणाम कहना और यह कहना कि आप तो सबप्रकार परि पूर्ण काम हो परंतु अपना दीन दयालु बिरद स्मरण करिके हेनाथमेरे इससंकट को हरिये ३।४ और हेतात एकतो मैंतेरे से इंद्रके पुत्र जयंतकी कथा कहती हूं सोतू स्वामी से कहना और बाण का प्रताप स्वामी को समुझाना जिसके सुनतेही स्वामीको तेरे यहां आनेकी प्रतीति हो जायगी क्योंकि इस चरित्रको मेरेऔर स्वामीके प्रथक्और कोई मनुष्य नहींजानताहै५ और यहभी कहना किजो मास दिवसमें स्वामी यहां न आवेंगे तो फिरि मेरे को जीवता न पावेंगे ६ कहुहेपुत्र मैं अपने प्राण कौन भांति राखों तुमभी अब यहां से जाना चाहते हो ७ तेरेको देखिकर मेरी छाती शीतल हुई रहै अबतो फिरि मेरेको तैसेही दिन और तैसीही रातें बीतेंगी ऐसेकहिकर सीता मौन होगई ८ ॥ दोहा ॥ तबतो हनुमान ने जनकसुता सीता को समुझा कर सब भांतिसे धीरज दिया और उनके चरणकमलों को प्रणाम करिके रामचंद्र स्वामीके पास को पयान किया ॥ २२ ॥

चलत महाधुनि गर्जा भारी। गर्भ श्रवहिं सुनि निशिचर नारी१
लांघिसिंधु यहिपारहिंआवा। शब्द किलकिलाकपिन सुनावा२
हर्षे सब बिलोकि हनुमाना। नूतन जन्म कपिन तब जाना ३
मुख प्रसन्न तन तेज बिराजा। कीन्हेसि रामचंद्र करकाजा ४
मिले सकल अतिभये सुखारी। तलफत मीनपाव जिमिबारी५
चलेहर्षि रघुनायक पासा। पूंछत कहत नवल इतिहासा ६
तब मधुबन भीतर सब आये। अंगद सहित मधुरफल खाये ७
रखवारे जब बरजन लागे। मुष्टि प्रहार हनत सब भागे ८
दो० जाइपुकारे ते सकल बनउजार युवराज।
सुनिसुग्रीव हर्ष अति करि आये प्रभुकाज॥ २३॥

चलतो बार ऐसा महाभारी धुनि से गर्जा जिस को सुनिकर राक्षसी गर्भ श्रवने लगीं १ समुद्र को लांघि कर इस पारको आया और अपना बानरी किलकिला शब्द सब बानरों को सुनाया २ हनुमान को देखतेही सब हर्षित होगये और तब अपना नया जन्म बानर मानते हुये ३ मुख तो सब के प्रसन्न होगये और तन में तेज आगया क्योंकि रामचंद्र का कार्य्य करि लिया ४ उठि उठि कर सब हनुमान को मिले और कैसे सुखी होगये हैं जैसे तलफती मीन को पानी मिल जावै ५ फिरि तो प्रसन्न होकर रामचंद्र के पास को चले मार्ग में नवीन इतिहास

कहते सुनते चले जाते हैं ६ तब तो मधुवन में सब आपहुंचे तहां अंगद समेत सब ने मधुर२ फल खाये ७ जब रखवारे रोकने लगे उनको मुष्टिप्रहार से मारि कर भगा दिया ॥ ८ ॥ दोहा ॥ ते सब सुग्रीव के पास जा पुकारे कि महाराज युवराज अंगद ने आकर समस्त बन उजार दिया यह सुनतेही तो सुग्रीव के मन में अति ही हर्ष होगया कि स्वामी का काय्य करिआये ॥ २३ ॥

जो न होत सीता सुधि पाई । मधुबन केफल सकहि न खाई १
यहि बिधिमन बिचार कर राजा । आइ गये कपि सहित समाजा २
आइ सबन नाये पद शीशा । मिले सबहिं अति प्रेम कपीशा ३
पूंछी कुशल सकल पद देखी । राम कृपा भा काज बिशेषी ४
नाथ काज कीन्हेउ हनुमाना । राखे सकल कपिन के प्राना ५
सुनिसुग्रीवबहु रितेहिं मिलेऊ । कपिनसहितरघुपतिपहं चलेऊ ६
राम कपिन जब आवत देखा । किये काजमन हर्ष बिशेखा ७
फटिक शिला बैठे दोउ भाई । परे सकल कपि चरणन जाई ८
दो० प्रीति सहित भेंटत प्रभु रघुपति करुणापुंज ।
पूंछत कुशल नाथ अब कुशल देखिपद कंज ॥ २४ ॥

जो सीता की सुधि न पाई होती तो मेरे मधुबन के फल कौन खासकता रहै १ इस प्रकार सुग्रीव अपने मनमें बिचार करतेही जाते हैं कि समस्त बानर समाज समेत उनके पास आगये २ आइकर सबों ने राजा सुग्रीव के चरणों को शीश नवाया और सुग्रीव सब को बड़े प्रेम से मिले ३ कुशल पूंछी तब सबों ने कहा कि आपके चरण कुशल देखने से हम सब की कुशल है और रामकीकृपा से स्वामी का काय्य भी सिद्ध होगया ४ हे नाथ यह काय्य हनुमान ने किया और हम सब को जीव दान दिया ५ यह सुनतेही सुग्रीव फिरि कर हनुमान को मिले और सब समेत राम के पास चले ६ रामचंद्र ने सब बानरों को आते देखा कि काय्य किये बड़े प्रसन्न चले आतेहैं स्वामीको भी बिशेष हर्ष होगया ७ सुन्दर फटिक शिला पर दोनों भाई बैठे हैं तहां समस्त बानर चरणों पर जा गिरे ॥ ८ ॥ दोहा ॥ तब तो बड़ी प्रीति समेत करुणापुंज रामचंद्र सब को मिले और कुशल पूंछी सबों ने उत्तरदिया कि आप के चरण कमल कुशल देखि के हमारे सब की कुशल है ॥ २४ ॥

जामवंत कह सुनु रघुराया । जापर करहु नाथ तुम दाया १
ताहि सदा शुभ सकल निरंतर । सुरनरमुनिप्रसन्नतेहि ऊपर २
सोइ बिजयी बिनयी गुणसागर । तासुसुयश त्रैलोक्य उजागर ३

प्रभुकी कृपा भयउ सब काजू । जन्महमार सफल भा आजू ४
नाथ पवनसुत कीन्ह जोकरणी। सहसबदन सो जाइ न बरणी ५
पवनतनय के चरित सुहाये । जामवंत रघुपतिहिं सुनाये ६
सुनत कृपानिधि के मनभाये । पुनि हनुमंत हर्षि हिय लाये ७
कहहु तात केहि भांति जानकी । रहति करति रक्षा स्वप्राणकी ८
दो० नाम पाहरू दिवस निशि ध्यान तुम्हार कपाट ।
लोचन निजपद यंत्रित प्राण जाहिं केहि बाट ॥ २५ ॥

जामवन्त ने कहा सुनो हे रघुनाथ स्वामी आप जिस जीवपर अपनी कृपा करो उसको तो सर्वदा निरंतर सब शुभही होतेहैं और सुर नर मुनि सब उस पर सदा प्रसन्नही रहते हैं ॥ प्रसन्नो यदि गोविन्दः प्रसन्नास्सर्वदेवताः २ ॥ सोई संसार में विजयी नीतिवान गुणसागर होता है और उसीका सुयश त्रैलोक्य में विख्यात होता है ३ सो यह समस्त कार्य्य तो आपकी कृपाही से हुआ है और हम सबका जन्मभी आजही सफल हुआहै ४ तथापि लोक में हे नाथ इन पवनपुत्र हनुमान ने जो करनी करीहै सो तो सहस्रमुख से भी नहीं कही जाती है ५ ऐसे कहिकर फिरितो जामवन्त ने समस्त पवनपुत्र हनुमान के सुन्दर सुहायेचरित्र रामचंद्रको सुनाये ६ सो तो सुनतेही कृपानिधान रामचद्रके मनमें अतिही भाये और हर्षितहो फिरकर हनुमानके हृदय से लगाया ७ और बोले कहो तो हे तात कौन भांतिसे सीता अपने प्राणकी रक्षा करतीरहती है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ हनुमान ने कहा सुनो हेस्वामी सीता ने आपके दर्शन के लिये अपने प्राणोंकी रक्षाको आपका नामतो दिन राति पाहरू किया और आपके ध्यानके कपाट लगाये रहतीहैं नेत्रोंको अपनेही चरणोंमें यंत्रित रखती है सोई यंत्रला है ऐसे अपने प्राण रोंकि राखेहैं ॥ २५ ॥

चलत मोहिं चूड़ामणि दीन्ही । रघुपति हृदय लाइ सो लीन्ही १
नाथयुगल लोचनभरि बारी । बचन कहेउ कछु जनककुमारी २
अनुज समेत गहेउ प्रभु चरणा । दीन्हबंधु प्रणतारति हरणा ३
मन क्रम बचनचरण अनुरागी । केहिं अपराध नाथ मोहिंत्यागी ४
अवगुण एक मोर मैं जाना । बिछुरत कीन्ह न प्राण पयाना ५
नाथसो नयनन कर अपराधा । निसरत प्राण करत हठि बाधा ६
बिरह अनल तन तूल समीरा । स्वास जरहि क्षणमाहिं शरीरा ७
नयनश्रवहि जलनिज हितलागी । जरय न पाव देह बिरहागी ८

दो० निमिष निमिष करुणायतन जाहिं कल्प सम बीति ।
बेगि चलिय सिय आनिये भुजबल खलदल जीति ॥ २६

चलते समय मेरेको यह चूड़ामणि दीहै सीता रामचंद्रने लेकर हृदयसे लगाली १ हे नाथ सीतामाता ने अपने दोनों नेत्रोंमें जलभरि के कुछ बिनती करि भेजी है २ लक्ष्मण समेत आपके चरण छुयेहैं और यहकहा है किहेदीनबंधु हे प्रणतारतिहरण मनसा बाचा कर्मना से जोमैं आपही के चरणोंकी अनुरागी हूं उसको आपने कौनसे अपराध से त्यागि दियाहै ३ । ४ हां एकअवगुण तो मैं अपना जानतीहूं किबिछुरते समय प्राणोंने पयान नहींकिया ५ हेनाथ सोभी नेत्रोंका अपराधहै मेरानहीं किप्राणों के पयानके समय हठि करिके बाधा करदेते हैं ६ आपका बिरह तो अग्निहैं और मेरा शरीर तूलहै और स्वासा पवनहैं एकक्षणमें शरीर जरिजाताहै ७ तहांनेत्र अपने हितके लिये जल अर्थात् देतेहैं इससे बिरहाग्नि से शरीर जरने नहीं पाताहै ॥ ८ ॥ ॥ दोहा ॥ निमिष निमिष हे करुणायतन सीता को कल्प कल्पके समान बीततेहैं तातें बेगिही चलिये हे स्वामी शत्रु कीसेना समेत जीतिकर सीताको लेआइये ॥ २६ ॥

सुनि सीता दुख प्रभु सुखअयना । भरिआयेजल राजिवनयना १
बचन काय मनमम गतिजाही । सपनेहु बिपतिकिपुंछियताही २
कह हनुमंत बिपति प्रभुसोई । जबतव सुमिरण भजन न होई ३
कितक बात प्रभु यातुधानकी । रिपुहिं जीतिआनिये जानकी ४
सुनुकपि तोहिं समानउपकारी । नहिंकोउ सुरनरमुनितनुधारी ५
प्रति उपकार करहुं का तोरा । संमुख होइ न सकतमनमोरा ६
सुनु कपि तोहिं उऋण मैंनाहीं । देखेउंकरि बिचार मनमाहीं ७
पुनिपुनिकपिहिं चितवसुरत्राता । लोचनसजलपुलकअतिगाता ८

दो० सुनि प्रभु बचन बिलोकि मुख गात हर्ष हनुमंत ।
चरण परेउ प्रेमाकुल त्राहि त्राहि भगवंत ॥ २७ ॥

सीता के दुख सुनतेही आनन्दनिधान श्रीरामचंद्र के नेत्रकमल जल से परिपूर्ण होगये १ सोचने लगे कि जिस मेरे अनन्यभक्त को कर्म बचन मन से मेरेही गति हो उसको क्या स्वप्न में भी बिपत्ति होना चाहिये २ इसप्रकार स्वामी को सोचकरते देखिकर हनुमान ने कहा किहे स्वामी बिपत्ति तो सोई होती है जिस कालमें जीव से तुम्हारा भजन स्मरणनहो सके॥ यद्दिनंभगवन्नामकथापीयूषबर्जितं । तद्दिनंदुर्दिनंमन्ये वर्षावातेनदुर्दिनं॥ सोसीता तो आपका निरंतर स्मरण भजनकरती रहती है उनको कौन बिपत्ति है ३ और जो आप इसी को बिपत्ति मानते हैं तो राक्षसों की कितनी

बात है चलिये शत्रु को जीतिकर सीता को ले आयें ४ तबतो रामचन्द्र ने कहा सुनो हे हनुमान तेरे समान परोपकारी सुर, नर, मुनि, शरीरधारियों में कोई भी तो नहीं है ५ इस कार्य्यके प्रत्युपकार करनेको मेरा मन भी तो नहीं समुहाता ६ मैंने बिचारि देखा किसी भांति मैं तेरे से अऋण नहीं होसक्ता हूं ७ इसप्रकार बार बार रामचंद्र हनुमान को देखते हैं नेत्रतो जलसे भरे हैं और अति पुलकित शरीर है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ ऐसे स्वामी के बचन सुनि और मुख को देखि शरीर तो हनुमान का हर्षित होगया और त्राहिमां त्राहिमां कहिकर रामचंद्र के चरणों पर मस्तक टेकिकर रहिगये ॥ २८ ॥

प्रभु पदपंकज कपि कर शीशा । सुमिरि सो दशा मग्न गौरीशा १
सावधान पुनि मन करि शंकर । लागे कहन कथा अति सुन्दर २
कपि उठाय प्रभु हृदय लगावा । कर गहि परम निकट बैठावा ३
कहु कपि रावण पालित लंका । केहिं बिधि दहेहु दुर्ग अति बंका ४
प्रभु प्रसन्न जाना हनुमाना । बोला बचन बिगत अभिमाना ५
शाखामृग की अति मनुसाई । शाखा ते शाखा पर जाई ६
लांघि सिंधु हाटकपुर जारा । निशिचरगण बधि बिपिन उजारा ७
सो सब तव प्रताप रघुराई । नाथ न कछु मोरी मनुसाई ८
दो० ताकहं प्रभु कछु अगम नहिं जापर तुम अनुकूल ।
तव प्रताप बड़वानलहिं जारि सकै खलु तूल ॥ २८ ॥

अबतो रामचंद्र के तो चरणकमल और हनुमान का मस्तक इस परम लाभ दशा को स्मरण करतेही गौरीश गिरिजापति श्रीशिवजी भी प्रेममें मग्न होगये क्योंकि अपनाही अंशावतार हैं १ फिरि तो मन को सावधान करिके अति सुन्दर कथा कहने लगे २ सुनो हे पार्बती हनुमान को उठाय कर रामचंद्र ने हृदय से लगालिया और हाथ पकरि कर अतिही समीप बैठारि कर पूंछने लगे ३ कहु तो हे कपि रावण पालित लंका महा दुर्गम अतिबंकी तूने कैसे जरादी ४ इस प्रकार जब रामचंद्रको परम प्रसन्न जाना तबतो हनुमान अभिमान रहित बचन बोले ५ सुनो हे स्वामी हमतो शाखामृग हैं हमारी तो अति मनुसाई यही है कि शाखा से शाखा पर चले जावें ६ यह जो समुद्र लंघन किया लंकाजराई बन उजारा राक्षस मारे, यहतो सब आपके प्रताप ने किया इसमें हे नाथ मेरी कुछ भी मनुसाई नहीं है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ सुनो हे नाथ उसको कोई भी दुस्कर कार्य्य अगम नहीं है जिस पर आप अनुकूल होवें आपके प्रताप से तो बड़वानल को रूईही जारि सकती है ॥ २९ ॥

नाथ भक्ति तव सुख दायनी । देहु कृपा करि अनपायनी १
सुनिप्रभु परमसरल कपिबानी । एवमस्तु तब कहेउ भवानी २
उमा राम सुभावजेहि जाना । ताहि भजनतजि भावनआना ३
यह संबाद जासु उर आवा । रघुपति कृपा भक्तितेहिं पावा ४
सुनिप्रभुबचन कहतकपिवृंदा । जयजयजय कृपालुसुखकंदा ५
तवरघुपतिकपि पतिहिंबुलावा । करहु चलनकर बेगिउपावा ६
अबबिलंब केहिं कारण कीजै । तुरत कपिन कहं आयसुदीजै ७
कौतुक देखि सुमन बहु बर्षे । नभ ते भवन चले सुर हर्षे ८
दो० कपि पति बेगि बुलायउ आये यूथप यूथ ।
नाना बरण अतुल बल बानर भालु बरूथ ॥ २९ ॥

हे नाथ मेरेकोतो अपने चरणोंमें अनपायनी भक्ति कृपा करिके दीजिये जो इस लोक और परलोक उभय बिभूतिमें सुखदायनी है १ ऐसी परम सरल हनुमान की बाणीको सुनिकर हे पार्बती श्री रामचन्द्र स्वामी ने एवमस्तु ऐसे कहि दिया २ हे पार्बती जिन भगवतप्रपन्नोंने सौलभ्य, सौशील्य, औदार्य, वात्सल्य, कारुण्य, गांभीर्य्य गुण संपन्नपरम कृपालु रामचन्द्रके स्वभावको जानाहै उसकोतो भगवद्भजनके बिना और कुछ सुहाताहीनहींहै ॥ आलुबंदार॥ तवामृतस्पन्दनपादपंकजे निवेसितात्माक-मनन्यदिच्छति स्थितेरबिंदेमकरंदनिर्भरेमधुव्रतोनेक्षुरकंहिवीक्षते ॥ ननाकपृष्टंनचसार्वभौमंनपारमेष्ठ्यनरसाधिपत्यं नयोगसिद्धिंनपुनर्भवंवाबांछंतियत्पादरजप्रपन्नाः ॥ ३ यह परमपावन संबाद जिसके हृदयमें आवे राम कृपासे सोभी भक्ति पावे ४ ऐसेरामचन्द्र स्वामीके वचन सुनि करजय कृपालु जयसुखकन्द कहने लगे ५ फिरितो श्रीरामचंद्र ने सुग्रीवको बुलाया और कहा चलनेका उपाय शीघ्रही करो ६ अब ढील करनेका कौन काम है बेगिही बानरोंको आज्ञा दीजिये ७ ऐसा स्वामीके लंकाको प्रयाण का कौतुक देखिकर आकाशसे देवता फूल बर्षाय प्रसन्नमन अपने अपने लोकों को चले ॥ ८ ॥ दोहा ॥ तबतो सुग्रीवने जो बानर बुलाये सोई यूथपोंके यूथ चलेआये नाना वर्णके अतोल बल बानर रीछों के समूह देखि परने लगे ॥ २९ ॥

प्रभु पद पंकज नावहिं शीशा । गर्जहिं भालु महाबलकीशा १
देखी राम सकल कपि सयना । चितैकृपा करि राजिवनयना २
राम कृपा बल पाइ कपिन्दा । भये पक्ष युत मनहु गिरिन्दा ३
हर्षि राम तब कीन्ह प्रयाना । शकुन भये सुन्दर शुभनाना ४

प्रभु प्रयान जाना बैदेही । फरकहिं बाम अंग शुभ तेही ५
चला कटक को बरणै पारा । गर्जहिं बानर भालु अपारा ६
नख भूधर बिटपायुध धारी । चले गगन मग इच्छाचारी ७
केहरि नाद भालु कपि करहीं । डगमगाहिं दिग्गज चिक्करहीं ८

आय आय कर स्वामी रामचन्द्र के चरणों को प्रणाम करते हैं महाबली बानर और रीछ गर्जते हैं १ तबतो राजीव लोचन रामचन्द्रने समस्त बानरोंकी सेना को चितय कर कृपादृष्टि से देखा २ राम कृपाके बलको पाइकर एक एक बानर कैसे देखि परने लगे मानों पक्षों समेत सुमेरुही हैं ३ इस प्रकार समस्त सेनाको अपनी कृपा का बल देकर सब समेत हर्षित हृदय लंकाको प्रयान किया ताही समय सुन्दर शुभ शकुन होने लगे ४ रामचन्द्र का प्रयाण सीताने जानि लिया कि उनके सुन्दर शुभ बाम अंग फरकने लगे ५ जैसा कुछ बानरोंका कटक चला है उसको कौन कहि सकता है अपार बानर और अपार रीछ गर्जते चले जाते हैं ६ नख पर्बत बिटप वृक्ष येही आयुध धारण किये हैं मार्ग और आकाश में इच्छाचारी चले जाते हैं ७ जयत्यतिबलोरामःलक्ष्मणश्चमहाबली राजाजयतिसुग्रीवःराघवेनाभिपालितः इस प्रकार सिंहनाद भालु कपि सब करते जाते हैं जिसके मारे दिग्गज डगमगाते और चिक्कारतेहैं ॥ ८ ॥ गीतावल्यां ॥ जबरघुबीरपयानोकीन्हो क्षुभितसिंधुडगमगतमहीधरसजिसारंगकरलीन्हो सुनिकठोरटंकोरघोरअतिचौंकेबिधिचिपुरारिजटापटलतेंचलीसुरसरीसकतनशंभुसंवारि ॥

छं० चिक्करहिंदिग्गजडोलमहिगिरिलोलसागरखरभरे ।
मनहर्षदिनकरसोमसुरमुनिनागकिन्नरदुखटरे ॥
कटकटहिंमर्कटबिकटभटबहुकोटिकोटिनधावहीं ।
जयरामप्रबलप्रतापकोशलनाथगुणगणगावहीं ॥ १ ॥
सहिसकनभारउदारअहिपतिबारबारबिमोहहीं ।
गहिदशनपुनिपुनिकमठपीठिकठोरसोकिमिसोहहीं ॥
रघुबीररुचिरपयानप्रस्थितिजानिपरमसुहावनी ।
जनुकमठखप्परसर्पराजसुलिखतअबिचलपावनी ॥ २ ॥

दो० यहि बिधि जाइ कृपानिधि उतरे सागर तीर ।
जहंतहं लागे खानफल भालु बिपुल कपि बीर ॥ ३० ॥

दिशाओं के अष्ट दिग्गज तो चिक्कार ने लगे भूकम्प होने लगा पर्बत चलने

लगे समुद्री में खरभर हो उठा सूर्य्य के मनमें आनन्द हुआ कि हमारे वंश में पित्रों के बैरका लेनेहारा पुत्र उत्पन्न हुआ चन्द्रमा कोभी यह हर्ष हुआ कि हमारे वंश में भी यह जन्मेगा और सुर, मुनि, नाग, किन्नर सबके दुखदूरि होगये बानरोंके महाविकट भट कटकटा शब्द करते हैं और करोरों करोर धावते चलेजाते हैं रामचन्द्र की जय उच्चारतेहैं और गुण गण गावते हैं १ महा भारी अपार भार को अहिपति बासुकि सहि नहीं सकते हैं बारंबार मोहते हैं और दांतों से कच्छप की पीठि पकरि कर रहि जातेहैं सो कैसी शोभादेतेहैं मानों श्रीरामचन्द्र के इस रुचिर पयानकी प्रस्थिति अर्थात् कालसंज्ञा कि अमुक मन्वन्तरे ऽमुकयुगे ऽमुकचरणे ऽमुक नाम संबत्सरे ऽमुकायने ऽमुक र्त्तौ मुकमास्य ऽमुकपक्षे ऽमुकतिथाव मुकनक्षत्र ऽमुकवारे ऽमुकलग्नोदये श्रीरामचद्रने लंकाको प्रस्थान किया इसको परम सोहावनो जानकर कमठ खप्पर पर सर्पराज बासुक लिखि रहेहैं २ ॥ दोहा ॥ इस प्रकार कृपा निधि श्रीरामचंद्र जाइकर समुद्र के समीप सेना समेत उतरे और जहां तहां सुन्दर बनमें बानर रीछ फल खानेलगे ॥ ३० ॥

यह सुन्दर कांड का तीसरा दशक हुआ ॥

औपूर्बार्द्धपूराहुआबाल्मीकिमेंसुन्दरकांडयहींतकहैइसलिगोसाईं जीनेइसकोकिष्किन्धाकीरीतिपरतीनदशकोंमेंकहाहैशेष उत्तरार्द्धआरण्यकांडकीरीतिपरएकपच्चीसीमेंकहाहै ॥

उहां निशाचर रहत सशंका । जबते जारि गयउ कपि लंका १
निजनिजगृह सबकरहिं बिचारा । नहिंनिशिचरकुलकेर उबारा २
जासुदूत बल बरणि न जाई । तेहि आये पुर कवनि भलाई ३
दूतिन सन सुनिपुरजन बानी । मन्दोदरी हृदय अकुलानी ४
रहीजोरि कर पतिपद लागी । बोली बचन नीति रस पागी ५
कंत करष हरिसन परि हरहू । मोरकहा अतिहितउरधरहू ६
तव कुलकमल बिपिन दुखदाई । सीता शीतनिशा सम आई ७
सुनहु नाथ सीता बिनु दीन्हे । हितन तुम्हार शंभु अजकीन्हे ८
दो० रामबाण अहिगण सरिस निकर निशाचर भेक ।
जबलगि ग्रसत न तबलगि करेहु यतनतजि टेक ॥ १ ॥

उहां जबसे हनुमान लंका जारिगयेहैं तबसे समस्त राक्षस सभीतहो रहतेहैं १ अपने अपने घरों में सबके सब यही बिचार किया करतेहैं कि अब राक्षस कुलका

किसी भांति बचाव नहींसूझ परताहै २ जिस शत्रु के दूतका बल तो कहाही नहीं जाताहै उस परम प्रबल के दल समेत आने से भला इस नगर में कौनसी भलाई होगी ३ ऐसी घरर की पुरजनोंकी बाणी दूतियों के मुख सेसुनिसुनि कररावण की पट-रानी मंदोदरी मनमें घबराइ गई ४ हाथ जोर माथ नवाय रावण के पैरोंपर गिरिपरी और नीति रसके पागे बचन बोली ५ हेकन्त रामचंद्र साक्षात स्वरूप बिष्णु हैं इनसे बैरभाव मत करो मेरे कहे को अपने मनमें अपना हितही जानो ६ तुम्हारे कुल प्रफुल्लित कमल बनकी दुखदायिनी यह सीता शीत निशाही के समान आईहै७ सुनो हे नाथ एक सीता के बिना दिये तुम्हारा बचाव तो शिवके करने से होगा नस्वयंभूब्रह्मा से होगा ८ ॥ दोहा ॥ रामचंद्र के बाण तो महा बिषधर भुजंग सर्प के समान हैं और तुम्हारे सब राक्षस मेंडकों के सदृश हैं ताते जब ताईं इन राक्षसों को रामके बाण ग्रसि न लेवें तभीतक इस हठको छोड़िकर यत्न करना उचित है ५॥

श्रवणसुनत शठताकी बानी । बोला जगतबिदित अभिमानी १
सभय सुभाव नारि कर साचा । मंगल महं सभीत अतिकाचा२
कंपहि लोकप जाकी त्राशा । तासु नारि भयकर बड़ि हासा ३
असकहि बिहंसिताहि उरलाई । चलेउ सभा ममताअधिकाई४
मंदोदरी हृदय करु चिंता । भयउ कंत पर बिधि बिपरीता ५
बैठत सभा खबरि असिपाई । सिंधु पार सेना सब आई ६
पूंछत सचिव उचित मत कहहू । ते सब हंसे मौन गहिरहहू ७
जिते सुरा सुर तब भ्रमनाहीं । नर बानर केहि लेखे माहीं ८
दो० सचिव बैद्य गुरु तीनि जो प्रिय बोलहिं भय आश ।
राज्य धर्म तन तीनि कर होइ बेगही नाश ॥ २ ॥

ऐसी परमहित मंदोदरी की बाणी कानों सुनतेही बिश्वबिख्यात अभिमानी रावण बोला सत्य यह बात है कि स्त्रियों का सुभाव सभीत होता है देखो सुन्दर आनन्द मंगल में भी अति सभीत और कचियाती है १ । २ जिस की भय के मारे लोक पाल भी कंपते हैं उसकी पत्नी होकर भी भय करै यह तो अतिही लोकहंसाई है ३ ऐसा कहि हंसि कर उसको हृदय से लगाइ अर्थात् समुझाइ कर बड़े अहंकार समेत राजसभा को चला गया ४ मंदोदरी के हृदय में बड़ीही चिन्ताहुई कि मेरे पति के ऊपर दैवही बिपरीति हो गया है ५ सभा में बैठतेही ये समाचार पाये कि समुद्र के पार बानरों की समस्त सेना आगई ६ ऐसे समाचार सुनतेही मंत्रियों से पूछा कि देश काल के अनुसार और शत्रु का बलाबल बिचारि कर उचित मंत्र

कहो यह सुनि कर मंत्री सब हंसे और बोले कि मौन गहे बैठे रहो ७ क्योंकि बला-
बल तो प्रत्यक्ष है जिन आपने जब सुर असुर जीते तबतो कुछ भय नहीं हुई ये
नर बानर विचारे कौन लेखे में हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ मंत्री बैद्य आचार्य राजा, शिष्य
और रोगी की सुहाती बात लोभ से या भय से जो कहैं तो राजा के राज्य को और
शिष्यके धर्म को रोगीके शरीरका थोरेही काल में नाशहो जाता है ३॥

सोइ रावण कह बनी सहाई। अस्तुति करत सुनाइ सुनाई १
अवसर जानि बिभीषण आवा। भ्राता चरण शीश तेहिं नावा २
पुनिशिरनाय बैठनिज आसन। बोला बचन पाइ अनुशासन ३
जो कृपालु मोहिं पूछत बाता। मति अनुरूप कहतहित ताता ४
जोआपन चाहत कल्याना। सुयश सुमतिशुभ गतिसुखनाना ५
तो परनारि ललाट गुसाईं। तजहु चौथ चन्दा की नाईं ६
चौदह भुवन एक पति होई। भूत द्रोह तिष्ठै नहिं सोई ७
गुण सागर नागर नर जोऊ। अल्प लोभ भल कहै न कोऊ ८
दो० काम क्रोध मद लोभ सब नाथ नर्क कर पन्थ।
सब परिहरि रघुबीर पद भजहु कहहिं सद ग्रन्थ ॥ ३॥

सोई रावण को सहाय आवनी कि रावण की प्रशंसा सुनाइ सुनाइ कर करते हैं १
ऐसा समय जानिकर बिभीषण भ्रातृहां आये और रावण के चरणों को शीश नवाया २
बैठने की आज्ञा पाइ कर फिर शीश नाइ कर अपनी बैठक पर जा बैठे और रावण
की आज्ञा पाइ कर बोले ३ कि हे कृपालु जो आप मुझ से पूछते हो तो मैं अपनी
बुद्धि के अनुरूप आप को हित कहता हूं ४ जो आप अपना कल्याण और संसार
में सुयश चाहते हो और सुमति कहाया चाहते हो पर लोक और इस लोकमें
शुभगति और सुख चाहतेहो ५ तो परर्इ भार्य्याके ललाट पटल को दश न चौथे चंद्रमा
के समान त्याग करो ६ जो चतुर्दश भुवन का एकही स्वामी होवे सो भी भूत द्रोह
के परिपाक से नहीं तिष्टत है ७ जो समस्त गुण सागर और बड़ाचतुर भी होता है
अल्प पदार्थ पर लोभ करने से ही उसको कोई भला नहीं कहता है ॥ ८ ॥ दोहा ॥
सुनो हे नाथ काम, क्रोध, मद, लोभ ये सब नर्कही के पन्थ हैं इन सब को छोड़ि
कर श्री रामचंद्रहीके चरणों को भजो यही समस्त सद ग्रन्थ अर्थात् चारों वेद छहूं
शास्त्र अष्टदश पुराण और स्मृति इतिहासों का संमत है ॥ ३ ॥

तात राम नहिं नर भूपाला। भुवनेश्वर कालहुंकर काला १
ब्रह्म अनामय अज भगवंता। ब्यापक अजित अनादि अनंता २

गो द्विजदेव धेनु हितकारी । कृपासिंधु मानुष तनु धारी ३
जन रंजन गंजन खल ब्राता । वेद धर्म रक्षक सुनु भ्राता ४
ताहि बैर तजि नाइय माथा । प्रणतारति भंजन रघुनाथा ५
देहु नाथ प्रभु कहं बैदेही । भजहु राम बिनु हेतु सनेही ६
शरण गये प्रभु ताहु न त्यागा । बिश्वद्रोह कृत अघ जेहिं लागा ७
जासु नाम त्रैताप नशावन । सो प्रभु प्रगट समुझि जिय रावण ८
दो० बार बार बर मागों बिनय करौं दशशीश ।
परि हरि मान बिमोह मद भजहु कौशलाधीश ॥ ४ ॥

सुनो हे तात रामचंद्र प्राकृत मनुष्य राजा नहीं हैं किन्तु भुवनेश्वर कहे हैं त्रैलोक्य नाथ हैं और काल के भी काल हैं १ साक्षात् परब्रह्म हैं निर्विकार, अजन्मा, भगवान्, विश्वव्यापक, अपराजित, अनादि, अनन्त हैं २ गो कहैं पृथिवी द्विज देव धेनु इन सबके हितकारी कृपासिंधु स्वामी मानुष तन धारी हैं ३ अपने भक्तजनों के आनन्ददायक और दुष्टों के ब्रात कहैं समूहों के नाश कर्ता हैं वेद और वेदोक्त धर्मों के रक्षक हैं हे भ्राता ४ उनको बैर भाव छोड़ि कर शीशही नवाना चाहिये रघुनाथ स्वामी प्रणतारति भंजन हैं ५ ताते हे नाथ सीता रामचंद्र को दैदेहु और उन हेतु सनेही रामही को भजो ६ शरण गये पीछे तो स्वामी ने उसको भी त्याग नहीं किया है जिसको बिश्वद्रोह कियेका भी पातक लगा हो ७ जिस स्वामी का नामही दैहिक, दैविक, भौतिक तीनों तापों का नाश कर्ता है हे रावण सोई स्वामी प्रगट हुये हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ तातें मैं आपसे बारंबार बर मांगता हूं और बिनती करता हूं हे भाई कि इस मान, मोह, मद को छोड़िकर कौशलाधीश श्री रामचंद्र का भजन कीजिये ४॥

मालवंत एक सचिव सयाना । तासु बचन सुनि अति हित माना १
तात अनुज तव नीति बिभूषण । सो उर धरहु जो कहहिं बिभीषण २
रिपु उत्कर्ष कहत शठ दोऊ । दूरि न करहु यहां है कोऊ ३
मालवंत गृह गयउ बहोरी । कहत बिभीषण पुनि कर जोरी ४
सुमति कुमति सब के उर रहईं । नाथ पुराण निगम अस कहईं ५
जहां सुमति तहं संपति नाना । जहां कुमति तहं बिपति निदाना ६
तव उर कुमति बसी बिपरीती । हित अनहित मानत रिपु प्रीती ७
काल रात्रि निशिचर कुल केरी । ता सीता पर प्रीति घनेरी ८

दो० तात चरण गहि मांगहुं राखहु मोर दुलार।
सीता देहु राम कहं अति हित होइ तुम्हार ॥ ५ ॥

मालवन्त नाम एक बड़ा चतुरमंत्री रहै उसको बिभीषण के वचन सुनिकर बड़ा हित जानि परा १ बोला कि हे तात तेरा भाई तो नीति का आभूषण है तातेसोई कीजिये जो बिभीषण कहते हैं २ सुनतेही रावण बोला अरे रे शठ दोनों शत्रु ही का उत्कर्ष प्रताप मेरे सामुहे कहते हैं कोई यहां है इनको दूरि क्योंनहीं करतेहो ३ यह सुनिकर मालवन्त तो घर को चला गया तिस पीछे बिभीषण हाथ जोरकर फिरि बोला ४ कि सुनो हे नाथ वेद पुराण ऐसा कहते हैं कि सुमति और कुमति सबही के हृदय में बास करती हैं ५ जब जहां सुमति होती है तबतो सुखसंपति की वृद्धि होती है और तैसेही कुमति होने से बिपत्तिही का कारण होता है ६ सो या समय आपके हृदय में सुमति की बिपरीति कुमति बसी है ताते हितकारी को तो आप शत्रु जानतेहो और शत्रु को परम मित्र मानते हो ७ देखो जो हमारे राक्षस बंश को काल रात्रि के समान आई है उस सीता पर आपकी अत्यन्त प्रीति है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ तातें मैं आप के पैरों परिकर मांगता हूं आप मेरे दुलार राखो कि मेरे कहे से सीता राम को देदो इसमें आपका अतिही हित होगा ॥ ५ ॥

बुध पुराण श्रुति संमत बानी । कही बिभीषण नीति बखानी १
सुनत दशानन उठा रिसाई । खलतोहिं मृत्युनिकटचलिआई २
जियत सदा सठ मोरजियावा । रिपु कर पक्ष मूढ़ तोहिं भावा ३
कहसि न खलअसकोजगमाहीं । भुजबल जाहिजितेउं मैं नाहीं ४
ममपुरबसितपसिनसनप्रीती । शठमिलुजाइ तिनहिं कहुनीती ५
असकहि कीन्हेसि चरणप्रहारा । अनुजगहे पद बारहिं बारा ६
तुमपितु सरिस भलेहिमोहिं मारा । रामभजे हित होइतुम्हारा ७
सचिव संगलै नभ पथगयऊ । सबहि सुनाइ कहत असभयऊ ८

दो० रामसत्य संकल्प प्रभु सभा काल बश तोरि ।
मैं रघुनाथ शरण अब जाउं देहु जनि खोरि ॥ ६ ॥

जो बाणी पंडितों पुराणों और वेदों के संमत है उस बाणी से भी बिभीषण ने राजनीति बखानि कर कही परंतु ॥ उपदेशोहिमूर्खाणां प्रकोपायनशांतयेपयःपानं भुजंगानांकेवलंबिषवर्द्धनं १ सुनतेही रावण रिसाइ उठा कि अरे दुष्ट तेरी मृत्यु निकटही आगई है २ जीवता तो शठ मेरे जिवायेसे है और पक्षतेरे को सदा से मेरे शत्रु बिष्णुही का सुहाता है ताते बारम्बार ताप सों को बिष्णुही बताता

है ३ यह नहीं दुष्ट कहता है कि ऐसा बलवान संसार में कौन है जिस को मैंने अपने वाहुबल से जीता नहीं है ४ मेरे पुर में बसिकर जो तू तपसियों सेही प्रीति रखता है तो उठ यहां से उन्हीं को जाय मिल बडानीतिवेत्ता है तो उन्हीं को नीति जाबता ५ ऐसे कहि कर बिभीषण को लात से मारा तिस पर भी बिभीषण ने भाई के छोह के मारे वारबार पैरही पकरे और कहा ६ कि आपतो पिताही के समान मेरे बड़े भाई हैं जो मेरे को मारा तो कौन डर है परंतु अब भी मानो किहित ममान तुम्हारा राम के भजेही है ७ जब देखा कि किसी भांति नहीं मानता है तब तो बिभीषण ने भी भगवद्विमुख जानिकर उसका त्यागही उचित जाना मंत्रियों को साथ लेकर आकाश में गये और समस्त सभा को सुनाते हुये रावण से यह बचन बोले ॥ ८ ॥ दोहा ॥ सुनु हे रावण राम तो सत्यसंकल्प हैं और यह तेरी सभासब काल के बश है ताते मैं तो अब रघुनन्दन राम के शरण जाता हूं कोई दोष न देना ॥ ६ ॥

असकहि चला बिभीषण जबहीं । आयुहीनभे निशिचर तबहीं १
साधु अवज्ञा तुरत भवानी । करकल्याण अखिल की हानी २
रावणजबहिंबिभीषणत्यागा । भयउबिभवबिनुतबहिंअभागा ३
चला हर्षि रघुनायक पाहीं । करत मनोरथ बहु मन माहीं ४
देखिहौं जाय चरण जलजाता । अरुण मृदुल सेवक सुखदाता ५
जे पदपरसि तरी ऋषि नारी । दंडक कानन पावन कारी ६
जे पद जनक सुता उर लाये । कपट कुरंग संग धरि धाये ७
हरउरसर सरोजपद जोई । अहो भाग्य मैं देखब सोई ८
दो० जिन चरणन की पादुका भरतरहे मन लाइ ।
ते पदआजु बिलोकि हौं इन नयनन अब जाइ ॥ ७ ॥

ऐसे कहि कर जबहीं बिभीषण लंका से चले तबहीं समस्त राक्षस आयुहीनहो गये १ साधु अवज्ञा हे पार्बती तुरंतही समस्त कल्याणों का नाश करदेती है २ रावण को जबहीं बिभीषण ने त्यागा ताही समय समस्त ऐश्वर्य रहित होगया कवित्त ॥ बेदबिरुद्ध महामुनि साधुसशोक किये सुरलोक उजारेउ ॥ और कहा कहीं सीयहरी तबहूं करुणा करकोपनि बारेउ सेवक द्रोह ते छांडिछमातुलसीलख्यो राम सुभावनियारो ॥ तौलौं नकोपि दल्यो दशकंधर जौलौं बिभीषण लातनमारेउ ३ अबतो बिभीषण पुत्र,कलत्र,मित्र,परिवार,धन,धान्य, गृह, राज्य, सुख सब त्यागि कर परम प्रसन्न मन श्रीरामचंद्र के शरण चले मार्ग में अनेक मनोरथ करते जाते हैं ४ धन्य मेरे भाग्य कि आज मैं अपने स्वामी के चरण कमल देखूंगा जो अरुण अति कोमल सेवक सुखदायक हैं ५ जिन की रज के छूतेही अहल्या बिशुद्ध होगई और

हुकठादण्डकबन प्रफुल्लितहोगया ६ जो चरण सीताने हृदयमें धारणकिये और कपट मृगमारीच के पीछे दौरे ७ जगद्वंद्य श्रीशिवजी के हृदय मानसर के कमल हैं अहो भाग उन चरणों को मैं अधम निशाचर देखूंगा ८ दोहा ॥ जिन चरणों की पादुकाओं कोभरत मनलगा रहे हैं उन चरणों को मैं आज इन नेत्रों भरिकर देखूंगा ॥ ७ ॥

यहिबिधि करतसप्रेम बिचारा । आयउ सपदि सिंधुयहिपारा १
कपिन्ह बिभीषण आवत देखा । जाना कोउ रिपुदूत बिशेषा २
ताहि राखि कपि पति तहं आये । समाचार सबताहि सुनाये ३
कह सुग्रीव सुनहु रघुराई । आवा मिलन दशानन भाई ४
कह प्रभु सखाबूझिये काहा । । कहेउ कपीशसुनहु नरनाहा ५
जानि नजाय निशाचर माया । काम रूप केहि कारण आया ६
भेद हमार लेन शठ आवा । राखिय बांधि मोहि अस भावा ७
सखानीति तुम नीक बिचारी । ममप्रण शरणागत भय हारी ८
दो० शरणागत कहं जे तजहिं निज अनहित अनु मानि ।
तेनर पामर पाप मय तिनहिं बिलोकत हानि ॥ ८ ॥

इसप्रकार प्रेम समेत बिचार करते करते महूर्तमात्रहीमें समुद्रके इसपार मंत्रियों समेत बिभीषण आये । इत्युक्त्वापरुषं वाक्यंरावणंरावणानुजः । आजगाममुहूर्तेनयत्ररामःस लक्ष्मणः १ बानरोंने जो बिभीषण को आते हुये देखा तोशत्रु रावण का भेजा कोई दूत बिशेष जाना और बिभीषणने उन्होंसे कहा किसर्बलोक शरण्य श्री रामचंद्र को निवेदन करो किरावणकाभाई बिभीषण घरबार छोड़िकर आपकेशरण आयाहै । रावणो नामदुर्वृत्तोराक्षसोराक्षसेश्वरः । तस्याहमनुजोभ्रातािबभीषणइतिश्रुतः । सोहंपरुषितस्तेन दासवच्चावमानितः । त्यक्त्वापुत्रांश्चदारांश्चराघवंशरणंगतः । निवेदयतमांक्षिप्रं राघवायमहात्मने । सर्वलोकशरण्याय बिभीषणमुपस्थितं २ ऐसे बिभीषण के बचन सुनिकर बानरों ने राजा सुग्रीवको जा सुनाये ३ सुग्रीवने रामचंद्रसे कहा कि महाराज एक रावणका छोटाभाई बिभीषण आपके मिलने कोआयाहै ४ रामचंद्रने पूंछा कैसा करना चाहिये सुग्रीव बोले सुनो महाराज इन राक्षसों की माया जानी नहीं जाती है कामरूप है जानै किस निमित्त आया है ५ । ६ हमारा भेद लेने को यह शठ आयाहोगा तातें इसको बांधिराखिये मेरेकोतो ऐसा रुचता है ७ रामचंद्र ने कहा सुनो हे सखा नीति तो तुमने यथोचित कही परंतु शरणागत अभयप्रद मेरा सनातन प्रणहै । सकृदेवप्रपन्नाय तवास्मीतिचयाचते । अभयंसर्वभूतेभ्योददाम्येतद्व्रतंमम ८ ॥ दोहा ॥ सुनो हे सखा जे कोई अपना अनहित बिचारिकर भी शरणागत का त्याग करते हैं ते नीच बड़े पापी हैं और उनके देखने सेभी पुण्य नाश होते हैं ॥ ८ ॥

कोटि बिप्र बध लागहि जाहू । आये शरण तजहु नहिं ताहू १
सन्मुख होइजीवमोहि जबहीं । जन्मकोटि अघनाशहिं तबहीं२
पापवंत कर सहज सुभाऊ । भजन मोर तेहि भाव न काऊ ३
जोपै दुष्ट हृदय सो होई । मोरे सन्मुख आव कि सोई ४
निर्मलमन जनसो मोहिपावा । मोहिं कपट छलछिद्र न भावा ५
भेद लेन पठवा दश शीशा । तबहुं न कछु भय हानि कपीशा ६
जगमहं सखा निशाचर जेते । लक्ष्मण हनहिं निमिष महं तेते७
जौ सभीत आवा शरणाई । रखिहौं ताहि प्राण की नाई ८
दो० उभय भांति तेहि आनहूं हंसि कह कृपा निकेत।
जय कृपाल कहि कपि चले अंगद हनू समेत ॥ ६ ॥

सुनो हेसखा मैं शरणागत को अभय देनेही में समदर्शीहूं शरणागतके गुणदोष नहीं देखताहूं कैसाही दोष दुष्टगुण हीनहो शरण आयेपर पालताहीहूं यहांतक कि जिसको कोटि बिप्रके बधका पाप लगाहो ऐसे दोष दुष्टको भी शरण आये पर नहीं त्यागताहूं १ जासमय यहजीव मेरे अभिमुख होताहै उसी समय उसके समस्त पूर्व जन्मोंके संचितपापों का नाश होजाताहै । किरातहूंणांध्रपुलंदपुष्कसाआभीरकंकायव नाखसादय: । येन्येचपापायदुपाश्रयाश्रया: शुध्यंतितस्मैप्रभुबिष्णवेनम: २ पापी जीवों को तो सहज सुभावहीसे मेरा सेवन नहीं सुहाता है ३ जोपै बिभीषण दुष्ट हृदय होता तो मेरेशरण आताहीनहीं क्योंकि । नमांदु:कृतिनोमूढा:प्रपद्यंतेनराधमा: । माययापहृतिज्ञानाआसुरंभावमाश्रिता: ३।४ जबयह जीवमेरे अभिमुख होनेसे बिशुद्धमन पुण्य शील होजाताहै तबमेरेको प्राप्त होताहै मेरेको छलकपट कुछभीनहीं सुहाताहै ५ जो कदाचित् रावणने हमारे भेदलेने कोही भेजाहै तब भी हमारे को नतो कुछ भयहै और न हानिहैक्योंकि । पिशाचान्दानवान्यक्षान्पृथिव्यांचैवराक्षसान् । अंगुल्यग्रेणतान्हन्यामिच्छन्हरिगणेश्वर ६ इस जगमें हेसखा जितने राक्षसहैं उनसबको लक्ष्मण पलमात्र में मार सक्तेहैं ७ औरजो कहीं रावणकी भयसे मेरे शरणआयाहै तो तो मैं अपने प्राणोंके समान उसकी रक्षा करूंगा ॥ ८ ॥ दोहा ॥ तातें अदुष्ट है तो लेआओ और सुदुष्टहै तोभी लेआओ विभीषणहै तो लेआओ औरजो स्वयं रावणहीहै तोभी ले आओ और शरणागत पुकारताहै मैंने उसको अभयदान दिया ॥ आनयैहरिश्रेष्ठदत्तमस्याभयंमया । बिभीषणोवासुग्रीवयदिवारावणस्स्वयं ॥ ऐसा जब रामचंद्रने कहा तबतो जय कृपालु कहिकर अंगदहनुमान सबबंदर बिभीषण के लेनेको चले ॥ ६ ॥

श्रूयतेहिकपोतेन शत्रु:शरणमागत: । अर्चितश्च यथान्यायं

स्वैश्चमांसैर्निमंत्रितः १ सहितंप्रतिजग्राह भार्य्याहर्त्तारमागतं कपोतोबानरःश्रेष्ठ किंपुनर्मद्विधोजनः २ ऋषेकण्वस्यपुत्रेण कं-डुनापरमर्षिणा शृणुगाथांपुराणीतां धर्मिष्ठांसत्यबादिनः ३ बद्धां जलिपुटंदीनं याचंतंशरणागतं नहन्यादानृशंस्यार्थं मपिशत्रुं प-रंतपः ४ आर्त्तोवायदिवादृप्तः परेषांशरणंगतः अरिःप्राणान्परि-त्यज्य रक्षितव्यकृतात्मना ५ सचेद्भयाद्वामोहा द्वाकामाद्वापिन-रक्षति स्वयाशक्त्यायथान्यायं तत्पापंलोकगर्हितं ६ बिनष्टःप-श्यतस्तस्य रक्षिणःशरणंगतः आदायसुकृतंतस्य सर्वंगच्छेदर-क्षितः ७ एवंदोषोमहानत्र प्रपन्नानामरक्षणे अस्वर्ग्यंचायशस्यं चवलबीर्यविनाशनं ॥ ८ ॥

सुनो हे सखा सुग्रीव एक पुरातन इतिहास निश्चित सुना जाता है कि एक कपोत ने अपनी भार्य्याके हिंसक शत्रुको भी शरण आया जानि कर अपने मांससे निमंत्रितयथा न्याय तृप्त किया कहते हैं कि एक बधिकने उस कपोत की भार्य्या को बध किया दूसरे दिन तहीं फिरि अपने उद्यमको गया सब दिन भ्रमा कुछ न पाया रात्रिको सिंह व्याघ्रके भयसे अति क्षुधित उसी कपोतके वृक्षके नीचे शीतका मारा गया और अति दीन होकर बोला कि जो कोई इस वृक्ष पर हो उसकी मैं शरण हूं कपोतने उसको पहिचाना और शरण आया जाना तबलो अपना घोंसिला नीचेगिरा दिया और अध जरती हुई लकड़ी भी लाकर डारि दी जब अग्नि प्रज्वलित हुई तबतो कपोत आपभी उसमें गिरि कर भुनि गया बधिक ताप और उसके मांस से तृप्त हुआ इस शरणागत रक्षा धर्मके प्रभावसे कपोतको स्वर्गसे बिमान आया कपोत ने कहा मैं अपने शरणागत को छोड़ि कर नहीं जाऊंगा तब उसने बधिक समेत स्वर्ग निवास पाया १ सो हे सखा जो ऐसा असमर्थ पक्षीही अपनी भार्य्याके हिंसक शत्रु को भी मित्रही के समान आदरता हुआ तो फिर मो सरीखे सर्व शक्तिमान् इक्ष्वाकु बंश बिभूषणसे शरणागत जीव कैसे त्यागि किया जाता है २ और कण्वऋषि के पुत्र कंडु परम ऋषि धर्मिष्ठ सत्यबादीने जो पूर्ब गाथा गाई है सो सुनो ३ अं-जली बांधे हुआ महा दीन जो शरण मांगता हो ऐसा तो शत्रु भी करुणावानों को बध्यनहीं होता है ४ आर्त्त होय वा दृप्त होय जो अपने शरण आवे तो शत्रु भी महात्माओंको प्राण पर्य्यन्त रक्षतव्यही है ५ सो जो भयके मारे वा मोहतें अथवा कामतें उसकी रक्षा न करै यथा न्याय अपनी शक्ति पर्य्यन्त तो उसको समस्तलोक निंद्य पाप होता है ६ और शरणागतके किये हुये पापतो अरक्षकको प्राप्त होते हैं और

अरक्षक के पुण्य देखते देखतेही अरक्षित ले जाता है ७ ऐसे महा दोष शरणागत के अरक्षणमें होते हैं और नर्क के योग्य होता है और अयश संसार में होता है बल बीर्य्य सब नाश हो जाता है ॥ ८ ॥

सादरतेहि आगेकरि बानर । चले जहां रघुपति करुणा कर १
दूरिहि ते देखे दोउ भ्राता । नयनानंद दानके दाता २
बहुरि राम छबि धाम बिलोकी । रहेउ ठाढ़ एकटक पलरोकी ३
भुज प्रलंब कंजारुण लोचन । श्याम गात प्रणतारति मोचन ४
वृषभ कंध आयत उर सोहा । आनन अमित मदन मनमोहा ५
नयन नीर पुलकित अति गाता । उरधरि धीरकहत मृदुबाता ६
नाथ दशानन कर मैंभ्राता । निशिचर बंश जन्म सुर त्राता ७
सहज पापप्रिय तामसि देहा । यथा उलूकहि तमपर नेहा ८
दो० श्रवण सुयश सुनि आयउं प्रभुभंजन भवभीर ।
त्राहित्राहि आरति हरण शरण सुखद रघुबीर ॥ १० ॥

अबतो बड़े आदर सत्कार समेत विभीषण को आगे करिके करुणा कर श्री रामचन्द्र के पासलिवा लेचले १ प्रथमतो दूरिहीसे नेत्रोंको आनन्ददानदायक दोनों भाई राम लक्ष्मण को देखतेही बिभीषण के नेत्र शीतल होगये २ फिरि समीप जाकरजो सौंदर्य्य निधान रामचन्द्र कोदेखा तो पलकोंकी गतिको रोंकि कर एकटक खड़ेही रहिगये ३ आजानु प्रलम्बतो जिनकी विशालभुजाहैं तरुण प्रफुल्लित अरुण कमलपत्र के समान परम सुहाये नेत्रहैं अति मनोहर श्याम सुन्दर शरीर प्रणतारति मोचन हैं ४ वृषभ केसे उन्नतस्कंधहैं । अति आयत हृदय सोहता है और सुखमा सदन सुन्दर बदन तो मदन मनको भी मोहताहै ५ ऐसा शोभा सागर रामरूप के देखते ही विभीषण सजलनेत्र और अति पुलकित गात होगये और बड़ी धीरधरिके कोमल बचन बोले ६ हे नाथ आपके बिरोधी पापिष्ट रावणका तो मैंभाईहूं और मांसशोणित भक्षक अति अपावन राक्षस बंशमें मेरा जन्महै ७ सुभावही से पापों परप्रीति ऐसा तामसी यह मेरा शरीर है जैसे उलूक अपावन पक्षी को विशेष अंधकारही परप्रेम होता है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ ऐसा मैं सर्व दोष दुष्ट सर्व गुणशून्य आपका भवभीरभंजन सुयश सुनिकर आपकी शरण आयाहूं सोहेप्रणतारति हरण हेशरण सुखदायक रघुबीर स्वामी । मह् यंपाहिजगन्नाथबहुजन्मापराधिनम् ॥ अर्थात् मैं बहुत जन्मोंका अपराधी आप की शरण आयाहूं आप जगन्नाथ हो मेरे अपराधोंको क्षमा करिके मेरी रक्षाकरो अनुजोरावणस्याहंतेनचास्यावमानितः भवंतंसर्बभूतानांशरण्यंशरणंगतः ॥ ऐसे कहिकर

परम प्रेमाकुल बिभीषणशरणागत बत्सल श्री रामचंद्रके सन्मुख दंडवत् गिरपरे ॥ १०

असकहि करत दंवडत देखा । तुरत उठे प्रभु हर्ष बिशेषा १
दीनबचन सुनि प्रभुमन भावा । भुज बिशाल गहि हृदय लगावा २
अनुज सहित मिलि ढिग बैठारी । बोले बचन भक्त भयहारी ३
कहुलंकेश सहित परिवारा । कुशल कुठाहर बास तुम्हारा ४
खलमंडली बसत दिन राती । सखा धर्म निबहत केहिभांती ५
मैंजानत तुम्हारि सबरीती । अतिशय तुमहि न भाव अनीती ६
बरुभल बास नर्क कर ताता । दुष्टसंग जनि देइ बिधाता ७
अब पददेखि कुशल रघुराया । जोतुम कीन्हि जानि जनदाया ८

दो० तबलगि कुशल न जीवकहं सपनेहु मन बिश्राम ।
जबलगि भजत न रामकहं शोकधाम तजि काम ॥ ११ ॥

रामचंद्र ने जो बिभीषण को ऐसा बचन कहिकर दंडवत् प्रणाम करते देखा तो तुरंतही उठि दौरे ऐसा बिशेष स्वामीको अतिआनन्द हुआ मानों अति दुर्लभ दूसरी कौस्तुभमणि हो पागये १ दीन बचन सुनतेही दीन बंधुके मनमें अतिही भाये और अपनी सर्व शक्तिमान् बिशाल भुजाओंसे उठाकर हृदय से लगालिये २ लक्ष्मण समेत मिलिकर अतिही समीप बैठाये और भक्त भयभंजन स्वामी अतिकोमल बचन बोले ३ कहो तो हे लंकाधिपति बिभीषण परिवार समेत अर्थात् पुत्रपौत्र कलत्र सहित तुम्हारे कुशल हैं क्योंकि कुमार्गियोंके स्थानमें तुम्हारा निवासहै ४ खलों की मंडलीमें दिन राति बसते हुये हेसखा धर्ममें कैसे निबहतेहो ५ मैंतुम्हारी समस्तरीति को भले प्रकार जानताहूं कि तुमको अनीति तो अतिशय करिके भावती ही नहीं है ६ इसबास से भला नर्कका वास बिधाता भलेही देवै परंतु दुष्टोंमें बासनदेवे ७ जब इसप्रकार रामचन्द्रने बिभीषण से कुशल पूंछी तब बिभीषण बोले कि श्री महाराज अभीतक कुशल कहां रहै अब आपके चरण कमल देखिकर कुशल हुई है जो आपने अपना जन जानिकर कृपाकीहै ॥ ८ ॥ दोहा तबतक इसजीवको स्वप्नमें भीनतो कुशल होती है नमनको बिश्राम होताहै जबतक समस्त शोक दायक कामरूपी महाबैरी को छोडि कर हेराम आपको नहीं भजता है कामएषक्रोधएषः रजोगुणसमुद्भवः महाशनो महापाप्माविध्येनमिह बैरिणं ॥ ११ ॥

तब लगि हृदय बसत खलनाना । लोभ मोह मत्सर मदमाना १
जबलगि उर न बसत रघुनाथा । धरैं चाप शायक कटि भाथा २
ममता तरुण तिमिर अंधियारी । राग द्वेष उलूक सुख कारी ३

तबलगि बसति जीवमनमाहीं । जबलगि प्रभुप्रताप रबिनाहीं ४
अब भइकुशल मिटेउ दुखभारे । देखि रामपद कमल तुम्हारे ५
तुम कृपाल जापर अनुकूला । ताहि न व्याप त्रिबिधिभयशूला ६
मैंनिशिचरअति अधमसुभाऊ । शुभ आचरण कीन्हनहिंकाऊ ७
जो सुरूप मुनिध्यान न आवा । सो प्रभु हर्षि हृदयमोहिलावा ८
दो० अहोभाग्य मम अमित अति राम कृपा सुख पुंज ।
देखेउं नयन बिरंचि शिव सेव्य युगल पद कंज ॥ १२ ॥

तब तक तो हे स्वामी इस जीव के हृदय में ये नाना प्रकार के दोषही बसा करते हैं लोभ मोह मद मत्सर मान इत्यादि जबतक अपने दिब्यायुधों को धारण किये आप इसके हृदय में नहीं बास करते हो १ । २ ममता लक्षण तिमिर की अंधेरी राग द्वेष उलूकों की सुख दायनी तभी तक इस जीव के हृदय में बास करती है जब तक आप के प्रताप के सूर्य्यका इस के हृदय में प्रकाश नहीं होता है तावद्रागादयस्तेनतावत्कारागृहंगृहं । तावन्मोहांघ्रिनिगडःयावद्रामनतेजनाः ३ । ४ ताते हे राम अब मेरे सब भांतिसे कुशल हुई और महा भारे दुख सब मिटि गये आप के चरण कमलों को देखि कर ५ हे कृपाल स्वामी जिस जीव पर आप अनुकूल होतेहो उसको त्रिबिधि भय के शूल नहीं ब्यापते हैं अर्थात् जरा जन्म मृत्यु से छूटि जाते हैं ६ देखो मैं राक्षस अतिही सुभावही से अधम शुभ आचरण करना तो कभी जानाही नहीं ७ जिन आप का यह सच्चिदानन्द बिशुद्ध बिज्ञान घनस्वरूप मुनि जनों के ध्यान में भी नहीं आता है तिन स्वामी ने प्रसन्न होकर मेरे को हृदय से लगा लिया ॥ ८ ॥ दोहा ॥ हे कृपालु पुंज स्वामी मेरे तो अतिअमित धन्य भाग्य है जो मैंने ब्रह्मरुद्रादि बंदित आप के चरण कमल अपने नेत्रों भरि कर देखे ॥ १२ ॥

सुनहुसखानिज कहहु सुभाऊ । जान भुशुण्डिशंभुगिरिजाऊ १
जो नर होइ चराचर द्रोही । आवहि सभय शरण तकि मोही २
तजि मद मोह कपट छल नाना । करहु सद्य तेहिसाधुसमाना ३
जननी जनक बंधु सुत दारा । तन धन भवन सुहृद परिवारा ४
सबकी ममता ताग बटोरी । मम पद मनहिं बांधु बर डोरी ५
सम दरशी इच्छा कछु नाहीं । हर्ष शोक भय नहिं मन माहीं ६
अस सज्जन मम उर बश कैसे । लोभी हृदय बसत धन जैसे ७

तुम सारिखे संत प्रिय मोरे । धरहुदेह नहिं आन निहोरे ॥१३॥

ऐसे प्रेम भरे बिभीषण के बचनसुनिकर श्री रामचंद्र बोले सुनो हे सखामैं अपना सुभाव कहता हूं जिस मेरे सुभाव को मेरे परम भक्त काकभुशुण्डि और शंभुदेव महा देव और पार्वती जानते हैं १ कि जो जीव चराचर कहें देव मनुष्य तिर्य्यक् स्थावर चारों प्रकार की सृष्टि का द्रोही होइ और उस पाप के भय से भी मेरे को शरण तकि कर अति भयभीतमेरी शरण आवे २ तन, मन, बचन से मोह, मद, कपट, छल का त्याग करै उसको भी मैं शीघ्रही महात्माओं के समान कर देताहूं अपिचेत्सुदुराचारोभजतेमामनन्यभाक् साधुरेवशमंतव्यसम्यग् व्यवस्थितोहिसः । चिप्रम् भवतिधर्मात्मा शश्वच्छांतिन्निगच्छति कौंत्येयप्रतिजानीहिनमेभक्तप्रणश्यति ३ और जो मेरा अनन्य भक्त माता, पिता, भाई, पुत्र, कलत्र, तन, धन, धाम, स्वजन परिवार की ममताओं के तागों की सुदृढ़ डोरी से अपने मन को मेरे चरणोंही से बांधता है अर्थात् सर्व संबंध मेरेही में मानता है ऐसा सज्जन तो मेरे हृदय में कृपिणधनके समानही बसताहै ४ । ५ । ६ । ७ त्वमेवमाताचपितात्वमेवत्वमेवबंधुश्च सखात्वमेव । त्वमेवविद्याद्रविणंत्वमेव त्वमेवसर्वंममदेवदेव । रामोमातामत्पितारामचंद्रः स्वामीरामोमत्सखारामचंद्रः सर्वस्वंमे रामचंद्रोदयालुर्नान्यंजानेनैवजानेनजाने ॥ गतिर्भर्ताप्रभुःसाक्षीनिवासःशरणंसुहृत् वासुदेवःसर्वमितिसमहात्मासुदुर्लभः॥ योगिनामपिसर्वेषां मद्गतेनांतरात्मनाश्रद्धावान्भजतेयोमांतमेयुक्तस्तमोमतः ७ सुनो हे सखा तुम सारिखे जो मेरे प्यारे भक्त जन हैं उन्हीं की प्रीति के अर्थ मैं देह धारण करता हूं नहीं तो मेरे को देह धारण करने से कौन प्रयोजन आवश्यक है ८ ॥ १३ ॥

सुनु लंकेश सकल गुण तोरे । ताते तुम अतिशय प्रिय मोरे १
सुनत बिभीषण प्रभुकीबानी । नहिं अघात श्रवणामृत सानी २
सुनहु देवसचराचर स्वामी । प्रणत पाल उर अंतर यामी ३
उर कछु प्रथम बासना रही । प्रभु पद प्रीति सरित सोबही ४
अब कृपाल निज भक्ति पावनी । देहुसदा शिव मन भवानी ५
एव मस्तु कहि प्रभुरण धीरा । मांगा तुरत सिंधु कर नीरा ६
यदपि सखा तव इच्छानाहीं । मम दरशन अमोघ जगमाहीं ७
असकहि रामतिलकतेहि सारा । सुमन वृष्टि नभ भईअपारा ८

दो० रावण क्रोध अनल सम स्वास समीर प्रचंड ।
जरत बिभीषण राखेउ दीन्हेंउ राज अखंड ॥
जो संपति शिव रावणहिं दई दिये दश माथ ।

सोई संपदा बिभीषणहिं सकुचि दीन्ह रघुनाथ ॥ १४ ॥

सुनहु लंकेश्वर बिभीषण येसमस्त गुणतेरे में बिद्यमान हैं ताते तुममेरे अत्यन्त प्यारेहो १ ऐसी श्रवणानन्द दायनी रामचन्द्र की बाणी सुनते बिभीषण अघातेहो नहींहैं २।३ बोले किसुनों हेजगत्पति हे प्रणतपाल अंतर्य्यामी आपसे कौन छिपाव है ३ मेरे हृदय में प्रथम जो कुछ लंका के राज्य की बासना रही सोतो आप के प्रेमप्रवाह में बहि गई ४ अबतो हे कृपाल अपनी परम पावनी भक्ति शिवके मनकी भावती मेरेको दानदीजिये ५ एवमस्तु कहिकर रामचन्द्र ने लक्ष्मण से समुद्र के जललाने को कहा और बोले ६ हे सखा यद्यपि तेरी इच्छा तो राज्यकरने की नहीं है परंतु मेरा दर्शन इस संसार में अमोघ कहैं सफल है ७ ताते सुन हेसखा।अहंहत्वादशग्रीवं सप्रहस्तं सहात्मजं राजानत्वांकरिष्यामि सत्यमेतच्छ्रणोतुमे रसातलंवाप्रबिशेत् पातालंवापिरावण: पितामहसकाशंवा नमेजीवतप्रमुच्यते॥ अहंत्वारावणंसंख्य सपुत्रजनबांधमा अयोध्यांनप्रबेश्यामि त्रिभिस्तैभ्रातृभिशपे॥ इतिब्रुवाणंरामस्तु परिष्वज्यबिभीषणं अब्रवाल्लक्ष्मणंप्रीत: समुद्राज्जलमानय॥ इस प्रकार समुद्र से जल मंगाकर जब रामचन्द्र ने बिभीषण को लंका का राज्याभिषेक किया तब तो आकाश से अपार पुष्प बर्षा हुई ८॥ दोहा॥ रावणका क्रोध तो अग्नि के समान और बिभीषण की स्वासा पवन ताते जरते से उसको बचालिया और अखंड राज्य देदिया॥ देखो जो संपदा शिवजीने रावण को बारबार शीश चढ़ाने से दईरहै सोई लंका परम उदार रामचन्द्रने बिभीषण को संकोच समेत देदी॥ १४॥

असप्रभु छांडि भजहिं जे आना। तेनरपशु बिनुपूछ बिषाना १
निजजनजानि ताहिअपनावा। प्रभुसुभावकपिकुल मनभावा २
पुनि सर्वज्ञ सर्ब उर बासी। सर्व रूप सब रहित उदासी ३
बोलेबचन नीतिप्रति पालक। कारण मनुजदनुज कुल घालक ४
सुनुकपीश लंकापति बीरा। केहिबिधि तरिय जलधि गंभीरा ५
संकुल मकर उरग झष जाती। अति अगाध दुस्तर सबभांती ६
कह लंकेश सुनहु रघुनायक। कोटि सिंधु शोषक तव शायक ७
यद्यपि तदपि नीतिअसि गाई। बिनय करियसागर सनजाई ८
दो० प्रभु तुम्हार कुल गुरु जलधि कहिहि उपाय बिचारि।
बिनु प्रयास सागर तरिहि सकल भालु कपि धारि॥ १५॥

शिवजो पार्बती से कहते हैं कि सुनों हे पार्बती जेमूढ़ ऐसे परम उदार सर्बस्व दातार सर्बेश्वर श्रीरामचन्द्रको छोड़िकर अपनी राजसी तामसी प्रकृति के अनुसार

अन्यदेव को भजते हैं उन मनुष्यों को बिना सींग और पूंछ के पशुही जानों कामैस्तैस्तैर्हृतज्ञानाःप्रपद्यन्तेऽन्यदेवतास्तंतंनियममास्थायप्रकृत्यानियतास्वया॥१॥ अपना शरणागत जन जानि जो उसको अपनाइलिया यह स्वामी का सुभाव समस्त कपि कुलके मनमें भाया ॥ २ ॥ फिरितो सर्वज्ञ सर्वांतर यामी सर्वरूप सर्वातीत स्वामी राजनीति प्रति पालक कारण मनुष्य रूप दनुज सूदन स्वयम् हरिनर नाट्य के अनुसार ऐसे बचन बोले ३।४ सुनोतो हे सुग्रीव हे लंकापति बिभीषण अब यह महा गम्भीर समुद्र कैसे तरा जावेगा ५ अब्रवीद्धनुमांश्च सुग्रीवश्चबिभीषणं कथम्सागरमक्षोभ्यं तरामवरुणालयम् यह तो बड़े २ मकर और सर्प और तिमिंगिल इत्यादि अनेक जाति के जल जन्तुओं से भरा है और बड़ाही गहिरा सब भांति से दुस्तर है ६ तबतो बिभीषण बोले सुनो हेरघुनाथ स्वामी यद्यपि आपकातो एकही बाण ऐसे सौ समुद्रों शोषि सकताहै ७ तथापि नीति ऐसा कहती है कि आप समुद्र के शरण जावें एवमुक्तस्तुधर्मात्मा प्रत्युवाचबिभीषणः समुद्रं राघवोराजाशरणंगंतुमर्हति ८ ॥ दोहा ॥ सुनो हेस्वामी समुद्र सगर पुत्रोंका खोदाहुआ आपका कुलगुरु है सागर कहाताहै ऐसा कुछ उपाय विशेष कहैंगा जिससे बिनाही प्रयास समस्त बानर रीछों की सेना पार हो जायगी ॥ १५ ॥

सखा कहेउ तुम नीक उपाई । करब दैव जो होइ सहाई १
मंत्रन यह लक्ष्मण मन भावा । रामबचनसुनिअतिदुखपावा २
नाथ दैव कर कवन भरोसा । शोषिय सिंधु करिय मन रोषा ३
कादर मन कहं एक अधारा । दैव दैव आलसी पुकारा ४
सुनत बिहंसि बोले रघुबीरा । ऐसहि करब धरेहु मन धीरा ५
यहि बिधि प्रभु अनुजहि समुझाई । सिंधु समीप गये रघुराई६
प्रथम प्रणाम कीन्ह प्रभु जाई । बैठे पुनि तट दर्भ डसाई ७
जबहिं बिभीषण प्रभु पहं आये । पाछे रावण दूत पठाये ८
दो० सकल चरित तिन्ह देखेउ धरें कपट कपि देह ।
प्रभु गुण हृदय सराहहिं शरणा गत पर देह ॥ १६ ॥

हेसखा तुमने उपाय बहुत सुंदरकहा करेंगे जोदैव सहायहोगा तौसफल होगा ॥ १ ॥यहमंत्र रामचन्द्र केपुरुषार्थ के योग्य नजानिकर लक्ष्मण के मन में नभायाऔर तदनुकूल रामचन्द्र के भी बचन सुनि कर बड़ा दुख पाया और बोले २ हेनाथदैवका कौन भरोसाहै को जाने सहाय होगा वानहोगा दैवाधीन तो सोहोताहै जो आप समर्थनहो देखो आपको बिचारे सर सरिता बन पर्वत अनावश्यक कालमेंभी मार्गदेते चले आये और महाजड़ समुद्र ऐसे समय में भी आपका मार्गरोके पड़ाहै

किंचित्कोपाग्नि से इसको शोषितीजिये ३ और दैव दैव दैव यह जो आलसी पुकारहे सोतो असमर्थ जीवों के मनको एक यही आधार है ४ ऐसे लक्ष्मण के बचन सुनतेही रामचंद्र हंसिकर बोले धीरधरो न होग तौऐसा होकरैंगे ५ इसप्रकार रामचंद्र भाईको समुझाकर समुद्रके तीरगये ६ प्रथमतौ शिरनवाकर उसको प्रणाम किया और फिरि दर्भासन बिछाकर बैठिगये ७ जासमय बिभीषण लंका से रामचंद्र के पास को चले पीछे से रावण ने शुकनाम दूतको भेजदिया ८ ॥ दोहा ॥ सो उसने अपने साथियों समेत बिभीषण के मिलने और लंका के राज्याभिषेक होने के सब चरित्र बानरों की देह धरे देखा रामचंद्र के गुणों को सब अपने २ हृदय में सराहते हैं कि शरणागत परती इनको बड़ाही स्नेह है ॥ १६ ॥

प्रगट बखानत राम सुभाऊ। अति सप्रेम गा बिसरि दुराऊ १
रिपु के दूत कपिन्ह जबजाने। सकल बांधि कपिपति पहं आने २
कह सुग्रीव सुनहु सब बानर। अंग भंगकरि पठवहु निशिचर ३
सुनि सुग्रीव बचन कपिधाये। बांधि कटक चहुं पास फिराये ४
बहु प्रकार कपि मारन लागे। दीन पुकारत तदपि न त्यागे ५
जो हमार हर नाशा काना। तेहि कौशला धीश की आना ६
सुनि लक्ष्मण सबनिकट बुलाये। दयालागि हंसि तुरतछुड़ाये ७
रावण कर दीजो यह पाती। लक्ष्मण बचन बांचु कुलघाती ८
दो० कहेहु मुखागर मूढ़ सन मम संदेश उदार।
सीता देइ मिलहु नतु आवा काल तुम्हार ॥ १७ ॥

सौशील्य वात्सल्य औदार्य गांभीर्यगुण संपन्न रामचंद्रके सुभावको बड़े प्रेमसमेत प्रगटबखानते बखानतेकपटका दुरावडनसबको बिसर्जन होगया तबतो राक्षसी शरीर प्रत्यक्ष होगये १ जब बानरों ने शत्रु रावण के भेजेदूत जानिलिये तबतो उन सबों को बांधिकर राजा सुग्रीव के पास लेआये २ सुग्रीव ने कहा सुनौ हेबानरो हम को हनुमान का पलटा लेनाहै ताते इनको अंग भंग करके लंकाको भेजि देना चाहिये ३ ऐसे सुग्रीव के बचन सुनते बंदर दौरे और उन सबको बांधिकर सेना के चारों पास फिराया ४ तिस पीछे अनेक भांतिसे बंदर मारने लगे महादीन बिचारे पुकारते भी हैं तौभी राजाकी आज्ञानुसार छोड़ि नहीं सकते ५ जबउन सबोंके नाक कान काटनेही लगे तबतो उन्होंने पुकारि २ कर कहा कि जो कोई हमारे नाक कान काटै उसको कोशलाधीश श्रीरामचंद्रकी आनशपथहै ६ ऐसाखरभर सेनामें सुनकर लक्ष्मणने उनको अपने पास बुलाया और उनको दीनदशा देखकर दयालगी हंसिकर तुरंतही छुड़ादिया ७ एक पत्रिका लिखिकर उनको देदी और कहा कि यह पत्री रावण को

हाथ में देना और कहना किये लक्ष्मणके परम हित बचनहैं इनको चित्त लगाकर बांचिये ८ ॥ दोहा ॥ और अपने मुख सेभी मेरा उदार संदेशा कहना कि सीता को देकर रामचन्द्र से आमिलो नहींतो अपना कालही आया जानो ॥ १७ ॥

तुरत नाइ लक्ष्मण पद माथा। चले दूत बरणत गुणगाथा १
कहत राम यश लंका आये। रावण चरण शीश तिन नाये २
बिहंसि दशानन पूछी बाता। कहसि न शुकआपनि कुशलाता३
पुनि कहु खबरि बिभीषण केरी। जाहि मृत्यु आई अतिनेरी ४
करत राज लंका शठ त्यागी। होइहि यवकर कीट अभागी ५
पुनिकहु भालु कीश कटकाई। कठिन काल प्रेरित चलिआई ६
जिनके जीवन कर रखवारा। भयउ मृदुल चितसिंधु बिचारा७
कहु तपसिन कर बात बहोरी। जिनके हृदय त्रास अतिमोरी ८
दो० की भइ भेट कि फिरि गये श्रवण सुयश सुनि मोर।
कहसि न रिपुदल तेजबल बहुत चकितचिततोर ॥ १८॥

तुरंतही लक्ष्मण के चरणों को प्रणाम करिके दूत रामचंद्र के गुण बखानते हुयेलंका को चले १ रामचंद्रका यश कहते हुयेलंका में आये और रावण के चरणों को शीशनवाये २ हंसि करिके रावण पूछने लगा कि कहो न हे शुक अपनी कुशल ३ फिरि विभीषण के समाचार कहो जिसकी मृत्यु अतिही समीप आ पहुंची है ४ देखो आनन्द से राज्य करते हुये तो मूढ़ ने लंका त्याग दी अब रीछ बानरों के साथ यवअन्न बिशेष का घुना होगा अर्थात् जैसे अन्न के साथ घुन पिस जाता है ऐसेही रीछबानरों के साथ मारा जायगा ५ तिस पीछे रीछ बानरों की सेना को कहो जो महा कठिन काल की प्रेरित चली आती है ६ जिनके प्राणों का रक्षक कुछदिनों के लिये कोमल चित्त बिचारा समुद्र हो रहा है ७ फिरि उन दोनों तपस्वियों की बात तो कहु जिनके हृदय में दिन रात मेरी अति त्रास बनी रहती है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ अरेतेरे को उनसे भेट हुई अथवा मेरा प्रताप सुनि कर कहीं भागि तो नहीं गये तू कुछ शत्रु के तेज बल औ सेना को कहता नहीं है तेरा चित्त चकित सा बहुत मेरे को दीख पड़ता है ॥ १८ ॥

नाथ कृपा करि पूछहु जैसे। मानहु कहा क्रोध तजि तैसे १
मिला जाइजब अनुजतुम्हारा। जातहिं राम तिलककतेहि सारा२
रिपु के दूत हमहिं सुनिकाना। कपिन बांधि दीन्हे दुखनाना ३

श्रवण नासिका काटन लागे । राम शपथ दीन्हीं तब त्यागे ४
पूछेहु नाथ राम कटकाई । बदन कोटि शत बरणि न जाई ५
नानाबरण भालु कपि धारी । बिकटानन बिशाल भय कारी ६
जेहिं पुरदहेउबधेउ सुततोरा । सकलकपिन महंतेहिबलथोरा ७
अमित नामभटकठिनकराला । अमिततेज बल बिपुलबिशाला ८
दो० द्विविद दमयंद नीलनल अंगदादि बिकटासि ।
दधिमुख के हरि कुमुद गय यामवंत बलरासि ॥ १६ ॥

ऐसे कोमल रावण के बचन सुनिकर शुक बोला कि हे नाथ जैसे आप कृपाकरिके पूछते हो तैसेही क्रोध को शांत करिके मेरे कहे को प्रमाण भी जानों दूत लोग स्वामी से झूठ नहीं कहते हैं १ कि जो समय आपका अनुज बिभीषण रामचंद्र से मिला तो जातेही रामचन्द्र ने अपने तीनों भाइयों की शपथ पूर्बक आपके बध की प्रतिज्ञा करिके लंका का राज्याभिषेक उनको करिदिया २ और जब हम सबको बानरों ने आपके दूत सुना तब तो बांधिकर जैसे कुछ हमको दुख दिये सो हमहीं जानते हैं ३ कि हमारे नाक कानही काटे लेते रहें सो तो हम रामचंद्र की आनि करिके बचा लाये हैं ४ और जो आप रामचंद्र की सेना के समाचार पूछते हो सोतो शत कोटि मुख से भी नहीं कहे जाते हैं ४ अनेक बर्णों की रीछ बंदरों की सेना है बिकट जिनके मुख हैं और अति बिशाल भयंकर शरीर हैं ६ जिस एक बन्दर ने आपका नगर जारा और अच्छ को मारा समस्त बानरों में उसी को अल्प बल है ७ अनेक नाम के योधा बड़ेही कठिन कराल है और अमित तेज बल हैं ॥ ८ ॥दोहा॥ द्विविद,मयन्द,नील,नल,अंगद,बिकटास्य,दधिमु, केशरी, कुमुद,गय, और महाबलवान यामवान है ॥ १६ ॥

ये कपि सब सुग्रीव समाना । इन्ह समकोटिन को गननाना १
रामकृपा अतुलित बलतिनहीं । तृणसमान त्रैलोकहिगिनहीं २
अस मैं श्रवण सुना दशकंधर । पद्म अठारह यूथप बन्दर ३
नाथकटकमहं सो कपिनाहीं । जोन तुमहि जीतहि रणमाहीं ४
परम क्रोध मीजहिं दोउहाथा । आयसु नहीं देत रघुनाथा ५
शोषहिं सिन्धुसहित झखब्याला । पूरहिनतुधरिकुधर बिशाला ६
मर्दिगर्दि मिलवहिं दशशीशा । ऐसेबचन कहत सब कीशा ७
गर्जहिं तर्जहिं सहज अशंका । मानहु ग्रसन चहत तव लंका ८

दो० सहज शूरकपि भालु सब पुनिशिर पर श्रीराम ॥
रावण काल कोटि कहं जीति सकहिं संग्राम ॥ २० ॥

ये समस्त बानरतो हेनाथ राजासुग्रीवहीं के समानहैंऔर इन्हके समानजोकोटिन हैं उनको कौन गनिसकताहै १ श्रीरामचन्द्र की कृपा से उनसबको ऐसा अतुलबलहै कि त्रैलोक कोतृणहीके समान गनते हैं २ नेत्रोंसे तो मैं कहांतक देखिपाता कानों से ऐसा सुनाहै कि अठारह पद्म यूथपति बानर हैं ३ हेनाथ सेना भरमें ऐसाबल हीन तो कोईभी बानर नहींहै जो आपकोसंग्राम में जीति न लेवे ४ बड़े क्रोध से दोनों हाथोंको मीजते हैं और कहतेहैं किहम क्या करैं रामचन्द्र हमको आज्ञाहीं नहीं देते हैं ५ जो आज्ञा पावैं तो इस क्षुद्र समुद्र को जल जीवों समेत पीजावें नहींतो बड़े२ पर्वतों से पाटि देवें ६ और रावणको पुत्र बांधवसेना समेतमीजि कर धूरिमें मिला देवें इस प्रकार के बचन सबके सब बानर कहि रहेहैं ७ गर्जते हैं औरतर्जतेहैंस्वभावही से बड़े निडरहैंमानों अभी लंकाकोग्रसा चाहते हैं ८॥ दोहा॥ एक तो स्वभावही से समस्त बानर और रीछ बड़ेही शूरहैं दूसरे उनके शिरपर श्रीराम चन्द्र रक्षकहैं ताते हे रावण तुम्हारी तो कौन गनती है कोटि काल कोभी तो संग्राम में जीति सकते हैं ॥ २० ॥

रामतेज बल बुधि बिपुलाई । शेष सहस शत सकहिंन गाई १
सकशर एकशोषि शत सागर । तव भ्रातहि पूछेउ नयनागर २
तासु बचन सुनि सागर पाहीं । मांगत पंथ कृपा मन माहीं ३
सुनतबचनबिहंसा दशशीशा । जोअसि मतिसहायकृत कीशा ४
सहज भीरु कर बचन दृढ़ाई । सागर सन ठानी मचलाई ५
मूढ़मृखा कत करसि बड़ाई । रिपु बल बुद्धि थाह मैं पाई ६
सुनि खल बचन दूतरिसबाढ़ी । समयबिचारि पत्रिका काढ़ी ७
बिहंसि बामकरलीन्हीं रावन । सचिवबोलितेहि लागबंचावन ८

दो० बातन मनहि रिझाइ शठ जनिघालसि कुलखीश ।
राम बिरोध न उबरसि शरण गये अजईश ॥ २१ ॥

और जो आप राम का बलाबल पूछतेहो सो उनको तो तेज और बलबुद्धि की बिपुलता को शत सहस्र शेष भी नहीं कहि सकते हैं मेरी कौन सामर्थ्य है १ कि जिनका एकही बाण सौ समुद्रों को शोषि सकता है परंतु नीति निपुण श्रीरामचन्द्र ने आप के अनुज बिभीषण से उसके तरने का मंत्र पूछा उनके मंत्रके अनुसार समुद्र से मार्ग मांगि रहेहैं परम कृपालु तासे उसको शोषा नहीं चाहते हैं २३ ऐसे

दूतके बचन सुनतेही रावण हंसा और बोला जब ऐसीबड़ी बुद्धि है तबतो बंदरों को सहाय लिया है जोकभी किसीने न देखा न सुना ४ अरेमूढ़ क्यों मृषा बड़ाई करताहै शत्रु के बल और बुद्धि की थाह में पागया ६ अतिहीं डरपो के बिभीषण के बचनोंको मानकर समुद्रसे अबोध बालक की नाईं मचले हैं ७ अरे मूढ़ चुपरहु मृषा बड़ाई क्यों करता है शत्रु के बल और बुद्धि दोनों की थाह में इतने हीमें पागया ६ ऐसे दुष्ट के बचन सुनकर दूत को रिस हुई और समय जानिकर लक्ष्मण की पत्रिका निकासी ७ हंसिकर रावण ने उसको बांये हाथसे लियाऔर मंत्रियों को बुलाकर बंचवाने लगा ८ ॥ दोहा ॥ लिखाहै कि अरेमूढ़ तू बातोंहीसे अपनेमनको प्रसन्न कर कुलका नाश मतकरदे रामके बिरोध से ब्रह्मा शिव के शरण गये परभी नहीं बचेगा ब्रह्मास्वयम्भूश्चतुराननोबारुद्रस्त्रिनेत्रस्त्रिपुरांतकोबा इन्द्रोमहेंद्रःसुरनाय कोबा त्रातुंनशक्योयुधिरामवध्यम् ॥ २१ ॥

सुनतसभय मनमुख मुसुकाई । कहत दशानन सबहि सुनाई १
भूमि पराकर गहत अकाशा । लघु तापस करबाक बिलाशा २
सुनहु बचनमम परिहरि क्रोधा । नाथ रामसन तजहु बिरोधा ३
जनक सुता रघुनाथहि दीजै । इतना कहा मोर प्रभु कीजै ४
जब तेहिं कहा देन बैदेही । चरण प्रहार कीन्ह शठ तेही ५
नाइ चरण शिर चला सो तहां । कृपा सिन्धु रघुनायकजहां ६
करि प्रणाम निज कथा सुनाई । रामकृपा आपनि गति पाई ७
बन्दि राम पद बारहिं बारा । पुनि निज आश्रमकहँ पगुधारा ८

दो० बिनय न मानत जलधि जड़ गये तीनि दिन बीति ।
बोलेराम सकोप तब भय बिन होइ न प्रीति ॥ २२ ॥

श्री महलक्ष्मण के यथार्थ लिखे को सुनतेही मन में तो सभीत होही गया परंतु ऊपर मन मुख से मुसुका कर सबको सुनाता हुआ यह बचन रावण बोला १ अरे इस छोटे तपस्वी का कथी बिलास तो पृथ्वी पर पराही हाथों से आकाश कोगहे लेता है २ तबतो दूत बोला मेरे बचन आप क्रोध को निवारण करिके सुनो हे नाथ राम से तो बिरोध का अपत्य नहीं करो ३ जनक तनया सीता आप रामचन्द्र को दे दीजिये इतना मेराही कहना कीजये ४ जभी उसने सीता के देने कोकहा तबतो दुष्ट रावण ने उसके लात मारी और निकासि दिया ५ दूत बिभीषण कीनाईं रावण को शिर नाइ रामही के पास को चला ६ जाय कर रामचन्द्र के चरणों को प्रणाम किया और सब अपनी दुर्दशा कही रामचंद्र की कृपासे अपनी पूर्व योनि मेंप्राप्त हो गया ७ अगस्त्य मुनिके शाप से हे पार्वती राक्षस हो गया रहे बड़ा ज्ञानी

मुनिरहा बारं बार रामचंद्र के चरणों को प्रणाम करिके फिरि अपने आश्रम कोचला गया ॥ ८ ॥ दोहा ॥ महा जड़ समुद्रभला बिनती कब मानत है रामचंद्र को कृपालु ताके मारे तीनि दिन निरशन व्रत करते बीते जब जानि लिया कि यह मूढ़ दण्ड दिये बिना नहीं चेतेगा तबतो बड़ेकोपसे रामचंद्रबोलेकि नीचों कोभयबिना ताप्रीति होतीही नहीं है ॥ २२ ॥

लक्ष्मण बाण शरासन आनू । शोषउँ बारिधि बिशिष कृशानू १
शठसनबिनयकुटिल सनप्रीती । सहजकृपिण सनसुन्दरनीती २
ममतारतसन ज्ञान कहानी । अति लोभीसन बिरति बखानी ३
क्रोधिहि सम कामिहि हरि कथा । ऊसर बीज बये फलयथा ४
असकहि रघुपति चाप चढ़ावा । यह मत लक्ष्मणके मनभावा ५
सन्धानेउ प्रभु बिशिषकराला । उठी उदधिउर अन्तरज्वाला ६
मकर उरग झष गण अकुलाने । जरतजन्तुजल निधिजबजाने ७
कनक थार भरि मणि गण नाना । बिप्ररूप आयउतजिमाना ८
दो० काटेहि पर कदली फरै कोटि यतन कोउसींच ।
बिनय न मान खगेश सुनु डाटेहि पै नव नीच ॥ २३ ॥

चापमानयसौमित्रे शरांश्च शी विषोपमान् समुद्रं शोषयिष्यामिपद्भ्यांयांतिप्लवगमाः अर्थात् हे लक्ष्मण लाउ तो मेरा शार्ङ्ग धनुष और महा विषधरों के समान प्रलयाग्निबाण मैं उनकी अग्नि से इस मूढ़ समुद्र को शोषूंगा सब मेरे बानर पैरोंहीं चले जायंगे १ क्योंकि शठों से बिनती करना कुटिलोंसे प्रीतिकरना जन्म कृपिणसे सुन्दर नीति कहना ममता मग्न से ज्ञान कथना महा लोभी से बैराग्य बखानना क्रोधीको समशांति सिखाना कामी पुरुष को भगवत्कथा उपदेश करना ऊसर में बीजबोने के समान निष्फल होता है २ । ३ । ४ जब लक्ष्मण से धनुष बाण मांगा यह मत रामचंद्र का उनको बहुत भाया और धनुष बाण ला दिया और रामचंद्र ने धनुष को चढ़ाया ५ जभी रामचंद्र ने धनुष पर बाण संधान किया तभी समुद्र के हृदय से महा ज्वाला उठी ६ उस ज्वाला से जल संतप्त हुआ और जल जन्तु अकुलाने ७ जब समुद्र ने उनको उस अग्नि से जरते जाना तबतो तुरंतही सुवर्ण के थार में नाना प्रकार के दिव्य मणि गण भेट भरिकर जल पति महादेव बरुण बिप्रवेष अमानी होकर बरुण लय से रामचंद्र के शरण आया ॥ ८ ॥ दोहा ॥ देखो कदलीजो केलाहैसो काटेहीसे फरताहै कोइ कोटि यतनसे उसको सींचाहोकरै इसी प्रकार हे गरुड़ बिनती को नीच नहीं मानता है डाटेही से नवताहै ॥ २३ ॥

सभय सिंधु पद गहि प्रभु केरे । क्षमहु नाथ सब अवगुण मेरे १
गगनसमीर अनलजल धरणी । इनकी नाथसहज जड़करणी २
तव प्रेरित माया उपजाये । सृष्टि हेतु सब ग्रंथन गाये ३
प्रभुआयसु जाकहंजसअहही । सोतेहि भांति रहैसुखलहही ४
प्रभुभलकीन्हमोहिशिखदीन्ही । मर्य्यादापुनितुम्हरिहिकीन्ही ५
ढोल गंवार शूद्र पशु नारी । सकल ताड़ना के अधिकारी ६
प्रभु प्रताप मैं जाउं सुखाई । उतरिहि कटक न मोरिबड़ाई ७
प्रभु आज्ञा अपेल श्रुति गाई । करेहु बेगि जो तुमहि सुहाई ८
दो० सुनत बिनीत बचन अति कह कृपाल मुसुकाइ ।
जेहि बिधि उतरै कपि कटक तात सो कहहु उपाइ ॥ २४

अतिही डर डराते समुद्र ने आकर रामचंद्रके चरण पकरि लिये और बोला हे नाथ मेरे सब अपराधोंको आप क्षमा कीजिये १ हम तो आकाश पवन अग्नि जल पृथ्वी पांच तत्व हैं हमारी स्वभावही ते जड़ करणी हैं २ आपहीकी आज्ञासे आप की मायाने हमें उपजाये हैं और समस्त ग्रन्थोंमें हम पांचों सृष्टिके हेतुही कहे हैं ३ हे स्वामी आपका जिसको जैसा आयसु है सो उसी भांति रहता है और सुख पाता है ४ आपने भलाकिया जो मेरेको शिक्षा दी ॥ शाशतिकरि पुनि करहिं पसाऊ नाथ प्रभुन कर यही सुभाऊ ॥ परंतु मर्य्यादा भी मेरी आपहीकी की हुई है ५ ढोल गंवार शूद्र पशु और नारी येतो सब ताड़नाही के अधिकारी होते हैं ६ आप के प्रताप ते मैं अभी सुखाय जाऊंगा और सेना आपकी उतरि जायगी परंतु जो आप ने मेरे को बड़ाई दीहै सो नहीं रहैगी ७ और आपकी आज्ञा वेदों ने अपेल कहैं अप्रतिहत कही है तातें जो आप को रुचै सो बेगिही कीजिये ॥ ८ ॥ दोहा ॥ ऐसे अति नम्र समुद्र के बचन सुनतेही अति कृपाल रामचंद्र स्वामीने मुसुकाइ कर कहा हे तात जैसे हमारे बानरों का कटक उतरि जावे सो उपाय आप बताइये हमको तुम्हारे शोषनेसें कुछ प्रयोजन नहीं है ॥ २४ ॥

नाथ नील नल कपि दोउभाई । लरिकाईं ऋषि आशिषपाई १
तिनके परश किये गिरि भारे । तरिहैं जलधि प्रतापतुम्हारे २
मैंपुनि उर धरि प्रभु प्रभुताई । करिहौं बल अनुमान सहाई ३
यहिबिधिनाथपयोधिबंधाइय । जेहियहसुयशलोकतिहुंगाइय ४
यहि शर मम उत्तरतट बासी । हनहु नाथ खल गणअघरासी ५

सुनि कृपाल सागर मन पीरा । तुरतहि हरी राम रणधीरा ६
देखियामबल अतुलित भारी । हर्षि पयोनिधि भयउ सुखारी ७
सकलचरितकहिप्रभुहिसुनायउ । चरणबंदिपाथोधिसिधायउ ८
छं० निजभवनगवनेउसिंधुश्रीरघुपतिहियहमतभायऊ ।
यहचरितकलिमलहरयथामतिदासतुलसीगायऊ ॥
सुखभवनसंशयशमनदमनबिषादरघुपतिगुणगना ।
तजिसकलआशभरोसगावहिंसुनहिंसज्जनशुचिमना ॥
दो० सकल सुमंगलदायक रघुनायक गुण गान ।
सादर सुनहिं ते तरहिं भव सिंधु बिना जलयान ॥ २५

जब रामचंद्र ने सेनाके पार जानेका उपाय पूछा तबतो समुद्र बोला हे नाथ आपकी सेना में नलनील नाम वानर दोनों भाई हैं उन्होंने बालकपन में ऋषियों से आशीर्बाद पायाहै १ उनके हाथोंके स्पर्श करनेसे भारी भारी पर्वतभी आप के प्रतापसे जल पर तरेंगे २ और मैं भी आपकी प्रभुताई को हृदय में धारण करके बलके अनुमान सहाय करूंगा ३ इसप्रकार हे नाथ इस जल मय ममलाय समुद्र पर सेतु बंधाइये जिससे यह सुन्दर अनूपमयशतीनों लोक में गाया जावे ४ इस अपने संधाने हुये बाणसे मेरे उत्तर तट वासी दुष्ट पापियों को नाश कीजिये ५ इस प्रकार कृपाल राम स्वामी ने समुद्रके मनकी पीर सुनिकर तुरंतही नाश करदी ६ ऐसा अतोल भारी रामका बल देखिकर समुद्र हर्षित होगया ७ सबउन खलोंका बृत्तांत रामचन्द्रको सुनाया और प्रणाम करिके अपने घर बरुणालय को चला गया ॥ ८ ॥ छन्द ॥ श्रीरामचन्द्रको यहमंत्र बहुत भाया यह कलिमल हरण श्रीरामयश तुलसी-दासने यथा मति गाया सुखके सदन संशयोंके शमन बिषादोंके दमन श्रीरामचंद्रके गुण गणोंहीको और सब आस भरोसोंको छोड़ि कर बिशुद्ध मन सज्जन गाते सुनते हैं ॥ दोहा ॥ ऐसे सकल सुमंगल दायक रघुनायकके गुण गानको जो कोई सादर सुनते हैं ते संसार सागर को बिनाही जलयान पार होजाते हैं ॥ २५ ॥

इति श्री शुकदेवकृत मानसहंसभूषणेरामचरित्रमानसे
सुन्दरकांडे पंचमस्सोपानस्समाप्तः ॥

श्रीगणेशायनमः

अथतुलसीदासकृतरामायणलंकाकांडसटीकलिख्यते

श्लो० काकुत्स्थंपुरषोत्तमंबलनिधिंवीरंधनुर्धारिणं ।
कालव्यालकरालकालमजितंदेवारिदर्पापहं ॥
साधूनामभयप्रदंसुरहितंसद्धर्मसंस्थापकं ।
वंदेऽहंकलिकल्मषघ्नचरितंरामंदशास्यांतकं ॥

दो० लोभ प्रहस्त सुरेंद्र जित क्रोध कुंभ श्रुति काम ।
महा मोह रावण दलन जयतु ज्ञान घन राम ॥

यह छठा युद्धकांड अति रोचकहै इसे बद्धमुमुक्षु जीवनमुक्त तीनौप्रकार के श्रोता बड़ीश्रद्धासे श्रवण करतेहैं यह राम रावणका सर्वोपरि संग्राम त्रिकूटाचल पर्वत पर हुआहै इसकारण गुसाईंजीने इसको चौपाइयोंकी तीनि चालीशियों में निर्माण किया है चालीश चालीश चौपाइयों पीछे छन्द कहेहैं तीसरी चालीशी में जोचौपाई प्रति छन्दकहेहैं सोराम रावणके संग्राम औरसीता मिलाप और देवताओंकी स्तुतिके कहे हैं प्रारंभमें समुद्र पर सेतुबंधन, फिरि पारजाना, निशाचरोंका अंगभंग, रावणका घब-राहट मंदोदरी का समझाना प्रहस्तका मंत्र रावण का मानभंग, मंदोदरी के मुखसे विराट दर्शाना, अंगद बसीठी, बानरोंकी चढ़ाई, राक्षसों का संहार, रावणसभा, मा-ल्यवन्तमंत्र, मेघनाद लक्ष्मणका युद्ध, लक्ष्मणकी मूर्छा, हनुमानकासंजीवनी केलानेको जाना, कालनेमि कावध, द्रोणाचल काउपाटन, भरत हनुमान समागम, रामचन्द्र का बिलाप, संजीवनीसे लक्ष्मण काजी उठना, कुंभकर्णका जागना, संग्राम करना औरमरन-रावणका बिलाप, मेघनाद काघोर संग्राम, नागपाश बंधन, जामवंतद्वारा उसकी परा-जय गरुड़ द्वारा नागपाश मोचन, मेघनाद की यज्ञ, लक्ष्मणके हाथउसकाबध, रावण काबिलाप, रावणकी चढ़ाई, लक्ष्मण द्वारा पराजय, रावणकी यज्ञका बिध्वंस राम रावण संग्राम जामवंत द्वारा रावणकी पराजय त्रिजटा द्वारा सीताको समाचार, ज्ञान फिरिराम रावणका अपार युद्ध, रावणबध, मंदोदरी बिलाप, रावणकी मृतक क्रिया बिभीषणका राज्याभिषेक सीताका बुलावा अग्नि प्रवेश, सीता राम बिलाप देवास्तुति

दशरथागमन, सेनाजीवन, शिवास्तुति, अयोध्या, प्रयाग दंडक चित्रकूटप्रयागागमन अंतमें गुह निषादमिलापहै ॥

छं० रामंकामारिसेब्यंभवभयहरणंकालमत्तेभसिंहं
योगींद्रंज्ञानगम्यंगुणनिधिमजितंनिर्गुणंनिर्बिकारं
मायातीतंसुरेशंखलबधनिरतंब्रह्मबृंदैकदेवं
बंदेकुंदावदातंसरसिजनयनंदेवमुर्बीशरूपं १
शंखेद्वाभमतीवसुन्दरतनुशार्दूलचर्माम्बरं
कालब्यालकरालभूषणधरंगंगाशशांकप्रियं
काशीशंकलिकल्मषौघशमनंकल्याणकल्पद्रुमं
नौमीड्यंगिरिजापतिंगुणनिधिंश्रीशंकरंकामहं २

दो० लव निमेष परमाणु युग बर्ष कल्प शरचंड ।
भजसि नमन तेहि रामकहं काल जासु कोदंड ॥

सो० सिंधु बचन सुनि राम सचिव बोलि प्रभु अस कहेउ
अब बिलंब केहि काम करहु सेतु उतरै कटक
सुनहु भानुकुलकेतु जामवंत कर जोरि कह
नाथ नाम तवसेतु नर चढ़ि भवसागर तरहिं

लंकाकांडके प्रारंभमें तुलसीदासजी श्रीरामचन्द्रको अभिबंदन करतेहैं जोश्रीरामचन्द्र कामारि कहैं कामकेहंता श्रीशिवजी करिकै भी सदासेव्य हैं और जन्म मरण की भय केहर्त्ता हैं कालमत्त गयन्दको सिंहहैं योगीश्वरेश्वरहैं ज्ञानसे जाने जातेहैं समस्त कल्याण गुणोंके सागर अपराजित हैं मोहादि मायक गुणोंसे निर्गुण और निर्बिकार हैं मायातीत कहैं अबिद्यालेश बर्जितहैं ब्रह्मादि देवेश्वरोंके भी ईश्वरहैं खलकहैं देवश्रुतिसंतबिरोधियोंके बधमें सदा निरतहैं और ब्रह्म कुलको तोएकही देवहैं कुन्दके समान उज्वल कमलसे नेत्र हैं तिनराजराजेन्द्र रूप अपने इष्टदेवको अभिबंदन करताहूं १ अबग्रंथके मुख्याचार्य्य श्री शिवजी को प्रणाम करतेहैं जो श्री शिवजी स्वेतशंख चन्द्रमाके समान अतिही सुन्दर गौरवर्ण तनहैं शार्दूलके चर्म को धारण कियेहैं कालकेभी कालहैं मुंडमालादि कराल भूषणहैं गंगा और चन्द्रमा अति प्रियहैं श्री काशीपुरी के स्वामीहैं समस्त पापोंके नाश कर्त्ता हैं कल्याणों के कल्पवृक्ष हैं तिनईड्य पार्बतीकेपति सकलगुणनिधान,को मेरा प्रणाम है ॥ दोहा ॥ लव निमेष परमअनुयुग बर्षकल्प पर्य्यन्त । जोकालके छोटे बड़े अंगहैं सोई तो जिनराम स्वामी

के परम प्रचंड बाण हैं जिन बाणों के प्रहार से निरंतर सब जीवों की आयु को क्षीण करते हैं रे मंद मनतिस रामको क्यों नहीं भजता है जिनका महाकराल कालही धनुषहै ॥ सोरठा ॥ समुद्रके बचन सुनिकर रामचन्द्र ने मंत्रियों को बुलाकर कहा कि बिलंब करने का अब कौन कामहै सेतुकरो सेना पार जावें यह सुनिकर जामवंतने हाथ जोरिकर कहा श्री महाराज आपका तो नामही इतना बड़ा सेतुहै जिस पर चढ़िकर मनुष्य अति अपार संसार सागर को तरते हैं

यह लघुजलधि तरत कत बारा । अससुनिपुनि कहपवनकुमारा १
प्रभु प्रताप बड़वानल भारी । शोषेउ प्रथम पयोनिधि बारी २
तव रिपुनारि रुदन जलधारा । भरेउ बहोरि भयउ तिहिं खारा ३
सुनि अति उक्ति पवनसुत केरी । हर्षे रघुपति कपितन हेरी ४
जामवंत बोले दोउ भाई । नल नीलहि सब कथा सुनाई ५
बोलिलिये कपि निकर बहोरी । सकल सुनहु बिनती यक मोरी ६
धावहु मर्कट भालु बरूथा । आनहु बिटप गिरिन के यूथा ७
सुनि कपि भालु चले करि हूहा । जय रघुवीर प्रताप समूहा ८

दो० अतिउतंग तरु शैल गण लीलहिं लेहिं उठाइ ।
आनि देहिं नल नील कहं रचहिं ते सेतु बनाइ ॥ १ ॥

सो जब कि आप के नाम रूपी सेतुपर चढ़िकर जीव संसारसागरही के पार हो जाते हैं तो हम आप के सेवकों को उसी सेतु पर चढ़ि कर इस अति अल्प समुद्र के तरने में भला क्या ढील होगी दूसरे सेतु बांधने की कौन आवश्यकता है ऐसी जामवंत की उक्ति सुनिकर महानाटके प्रवीण पवनपुत्र हनुमान बोले १ सुनो हे स्वामी जब से आपने कोपकरिके लंका को पयान किया है तभी से आप के प्रताप की महा भारी बड़वानल ने इस समुद्र के समस्त जलको पहिलेही से सुखादिया है और आप के बैरियों की नारी उन को मृतक तुल्य जानिकर पहिलेही से रो बैठी हैं कि उनके रोदन की जलधारा से यह फिरिकर भरि गया है इसी से खारा है २। ३ ऐसी अति उक्ति पवनपुत्र की सुनिकर श्रीरामचन्द्र हनुमानकी ओर देखि कर हंसदिये ४ फिरि तो जामवंत ने नल नील दोनों भाइयों को बुलाकर उन को सब कथा सुना दी कि समुद्र कहि गया है ऋषियों के बरदान से तुम्हारे छुये हुये पाषाण जल पर तरते हैं तुम सेतु की रचना करो ५ तो पीछे सब बानरों को बुलाकर कहा कि मेरी बिनती सब सुनो कि तुम बानर और रीछ सब के सब धावाकरो औ जहां तक पर्वत औ वृक्ष मिलें उपाटि लाओ ६। ७ इतना सुनतेही रीछ और बानर जय

राम जयराम ऐसा हू हा शब्दकरिके जहां तहां को दौरै ॥ ८ ॥ दोहा ॥ अति ऊंचे ऊंचे बृक्ष और पर्वतों के समूह खेलही से उठाइ लेते हैं और नलनील को लाकर देते हैं सो रचिरचि कर सेतु बनाते जाते हैं ॥ १ ॥

शैल बिशाल आनि कपि देहीं । कंदुकइवनल नील सो लेहीं १
बांधिसेतु अति सुदृढ़बनावा । देखि कृपानिधि के मन भावा २
सेतु बंध ढिगचढ़ि रघुराई । चितव कृपाल सिंधु बहु ताई ३
देखन कहं प्रभु करुणाकंदा । प्रगट भये बहु जलचर वृंदा ४
नाना मकर नक्रझष ब्याला । शतयोजन तनु परम बिशाला ५
ऐसेहु एक तिनहिं धरिखाहीं । एकनि के डर एक डराहीं ६
तिनकी ओट न देखिय बारी । मग्नभये हरिरूप निहारी ७
चला कटक प्रभु आयशु पाई । को कहि सककपिदल बिपुलाई ८
दो० सेतुबांधिभइभीर अति कपिनभ पंथउड़ाहिं ।
अपरजलचरन ऊपरचढ़िचढ़ि पारहिजाहिं ॥ २ ॥

जो बड़े बड़े पर्वत रीछ वानर ला लाकर ऊपर से देते हैं उन को गेंदों के समान नलनील लैलै लेतेहैं १ इस प्रकार पांच दिन में इस क्रमसे कि पहिलेदिन१४ योजन दूसरे दिन २० योजन तीसरे दिन २१ योजन चौथे दिन २२ योजन पांचवें दिन २३ योजन बांधिकर सुन्दर सुढार अटूट बनादिया जो देखतेही रामचन्द्र के मनमें भागया २ तब तो सेतुबंध के किनारे पर चढ़ि कर श्रीरामचन्द्र समुद्र की बहुताई को देखने लगे ३ करुणा मूल श्री रामचन्द्र की अति कमनीय शोभा के देखने को अपारजलजंतु प्रगट हुये ४ नाना कहैं जाति जाति केमगर नाके मछली सर्प जिन के सौ२ योजन के बड़े बड़े शरीर हैं ५ और ऐसे भी हैं जो उन को पकरि कर खाजाते हैं औरते भी एकों के डर से डरते हैं ६ उनकी ओटसे समुद्र का जल नहीं दीखिपरता है राम के चित्तापहारक रूपको देखिकर मग्न हो गये हैं ७ अब तो रामचंन्द्र की आज्ञापाकर बानरों का अपार दलपार को चला जिस के मानापार का कौन पार पाता है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जब सेतुबंध पर बड़ी भीरहोगई कि जाने को मार्ग ही न मिले तबतोबानर आकाश मार्ग में उड़ने लगे और अनेक वानर जलचरों पर चढ़िचढ़ि कर पार जाने लगे ॥ २ ॥

अस कौतुक बिलोकि दोउभाई । बिहंसि चले कृपालुरघुराई १
सिंधु पार प्रभु डेरा कीन्हा । सकलकपिन कहं आयशुदीन्हा २

खाहुजायफल फूल सोहाये। सुनत भालु कपि जहंतहंधाये ३
खाहिंमधुरफलबिटपहलावहिं। लंकासन्मुखशिखरचलावहिं ४
जहंकहुंफिरतनिशाचरपावहिं। घेरिसकलतेहिंनाचनचावहिं ५
दशननकाटहिं नासाकाना। कह प्रभु सुयश देहिं तबजाना ६
जिनकर नाशाकान निपाता। तिन रावणहि कहीसब बाता ७
सुनत श्रवण सागर बंधाना। दशमुख बोलि उठा अकुलाना ८
दो० बांधेउ बन निधि नीर निधि जलधि सिंधुबारीश।
सत्य तोयनिधि पंकनिधि उदधि पयोधि नदीश॥ ३

ऐसा सुन्दर कौतुक परम कृपालु दोनों भाई देखकर बड़े प्रसन्न मन हंसि कर समुद्र पार को पयान करतेहुये १ समुद्र पार जाकर सुबेलाचल पर्वत पर स्वामी ने डेरा किया और समस्त क्षुधित सेना को आज्ञा दिया कि जाकर सुन्दर फल फूल खाओ इतना सुनतेही रीछ वानर जहां तहां को दौरे २।३ मीठे२ फलतो खाते हैं और जातिके स्वभावते वृक्षों को हलाते हैं लंका की ओर पर्वतों के शिखर चलाते हैं ४ जहां कहीं राक्षसों को चलता फिरता पातेहैं उनको घेरिकर बुरेनाच नचावते हैं ५ दांतोंसे उनके नाककान काटिलेतेहैं जब रामचन्द्र का सुयश बखानते हैं तब उनको जाने देते हैं ६ जिन राक्षसों के नाक कान काटे गये उन नकटों बूचों ने सूर्पनखा की नाईं रावण से सेतुबन्धन और सेना का आगमन जाकहा ७ समुद्रपर सेतु का बन्धन सुनतेही रावण घबरा इ गया और व्याकुलता के मारे दशहूं मुखसे दश नाम समुद्रकेलेकर बोला ८ ॥ दोहा॥ एक मुख से कहा क्या बननिधि बांध लिया दूसरे मुख से कहा क्या नीरनिधि बांधि लिया तीसरे से कहा क्या जलधि बांधि लिया चौथेसे कहा क्या सिंधुबांधि लिया पांचवें से कहा क्या बारीश बांधि लिया छठवें से कहा क्या सत्यतोयनिधि बांधि लिया सातवें से कहा क्या पंकनिधि बांधि लियआठवें से कहा क्या उदधि बांधिलिया नवें से कहा क्या पयोधि बांधि लिया दशवें से कहा क्या नदीश बांधिलिया ॥ ३ ॥

व्याकुलतानिजसमुझिबहोरी। बिहंसिचलागृहकरिमतिभोरी १
मन्दोदरी सुना प्रभु आये। कौतुकही पाथोधि बंधाये २
कर गहि पतिहि भवन निजआनी। बोली परम मनोहर बानी ३
चरण नाइ शिर अंचल रोपा। सुनहु बचन पिय परिहरि कोपा ४
नाथ बैर कीजिय ताहीसों। बुधि बल जीति सकिय जाही सों ५

तुमहिं रघुपतिहिं अंतर कैसा । खलु खद्योत दिवाकर जैसा ६
अतिबल मधुकैट भजिन मारे । महाबली दिति सुत संहारे ७
जिहिं बलिबांधिसहसभुजमारा । सोइअवतरेउहरणमहिभारा ८
दो० रामहि सौंपिय जानकी नाइकमल पदमाथ ।
सुतकहं राज्य समर्पि बन जाइ भजिय रघुनाथ ॥ ४ ॥

फिरितो अपनी अति व्याकुलता जानकर उसको सुनी अनसुनीसी करके हंसिकर घर को चलागया १ मंदोदरी ने सेतुबंधन और रामचन्द्रका पार आजाना दूतियों के द्वारा सुना इस लिये रावणको हाथ पकरि कर अपने एकांत घरमें लाकर बड़ी कोमल मनोहरवाणीसे बोली २ । ३ पतिके चरणोंको शीश नवाय अंचल पसारि अर्थात् अहिवात दान मांगती हुई बोली किहेनाथ कोप को छोड़िकर मेरे वचन सुनिये ४ हे नाथ बैर तो उसके साथ कीजिये जिसको बलसे अथवा बुद्धि से जीति लीजिये ५ तुम और राममें तो कैसा अंतरहै जैसा परम लघु जन्तु जुगनू और प्रभाकर सूर्य्य में होता है ६ जिस विष्णु भगवानने हयग्रीव होकर अति बली मधुकैट-भादि असुरोंको मारा और बाराह नृसिंह होकर महा बली दिति के पुत्र हिरण्याक्ष और हिरण्यकशिपु को संहारा ७ फिरि जिसने बामन त्रिविक्रम होकर राजा बलि को बांधा और परशुराम होकर सहस्रबाहु समेत हयहय कुल का नाशकरि दिया सोई विष्णु भगवान पृथ्वी के भार उतारने को या समय श्री रामरूप होकर अवतरे हैं ८ ॥ दोहा ॥ तातें रामचन्द्र कोतो सीता सौंपि दीजिये उनके चरणकमलों को शीशनवायकर और मेघनाद को राज्यदेकर हम तुम बनमें जाकर रामको भजें ॥ ४ ॥

नाथ दीनदयाल रघुराई । बाघहु सन्मुख गये न खाई १
चाहिय करन सोसब करिबीते । तुम सुर असुर चराचर जीते २
संत कहहिं असनीति दशानन । चौथेपनहिं जाहिं नृप कानन ३
तासु भजन कीजै तह भर्ता । जो कर्ता पालक संहर्ता ४
सोइ रघुवीर प्रणत अनुरागी । भजहु नाथ ममता मद त्यागी ५
मुनिवरयतनकरहिंजेहिं लागी । भूपराज तजि होहिं बिरागी ६
सोइ कोशलाधीश रघुराया । आयउ करन तोहिंपर दाया ७
जौंपिय मानहु मोरशिखावन । होइसुयश तिहु पुर अतिपावन ८
दो० असकहि लोचन वारि भरि गहि पद कंपित गात ।
नाथ भजहु रघुनाथ पद अचल होइ अहिवात ॥ ५ ॥

हेनाथ श्रीरामचंद्र तो बडे दीनदयालहैं शरणगये परतो जो बावसमान रोषीहोता है सोभी नहीं खालेता है अर्थात् चमाही करता है १ तुमको तो जो कुछ करना चाहिये सो आप सब करिचुकेहो सुर, असुर, चराचर सबको जानिचुकेहो २ संतजनोंने राजनीति में ऐसा कहाहै कि चौथेपन में राजापुत्रों को राज्य देकर वन में जाकर भगवदर्थ तपकरै ३ ताते हम तुमको तो अब उस ईश्वरका भजन करना उचित है जो इस जगत् का कर्ता, पालक और हर्ता है ४ सो जगज्जन्मादि कारण तो ये भक्तवत्सल श्रीरामचंद्रही हैं ताते हेनाथ समस्तममता और मदको छोड़कर इन्हीं रामको भजो ५ देखो हेनाथनारद, शुक्र, वाल्मीकि, पराशरादि मुनिबरइनकी प्राप्ति केलिये यत्न करते हैं और बड़े२ राजा राज्यको छोड़िकर विरागी होजाते हैं ६ तुम अपने भाग्यको सराहो किसोई कोशलाधीश श्रीरामचंद्र घरही बैठे तुम्हारे ऊपर कृपा करने को आयेहैं ७ हेनाथ जो आप मेरे इस सिखावन को मानेंगे तो तुम्हारा जो अपयश इस संसार मेंहो रहा है सो सबदूर होकर परम पावन सुयश तीनलोक में ध्रुव प्रह्लाद बलिके समान सदा को होजाइगा ८ ऐसे कहिकर नेत्रों में जलभरिलिया शरीर कांपतीहुई पैरोंपर गिरपड़ी और बोलीकि हेनाथ जोआप श्रीरामचंद्रके चरणों को भजो तो मेरा यह अहिवात अचल होजावै ॥ ५ ॥

तब रावण मय सुता उठाई । कहै लागु खल निज प्रभुताई १
सुनतैं प्रिया वृथा भय माना । जग योधा को मोहिं समाना २
बरुण कुबेर पवनयमकाला । भुजबल जितेउं सकल दिगपाला ३
देव दनुज नर सब बश मोरे । कौन हेतु उपजा भय तोरे ४
नाना भांति ताहि समुझाई । सभा बहोरि बैठ सो जाई ५
सभाजाइ मंत्रिन अस बूझा । करब कवनि बिधि रिपुसनजूझा ६
कहहिं सचिवसुनु निशिचरनाहा । बार बार प्रभु पूछहु काहा ७
कहहु कवन भयकरिय बिचारा । नर कपिभालुअहार हमारा ८
दो० सबके बचन श्रवण सुनि कह प्रहस्त कर जोरि ।
नीति बिरोधन करिय प्रभु मंत्रिन मति अति थोरि ॥ ६

तबतो रावण ने मंदोदरी को पैरोंपर से उठाया और मूढ़ अपनी प्रभुता उस से कहने लगा १ सुनुहे प्रिये तू वृथाही भयमान है जगमें कौनसा योधा मेरे समान है २ बरुण औ कुबेर पवन और यमकाल ये समस्त दिशिपाल मैंने अपनी भुजाओं से जीति लियेहैं ३ देव,दानव, मनुष्य तो सबके सब मेरे बशीभूतहैं फिरतेरे हृदय में किस कारणसेयह महा भय उत्पन्न हुआहै ४ ऐसे अनेक भांति उसको समझाकर फिरि सभा में जाबैठा ५ और तहां जाकर अपने मंत्रियों से पूछा कहो अब शत्रु

के साथ कौन भांति से युद्ध करना चाहिये ६ तबतो मंत्री बोले सुनो हे राक्षसेश्वर महाराज वारंवार आपक्या पूछते हो ७ कहो तो कौनसी भय के मारे विचार करें शत्रु की सेना में कौन हमारी पटितर का योधाहै नर वानर और रीछहैं सोतो सब के सब हमारे आहारही हैं ८ दोहा ऐसे सब मंत्रियों के वचन कानों से सुनिकर रावण के बेटे प्रहस्त ने हाथजोरिकर पिता सेकहा हेमहाराज आप नीतिसे विरुद्ध मतकरो आपके मंत्रियों की अति मन्दबुद्धिहै ॥ ६ ॥

कहहिं सचिव सब ठकुर सुहाती । नाथ न पूर आव यहि भांती १
बारिध लांघि एक कपि आवा । तासु चरित मन महं सब गावा २
क्षुधा न रही इनहि तब काहू । जारत नगर न खायहु ताहू ३
सुनत नीक आगे दुख पावा । सचिवन अस मत प्रभुहिं सुनावा ४
तात बचन मम सुनु अतिआदर । जनिमन गुनहु मोहिं कर कादर ५
प्रिय बाणीजे सुनहि जेकहहीं । ऐसे नर निकाय जग अहहीं ६
बचन परम हित सुनत कठोरे । कहहिं सुनहिं ते नरवर थोरे ७
प्रथम बसीठी पठव सुनीती । सीता देइ करहु पुनि प्रीती ८
दो० नारि पाय फिरि जाहिंजो तौन बढ़ाइय रारि ।
नाहितो सन्मुख समर महं तात करिय हठि मारि ॥ ७ ॥

सुनो हे पिता ये सब आपके मंत्री राज सुहाती कहते हैं काम परे पर इन बातोंसे पूरा न परेगा १ शतयोजन के विस्तार के समुद्र को लांघिकर तो उनका एकही बानर आया रहै उसके चरित्रको आपके समस्त योधा मनहीमें बखानतेहैं २ क्याउस समय इन सबों में सेकिसी की भी क्षुधा नहीं रहै कि नगर के जारते परभी उसअकेले कोभी तो किसी ने न खाइ पाया अब समस्त सेना का कैसे खाय जावैंगे ३ सुनते में तो सुखदायक औ परिणाम को जिसमें दुखपायो जावे ऐसा विपरीत मंत्र आपके मंत्रियों ने आपको सुनायाहै ४ ताते हे पिता अब आप मेरे वचनों को बड़े आदरसे सुनो और अपने मनमें मेरे को कादर मत अनुमानो ५ प्यारी बाणी जे कहते हैं और जे सुनते हैं ऐसे मनुष्य तो संसार में समूहों के समूह परेहैं परंतु जो वचन परिणाम में हित और सुनते में कठोर होतेहैं उनवचनों के वक्ता और श्रोता अति उत्तम विरलेही होतेहैं ६।७ बलाबल का निर्णय तो हनुमानके आतेही होचुका अब नीतियह है कि सीता के फेरि देने के निमित्त पहिले आप बसीठी दूत भेजो जो मानि लेवें तो सीता को देकर संधि कर लीजिये ॥ सुलभाःपुरुषाः राजन् सततं प्रियवादिनः । अप्रियस्यच पथ्यस्य वक्ता श्रोताचदुर्लभाः॥ ८ ॥ दोहा ॥ जो अपनी स्त्री को

पाकर फिर जावें तो बिग्रह न बढ़ाइये नहीतो संमुख संग्राम में दण्ड दीजिये ७ ॥

यह मतजो मानहु प्रभुमोरा । उभय प्रकार सुयश जगतोरा १
सुत सनकह दशकंठरिसाई । असिमति शठकेहिं तोहिं सिखाई २
अबहीं ते उर संशय होई । बेणु मूल सुत भयेसि घमोई ३
सुनुपितु गिरापरुषअतिघोरा । चला भवन कहि बचन कठोरा ४
हितमत तोहिं न लागत कैसे । काल बिबश कहं भेषज जैसे ५
संध्या समय जानि दशशीशा । भवन चला निरखत भुज बीशा ६
लंका शिखर उपर अगारा । अति बिचित्र तहं होइ अखारा ७
बाजहिं ताल पखावज बीणा । नृत्य करहिं अप्सरा प्रवीणा ८
दो० सुनासीर शत सरिस सो संतत करै बिशाल ।
परम प्रबल रिपुशीश पर तदपि न मन कछुत्राश ॥ ८ ॥

हे पिता जो आप यह मेरा मंत्रमानो तो संधि बिग्रह दोनों प्रकार से आपका संसार में सुयशही होगा १ ऐसा प्रहस्त का मंत्र सुनतेही रावणने रिसाइ करकहा अरे शठ ऐसी बुद्धि तेरेको किसने सिखाई है २ अभी से तेरे हृदय में संशय होती है भला तू बांश की जड़में घमोई निषिद्ध बृक्ष उत्पन्न हुआ ३ ऐसी पिता की महापरुष कठोर वाणी सुनिकर कठोरही बचन कहता हुआ घरको चलिदिया ४ कि हितका मंत्र तो तेरेको कैसे नही लगताहै जैसे काल वश रोगी को औषधि नहीं लगतीहै ५ फिरितो संध्याकाल जानिकर दशग्रीव रावण अपनी अति बलवान परसपीन बीसहूं भुजाओं को देखता हुआ घरको चला ६ लंका में किसी शिखर के ऊपर एक अति मंदिर बनाहै तहां नित्य प्रति अपने समय पर नृत्यहुआ करताहै उस मंदिर में जब रावण जाबैठा तबतो ताल पखावज बीणा बाजने लगे औ अति प्रबीणा अप्सरा नाच करने लगीं ७ । ८ दोहा सुनासीर कहैं देवराट इंद्र के बिलास सेभी शतकोटि गुण रावण सदा बिलास करताहै देखो परम प्रबल कालहूका काल राम सा शत्रु तो शिर परहै तौभी उसके मनमें कुछ त्राश नहीं है ८ ॥

यहां सुबेल शैल रघुबीरा । उतरे सेन सहित अति भीरा १
शैल शृंग एक सुन्दर देखी । अति उतंग सम शुभ्र बिशेषी २
तेहिं पर किशलय सुमन सुहाये । लक्ष्मण रचिनिज हाथ बनाये ३
तापर रुचिर मृदुल मृगछाला । तेहिं आसन आसीनकृपाली ४
प्रभु कृत शीश कपीश उछंगा । बामदहिनि दिशि चापनिषंगा ५

दुहुं कर कमल सुधारत बाना । कह लंकेश मंत्र लगिकाना ६
बड़भागी अंगद हनुमाना । चरण कमल चापत बिधि नाना ७
प्रभुपाछे लक्ष्मण बीरासन । कटि निषंग कर बाण शरासन ८
दो० यहि बिधि करुणा शील गुण धाम राम आसीन ।
धन्य तेनर यहि ध्यानजे रहत सदा लवलीन ॥ ६ ॥

यहां जो सुबेलाचल पर श्री रामचंद्र दूसरे समुद्र ही के समान सेना की बड़ी भीर समेत उतरे तो उस पर्बत का एक सुन्दर शिखर देखकर कि अतितो ऊंच है और समान भूमि बिशेष उज्ज्वल है उसके ऊपर कोमल तरुपल्लव और सुहाये सुगन्धित पुष्प लक्ष्मण ने अपनेही हाथों से रचि रचिकर बिछाये १।२।३ तिनके ऊपर अति सुन्दर कोमल मृगछाला बिछाई उस उच्चासन पर कृपालु श्री रामचन्द्र पूर्बाभिमुख पौढ़ते हुये ४ स्वामी ने अपना शीश तो सुग्रीव की जंघा पर रखलियाहै और दाहिनी दिशा शरालय निषंग बाईंदिशा शार्ङ्ग धनुष धरेहैं ५ दोनों करकमलों से बाणों कोसुधार रहेहैं और बिभीषण कानसेलगे मंत्रकहि रहेहैं ६ बड़भागी तो अंगद हनुमानहैं जोस्वामी के चरण कमलोंको परम प्रीतिसे पलोट रहे हैं ७ रामचंद्र के पीछे पश्चिम दिशा में बीरासन से लक्ष्मण बैठेहैं कटि देशमें निषंग और हाथोंमें धनुष बाण लिये हैं ८ दोहा इस बनाव से करुणा और शीलगुण के धाम श्रीराम पौढे हैं धन्यते पुरुष हैं जोइस ध्यानमें सदा लवलीन रहतेहैं ॥ ६ ॥

दो० पूरब दिशा बिलोकि प्रभु देखा उदित मयंक ।
कहत सबहिं देखह शशिहिं मृगपति सरिस अशंक ॥

पूरब दिशि गिरिगुहा निवासी । परम प्रताप तेज बलराशी १
कहप्रभु शशिमहं मेचकताई । कहहु काह निजनिज मतिभाई २
कह सुग्रीव सुनहुसुर साईं । शशि मह प्रगट भूमि की झाईं ३
मारेउ राहु शशिहिं कह कोई । उर महं परी श्यामता सोई ४
कोउकहजबबिधिरतिमुखकीन्हा । सारभागशशिकरहरिलीन्हा ५
छिद्रसोप्रगट इंदुउर माहीं । तिहिं मगुदेखिय नभ परछाहीं ६
प्रभुकहगरलबंधु शशिकेरा । अतिप्रिय तिहिं उर दीन्हबसेरा ७
बिषसंयुत कर निकर पसारी । जारत बिरहवंत नर नारी ८
दो० कह मारुत सुनिये प्रभु शशि तुम्हार प्रिय दास ।

तव मूरति बिधु उर बसै सोइ श्यामता भास ॥ १०

पूर्व दिशा को जो स्वामीने देखा तो शरदकालका परिपूर्ण चंद्रमा उदय होता हुआ देखा उसको देखिकर सबसे कहने लगेकि इस चंद्रमा को देखो सिंहही के समान अर्थात् है चौपाई पूर्वदिशा रूपी पर्बत की गुहाका तो निबासी है बड़ा इस का प्रतापहै और तेज बलकी तो राशिहै १ फिरबोले इस चंद्रमा में यह श्यामत क्या है अपनी अपनी बुद्धि के अनुसार सबकहो २ प्रथम सुग्रीव ने कहा श्री मह राज चंद्रमा जलबिम्ब है इसमें पृथिवी की झांई परती है सोई श्यामताहै ३ किसी नेकहा राहु इसका बड़ा बैरीहै उसने इसे मारा है सो इसके हृदयमें श्यामता परी है ४ किसी ने कहा जब ब्रह्मा ने काम की स्त्री रतिका मुख बनाना चाहा तब कुछ सार भाग चंद्रमा का लेलिया ५ चंद्रमा के हृदय में छिद्र होगया है उसमें होकर आकाश दीखत है ६ रामचन्द्र ने कहा हम न मानेगे यहतो हम बिरही जनोंका बैरीहै क्योंकि अतिशय सकालकूट बिष इसका परम प्यारा भाईहै उसे इसने अपने हृदयमें बसाया है तातें बिषकी मिली अपनी किरणियों सेबिरहवन्त नरनारियों को जारता है ७।८ दोहा ऐसे रामचन्द्रके बचन सुनिकर हनुमान ने कहा हे स्वामी आप ऐसा न कहिये चन्द्रमाप्राकृत बिरहियों का बैरी होवेगा आपका तो अतिप्यारा दासहै देखो आपकी सुन्दर सांवरी मूर्ति इसके हृदय में सदा वसती है सोई श्यामता भासताहै ॥ १० ॥

दो० पवन तनयके बचन सुनि बिहसे राम सुजान ।
दक्षिण दिशा बिलोकि प्रभु बोले कृपा निधान ॥

देखु बिभीषण दक्षिण आशा । घन घुमंड दामिनी बिलाशा १
मधुर मधुर गर्जहिं घन घोरा । वृष्टिहोत जनु उपल कठोरा २
कहै बिभीषण सुनहु कृपाला । होइन तड़ितन बारिद माला ३
लंका शिखर उपर आगारा । तहं दशकंधर देखु अखारा ४
क्षत्र मेघ डंमर शिर धारी । सोइ जनु जलद घटा अतिकारी ५
मंदोदरी श्रवण तार्टका । सोइ जनु घन दामिनी दमंका ६
बाजहिं ताल मृदंग अनूपा । सोइ रव मधुर सुनहु सुरभूपा ७
प्रभु मुसुकाय समुझि अभिमाना । चाप चढ़ाय बाण संधाना ८
दो० क्षत्र मुकुट तार्टक सब हते एकही बान ।
देखत सबके महि परे मर्म न काहू जान ॥ ११ ॥

ऐसे सुंदरहनुमान के बचन सुनि कर परम सुजान रामचंद्र हंसे और दहिना करवट लिया तब दक्षिण दिशा को देखि कर कृपासागर स्वामी बोले ॥ चौपाई ॥ हे बिभीषण इस दक्षिण दिशा को तो देखो इसमें कैसा मेघ घुंमडि रहा है और बिजली चमकतीहै १ मंद मंद घोररवसे मेघ गर्जता है और बर्षा कठोर पाषाणों की सी होतीहै २ बिभीषण देखि कर बोला सुनो हेकृपानिधान न तो यह बिजली है और नमेघमाला है ३ लंका में एक शिखर पर नाचकाघरहै तहां रावण नाचदेखि रहाहै ४ मेघडंमर नीलछत्र जो रावण के शिर पर लगा है सोई तो श्यामघटा सा देखि परता ५ और मंदोदरी के कर्णफूल जो उस छत्र में चमकते हैं सोई मानो मेघ में दामिनी दमकतीहै ६ ताल, मृदंग,पखावज जो बाजि रहे हैं सोई हेस्वामी मेघकी मधुर घोर गर्जनिसुननेमें आतीहै ७ ऐसाजब बिभीषणने कहा तब तो रामचंद्र स्वामी रावणका बड़ाअभिमान समुझिकर मुसुकाने और धनुषचढ़ायकर उसमें बाणसंधान किया औछोड़ा ॥८॥ दोहा ॥ तो एकहीबाणसे रावणका छत्र औरदशहूं मुकुट और मंदोदरी के तरौना सबके देखते २ पृथिवी पर गिरा दिये यहमर्म किसीने भी नजाना ॥ ११ ॥

दो० अस कौतुक करि राम शर प्रविशेउ आइ निषंग ।
रावण सभा सशंक अति देखि महा रस भंग ॥
कंपन भूमि न मरुत बिशेषा । अस्त्र शस्त्र कछु काहु न देखा १
सोचहिं सब निजहृदय मझारी । अशकुनभयउ भयंकरभारी २
दशमुख देखिसभा भयपाई । बिहंसि बचन कहयुक्ति बनाई ३
सिरो गिरे संतत शुभजाही । मुकुट परे कस अशकुन ताही ४
शयन करहु निजनिज गृहजाई । गवनेभवन सकलशिरनाई ५
मंदोदरी सोच उर बसेऊ । जबते श्रवण पूर महि खसेऊ ६
सजलनयन कहयुग करजोरी । सुनहु प्राणपति बिनतीमोरी ७
कंत राम बिरोध परि हरहू । जानि मनुज जनिहठ मनधरहू ८
दो० बिश्वरूप रघुबंश मणि करहु बचन बिश्वासु ।
लोक कल्पना बेद कर अंग अंग प्रति जासु ॥ १२ ॥

ऐसाकौतुक रावण की सभा में राम बाण करिके फिरिअपने स्वामी के निषंग में प्रवेश करिगया रावण की समस्त सभा यह महारस भंग देखि कर सशंक होगई ॥ चौपाई ॥ नतो भूकंप हुआ न विशेष पवनही चली और अस्त्र शस्त्र भी किसीने न आते देखा १ सबके सब अपने अपने मनमें सोचते हैं यह तो कुछ महा भारी अशकुनही हुआ २ रावण ने देखा कि मेरी सभाको भय हुई तबतो हंसा और

युक्ति बना कर बोला ३ तुम कोई भय मत करो मेरेको तो शिर गिरने परभी शकुन ही होते हैं मुकुट गिरने में अशकुन कैसे होंगे ४ अब तुम अपने अपनेवर जाकर बिश्राम करो ऐसी आज्ञा पाकर प्रणाम करि चले गये ५ जबसे कानोंके तरौंने पृथ्वी पर गिरि परे तबसे मंदोदरीके हृदयमें तो सोचही होगया ६ नेत्रोंमेंतो जल भरि लिया और दोनोंहाथ जोरि कर बोली हे प्राणपति मेरी बिनती सुनो ७ हेकन्त राम बिरोधको आप त्यागन करो उनको मनुष्य जानि कर हृदयमें हठ मति धरो ॥ ८ ॥ दोहा ॥ सुनो हे नाथ रघुबंश मणि श्री रामचन्द्र बिश्वरूप परमेश्वर हैं समस्त बिश्व उन्हींका अंग है राम सबके अंगीहैं मेरे बचनोंपर आप बिश्वास करो क्योंकि लोक लोक की कल्पना इनके अंग अंग प्रति वेदों ने करी है ॥ १२ ॥ भागवते पातालमेतस्यहिपादमूलंपठंतिपार्ष्णीप्रपदेरसातलंमहातलंबिश्वस्टजोऽथकुल्फे तलातलं॥ वैपुरुषस्यजंघे ॥ २६ ॥ द्विजानुनीसुतलंबिश्वभूर्त्तेरुरुद्वयंबितलंचातलंच महीतलंतज्जघनंमहीपतेनभस्थलंनाभिसरोगृराहति ॥ २७ ॥ उरुस्थलंज्योतिरनीकमस्य ग्रीवामहाबदनं बैजनोऽस्य तपोरराटिंबिदुरादिपुंसः सत्यंतुशीर्षाणिसहस्रशीर्ष्णः ॥ २८ ॥ इंद्रादयोबाहव आहुरुस्राः कर्णौदिशःश्रोत्रमनुष्यशब्दः नाशत्यदस्रौपरमस्यराशे घ्राणोऽस्यगन्धोमुखमग्निरिद्धः ॥ २९ ॥ द्यौरक्षिणीचक्षुरभूत्पतंग पक्ष्माणिबिष्णोरहनीउभेचतद्भ्रूबिजृम्भःपरमेष्ठिधिष्ण्यःमापोस्यतालूरसएवजिह्वा ॥ ३० ॥

पद पाताल शीश अज धामा । अपरलोक अंग अंग बिश्रामा १
भृकुटि बिलास भयंकरकाला । नयन दिवाकर कच घनमाला २
जासु घ्राण अश्वनी कुमारा । निशि अरुदिवस निमेष अपारा ३
श्रवणदिशा दश बेद बखानी । मारुत स्वास निगमनिजबानी ४
अधर लोभ यम दशन कराला । माया हास बाहु दिगपाला ५
आनन अनल अंबुपति जीहा । उतपति पालन प्रलयसमीहा ६
रोम राजि अष्टादश भारा । अस्थि शैल सरिता नश जारा ७
उदर उदधि अध गोयातना । जगमय प्रभुकहं बहु कल्पना ८
दो० अहंकार शिव बुद्धि अज मन शशि चित्त महान ।
मनुज बास सचरा चर रूप राशि भगवान ॥ १३ ॥

पाताल तो जिस बिश्वरूपका चरण देश है और ब्रह्मलोक मस्तक है औरमध्य लोक सब मध्यके अंगोंमें यथा स्थान बिश्रामहै १ महा भयंकर काल जिनकीभृकुटी बिलास हैं सूर्य्य नेत्र हैं मेघ माला केश हैं २ अश्वनीकुमार नासिका हैं राति दिन पलकें खोलना मूंदना है ३ दशहूं दिशा जिनके कर्ण हैं पवन स्वासा है बेद बाणी है ४ लोभ नीचेका ओष्ठ है यम महा कराल दंष्ट्रा हैं जगन्मोहनी हास्यबिलास है

दिग्पाल भुजा हैं ५ अग्नि जिनका मुख है वरुण जिह्वा हैं संसारकी उत्पत्ति पालन संहार जिनकी चेष्टा है६ बनस्पति रोमावली है पर्वत हाड़ हैं नदी नस जार हैं। समुद्र उदर है यातना नर्क गुदा है ऐसेही बिश्वमय स्वामीकी अनन्तकल्पनाहैं। दोहा ॥ शिव जिनके अहंकार हैं ब्रह्मा बुद्धि हैं मन चन्द्रमा है चित्तमहत्तत्व है ऐसे स.चात् नारायण चराचर की रूपके राशि भगवान श्री रामचन्द्र हैं ॥ १३॥ छन्दांस्यनंतस्यशिरोगृणंतिदंष्ट्रा यमःस्नेहकलाद्विजानि हासोजनोन्मादकरीचमायादुरंतस-र्गोयदपांगमोक्षः ॥ ३१ ॥ ब्रीडोत्तरोष्ठोऽधरएवलोभोधर्मस्तनोऽधर्मपथोऽस्यपृष्ठः कस्तस्यमेढ्र वृषणौ चमित्रौकुक्षिःसमुद्रागिरयोऽस्थिसंघाः ॥ ३२ ॥ नद्योऽस्यनाड्योऽथतनोरुहाणिमहीरुहा बिश्वतनोर्नृपेंद्र अनन्तवीर्य्यःश्वसितंमातरिश्वागतिर्वयः कर्मगुणप्रवाहः ॥ ३३ ॥ ईशस्य केशान्विदुरंबुवाहान्वासस्तुसंध्यांकुरुवर्य्यभूम्नः अव्यक्तमाहुर्हृदयंमनश्चसचन्द्रमाःसर्वबि-कारकोशः ॥ ३४ ॥ बिज्ञानशक्तिंमहिमामनन्तिसर्वात्मनोंतःकरणंगिरित्रं अश्वाश्वतर्यु-ष्ट्रगजानखानि सर्वेमृगाःपशवःश्रोणिदेशे ॥ ३५ ॥ वयांसितद्व्याकरणंविचित्रं मनुर्मनीषामनु जोनिवासः गंधर्वबिद्याधरचारणाप्सरःस्वरस्मृतिरसुरानीकवीर्यः ॥ ३६ ॥ ब्रह्माननंक्षत्र भुजोमहात्माबिड्रुरुरंघ्रिश्रितकृष्णवर्णः नानाभिधाभीज्यगणोपपन्नोद्रव्यात्मकःकर्म बितान योगः ॥ ३७ ॥

दो० अस बिचारि सुनु प्राण पति प्रभु सन बैर बिहाइ ।
प्रीति करहु रघुबीर पद मम अहिवात न जाइ ॥
बिहसा नारि बचन सुनिकाना । अहोमोह महिमा बलवाना १
नारि सुभाव सत्यकबि कहहीं । अवगुण आठ सदा उररहहीं २
साहस अनृत चपलता माया । भय अबिबेक अशौच अदाया ३
रिपु कररूप सकलतैं गावा । अतिबिशाल भयमोहिं सुनावा ४
सोसब प्रिया सहज बश मोरे । समुझि परा प्रसाद अबतोरे ५
जानउं प्रियातोरि चतुराई । यहि मिसिकहेहु मोरि प्रभुताई ६
तवबतकही गूढ़मृगलोचनि । समुझतसुखद सुनतभयमोचनि ७
मंदोदरी हृदय असठयऊ । पतिहिं काल बश मतिभ्रमभयऊ ८
दो० यहि बिधि जलपत सकल निशि प्रात भये दशकंध ।
सहज अशंक सुलंक पति सभा गयउ मद अंध ॥ १४ ॥

ऐसा बिचारि कर हे प्राणपति बैरको छोड़ि कर श्री रामचंद्र के चरणों में प्रेम करो जिससे मेरा अहिवाल जाता न रहे ॥ चौपाई ॥ मंदोदरीके बचन सुनतेही

रावण हंसा और बोला अहो आश्चर्य अरे देखो तो मेरु की महा बलवान महिमाको कि अपनेही मुखसे तो शत्रु की पराजय और मेरी बिजय बखानतीहै तिस परभी मेरेको बलहीन और शत्रु को बलवान जानती है १ स्त्रियोंके सुभाव को कबि जन सत्यही कहते हैं कि आठ अवगुण इनके हृदयमें सदाही रहते हैं २ एकतो साहस दूसरा झूठ तीसरी चपलता चौथी माया पांचवीं भय छठा अज्ञान सातवीं अशौचता आठवीं निर्दयता ३ सुनु हे प्रिया समस्त विश्व तूने शत्रुका अति बड़ा रूप कहिकर मेरेको जो भय दिखाया सो तो सहजही सब मेरे बशमें हैं तेरे कहने से अब मेरेको जानि परा ४।५ अब मैंने तेरी चतुराई जानी कि इसी धोखे से तूने मेरी प्रभुताई कही ६ तेरी बतकही बड़ी गूढ़है ९ मंदोदरीने अपनेमनमें ऐसाजाना कि कालके बशसे स्वामी की मति भ्रम होगई है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ इस प्रकार समस्त राति जल्पना करता रहा प्रात होतेही अति अशंक लंकेश्वर महा मदांध सभा में जा बैठा ॥ १४ ॥

सो० फूलै फरै न बेत यदपि सुधा बर्षहिं जलधि ।
मूरुख हृदय न चेत जो गुरु मिलहिं बिरंचि शिव ॥

यहां प्रात जागे रघुराई । पूछा मत सब सचिव बुलाई १
कहहु बेगि का करिय उपाई । जामवंत कह पद शिर नाई २
मंत्र कहब निज मति अनुसारा । दूतपठाइय बालिकुमारा ३
सुनु सर्बज्ञ सकल उरबासी । बुधि बल तेज धर्म गुणराशी ४
नीक मंत्र सबके मन माना । अंगद सनकह कृपानिधाना ५
बालितनय बुधि बलगुण धामा । लंका जाहु तात मम कामा ६
बहुत बुझाय तुमहिं का कहहूं । परम चतुर मैं जानत अहहूं ७
काज हमार तासु हित होई । रिपु सन करेहु बतकही सोई ८
सो० प्रभु आज्ञा धरि शीश चरण बंदि अंगद उठेउ ।
सोइ गुण सागर ईश राम कृपा जापर करहु ॥ १५ ॥
स्वयं सिद्ध सब काज नाथ मोहिं आदर दयो ।
अस बिचारि युवराज पुलकित तन हर्षित भयो ॥

सोरठा ॥ यद्यपि मेघ अमृत की वर्षा करें तो भी जैसे बेतनहीं फूलता फरता है तैसेही मूर्ख का हृदय नहीं चेतता है जो ब्रह्मा शिव से भी उपदेश मिले यहां प्रात होतेही श्री रामचन्द्र सेना समेत जगे और सब मंत्रियों को बुला कर

पूछा १ कहो अब कौन उपाय करना उचितहै यह सुनिकर जामवन्त शीश नाइकर बोले २ सुनो स्वामी आपतो सर्वज्ञ सर्व उरवासी हैं और बुद्धि बल तेज धर्मगुणों की राशि हैं मैं अपनी बुद्धि के अनुसार मंत्र कहता हूं कि आप बसीठी बालिकुमार अंगद को भेजिये ३ । ४ ऐसा सुनिकर सबने कहा कि यही मंत्र ठीकहै तब तोअंगद से कृपानिधान रामचंद्र ने कहा ५ हे बालिकुमार तुम बुद्धिबल गुणके धाम हो मेरेकार्य्यके निमित्त लंका को जाओ ६ बहुत समझाकर तुमसे क्याकहूं तुम आपबड़े चतुर हो मैं तुमको जानता हूं ७ जिसमें हमारा कार्य्य और उसका भला होवे तैसेही बतकही शत्रु केसाथ कीजियो ॥ ८ ॥ सोरठा । स्वामी की आज्ञा को शिरपर धारण किया और चरणोंको प्रणाम करिके अंगद उठे और बोले हे नाथ सोईसमस्त गुणों का सागर है जिस पर आप कृपा करो ॥ १५ ॥क्योंकि श्री रामस्वामीने मेराआदर किया इससे यह सब कार्य्य आपही सिद्धिहो जायगा ऐसा बिचारिअंगद अत्यंत प्रसन्नहुआ

बंदि चरण उर धरि प्रभुताई । अंगद चला सबहिं शिरनाई १
प्रभु प्रताप उर सहज अशंका । रण बांकुरा बालि सुत बंका २
पुर पैठत रावण कर बेटा । खेलत रहा भई तिहिं भेटा ३
बातहि बात कर्ष बढ़ि आई । युगुल अतुलबल पुनि तरुणाई ४
तेहि अंगद कहं लात उठाई । गहि पद पटकेसि भूमि भ्रमाई ५
भयउ कुलाहल नगर मझारी । आवा कपि लंका जेहिं जारी ७
अबधौंकाह करिहिंकरतारा । अति सभीत सबकरहिं बिचारा ७
बिनु पूछे मगु देहिं दिखाई । जिहिं बिलोकु सोजाइ सुखाई ८
दो० गयउ सभा दरबार तब सुमिरि राम पद कंज ।
सिंह ठवनि इत उत चितय धीर बीर बल पुंज ॥ १६ ॥

श्री रामचंद्र के चरणों को अभिबंदन करि और हृदय में स्वामी की प्रभुताधरि सब सभा को शिर नवाइ कर अंगद चल दिये १ एक तो स्वभावही तें अशङ्कृता पर रामचंद्र का प्रताप रणबांकुरे बालि का पुत्र अंगद भी बड़ा बांकाही है २ पुरमें प्रवेश करतेही कोई एक रावणका पुत्र खेलता रहै उससेअचानक भेटहोगई ३ बातों हो बातों में खैंचा खेंच बढ़िगई दोनों अतोल बल और चढ़ती तरुणाई ४ उसने इकाइक जो अंगद के मारनेको लात उठाई अंगद ने उसी पैर को पकरि करघुमाइ कर पृथ्वी पर ऐसा देमारा कि गिरतेही प्राणहीन होगया ५ उसके मरतेही नगर में कोलाहल पड़गया कि सोई बानर फेरि आया जिसने लंका जारी रहै ६ विधि जाने अब क्या करैगा ऐसे भय भीत सब बिचारते हैं ७ बिनाही पूंछे मार्ग बता

टूते हैं और जिसकी ओर अंगद देखता है उसीके प्राण सूखि जाते हैं ॥ ८ ॥ दोहा
इस प्रकार श्री रामचंद्र के चरण कमलों को स्मरण करिके राज दरबार के द्वार पर
पहुंचा सिंह की उठानि इधर उधर को देखा बड़ाधीर बड़ाबीर बलवान है १६ ॥

तुरत निशाचर एक पठावा। समाचार रावणहिं सुनावा १
सुनत बिहंसि बोला दशशीशा। आनहु बोलि कहांकरकीशा २
आयसु पाय दूत बहु धाये। कपि कुंजरहिं बोलि लै आये ३
अंगद दीख दशानन वैसा। सहित प्राण कज्जलगिरि जैसा ४
भुजा बिटप शिर शृंग समाना। रोमावली लता तरु नाना ५
मुख नासिका नयन अरुकाना। गिरि कंदरा खोह अनुमाना ६
गयउ सभा मन नेक न मुरा। बालि तनय अति बलबांकुरा ७
उठे सभा सद कपिकहं देखी। रावण उर भा क्रोध बिशेषी ८

दो० यथा मत्त गज यूथ महं पंचानन चलि जाइ।
राम प्रताप संभारि उर बैठ सभा शिर नाइ ॥ १७॥

तुरंतही एक द्वारपाल को भेजा उसने बसीठ आने के समाचार रावण को जा
सुनाये १ सुनतेही हंसि कर रावण बोला बुला लाओ देखें तो कहां का कौन
बानर है २ रावण की आज्ञा पातेही बहुत से दूत दौरे कपि कुंजर अंगद को दर-
बार लिवा ले गये ३ अंगद ने रावण को कैसा बैठा हुआ देखा मानों प्राणधारी
कज्जल गिरिहीहै ४ बीसे भुजातोवृक्षोंके समानहैं और दशहूशिरमानों उसकेशृंगही
हैं रोमावली मानों लता वृक्षही हैं ५ दशमुख और नासिका बीस नेत्र और कानों
के रंध्र पर्बत की खोह और कन्दराओं के अनुमान देखि परते हैं ६ ऐसा देखिकर
अंगद निर्भय सभा में चला गया बालि का पुत्र बड़ा बलवान् बांका है ७ अंगदको
आते देखतेहीसंपूर्ण सभा सद उठि खड़े हुये ऐसा देखिकर रावण को उन पर
बिशेष कोपहुआ ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जैसे मत्तहाथियोंके यूथों में सिंह शार्दूल चलाजाता
है ऐसेही अंगद श्री रामके प्रतापकास्मरण करिके सभा में शिर नवाकर बैठिगये१७॥

कह दशकंध कवन तैं बंदर। मैं रघुबीर दूत दशकंधर १
मम जनकहि तोहिरही मिताई। तव हित कारण आयउंभाई २
उत्तम कुल पुलस्त्य कर नाती। शिवबिरंचि पूजेहु बहुभांती ३
बर पायउ कीन्हेउ सब काजा। जीतेहु लोकपाल सुरराजा ४
नृप अभिमान मोहवश किंबा। हरि आनेहु सीता जगदंबा ५

अब शुभसुनहु सिखावनमोरा । सब अपराध क्षमहिंप्रभु तोरा ६
दशन गहहु तृण कंठ कुठारी । परिजनसहित संग निजनारी ७
सादर जनकसुताकरिआगे । यहि बिधि चलहुसकलभयत्यागे ८
दो० प्रणत पाल रघुबंश मणि त्राहि त्राहि अब मोहिं ।
सुनतहिं आरत बचन प्रभु अभय करैंगे तोहिं ॥ १८ ॥

तबतो रावण बोला अरे बंदर तू कौन है अंगद ने भी कहा अरे दशकन्धर मैं श्री रामचंद्र का दूत हूं १ मेरे पिता से और तोसे मयत्री रहैतातें तेरे हितके लिये तेरे पास आया हूं २ कि उत्तमतो तेरा कुल पुलस्त्यमुनि का नातेफिरि शिव ब्रह्मा भली भांति से पूजे उनसे बड़े २ वर पाये जिनके बलसे बड़े२ कार्य्य किये समस्त लोक पाल और देवराज इंद्र भी जीति लिये ३ । ४ सो ऐसा खोटा काम तू ने राज्य अभिमान से किया वा मोह के बश होकर किया कि जगज्जननी सीता को चुरा लाया ५ होगया सोहोगया अबभी मेरा सिखावन मानों तेरे सब अपराधों को रामचंद्रस्वामी क्षमा करेंगे ६ दांतों में तो तृण गहो और कंठ में कुठारी मेलो सब कुटुम्ब के समेत अपनी रानी मंदोदरी को साथ लेओ ७ और आदर समेत सीता को आगे करि लेओ ऐसे मेरे साथ सब भय को छोड़ि चले चलो ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जाकर यह कहो हे प्रणतपाल रघुबंश मणि अब आप मेरी रक्षा करो मैं शरणआया हूं ऐसे आरत बचन सुनतेही स्वामी तेरे को निर्भय करि देवेंगे ॥ १८ ॥

एकपि पोच न बोल संभारी । मूढ़ न जानहि मोहिं सुरारी १
कहु निज नाम जनक करभाई । केहि नाते मानिये मिताई २
अंगद नाम बालि कर बेटा । तासन कबहुं भई तोहिंभेंटा ३
अंगद तुही बालि कर बालक । उपजेहु बंशअनल कुलघालक ४
गर्भन गिरेउ वृथा तैं जायहु । निज मुखतापस दूतकहायहु ५
अबकहु कुशल बालिकहंअहई । बिहंसि बचन तब अंगदकहई ६
दिन दशगये बालिपहं जाई । पूछेहु कुशल सखाउर लाई ७
रामबिरोध कुशल जसिहोई । सो सब तोहिसुनाइहि सोई ८
दो० हमकुलघालक सत्यतुम कुलपालकदशशीश ।
अन्धहुबधिर न असकहैं नयन कान तव बीश ॥ १६ ॥

ऐसे बचन सुनतेही प्रथम तो रावण कोप करिके बोला अरे नीच बंदर संभारि कर नहीं बोलता है तू मेरे को नहीं जानता है मैं देवताओंका हंता हूं १ फिरि

शांत होकर पूछने लगा अरे भाई अपना और अपने बाप का नाम कहु जिस नाते से मयादा मानो जावै २ तब तो अंगद बोले कि मेरा नाम अंगद है वालि कपि राज का बेटा हूं उन से तेरे को कभी भेट हुई है कि नहीं ३ यह सुनिकर रावण बोला बालि वानरांश का तुही पुत्र है भला वंशाग्नि कुलघालक तू उत्पन्न हुआ ४ गर्भ भी न गिरिगया वृथा तेरी माता ने तेरे को जन्मा जो अपनेहीं मुख से तापसों का दूतकहाता फिरता है ५ जैसा हुआ तैसा हुआ अब हमारे सखावालिकी कुशल तो कहु कि बालि कहां है तब तो हंसिकर अंगद बोले ६ अब दशदिन पीछे आपही बालि के पास जाकर और मिलि कर कुशल पूछिलीजो ७ राम के बिरोध से जैसी कुशल होती है सो तेरे को बालिही सुनादेगा ॥ ८ ॥ दोहा ॥ सांचहूं में तो रामदूत होकर कुल घालक हुआ और आप राम बिरोधी होकर कुलपालक हुये अंधे बधिरे जिन्हों ने कुछ देखा सुना नहीं सो भी तो ऐसा नहीं कहते हैं ईश्वर के दिये तेरे तो बीस बीस नेत्र और कान हैं ॥ १६ ॥

शिवबिरंचि सुरमुनि समुदाई । चाहत जासुचरण सेवकाई १
तासुदूतहुइ हमकुल बोरा । ऐसिहुमति उरबिहरु न तोरा २
सुनिकठोर बाणीकपि केरी । कहत दशानन नयन तरेरी ३
खलतवबचन कठिन मैं सहऊं । नीतिधर्म सब जानत अहऊं ४
कहु कपिधर्म शीलता तोरी । हमहु सुनीकृतपर त्रिय चोरी ५
देखी नयन दूत रखवारी । बूड़ि न मरहु धर्म ब्रतधारी ६
नाककान बिनु भगनि निहारी । क्षमाकीन्हि तुमधर्म बिचारी ७
धर्मशीलता तवजग जागी । पावा दरश हमहु बड़ भागी ८
दो० जनिजलपसि जड़जंतु कपि शठबिलोकु ममबाहु ।
लोकपालबल बिपुल शशिग्रसन हेतुजनु राहु ॥ २० ॥

शिव और ब्रह्मा और सब देव मुनि जनोंके समुदाय जिन श्रीरामचंद्र के चरणों की सेवकाई को चाहते रहते हैं तिन के दूत होकर हम ने कुल बोरिदिया ऐसी बिपरीति मंद बुद्धि पर भी तेरा हृदय नहीं बिदरता है १ । २ ऐसी कठोर बाणी अंगद की सुनिकर रावण तरेरे नेत्र करिके बोला ३ अरे खल तेरे कठोर बचनों को मैं सुनिकर सहता हूं क्या करूं नीति धर्म को जानता हूं ४ तबतो अंगद ने कहा आपकी धर्म शीलता तो लोक में प्रसिद्ध होरही है जिसधर्म से आपने पराई स्त्री की चोरीकरी है हम ने भी सुनी है ५ और यह तो हमारे नेत्रों ही कीसी देखी है जैसी आपने अपने बड़े भाई कुबेर के भेजे दूत की रक्षा करी कि उस का अति निरपराध बध किया ऐसे धर्म ब्रत धारी होकर भी बूड़ि न मरे ६ फिरि

सुपेनखा को भी नक कान बिना देखा तब धर्म ही बिचारि कर आप क्षमा करि गये ॥ ऐसी धर्म शीलता तो आप की बिश्वमें बिख्यात होरही है हम को जो ऐसे धर्मात्मा का दर्शन हुआ हमारे भी बड़े भाग्य हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ तब तो रावण बोला मति बकै अरे जड़ जंतु बानर शठ मेरी भुजाओं को देखु कि लोक पालों के बल रूपी चंद्रमाओं के ग्रसने को मानों बीस राहु हैं ॥ २० ॥

दो० पुनिनभसर ममकरनिकर कमलनि परकरि बास ।
शोभित भयउ मराल इव शंभु सहित कैलास ॥

तेरे कटक मांझ सुनु अंगद । मोसन भिरिहि कवन योधावद १
तवप्रभु नारिबिरह बलहीना । अनुजतासु दुखदुखितमलीना २
तुम सुग्रीव कूलद्रुम दोऊ । बंधु हमार भीरु अति सोऊ ३
जामवन्त मंत्री अति बूढ़ा । सो किमि होइ समर अरूढ़ा ४
शिल्प कर्मजानहिं नलनीला । हैकपि एक महा बल शीला ५
आवा प्रथम नगर जेहिंजारा । सुनि हंसि बोला बालिकुमारा ६
जोअति सुभट सरायेहु रावण । सोसुग्रीव केर लघु धावन ७
चलै बहुत सो बीर न होई । पठवा खबरि लेन हम सोई ८

दो० सत्यकहेउ दशकण्ठ सबमोहिन सुनि कछुकोह ।
कोउ न हमरे कटक अस तोसन लरत जो सोह २१ ॥

फेरि आकाशरूपी सरोवर में मेरेकर कमलोंपर बासकरिके महादेव समेत हंस कीनांई कैलाश शोभताहुआ ॥ चौपाई ॥ ऐसामैं बलवान तामेरेसाथ सुनुतो रे अंगद तेरे कटकभरेमें कौनसा योधा युद्धकरैगा उसे तोबता १ तेरास्वामीतो स्त्रीके बिरहसे बल हीनहै भाई छोटा उसका उसके दुखसे दुखी और मलीन है २ तुम और सुग्रीव तटकेसे वृक्ष दोनों रहा हमाराभाई बिभीषण सोभीमहा कादरहै ३ ऋच्छराज जो जामवन्त है सो मंत्री है और अति बृद्ध है सो युद्ध क्या कर सक्ता है नल नील जोदोनों भाई हैं तेकेवल शिल्पकर्महो जानतेहैं हां एक बानर महाबलवान है ४ ।५ जो पहिले आया रहै जिसने नगर जारिदिया ऐसातो सुनतेही अंगद हंसे और बोले ६ अरे रावण जो तूनेहमारी सेना मेंबड़ायोधा सराहा सो तो महाराज सुग्रीव का छोटा साधावन है ७ जो बहुत चलता है सोबीर नहींहोता है उसको तोहम केवल सीताकी सुधिकेलिये भेजारहै ॥ ८ ॥ दोहा ॥सब सत्यकहातूने हेरावण मेरेको तेरेबचन सुनिकर कुछभीक्रोध नहीं है क्योंकि जोहमारा धावनहो तेरेकोजीतिगया तोअबहमरेकटकभरेमें ऐसाबलहीन कोईनहीं है जो तेरेसाथ लरते सोहे ॥ २१

दो० हंसिबोलेउ दशमौलितब कपिकर बड़गुण एक।
जोप्रति पालै तासुहित करैउपाय अनेक॥

धन्यकीशजो निज प्रभुकाजा। जहंतहं नाचहिं परिहरिलाजा १
नाचि कूदि करि लोग रिझाई। पतिहितकरहिं धर्मनिपुणाई २
अंगद स्वामिभक्ततवजाती। प्रभुगुणकसनकहसि यहिभांती ३
मैंगुण गाहक परमसुजाना। तवकटुरटनि करहुं नहिं काना ४
कहकपि तवगुण गाहकताई। सत्य पवनसुत मोहिं सुनाई ५
बनबिध्वन्सि सुतबधिपुरजारा। तदपिनतेहि कछुकृतअपकारा ६
सोइबिचारि तवप्रकृति सुहाई। दशकंधरमैं कीन्हि ढिठाई ७
देखेउंआइ जोकछु कपिभाषा। तुम्हरे लाज न रोष न माषा ८

दो० वक्रउक्तिधनु बचनशर हृदयदहेउरिपु कीश।
प्रतिउत्तर संडसिन्ह मनहुकाढ़तभट दशशीश॥२२॥

फिरि रावण बोलाकि बंदरों में एकबड़ा गुण होताहै जोकोई उनकोपालताहै उसके लियेअनेक यत्नकरतेहैं॥ चौपाई॥ बानर धन्यहैंजो अपनेस्वामीके लिये निर्लज्जहोकर जहांतहांनाचतेफिरते हैं १ नाचि कूदि लोगोंको रिझाइ अपनेस्वामीका हितकरतेहैं और स्वामी धर्मकी निपुणता करते हैं २ तातें हेअंगद तेरीतो जातिही स्वामिभक्त होतीहै तूअपने स्वामीके गुण इसभांति कैसे न कहै ३ तेरेमेंतो यहगुण है और गुण ग्राहकों में मैं परम सुजानहूं तेरागुण ग्रहण करताहूं कटुरटनिनहीं सुनताहूं ४ अंगद बोले तेरीगुण गाहकता सत्यहै हनूमान ने हमसे कहीरहै ५ कि मैंने रावणका बनउजारा पुत्रमारा नगरपजारा परंतु रावण मेरागुणही देखतारहा कुछभी अपकार नकिया ६ सोई तुम्हारी सुहाई प्रकृति बिचारिकर हेरावण मैंभीढिठाई करीहै ७ सो जैसा कुछ हनूमान कहारहै तैसाही आकर मैंने देखा कितुम्हारे नतो लाजहै नरिस है नतमकहै॥ ८॥ दोहा॥ टेढ़ीटेढ़ीउक्ति तो धनुषहै और तीक्ष्ण बचनहो बाण हैं तिनसे शत्रु का हृदय अंगदने वेधडारा तबतो प्रतिउत्तरकी संडासियों से मानों रावण उनको काढ़ता है॥ २२॥

जो असमति पितु खायहु कीशा। कहिअसबचनहंसा दशशीशा १
पितहिखाइ खातेउं पुनि तोहीं। अबहीं समुझि पराकछुमोहीं २
बालिबिमलयश भाजनजानी। हतहुन तोहिं अधम अभिमानी ३

कहु रावण रावण जगकेते। मैंनिज श्रवण सुने सुनु तेते ४
बलि जीतन एकगयउ पताला। राखा बांधि शिशुन हय शाला ५
खेलहिं बालक मारहिं जाई। दयालागि बलि दीन्ह छुड़ाई ६
एक बहोरि सहस भुज देखा। धाइ धरा जनु जंतु बिशेषा ७
कौतुक लागि भवन लैआवा। सो पुलस्त्य मुनिजाय छुड़ावा ८
दो० एक कहत मोहिं सकुच अति रहा बालिकी कांख।
तिन्हमहं रावण कवन तैं सत्य कहहु तजिमाख॥ २३॥

बोलाकि तेरी ऐसी तीव्रबुद्धि है तवतो बापको खालिया ऐसे बचन कहिकर रावण हंसिदिया १ अंगद बोले कि पिताको खाकर अबतेरे को भी खालेता परंतु इसीसमय कुछमेरी समुझ में अगया २ मेरे पिताके उज्ज्वल सुयश का तूभाजन है यह जानिकर तेरे को नहीं मारताहूं ३ कहुतो रे रावण इस संसारमें कितने रावण हैं मैंने जितने सुनेहैं उतने तोमेरे से सुनिले ४ एक रावण तो राजा बलिके जीतनेको पाताल गयारहै तहां उसको बालकोंने पकरि कर घुरसारमें बांधिदिया ५ अनेक प्रकारके उससे खेल खेलैं और मारैं जबबलि को दयालागी छुड़ादिया ६ एक रावण सहस्रार्जुनने देखा उसे कीट जंतुके समान पकरि लिया ७ कौतुक के निमित्त अपनी सभा में लेगया उसरावण को उसके पितामह पुलस्त्य मुनिने आकर छुड़ा दिया॥ ८॥ दोहा॥ एक रावण का चरित्रकहते तो मेरेको अतिही सकुच आतीहै कि मेरेपिता बालिहीकी कांखमें रातिभर दबारहा सो हे रावण मैं आपसे पूछता हूं किइन रावणों मेंसे आप कौन से महाबली रावणहैं सो आप कोपको क्षमा करिके सत्यसत्य कहिदेव॥ २३॥

सुनु शठ जो रावणबलशीला। हरगिरिजानु जासु भुज लीला १
जानु उमापति जासु सुराई। पूजेउं जेहि शिर सुमन चढ़ाई २
शिरसरोज निज करन उतारी। अमित बार पूजेउं त्रिपुरारी ३
भुजबिक्रम जानहिं दिगपाला। शठ अजहुं जिनके उर शाला ४
जानहिं दिग्गज उर कठिनाई। जबजब भिरेउं जाइ बरियाई ५
जिनके दशन करालन फूटे। उर लागत मूलक इवटूटे ६
जासु चलत डोलतिइमि धरणी। चढ़त मत्तगज जिमि लघु तरणी ७
सोरावण जग बिदित प्रतापी। सुनहु न श्रवण अलीक प्रलापी ८
दो० तेहिरावण कहं लघुकहसि नरकर करसि बखान।

रेकपि बर्बर खर्बखल अबजाना तवज्ञान ॥ २४ ॥

तबतो रावण बोला अरेशठ येतोनिहीं रावण तूने अपने कानों से सुने और जो महा बलशाल रावणहै जिसकी भुजाओंके बलको कैलाश जानता है सो जग विदित प्रतापी रावण तूने अरेअलीक प्रलापी उनकानों से नहींसुना १ जिस रावणकी शूरताको पार्वतीश जानते हैं किजिनको दशहू शिर कमल अपनेही हाथों से उतारि उतारि कर पूजन अनेक बार किया सो जगविदित प्रतापी रावण भी अरे अलीक प्रलापी तूने नहींसुना २।३ फिरि जिनदश रावणों के पराक्रमको दश दिग्पाल जानतेहैं किजिन रावणों के मारनेका उनके हृदयमें अबतक शालहै तेदश रावण भी अरेअलीक प्रलापी तूनेअपने कानोंसे नहीं सुने ४ जिन आठ रावणोंके हृदय की कठोरता को आठों दिग्गज जानते हैं कि जबजब उन दिग्गजों से बरियाई जा जा करिके लड़े तो जिन दिग्गजोंके महाकठोर दांतवज्रोंमें भी पाकर फूटिजावे तो दांत रावण के हृदयमें लगतेही मूलक कहें कठ-मूलेके दंडकी नाई टूटिगये ते आठ रावण जगविदितप्रतापी अरे अलीक प्रलापी तूने अपने कानों से नहीं सुने ५।६ फिरि जिसरावणके चलते पृथ्वी ऐसी डोलती है जैसे मत्त हाथीके चलते छोटी नावडोले ७ सो रावण जगविख्यात प्रतापी अरेझूठे बकवादीतूने कानोंसेनहीं सुना सो मैंहीहूं ८ ॥ दोहा। तिसमहाप्रतापी रावणकोतोतू लघुबताता है और मनुष्यका बखान करताहै अरेबावरे बकवादीबानर मैंनेतो तेराज्ञान अबजानि पाया॥२४॥

सुनि अंगद सकोप कह बानी । बोलु संभारि अधम अभिमानी १
सहसबाहु भुज गहन अपारा । दहन अनल समजासु कुठारा २
जासु परशु सागर खर धारा । बूड़े नृप अगणित बहु बारा ३
तासु गर्ब जेहि देखत भागा । सो नर क्यों दशशीश अभागा ४
राम मनुज कसरे शठ बंगा । धन्वी काम नदी पुनि गंगा ५
पशु सुर धेनु कल्पतरु रूखा । अन्नदान पुनि रसकि पियूषा ६
वैनतेय खगअहि सहसानन । चिन्तामणि पुनि उपलदशानन ७
सुनुमति मन्द लोक बैकुंठा । लाभ कि रघुपतिभक्ति अकुंठा ८
दो० सेन सहित तव मानमथि बन उजारि पुर जारि ।
कस रे शठ हनुमान कपि गयउ जो तव सुत मारि॥२५॥

जब रावण ने राम को मनुष्य कहा तबतो अंगद बड़े कोप समेतबोले अरेअधम अभिमानी कैसा बकता है संभारि कर बोला कर १ देखतो जिस सहस्रार्जुन ने तेरे को सहसाही जीति लिया उस सहसबाहु की प्रबल भुजाओं के अपार बन का दाहक जिन परशुराम का कुठार प्रचण्ड आगि के समान रहे तिन परशुराम का

गर्व जिन रामचंद्र के देखतेही जाता रहा अरे अभागे सो रामचंद्र मनुष्य कैसे हैं २ । ३ । ४ राम मनुष्य कैसे रे शठबावरे काम क्याकमनेतहै और गंगा क्या नदी है ५ कामधेनु क्या पशु है कल्प वृक्ष क्या जड़ रूख है अन्नदान क्या सामान्य दान है अमृत क्या सामान्य रस ६ बिनता के पुत्र गरुड़ क्या समान्य पक्षी हैं शेष क्या सामान्य सर्प हैं चिन्तामणि क्या अरे रावण पाषाणही है ७ सुनु रे मतिमंद त्रिगुण तीन दिव्यबैकुंठ क्या सामान देवलोकोंही की गणना में है जो पुनरावृत्ति बर्जित हैं और भगवद्भक्ति क्या सामान्य लाभों में है जो मुनि दुर्लभ और भव भंजनहि ८ ॥ दोहा ॥ जो शतयोजन समुद्र को लांघि आया और सेना समेत ते मानभङ्ग किया बन उजारा पुरपजारा तेरे पुत्र अक्षको मारा अरे शठ सो हनुमान क्या सामान्य बानरही है ये सब के सब आकृति में तद्रूप हैं वास्तवमें भिन्न हैं २५ ॥

सुनु रावण परि हरि चतुराई । भजसि न कृपासिंधु रघुराई १
जो खल भयसि राम कर द्रोही । ब्रह्मरुद्र शकराखिन तोही २
मूढ़मृषा जनि मारसि गाला । राम वैर होइहि अस हाला ३
तव शिर निकर कपिन्ह के आगे । परिहैं धरणि रामशरलागे ४
ते तवशिर कन्दुक इव नाना । खेलिहिं भालु कीश चौगाना ५
जबहि समरकोपहिं रघुनायक । छूटहिं अतिकरालबहुशायक ६
तबकिचलिहि असगालतुम्हारा । असबिचारि भजुरामउदारा ७
सुनत बचन रावण पर जरा । जरत महा नल जनुघृत परा ८
दो० कुम्भकर्ण सम बन्धु मम सुत प्रसिद्ध शक्रारि ।
मोर पराक्रम नहिं सुनेहु जितेउं चराचर झारि ॥ २६ ॥

तातें सुन रे रावण इनमिथ्या चतुराइयोंको छोड़ि कृपासिंधु श्रीरामचचंद्रके शरण को क्योंनहीं जाता है १ और रे खल जो तू रामचंद्र का द्रोही हुआ तो ब्रह्मा और शिव जिनके भरोसे पर तू भूला फिरता है कोईभी न बचासकैंगे रामायणे ॥ ब्रह्मा स्वयंभूचतुराननोवारुद्रस्त्रिनेत्रोत्रिपुरान्तकोवा इंद्रोमहेंद्रःसुरनायकोवा त्रातुंनशक्योयुधि रामवध्यं २ त तें अरे मूढ़ वृथा गाल मतिमारै राम के बैरसे तेरीऐसी दशा होगी ३ कि तेरे शिरों के समूह बानरों के चरणों के नीचे रामचंद्र के बाणों के मारे लुढ़ते फिरैंगे ४ ते तेरेशिरगेंद के समान लेले कर रीछ बंदर चौगान खेलैंगे ५ जो समय श्रीराम संग्राम में कोप करैंगे और महा कराल बाण छोड़ैंगे तबतेरे ऐसे गाल नहीं चलेंगे यह बिचारि कर परम उदार श्रीरामचन्द्रही के शरण जा ६ । ७ ऐसे अंगद के बचन सुनतेही ऐसा प्रज्वलित हो गया मानों किसीने जरती अग्नि में घी गेरदिया

बोला ८ ॥ दोहा कुम्भकर्ण के समान मेरा छोटा भाई है और इन्द्रजीत सा पुत्र है और मेरापराक्रम क्या तूनेनहींसुनाहैकि चराचर सब प्राणियोंको जीतिचुका हूं॥ २६

शठशाखा मृग जोरि सहाई। बांधेउ सिंधु यही मनु साई १
लांघहिं खग अनेक बारीशा। शूर न होहिंते सुनु शठकीशा २
ममभुज सागर बल जल पूरा। जहं बूड़े बहु सुर नर शूरा ३
बीस पयोधि अगाध अपारा। को असवीर जोपाइहि पारा ४
दिश पालन मैं नीर भरावा। भूप सुयश खल मोहिं सुनावा ५
जोपै समर सुभट तव नाथा।पुनिपुनि कहसि जासु गुणगाथा ६
तौबसीठ पठवा केहि काजा। रिपुसन प्रीति करत नहिं लाजा ७
हरगिरिमथननिरखिममबाहू।पुनिकपिशठनिजप्रभुहिसराहू ८
दो० शूर कवन रावण सरिस स्वकर काटि दश शीश।
हुतेउं अनल महं बारबहु हरषित साखि गिरीश॥ २७॥

अरे शठ तेरा स्वामी इधर उधरसे शाखामृगोंको जोरि समुद्र बांधि पारउतरि आया है इतनीही मनुसाई पर फूला नहीं समाता है १ सोइस समुद्रको तो अनेक पक्षीभी लांघि आते हैं अरे शठ ते क्या शूर होजाते हैं २ मेरी भुजोंके समुद्र जो अपार बलके जलसे पूरित हैं जिनमें बड़े बड़े शूर देव मनुष्य सब बूड़ि गयेहैं ऐसे बीस समुद्र अथाह औरोंका ऐसा कौन बीरहै जोपार पासकै ३ । ४ दिग्पालों से तो मैंने पानी भराया है सो मेरेको यह खल अल्पदेश के राजाका सुयश सुनाता है ५ सुनुतो रे अंगद जो तेरा नाथ संग्राम सुभटहै जिसका तू बारंबार सुयश बखानताहै तो उसने तेरेको मेरेपास बसीठ क्यों भेजा शत्रुसे प्रीति करते लाजभी नहीं आती है॥ ६॥ ७॥ तातेंप्रथम कैलाशमथनमेरी बीसोंभुजाओंकोदेखु तबहेशठअपने स्वामी की प्रशंसा कर ८॥ दो०॥ अरे शठ रावणके समान शूर इससंसारमें दूसरा कौन है जिसनेअपनेही हाथोंसे अपनेशिर अनेक बार प्रसन्न मन काटिकाटिकर अग्निमें होमि दिये हैं इस बात के साक्षी साक्षात् गिरीश श्रीशिव महाराज हैं॥ ३०॥

जरत बिलोकेउं जबहिं कपाला। बिधिके लिखे अंक निजभाला १
नरके कर आपन वध बांची। हंसेउं जानि बिधि गिरा असांची २
सोउमनसमुझित्रासनहिं मोरे। लिखाविरंचि जठर मति भोरे ३
आन बीर बल शठ ममआगे। पुनिपुनि कहसि लाज पति त्यागे ४
कह अंगद सलज्ज जगमाहीं। रावण तोहि समानकोउनाहीं ५

लाजवंत तवसहज सुभाऊ । निजगुण निजमुख कहसिनकाऊ ६
शिर अरु शैल कथा चित रही । तातें वार बीस तैं कही ७
सो भुज बलराखेहु उर घाली । जीतेहु सहसबाहु बलिबाली ८
दो० जरहिं पतंग विमोह बश भार बहहिं खर वृंद ।
ते नहिं शूर सराहिये समुझि देखु मति मंद ॥ २८ ॥

जरते में जब मैंने अपने कपाल देखे उनमें विधाता के लिखे अंक ललाटों में दीख पड़े तब मनुष्य के हाथोंसे अपना बध बांचिकर में बहुत हंसा कि बिधाता भी झूठ लिखने लगा ॥ २ ॥ सोभी समुझकर मेरे को कुछ भी डर नहीं है क्योंकि वृद्ध ब्रह्माने भूलकर लिखि दिया होगा ॥ ३ ॥ सो ऐसे मोसरीखे वीरके आगे दूसरे वीरके बलको तू निर्लज्ज होकर बारबार बखानता है ॥ ४ ॥ अंगदने कहा सलज्ज तो इससंसार में अरेरावण तेरेसमान दूसराकोई भी नहींहै ॥ ५ ॥ लाजवंततो तेरा सहज स्वभावही है कि अपने गुणोंको अपने मुखसे भी कहताही नहीं है ॥ ६ ॥ हां शिरकाटने और कैलाश उठाने दो कामोंकी कथा चित्तपरचढ़ीहै तातें बीसबार सोई कहिचुकाहै ॥ ७ ॥ और सो अपनी भुजाओंका बलपेट का पेटही में डारिरक्खा है जिस बलसे सहस्रार्जुन और राजाबलि और मेरेपिताबालि को जीताहै ॥ ८ ॥ दो० ॥ जरि मरने और बोझउठाने में भी शूरता नहीं है क्योंकि पतंगे अज्ञान के बश दीपक पर जरि मरते हैं और गदहों के समूह सदा बोझही बहा करते हैं तिनकी कहीं शूरोंमें सराहना नहीं होती है रे मति मंद अपने मनहीं में विचारले ॥ ८ ॥

अबजनिबत बढ़ावखलकरसी । सुनिममबचन मानपरहरसी १
दशमुख मैं न बसीठी आयउं । अस बिचारि रघुबीर पठायउं २
बारबार असकहहिं कृपाला । नहिं गजारि यश बधे शृगाला ३
मनमहं समुझि बचन प्रभुकेरे । सहेउं कठोर बचन शठ तेरे ४
नाहिं तो करि मुख भंजन तोरा । लैजातेउं सीतहि बरजोरा ५
जानहु तव बल अधम सुरारी । सूने हरि आनेहु पर नारी ६
तैं निशिचर पति गर्व बहूता । मैं रघुपति सेवक कर दूता ७
जौं न रामअपमानहिं डरऊं । तोहि देखतअस कौतुककरऊं ८
दो० तोहि पटकिमहि सेन हति चौपट करि तव गाउं ।
मंदोदरी समेत शठ जनक सुतहि लैजाउं ॥ २९ ॥

अरेखल अबतू बहुतबात बढ़ाव मति करै मैं जो बचन कहूं उनको सुनिकर

इस अभिमान को छोड़िदे १ मैंकुछ तेरेपास बसीठी संधिकरने को नहींआया किंतु यह बिचारिकर श्रीरामचंद्र ने मेरे को भेजाहै २ वारबारपरमकृपाल रामचंद्र ने यह कहाहै किस्यारोंके मारने में मत्तहाथियोंके मारनेवारे सिंहका यश नहीं होताहै ३ मैंभी तिसीअपने स्वामीके सत्यबचनोंको समुझिकर अरेशठ तेरेये कठोरबचन सहता हूं ४ नहींतो तभी तेरामुख भंजन करिके बरियाई सीताको लेजाता ५ तेरेबलको तो अरे अधम असुर मैंतभीसे जानताहूं किसूने में पराई स्त्रीचुरालाया ६ तूतो इसलंका मेंसब राक्षसों का स्वामीहै औरअपने बलका बड़ागर्व रखताहै औरमैं रामचंद्रकेसेवक सुग्रीवका एकदूतहूं सोभी जोरामकी आज्ञा भंगसे नडरूं तोतेरे देखतेही ऐसा कौतुक करूं ७ । ८ ॥ दोहा ॥ कितेरेको तो पृथ्वी परपटकि मारूं औरसमस्त तेरीसेनाको मारिलंकाको चौपटकरि मंदोदरी समेत अरेशठ सीता को लेजाऊं ॥ २६ ॥

जौंअस करों न तदपि बड़ाई । मुयहि बधे कछुनहिं मनुसाई १
कौल काम बश कृपिण बिमूढ़ा अतिदरिद्र अयशी अति बूढ़ा २
सदा रोग बश संतत क्रोधी । विष्णु बिमुख श्रुतिसंत बिरोधी ३
तनपोषक निंदक अघखानी । जीवत शव सम चौदह प्राणी ४
अस बिचारिखलबधौं न तोहीं । अबजनिरिस उपजावसिमोहीं ५
सुनिसकोप कहनिशिचर नाथा । अधरदशनडसि मीजतहाथा ६
रे कपिपोच मरणअब चहसी । छोटे बदन बात बड़ि कहसी ७
कटुजलपसि जड़कपि बल जाके । बलप्रताप बुधितेज न ताके ८
दो० अगुण अमान जानि तेहि पिता दीन्ह बनबास ।
सोदुख अरु युवतीबिरह पुनिनिशिदिन मम त्रास ॥ ३० ॥

जोऐसा करूं तौभी कुछमेरी बड़ाईनहीं क्योंकि मरेको मारनेमें कुछमनुसाई नहीं होतीहै १ क्योंकि इतने जीवतेही मरे,मेंतूभीहैप्रथमतोकौलवाममार्गी जो मद्यपान से सदा अचेतही रहताहै १ दूसरा कामी२ तीसरा लोभी, ३ चौथा मूढ़जो हितोपदेश को न माने ४ पांचवां अति दरिद्री ५ छठा अपयशी ६ सातवां अति वृद्ध ७।२ आ-ठवां सदा रोगी ८ नवां अकारण क्रोधी ९ दशवां विष्णु बहिर्मुख १० ग्यारहवां वेद भागवत बिरोधी ११ बारहवां निजतन पोषक १२ तेरहवां परनिन्दक १३ चौदहवां पाप परायण १४ येचौदह तो अरेरावण जीवतेही मरे के समान होते हैं सो इन लक्षणोंमें से तेरे तो बहुत विद्यमानहैं तातेंतूभी मृतक तुल्यहीहै३।४ यहविचारिकर मैंतेरे को नहीं मारताहूं परंतु अबतू मेरेको रिसमति उपजावै ५ ऐसे कठोर महा दुस्सहबचन सुनतेही रावण दांतोंसे ओठ चबाता और हाथमीजता बड़ेकोपसे बोला६ अरेनीच बंदर अबतू मराही चाहताहै छोटेमुखसे बड़ीबात कहताहै ७ जिसकेबल

से तूयह कटु जल्पना करताहै उसके तौ बुद्धितेज बल प्रताप कुछभी नहींहै ॥ २९ ॥ दोहा ॥ गुणहीन अमानी जानिकर तोउसको उसके पिताहीने निकासि दिया एकतौ उसकोयहीदुखरहै अवतिसपर युवतीका बियोगऔर दिनरातिमेंडर रहताहै ॥३०॥

दो० जिनके बलकर गर्ब तोहि ऐसे मनुज अनेक ।
खाहिं निशाचर दिवस निशि मूढ़ समुझितजि टेक ॥
जब तेहिं कीन्ह रामकी निंदा । क्रोध वंततब भयउ कपिंदा १
कट कटाइ कपि कुंजर भारे । दोउ भुजदंड तमकिमहि मारे २
डोली धरणि सभा सद खसे । चले भागि भय मारुत ग्रसे ३
गिरत दशानन उठेउ संभारी । भूतल परेउ मुकुट षट चारी ४
कछु तेहिं लैनिज शिरन सवांरे । कछु अंगद प्रभुपास पवांरे ५
आवत मुकुट देखिकपि भागे । दिनहीं लूक परन बिधि लागे ६
कह प्रभु हंसिजन हृदय डराहू । लूकनअशनिन केतुन राहू ७
ये किरीट दश कंधर केरे । आवत बालि तनय के प्रेरे ८
दो० तकि गहेउ कर पवन सुत आनि धरे प्रभु पास ।
कौतुक देखहिं भालु कपि दिनकर सरिस प्रकाश ॥ ३१ ॥

जिनके बलका तेरेको इतना गर्बहै ऐसेतो अनेक मनुष्योंको मेरे राक्षस सदाहीं खाया करतेहैं अरेमूढ़ हठको छोड़िकर समझिजा ॥ चौपाई ॥ जबरावणने रामकीऐसी नन्दाकरी तब अंगद बड़ेहीं कोपितहुये १ कटकटा शब्द करिके महाभारे कपिकुंजर ने दोनों अपने भुजदंड तमकिकर पृथिवी पर देमारे २ भुजदंडोंके मारतेहीं पृथिवी डोलने लगी सभासद गिरिपरे और भयके मारे भागे ३ रावणभी गिरिकर संभारता उठा और उसके छचारिमुकुट पृथिवीपर गिरिपरे ४ छतो रावणने लेकर अपनेशिरों पर रखलिये और चारि अंगदने उठाकर रामचंद्रके पास फेंकिदिये ५ उन मुकुटोंको आवता देखतेही बंदर भगे हेदेव क्या दिनही लूकेंपरने लगे ६ रामचद्रने कहाकोई भयमति करो येतो नलूकैहैं न बज्रपातहैं नराहु केतुहैं ७ येतो रावणके मुकुट हैंअंगदके फेंकेचले आतेहैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ तबतो हनूमानने कूदिकर हाथों में लेलिये और रामचंद्रके पास रखदिये बंदर रीछकौतुकदेखतेहैं जिनकासूर्य्यके समानप्रकाशहै ३१

उहां कहत दशकंठरिसाई । धरि मारहु कपि भागि न जाई १
यहिबिधिबेगिसुभट सबधावहु । खाहुभालु कपिजहंतहंपावहु २
महि अकीश करिफेरिदुहाई । जियत धरहु तापस दोउ भाई ३

तब सकोप बोलेउ युवराजा । गाल बजावत तोहिं न लाजा ४
रे त्रिय चोर कुमारग गामी । खल मलराशि मंद मति कामी ५
सन्नि पातजल्पसि दुर्बादा । भयसि काल बशखलमनुजाद ६
राम मनुजबोलत असिबानी । गिरहि न तवरसना अभिमानी ७
गिरि हैं रसना संशय नाहीं । शिरनि समेत समर महिमाहीं ८

सो० सोनरक्यों दशकंध बालि बधेउ जेहि एक शर ।
बीशहु लोचन अंध धिगतव जन्म कुजाति जड़ ॥
तव श्रोणित की प्यास तृपितराम शायक निकर ।
तजहु तोहिं तेहि त्रास कटु जल्पक निशिचर अधम ३२॥

उहां रावणरिसाइकर कहनेलगा धरि मारो इसबंदर कोभागि नजाने पावे १ इसको मारिकर वेगिही सबसुभट धावा करो जहां जहां बंदररीछ पाओ खाजाओ २ पृथिवीको बानरहीन करिके मेरी दुहाई फेरिदो और तपश्वी दोनों भाइयोंको जीताही पकरिलाओ ३ तबतो अंगद बोल अरेनृलज्ज तेरेको गाल बजाते लाजनहीं आतीहे ४ अरे त्रियचोर अरे कुमार्गी अरेखल पापी मंदबुद्धि कामी सन्निपातकी नाईंक्यों दुर्वाद बकताहै कालकेवश होगया मेरेको जानि परताहे ५ । ६ रामचंद्र को बारंबार मनुष्य ऐसीबाणी बोलते अभिमानी तेरी जिह्वाभी नहीं गिरतीहे जिह्वातो गिरैहींगी इसमें संदेह नहींहे परंतुशिरों समेत संग्राम भूमिमें गिरैगी ७ ८ ॥ दोहा ॥ अरे रावण जिन रामने महाबली मेरे पिता वालिको एकही बाणसे मारा सोराम मनुष्यकैसे हैं बीशों आंखोंके अंधेतेरे जीवने को धिक्कारहै कुजाति जड़तेरे लोहूके प्यासे रामचंद्रके बाणोंके समूहहैं उसडरसे मैं तेरे को छोड़ताहूं अरेकटु बादी अधम निशाचर ३२ ॥

युक्ति सुनत रावण मुसुकाई । मूढ़ सिखी कहं बहुत झुठाई १
बालिकबहुं असगाल न मारा । मिलि तपसिन्ह तैंभयसि लवारा २
सांचहु मैं लवार भुज बीशा । जो न उपारउं तव दश शीशा ३
राम प्रताप सुमिरि कपिकोपा । सभा मांझ प्रणकरि पदरोपा ४
जो मम चरण सकै कोउ टारी । फिरहिं राम सीता मैं हारी ५
सुनहु सुभट सब कह लंकेशा । पदधरि धरणिपछारहु कीशा ६
इंद्रजीत आदिक बलवाना । हरषि उठे जहंतहं भटनाना ७
झपटहिं करिबल विपुल उपाई । पद न टरै बैठहिं शिर नाई ८

दो० भूमि न छांड़त कपि चरण देखत रिपु मद भाग।
　　कोटि विघ्न ते संतकर मनजिमि नीति न त्याग ॥ ३३॥

ऐसी अनेक युक्ति सुनि रावण ने मुसुकाइ कर कहा अरे मूढ़ ऐसी बहुत सी झुठाई तूने कहांसे सीखीहैं १ बालिने तो कभी ऐसे गाल न मारे रहैं अब तपसियों से मिलि कर तू लवार हुआहे २ तबतो अंगद ने कहा अरेरावण जो मैंने तेरीये बीसों भुजान तोरिलीं तोलवारमेंसांचहूं बनो बनायाहोहूंइश्रीरामचन्द्रकेअघटित घटना शक्ति प्रतापको स्मरणकरि करिके अंगद अति कोपितहुआ और समस्तरावणकी भरीहुई सभा मेंयहप्रण करिके पाउंरोपिदिया ४ कि सुनरे रावण में पैजबांधिकर कहताहूं कि तेरी लंका भरेमें जो कोइ भी मेरे इस पैर को हटादेवे तो रामचन्द्र सेना समेत अभीचले जावेंगे सीता कोमैं हारि चुका ५ ऐसाअंगदका दृढ़ प्रण सुनिकर रावण बोला हे सब योधाओ मेरी आज्ञाहे किइसढीठ बांदर का यही पाउंपकरिकर पछारि डारो ६ यह सुनतेही मेघनाद समेत सबयोधा हर्ष सहित जहां तहां खड़े होगये ७ झपटि झपटि अपना अपनासा बहुतेरा बल करि करि पाउंको हटातेहैं जबनहीं हटता है नीचेको शिर करिके बैठि जातेहैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जब किसी भांतिसे अंगदका पैरनहीं हटता है सोतो देखतेही रावणका मददूरि होगया जैसे कोटिहू विघ्नसे संतोंका मन नीति को नहीं छोड़ता है ॥ ३३ ॥

कपि बल देखि सकल हियहारे । उठा आप युवराज प्रचारे १
गहत चरण कह बालि कुमारा। ममपद गहे न तोर उबारा २
गहसि न राम चरण शठ जाई। सुनत फिरा मन अति सकुचाई ३
सिंहासन बैठा शिरनाई। मानहुं संपति सकल गंवाई ४
पुनि कपिकही नीति बिधिनाना। मानत नाहिं काल नियराना ५
रिपुमदमथिप्रभुसुयश सुनायो। यहकहि चलेउबालि नृपजायो ६
हतिहों खेत खेलाइ खिलाई। तोहिं अबहिं का कहों बढ़ाई ७
प्रथमहि तासु तनयकपिमारा। सोसुनि रावण भयउ दुखारा ८

दो० रिपुबल धर्षि हर्षि कपि बालि तनय बल पुंज।
　　सजल बिलोचन पुलकि तन गहे राम पदकंज ॥ ३४ ॥

जब अंगद के बलको देखि करसबके सब हिये हार होगये तबतो रावण आपही उठा और अंगदको ललकारा जब पैरउठाने को झुका तबतो अंगदने कहा अरेशठमेरे पैर परनेसे तेरा बचाव नहीं होगा बचना है तो रामही के चरणों क्यों नहींपरताहे ऐसासुन-तेही रावण अतिही लज्जित होकर लौटि गया २ । ३ सिंहासन पर नीचाशिर करिके केसा

जा बैठा मानों अपनी सब संपत्ति खो बैठा फिरि भी अंगद बड़ी कोमलता से अनेक भांतिकी नीति कहिकर उसको समुझाया परंतु कालवश उसने एक न माना ५ तबतो शत्रु के मदको मथि अपने स्वामीका सुयश सुनाइ यह कहिकर अंगद चलि दिये ६ जैसा तूने मेरा कहना नहीं मानाहै तैसाही युद्धक्षेत्रमें तेरेको खिलाइ खिलाइ करमारूंगा इससमय बहुत बढ़ाइकर क्याकहूं ७ प्रथमही आते समय जो उसके पुत्रको अंगदनेमाराहै उस को रावण सुनिकर बड़ा दुखी होगया ॥ ८ ॥ दोहा ॥ शत्रु के बलको घर्षि हर्षि समेत अंगद महा बलपुंज सजल नेत्र पुलकित गात श्रीरामचंद्र के चरण आ गहे ॥ ३४ ॥

दो० सांझ जानि दशकंधर भवन गयउ बिलखाइ ।
मंदोदरी निशाचरहिं बहुरि कहा समुझाइ ॥

कंतसमुझि मनतजहु कुमतिही । सोहनसमर तुमहिं रघुपतिही १
रामानुज लघु रेख खचाई । सोउ न लांघेहु असि मनुषाई २
कौतुक सिंधु लांघि तव लंका । आयउ कपि केसरी अशंका ३
रखवारे हति बिपिन उजारा । देखत तुमहिं अक्ष जेहिंमारा ४
जारि सकल पुर कीन्हेसि छारा । कहांरहा बलगर्व तुम्हारा ५
जनकसभा अगणित महिपाला । रहे तुमहुं बलगर्व बिशाला ६
भंजि धनुष जानकी बिवाही । तब संग्राम जितेहु किनिताही ७
अब पति मृषागाल जनिमारहु । मोर कहाकछु हृदयबिचारहु ८

दो० बधि बिराध खर दूषणहिं लीलहि हतेउ कबंध ।
बालि एक शरमारेउ सोनर क्यों दशकंध ॥ ३५ ॥

सांझ समय जानिकर रावण अति उदास मंदिर को गया तहां मंदोदरी ने उस को फिरि समुझाकर कहा ॥ चौपाई ॥ हे कन्त अपने मनमें समुझि कर इस कुमति को छोड़ो तुमको रामके साथसंग्रामशोभानहीं देताहै १ क्योंकिइनके छोटेभाईलक्ष्मण ने न कुछ धनुष की रेखा खींची रहै सो भी तो तुम न लांघि सके ऐसी तोतुम्हारी मनुषई है २ फिरि खेलही करिके समुद्र लांघि कर अति अशंक उनका बानर चला आया उसने रखवारों को मारि कर बन उजारि दिया औ तुम्हारे देखतेही अक्षको भी मारा और संपूर्ण नगरको जरा करछार करदिया तब तुम्हारा बल औ गर्बकहां गया रहै ३ । ४ । ५ फिरि जब मिथिलाधिपति राजा जनक की सभामें अनेकराजा जुरे वहां तुमभी बड़ेबलगर्वित रहो ६ उस सभामें जब इन्हीं रामनेधनुष तोरिकर सीता को बिवाहा तभी तुमने उनको संग्राम करिके क्यों न जीति लिया ७ तातें हेपति अब झूठे गाल मति मारो कुछ मेरे कहने को भी हृदय में बिचारो ॥ ८ ॥

दोहा ॥ जिनने बिराध खर दूषण को मारि कर कबंध को लीलाही में मारि दिया फिरि महाबली बालिको एकही बाण से मारा हेपति ते भलामनुष्य कैसेहैं ॥ ३५ ॥

जिहिं जल नाथ बंधायउ हेला । उतरेउ सेन समेत सुबेला १
कारुणीक दिन कर कुल केतू । दूत पठायउ तव हित हेतू २
सभा मध्य जेहि तवबल मथा । करि बरूथ महं मृगपतियथा ३
अंगद हनुमत अनुचर जाके । रण बांकुरे बीर अति बांके ४
तिहिं कहं पिय पुनिपुनिनरकहहू । सुधामान ममतामद बहहू ५
अहह कन्त कृतराम बिरोधा । कालबिबश उर उपजु न बोधा ६
काल दंड गहि काहु न मारा । हरै प्रथम बल बुद्धि बिचारा ७
निकटकाल जेहि आवतसाईं । तेहि भ्रम होइ तुम्हारिहिनाईं ८
दो० द्वयसुत मारेउ दहेउ पुर अजहूं पर त्रिय देहु ।
कृपासिंधु रघुनाथ भजि नाथ बिमल यश लेहु ॥ ३६ ॥

जिन राम ने समुद्र एकही हल्ले में बंधालिया और सेना समेत सुबेला पर आ उतरे १ ऐसे करुणावान भानुकुल केतु कि तेरे हितके लिये दूतभी भेजा २ जिसने तेरी सभा समेत तेरेबलको मथाजैसे हाथियोंके बल को सिंह मथै ३ अंगदहनुमान से बलवान तो जिनके अनुचर हैं रण बांकुरे महा बांके बीर ४ तिन रामको हेपति तुम बार बार मनुष्यही कहते हो वृथा मान मद ममता को लादे फिरते हो ५ हाकंत तुमने रामके साथ बैर बांधा है और काल के बश किसी के समुझाने से भी तुमको बोध नहीं होता है ६ काल ने कभी किसी को दंड हाथ में लेकर नहीं मारा है उसका तो यही मारना है कि जिसको मारा चाहता है उसका बल बुद्धि बिचार पहिलेही हरिलेता है ७ जिसके निकट जब काल आता है तब उसको तुम्हाराही सा भ्रम होजाता है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ दो पुत्र मारे गये नगर जारा गया अब भी पराई स्त्री को दे दो कृपासागर श्री राम के शरण जाकर हेनाथ संसार में निर्मल यश ले लो ॥ ३६ ॥

नारि बचनसुनिबिशिखसमाना । सभागयउउठिहोतबिहाना १
बैठा जाइ सिंहासन फूली । अति अभिमान त्राश सब भूली २
यहां राम अंगदहि बोलावा । आइ चरण पंकज शिर नावा ३
अति आदर समीप बैठारी । बोले बिहंसि कृपाल खरारी ४
बालितनय अतिकौतुक मोहीं । तात सत्य कहु पूछहुं तोहीं ५

रावण यातुधान कुलटीका । भुजबल अतुल जासु जगलीका ६
तासुमुकुट तुम चारि चलाये । कहहु तात कवनी बिधि पाये ७
सुनु सर्बज्ञ प्रणत हित कारी । मुकुट न होइं भूपगुण चारी ८
दो० धर्महीन प्रभु पद बिमुख कालबिवश दशशीश ।
तेहिपरिहरि गुणआये सुनहुं कोशला धीश ॥ ३७ ॥

मंदोदरी के बचन महा कठोर बाणों के समान सुनि कर प्रातहोतेही सभा को उठिगया १ तहां सिंहासन पर फूलिकर जा बैठा अतिअभिमान से सब त्राश भूलि गई २ यहां प्रात होतेही श्री रामचन्द्रने अंगद को बुलाया अंगद ने आकर चरणों को शीशनवाया ३ बड़े आदरसे पास बैठारि कर कृपाल श्रीरामचंद्र हंसिकर बोले ४ हे बालिपुत्र मेरेको बड़ा आश्चर्य्यहै सत्य कहिये हेतात मैं तेरे से पूछताहूं ५ रावण समस्त राक्षस कुलका तिलक जिसके भुजाओं का बल संसार जानताहै ६ उसके शिरके मुकुट तुमने चारि यहांको फेंके कहो तो हे तात सो कैसे पाये ७ अंगद ने कहा हे सर्वज्ञ स्वामी मुकुटनहीं हैं राजाओं के चारों गुणहैं ८ ॥ दोहा ॥ तेचारोंगुण रावण को धर्महीन आपके चरणों से बिमुख कालकेबश जानिकर उसका त्यागकरके आपके पास आयेहैं ॥ ३७ ॥

दो० परमचतुरता श्रवण सुनि बिहंसे राम उदार ।
समाचार पुनि सब कहेउ गढ़के बालिकुमार ॥
रिपु के समाचार जब पाये । राम सचिव सब निकट बोलाये १
लंकाबांकी चारिहु द्वारा । केहि बिधि लाघिय करहु बिचारा २
तबकपीश ऋच्छेश बिभीषण । सुमिरि हृदयदिनकर कुलभूषण ३
करि बिचार तिन मंत्र दृढ़ावा । चारिअनी कपिकटक बनावा ४
यथायोग्य सेनापति कीन्हे । यूथप सकल बोलि तब लीन्हे ५
प्रभुप्रताप कहिसब समुझाये । सुनि कपि सिंहनाद करिधाये ६
जानत परम दुर्ग अति लंका । प्रभु प्रताप कपि चले अशंका ७
घटा टोप करि चहुंदिशि घेरी । मुखहि निशान बजावहिं भेरी ८
दो० जयतिराम जयलक्ष्मण जय कपीश सुग्रीव ।
गर्जहिं केहरि नादकपि भालु महाबल सींव ॥ ३८ ॥

अंगदकी परम चातुरी सुनतेही उदार श्रीराम चन्द्र हंसे फिरि तो लंकाके सब

समाचार अंगद ने कहे ॥ चौपाई ॥ जब शत्रु के समाचार पा लिये तबतो रामचन्द्र ने सब मंत्री बुलाये १ लंकातो चारों द्वारपर महा बांकी है कौन प्रकार चढ़ाई करें सो बिचार करो २ तबतो सुग्रीव जामवन्त और बिभीषण ने हृदय में रामचन्द्रही का स्मरण किया ३ और बिचार करके मंच दृढ़किया सबकटक की चारिसेना बनाई और यथा योग्य उनके सेनापति करदिये फिरि सब यूथपति बुलाये ४।५ रामचन्द्र का प्रताप कहिकर सबको समुझा दिया सुनतेही सिंहनाद करिके रीछ बानर दौरे ६ लंका को परम दुर्गम जानते भी हैं तौभी रामचंद्र के प्रतापसे अशंक चलेजाते हैं ७ घटाटोप करिके सब ओरसे जा घेरी मुखही जिनके निशान और भेरी बाजते हैं और यह कहते चलेजाते हैं जयत्यतिबलोरामः लक्ष्मणश्चमहाबली राजाजयतिसुग्रीवो राघवेनाभिपालितः अर्थात् जयराम जयलक्ष्मण जय राजासुग्रीव ऐसे महाबली बानर रीछ गर्जते चलेजाते हैं ॥ ३८ ॥

लंका भयउ कुलाहल भारी । सुनीदशानन अतिह हंकारी १
देखहु बनरन्हि केरि ढिठाई । बिहंसि निशाचर सेन बुलाई २
आये कीश काल के प्रेरे । क्षुधा वन्त रजनीचर मेरे ३
सुभट सकल चारिहु दिशिजाहू । धरिधरि भालुकीशसबखाहू ४
चले निशाचर आयसु मांगी । गहिकर भिंदिपाल बरशांगी ५
तोमर मुद्गर परशु प्रचंडा । शूलकृपाण परिघ गिरिखंडा ६
जिमिअरुणोपल निकर निहारी । धावहिं शठखगमांस अहारी ७
चोंचिभंगदुख तिनहिं न सूझा । तिमिधाये मनुजाद अबूझा ८
दो० नानायुधशर चापधर यातुधान बलबीर ।
कोटिकंगूरनि चढ़िगये कोटिकोटि रणधीर ॥ ३९ ॥

लंका में महा भारी कोलाहल हुआ और अतिह हंकार रावण ने सुनी १ बोला कि बानरों की ढिठाई को तो देखो हंसिकर राक्षसों की सेना बुलाई और कहा २ कि देखो बानर काल के प्रेरे आपसे आप आये हैं मेरे राक्षस भी भूखे हैं ३ हे योधाओ तुम सब चारों दिशा को जाओ और पकरि पकरि रीछ बानरों को खाओ ४ तब तो राक्षस आयसु मांगि कर चले हाथों में गोफन और बर्छे ले लेकर ५ तोमर गदा बेड़ा त्रिशूल खड्ग परशु पाषाण इत्यादि आयुधों को लेलेकर लाललालबानरों पर कारे कारे राक्षस कैसे दौरे हैं ६ जैसे लाललाल पाषाणों के ढेरों को देखिकर कारे कारे मांस भक्षक पक्षी मांस के धोखे से दौरें ७ चोंचिके टूटने का दुख तो उन को सूझता नहीं तैसे ही अज्ञान राक्षस बानरों पर दौरे ॥ ८ ॥ दोहा ॥ नानाप्रकार

के आयुधों को लेलेकर राक्षस बड़े बलवान और गढ़ के कंगूरों पर करोरों करोर बड़े रणधीर योधा चढ़िगये ॥ ३९ ॥

कोटकंगूरनि शोहहिं कैसे । मेरुके शृंगनि जनुघन वैसे १
बाजहिं ढोल निशानजुझाऊ । सुनिधुनि होइभटन्हि मनचाऊ २
बाजहिं भेरि नफीरि अपारा । सुनि कादर उरजाहिं दरारा ३
देखिन जाहिं कपिन्ह केठट्टा । अति बिशाल तनुभालु सुभट्टा ४
धावहिं गणहिं न अवघटघाटा । पर्बत फोरिकरहिं गहिबाटा ५
कटकटाहिं कोटिन भटगर्जहिं । दशन ओटकाटहिं अतितर्जहिं ६
उतरावण इत राम दुहाई । जयति जयति जयपरी लड़ाई ७
निशिचरशिखरसमूहढहावहिं । कूदिधरहिं कपिफेरि पठावहिं ८

छं० धरिकुधरखंडप्रचंडमर्कटभालुगढ़परडारहीं ।
झपटहिं चरणगहिपटकिमहिभजिचलत फेरिप्रचारहीं ॥
अतितरलतरुणप्रतापतर्जहिंतमकिगढ़परचढ़िगये ।
कपिभालुचढ़िमन्दिरन्हिजहंतहंरामयशगावतभये ॥

दो० एकएक गहिरजनिचर पुनिकपिचले पराइ ।
ऊपरआपुन हेठि तेहि गिरहिं धरणिपर आइ ॥ ४० ॥

सुबर्ण के कोटकंगूरों पर कारे कारे चढ़े राक्षस कैसे सोहते हैं मानों सुमेरु के शिखरों पर मेघही बैठे हैं १ ढोल और निशान जो जुझाऊ बाजेबाजते हैं उन को सुनि सुनि कर वीरों के मनमें उत्साहबढ़ता है २ अपार भेरी नफीरी जो बाजती हैं उन को सुनिकर कादरों के करेजे फटेजाते हैं ३ बानरों के यूथों के यूथ जोधा धाकिये चले आते हैं सो देखे नहीं जाते हैंतैसेही अति बिशाल रीछों के समूहहैं ४ धावाकिये सूधेही चलेआते हैं औघट घाट कुछ नहीं गनते हैं पर्बत को भी पैरों ही से फोरिकर मार्ग करि लेते हैं ५ कटकटाते हैं गर्जते हैं दांतों से ओठों को चबाते हैं उच्छरते हैं ६ उधर से तो रावण और इधर से राम की दुहाई औ जय जय बोलि कर लड़ाई होने लगी ७ राक्षस जो पर्वतों के शिखर ऊपर से गिराते हैं उनको कूदि कर बानर लेलेते हैं और उन्हीं को मारते हैं ॥ ८ ॥ छन्द ॥ पर्वतों के खंड लेलेकर रीछ बंदर गढ़पर फेंकते हैं और झपटि कर पैर पकरि के दे मारते हैं भागते में फिरि ललकारते हैं अतिही तीक्षण तरुण प्रताप से कूदते हैं ऐसे तमकि कर गढ़पर सब चढ़ि गये और उन मंदिरों पर चढ़िकर रामयश सुनाने लगे

दोहा ॥ एकएक राक्षस को एकएक बानरने पकरि लिया और लौटे ऊपर आप और उस को नीचे दाबिकर पृथ्वी पर कूटि परते हैं ॥ ४० ॥

यहलंकाकांडकीप्रथमचालीसीमेंत्रिकूटकाएककूटहुआ ॥

राम प्रताप प्रबल कपि यूथा । मर्दहिं निशिचर निकरबरूथा १
चढ़े दुर्ग पुनि जहं तहं बानर । जयरघुबीर प्रताप दिवाकर २
चले निशाचर निकर पराई । प्रबल पवन जिमि घन समुदाई ३
हाहाकार भयउ पुरभारी । रोवहिं आरत बालक नारी ४
निजदल बिचल सुना जब काना । फेरि सुभटलंकेश रिसाना ५
जोरणबिमुख फिरा मैं जाना । तेहिं मारिहों कराल कृपाणा ६
उग्रबचन सुनि सकल सकाने । चले क्रोध करि बीर लजाने ७
सन्मुख मरण बीरकी शोभा । तब तिन्ह तजा प्राणकर लोभा ८
दो० बहु आयुध धरि सुभट सब भिरहिं प्रचारि प्रचारि ।
ब्याकुल कीन्हे भालु कपि परिघ त्रिशूलनि मारि ॥ १ ॥

राम के प्रताप से महा प्रबल बानरों के यूथ राक्षसों के समूहों को मर्दते हैं १ फिरि समस्त बानर जहां तहां गढ़ पर चढ़ि कर कोशलेन्द्र श्रीरामचंद्र की दुहाई फेरने लगे २ तबतो राक्षसों के समूह उनके मारे कैसे भागे जैसे प्रचंड पवन के मारे मेघों के समूह जाते हैं ३ राक्षसों के भागतेही नगर महा हाहाकार हो उठा उनके बालक और निशाचरी अति आरत रोने लगे ४ अपना दलबिचला जबरावण ने सुना तबतो सब योधाओं को फेरि कर बड़ा रिस हुआ और बोला ५ जो कोई संग्राम से बिमुख हुआ मैंने जानिपाया उसको कराल खड्ग अपने से मारूंगा ६ ऐसे महा घोर तामस रावण के बचन सुनिकर सब डराने और लज्जित होकर सब लौटे ७ बीरों की शोभा तो सन्मुख मरनेही में है यह बिचारि कर उन्होंने प्राणों का लोभ छोड़ि दिया ॥ ८ ॥ दोहा ॥ अनेक प्रकार के आयुध लेलेकर प्रचारिप्रचारि कर लरने लगे महा प्रचंड परिघ और त्रिशूलों से मारि समस्त रीछ बानर ब्याकुल करि दिये ॥ १ ॥

भय ब्याकुल कपि भागन लागे । यद्यपि उमा जीति हैं आगे १
कोउ कह कहं अंगद हनुमंता । कहं नलनीलद्विविद बलवंता २
निज दल बिचल सुना हनुमाना । पश्चिम द्वाररहा बलवाना ३

मेघनाद तहं करै लराई । टूट न द्वार परम कठिनाई ४
पवन तनय मनभा अतिक्रोधा । गर्जा प्रलय काल समयोधा ५
कूदि लंक गढ़ ऊपर आवा । गहिगिरि मेघनाद कहं धावा ६
भंजेउ रथ सारथी निपाता । ताहि हृदय महं मारेसि लाता ७
दुसरे सूत बिकल तिहि जाना । स्यंदन घालितुरत घरआना ८
दो० अंगद सुना कि पवन सुत गढ़ पर गयउ अकेल ।
समर बांकुरा बालि सुत तर्कि चढ़ा कपि खेल ॥ २ ॥

अबतो महाभय व्याकुल बांनर भागने लगे यद्यपि हे पार्बती आगे जीतेंगे १ कोई तो पुकारता है अरे अंगद कहां है कोई कहता है हनुमान कहां है नल कहा हैं नील कहां है द्विविद कहांहैं १ अपना दल बिचला हनुमान ने सुना परंतु तासमय हनुमान पश्चिम द्वार रहे तहां मेघनाद लराई करता रहे कोई भांतिद्वार न टूटै बड़ा असमंजसआपरा ३ । ४ तबतो हनुमान को बड़ाही क्रोध हुआ और० प्रलय काल के मेघ के समान गर्ज्जा ५ कूदि कर लंकाके गढ़पर चढ़िगये औरपर्वत लेकर मेघनाद पर दौरे ६ पर्वत के प्रहार से रथ सारथी नाश करि दिये औरमेघ-नाद की छाती में लात मारी ७ दूसरे सारथी ने उसको व्याकुल देखा रथमें डारि तुरंतही घरको ले गया ॥ ८ ॥ दोहा ॥ अंगद ने सुना कि हनुमान अकेले गढ़ को गये हैं रणबांकुरे बालि पुत्रभी कपिखेलही से कूदिकर गढ़ पर चढ़ि गये ॥ २ ॥

युद्ध बिरुद्ध क्रुद्ध दोउ बन्दर । राम प्रताप सुमिरि उर अंतर १
रावण भवन चढ़े दोउ जाई । करहिं कौशला धीश दुहाई २
कलश सहित गहि भवनढहावा । देखि निशाचर पतिभयपावा ३
नारि वृंद कर पाटहिं छाती । अब द्वय कपि आये उतपाती ४
कपिलीलाकरितिनहिं डरावहिं । राम चंद्रकर सुयश सुनावहिं ५
पुनि कर गहि कंचन के खंभा । लगे करन उतपात अरंभा ६
कूदि परे पुनि सिंधु मझारी । लागे मर्दन भुज बल भारी ७
काहुहि लात चपेटनि केहू । भजेहु न रामहिं सो भव लेहू ८
दो० एक एक सन मर्दि कर तोरि चलावहिं मुण्ड ॥ ३ ॥
रावण आगे परहिं ते जनौ फूटहिं दधि कुण्ड ॥

अबतोयुद्धके विरुद्धमें क्रुद्धित दोनोंबानरवीर श्रीरामचंद्रकेप्रतापको स्मरण करिके

रावणही के मंदिरपर दोनों जाचढ़े और कोशलाधीश श्रीरामचंद्र की दुहाई फेरनेलगे ॥ १ ॥ २ ॥ कलशों समेत मंदिरोंको ढाहनेलगे देखिकर रावणभीभय पानेलगा ॥ ३ ॥ नारियेंकि वृद हाथोंसे छातीपीटने लगे हाययहदुयबंदर उतपातीआये ॥ ४ ॥ बानरोंमेंनीला करके उनको डरपातेहैं औ रामचंद्रका सुयशउनको सुनतेहैं ॥ ५ ॥ फिर तो हाथोंमें कंचन के खंभे लेकर उतपात करने लगे ॥ ६ ॥ तिस पीछे दोनों वीर सेना में कूदि परे और अतोल भुजा के बल से राक्षसों को मर्दने लगे ॥ ७ ॥ किसी को लातोंसे किसी को चपेटों से मारने लगे और कहने लगे रामचंद्र को नहीं भजा उसका फल लीजिये ॥ ८ ॥ दोहा ॥ एकको एकसे मींजिकर शिरतोरि लेतेहैं और लंकामें फेंकि चलातेहैं से रावणके आगे गिरिकर दहीके से मलोटे फूटतेजातेहैं ३

महामहा मुखियाजे पावहिं। ते पद गहि प्रभु पास चलावहिं १
कहहिं विभीषण तिन्हके नामा। देहिं राम तिन्हकहं निजधामा २
खल मनुजाद द्विजा मिषभोगी। पावहिं गति जो याचत योगी ३
उमाराममृदु चित करुणाकर। बैरभाव सुमिरत मोहि निशिचर ४
देहिं परम गति सो जिय जानी। असकृपाल को कहहु भवानी ५
असप्रभु सुनि न भजहिं भ्रमत्यागी। नरमतिमंद ते परम अभागी ६
अंगद अरु हनुमंत प्रवेशा। कीन्ह दुर्ग असकह अवधेशा ७
लंका महं कपि सोहहिं कैसे। मथहिं सिंधु दुय मंदर जैसे ८
दो० भुजबल रिपु दल दलिमलेउ देखि दिवस कर अंत
कूदे युगल प्रयास बिनु आये जहं भगवंत ॥ ४ ॥

बड़े बड़े मुखियोंको जोपाते हैं उनको तो समूचाही पैर पकरिकर रामचंद्र के पास फेंकिदेतेहैं ॥ १ ॥ बिभीषण उनके नाम कहतेजाते हैं राम परमकृपालु उनको अपना धाम बैकुंठ देतेजाहैं ॥ २ ॥ महाखल राक्षस मुनि जनों के भक्षक सोगति पाते हैं जिसको योगीजन याचते हैं ॥ ३ ॥ सुनो हे पार्वती रामचंद्र बड़े कोमल चित्त करुणाकरहैं यह शोचते हैं कि इन्होंने वैरभाव से मेरास्मरण कियाहै अब संसारदुःख इनको न चाहिये ॥ ४ ॥ यहांविचारिकर उनको भी परम पददेते हैं ऐसा कृपाल कहो हेपार्वती दूसरा कौनदेवहै ५ जो ऐसे परम दयाल स्वामीको भ्रम छोड़िकर नहीं भजतेहैं तेनर हेपार्वती निरे मतिमंद और बड़ेही अभागी हैं ॥ ६ ॥ जानाजाताहै कि अंगद और हनुमान दोनों ने लंका में प्रवेश किया है ऐसे श्रीराम चंद्र कहिरहेहैं ॥ ७ ॥ लंकामें अंगद हनुमान दोनोंबीर कैसे सोहते हैं मानो समुद्रको दो मंदराचलही मथतेहैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ भुजाओं केबल से शत्रु के दलको दलि और

दिवसका अंत देखिकर बिना प्रयास दोनों कूद परे और रामचंद्रके पास आगये॥ ४ ॥

गये जानि अंगद हनुमाना । फिरे भालु मर्कट भट नाना १
यातुधान प्रदोष बल पाई । धाये करि दशशीश दुहाई २
निशिचर अनी देखि कपिफिरे । जहंतहं कटकटाइ भटभिरे ३
दोउदलप्रबल प्रचारिप्रचारी । लरहिं सुभटनहिंमानहिंहारी४
सबल युगल बलसमबलयोधा । कौतुक करतलरतकरिक्रोधा ५
प्राविट शरद पयोद घनेरे । लरत मनहुं मारुत के प्रेरे ६
अनय अकम्पनअरुअतिकाया । विचलतसेनकीन्हि तिनमाया७
भयउ निमिष महंअतिअंधियारा । सूझ न आपन हाथ पसारा ८

दो० देखि निबिड़तम दशहु दिशि कपिदल भयउ खभार ।
एकहिएक न देखहिं जहं तहं करहिं पुकार॥ ५ ॥

अंगद हनुमान को गया जानिकर बानर भालुभी चलदिये १ और राक्षस संध्या काल प्रदोष वेला का बलपाइ दशग्रीव रावण की दुहाई करके दौरे २ राक्षसों की सेना को आई देखकर बानर फिरे और जहां तहां कटकट इ करलरने लगे ३ अवतो दोनोंदल बड़े प्रबलप्रचारिप्रचारि लरतेहैं और हारिनहींमानतेहैं ४ दोनोंदलसबल हैं और योधा भी उनके समबलहैं तातेंलरते समय कौतुक करते जातेहैं५ मानों प्राविट बर्षा और शरद के मेघही पवनको प्रेरे लरतेहैं ६ अनय अकम्पन और अति काया सेनापतियों ने अपनी सेना को बिचलता देख मायाकरी ७ एक पलमें अति अंधेहो गये और रुधिर पत्थर छारकी बर्षा होने लगी ८ ॥ दोहा ॥ तबतो दशहु दिशा में महा अंधेरा देखकर बानरों के दलमें बड़ा खरभर हुआ एकको एक देखतेही नहीं हैं सब अपनी अपनी पुकार करते हैं ॥ ५ ॥

यह सब मर्म बिभीषण जाना । लिये बोलि अंगद हनुमाना १
समाचार कहि सब समुझाये । सुनत कोपि कपिकुंजर धाये २
पुनिकृपाल हंसिचाप चढ़ावा । पावक शायक सपदि चलावा ३
भयउ प्रकाश कतहु तमनाहीं । ज्ञानउदय जिमि संशयजाहीं४
भालु बली मुख पाइ प्रकाशा । धाये कोपि बिगत तम त्राशा ५
हनूमान अंगद रण गाजे । हांक सुनत रजनीचर भाजे ६
भागतभटपटकहिं धरिधरणी । करहिंभालुकपि अद्भुतकरणी७

गहिपद डारहिं सागरमाहीं । मकर उरग झषधरिधरिखाहीं ८

दो० कछुमारे कछु घायल कछु गढ़ चले पराइ ।
गर्जहिं मरकट भालु सब रिपु दलबलबिचलाइ ॥ ६

यह मर्म जब विभीषण ने जाना तबतो अंगद हनुमान दोनों बुला लिये १ और सब समाचार कहिकर समुझा दिये सुनतेही कपि कुंजर दौरे आये २ फिर कृपालु श्रीरामचन्द्रने हंसिकर अपना धनुष चढ़ाया और अग्निबाण शीघ्रही छोड़ा ३ उस के छोड़तेही प्रकाश होगया कहीं भी अंधेरा न रहा जैसे ज्ञान के उदय में संशय नहीं रहता है ४ रीछबानर प्रकाश को पाकर बड़ेकोप से दौरे तमकी त्रास जाती रही हनुमान और अंगद जोरणभूमि में जाकर गर्जे उनकी हांक के सुनतेही राक्षस भगे ६ भागते में उनको पकरि पकरि कर पृथिवी पर पकटते हैं और रीछ बंदर अद्भुत करणी करतेहैं ७ पैर पकरि कर समुद्र में फेंक देतेहैं तहां मगर और सर्प मछली धरिधरि खाते हैं ८ ॥ दोहा ॥ कुछतो मारे और कुछ रणभूमि में परेहैं कुछ गढ़पर भागि गये बंदर रीछ सब शत्रु की सेना को बिचलाइ कर गर्जतेहैं ॥ ६

निशा जानि कपि चारिहु अनी । आये जहां कोशला धनी १
राम कृपा करि चितवा जबहीं । भये बिगत श्रम बानर तबहीं २
उहां दशानन सचिव हंकारे । सब सन कहेसि सुभट ये मारे ३
आधा कटक कपिन संहारा । कहहु बेगि का करिय बिचारा ४
माल्यवंत एक जठर निशाचर । रावण मातु पिता मंत्री बर ५
बोला बचन नीति अति पावन । सुनहुं तात कछु मोर सिखावन ६
जबतें तुम सीता हरि आनी । अशगुन होहिं न जाहिं बखानी ७
वेद पुराण जासु यश गावा । तासु बिमुख काहुन सुख पावा ८

दो० हिरण्याक्ष भ्राता सहित मधुकैटभ बलवान ।
जेहि मारेउ सोइ अवतरेउ कृपा सिंधु भगवान ॥ १ ॥
कालरूप खल बन दहन गुणागार घन बोध ।
जेहि सेवत शिव कमलभव तेहि सन कवन विरोध ॥ ७

रात्रि जानिकर बानरों की चारों सेना कोशलपुरी श्री अयोध्या के राजा रामचंद्र के पास आगई १ रामचंद्रने जभी उनको कृपा दृष्टिसे देखा तभी सबके सब बिगत श्रम होगये २ उहां रावण ने सब मंत्री बुलाये उनसे कहा जो जो योधा संग्राम में मारेगये ३ आधा कटकतो बानरों ने आजही नाश करिदिया अब कहो क्या उपाय

किया जावे ४ जब कोई न बोला तबतो माल्यवान एक अति वृद्ध राक्षस रावण का नाना बड़ा बुद्धिमान मंत्री बोला हे वत्स कुछ मेरा कहना सुनो ५ । ६ जबसे तुम इस सीता को हरिलाये हो तबसे तुमको ऐसे अशुभ होते हैं जो कहेहो नहीं जाते हैं ७ सत्यहै कि जिस ईश्वरके यशको वेद पुराण सभी गातेहैं उससे विमुख होकर कभी किसी ने सुख पायाहै ८ दोहा ॥ हिरण्याक्ष को उसके भाई समेत व मधुकैटभ बलवानों को जिनने माराहै उसी कृपासिंधुभगवान ने अवतार लिया है सुनो हे तात रामचंद्र खलों के बन के जरानेको अग्निहीके समान कालरूप हैं और शरणागतों के लिये गुणागार और विज्ञान हैं जिनको देवाधिदेव महादेव और कमलयोनि जगत्पिता भइ ब्रह्माही सेवतेहैं तिनसे बैर करना क्याहै ॥ ७ ॥

परि हरि बैर देहु बैदेही । भजहु कृपा निधि परम सनेही १
ताके बचन बाण सम लागे । उठिमुंह मसिकरि जाहु अभागे २
बूढ़ भयेसि नहिं मरतेउं तोहीं । अबजनि नयन दिखावसि मोहीं ३
सो उठि गयउ कहत दुर्बादा । तब सकोप बोला घननादा ४
कौतुक प्रात देखियहु मोरा । करिहौं बहुत कहहुं का थोरा ५
सुनि सुत बचन भरोसा आवा । प्रीति समेत निकट बैठावा ६
करत बिचार भयउ भिनसारा । लगे भालु कपि चारिहु द्वारा ७
कोपि कपिन दुर्गम गढ़ घेरा । नगर कुलाहल भयउ घनेरा ८
दो० मेघनाद सुनि श्रवण अस गढ़ पुनि छेका आइ ।
उतरि दुर्गते वीर बर सन्मुख चला बजाइ ॥ ८ ॥

ताते अबभी उचित है कि बैर छोड़िकर सीताको देदेउ और परम स्नेही कृपा निधान रामको भजो १ उसके बचन रावण के हृदय में बाणहीसे लगे बोलाकि उठ यहां से कारा मुंहकर जातारहु अभागे २ बूढ़ाहुआ नहींतो तेरेको मारताअबमेरेको मुंह मति दिखाना ३ जब माल्यवन्त दुर्वाद कहता हुआ उठिगया तबतो बड़े कोप से मेघनाद बोला ४ हेपिता आप शोच न करें कालिमेरा कौतुक देखियेगा कि बहुत कुछ करूंगा अभी आपसे क्या कहूं ५ ऐसे मेघनाद के बचन सुनकर भरोसा हुआ बड़ी प्रीतिसे पास बैठारि लिया ६ ऐसा बिचार करते करते जो प्रातःकालहुआ सोई बानर रीछचारोंद्वारोंसे आलगे ७ जोई बानरों नेकोपकर महादुर्गम गढ़कोआघेरा सोई नगर में बड़ा कोलाहल हुआ ८ दोहा ॥ मेघनाद ने ऐसा सुनिकर आतेही बानरोंको मारि कर भगादिया और गढ़ छेकि लिया फिर गढ़से भी बड़ावीर उतरा और ललकार कर संमुख सेना के ऐसे कहता हुआ चला ॥ ८ ॥

कहं कोशलाधीश दोउ भ्राता । धन्वी सकल लोक बिख्याता १
कहं नल नील द्विविद सुग्रीवा । कहं अंगद हनुमत बलसींवा २
कहां बिभीषण भ्राता द्रोही । आजु समर हठि मारहुं ओही ३
असकहि कठिन बाण संधाने । अतिशय कोपि श्रवण लगि ताने ४
शर समूह सो छांड़न लागा । जनु सपक्ष धावहिं बहु नागा ५
जहं तहं परत देखियहिं बानर । सन्मुख होइ न सकत तेहि अवसर ६
भागे भय ब्याकुल कपि ऋच्छा । बिसरी सबहि युद्ध की इच्छा ७
सो कपि भालु न रण महं देखा । कीन्हेसि जेहि न प्राण अवशेषा ८
दो० मारे दश दश बिशिष उर परे भूमि कपि बीर ।
सिंहनाद गर्जत भयउ मेघनाद रण धीर ॥ ६ ॥

कहां हैं कोशलाधीश दोनों भाई जो अपनेही मुहंसे लोक बिख्यात धनुर्धारी कहाते फिरतेहैं राम श्शस्त्रभृतामहं आजमैं भी तो उनकी कमनैती देखूं १ नल कहांहैं नील कहांहैं द्विबिद कहांहैं कपिराज सुग्रीव कहांहैं अंगद हनुमान महाबली कहां हैं २ और भाईका वैरी बिभीषण कहां छिपि रहाहै आज उस शठको तो संग्राम में अवश्यही मारूंगा ३ ऐसे कहि कर महा कठिन बाण संधाने और बड़े क्रोधसे श्रवण पर्य्यन्त खींचे ४ बाणों के समूहों के समूह छोड़ने लगा मानो सपक्ष सर्पही चले आतेहैं ५ बाणोंके मारे रीछ बंदर जहांतहां गिरते हो तो देखिपरते सन्मुख उसके कोईभी नहीं होसकताहै ६ अबतोमहाभय ब्याकुल सब रीछ बानर भागे युद्ध करना सबको भूलिगया ७ ऐसा बानर और रीछ कोई भी रणमें न देखा जिसको अकेले मेघनाद ने प्राण अवशेषही न कर दियाहो ॥ ८ दोहा ॥ मुख्य मुख्य बानरों कोभी दश दश बाणों से अचेत करिकै महा रणधीर मेघनाद सिंह नाद करिकै गर्जा ॥ ६ ॥

देखि पवन सुत कटक बिहाला । क्रोधवंत धायेउ जनु काला १
महा महीधर तमकि उपारा । अति रिस मेघनाद पर डारा २
आवत देखि गयउ नभ सोई । रथ सारथी तुरंग सब खोई ३
बार बार प्रचार हनुमाना । निकट न आव मर्म सब जाना ४
रघुपति निकट गयउ घननादा । नाना भांति कहत दुर्बादा ५
अस्त्र शस्त्र आयुध बहु डारे । कौतुकही प्रभु काटि निवारे ६

देखि प्रभाव मूढ़ खिसियाना । करैलागि माया बिधि नाना ७
जिमि कोउकरै गरुड़सनखेला । डरपावहिं गहिस्वल्प सपेला ८
दो० जासु प्रबल माया बिवश शिव बिरंचि बड़ छोट ।
ताहि दिखावत रजनिचर निज माया मति खोट ॥ १६॥

तबतो हनुमान अपने कटक को विकल देखि कर बड़े क्रोधवन्त काल के समान भैरे १ बड़ा एक पर्वत तमकि कर उपारि लिया सो बड़ी रिससे मेघनाद के ऊपर फेंका २ उसको आते देखि कर मेघनाद रथ सारथी घोड़े सबको छोड़ि कर आकाश में छिपिगया ३ बारंबारहनुमान उसकोप्रचारतेहैं पास नहींआताहै हनुमानके बलको जानता है ४ फिरतो मेघनाद रामचंद्रही के पास दुर्बचन कहताहुआ गया ५अस्त्र शस्त्र अनेक भांतिके प्रहारकिये सोतो कौतुकही से रामचंद्र ने काटि गिराये ६ ऐसा प्रभाव देखिकर मूढ़ खिसियाइ गया तबतो अनेक प्रकार की माया करने लगा ७ जैसे कोई गरुड़ के साथ खेल करै किमहा छोटा सपेला पकरि के उनको डरपावे ८ दोहा॥ जिस ईश्वर की माया के बशीभूत शिव ब्रह्मादि बड़े छोटे सब जीवहैं उस ईश्वरको मतिमंद निशाचर अपनीमाया दिखाता है ॥ १० ॥

नभ चढ़ि बरष बिपुल अंगारा । महि तें प्रगट होइजलधारा १
नानाभांति पिशाचपिशाची । मारु काटु धुनि बोलहिं नाची २
बिष्टापूय रुधिर कच हाड़ा । बरषहिं कबहुं उपलबहु छाड़ा ३
बरषि धूरि कीन्हेसि अंधियारा । सूझ न आपन हाथ पसारा ४
अकुलाने कपि माया देखी । सब कर मरण भयउ यहलेखी ५
कौतुक देखि राम मुसुकाने । भये सभीत सकल कपि जाने ६
एकबाण काटी सबमाया । जिमि दिनकर हरुतिमिर निकाया ७
कृपा दृष्टि कपिभालु बिलोके । भयेप्रबल रण रुकहिं नरोके ८
दो० आयसु मांगि राम पहं अंगदादि कपि साथ ।
लक्ष्मण चले सकोप तब बाण शरासन हाथ ॥ ११ ॥

आकाश से तो अंगार बर्षते हैं औ पृथ्वीसे जलधारा छूटती है १ अनेक भांति के पिशाच पिशाचिनी मारो मारो काटो काटो ऐसी धुनि करते हैं और नाचतेफिरते हैं २ बिष्टा पुरी, पूयपीव, रुधिर लोहू, कचबार, और हाड़ बर्षतेहैं कभी पत्थर और छार बर्षती है ३ फिरि तो धूरि बर्षि कर ऐसा अंधेरा करदिया कि अपना हाथपसारा भी नहीं सूझता है ४ ऐसी उसकी माया को देखि कर सब बानर व्याकुल होगये

औ सबका मरनाहीमनमें जाना ५ यह कौतुक देखिकर रामचन्द्र हंसे औ सबबानरों को भय भीत हुआ जाना ६ तबतो एकही बाण से सब माया नाश करदी जैसे सूर्य्य अंधकार को नाश करते हैं ७ कृपा दृष्टि से जो बानरों को रामचन्द्र ने देखा सोई महाप्रबल होगयेरोकनेसे भी नहीं रुकते ॥ ८ ॥ दोहा ॥ फिरि तो रामचन्द्रसे आज्ञा मांगि अंगदादि बानरों को साथले बड़े कोपसे लक्ष्मण धनुषबाण लेकर चले११॥

क्षतजनयनउर बाहु बिशाला । हिम गिरिनिभतनुकछुएकलाला १
उहां दशानन सुभट पठाये । नाना अस्त्र शस्त्र गहि धाये २
भूधरनख बिटपायुध धारी । धाये कपि जय राम पुकारी ३
भिरे सकल जोरिहि सनजोरी । इतउत जयइच्छा नहिं थोरी ४
मुठिकनि लातनदांतनिकाटहिं । कपिजयशीलमारिपुनिडाटहिं ५
मारु मारु धरु धरु धरु मारू । शीश तोरि गहि भुजाउपारू ६
असरव पूरि रहा नव खंडा । धावहिं जहं तहं रुंड प्रचंडा ७
देखहिं कौतुक नभ सुर वृंदा । कबहुंक बिस्मय कबहुं अनंदा८
दो० रुधिर गाड़ भरि भरि जमेउ ऊपर धूरि उड़ाइ ।
जनु अंगार न राशिपर मृतक धूम रहिछाइ ॥ १२ ॥

क्षतज रुधिर के समान अति अरुण तो महा कोप से नेत्रहैं आयत हृदय है विशाल भुजा हैं हिमाचलके समान श्वेत कोपसे कुछ अरुण शरीर है १ वहांरावण ने भी मेघनाद के सहाय को योधा भेजे ते अनेकप्रकार के अस्त्रशस्त्र लेकर धाये २ इधर से पर्वत और वृक्ष लेले बानर भी जयराम २ पुकार कर दौरे ३ अपने अपने समान योधा देखिकर जोरों से जोरी भिरने लगे इधर उधर बड़ी जय की इच्छा है ४ मुठिकों से लातों से दातों से काटते हैं बानर जयशील मारते हैं और डाटते हैं ५ मारोमारो पकरो २ शीशतोरो भुजाउखारो ऐसा शब्द नवखंड पूरि रहाहै और जहां तहां प्रचण्डरुंड फिरते हैं ६ । ७ देवता बिमानोंमें बैठे कौतुक देखतेहैं कभी तो बिस्मय और कभी आनन्द उनको होता है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ रुधिर से गाड़भरि भरि गई हैं और उसके ऊपर उड़ि उड़ि कर धूरि कैसी परी है मानों अंगारों की राशि पर मृतक भस्म छा रही है ॥ १२ ॥

घायल बीर बिराजहिं कैसे । कुसमित कंशुक के तरु जैसे १
लक्ष्मण मेघनाद दोउयोधा । भिरहिं परस्परकरि अति क्रोधा२
एकहिएक सकहिंनहिं जीती । निशिचर छल बल करैंअनीती ३

क्रोधवन्त तब भयउ अनन्ता । भंजेउ रथ सारथी तुरन्ता ४
नानाबिधि प्रहार कर शेषा । राक्षस भयउ प्राण अवशेषा ५
रावण सुत निजमन अनुमाना । संकट भयउ हरिहिममप्राणा ६
बीरघातिनी छांडेसि सांगी । तेज पुंज लक्ष्मण उर लागी ७
मूर्छा भई शक्ति के लागे । तब चलि गयउ निकट भय त्यागे ८
दो० मेघनाद सम कोटि शत योधा रहेउ उठाइ ।
जगदाधार अनन्त किमि उठै चले खिसियाइ ॥ १३ ॥

घायल योधा संग्राम भूमि में कैसे सोहते हैं मानों फूले हुये टेसूही के वृक्ष हैं १ अबतो लक्ष्मण और मेघनाद दोनोंयोधा परस्पर बड़ाही क्रोध करिकरि लरते हैं २ एक को एक नहीं जीति सकते हैं परंतु मेघनाद छल बल अनीति करता है ३ तबतोअनन्त भगवानबड़े कोपितहुये तुरन्तहीरथऔर सारथी उसकानाशकरिदिया ४ फिरि ऐसा बाणोंका प्रहार किया कि राक्षस अवशेष होगये ५ तबतो मेघनाद ने मन में बिचार किया कि संकट हुआ मेरे प्राण न बचेंगे ६ वीरघातिनी शक्ति उसनेछोड़ दी तेजकी राशि लक्ष्मण की छाती में लगी ७ शक्तिके लगतेही लक्ष्मण को मूर्छा होगई तबतो निर्भय मेघनाद लक्ष्मण के पास चला गया ॥ ८ ॥ दोहा ॥ मेघनाद के समान सैकरोंरि योधा उठा उठा कर हारि गयेसमस्त बिश्वके आधार शेषभला कैसे उठि सकते हैं तबतो खिसियाइ करचले गये ॥ १३ ॥

सुनु गिरिजा क्रोधानल जासू । जारै भुवन चारि दश आसू १
एक संग्राम जीति को ताही । सेवहिं सुर नर अग जग जाही २
यह कौतूहल जानहिं सोई । कृपाराम की जापर होई ३
सन्ध्या भये फिरीं दो अनी । लगे संवारन निज निज धनी ४
व्यापक ब्रह्म अजितभुवनेश्वर । लक्ष्मण कहां बूझ करुणा कर ५
तबलगिलैआयउ हनुमाना । अनुज देखि प्रभु अति दुखमाना ६
जामवन्त कह बैद्य सुषेणा । लंका रहै जाइ कोउ लेना ७
धरि लघुरूप गयउ हनुमन्ता । आनेउ भवन समेत तुरन्ता ८
दो० रघुपति चरण सरोज शिर नायउ आइ सुषेन ।
कहा नाम गिरि औषधी जाहु पवन सुत लेन ॥ १४ ॥

सुनो हे पार्बती महा प्रलय काल में जिन शेष भगवानकी क्रोधाग्नि चतुर्दश

भुवनात्मक ब्रह्मांडको जराकर तप्त लोहे के समान कर देती है उनको भलासंग्राम में कौन जीति सकता है जिन को ब्रह्माऔर मेरे समेत समस्त देवता मनुष्य स्थावर जंगम सभी सेवते हैं १ । २ इस रहस्य को सोई जानतेहैं जिन पर रामकी कृपा होती है ३ इतने में संध्या हुई दोनों सेनालौटीं अपने अपने धनी अपनी अपनी सेनाओं की संभार करने लगे ४ व्यापक ब्रह्मसब बिश्वके नायक बार बार अति आतुर पूंछते हैं लक्ष्मण कहां हैं लक्ष्मण कहांहैं ५ इतने में हनुमान लक्ष्मण को हाथों पर लिये ले आये भई की दशादेखतेही स्वामी अति दुखी होगये ६ जामवन्त ने कहा सुषेण नाम बैद्य लंका में रहता है कोई बुला लावै ७ यह सुनि लघुरूप धरि हनुमान गये और उसको उसके घर समेत ले आये ८ ॥ दोहा ॥ श्रीरामचंद्र के चरण कमलों को सुषेण ने आकर शीश नवाया और कहा द्रोणाचल पर्बत पर शल्यकरनी बिशल्यकरनी संजीवनी औषधि है रात्रिही में आजावे सो हे हनुमान आपही लेने को जाइये ॥ १४ ॥

राम चरण सरसिज उर राखी । चला प्रभंजन सुत बलभाखी १
उहां दूत एक मर्म जनावा । रावण कालनेमि गृह आवा २
दशमुख कहा मर्म तेहि सुना । पुनि पुनि कालनेमिशिर धुना ३
देखत तुमहि नगर जेहि जारा । तासु पंथ को रोकन हारा ४
भजि रघुपतिहि करहु हितअपना । छांड़हु नाथ वृथा कल्पना ५
नील कंज तनु सुन्दर श्यामा । हृदय राखु लोचन अभिरामा ६
अहंकार ममता मद त्यागू । महा मोह निशि सोवत जागू ७
काल ब्यालकर भक्षक जोई । सपनेहु समर किजीतिये सोई ८
दो० सुनि दशकन्ध रिसान अति तेहिमन कीन्ह बिचार ।
रामदूत कर मरण बर नतु खलडारिहि मारि ॥ १५ ॥

श्री रामचन्द्रके चरण कमलोंको हृदयमें धारणकरिके पवनपुत्र हनुमान बलबोलि करचले किअब लाताहूं १ वहां एकदूत ने रावण से भेदसब समाचार जाकहे सोसुनि कर रावण कालनेमि राक्षस मायावी के गृहगया २ और हनुमानके मार्ग रोकने को उससे कहा तबतो कालनेमिने अपना कालआया जानिकर बड़े बिषाद से शिरधुना और बोला ३ तुम्हारेही देखते जिसने नगर जरादिया उसके मार्ग को कौन रोकि सक्ता है ४ तातें रामचन्द्र के शरण जाकर अपना भला करले और वृथा कल्पनाओं को छोड़िदे नील कमल के समान श्याम सुन्दर मूर्ति नयनानन्ददायनी हृदयमें धारण करो ६ अहंकार ममतामदको छोड़ो महामोह रात्रिमें से तेरे जागो ७ जोमहा

मरन कालब्यालकाभीभक्तकहै सोमन्ना सपनेमेंभी किसीसेसंग्राममें जीता जासक्त है ८ ॥ दोहा ॥ जब कालनेमिने उसको ऐसा समुझाया सो सुनिकर तो रावणने उसपर बड़ा ही कोप किया तबतो उसने विचार किया कि चलिकर रामदूतहीके हाथमें मरनाही भला है नहींतो यह दुष्ट अभी मारिडारेगा ॥ १५ ॥

असकहि चला रची मग माया। सर मंदिर वर बाग बनाया १
मारुत सुत देखा शुभ आश्रम। मुनिहिं बूझि जलपियहु जाइश्रम २
राक्षस कपट बेषतहं सोहा। मायापति दूतहि चह मोहा ३
जाइ पवनसुत नायउ माथा। लाग सोकहै रामगुण गाथा ४
होत महा रण रावण रामहिं। जीतहिं राम न संशय यामहिं ५
यहां भयेमें देखहुं भाई। ज्ञान दृष्टिबल मोहि अधिकाई ६
मांगा जल तेहिदीन्ह कमंडल। कहकपि नहिं अघाउं थोरेजल ७
सर मज्जन करि आतुर आवहु। दीक्षादेहुं ज्ञान जेहिपावहु ८
दो० सरपैठत कपि पदगहा मकरी तब अकुलान।
मारी सो धरि दिब्य तनु गई गगनचढ़ियान ॥ १६ ॥

ऐसा मनमें कहिकर चला और मार्गमें जाकर एक सरोवर पर सुन्दर मंदिर और बाग अपनी माया से बनाकर आपमुनि हो बैठा १ रामेच्छासे हनुमान ने सुन्दर आश्रम देखिकर कहा कि मुनिसे बूझिकर जल पानकरूं मार्ग श्रमजावे २ कपट वेषबना बैठा जो राक्षसो अपनी मायासे मयापति श्रीरामचन्द्रके दूतको मोहाचाहता है॥ ३ ॥ भगवन्माया प्रेरित हनुमान ने जाकर जो उसको शीशनवया सोई कालनेमि रामकी गुण गाथा कहने लगा ४ कि यासमय महा संग्राम राम रावण से होरहा है उसमें विजयतो रामहीकी होगी इसमें कुछभी संदेहनहीं है ५ मैंसब यांहिंबइहां बैठाहीं देखताहूं ज्ञान दृष्टि मेरेको बहुत है ६ हनुमान ने जल मांगा उसने कमंडल देदिया हनुमानने कहा थोरेजलसे मैंनहीं अघाताहूं ७ तब उसनेकहाकि इस सरोवरमेंस्नान करि आओ तबमैं तुमको ऐसा मंत्रदूंगा कि तुमको सबज्ञान होजायगा ॥ ८ ॥ दोहा जो हनुमान उस सरोवर में पैठे सोईमकरी ने उनका पैरपकरि लियातबतो हनुमान अकुलाये और पैरकी फटकारहीसे उसको मारि डारा सोदिव्य रूप होकर बिमान में बैठि आकासको चली और बोली ॥ १६ ॥

कपि तव दरश भई निः पापा। मिटा तात मुनिवरकर शापा १
मुनि न होइयह निशिचर घोरा। मानेहु सत्यबचन कपिमोरा २

असकहिगईअप्सरा जबहीं । निशिचरनिकट गयउकपितबहीं ३
कह कपि प्रथम दक्षिणा लेहू । पाछे हमहिं मंत्र तुम देहू ४
शिर लंगूर लपेटि पछारा । निज तनु प्रगटेसि मरती बारा ५
रामराम कहिछाड़ेसि प्राणा । सुनिमन हर्षि चलेउ हनुमाना ६
देखा शैल न औषधि चीन्हा । सहसा कपि उपारि गिरिलीन्हा ७
गहिगिरि निशि नभधावतभयेऊ । अवधपुरीऊपर कपिगयऊ ८
दो० देखा भरत बिशाल अति निशिचर मन अनुमानि ।
बिनु फरशायक मारेउ चाप श्रवण लगि तानि ॥ १७ ॥

हे हनुमान तुम्हारे दर्शनसे मैं निष्पाप होगई और महामुनीश्वर का शापभी छूटि गया अब मैं तुमसे कहेजातीहूं कियह मुनिनहींहै तुम्हारे मार्ग रोकनेको रावणका भेजामहा घोर राक्षसहै यहमैं सत्यकहतीहूं १।२ ऐसेकहिकर जब अप्सरा अपनेलोक कोगई तबहनुमान उस राक्षसके पास आये औरबोले ३ हेसत्यबादी मुनि प्रथम आप अपने मंत्रकी दक्षिणा तो लेलीजिये तबमंत्र पीछेसे देतेरहना ४ ऐसेकहि उसकोशिरमें अपना लांगूल लपेटिकर पछारदिया मरते समय उसका निजशरीर मारीचकी नाईंप्रगट होगया ५ रामराम कहिकर उसने अपना प्राण त्यागकिया यहसुनिकर प्रसन्नमन हनुमान तहांते चले ६ जाकरके पर्बततो देखा परंतु औषध न पहिचानी तबतो हनुमान ने सहसा उस पर्बतहीको उखारलिया ७ पर्बत को लेकर रातिही में जो धाये सो अयोध्यापुरी पर आ पहुंचे ॥ ८ ॥ दोहा ॥ तहां भरत ने अति बिशाल शरीर देखा राक्षस जानिकर बिन फरका एकबाण मारदिया १७ ॥

परामूर्छि महि लागत शायक । सुमिरत राम राम रघुनायक १
सुनिप्रिय बचन भरतउठि धाये । कपिसमीपअति आतुरआये २
बिकल बिलोकिकीश उरलावा । जागतनहिं बहुभांति जगावा ३
मुख मलीनमन भयउदुखारी कहत बचन भरि लोचन बारी ४
जेहिबिधिरामबिमुखमोहिकीन्हा।तेहिपुनियहदारुणदुखदीन्हा ५
जो मोरे मन बच अरु काया । प्रीति राम पद कमल अमाया ६
तोकपि होहु बिगत श्रम शूला । जोमोपर रघुपति अनु कूला ७
सुनत बचन उठिबैठेउ कीशा । कहिजय जयतिकोशलाधीशा ८
सो० लीन्ह कपिहि उर लाइ पुलकित तन लोचन सजल ।

प्रीति न हृदय समाइ सुमिरि राम रघुकुल तिलक ॥१८॥

भरतके हाथके बाणके लगतेही हनुमान मूर्छित पृथिवीपर गिरिपरे श्रीरामजयराम ऐसे कहतेहुये १ अतिप्यारे बचन सुनतेही भरत उठि दौरे और बड़े आतुर हनुमान केपास आये २ व्याकुल देखिकर हनुमानको हृदयसे लगालिया और बहुतेरा जगाते हैं तोभी नहीं जागते हैं ३ तबतो भरतका मुख मैला होगया मनमें बड़ेदुखी हुये नेत्रोंमें जलभरिकरयह कहने लगे ४ जिस दैवने मेरेको रामसे विमुख किया उसीने यह महा दारुण दुख दिया ५ फिरि प्रतिज्ञाकरिके बोले जो मेरेकर्म बचन मनसे श्रीराम स्वामीके चरणकमलोंमें सांची प्रीति होवै औरमेरेपर स्वामी अनुकूल होवैंतोयह बानर श्रमशूल विगत होजावै ७ ऐसी भरतकी प्रेम भरी बाणी सुनतेही जयराम जयराम कहते हुये हनुमान उठिबैठे ॥ ८ ॥ सोरठा ॥ तबतो हनुमानको फिरिहृदयसे लगा लिया प्रेमसे पुलकित तो भरतका गातहै और सजल नेत्रहैं रघुकुल तिलक श्रीरामचन्द्रका स्मरण करिके प्रीति हृदयमें नहीं समातीहै ॥ १८ ॥

कहु कपि कुशल कृपानिधानकी। सहित अनुज अरु मातु जानकी १
कपि सब चरित संक्षेप बखाने। भये दुखीमनमहं पछिताने २
अहह दैव मैं कतजग जायउं। प्रभु के एको काज न आयउं ३
जानिकुअवसर मनधरिधीरा। पुनि कपि सन बोले बलबीरा ४
तात गहरुहोइहि तोहि जाता। काज नशाइहि होत प्रभाता ५
चढ़ुमम शायक शैल समेता। पठवहुं तोहि जहं कृपानिकेता ६
तव प्रताप उर राखि गुसाईं। जैहौं नाथ बाण की नाईं ७
हर्षि भरततबआयसु दीन्हा। पदशिर नाइगमनकपिकीन्हा ८
दो० भरत बाहुबल शील गुण प्रभुपद प्रीति अपार।
जात सराहत मनहि मन पुनि पुनि पवन कुमार ॥१६॥

फिरितो धीरज धरिके पूछने लगे कि हे हनुमान कृपा निधान स्वामी रामचंद्र औ लक्ष्मण और सीता माता की समस्त कुशल तो कहो १ जब हनुमान ने समस्त कथा संक्षेप से कही सोतो सुनिकर बड़े दुखी हुये और मनमें बहुत पछिताये २ हा दैव मेरेको क्यों इस जगतमें उत्पन्न किया कि अपने स्वामीके एक काम भी न आया ३ फिरतो कुसमय जानिकर धीरज धरी और हनुमान से बलबोलिकर कहा ४ हेतात तेरे जाने में बड़ा गहर होगा और प्रात होतेही कार्य्य की हानिहोगी ५ तातेतू पर्वत समेत मेरेबाण पर आबैठमें अभी तेरेको रामके पास पहुंचाताहूं ६ हे स्वामी आप के प्रतापके बलसे आपके बाणही के समान जाऊंगा ७ तबतो प्रसन्न

होकर भरतने आज्ञा दी और उनके चरणोंको प्रणाम करिके हनुमान ने पयान किया ॥ ९ दोहा ॥ अबतो भरत के भुजाओंकाबल और उनका शील गुणऔर श्रीरामचन्द्रके चरणों में अपार प्रीति बारंबार सराहते हुये मनहीं मनमें हनुमान चलेजातेहैं॥१९॥

यहां राम लक्ष्मणहि निहारी । बोले बचन मनुज अनुहारी १
अर्द्ध रातिगइ कपिनहिं आवा । रामउठाय अनुजउर लावा २
सकेहु नदेखिदुखित मोहिकाऊ । बन्धुसदातव मृदुल सुभाऊ ३
ममहितलागि तजेउपितुमाता । सहेउबिपिन हिमआतपबाता ४
यथापंखबिनखगअतिदीना । मणिबिनुफणिकरि बरकर हीना ५
तसमम जियन तात बिनुतोहीं । जोजड़ दैवजियावहि मोहीं ६
जैहौं अवध कवन मुख लाई । नारि हेतु प्रिय बन्धु गवांई ७
बहुबिधिशोचत शोचबिमोचन । श्रवतसलिलराजीवबिलोचन ८
सो० प्रभुप्रलाप सुनिकान बिकल भये बानर निकर ।
आइगये हनुमान जिमि करुणा महँ बीररस ॥ २० ॥

यहां सच्चिदानन्द सिंधु मोहातीत विज्ञान घन सर्वज्ञ शिरोमणि सर्वेश्वर श्रीरामचन्द्र स्वामी लक्ष्मणकी दशा देखकर प्राकृतमनुष्यकीनाईं बचन बोले १ आधीरातिते जाचुकी हनुमान नहीं आया तबतो रामने लक्ष्मणको उठाकर छातीसे लगालिया और बोले २ अरे भैया तुमतो मेरेको कभी दुखी देखही नहीं सके तुम्हारा तो अतिही कोमल स्वभावहै ३ मेरे सुखके लिये तुमने माता पिता सब त्यागि दिये और महागहवर बन में आकर परम दुःसह शीतआतप पवनवर्षा सब सहे४अबतेरे बिना मेरा जीवन वृथा है जैसे पक्ष बिन पक्षी अति दीन होकर जिये मणि हीन सर्प और सूंड़हीनहाथी विकलजिये तैसाहीमेरा जीवनतेरेबिना होगा जो दैव जड़ ऐसे दुखपर भी मेरेको जियावेगा ५ । ६ ॥ गीतावली ॥ मेरोतोनककुचनिआई । और निबाहिभलीविधिभायप चल्योलषणसोभाई ॥ टेक ॥ परिहरिपुरपितुमातुसुहृदजिहि बनबसिबिपतिबटाई । तासंगहौंसुरलोकशोकतजिसक्योनप्राणपठाई ॥ तातमरणसिय हरणगृद्धबधभुजदाहिनीगवांई । तुलसीमैंसबभांतिआपनेकुलहिकालिमालाई ॥ सोऐसा अयशीमैं अयोध्या में कौन मुंह लेकर जाऊंगा स्त्री के लिये प्यारे भाई को गवांकर ७ ऐसे अनेक भांति के विलाप रामस्वामी करतेहैं और कमल नेत्रोंसे जलकी धारा चली आतीहै ८ ॥ सोरठा ॥ रामचन्द्र का बिलाप सुनकर सब बानर बिकल होगये इतने में हनुमान संजीवनी लेकर कैसे धीरज बिधायक आगये जैसे करुणा में बीर रस आजावे ॥ २० ॥

यहलंकाकांडकापूर्वार्द्ध हुआ ॥

हर्षि राम भेटेउ हनुमाना । अति कृतज्ञ प्रभु परम सुजाना १
तुरत बैद्य तब कीन्ह उपाई । उठिबैठे लक्ष्मण हर्षाई २
हृदय लाइ भेटेउ प्रभुभ्राता । हर्षे सकल भालुकपि ब्राता ३
यह वृत्तांत दशानन सुना । अतिबिषाद पुनिपुनि शिरधुना ४
व्याकुल कुंभकर्ण पहँगयऊ । करि बहुयत्न जगावत भयऊ ५
जागा निशिचर देखिय कैसा । मानहु काल देहधरि बैसा ६
कथाकही सबतिहि अभिमानी । जिहि प्रकार सीताहरि आनी ७
तात कपिन्ह निशिचर संहारे । महामहा योधा सब मारे ८
दो० सुनिदशकंधर बचन तब कुंभकर्ण बिलखान ।
जगदंबा हरिआनि शठ अब चाहत कल्यान ॥ २१ ॥

बड़े हर्ष समेत उठिकर राम ने हनुमान को भेंटा अति कृतज्ञ हैं स्वामी और बड़े सुजान हैं रंचक उपकार को भी बहुत मानते हैं और आपही जिसको अपनाया चाहते हैं उससे सुकर्म करा लेते हैं और उस दुष्कर कर्म को उसी का किया मानते हैं याते अति कृतज्ञ हैं १ तुरंतही सुषेण ने उपाय किया कि प्रथम तो शल्य करनी लगाइ घाव को बड़ा करिके शक्ति निकासिली फिरि बिशल्य करणी सेद्य बनगमाचमें पूरि आया फिरि संजीवनी के देतेही लक्ष्मण अति प्रसन्न उठ बैठे २ तब तो रामचंद्र ने छाती से लगा कर भाई भेंटा और वानर रीछ भी सब हर्षित होगये ३ यह सब वृत्तांत जब रावण ने सुना तब तो बड़े बिषाद से शिर को धुना ४ अति व्याकुल होकर कुंभकर्ण के पास गया औ बड़े बड़े उपाय करिके उस को जगाया ५ सोते से उठि बैठा कुंभकर्ण कैसा देखि परता है मानों शरीर धारण किये कालही बैठा है ६ तब तो कुम्भकर्ण के आगे उस अभिमानी ने सब कथा कही जैसे शूर्पनखा के बिरूप होने से सीता को हरि लाया ७ सो हे भाई बानरोंने राक्षस बहुत संहार किये और बड़े बड़े योधा तो सब मारिलिये कोई भी न रहा ॥ ८ ॥ दोहा ॥ ऐसे रावण के बचन सुनतेही कुंभकर्ण मनहीं में रोया और कहा देखो यह शठ जगदम्बा सीता को कामके बश लाकर अबकल्यानचाहताहै ॥२१॥

भल न कीन्ह तैं निशिचर नाहा । अबमोहिं आनिजगाचहुकाहा १
अजहुं तात त्यागेहु अभिमाना । भजहुराम होइहि कल्याना २
हे दशशीश मनुज रघुनायक । जाके हनूमान से पायक ३
कीन्हेउ प्रभुबिरोध तैं देवक । शिवबिरंचि सुर जाके सेवक ४

अहह बंधु तैं कीन्ह खुटाई। प्रथम न मोहिं जगायेहु आई ५
नारदमुनिमोहिं ज्ञानजो काहा। कहतेउं तोहिसमयनहिं राहा ६
अब भरिअंक भेटु मोहिं भाई। लोचन सफल करहुं मैं जाई ७
श्यामगात सरसीरुह लोचन। देखौं जाइ तापत्रय मोचन ८
दो० राम रूप गुण सुमिरि मन मग्न भयउ क्षण एक।
रावण मांगेउ कोटिघट मदअरु महिष अनेक॥ २२॥

भला नहीं किया तूने हे राक्षसेश्वर अर्थात् बहुत बुरा किया अब मेरे को जो आकर जगाया मेरे करने से क्या होगा १ हां अब भी हे तात जो इस अभिमान को छोड़ो और राम की शरण जाओ तो कल्याणही होगा २ हे रावण रामचंद्रमनुष्य ही हैं जिन के महाबली हनुमान से अनुचर हैं ३ अरे तूने उस परमेश्वर के साथ बैर किया है जिस के शिव ब्रह्मा समेत सब देवता सेवक हैं ४ हा बंधु तूने बड़ी ही खुटाई की कि पहिले से मेरे को आकर न जगाया ५ नारद मुनि ने जो ज्ञान मेरे से कहा रहे सो मैं तेरे से कहता अब उसका समय जाता रहा ६ अब तो तू मेरे को अंकभरि के मिलिले मैं भी अपने नेत्रों को राम की शोभा देखिकर सफल करलूं ७ सुन्दर श्यामल अंग और कमल से नेत्र त्रैताप बिमोचन जाकर देखूं॥ ८॥ दोहा॥ इस प्रकार रामचंद्र का रूप और गुणों का स्मरण करिके एक दण्डभरि मग्न होगया इतने में रावण ने कोटिन घट मद्य और अनेक महिष मंगाये॥ २२॥

महिष खाइ करि मदिरापाना। गर्जा बज्रा घात समाना १
कुंभ कर्ण दुर्मद रण रंगा। चला दुर्ग तजि सेन न संगा २
देखि बिभीषण आगे गयऊ। पदगहि नामकहत निजभयऊ ३
तातलात रावण मोहिं मारा। कहत परम हित मंत्रविचारा ४
तेहिगलानि रघुपति पहं आयउं। दीन जानि प्रभु केमन भायउं ५
सुनसुतभयउकालबशरावण। सोकिमिमानहिपरमसिखावन ६
धन्य धन्य तैं धन्य विभीषण। भयहुतात निशिचरकुलभूषण ७
बंधुबंश तैं कीन्ह उजागर। भजेहु राम रघुपति सुख सागर ८
दो० मनक्रम बचन कपट तजि भजेहु राम रण धीर
जाहुन निजपर सूझमोहिं भयउंकाल बश बीर॥ २३॥

पेट भरि महिष खाइ और मदिरापान कर मेघके समान गर्जा १ फिरितो कुंभ कर्ण रणके दुर्मदमें उन्मत्त लंकाको छोड़ि अकेलाहीचलि दिया २ कुंभकर्ण को आते

देखि बिभीषण उसके पासगया और भाईके चरण छूकर अपनानाम कहा और बोला ३ हेतात परम हित मंत्र कहते पर भरी सभामें रावणने मेरेको लातसे मारा ४ उसगलानिसेमें रामचन्द्रके पास चलाआया दीन जानि कर दीनदयालने अपनाइलिया ५ कुंभकर्ण बोला सुनभाई रावण तो कालके वश होरहाहै सो परम सिखावन केसेमानताहै ६ और हे बिभीषण भाई तूधन्य है धन्यहैं अतिधन्यहै हमारे निशाचरवंशका आभूषणहै० हेभाई तूने हमारे वंशको उजागर करिदिया जोतूरामके शरणगया ॥ ८ ॥ ॥ दोहा ॥ तनमन बचनसे निर्ब्यलीक होकर रामका सदासेवन करना और अबमेरे पाससे चलेजाओ में कालके वशहूं मेरे को अपना पराया कुछ नहीं सूझता है ॰३

बंधुबचनसुनि फिराबिभीषण । आयउजहं त्रैलोक्य बिभूषण १
नाथ भूधरा कार शरीरा । कुंभकरण आवत रण धीरा २
इतना कपिन्ह सुना जबकाना । किलकिलाइ धाये बलवाना ३
लिये उपारि बिटप अरु भूधर । कटकटाइ डारहिं ता ऊपर ४
कोटिकोटिगिरि शिखर प्रहारा । करहिं भालुकपि एकहिबारा ५
मुरै न मन तन टरै नटारा । जिमिगज अर्क फलनि करमारा ६
तब मारुत सुतमुष्टिक हनेऊ । परा धरणिव्याकुलशिरधुनेऊ ७
पुनितेहिं उठि मारेउ हनुमंता । घूर्मित भूतल परेउ तुरंता ८
दो० अंगदादि कपि मूर्छित करि समेत सुग्रीव
कांख चापि कपि राज कहं चला महाबलसींव ॥ २४ ॥

भाईके बचन सुनिकर बिभीषण लौटा और रामचन्द्रके पास आकर बोला १ हे नाथ नील पर्वतके आकार शरीर यह कुंभकर्ण महा रणधीर चला आताहै २ इतना बानरोंने जभी कानोंसे सुना तभी किल किला शब्द करिके महा बलवान दौरे ३ सबोंने बृक्ष और पर्वत उखारि लिये और कट कटाइ कर उसके ऊपर डारने लगे ४ करोरों परबतोंके टोरोंका प्रहार रीछ बानरउसपर एकही बारकरतेहैं ५ परंतु न तो उसका मन मुरताहै न तन टारनेसे टरताहै जैसे आकके फलोंका मारा हाथीन चले ६ तबतो कोप कर हनुमानने एक मुष्ट मारा उसके मारे घोर चिकार करताहुआ पृथिवी पर गिरिपरा ७ फेरि उसनेभी उठिकर हनूमान को ऐसा मारा कि तुरंतही मूर्छाखाकर पृथिवीपर गिरिपरे ॥ ८ ॥ दोहा ॥ फिरितो सुग्रीवसमेत अंगदादि बानरों को मूर्छित करिदिया औरसुग्रीवको कांखमें दाबिकर लंका को लेचला ॥ ॰४ ॥

उमाकरतरघुपतिनर लीला । खेलगरुड़ जिमिअहिगणमीला १
मूर्छा गइ मारुत सुत जागा । सुग्रीवहि तब खोजन लागा २

सुग्रीवहु की मूर्छा बीती । निमुकि गयउ तेहि मृतक प्रतीती ३
काटेसि दशन नासिका काना । गर्जिअकाश चला तेहि जाना ४
गहेसिचरणधरिधरणिपछारा । अतिलाघवपुनिउठितेहिमारा ५
पुनिआयउप्रभुपहं बलवाना । जयतिजयति जयकृपानिधाना ६
नाक कान काटेजिय जानी । फिरा क्रोध करि भानि गलानी ७
सहजभीमपुनिबिनुश्रुति नासा । देखतकपिदल उपजीत्रासा ८
दो० जय जय जय रघुबंशमणि धाये कपि दै हूह ।
एकहि बार ताहि पर डारे गिरि तरु जूह ॥ २५ ॥

हे पार्वती रामचन्द्र नर लीला करते हैं जैसे सर्पों में मिलि कर गरुड़ लीलाकहे बाल क्रीड़ा करें १ जब मूर्छा बीती तबतो हनुमान उठे और सुग्रीवको खोजने लगे २ इतनेमें सुग्रीवकी भी मूर्छा जाती रही कांखमें से कूदि गये उसने तो मरे जाने रहैं ३ दांतोंसे सुग्रीवने कुंभकर्णके नाक कान काटकर शूर्पनखा का भाई बनादिया और गर्जि कर आकाश को चले तब उसने जाना ४ चरण पकरि कर सुग्रीव को पृथ्वी पर दे मारा सुग्रीवने भी लाघवता से उठि कर उसको मारा और जय राम कहते हुये रामके पास आ गये ५ । ६ जब उसने अपने नाक कान कटे जाने तब तो गलानि मानि कर बड़े क्रोधसे फिरा ७ एकतो सहज भयानकता पर नाक कान कटे सोतो देखतेही बानरोंकी सेना को बड़ी भय उत्पन्न हुई ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जय रघुबंश मणि जय रघुवंश मणि ऐसे कहिकर बानर हूह मारि कर दौरे औरएकही बार उसके ऊपर पर्वत और वृक्षोंके समूह डारे ॥ २५ ॥

कुंभकर्ण रण रंग बिरुद्धा । सन्मुख चला कालजनु क्रुद्धा १
कोटिकोटि कपि धरि धरि खाई । जनुटीड़ी गिरि गुहासमाई २
कोटिन्हगहि शरीर सनमर्दा । कोटिन मींजि मिलायसिगर्दा ३
मुखनासिका श्रवणकीबाटा । निसरि पराहिं भालुकपिठाटा ४
रणमद मत्तनिशाचरदर्पा । बिश्वग्रसिहि जनुयहिबिधिअर्पा ५
मुरे सुभट सबफिरहिं न फेरे । सूझन नयनसुनहिं नहिंटेरे ६
कुंभकर्ण कपि फौज बिडारी । सुनि धाई रजनीचर झारी ७
देखी राम बिकल कटकाई । रिपु अनीक नाना बिधि आई ८
दो० सुनु सुग्रीव बिभीषण लषण संवारेहु सैन ।

मैं देखव खल बल दलहि बोले राजिव नैन ॥ २६ ॥

अचलो कुंभकर्ण आतिही रण रंगमें बिरुद्ध कालकी नाईं क्रोध किये सन्मुख चलाही आता है १ कोटि कोटि बानरों को पकरि पकरि कर खाता जाता है जैसे टीड़ी सलभा पर्वतकी गुहामें समा जातीहै २ कोटिन तो शरीरसे मलिडारे कोटिन पैरोंसे मींजिकर धूरिमें मिलादिये ३ कोटिन वानर मुख नाक कानके मार्ग निकसि आते हैं ४ रणमदमें उन्मत्त कुंभकर्ण कैसा दर्पित है मानों विश्वके ग्रसि लेनेकाही संकल्प किया है ५ अबतो सब वानर रीछ ऐसे भय भीत हैकर भगे कि फेरनेसे भी नहीं फिरते हैं नतो उनको कुछ आंखोंसे सूझता है न पुकारने से सुनते हैं ६ लंकामें सुना गया कि कुंभकर्णने वानरों की सेना भगा दी यह सुनतेही राक्षसों की धारि दौरी ७ रामचंन्द्रने अपनी सेना तो व्याकुल भागती और शत्रु की अपार सेना आई देखी ॥ ८ ॥ दोहा ॥ तब तो आपही बोले सुनो सुग्रीव और हे विभीषण हे लक्ष्मण तुमतोसब सेनाकी संभार करो औरइस दुष्टकीसेनाको मैं आपदेखताहूं ॥ २६ ॥

करशारंग बिशिख कटि भाथा । मृगपतिठवनि चले रघुनाथा १
प्रथमकीन्हप्रभुधनुष टकोरा । रिपुदल बधिरभयउ सुनिसोरा २
सत्य सिंधु छांड़े शर लक्षा । काल सर्पजनु चले सपक्षा ३
जहंतहं चले बिपुल नाराचा । लगे कटन भट बिकट पिशाचा ४
कटहिं चरण शिरउर भुजदंडा । बहुतक बीर होहिं शतखंडा ५
घूर्मिघूर्मिघायल महिपरहीं । उठहिंसंवारिसुभट पुनिलरहीं ६
लागतबाणजलदजिमिगाजहिं । बहुतकदेखिकठिनशरभाजहिं ७
रुंड प्रचंड मुण्ड बिनु धावहिं । धरुधरुमारुमारुधुनिगावहिं ८
दो० क्षणमहं प्रभु के शायकन काटे बिकट पिशाच ।
पुनि रघुबीर निषंग महं प्रबिशे सब नाराच ॥ २७ ॥

बांये हाथ में तो शारंग धनुष दाहिने में बाण कटिदेश में तूणीर सोहता है और सिंह की निर्भय मंद गति से राम स्वामी चले १ प्रथम तो स्वामीने धनुषही की टंकार की उसके शब्द के सुनतेही शत्रु का दलबधिर होगया २ फिरतोसत्य संधान स्वामीने शर लच्छकहें बाणों के समूह छोड़े मानों सपक्ष काल सर्पही चले आतेहैं ३ जहां तहां को अपार नाराच चले तिनसम महाबिकट राक्षस कटने लगे ४ चरण कटतेहैं शिरकटतेहैं हृदय फटतेहैं भुज दंड कटतेहैं अनेक बीरोंके सौ सौ खंड होजाते हैं ५ घूमिर कर घायल पृथिवी पर गिरते हैं संभारि कर फिरउठ लरतेहैं ६ बाणोंके लागतेही मेघके समान गाजतेहैं बहुतेरे कठिन बाणों को आते

देखतेही भाजते हैं ७ करोरों रुंडबिना मुंड के दौरते फिरते हैं और उनके शिपकरो पकरो मारोमारो गावते हैं ८ ॥ दोहा ॥ क्षणमात्रही में रामचन्द्र के बाणोंने सब राक्षस नाशकर दिये और फेरि स्वामी के निषङ्ग में प्रवेश करिगये ॥ २७ ॥

कुंभकरण मनदीख बिचारी । हने निमिष महं निशिचरझारी १
भयउ क्रोध दारुण बलबीरा । करि मृगनायक नाद गंभीरा २
कोपि महीधर लीन्ह उपारी । डारेसि जहं मरकट भटभारी ३
आवत देखि शैल प्रभु भारा । शरन मारि रज सम करिडारा ४
पुनि धनुतानि कोपिरघुनायक । छांड़े अतिकराल बहुशायक ५
तनमहं प्रविशिनिसरिशरजाहीं । जिमिदामिनिघनमाहिंसमाहीं ६
शोणित श्रवत सोहतनकारे । जनु कज्जल गिरि गेरु पनारे ७
बिकलबिलोकिभालु कपिधाये । बिहंसा जबहिं निकटभटआये ८
दो० महानाद करि गर्जा कोटिकोटि गहिकीश ।
मंहि पटकै गजराज इव शपथ करै दशशीश ॥ २८ ॥

कुम्भकर्ण ने बिचारा कि मेरे राक्षसतो इनने क्षणहीमें नाश करदिये १ तबतो उसको महा दारुण क्रोध हुआ महा गंभीर सिंहनाद करके गर्जा २ कोपि कर एक पर्वत उपार लिया और जहां बानरों की सेनाहै तहां को फेंका ३ रामचन्द्रने महा भारी पर्वत आते देखकर बाणों के मारे बीचही में रज करिके उड़ा दिया ४ फिरि धनुषतानिकर बड़े कोपसे अति बाण छोड़े ५ तनमें प्रवेश करके बाण कैसे निकसि जातेहैं जैसे दामिनी मेघ में छिपि जाती है ६ कारे शरीर पर रुधिर बहते कैसा सोहताहै मानों कज्जल गिरिपर गेरू के पनारे चलते हैं ७ ऐसा उसको बिकलदेख कर रीछ बंदर दौरे जब समीप आये तबतो उनको देखकर हंसा ८ ॥ दोहा ॥ महा नाद करके दौरा कोटि२ बानरोंको पकरि पकरि कर पृथिवी पर पटकता है और रावण की शपथ करता है ॥ २८ ॥

चले भाजि कपि भलु भवानी । बिकल पुकारत आरत बानी १
यह निशिचर दुकाल सम अहई । कपि कुलदेश परन अबचहई २
कृपा बारि धरि राम खरारी । पाहि पाहि प्रण तारति हारी ३
सकरुण बचन सुनत भगवाना । चले सुधारि शरासन बाना ४
खैंचि धनुष शत शर संधाने । छूटे तीर शरीर समाने ५
लीन्ह एक तेहि शैल उपाटी । रघुकुल तिलक भुजा सोइकाटी ६

धावा बाम बाहु गिरिधारी । प्रभु सोउ भुजा काटि महिडारी ७
काटे भुजा सोह खलकैसा । पक्षहीन मंदर गिरि जैसा ८
दो० करि चिकार अति घोर रव धावा बदन पसारि ।
गगनसिद्ध सुर त्रसित सब हाहा होति पुकारि ॥ २९ ॥

तबतो हे पारबती कुंभ कर्णकी भयके मारे बानर भालु सब भागि चले और महा व्याकुल आरत होकर पुकारे १ हे स्वामी यह निशाचर तो दुःकालही के समान है सो हमारे बानर कुल देश पर पराचाहता है २ हे कृप के मेघ हे प्रण तारति हरण हे खर मर्दन रामस्वामी बेगि हमारी रक्षाकरो ३ ऐसे करुणा भरेदीन बचन जबसुने तबतो भक्त भयभंजन भगवान धनुष में बाण संधानि करकुम्भ कर्णके ऊपर चले ४ धनुष को खेंचिकर सौबाण मारे ते सबउसके शरीर में समागये ५ तबतो उसने एक परबत उपाटि लिया राम चन्द्रने सोई भुजाकाटि कर पृथ्वी पर डारदी ६ फिरव ई भुजामें परबत लेकर दौरा स्वमीने सो भुजाभी काटिगेरी ७ भुजाकटे पर राक्षस कैसा सो हता है मानों पक्षहीन मंदराचलही है ॥ ८ ॥ दोहा तबतो महाघोर चिक्कार कर मुंह पसारि राम के उपर दौरा ऐसा देखि कर आकाश में सिद्ध सुर सब भयभीत होकर हाहा कार करने लगे ॥ २९ ॥

सभय देव करुणा निधि जानी । श्रवण प्रयंत शरासन तानी १
बिशिखनिकरनिशिचरमुखभरेऊ । तदपि महाबलभूमिनपरेऊ२
शरन्हि भरा मुख सन्मुख धावा । काल त्रोणिजनु तनु धरिआवा ३
तब प्रभु कोपि तीव्रशर लीन्हा । धरते भिन्न तासु शिरकीन्हा ४
सो शिरपरा दशाननआगे । बिकलभयउजिमिफणिमणित्यागे ५
परेउभूमिनभते जनु भूधर । तरे दाबि कपि भालु निशाचर ६
तासु तेज प्रभु बदनसमाना । सुर मुनि सबहिं अचंभव माना ७
सुरदुन्दुभीबजावहिंहरषहिं । अस्तुतिकरहिंसुमनबहु वरषहिं ८
दो० निशिचर अधम मलाय तन ताहि दीन्ह निजधाम ।
गिरिजा ते नर मन्दमति जे न भजहिं श्रीराम ॥ ३० ॥

जब रामचन्द्र ने देवताओं को सभीत जाना तबतो श्रवण पर्य्यंतधनुषको तानि कर बाणोंसे उसका मुंह भरिदिया तोभी महाबलवान भूमिपर न गिरा १। २ बाणोंसे भरा मुख भी कैसे रामके सन्मुख दौरा मानों कालही तूनीरही का शरीर धरिआया है तबतो राम स्वामीने कोपिकर महा तीव्र बाणलिया और धरसे भिन्न उसकाशिर

मारि दिया ४ सो उसकाशिर रावण के आगेगिरा उसके देखतेही रावण मणिहीन सर्पही की नाईं व्याकुल होगया ५ सिरके कटतेही उसका धरऐसा पृथिवी परगिरा मानों आकाश ते परबत टूटिपरा बानर रीछ निशाचरों को नीचे दाबि लिया ६ उसका तेज रामचन्द्रके मुखमें समा गया देव मुनीश्वर सबोंने आश्चर्य्य माना ७ फिरितो देवता दुन्दुभी बजाने लगे और हर्षित होगये अस्तुति करने लगे पुष्प अपार बर्षे ये ॥ ८ ॥ दोहा ॥ राक्षस महाअधमपापोंका निवास उसकोभी परमकृपाल जिन स्वामी ने अपना धाम बैकुंठ देदिया हे पारबती ते नर बड़ेही मतिमंद हैं जो ऐसे कृपाल श्रीरामचन्द्र के शरण नहीं होतेहैं ॥ ३० ॥

बहु बिलाप दश कंधर करई । बंधुशीश पुनि पुनि उर धरई १
रोवहिं नारि हृदय हति पानी । तासु तेजबलबिपुल बखानी २
मेघनाद तेहिअवसर आवा । कहि बहु कथा पिता समुझावा ३
देखेहु कालिह मोरि मनुषाई । अबहिं बहुत का करों बड़ाई ४
इष्टदेव सनजो बल पायउं । सो बल तात न तोहिं सुनायउं ५
यहिबिधि बिलपति भयो बिहाना । चहूंद्वारलागे कपि नाना ६
इतकपि प्रबल कालसम बीरा । उत रजनीचर अतिरणधीरा ७
लरहिंसुभट निजनिज जयहेतू । बरणि नजाइसमर खगकेतू ८
दो० मेघनाद माया रची रथ चढ़ि गयेउ अकाश ।
गर्जा प्रलय पयोदजिमि भइ कपिकटकहि त्राश ॥ ३१ ॥

उहां लंकामें रावण भांतिभांतिके बिलाप करताहै और भाईके शीशको बारबार हृदयमें धरताहै १ स्त्रीजन छाती पीटतीहैं और रुदन करतीहैं उसके तेजबलका बखान करते हैं २ उसी समय मेघनाद तहां आया और अनेक भांतिकी कथा कहि कर पिताको समुझाया ३ बोला कि हे पिता कालि तुममेरे पुरुषार्थ को देखना अभी मैंआपसे उसकी बड़ाई क्याकरूं ४ जोबल मैंने अपने इष्टदेवसे पायाहै सोबल तेरे को नहीं सुनायाहै ५ इस प्रकार जल्पना करते जो सूर्य्योदय हुआ सोई चारों द्वारों से रीछ बानर आलगे ६ इधरतो बानर और रीछ कालहीके समान बड़े बीरहैं और उधर राक्षस भी बड़ेही रणधीरहैं ७ दोनों ओरके योधा अपनी अपनी बिजय के निमित्त जैसे कुछ लरतेहैं सो संग्राम हे गरुड़ कहा नहीं जाताहै ॥ ८ ॥ दोहा ॥ उसी समय मेघनाद निकुंभला देवी का पूजन करि और उसके दिये अलक्ष्यरथ पर चढ़ि आकाशमेंसे प्रलय कालके मेघके समान गर्जा उसके सुनतेही समस्त कपि दल को त्रासही होगई ॥ ३१ ॥

शक्ति शूल तरवारि कृपाना । अस्त्र शस्त्र कुलिशायुध नाना १
रहे दशहु दिशि शायक छाई । मानहुं मघा मेघ झर लाई २
धरुधरु मारु सुनिय धुनिकाना । जोमारै तेहि कोउ न जाना ३
मारुत सुतअंगद नलनीला । कीन्हेसिबिकल सकलबलशीला ४
पुनिलक्षमणसुग्रीव बिभीषण । शरन्हि मारि कीन्हेसिजर्जरतन ५
पुनि रघुपति सनजूझै लागा । शर छांडै होइलागहिं नागा ६
ब्याल पाश बश भयो खरारी । स्वबश अनंत एक अबिकारी ७
नटइव कपट चरित कर नाना । सदा स्वतंत्र राम भगवाना ८
दो० गिरिजा जाकर नाम जपि नर काटहिं भव पाश ।
सोप्रभु आव कि बंध तर व्यापक बिश्व निवाश ॥ ३२ ॥

अबतो मेघनाद आकाशहीमे बर्छे, त्रिशूल, खड्ग, अस्त्र, शस्त्र, बज्र इत्यादि अनेक आयुध डारने लगा १ और बाण तो दशहू दिशमें ऐसे छाइदिये मानों मघेऽर्कमे मेघहीकी झरी लगाईहै २ पकरो पकरो मारोमारो ऐसी धुनिहीं तो कानोंमे सुनिपरती है और जो मारताहै उनको कोईभी नहीं जानताहै ३ मारुत सुत हनूमान अंगद नलनील इत्यादि समस्त बलवान मारिकर व्याकुल करिदिये ४ फिरि लक्ष्मण सुग्रीव बिभीषण भी बाणोंसे मारिकर झांझरे शरीर करिदिये ५ सबको अचेत करिके रामचन्द्र से जो जूझा जो बाण मारताहै सोस्वामीके अति सुकुमार सौंदर्य्य निधान श्याम शरीर में सर्प होकर चिपटि जाताहै ६ तबतो परमस्वतंत्रअनंत निर्बिकार रामचन्द्रस्वामी भी नागपाश के बश होगये ७ नटकी नाईं अनेक भांतिके कपट चरित्र करतेहैं आपतो राम भगवान सदा स्वतंत्रहीहैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ सुनोहे पारबतीजिसके नामको जपिकर मनुष्य महा कठिन संसार बंधनकाटते हैं सो बिश्व निवास स्वामी भला कब किसी बश में आसकता है ॥ ३२ ॥

व्याकुल कटक कीन्ह घन नादा । पुनिभा प्रगट कहै दुर्बादा १
जामवन्त कह खल रहुठाढ़ा । सो सुनि ताहि क्रोध अतिबाढ़ा २
बूढ़ जानि शठ छांडेउं तोहीं । लागेसि अधम प्रचारण मोहीं ३
अस कहि तरल त्रिशूल चलावा । जामवन्त करगहि सोधावा ४
मारेसि मेघनाद की छाती । परा भूमि घुर्मित सुर घाती ५
पुनि रिसाइगहिचरणफिरावा । महिपछारि निजबलदिखरावा ६

बर प्रसाद सो मरै न मारा । तब पद गहि लंका पर डारा ७
यहां देव ऋषि गरुड़ पठाये । राम समीप सपदि सो आये ८
दो० खगपति सब धरिखाये माया नाग बरूथ ।
माया बिगत भये सब हर्षे बानर यूथ ॥ ३३ ॥

इस प्रकार मेघनाद ने समस्त कटक परास्त किया फिरि दुर्बाद कहता प्रगट हुआ १ देखतेही जामवन्त ने कहा अरे दुष्ट खड़ाहो कहां जायगा सो सुनतेही तो उसको बड़ाही क्रोध बढ़ा और बोला २ अरे शठ मैने तेरेको बूढ़ा जानि करछोड़ि दिया रहै सो तू मेरे को ललकारता है तो खड़ाहो ३ ऐसे कहि कर अतितीव्रत्रिशूल चलाया जामवन्त उसीको हाथमें लेकर धाया ४ जाकर मेघनाद की छाती में मारा त्रिशूल के लगतेही घूमि घूमि कर पृथ्वी पर गिरिपड़ा ५ फिरि जामवन्त ने पैर पकरि कर उसे घुमाया और पछारि कर अपना बुढ़ापा दिखाया ६ जब बर के प्रसाद मारने से न मरा तबतो पैर पकरि कर लंका पर फेंकि दिया ७ यहां नारद ने गरुड़ को भेजासो तुरंतही अपने स्वामी रामचन्द्र के पास आगये ॥ ८ ॥ दोहा॥ गरुड़ ने आकर सब माया के सर्पों के समूह खालिये तबतो आसुरी माया से छूटि कर समस्त बानरों के यूथ हर्षित होगये ॥ ३३ ॥

दो० गहि गिरि पादप उपल सब धाये कीश रिसाइ ।
चले तमीचर बिकल सब गढ़ पर चढ़े पराइ ॥
मेघनाद की मुर्छा जागी । पितहि बिलोकि लाज अतिलागी १
तुरत गयउ गिरिवर कन्दरा । करों अजय मख असमनधरा २
सो सुधि पाइ बिभीषण कहई । सुनप्रभु समाचार असअहई ३
सुनि रघुपतिअतिशय सुखमाना । लिये बोलि अंगद हनुमाना ४
तुमलक्ष्मण मारेहुरण ओही । देखिसभय सुर दुख अतिमोही ५
जबरघुबीरदीन्ह अनुशासन । कटि निषंगकसिसाजिशरासन ६
प्रभु प्रताप उर धरि रणधीरा । बोलेघन इव गिरा गंभीरा ७
जो तेहि आज बधे बिन आऊं । तो रघुपति सेवक न कहाऊं ८
दो० बंदि राम पद कमल युग चले तुरन्त अनंत ।
अंगद नील मयंद नल संग सुभट हनुमंत ॥ ३४ ॥
पर्वत और वृक्ष लेलेकर जो वानर कोप करिके दौरे देखतेही निशाचर भागिकर

गढ़पर भयभीत होकर चढ़िगये ॥ चौपाई ॥ मेघनादकीजोमूर्छाजागी तो पिताको देख-तेही बड़ीलाज लगी १ तुरंतही पर्वतकी कन्दरा में जहां निकुम्भला देवी का मंदिर है तहां अजय यज्ञ की इच्छा करिके गया २ यह समस्त सुधि पाकर बिभीषण ने रामचन्द्र से जा कहा कि हे स्वामी ऐसा ऐसा समाचार है ३ सुनि कर रामचन्द्र ने बड़ा सुखमाना और अंगद हनुमान इत्यादि सब योधाओं को बुलाया और लक्ष्मण से कहा कि हे भाई आज तुम उसको मारि आउना देवताओं को सभीत देखिकर मेरे को बड़ा दुख होता है ४ । ५ जब श्रीरामचन्द्र ने उसके मारने की आज्ञा दी तबतो लक्ष्मण ने उठि कर अपना निषंग कसा धनुष चढ़ाया ६ अपने स्वामी राम-चन्द्र के प्रताप हृदय में धार करिके मेघ के समान गम्भीर वाणी बोले ७ समस्त सेना सुनो जो मैं आज उसको बिना मारे आऊं तो रामचन्द्रका सेवकही न कहाऊं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ ऐसे कहि रामचन्द्र के चरणों को प्रणाम कर अनंत भगवान तुरंतही चलि दिये अंगद नीलमयन्द नल हनुमान ये सब साथ ले लिये ॥ ३४ ॥

जाइ कपिन देखा सो वैसा । आहुति देत रुधिर अरु भैंसा १
कीन्ह कपिन तब यज्ञ बिध्वन्सा । जब न उठै तबकरहिं प्रशंसा २
तदपि न उठै धरे कच जाई । लातन हति हति चले पराई ३
ले त्रिशूल धावा कपि भागे । आये रामानुज के आगे ४
आवा परम क्रोध कर मारा । गर्जि घोर रव बारहिं बारा ५
कोपिपवन सुत अंगद धाये । हति त्रिशूल उर धरणि गिराये ६
प्रभु कहं छाडेसि शूलप्रचंडा । सरहति कृत अनंतयुग खंडा ७
शिखर एक पुनि लै सो धावा । रामानुज सोउ काटि खसावा ८
दो० आयुध बिबिध छांड सो रज सम करत अहीश ।
हर्षवंत कपि भालु सुर किन्नर नाग मुनीश ॥ ३५ ॥

जाकर बानरों ने मेघनादको महा उग्रतामसी यज्ञ पर बैठा देखा कि रुधिर और भैंसाओं की यज्ञकुंड में आहुति देरहा है १ तबतो बानर उस यज्ञ का बिध्वन्सकरने लगे जब न उठा तब उसकी बीरता की प्रशंसा करने लगे २ तो भी न उठा तब तो उसके केश खींचे और लातों से मारि मारि कर भागने लगे ३ तबतो मेघनाद त्रिशूल लेकर दौरा बानर सब भागिकर रामानुज स्वामी के पास भागि आये ४ अबतो मेघ-नाद बड़ीही रिसका मारा आया औ महा घोर शब्द से गर्जा ५ तब तो कोपि कर अंगद हनुमान उसपर दौरे सो उसने त्रिशूल मारिकर भूमि पर गिरादिये ६ लक्ष्मण स्वामी के भी ऊपर महाप्रचंड त्रिशूल छोड़ा सो लक्ष्मणस्वामीने बाणोंसे शतखंड करि

दिया ७ फिरि एक शिखर लेकर दौरा रामानुज स्वामी ने सोभी काटि कर खसा दिया ॥ ८ ॥ दोहा ॥ इसी प्रकार जोई जोई आयुध मेघनाद छोड़ता है उसकोशेष स्वामी रजके समान करते जाते हैं ऐसा लक्ष्मण मेघनाद का संग्राम देखकर रीछ, बानर, देवता, किन्नर, नाग, मुनीश्वर सब हर्षित होते हैं ॥ ३५ ॥

उठि बहोरि मारुत युवराजा । हतहिं कोपि तेहिघाउनबाजा १
फिरे बीर रिपु मरै न मारा । तब धावा करि घोर चिकारा २
आवत देखि क्रुद्धजनु काला । लक्ष्मण छांड़े विशिखकराला ३
देखे आवत पवि सम बाना । तुरत भयउ खल अंतरधाना ४
बिविध भेष धरि करै लराई । कबहुंकि प्रगट कबहुं दुरिजाई ५
देखि अजय रिपु डरपे कीशा । परम क्रोध तबभयउ अहीशा ६
सुमिरि कोशलाधीश प्रतापा । शर संधान कीन्ह करि दापा ७
छांड़ा बाण मांझ उर लागा । मरती बार कपट सब त्यागा ८
दो० रामानुज कहं राम कहं अस कहि छांड़ेसि प्रान ।
धन्यशक्र जित मातु तव कहअंगद हनुमान ॥ ३६ ॥

इतने में अंगद हनुमान मूर्छा से उठिकर उसको कोपि कोपिकर बहुतेरा मारते हैं उसके शरीर में घाउ नहीं होता है १ तब तो दोनों बीर हारि मानि करलक्ष्मण के पास आगये और मेघनाद महा घोर चिक्कार करिके दौरा २ कालके समान क्रोध किये चला आता देखिकर लक्ष्मण ने महा कराल बाण छोड़े ३ जब मेघनादने बज्र के समान बाण आते देखे तबतो दुष्ट तुरंतही अंतरधान होगया ४ अब तो भांति भांति के बेष धरि धरिकर लराई करता है कभी प्रगट होताहै कभी छिपि जाता है ५ जब शत्रु को अजय देखिकर बानर डरे तब तो शेष स्वामी परम कोपितहुये ६ कोशलाधीश श्री रामचंद्र का प्रताप सुमिरि कर अर्थात् यह प्रतिज्ञाकरिके ॥ धर्मात्मासत्यसंधश्चरामोदाशरथिर्यदिपौरुषेचाप्रतिद्वन्द्वस्तदेनंजहिरावणिम् बड़ी दापसे एक बाणसंधान किया ७ जो बाण छोड़ा सो उसके बीच छातीमें लगा और प्राण ले गया मरते समय उसने सब कपट छोड़दिया ॥ ८ ॥ दोहा ॥ रामानुज कहाँहैं राम कहाँहैं ऐसे बोलोंको नाहैं कहिकर जब उसने प्राण त्यागकिया तब तो उसकीबीरताको देखि अंगद हनुमान सोखिके बीरसराहनेलगे अरे मेघनाद इन्द्रजीत तेरी माताधन्यहै ॥३६॥

बिनु प्रयास हनुमान उठावा । लंका द्वार राखि तेहि आवा १
तासु मरण सुनि सुर गन्धर्बा । चढ़ि बिमान आये नभ सर्बा २

बरषिसुमन दुन्दुभी बजावहिं । श्रीरघुबीरबिमलयशगावहिं ३
जय अनन्त जय जगदाधारा । तुमप्रभु सब देवन्हि निस्तारा ४
अस्तुति करि सुर सिद्ध सिधाये । लक्ष्मण कृपासिंधु पहंआये ५
प्रभुहिबिलोकि शीश पदनावा । हरषित राम अनुज उरलावा ६
बाण बेध तनु देखिय कैसा । कणक त्रोणि शर पूरित जैसा ७
कृपादृष्टि प्रभु अनुजहि हेरी । बिगत घाय किन्हेउ कर फेरी ८
दो० करि श्रम मारेउ महारिपु रामानुज रणधीर ।
निडर सुमन बरषहिं बिबुध कहिजय गिरागंभीर ॥ ३७

फिरितो अनायास उसको हनुमान ने उठालिया और लंकाके द्वार पर राखि आये १ उसका मरण सुनि कर देवता गन्धर्व बिमानोंमें चढ़ि चढ़ि सब आकाशमें आगये २ पुष्प बर्षाते हैं और श्री रामचन्द्रका निर्मल यश गातेहैं आनन्द से दुन्दुभीबजाते हैं ३ जय अनन्त भगवानकी जय जगदाधार की उच्चारतेहैं और कहतेहैं हे स्वामी आपने हम सब देवताओंका निस्तार किया ४ जब अस्तुति करिके सुर सिद्ध सब चले गये तब लक्ष्मण कृपासिंधु रामचन्द्रके पास आये ५ रामचन्द्रको देखिकरउनके चरणोंको प्रणाम किया रामचन्द्रने प्रसन्न होकर भाईको हृदयसे लगालिया ६ बाण बेधित लक्ष्मणका शरीर कैसा सोहता है मानों सुवर्णोंहीका निषंग बाणोंसे भरा है ७ रामचन्द्र ने अपनी कृपा दृष्टि से देखि और अपना अमृत स्पन्दन कर कमल शरीर पर फेरि उनको बिशल्य करि दिया ॥ ८ ॥ दोहा ॥ ऐसा बड़ा परिश्रम करिके जब रामानुज रणधीर परम दुर्जयशत्रु मेघनादको मारा तबतो देवता निडर पुष्पबर्षाते और गंभीर बाणीसे जय जय उच्चरते हैं ॥ ३७ ॥

सुतबध सुनादशानन जबहीं । मूर्छित विकल परामहितबहीं १
दुखितहृदय लोचनभरिआवा । जनुशिरमणिअहिराजगवांवा २
हा सुत संतत आज्ञाकारी । करि बिलाप दशकन्ध पुकारी ३
शक्रादिक जीते सब देवा । सुर नर नाग करहिं सब सेवा ४
दूसर रहेउ न भुज बल दापा । स्वर्ग भूमि तल तपेउप्रतापा ५
बहु बिधि करि बिलाप लंकेशा । भयउ तेजहत सुनु उरगेशा ६
मंदोदरी रुदन करि भारी । उर ताड़ति बहुभांति पुकारी ७
नगरलोग सब व्याकुलशोचा । सकल कहहिं दशकंधरपोचा ८

दो० तब लंकेश अनेक बिधि समुझाई सब नारि ।
नश्वर रूप प्रपंच सब देखहु हृदय बिचारि ॥ ३८ ॥

रावणने जब मेघनाद का भी बध सुना तबतो मूर्छित होकर पृथ्वी पर गिरि परा १ महादुखी नेत्रोंमें जल भरि आया मानों कोई बड़ा भुजंग मणि गवांइ बैठा २ हापुत्र तू सदा मेरा अज्ञाकारी रहा इन्द्रादि सब देवता तूने जीते सुर नर नाग त्रयलोक निवासी सब तेरे सेवक रहे दूसरेकी भुजोंका दर्प तेरे आगे न रहा स्वर्ग भूमि और नीचेके सातों तलोंमें तेराही प्रताप तपा ऐसा अनेक भांतिका बिलाप रावण करता है और तेज हीन है गरुड़ होगया ३ । ४ । ५ । ६ मंदोदरी मेघनाद की माता महा भारी बिलाप करती है छाती पीटती है पुकारती है ७ नगर के लोग सब शोचमें व्याकुल हैं और रावणको महामंद कहतेहैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ तबतो रावण स्त्रियोंको व्याकुल देख कर अनेक भांति से समझाने लगा कि देखो बिचार करिके यह सब प्रपंच नश्वररूप और आश्चर्य्यसाही है ॥ आश्चर्य्यवत्पश्यतिकश्चिदेनमाश्चर्य्यवद्वदतितथैवचान्यः आश्चर्य्यवच्चैनमन्यःशृणोतिश्रुत्वाप्येनंवेदनचैवकश्चित तस्मात्सर्वाणि भूतानिनैवंशोचितुमर्हसि अर्थात् कोईतो इस जीको आश्चर्य्य सा देखता है कोई इसको आश्चर्य्य सा सुनता है कोई आश्चर्य्य सा कहता यथार्थ कोई भी नहीं जानता है तातें किसीका किसीको शोच करना न चाहिये ॥ ३८ ॥

तिनहिं ज्ञान उपदेशेउ रावण । आपन मंदकथा अति पावन १
पर उपदेश कुशल बहुतेरे । ये आचरहिं ते नर न घनेरे २
तासुक्रियाकरि निशिचर नाहा । भयउशोच बशअति उरदाहा ३
सचिव आइतब लगेबुझावन । बादि बिषाद करियजनि रावन ४
सुतबित नारि बंधु सबकैसे । उपजहिं घटा जाहिं नभ जैसे ५
तड़ित बिदितदेखिय घनमाहीं । रहैन थिर तहंतुरत छिपाहीं ६
यहजिय जानि सुनहु दशभाला । बचैनकोउ जगआये काला ७
अबप्रभु यतन बिचारहु सोई । रिपुकर नाश जवन बिधिहोई ८

दो० मय तनयातब आइ करि बहु प्रकार समुझाइ ।
मानत मूढ़ न काल वश परम क्रोध कहं पाव ॥ ३९ ॥

इस प्रकार उनको रावणने ज्ञान उपदेशकिया आपतो महामंद और परम पावन ज्ञानकी कथा १ औरोंको उपदेशने मेंतो बहुतेरे पंडित ज्ञानी बैरागी होतेहैं औरजो आप उसज्ञान परआरूढ़ रहतेहैं तेबिरलेहोहैं २ फिरितो उसकी क्रिया करिके रावण बड़ेही शोचके बश होगया ३ तबतो मंत्रीआकर उसको समुझाने लगे किहे महाराज

आप वृथा शोच न कीजिये४ पुत्रधन कलत्र बांधवयेसब कैसे आगमापायी हैं जैसेघटा मेघपटल आकाशमें प्रगटतेहैं औरनाशहोतेहैं ५ दामिनी प्रत्यक्ष मेघमें देखिपरतीहै और छिपिजातीहै थिरनहीं रहतीहै६ ऐसाजीमें जानिकर शोचमतिकरो कि कालके आयेते संसारमें कोईभी नहीं बचताहै ७ तातें हे प्रभु अबआप ऐसा यतन बिचारिये जिसमें शत्रुका नाशहो ॥ ८ ॥ दोहा ॥ ऐसा कुमंत्र सुनिकर मंदोदरी आई और बहुतेरा समुझाया कालके बश एक न माना और बड़ा क्रोध करिके उसको उठा दिया ॥ ३९ ॥

कृपासिंधु सेवक भय हारी । तिहि बिरोधिसुख चहतसुरारी १
निशासिरानि भयउ भिनसारा । लगे भालुकपि चारिहु द्वारा २
सुभट बुलाइ दशानन बोला । रणसन्मुख जाकर मन डोला ३
सो अबहीं बरु जाहु पराई । संयुग बिमुख भये न भलाई ४
निज भुजबल मैंबैर बढ़ावा । देहुं उतर जो रिपु चढ़ि आवा ५
असकहिमरुत बेगि रथ साजा । बाजे सकल जुझाऊ बाजा ६
चले बीर सब अतुलित बली । जनु कज्जल की आंधी चली ७
असगुणअमितहोहिंतेहिकाला । गनहिं नभुजबलगर्ब बिशाला ८

छं० अति गर्ब गनहिं न शकुन अशकुन श्रवहिं आयुधहाथते ।
भट गिरहिं रथतैंबाजिगजचिक्करहिं भाजहिं साथते ॥
गोमायु गृद्ध शृगाल खर रव स्वान रोवहिं अतिघने ।
जनोकाल दूत उलूक बोलहिं बचन परम भयावने ।

दो० ताहि कि संपति शगुण शुभ सपनेहुं मन बिश्राम ॥
भूतद्रोह रत मोह बश राम बिमुख रत काम ॥ ४० ॥

कृपाके समुद्र सेवकों की भयके हर्ता तिनसे वैर करिके सुरद्रोही रावण सुख चाहताहै १ जो राति बीती और भुरहरह हुआ सोई लंका के चारों द्वारोंसे रीछ बानर आनेलगे २ तबतो योधाओंको बुलाकर रावण बोला कि भाई जिसका मनरणके सन्मुख होते डुलताहो सोअभी भलेही भागिजाओ क्यों संग्राममें भगना भलानहीं ३ । ४ क्योंकि यहबैरमैंने अपनी भुजानके बलपर बढ़ायाहै जोशत्रु आचढ़ाहै तो उसको मैंआप उत्तर देलूंगा ५ ऐसा कहिकर पवन कासा बेगिरथ सजाया और जुझाऊ बाजे बाजनेलगे ६ और साथमें महाबली अपारबीर चले मानों कज्जलकी आंधीहो उठीचली आतीहै ७ उस समय अनेक अशकुन होनेलगे उनको भुजाओं के विशाल बलके गर्वसे गनताहो नहींहै ॥८॥ छन्द ॥ अतिगर्बके मारे शकुन अशकुन कुछगनताहो नहींहै हाथोंसे भ-

टोंके आयुध गिरिगिरि परतेहैं योधारथोंसेगिरतेहैं हाथीघोड़े चिक्करतेहैं और साथसे भागते हैं लोमड़ीशृगाल खरस्वान गृद्ध बड़ाशब्द करतेहैं काल दूतोंहीके समान महा भयावन शब्दउलूक करते हैं ॥ दोहा ॥ उसको ताहे पार्वती संपति शकुण बिश्राम कहां जो भूतद्रोहरत मोहके बश राम बिमुख और कामीहै ॥ ४० ॥ यह युद्ध कांडकी दूसरी चालीशीहुई चिकूटाचलका दूसरा कूट हुआ ॥

चलानिशाचर कटक अपारा । चतुरंगिनी अनीबहु धारा १
बिबिधिभांतिबाहन रथयाना । बिपुल बरण पताक ध्वजनाना २
चले मत्त गज यूथ घनेरे । प्राबिटजलद मरुत जनु प्रेरे ३
बरणबरण बरदैत्य निकाया । समर शूरजानहिं बहुमाया ४
चलतकटक दिगसिंधुरडिगहीं । क्षुभित पयोधि कुधरडगमगहीं ५
उठी रेणु रबिगयउ छपाई । पवन थकित बसुधा अकुलाई ६
पनव निशान घोररव बाजहिं । महाप्रलयके घनजनु गाजहिं ७
यहसुधि सकल कपिन्ह जबपाई । धायेकरि रघुबीर दुहाई ८

छं० धायेबिशालकरालमर्कटभालुकालसमानते ।
मानहुंसपक्षउड़ाहिंभूधर बृंदनाना बानते ॥
नखदशनशैलमहाद्रुमायुधसबलशंकनमानहीं ।
जयरामरावण मत्तगजमृगराजसुयशबखानहीं ॥

दो० दुहुंदिशि जयजय कारकरि निजनिज जोरीजानि ।
भिरेबीर इतरामहिं उतरावणहिं बखानि ॥ १ ॥

अब तो राक्षसों का अपार कटक चला जिस में चतुरंगिनी सेना बहुत बाने की है १ अनेक भांति के तो जिन के बाहन हैं अनेक बरण के ध्वजा पताका हैं २ अपार मत्त हाथियों के यूथ कैसे चले जाते हैं मानों पवन के प्रेरेमेघही बर्षा के उड़ेजातेहैं ३ बर्ण बर्ण दैत्यों के समूह चले जातेहैं संग्राम में बड़े शूरहैं और बड़े मायाबी हैं ४ कटक के चलते दिग्गजडिगते हैं समुद्र उछलता है पर्वत डगमगाते हैं ५ रेणु ऐसी उठी कि सूर्य्य छिपिगये पवन थकिरही पृथिवी अकुला उठी ६ अपार ढोल और निशान बड़े घोर से बाजते हैं मानों महाप्रलय के मेघही गाजते हैं ७ यह सुधि जभी बानरों ने पाई तब तो श्रीरामचन्द्र की दुहाई करिके दौरे ॥ ८ ॥ छन्द ॥ महा विशाल कराल वानर भालु काल समान दौरे मानों सपक्षपर्बतही उड़े चले आते हैं नख दांत पर्वत वृक्षोंको लियेहैं बड़े प्रबल शंका नहीं मानते हैं रावण

मत्तगजराज के मृग राज श्री रामचंद्र की जय और सुयश बखानते हैं ॥ दोहा फिर तो दोनों ओर से जयजय कार करिके और अपनी अपनी जोरी जानिकर वीर॥ भिरने लगे इधर राम उधररावण को बखानि करि ॥ १ ॥

रावण रथीबिरथ रघु बीरा । देखि बिभीषण भयउ अधीरा १
अधिक प्रीति मन भा संदेहा । बंदिचरण कहसहित सनेहा २
नाथन रथ न पादपद त्राना । केहिबिधि जितव बीरबलवाना ३
सुनहु सखाकह कृपानिधाना । जिहिजयहोइ सो स्यंदनआना ४
शौरज धीरज तेहि रथ चाका । सत्यशील दृढ़ध्वजा पताका ५
बलबिबेक दम पर हित घोरे । क्षमाकृपा समता रजु जोरे ६
ईश भजन सारथी सुजाना । बिरति चर्म संतोष कृपाना ७
सखाधर्म मय असरथ जाके । जीतन कहन कतहुं रिपुताके ८

दो० महाअजय संसाररिपु जीतिसकै सोबीर ।
जाकेअसरथ होइदृढ़ सुनहु सखामति धीर ॥
सुनिप्रभु बचन बिभीषण हर्षि गहे पदकंज ।
यहिमिसि मोहिं उपदेशेउ रामकृपा सुखपुंज ॥
उतप्रचार दशकंधर इतअंगद हनुमान ।
लड़त निशाचर भालुकपि करिनिजनिज प्रभुआन ॥ २ ॥

रावण तो रथी और राम बिरथ यह जानिकर बिभीषण अधीर होगया १ प्रीति की अधिकता से स्वामी का अतुलित बल और अप्रमेय पराक्रम अघटित घटना शक्ति तो भूलिगया कोमल माधुरी मूर्तिही देखिकर संदेह होगया और बोला २ हे नाथ न तो आपके पासरथ है न पैरों में पदत्राण हैं कैसे इस को जीतोगे यह तो बड़ा बलवान वीर है ३ रामचंद्र ने कहा सुनों हे सखा जिस रथ से बिजय होती है सो दिव्यरथ औरही है ४ शूरत्व और वीरत्व तो उस के पहिये होते हैं सत्य और शील ध्वजा पताका हैं ५ बल बिबेक दम उपकार ये चारों घोड़े हैं क्षमाकृपा समता की जोतियों से जोरे जाते हैं ६ ईश्वर का भरोसा सुजान सारथी है बैराग्य की ढाल संतोष की खड्गहो ७ हे सखा ऐसा धर्म रूपी रथ जिस के पास हो उस के जीतने को संसार में शत्रु कहां है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ ऐसा दृढ़ रथ से तो महा दुर्जय संसार शत्रु को भी जीति सकते हैं ऐसे रामचन्द्र स्वामी के बचन सुनिकर बिभीषण हर्षित होगया और चरण जागहे धन्यबाद किया कि इसी ब्याजसे स्वामी

ने मेरे को धर्म उपदेश किया अब उधर से तो रावणराक्षसों को प्रचारता है इधर से अंगद हनुमान बानरों को ललकारते हैं ताते राक्षस और रीछ बानर अपने अपने स्वामियों की दुहाई कर कर लड़ते हैं ॥ ७ ॥

सुर ब्रह्मादि सिद्ध मुनि नाना । देखत रण नभ चढ़े बिमाना १
हमहूं उमा रहे तेहि संगा । देखत राम चरित रण रंगा २
सुभटसमर रस दुहु दिशि मातें । कपि जय शीलरामबलतातें ३
एकएक सनभिरहिं प्रचारहिं । एकहि एक मर्दि महिपारहिं ४
मारहिंकाटहिंधरहिंपछारहिं । शीशतोरि शीशन्हिसनमारहिं ५
उदरबिदारहिंभुजाउपारहिं । गहिपदअवनिपटकिभटडारहिं ६
निशिचर भट महि गाड़हिं भालू । ऊपर डारि देहिं बहुबालू ७
बीर बली मुख युद्ध बिरुद्धे । देखियत बिपुल काल जनु क्रुद्धे ८

छं० क्रुद्धेकृतांतसमानकपितनश्रवतश्रोणितराजहीं ।
मर्दहिंनिशाचर कटकभटबलवन्तघनजिमिगाजहीं ॥
मारहिंचपेटनिकाटिदांतनि डारिलातनमींजहीं ।
चिक्करहिंमर्कटभालु छलबलकरहिंजेहिंखलछीजहीं ॥

ऐसे महा भारी संग्राम को ब्रह्मादिक सब देवता सिद्ध मुनीश्वर बिमानों में चढ़े आकाश से देखते हैं १ हम भी हे पार्वती उस साथ में श्री राम स्वामी के रणरंग चरित्र देखते रहे २ दोनों दिशा के योधा संग्राम रस में उन्मत्त रहैं परंतु बानर जय शील देखि परते हैं राम के बलके भरोसे से ३ कि एक एकों से भिरते हैं और पछारिही डारते हैं एकों के शिर तोरि कर दूसरों के शिरों से मारते हैं ४ मारते हैं काटते हैं पछारते हैं पेट फारते हैं भुजा उखारते हैं पैर पकरि धरती पर दे मारते हैं ५ । ६ राक्षसों को रीछ खोदि कर गाड़ते हैं ऊपर से बहुत सी बालू डारिदेते हैं ७ बीर बली मुख बानर युद्ध में कैसे बिरुद्ध हैं क्रोध किये अनेक कालही से देखि परते हैं ॥ ८ छन्द ॥ काल के समानही कोपे बानर जिनके शरीर में रुधिर बहता है राक्षसों के कटक को मर्दते हैं और बलवान मेघों के समान गर्जते हैं चपेटों से मारते हैं दांतों से काटते हैं लातों से मींजते हैं चिक्कारते हैं बानर और रीछ अनेक छल बल करते हैं जैसे बैरियों का नाश हो ॥

छं० धरिगालफारहिं उरबिदारहिंगलअतावरिमेलहीं ।
प्रह्लादपतिजनुबिबिधितनुधरिसमरआंगनखेलहीं ॥

धरुमारुकाटुपछारु घोरगिरागगनमहिभरिरही ।
जयरामजोतृणतेंकुलिशकर कुलिशतेंतृणकरसही ॥

दो० निज दल बिचलत देखेसि बीश भुजा दश चाप ।
रथ चढ़ि चलेउ दशाननफिरहु फिरहु करिदाप ॥ ३ ॥

पकरि कर गाल फारि डारते हैं हृदय बिदारते हैं और उनकी आंतों कापहिरे फिरते हैं मानों प्रह्लाद पति नृसिंहही अनेक रूप धारण किये संग्राम आंगन में बिचरते फिरते हैं ॥ पकरो पकरो मारो मारो काटो काटो पछारो पछारो ऐसी घोर बाणी धरती आकाश में सर्बत्र पूरि रही जय अघटित घटनाशक्ति मान श्री रामचंद्र की जो तृण को बज्र और वज्र को तृण करते हैं ॥ दोहा ॥ तबतो अपना दल बिचलते देखि कर रावण बीशों भुजाओं में दश धनुष और बाण ले रथमेंबैठि कर बड़ोदाप से अरे फिरो फिरो लौटो लौटो ऐसे पुकारता हुआ दौरा ॥ ३ ॥

धायउ परम क्रोध दश कंधर । सन्मुख चले हूह दै बंदर १
गहिकर पादप उपल पहारा । डारहिं तापर एकहि बारा २
लागहिं शैल बज्रतन तासू । खंड खंड करि फूटहिं आसू ३
चला न अचल रहा रथ रोपी । रण दुर्मद रावण अति कोपी ४
इत उत झपटि दपटि कपियोधा । मर्दैलाग भयउ अति क्रोधा ५
चले पराइ भालु कपि नाना । त्राहि त्राहि अंगद हनुमाना ६
पाहि पाहि रघुबीर गुसाईं । यह खलखाइ कालकी नाईं ७
तेहिं देखा कपि सकल पराने । दशहु चाप शायक संधाने ८

छं० संधानि धनुशर निकरछांड़े उरग जिमिउरलागहीं ।
रहेपूरिशर धरणिगगन दिशि बिदिशि कहंकपि भागहीं ॥
भा अतिकोलाहल बिकलदल कपिभालु बोलहिंआतुरे ।
रघुबीर करुणासिंधु आरत बंधुजन रक्षक हरे ॥ ४ ॥

दो० निज दल बिकल बिलोकि कटि कसिनिषंग धनुहाथ ।
लक्ष्मण चले सरोष तब नायराम पद माथ ॥ ४ ॥

उधरसे तो बड़ेक्रोधसे रावण दौरा और इधर से बानर हूह देकर उसके सन्मुखहुये १ हाथोंमें बृक्ष और पर्बत लेकर उसपर एकही वार भुकादिये २ जोजो पर्बत उसके बज्रसार शरीर में लगतेहैं तुरंतही खंड खंड होकर फूटिजाते हैं ३ बहुतेरा बानरोंने

मारा तोभी न चला रथरोंकि कर अचल होरहा रथके दुर्मदमें उन्मत्त रावण ने बड़ा क्रोध किया ४ रथसे उतरि इधर उधर झपटि दपटि कर बानरों को बड़े क्रोध से मर्दने लगा ५ तवतो रीछ बानर सब के सब भागे और पुकारे हे अंगद हे हनुमान बचाओ ६ हेराम स्वामी रक्षा करो यह दुष्ट तो काल के समान खाये लेताहै ७ जब रावण ने बानरों को भागते देखा तब तो रथपर बैठि दशहू धनुषों में बाण संधान किये ॥ ८ ॥ छन्द ॥ धनुषों को संधानिकर जो बाणोंके समूह छोंड़े सर्पकी नाईं बानरोंके लागते हैं पृथ्वी आकाश दिशा बिदिशा सर्वत्र बाण पूरित होगये बानर भागि कहां जावें तवतो बानरों के दलमें बड़ाही कोलाहल हुआ अतिही आरत पुकारतेहैं हे रघुबीर हेकरुणा सिंधु हेजन रक्षक हरि इस दुष्टसे हमारी रक्षाकरो ॥ दोहा ॥ इस प्रकार अपने दलको व्याकुल देखि धनुष बाण ले राम को प्रणाम करि बड़े कोप से लक्ष्मण चले और बोले ॥ ४ ॥

रे सठ कामारसि कपि भालू । मोहि बिलोकु तोर मैं कालू १
खोजत रहेउं तोहिं सुत घाती । आजु निपाति जुड़ावहु छाती २
असकहि छांडेसि बाण प्रचंडा । लक्ष्मण काटि किये शतखंडा ३
कोटिन आयुध रावण डारे । तिल प्रमाण करि काटि निवारे ४
पुनि निज बाणन कीन्ह प्रहारा । स्यंदन भंजि सारथी मारा ५
शतशत शर मारेसि दशभाला । गिरिशृंगनिजनु प्रबिसे व्याला ६
पुनि शतशर मारे उरमाहीं । परा अवनि तनु सुधि कछुनाहीं ७
उठा प्रबल पुनि मुर्छा जागी । छांडेसि ब्रह्म दीन्हि जो सांगी ८

छं० सोब्रह्मदत्त प्रचंडशक्ति अनन्त उर लागीसही ।
परुबिकलबीर उठावरावण अतुलबल महिमा रही ॥
ब्रह्मांड भुवनबिराज जाकेएकशिर जिमि रजकणी ।
तेहिचह उठावन मूढ़रावण जाननहिं त्रिभुवनधनी ॥ ५ ॥

दो० देखत धायउ पवन सुत बोलत बचन कठोर ।
आवत तेहिंउरमहं हनेउ मुष्टप्रहार प्रघोर ॥ ५ ॥

अरेशठ क्या विचारे रीछ बानरों को तूमारता है मेरेको देख मैंतेरा काल आपहुंचा १ रावण बोला अरे पुत्र घाती मैंतो तेरेहीको खोजतारहूं आज तेरेको मारि करसीतल छाती करूंगा २ ऐसे कहिकर महा प्रचण्ड बाणछोंड़े लक्ष्मणने काटि कर शतखंड कर दिये ३ ऐसेही रावण ने अनेक आयुध चलाये लक्ष्मणने रज समान करि दिये ४

फेरि अपने बाणोंका प्रहार किया उसका रथतोरि गेरा सारथी मारि गिराया ५ फिरि सहस्र बाणलेकर उसके दशो शिरोंमें सौ सौ बाण मारिकर जताया कि तू दशाननहै मैं सहस्राननहूं ते बाण मस्तकोंमें प्रवेश होगये ६ तिस पीछे सौ बाण उसकी छाती में मारे मूर्छा होकर गिरि परा फिरि मूर्छा जागेपर उठा और ब्रह्माकीदीहुई सफल शक्ति उसने लक्ष्मण पर छोंड़ी ॥ ८ ॥ छन्द ॥ सो ब्रह्माकीदी हुई शक्ति अनन्त भगवानकी छातीमें जालगी उसके लगतेही लक्ष्मण मूर्छित गिरिपरे रावण बहुतेरा उठाता रहा न उठे समस्त अंड मंडल जिन अनन्तके किसीएक शिरपर रजकण के समान बिराजता है उस त्रिभुवन धनीको मूढ़ रावण उठायाचाहताहै ॥ दोहा ॥ देखतेही हनुमान दुर्बाद कहते दौरे आतेही रावणने हनुमानकी छातीमेंमहा घोरमुष्टकमारा ॥ ५

जानुटेक कपि भूमि न गिरा । उठा संभारि बहुरि रिस भरा १
मुष्टिक एक ताहि कपि मारा । परेउ शैल जनो बज्र प्रहारा २
मूर्छा गई बहुरि सो जागा । कपिबल बिपुल सराहन लागा ३
धिगधिगमम पौरुषधिगमोही । जो तैं जियत उठा सुरद्रोही ४
असकहि कपिलक्ष्मण कहंलावा । देखिदशाननबिस्मयपावा ५
कह रघुबीरसमुझिजियभ्राता । तुम कृतांत भक्षक सुरत्राता ६
सुनत बचन उठिबैठ कृपाला । गगन गई सो शक्ति कराला ७
पुनिकर चापबाण गहिधाये । रिपु सन्मुख अति आतुर आये ८

छं० आतुरबहोरिविभंजिस्यंदनसूतहतिब्याकुलकियो ।
परुधरणिदशकन्धरबिकलपुनिबाणशतबेध्योहियो ॥
सारथीदूसरघालिरथतेहितुरतलंकालैगयो ।
रघुबीरबंधुप्रतापपुंजबहोरिप्रभुचरणननयो ॥ ६ ॥

दो० उहां दशानन जागिकर करैलाग कछुयज्ञ ।
जय चाहत रघुपति बिमुख शठ हठबश अतिअज्ञ ॥ ६ ॥

रावण के मुष्टके मारे हनुमान घुटने टेकि कर थंभि रहे गिरेनहीं फिरि संभारि करिरिसभरे उठे १ उठिकर एक मुष्टिक रावण के ऐसा मारा कि बज्रके मारे पर्वतकी नाई मूर्छित होकर गिरपरा २ मूर्छा के बीते जब जागा तबतो हनुमान के बल को सराहने लगा ३ हनुमानने कहा अरे सुरद्रोही दुष्ट जोतू मेरे मुष्टका माराजीता ही उठा तो मेरेबल को और मेरेको धिक्कारहै ४ ऐसे कहिकर हनुमान लक्ष्मण को उठालाये देखतेही रावणको आश्चर्य्य होगया ५ रामचन्द्रने कहा हे भाई तुम तो

कालकेभी भक्षक और देवरक्षक हो तुमको ब्रह्मशक्तिसे कौन भयहै ६ ऐसे स्वामीके बचन सुनतेही लक्ष्मण उठि बैठे और शक्ति ब्रह्मलोकको चलीगई ७ फिर लक्ष्मण धनुष बाणलेकर रावण के पास आये ८ ॥ छन्द ॥ आतेही उसका रथतोरि सारथी मारि उसको ब्याकुल करदिया पृथिवी पर गिरेपर भी सैबाणों से उसका हृदय बेधिदिया दूसरा सारथी उसको ब्याकुल देख रथमें डारि लंका को लेगया लक्ष्मण ने आकर रामचन्द्र को प्रणाम किया ॥ दोहा ॥ उहां रावण मूर्छा से उठिकर अजय यज्ञ करने लगा राम बिमुख होकर हठके बश शठ अज्ञान बिजय चाहता है ॥ ६ ॥

यहांबिभीषण सबसुधिपाई । सपदि जाइ रघुपतिहि सुनाई १
नाथ करै रावण एक यागा । सिद्ध भये नहिं मरिहि अभागा २
पठवहुनाथ बेगि भट बन्दर। करहिं बिध्वंस आव दश कन्धर ३
प्रात होतप्रभु सुभट पठाये। अंगद हनुमदादि सब धाये ४
कौतुक कूदि चढ़े कपि लंका। पैठे रावण भवन अशंका ५
जबहीं यज्ञकरत तेहिदेखा। सकल कपिन्ह भा क्रोध बिशेषा ६
रणते निलज्ज भाजि गृहआवा। यहांआइ बकध्यानलगावा ७
असकहि अंगद मारेसिलाता। चितवनशठ स्वारथ मनराता ८

छ० नहिंचितवजबकपिकोपितबगहिदशनलातनमारहीं ।
धरिकेशनारिनिकारिबाहिरतेतिदीनपुकारहीं ॥
तबउठेउक्रोधकृतांतसमगहिचरणबानरडारहीं ।
यहिबीचकपिन्हबिध्वंसमखकृतदेखिमनमहंहारहीं ॥ ७॥

दो० मखबिध्वंसि कपि कुशल सब आये रघुपति पास ।
चला निशाचर क्रोधकरि त्यागि जीवकी आस ॥ ७ ॥

यहां बिभीषण सब समाचार पाइकर शीघ्रही रामचन्द्रको जासुनाया १ हे नाथ रावण एक यज्ञ कररहाहै सिद्ध होनेसे दुष्टनहीं मरैगा २ ताते हेस्वामी बेगही बानरोंको भेजिये सो जाकर यज्ञका विध्वन्स करें जिससे रावण चलाआवै ३ प्रातहोतेही स्वामीने योधाओंको भेजा अंगदादि सबदौरे ४ सहसाही कूदिकर लंकापर चढ़गयों औरनिर्भय रावण केभवन में चलेगये ५ जभी उसको यज्ञ करते देखा बानरोंको बड़ीरिस हुई ६ रणसेतो निलज्ज भागि आया यहां आई कर बकध्यान लगायाहै ऐसेकहकर अंगदने लातमारी रावणने स्वारथ के बश देखाभी नहीं ७।८ ॥ छन्द ॥ जब नहीं देखा तबतो बानर दांतोंसे काटने लगे लातों से मारने लगे केश पकरि कर उसकी रानियें

को बाहर निकारि लातेहैं ते अतिदीन पुकारतीहैं तब तो क्रोधकरिके कालके समान उठा पैर पकरि पकरि बानरों को डारने लगा इसबीचमें बानरोंने यज्ञविध्वन्स करदिया सो देखकर हियेमें हारिगया ॥ दोहा ॥ यज्ञ बिध्वन्स करि कुशल सब बानर रामचन्द्रके पास आगये और रावण भी बड़े क्रोधसे जीवने की आशा छोड़िकर चला ॥ ० ॥

चलतहोहिं अतिअशुभभयंकर । बैठहिं गृद्धउड़ाहिं शिरनिपर १
भयउ कालबश काहुन माना । कहेसि बजावहु युद्ध निशाना २
चली तमीचर अनी अपारा । बहु गजरथ पदचर असवारा ३
प्रभु सन्मुख धाये खल कैसे । सलभ समूह अनल कहं जैसे ४
यहां देवतन्ह बिनती कीन्ही । दारुणबिपतिहमहिं यहिदीन्ही ५
अब जनि राम खिलावहु येही । अतिशय दुखित होति बैदेही ६
देव बचन सुनि प्रभु मुसकाना । उठि रघुबीर सुधारे बाना ७
कटि तट परिकर कसेउ निषंगा । करको दंड कठिन शारंगा ८
छं० शारंग कर सुन्दर निषंग शिली मुखाकर कटि कस्यो ।
भुज दंडपीन मनोहरायत उर धरासुर पद लस्यो ॥
कहदास तुलसी जबहिं प्रभु शरचाप कर फेरन लगे ।
ब्रह्मांड दिग्गज कमठ अहिमहि सिंधु भूधर डग मगे८ ॥
दो० शोभा देखि हर्षि सुर बरषहिं सुमन अपार ।
जयजय जय करुणा निधि छबिबल गुण आगार ॥ ८ ॥

रावणके चलते अतिभयंकर अशकुन होनेलगे महाअमंगल गृद्धयोधाओंके शिरोंपर बैठिबैठि उड़िजातेहैं १ कालके बशहुआ रावण किसीको नहीं मानताहै बोला कि हां युद्धके बाजेबजैं २ अबतो राक्षसोंकी अपार सेना चली जिसमें अनेक हाथीरथ अश्व चरपदचर देखि परतेहैं ३ स्वामीके सन्मुख दुष्टकैसे दौरे जैसे सलभा अग्निको दौरते हैं ४ यहां देवताओं ने रामचन्द्र से बिनती करी किहे स्वामी इसदुष्टने हमको बड़े दुख दियेहैं ५ तातें हेस्वामी अबइसको खेलमति खिलाओ सीताअति दुखी होतीहै ६ देवताओंके बचन सुनिकर स्वामी मुसुकाये और उनके सामुहेंही उठिकर बाना संभारा ७ कटिदेशमें तो निषंग कसा हाथमें धनुष महा कठिन शारंगलिया ॥ ८ ॥ छन्द ॥ महापीन भुजदंडहैं आयत हृदयहै तामें भृगुलता सोहतीहै याप्रकार सजि कर जब स्वामी धनुषबाणको फेरने लगे ताही समय ब्रह्मांड और दिग्गज कच्छप

बासुकि पृथिवी समुद्र पर्बत सब डगमगाये ॥ दोहा ॥ ऐसी शोभा देखि कर देवता पुष्प बरषाने लगे और जयजय शब्द करने लगे ८ ॥

येही बीच निशाचर अनी। कस मसाति आई अति घनी १
देखि चले सन्मुख कपि भट्टा। प्रलय काल के जनु घनघट्टा २
शक्तिशूल तरवारि चमकहिं। जनुदशदिशि दामिनी दमकहिं ३
गजरथ तुरंग चिकार कठोरा। गर्जत मनहुं बलाहक घोरा ४
कपि लंगूर बिपुल नभ छाये। मनहुं इंद्र धनु उयउ सुहाये ५
उठी धूरि मानों जल धारा। बाण बुन्द भइ वृष्टि अपारा ६
दुहुंदिशि परबत करहिं प्रहारा। बज्रपात जनु बारहिं बारा ७
श्रवहिं शैल जनु निर्झरबारी। शोणित सरि कादर भयकारी ८

छं० कादर भयंकर रुधिर सरिता बढ़ी परम अपावनी।
दोउ कूल दलरथ रेत चक्रावर्त्त बहति भयावनी॥
जल जंतु गजपद चरतुरंग खर बिबिधि बाहन कोगनै।
शर शक्ति तोमर सर्पचाप तरंग चर्म कमठ घनै॥ ९

दो० बीर परहिं जनु तीरतरु मज्जाबहु बह फैन।
कादर देखि डराहिं तिहि सुभटनिके मन चैन॥ ९॥

इसी अंतरमें राक्षसोंकी सेना कसमसाती अतिघनी आगई १ उसको आते देखि कर बानर सन्मुख दौरे मानों प्रलयकाल के मेघही हैं २ अनेक त्रिशूल और खड्ग जोचमकतेहैंसोईतो मानों दशों दिशामें दामिनी दमकतीहै ३ हाथीघोरे रथोंकी जो घोर चिक्कार होरहीहै सोई मानों मेघ गर्जतेहैं ४ बानरोंके अपार लांगूल जोआकाश में छायेहै सोईमानों इंद्रधनुषहै ५ रेणुजो उठीहै सोई जलधाराहै बाण बुन्दोंकीअपार बरषा होरहीहै ६ दोनों दिशासे परबतोंके प्रहार होते हैं सोई मानो बज्रपात होतेहैं ७ बीरोंके शरीर जो रुधिर श्रवतेहैं सोईमानों पर्बतों से झरना झरते हैं उन से रुधिरकी नदी बही ॥८॥ छन्द ॥ कादरोंकी भय दायनी रुधिर की महाअपावनी बढ़ी दोनों दलही तो दोनों उसके तट हैं रथोंके चक्र भ्रमर हैं मृतक हाथी घोरे गदहे पदचरंही जल जन्तु हैं बाण शक्ति तोमर सर्प हैं धनुष तरंगहैं ढालें कमठ हैं ॥ दोहा ॥ बीर जो जूझि जूझिकर गिरते हैं सोई मानों तटके वृक्ष गिरते हैं कादर देखिकर डराते हैं बीरोंके मनमें आनन्द होताहै ९ ॥

मज्जहिं भूत पिशाच बेताला। प्रमथ अमंगल रूप कराला १

काककंक लै भुजा उड़ाहीं । एक तें एक छीनि लै खाहीं २
एक कहहिं ऐसिउ बहुताई । शठहु तुम्हार दरिद्र न जाई ३
खैंचहिं गृद्ध आंत तट भये । जनु बनशी खेलहिं चित दये ४
बहुभटबहहिं चढ़े खग जाहीं । जनु नावरि खेलहिं सरिमाहीं ५
योगिनिभरि भरिखप्पर सञ्चहिं । भूत पिशाचबधू नभनञ्चहिं ६
भट कपाल करताल बजावहिं । चामुंडा नाना बिधि गावहिं ७
कोटिनरुंड मुंड बिनु डोलहिं । शीशपरे महि जयजयबोलहिं ८

छं० बोलहिंजोजयजयमुंडरुंडप्रचंडशिरबिनु धावहीं ।
संग्रामभूमिञ्अगुह्यजूझहिंसुभटसुरपुरपावहीं ॥
निशिचरबरूथबिमर्दिगर्जहिंभालुकपि दर्पित भये ।
संग्रामआगनसुभटसोहहिं रामशरनिकरनिहये ॥ १० ॥

दो० हृदय बिचारेउ दश बदन भा निशिचर संहार ।
मैं अकेल कपि भालु बहु माया करौं अपार ॥ १० ॥

भूत प्रेत पिशाच बेताल प्रमथ भैरवगण महा उग्र अमंगल रूप उस नदी में स्नान करते हैं १ काककंक पक्षी बीरों की भुजाओं को लेले उड़ते हैं और एकों से एक छीनि खाते हैंरतत्र एक उनसे कहते हैं अरे शठो ऐसी बहुता इति पर भी तुम्हारा दरिद्र नहीं जाता है ३ कोटिन गृद्ध उसके तटपर बैठे बीरों की आंतों को खींचिरहे हैं मानों अहेरी बंशी में चित्त लगा रहे हैं ४ अनेक बीर उस प्रवाह में बहेजाते हैं उन पर पक्षी बैठे जाते हैं सो मानों नवारे खेलते हैं ५ योगिनी खप्पर भरि भरि रुधिर का संचय करती हैं भूतिनी पिशाचनी नाचे हैं ६ चामुंडा बीरों के कपालों की करताल बजाती हैं और गान करती हैं ७ कोटिन रुंड बिन मुंड के दौरे फिरते हैं और उनके मुंड पृथ्वी पर जय जय बोलते हैं ॥ ८ ॥ छन्द॥ संग्राम भूमि में जो संमुख प्रत्यक्ष जूझते हैं तातें सूर्य्य मंडल को बेधि कर देव लोक को जाते हैं ॥ राक्षसों को मर्दि कर रीछ बंदर गर्जते हैं और संग्राम भूमि में बीर राम के बाणों के मारे सो रहे हैं ॥ दोहा ॥ तबतो रावण ने मन मेंबिचारा कि राक्षसों का तो संहार हो गया अब में तो अकेला औ रीछ बानर बहुत तातें अपार माया करना चाहिये ॥ १० ॥

देवन प्रभुहि पयादे देखा । उर उपजा अति क्षोभ बिशेषा १
सुरपति निज रथ तुरत पठावा । हर्षसहित मातलि लै आवा २

तेज पुंज रथ दिव्य अनूपा । हर्षिचढ़े कोशल पुर भूपा ३
चंचल तुरंग मनोहर चारी । अजर अमर मनसा गति कारी ४
रथारूढ़ रघुनाथहि देखी । धाये कपि बल पाइ बिशेषी ५
सही न जाइ कपिन्ह की मारी । तब रावण माया बिस्तारी ६
सो माया रघुबीरहिं बांची । लक्ष्मणहूं मानी करि सांची ७
देखी कपिन्ह निशाचर अनी । अनुज सहित बहु कोशलधनी ८

छं० बहुरामलक्ष्मणदेखिमर्कटभालुमनअतिअपडरे ।
जनुचित्रलिखे समेतलक्ष्मणजहंसोतहंचितवहिंखरे ॥
निजसेनचकितबिलोकिहंसिशरचापसजिकोशलधनी ।
मायाहरीहरिनिमिषमहं हरषीसकलमर्कटअनी ॥ ११ ॥

दो० बहुरि राम सब तन चितय बोले बचन गंभीर ।
द्वंद युद्ध देखहु सकल श्रमित भये अतिबीर ॥ ११ ॥

देवताओं ने जो रामस्वामी को पैदर देखा तो हृदय में उनके घबराहटहुआ१ तबतो सुरराज इन्द्रने तुरंतही अपना रथ भेजा हर्ष समेत मातलि सूतले आया २ तेजकापुंज अनूप दिव्य रथजब आया हर्ष समेत कोशलाधीश राम उस पर चढ़े ३ अजर अमर बड़े चंचल चारिघोड़े जोमन कीगति पर चलते हैं सो उसमें लगे हैं४ सब बानरों ने अपने स्वामीको रथारूढ़ देखा तब तो विशेष बल पाकर दौरे ५ जब रावण से बानरों की मार न सही गई तब माया रची ६ सो माया रामही को छोड़ि कर लक्ष्मण पर्य्यन्त को सांचीही लगी ७ बानरों ने जो राक्षसों की सेना को देखा तो सब राम लक्ष्मणही देखि परे ॥ ८ ॥ छन्द ॥ अनेक राम लक्ष्मणों को देखि रीछ बानर सकाइगये और लक्ष्मण समेत चित्र लिखे से हो रहे ॥ अपनी सेनाको चकित देखिकर हंसि कर रामचंद्र ने बाणों से क्षणहीमें माया नाश करदी तबतो बानरों की सब सेना हर्षित होगई ॥ दोहा ॥ फिरितो राम सबकी ओर कृपादृष्टि से देखि कर गंभीर बाणी से बोले कि अब तुम हमारा और रावण का द्वन्द युद्ध देखो तुम सब श्रमित हो रहे हो ॥ ११ ॥

अस कहि रथ रघुनाथचलावा । बिप्रचरण पंकज शिर नावा १
तब लंकेश क्रोध कहं पावा । गर्जत तर्जत सन्मुख आवा २
जीतेहु जे भट संयुग माहीं । सुनु तापस मैं तिन सम नाहीं ३

खर दूषण बिराध तैं मारा। बधेउ ब्याधि इव बालिबिचारा ४
निशिचर निकट सुभट संहारे । कुंभकरण घननादहु मारे ५
आजु बैर सब लेउं निबाही। जो रणभूमि भाजि नहिं जाही ६
सुन दुर्बचन कालबश जाना। बिहंसि बचनकह कृपानिधाना ७
सत्य सत्य सबतव प्रभुताई। जल्पसि जनि दिखाउ मनुषाई ८

छं० जनिजल्पना करिसुयशनाशहिनीति सुनिशठकरु क्षमा।
संसार महं पुरुष त्रिबिधि पाटल रसाल पनस समा॥
एकसुमनप्रद एक सुमन फल एक फलहि केवललागहीं।
एककहहिं करहिंनकरहिंकहिएककहहिं करहिं नबागहीं॥

दो० राम बचन सुनि बिहंसा मोहिं सिखावत ज्ञान।
बैर करत नहिं तब डरे अब लागे प्रिय प्रान॥ १२॥

ऐसे कहिकर श्री रामचन्द्र ने द्विज चरणों को शीश नवाया औ आगे को रथ बढ़ाया १ तब तो रामचद्रको रथारूढ़ देखिकर गर्जता तड़पता बड़े क्रोधसे सामुहें आया और बोला २ सुनरे तापस जो बीर तूने संग्राम में जीति लिये हैं मैं उनके समाननहीं हूं किंतु उनका बैर लेने हारा हूं ३ जो तूने मेरे भाई खरदूषण औबिराध को मारा और मेरेमित्र बिचारे बालिको निरपराध तूने छिपिकर ब्याधकी नाईं मारा है ४ और यहां मेरी सेना और योधा संहारे और कुंभकरण मेघनाद मारे ५ आज जो तू संग्राम भूमि से न भागि जाइगा तो सब का बैर लेलूंगा ६ ऐसे दुर्बचन सुनिकर कालकेबश जान और हंसिकर राम बोले ७ अरे रावण सत्यहै सत्यहै तेरी सबप्रभुताई परंतु मुंह से मत बके अपनी मनुसाई करदिखा॥ ८॥ छन्द॥ जल्पना वृथा बकवाद मतिकरै सुयश नाशता है शठ चमा कर नीतिको सुनु संसारमें तीनि वृक्षों के समान पुरुष होते हैं अर्थात् पटल पुष्पराज १ रसालआम्र,२ पनसकटहर ३ के समान एक तो परम सुगन्धी फूलही देता है फलता नहीं दूसरा जैसा फूलताहै तैसाही फलता है तीसरा फलताही है तैसेही एक कहतेही हैं करते नहीं दूसरे जैसा कहते हैं तैसाही कर दिखाते हैं तीसरे करही दिखाते हैं बकते नहीं हैं॥ रामचद्र के बचन सुनि कर हंसा और बोलाकिकालि के जन्मे मेरेको ज्ञान देहा॥ सिखता है बैर करते समय तबतो न डरे अब प्राणप्यारे लगते हैं॥ १२॥

कहि दुर्बचन क्रुद्ध दशकंधर। कुलिश समान लाग छांड़ै शर १
नानाकार शिली मुख धाये। दिशिअरु बिदिशिगगनमहिछाये २

पावक शर छांडेउ रघुबीरा । क्षण महं जरे निशाचर तीरा ३
छांडेसि तीव्र शक्ति खिसिआई । बाण संग प्रभु फेरि पठाई ४
कोटिन चक्र त्रिशूल पंवारे । बिनु प्रयास प्रभु काटि निवारे ५
निःफल होहिं रावण शर कैसे । खल के सकल मनोरथ जैसे ६
तब शत बाण सारथी मारेसि । परा भूमि जय राम पुकारेसि ७
राम कृपा करि सूत उठावा । तब प्रभु परम क्रोध कहं पावा ८

छं० भये क्रुद्ध युद्ध बिरुद्ध रघुपति त्रोण शायक कशमसे ।
कोदंड धुनि अति चंड सुनि मनुजाद भयमारुतग्रसे ॥
मंदोदरी उर कंप कंपत कमठ भू भूधर त्रसे ।
चिक्करहिं दिग्गज दशनगहिमहिदेखिकौतुकसुरहंसे १३॥

दो० तानि शरासन श्रवण लगि छांड़े विशिख कराल ।
रघुनायक शायक चले लह लहात जनु व्याल ॥ १३ ॥

ऐसे दुर्वचन कहिकर रावण बज्र के समान बाण छोड़ने लगा १ नाना आकारके जो रावणके बाण छूटे सो दिशा बिदिशा नीचे ऊपर छागये २ रामचन्द्र ने जो अग्नि बाण छोडा उससे निशाचर के बाण भस्म होगये ३ फिरि रावण ने खिसियाइ करि तीक्ष्ण शक्ति चलाई सो बाण के साथ रामने फेरि भेजी ४ कोटिन चक्र और त्रिशूल रावण ने चलाये स्वामी ने अनायासकर दिये ५ रावण के बाण कैसे निःफलहोजाते हैं जैसे दुष्टों के समस्त मनोऽर्थ मोघ होजाते हैं ६ तबतो सौ बाणों से मातलिको मारा जयराम पुकारता भूमि पर गिरि परा ७ रामचंद्र ने कृपा करिके सूत को उठा लिया और बड़ा क्रोध प्राप्त हुआ ॥ ८ ॥ छन्द ॥ युद्धके विरुद्ध में जबराम क्रोधित हुये तब तो तूनीर में बाण कसमसाइ उठे ॥ और धनुष को टंकोर के सुनतेही राक्षस भय भीत होगये ॥ मंदोदरी का हृदय कांपने लगा कच्छप भी कांपने लगे पृथिवी पर्वत डरिगये दिग्गज चिक्कारने लगे देखि देवता हर्षित होगये ॥ दोहा ॥ धनुष को श्रवण पर्य्यंत तानिकर महाकराल बाण छोड़े औरघुनायक के शायक कैसे जाते हैं मानों लह लहाते सर्पही आते हैं ॥ १३ ॥

चले बाण सपक्ष जनु उरगा । तुरतहिं हते सारथी तुरगा १
रथविभंजि हतिकेतु पताका । गर्जा अभ्यंतर बलथाका २
तब रावण दशशूल चलाये । बाजिचारि महिमारि गिराये ३
तुरंग उठाइ कोपि रघुनायक । खैंचि शरासन छांड़े शायक ४

तीश तीर रघुबीर पवारे। भुजन्हि समेत शीश महि डारे ५
काटतहीं पुनि भये नबीने। राम बहोरि भुजाशिर छीने ६
पुनिपुनि प्रभुकाटत भुजशीशा। अतिकौतुकी कोशलाधीशा ७
रहेछाइ नभशिर अरु बाहू। मानहुं अमित केतु अरुराहू ८
छं० जनुराहुकेतुअनेकनभपथश्रवतशोणितधावहीं।
रघुबीरतीरप्रचंडलागहिं भूमिगिरननपावहीं॥
एकएकशिरशरनिकरछेदेनभउड़तइमिसोहहीं।
जनुकोपिदिनकरकरनिकरजहंतहंबिधुंतुदपोहहीं॥ १४॥
दो० जिमिजिमिप्रभुहत तासु शिर तिमितिमि होहिं अपार।
सेवत बिषय बिवर्द्ध जिमि नितनित नूतनमार॥ १४॥

कैसे रामबाण चले हैं मानों सपक्षसर्पही हैं जातेही रावण के घोर और सारथी मारदिये १ रथ को तोरि केतु पताकाओं को काटि निषंग में आगये ऊपर मन तो रावण गर्जा परंतु अंतःकरण का बलथकि गया २ तब रावण ने दश त्रिशूल चलाये उन से चारों घोड़े मारिकर गिरादिये ३ घोड़ों को उठाइ बड़े कोपसे धनुष को खैंचिकर बाण छोड़े ४ तीश बाण रामचंद्र ने चलाये उन से भुजाओं समेत शीश काटि कर डारिदिये ५ काटतेही नये और होगये स्वामी ने सो भी काटि गेरे ६ ऐसे बारबार रामचंद्र काटते हैं बारबार जमतेहैं राम बड़े कौतुकी हैं ७ आकाश में बाणों से छेदे शिर और भुजाकैसे छारहे हैं मानों अनेक राहु केतुही हैं॥ ८॥ छन्द॥ रामचंद्र के प्रचंड बाण पर बाण जो लगते हैं उन के मारे भूमिपर गिरने ही नहीं पाते एक एक शिर में बाणों के समूहछेदे आकाश में उड़ते कैसे सोहते हैं मानों सूर्य की किरणों के समूहों ने कोपि कर जहां तहां अपने बैरी बिधुन्तुद राहुही पोहे हैं॥ दोहा॥ जैसे जैसे रामस्वामी उस के शीश भुजाओं को काटते हैं तैसे तैसे अपार बढ़तेही जाते हैं जैसे विषय भोग से नितनितनया काम बढ़ताही जाता है॥ १४॥

दशमुख देखि शिरनि कीबाढ़ी। बिसरा मरण भईरिसिगाढ़ी १
गर्जेउ मूढ़ महा अभिमानी। धायउ दशहु शरासन तानी २
समर भूमि दशकंधर कोपा। बर्षि बाण रघुपति रथतोपा ३
दंड एक रथदेखि न परेऊ। जनु नीहार महं दिनकर दुरेऊ ४
हाहाकार सुरन जबकीन्हा। तब प्रभुकोपि कारमुक लीन्हा ५

शरनि बारिरिपु के शिरकाटे । तेदिशि बिदिशि गगनमहिपाटे ६
काटशिरनभमारग धावहिं ।जयजय धुनिकरि भयउपजावहिं ७
कहं लक्ष्मण सुग्रीव कपीशा । कहं रघुबीर कोशला धीशा ८

छं० कहंरामकहिशिरनिकरधायेदेखिमर्कटभजिचले ।
संधानिधनुरघुबंशमणिहंसिशरनिशिरछेदेभले ॥
शिरमालिकाकरकालिकागहिवृंदवृंदनिबहुमिलीं ।
करिरुधिरसरि मज्जन मनहुंसंग्रामबटुपूजनचलीं ॥ १५॥

दो० पुनिदशकंठ क्रोधकरि छांड़ीशक्ति प्रचंड ।
सन्मुखचली बिभीषणहिं मनहुं कालकर दंड ॥ १५ ॥

रावण ने जो अपने शिरों की बाढ़ि देखी मरने की भय तो बिसारि दी और रिस बढ़ी १ महा अभिमानी मूढ़गर्जा और दशहू धनुषों को संधानिकर दौरा २ संग्राम भूमि में रावण ने कोप किया बाणों को बर्षिकर रामचन्द्र का रथ तोपि दिया ३ एकदण्ड भरि रथदिखाइ न परा मानों कुहिर में सूर्य्य तोपि गये ४ जब देवताओं ने हाहा कार किया तब राम ने कोपिकर धनुष लिया ५ उस के बाण निकर फिरि बारबार शिरकाटे ते दिशा विदिशा में सर्बेच भरिदिये ६ काटे शिर आकाश में दौरे फिरते हैं जयजय शब्दकरिके बानरों को डरपातेहैं ७ लक्ष्मण कहांहैं सुग्रीव कपीश कहां हैं औ कोशलाधीश रामकहां हैं ॥ ८ ॥ छन्द ॥ ऐसे कहते हुये जब शिर दौरे देखतेही बानर भागे तब तो रामचन्द्र ने धनुष संधानि कर बाणों से उस के शिर कैसे छेदे मानों शिरों की माला अनेक रूप होकर कालिका हाथोंमें लिये रुधिर सरिता में स्नान करिके संग्राम बटु के पूजने को जाती है ॥ दोहा ॥ फिरि तो रावण ने क्रोध करिके महाप्रचंड एक शक्ति छोड़ी सो बिभीषण के ऊपर कालदंडहो के समान आई ॥ १५ ॥

आवत देखि शैल प्रभु भारा । प्रण तारति हर बिरद संवारा १
तुरत बिभीषण पाछे मेला । सन्मुख सहेउ राम सो शैला २
लागि शक्ति मूर्छा कछु भई । प्रभुकृत खेल सुरन्हि बिकलई ३
देखिबिभीषण प्रभुश्रमपायउ । गहिकरगदा क्रोधकरिधायउ ४
रे कुभाग्य शठ मंद कुबुद्धे । तैं सुर नर मुनि नाग बिरुद्धे ५
सादर शिव कहं शीश चढ़ाये । एक एकके कोटिन पाये ६

तेहिकारण खल अबलगि बाचा । अबतव काल शीशपर नाचा ७
रामबिमुख शठ चहसि संपदा । असकहि हनेसि मांझ उरगदा ८

छं० उरमांझगदाप्रहारघोरकठोरलागतमहिपरा ।
दशबदनशोणितश्रवतपुनिसंभारिधावारिसभरा ॥
दोउभिरेअतिबलमल्लयुद्धविरुद्धएकएकहिहनै ।
रघुवीरबलदर्पितबिभीषणघालिनहिंतेहिकहंगनै ॥ १६ ॥

दो० उमा बिभीषण रावणहिं सन्मुख चितवा कि काउ ।
सो अब भिरत काल जिमि श्री रघुबीर प्रभाउ ॥ १६ ॥

रामचन्द्रने जो महाभारी शेल शरणागत बिभीषण पर आते देखा तो अपने प्रणतार्ति हरण बिरदको स्मरण किया १ तुरंतही बिभीषणको तो पाछे मेलि दिया और आप सन्मुख होकर उस शेलको सहा २ शेलको झेलिकर कुछ मूर्छामानी स्वामी तो समर शोभा करते हैं देवता बिकल होजातेहैं ३ बिभीषणने देखा कि स्वामीने मेरे अर्थ श्रम पाया तबतो गदा लेकर रावण पर दौरे और बोले ४ अरे अभागे शठमंद कुबुद्धी भले तने देव मुनि नर नाग सताये हैं प्रीति समेत एक शिवको शीश चढ़ाये हैं सो एक एकके कोटि कोटि पाचुका ५ । ६ उसी से दुष्ट अब तक बचा रहा अब तेरा काल शिर पर आ नचा ७ रामसे बिमुख होकर संपदा चाहता है तो यह ले ऐसे कहिकर छातीमें गदा मारी ॥ ८ ॥ छन्द ॥ छातीमें गदाके लगतही महा ब्याकुल रथसे गिरि परा दशहू मुखसे रुधिर डारने लगा फिरि सावधान होकर बिभीषणपर दौरा दोनों मल्लयुद्धसे भिरते हैं एक एकको मारते हैं रामके बलसे गर्बित बिभीषण निदरिकर उसको कुछभी नहीं गनता है ॥ दोहा ॥ देखो हेपार्वती बिभीषण रावण के सन्मुख सपनेमें भी नहीं चितै सकता रहै सोअब कालके समान रावणसे लरता है यह सब श्री रामचन्द्रही का प्रभाव है ॥ १६ ॥

देखा श्रमित बिभीषण भारी । धायउ हनूमान गिरिधारी १
रथ तुरंग सारथी निपाता । हृदय मांझ तेहि मारेसि लाता २
ठाढ़ रहा अति कंपित गाता । गयउ बिभीषण जहं जनत्राता ३
पुनि रावण कपि हनेउ प्रचारी । चला गगन कपि पूंछ पसारी ४
गहेसि पूंछ कपि सहित उड़ाना । पुनि नभ भिरेउ प्रबल हनुमाना ५
लरत अकाश युगल सम योधा । एकहि एक हनत करि क्रोधा ६
सोहहिं नभ छल बल बहु करहीं । कज्जल गिरि सुमेरु जनु लरहीं ७

बुधिबल निशिचर परैनपारा। तब मारुत सुत प्रभुहि संभारा ८

छं० संभारिश्रीरघुबीरधीरप्रचारिकपिरावणहन्यो।

महिपरतपुनिउठिलरतदेवन्हियुगलकहजयजयभन्यो॥

हनुमन्तसंकटदेखिमर्कटभालुक्रोधातुरचले।

रणमत्तरावणसकलसुभटनिकायभुजबलदलिमले॥ १७

दो० तब रघुबीर प्रचारे धाये कीश प्रचंड।

कपि दल प्रबल देखि तेहि कीन्ह प्रगट पाषंड॥ १७॥

जब रावणके साथ लरते लरते बिभीषण को महा श्रमित देखा तबतो हनुमान एक पर्बत लेकर धाये १ रावणका रथ घोरे सारथी सब नाश करि दिये और उसकी छाती में लात मारी २ लातके मारे कांपने तो लगा परंतु खड़ाही रहा इतने में बिभीषण रामचन्द्रके पास चले गये ३ फिरि रावण ने हनुमानको प्रचारि कर मारा और आकाशको चला हनुमानने पूंछ पसारी ४ रावण पूंछ पकरि कर हनुमान समेत उड़ा फिरि आकाशमें जाकर हनुमान लरे ५ आकाशमें दोनों बराबरके योधा लरते हैं एकको एक क्रोध कर कर मारतेहैं ६ अनेक प्रकारके छल बल करते कैसे सोहते हैं मानों कज्जल गिरि और सुमेरुही लरते हैं ७ बुद्धि और बलसे रावण गिरानेसे गिरताही नहीं है तबतो हनुमानने अपने स्वामी रामकास्मरण किया॥ ८॥ छन्द॥ रामको सुमिरि जो प्रचारि कर रावणको मारा सोई पृथ्वी पर गिरि परा और फिरि दोनों लरने लगे देवता दोनोंको सराहने लगे हनुमानको संकट देखि रीछ बानर दौरे रणमत्त रावणने अपनी भुजाओंके बलसे सबको मारा॥ दोहा॥ तबतो रामने फिरि सब सेनाका प्रचारा और महा प्रचंड बानर दौरे बानरोंके दलको प्रबल देखि कर उसने पाषंड प्रगट किया॥ १७॥

अंतरध्यान भयउ क्षण एका। पुनि प्रगटेसि खल रूप अनेका १

रघुपति कटक भालु कपि जेते। जहं तहं प्रगट दशानन तेते २

देखे कपिन अमित दशशीशा। जहं तहंभजे भालु अरुकीशा ३

भागे बानर धरहिं न धीरा। त्राहि त्राहि लक्ष्मण रघुबीरा ४

दशदिशि कोटिन धावहिं रावन। गरजहिं घोर कठोर भयावन ५

डरे सकल सुर चले पराई। जयकी आस तजहु अब भाई ६

सबसुर जित एक दशकंधर। अब बहु भये तकहु गिरि कंदर ७

रहे बिरंचि शंभुमुनि ज्ञानी। जिनजिन प्रभु महिमा कछुजानी८

छं० जानाप्रताप ते रहे निरभय कपिन्ह रिपुमानेफुरे ।
चलेबिकल मर्कटभालु सकलकृपाल पाहि भयातुरे ॥
हनुमंतअंगद नील नल अति बल लरत रणबांकुरे ।
मर्दहिं दशानन कोटिकोटिन जे कपटके अांकुरे ॥ १८ ॥

दो० सुरबानर देखेबिकल हंसे कोशलाधीश ।
साजि शरासन निमिषमहंहरे सकल दशशीश ॥ १८ ॥

रावण एक तो अंतर ध्यान होगयाफिरि अनेक रूपसे प्रगट हुआ १ रामचंद्र की सेनामें जितनेरीछ बंदर हैं जहां तहां उतनेहीं रावण प्रगट होगये २ जब बानरोंने अपार रावणदेखे तबतो जहां तहांको रीछबंदरभगे ३ ऐसेभागेकि धीरहीनहीं धरते हैंऔरपुकारते जाते हैंहेलक्ष्मण हेरामस्वामी बचाइये ४ दशहू दिशाओंमेंकोटिनरावण दौरतेफिरतेहैंऔर महा घोर कठोर धुनिसे गर्जते हैं ५ तबतोदेवता सब डराइकर भागिचलेकि अबजीतिबेकी आशाकोई मतिकरो ६ सब देवतातोएकहीरावणने जीति लिये अब अनेक होगये पर्वतोंकी कन्दरा ढूंढ़ो उनमें ब्रह्मा शिव और नारदादिक मुनीश्वर जो रामकी महिमा को जानते हैं ॥ ८ ॥ छन्द ॥ तेई तो निर्भय रहे और बानरों ने तो सांचेही माने तातें भयके मारेरीछ बंदर सब भागे हनुमान अंगद नील नल इत्यादि अतिबली रण बांकुरे लरते हैं और कोटि कोटि उन रावणों को मर्दते हैं जो कपटसे अंकुरेहैं ॥ दोहा ॥ जब देवता और बानर महां व्याकुल देखे तबतो कोशलेन्द्र श्रीराम हंसे और अपनेशारंग धनुष को साजिकर एकही बाण में समस्त माया के रावणों को नाश करि दिया ॥ १८ ॥

प्रभुक्षणमें माया सबकाटी। जिमि रबि उदय जाइ तम फाटी १
रावण एक देखि सुर हरषे। फिरे सुमन बहु प्रभुपर बरषे २
भुज उठाइ रघु पति कपि फेरे। फिरे एक एकनि जबटेरे ३
प्रभु बल पाइ भालुकपि धाये। तरल तमकि संयुग महं आये४
अस्तुति करत देव तेहिं देखे। भयउं एक मैं इन्हके लेखे ५
शठहु सदामम मरण मनायल। असकहि कोपिगगनपरधायल ६
हाहा कार करत सुर भागे। खलहु जाहु कहं मोरे आगे ७
देखि बिकल सुर अंगदधायउ। कूदिचरणगहिभूमिगिरायउ ८
छं० गहि भूमि पारेउ लात मारेउ बालिसुत प्रभु पहं गयो ।

संभारिउठि दशकंठ घोर कठोर रवगर्जत भयो ॥
करिदाप चापचढ़ाइ दश संधानि शर बहु बरषई ।
कियेसकलभटघायलभयाकुलदेखिनिजदलहरषई ॥ १६ ॥
दो० तब रघुपति दशशीशके बीशभुजा शरचाप ।
काटे भयेनबीन पुनि जिमि तीरथ केपाप १६ ॥

प्रभुने क्षणहीमें सब माया कैसे अनायास काटी जैसे सूर्य्यके उदयसे तम फटताहै १ जब देवताओं ने एकही रावण देखा तब हर्षित होकर और पुष्प बरषाये २ भुजा उठाइ कर रामचंद्रने बानरोंको फेरा फिरेजब एकोंने इकोंको टेरा ३ स्वामीका बल पाकर रीछ बानर दौरे बड़े चंचल तमकि कर संग्राम भूमिमें आये ४ अस्तुति करते हुये जो देवताओं को रावण ने देखकर कहा कि इनके लेखेमें एकहोगया ५ अरेशठो तुम सदा मेरा मरनाही मनाते रहेहो ऐसे कहिकोप करकर उनपर दौरा ६ देवता हाहाकार करते भगे ललकारा किशठो मेरेआगे से कहां जाओगे ७ देवताओंको बिकल देखि कर अंगद दौरेकूदिकर पैर पकरभूमि पर गिरा दिया ॥ ८ ॥ छन्द ॥ ऊपर से लात मारकर अंगद रामके पासचले गये २ रावण संभारि कर उठा और कठोर घोर शब्दसे गर्जा बड़े दर्पसे दशहू धनुष चढ़ाकर बाणोंकी ऐसी बर्षाकी कि समस्त योधा घायल और ब्याकुल करदिये ऐसा अपना बलदेखि कर अति हर्षित हुआ ॥ दोहा ॥ तबतो राम चंद्रने रावणकी बीशों भुजा और धनुष बाण काटे तीरथ के किये पापों की नाईं फिरहोगये ॥ १६ ॥

शिरभुज बाढ़ि देखिरिपु केरी । भालु कपिन्ह रिसभई घनेरी १
मरत न मूढ़ कटेहु भुज शीशा । धाये कोपि भालु भट कीशा २
बिटपमहीधरकरहिं प्रहारा । सोइगिरितरु गहिकपिन्हसोमारा ३
पुनिसकोप दशधनुकर लीन्हे । शरनिमारि घायल कपिकीन्हे ४
मूर्छित देखि सकल कपि बीरा । जामवंत धायउ रणधीरा ५
संग भालु भूधर तरु धारी । मारन लगे प्रचारि प्रचारी ६
भयउक्रोध रावण बलवाना । गहिपद महि पटकहि भटनाना ७
देखिभालुपति निजदल घाता । कोपिमांझ उरमारेसि लाता ८
छं० उरलातघातप्रचंडलागतबिकलरथतेंमहिपरा ।
गहिभालुबीशहुकरमनहुकमलनिबसेनिशिमधुकरा ॥

मूर्छितबिलोकिबहोरिपदहतिभालुपतिप्रभुपहंगयो।
निशिजानिस्यंदनघालितेहितबसूतयत्नकरतभयो॥२०॥

दो० मूर्छा बिगत भालुकपि सब आये प्रभु पास।
सकल निशाचर रावणहि घेरि रहे अति त्रास॥२०॥

ऐसी रावणके शिरभुजोंकी बाढ़ देखिकर भालु बानरोंको बड़ाही रिसहुई १ देखो यह मूढ़ शीशभुजा कटनेपर भी नहीं मरता है कोपिकर रीछबानर एकटेही धाये २ वृक्ष और परबत उसपर जो प्रहार करतेहैं सोई वृक्ष परबत लेलेकर रावण उन्हीं को मारताहै ३ फिरितो कोप करिके दशहू धनुपलिये और बाणोंसे मारिकर बानर घायलकरि दिये ४ समस्त बानरोंको मूर्छित देखिकर बड़ा रणधीर जामवन्त दौरा ५ साथ में परबत वृक्षलिये अपार रीछहैं रावणको प्रचारि प्रचारिकर मारने लगे ६ तबतो रावण बलवान को बड़ाक्रोध हुआ और रीछोंको पैर पकरिकर देदे मारनेलगा ७ जब भालु पति जामवन्तने अपने दलको घातदेखा तबतो कोपिकर रावणकी बीच छातीमेंलात मारी॥८॥ छन्द॥ छातीमें जामवन्त की प्रचंडलातकी घातके लगतेही विकलरथ से पृथिवीपर गिरिपरा बीशहू भुजा में रीछोंको लियेहै मानों रातिको कमलों में भ्रमर रहो बसे हैं जामवन्त उसको मूर्छित देखिकर ऊपर से एक लात और मारि रामचंद्र के पास चलेगये राति जानिकर रथ में डारि सूत लंकाको लेगया॥ दोहा॥ मूर्छा रहित होकर रीछ बानर सबरामके पास आये उहां लंका में सब राक्षस रावण बड़ी त्रास समेत घेरि रहे हैं॥ चौ०

तेहि निशिमहं सीता पहंजाई। त्रिजटा कहि सबकथा सुनाई १
शिरभुज बाढ़िसुनत रिपु केरी। सीता उरभइ त्रास घनेरी २
रघुपतिशरशिर कटेहुन मरई। बिधिविपरीत चरितसब करई ३
मोरअभागि जियावत वोही। जिहिंहौं हरिपद कमल बिछोही ४
जेहिकृत कनक कपटमृगझूठा। अजहुंसोदैव मोहिंपर रूठा ५
ऐसेहुदुखजोसहु मनआना। सोइ बिधिताहि जियावनआना ६
कह त्रिजटासुनु राजकुमारी। उरशर लागत मरिहि सुरारी ७
तातें प्रभु उर हतहिं न तेही। यहिके हृदय बसति बैदेही ८

छं० यहिकेहृदयबसुजानकीमनजानकीउरबासहै।
ममउदरभुवनअनेकलागतबाणसबकरनाशहै॥
सुनिबचनहर्षविषादमनअतिदेखिपुनित्रिजटाकहा।

अबमरिहिरिपुयहि बिधिसुनहु सुन्दरितजहुसंशयमहा२१

दो० काटत शिर होइहि बिकल छूटि जाइ तव ध्यान।
तब रावण के हृदय महं मारहिं राम सुजान॥ २१॥

उसी रातिको सीताके पास जाकर त्रिजटा ने राम रावणके संग्रामकी सबकथाकही तबतो रावणके शिरभुजोंकी बाढ़ सुनिकर सीताके मनमें बड़ी भयहुई १। २ जो रामचंद्र के बाणोंसेभी शिरकटने परनहीं मरताहै तौबिपरीति दैवही चरित्र करता है ३ ठीकहै मेरा अभागही उसको जियावताहै जिसने मेरेको स्वामीके चरणों से बिछोह करायाहै ४ जिस दैवने सुवर्णका झूठा मृगबनादिया सोई दैव अभीतक मेरेपर रूठा हीहै ५ ऐसेहू दारुण दुःखपर मेरेप्राण राखेहैं सोई दैव उसको जियावताहै और कोई नहीं ६ तबतो त्रिजटा ने कहा सुनु हे सीते रावण हृदयमें बाण लगनेसे मरैगा ७ ताते राम उसके हृदयमें बाणनहीं मारतेहैं जानतेहैं किइसके हृदयमें सीता निरंतर बसतीहै॥ ८॥ छन्द॥ इसके हृदयमें सीता बसतीहै औरसीताके हृदयमें मैंबसताहूं मेरे उदरमें अनंतकोटि ब्रह्मांडहैं इसको हृदयमें बाण लगतेही सबका नाश होजायगा ऐसे त्रिजटाके बचन सुनतेही सीताके मनमें हर्षभी हुआ परंतुबिषाद अति हुआ सो देखिकर फिरि उसने कहा हे सीते तू संदेह मतिकरै कालि रावण इस भांतिसे मरैगा दोहा॥ बारबार शिर काटते जब रावण बिकल होगा और तेरा ध्यान छूटि जायगा तब परम सुजान राम उसके हृदयमें बाण मारैंगे॥ २१॥

असकहिबहुत भांति समुझाई। पुनित्रिजटानिज भवनसिधाई१
करतिबिलाप मनहिं मन भारी। राम बिरह जानकी दुखारी २
जबअति भयउबिरह उरदाहू। फरकेउबाम नयन अरु बाहू ३
यहां अर्द्ध निशि रावण जागा। निज सारथि सन खीझैलागा४
शठरण भूमि छुड़ायहु मोही। धिग धिग अधम मंद मतितोही५
तेहिं पदगहिबहुविधि समुझावा। भोरभये रथ चढ़ि पुनिधावा६
सुनि आगमन दशानन केरा। कपि दल खर भर भयउघनेरा७
जहं तहं भूधर बिटप उपारी। धाये कट कटाइ भट भारी ८

छं० धायेजोमरकटबिकटभालु कराल करभूधर धरा।
अतिकोपकरहिं प्रहारमारत भजिचलेरजनीचरा॥
बिचलाइदलबलवंतकीशन्हि घेरिपुनिरावणलियो।
चहूंदिशिचपेटनिमारिनखनबिदारितनब्याकुलकियो॥२२॥

दो० देखि महा मर्कट प्रबल रावण कीन्ह बिचार ।
अन्तर हित होइ निमिष महं कृत माया बिस्तार ॥ २२ ॥

इस प्रकार सीता को समुझाइकर त्रिजटा अपने घर चली गई १ फिरितो सीता मनहीं मन में महाभारी बिलाप करने लगी २ जब सीता के हृदय में राम के बियोग से अतिही दाह हुआ उसी समय आनन्द बिधायक सीता के बामनेत्र और भुजा फरकने लगे ३ यहां आधी रात को रावण मूर्छा से जगा और सारथीसेखीझने लगा ४ अरे शठ तू ने मेरे कोसंग्रामभूमिछुटादी अधम दुर्बुद्धि धिक्कारहै तेरे को ५ उसने पैरों परिकर रावण को सूत धर्मकी नीति समुझाया प्रातहोतेही रथ पर बैठ कर दौरा ६ रावण का आगमन सुनतेही बानरों के दल में बड़ा खर भर हुआ ७ जहां तहां से पर्वत और वृक्ष उखारि कर महाभारी योधा कटकटाइ कर दौरे ८ ॥ छन्द ॥ और बड़े कोप से मारतेही राक्षस भागे ॥ उसके दल को बिचलाइ करबलवान बानरों ने फिरि रावणकोजा घेरा ॥ चारों दिशा से चपेटे मारि नखों से शरीर बिदारि उसको व्याकुल करिदिया ॥ जब रावण ने बानरों को महा प्रबल देखि कर बिचार किया कि अंतर ध्यान होकर पलमात्रहीं में माया का बिस्तार किया ॥ २२॥

तोमरछंद

जब कीन्ह तिहिं पाषंड । भये प्रकट जंतु प्रचंड ॥
बेताल भूत पिशाच । कर धरैं धनु नाराच १
योगिनि गहैं कर बाल । एकहाथ मनुजकपाल ॥
करि सद्य शोणित पान । नाचहिं करहिं बहुगान २
धरु मारु बोलहिं घोर । रहि पूरि धुनि चहुंओर ॥
मुख बाय धावहिं स्वान । तब लगे कीशपरान ३
जहं जाहिं मर्कट भागि । तहं बरत देखहिं आगि ॥
भयेबिकल बानर भालु । पुनिलागि बर्षनबालु ४
जहंतहंथकितकरिकीश । गर्जेउ बहुरि दशशीश ॥
लक्ष्मण कपीश समेत । भये सकल बीरअचेत ५
हा राम हा रघुनाथ । कहि सुभट मीजहिं हाथ ॥
यहिबिधिसकलबलतोरि । तेहिकीन्हकपटबहोरि६
प्रगटे बिपुल हनुमान । धाये गहे पाषाण ॥

तिन्ह राम घेरे जाइ। चहुंदिशि बरूथ बनाइ ७

॥ मारहु धरहु जनि जाइ। कटकटहिं पूंछ उठाइ ॥

दशदिशि लंगूर बिराज। तेहिमध्य कोशलराज ८

जब राक्षस ने पाषराड किया तबतो महा उग्र जीव प्रगट हुये बेताल हैं भूत हैं पिशाच हैं सब हाथों में धनुषवाण लिये हैं १ योगिनी एक एक हाथमें खड्ग लिये हैं एक एक में वीरों के कपाल लिये हैं संग्राम भूमि में तुरंत का रुधिर पान करिके नचती हैं और गान करती हैं २ पकरो पकरो मारो मारो ऐसी उनके बोलने की घोर धुनि चारों ओर पूरि रही है मुख पसारि कै र धाके को दौरते हैं तबतो वानर जहां तहां को भागने लगे ३ जिधर को बानर भागते हैं उधर जरतीहुई आगिदेखते हैं तबतो रीछ वानर व्याकुल होगये फिरि उन पर प्रतप्त बालुका बरषने लगी ४ इस प्रकार जहां के तहां वानरों को थकित करिके फिरि सबगा गर्जा और लक्ष्मण सुग्रीव समेत सब वीरोंको अचेत करि दिया ५ हा राम हा राम ऐसे कहि कर सुभट हाथ मींजते हैं किसी की कुछ नहीं बसाती है इस प्रकार सब का बल तोरि कर फिरि उसने और कपट किया ६ अपार हनुमान प्रगट हुये हाथों में पाषाण लिये दौरे उन्होंने चारों ओर से समूह बनाकर राम को जाघेरा ७ मारो मारो पकरोपकरो भागि न जाने पावें ऐसे पूंछ उंठाइ उठाइ कर कटकटाते हैं दशहू दिशा में उनके लांगूल छाइ रहे हैं तिनके मध्यमें कोशल राज श्री राम बिराजते हैं ॥ ८ ॥

छं० तिहि मध्य कोशल राज सुन्दरश्याम तनशोभा लही।

॥ जनु इंद्र धनुष अनेक की बर बारि तुंग तमालही ॥

प्रभु देखि हर्ष विषाद उर सुर बदत जयजय जयकरी।

रघुबीर एकहि तीर कोपि निमेष महं माया हरी ॥

माया बिगत कपिभालु हरषे बिटपगिरिगहि सब फिरे।

शर निकर छांड़े राम रावण बाहु शिर पुनि पुनि हरे ॥

श्रीराम रावण समर चरित अनेक कल्प जे गावहीं।

॥ शत शेष शारद निगम बिधि शिव तेपि पार न पावहीं ॥

दो० कहे तासु गुण गण कछुक जड़मति तुलसी दास।

निज पौरुष अनुहार जिमि मशक उड़ाहिं अकास २२ ॥

तिनके मध्य में कोशलराज श्रीरामचंद्र के सुन्दर श्याम शरीर ने कैसी शोभापाई मानों तमाल वृक्ष के आस पास अनेक इंद्र धनुषों की बारि बनीहै इस प्रकार स्वामी राम को देखिकर हृदय में हर्ष बिषाद युक्त देवता जयजय जय करिके पुकारनेलगे

तब तो रघुवीर स्वामी ने एकही बाण से सब माया हरिली ॥ माया रहित होकर भालु बानर हर्षित हुये और वृक्ष परबत लेले कर सब दौरे और रामचंद्र ने भी बाणों के समूह छोड़े उनसे बारंबार रावण के शीश भुजा पृथिवी पर गिर गिर परे सुनों हे गरुड़ यह श्रीराम रावण का समर चरित्र अपार है इसको तो जो अनेक कल्प भरिके अनन्त शेष शारद वेद ब्रह्मा शिव गावें तेभी पार न पावें ॥ दोहा ॥ तिस अनन्त चरित्र भगवान के गुणगण तुलसी दास ने भी कहे जैसे अपने पौरुष के अनुसार मशक भी अनन्त आकाश में उड़ते हैं ॥ २२ ॥

मरै न रिपु श्रम भयउ बिशेषा । राम बिभीषण तन तब देखा १
सुनु सर्बज्ञ चराचर नायक । प्रणतपाल सुर मुनि सुखदायक २
नाभि कुंड पियूष बस याके । नाथ जियत रावण बल ताके ३
सुनत बिभीषण बचन कृपाला । हर्षि गहे कर बाण कराला ४
अशगुन लगे होन तब नाना । रोवहिं खर शृगाल बहुस्वाना ५
बोलैं खग जग आरत हेतू । प्रगट भये नभ जहं तहं केतू ६
दशदिशि दाहहोन अतिलागा । भयउ पर्बबिनुरबि उपरागा ७
मंदोदरि उर कंपित भारी । प्रतिमा श्रवहिं नयन मगुबारी ८

छं० प्रतिमाश्रवहिंपबिपातनभअतिबातबहडोलतिमही ।
बरषहिंबलाहकरुधिरकचरजअशुभअतिसककोकही ॥
उतपातअमितबिलोकिनभसुरबिकलबोलहिंजयजये ।
सुरसभयजानिकृपालरघुपतिचापशरजोरतभये ॥

दो० खैंचि शरासन श्रवण लगि छांड़े शर एकतीश ।
रघुनायक शायक चले मानहुं काल फणीश ॥ २३ ॥

जब शत्रु मारने से मरैही नहीं बड़ा श्रम मारते मारते हुआ तबतो रामने बिभीषणको ओर देखा १ बिभीषण ने कहा हे सर्वज्ञ हेचराचर नायक हे प्रणत पाल हे सुरमुनि सुख दायक सुनों स्वामी इसके नाभिकुंड में अमृत है उसके बलसे यह जीवता है २।३ बिभीषण के बचन सुनतेही रामचंद्र हर्षित होकर कराल बाण लिये ४ बाणों के लेतेही उस समय अनेक अशगुन होने लगे खर सियार स्वान अपार रोने लगे ५ पीड़ाके हेतु ऐसे उलूकादि पक्षी बोलने लगे आकाशमें जहां तहां केतु ग्रह प्रकट होगये दशों दिशामें दाह होनेलगा बिना पर्व सूर्य्यग्रहण होगया ७ मंदोदरी का हृदय कंपित होगया देव प्रतिमा नेत्रों से जल श्रवने लगीं ८ ॥ छन्द ॥ आकाशसे बज्रपात होनेलगे

प्रचंड पवन बहने लगी पृथ्वी डोलने लगी ॥ मेघ रुधिर केश धूरि बर्षाने लगे ॥ ऐसे अमित उतपातों को देखि आकाश में देवता व्याकुल रामकी जय मनाते हैं ऐसे देवताओं को सभय देखकरि कृपाल राम स्वामी धनुष बान संधान करते हुये ॥ दोहा ॥ श्रवण पर्य्यन्त शारंग धनुष को खैंचिकर एकतीश बाण छोड़े कैसे श्रीरामके बाण चलेजाते हैं मानों काल अनेक सरपों के रूप धारण किये आताहै ॥ २३ ॥

शायक एक नाभि सर शोषा । अपर लगेशिर भुज करि रोषा १
लै शिर बाहु चले नाराचा । शिर भुज हीन रुंड महि नाचा २
गर्जेउ मरत घोर रव भारी । कहां राम रण हतहुं प्रचारी ३
धरणि धसै धर धावप्रचंडा । तब प्रभुशरहति कृतयुग खंडा ४
परेउ बीर दोउ खंड बढ़ाई । चापि भालु मर्कट समुदाई ५
मंदोदरि आगे भुज शीशा । धरि शर चले जहां जगदीशा ६
तासु तेज समान प्रभु आनन । हर्षे देखि शंभु चतुरानन ७
बरषहिं सुमन देवमुनि वृंदा । जय कृपाल जय जयतिमुकुंदा ८

छं० जयकृपाकन्दमुकुन्दद्वंदहरणशरणसुखप्रदप्रभो ।
खल दल बिदारण परम कारण कारुणिकसदाविभो ॥
सुरसिद्धमुनिगन्धर्बहरषेबाजदुंदुभिगहगही ॥
संग्रामआंगनरामअंगअनंगबहुशोभालही ॥ २४ ॥

दो० कृपा दृष्टि करि वृष्टि प्रभु अभय किये सुर वृंद ।
हर्षे बानर भालु सब जय सुख धाम मुकुंद ॥ २४ ॥

एक बाणने तो पहिलेही जाकर उसकी नाभिका अमृत कुण्ड शोषि लिया फिरि और बाणोंने शिर और भुजा उतारि लिये १ जब शिर और भुजाओंको बाण उतारि ले चले तबतो बिना शिर भुजका रुंड पृथ्वी पर नाचने लगा २ मरती बारभी बड़े घोर शब्दसे गर्जा कहां हैं राम रणमें प्रचारिके मारूं ३ अब उसका प्रचंड धर जो पृथ्वी पर दौरता है उससे धरणी धसी जाती है तबतो स्वामी ने काटि कर द्वय खंड कर दिये ४ तबतो बड़ा बीर दोनों खंडों को बढ़ा कर गिरा भालु बानरों के समुदायको दबा कर ५ मंदोदरीके आगे भुजा और शिर रख कर जगदीश राम के पास आ गये रावण का तेज रामके मुखमें समा गया देखि कर शिव ब्रह्मा दोनों सिहाने लगे ७ अबतो देवता मुनीश्वरों के वृन्द पुष्प बर्षाने लगे जय कृपाल जय जय मुकुन्द उच्चारने लगे ॥ ८ ॥ छन्द ॥ जय कृपाकन्द जय मुकुन्द जय द्वन्दहरण

जय शरण सुख दायक जय खलदल विदारण जय परम कारण जय कारुणीक जय सदा बिभो ऐसे उच्चारने लगे और दुन्दुभी बजाने लगे संग्राम भूमिमें राम स्वामी अपार कामोंकी शोभा पाई ॥ दोहा ॥ कृपा दृष्टिकी वृष्टि करिके राम स्वामी ने सब देवताओंके वृन्दोंको अभय करि दिया तवतो वानर भालु सब हर्ष और जय सुख धाम मुकुन्द उच्चारने लगे ॥ ४ ॥

पति शिर देखत मंदोदरी । मूर्छित विकल धरणि खसि परी १
युवति वृन्द रोवति उठि धाई । तेहि उठाय रावण पहं लाई २
पति गति देखत करहिं पुकारा । छूटे केश न वेष संभारा ३
तव बल नाथ डोलनित धरणी । तेजहीन पावक शशि तरणी ४
शेष कमठ सहि सके न भारा । सोतनु परेउ भूमि भरि छारा ५
जगतबिदित तुम्हारिप्रभुताई । सुतपरिजनबल बरणिनजाई ६
राम बिमुख असहाल तुम्हारा । रहा न कुल कोउ रोवनहारा ७
कालबिवसपति कहा न माना । अगजगनाथ मनुजकरिजाना ८

छं० जानामनुजकरिदनुजकाननदहनपावकहरिस्वयं ।
जेहिनमतशिवब्रह्मादिसुरपतिभजेहुनहिंकरुणामयं ॥
आजन्मतेंपरद्रोहरतपापौघमयतवतनअयं ।
तुमहूंदयउनिजधामरामनमामिब्रह्मनिरामयं ॥ २५॥

दो० अहह नाथ रघुनाथ सम कृपा सिंधुको आन ।
मुनि दुर्लभ जोपरम गति तुमहिं दीन भगवान॥ २५

पतिके शिरोंको देखतेही मंदोदरी रावणकी पाटमहिषी अति विकलतासे मूर्छित होकर सिंहासनसे पृथिवी पर गिरि परी १ युवतियोंकेसमूहरोतीहुई उठि दौरी और उसको उठा कर रावण के पास ले आई २ पतिकी दशा देखतेही रोदन करती हैं केश छूटि गये तनकी संभार नहीं है कहने लगीं ३ तुम्हारे बलसे हे नाथ नित्य पृथिवी डोलती रहे अग्नि सूर्य्य चन्द्रमा सब तेज हीन रहे ४ शेष कमठ भी तुम्हारे तनके बोझको न सहि सके सो तुम्हारा तन छार भरा पृथिवीपर परा है ५ बिश्व में बिख्यात तुम्हारी प्रभुता रहे पुत्र पौत्र परिवारका बल बर्णन नहीं किया जातारहे ६ रामसे बिमुख होनेसे अब यह दशा है कि कुल भरमें कोई रोने को भी न रहा ७ कालके बश हे नाथ तुमने किसीका भी कहा न माना अग जग नाथ राम को मनुष्यही जाना ॥ ८ ॥ छन्द ॥ जिन को ब्रह्मा शिव इन्द्र नमते हैं तिन रामको

शरण न गये जन्मतेहीसे परद्रोहहीमें रत रहे और पापहीका तुम्हारा यह तन रहा तिन तुमको भी अपना धामदिया ऐसे निरामय ब्रह्म रामको मैं नमती हूं॥ दोहा॥ हा नाथ रघुनाथके समान दूसरा कौन कृपासिंधु है जो परम गति मुनीश्वरोंको भी दुर्लभ है सो रामचंद्रने तुमको बिरोध करने पर भी दे दी ॥ २५ ॥

मंदोदरी बचन सुनि काना । सुरमुनि सिद्ध सबहिसुख माना १
अज महेश नारद सन कादी । जे मुनि बर परमारथ बादी २
भरि लोचन रघुपतिहि निहारी । प्रेम मग्नसब भये सुखारी ३
रोदन करत देखि सब नारी । गयउ बिभीषण मनदुख भारी ४
बंधुदशादेखत दुख कीन्हा । तब प्रभु अनुजहि आयसु दीन्हा ५
लक्ष्मणतिहिबहुबिधिसमुझायउ।बहुरिबिभीषणप्रभुपहंआयउ६
कृपादृष्टिप्रभु ताहि बिलोका । करहु क्रियापरिहरि सबशोका ७
कीन्ह क्रियाप्रभु आयसु पाई । बिधिवत देशकाल जसि गाई ८
दो० मय तनयादि नारि सब देइं तिलांजलि ताहि ।
भवन गईं रघुबीर गुण गण बरणत मन माहि ॥ २६ ॥

मंदोदरीके तोयथार्थ बचन सुनिकर सुरमुनि सिद्धसबोंने सुख माना १ फिर तो ब्रह्मा शिवनारद सनकादिक इत्यादि परमार्थबादी मुनीश्वर नेत्रोंभरि रामको देखिकरप्रेम मग्न औरसब सुखी होगये २।३ इतनेमें रोदन करतीहुई भावजोंको देखिकर विभीषण महा दुखी मन उनके पास गये ४ भाईकी दशा देखिकर बड़ा दुख.किया तबतो रामचंद्रने लक्ष्मण को आयसु दिया ५ लक्ष्मणने जाकर उसको समुझाया तब बिभीषण रामचंद्रके पास आया ६ कृपादृष्टि करिके रामने बिभीषणको देखा और कहा किहमारा और रावणका बैरप्राण पर्य्यन्तारहा सो होगया अब हमारा इससे कुछ बैर नहीं है तुम शोक दूरि करिके इसकी यथाक्रियाकरो ७ तबतो रामकी आज्ञा पाकर बिभीषणने उसकी क्रिया देशकालके अनुसार बिधिवत्की॥ ८॥ दोहा ॥ मंदोदरी आदि सब रानियोंने उसको तिलांजलिदी औररामचंद्रके गुण बखानतीहुईघरको गईं॥ २६ ॥

आइबिभीषण पुनिशिर नावा । कृपा सिंधु तबअनुज बुलावा १
तुम कपीश अंगद नल नीला । जामवंत मारुत नय शीला २
सबमिलिजाइ बिभीषण साथा । सारेहु तिलककहा रघुनाथा ३
पिता बचन मैं नगर न जाऊं । आप सरिस कपिअनुज पठाऊं ४
तुरतचलेसब सुनिप्रभुबचना । कीन्ही जाइ तिलककी रचना ५

सादर सिंहासन बैठारी । तिलक सारि अस्तुति अनुसारी ६
जोरि पाणिसबही शिर नाये । सहित बिभीषण प्रभुपहंआये ७
तबरघुबीरबोलि कपिलीन्हे । कहि प्रिय बचनसुखीसब कीन्हे ८

छं० कियेसुखीकहिबाणिसुधासमबलतुम्हारेरिपुहयो ।
पायोबिभीषणराजतिहुपुरयशतुम्हारोनितनयो ॥
मोहिंसहितशुभकीरत्तितुम्हारीपरमप्रीतिजोगाइहैं ।
संसारसिंधुअपारपारप्रयासबिनुतेपाइहैं ॥ २७ ॥

दो० प्रभुके बचन श्रवण सुनि नहिं अघात कपि पुंज ।
बारबार शिर नावहिं गहैं राम पद कंज ॥ २७ ॥

रावणकी क्रिया करिबिभीषणने फिरि रामको प्रणाम आकिया तब रामने लक्ष्मण को बुलाया और कहा १ तुमसुग्रीव अंगद नल नील जामवंत हनुमान सबमिलकर बिभीषणके साथ जाओ और राज्याभिषेक करो २।३ पिताके वचनोंसे हेसखा मैंनगरमें नहींजाताहूं अपनेही समान सुग्रीव लक्ष्मणको भेजताहूं ४ रामचंद्रके वचन सुनितेही सब गये और जाकर तिलककी रचनाकी ५ आदर समेत बिभीषण को सिंहासन पर बैठारा तिलक करिके बिनती करी ६ फिरिहाथ जोरिजोरिकर सबनेशिर नवाये और बिभीषण समेत रामके पास आये ७ तब तो रामचन्द्र ने सब वानर बुला लिये और अतिप्यारे बचन कहिकर सबसुखी करदिये ॥ ८ ॥ छन्द ॥ अमृतकेसमान मधुरबचन कहे कि तुम्हारेही बलसे मैंने रावणको मारा और बिभीषण को राजदे पाया यह तुम्हारा यश नित नया रहैगा और मेरेसमेत तुम्हारी इस कीर्तिको परम प्रीतिसे जो गावेंगे तेअपार संसार समुद्रका पार पावेंगे ॥ दोहा ॥ ऐसे सुन्दर रामचंद्रके बचनसुनते बानरअघातेही नहींहैं बारंबारशीश नवातेहैं औरस्वामीके चरणकमल गहतेहैं२७॥

पुनि प्रभु बोलि लिये हनुमाना । लंका जाहु कहा भगवाना १
समाचार जानकिहि सुनावहु । तासु कुशल लैतुमचलिआवहु २
तब हनुमन्त नगर महं आये । सुनि निशिचरी निशाचर धाये ३
बहुप्रकार तिन्हपूजा कीन्ही । जनक सुता दिखाइपुनिदीन्ही ४
दूरिहि तें प्रणाम कपि कीन्हा । रघुपति दूत जानकी चीन्हा ५
कहहु तात प्रभु कृपा निकेता । कुशल अनुज कपिसेन समेता ६
सब बिधि कुशलकोशलाधीशा । मातु समर जीतेउ दशशीशा ७

अबिचलराज्य बिभीषण पावा । सुनि कपि बचन हर्षउरछावा ८

छं० अतिहर्षमनतनपुलकलोचनसजलकहपुनिपुनिरमा ।
कादेहुंतोहित्रैलोक्यमहंकपिकिमपि नहिंबाणीसमा ॥
सुनुमातुमैंपायउं अखिलजगराजआजनसंशयं ।
रणजीतिरिपुदलबंधुयुतपश्यामिराममनिरामयं ॥ २८ ॥

दो० सुनुसुत सद्गुण सकल तव हृदय बसहु हनुमन्त ।
सानुकूल रघुबन्श मणि रहहु समेत अनंत ॥ २८ ॥

फिरि तो रामचन्द्र ने हनुमानको बुलालिया और कहा १ कि सब समाचार सीता को जा सुनाओ और उनकी कुशल लेकर चले आओ २ तबतो हनुमान लंका मेंआये सुनतेही निशाचर निशाचरी दौरे ३ अनेक प्रकार से उनका पूजन किया और सीता को दिखादिया ४ दूरिही से जो हनुमान ने प्रणाम किया सोई सीता ने राम दूतको पहिचानि लिया ५ कहो हे तात कृपा निकेतस्वामी और लक्ष्मण सेना समेतकुशला-नन्द हैं हनुमान ने हाथ जोरि कर कहा हे माता सब प्रकार कोशलाधीश स्वामी कुशल क्षेम हैं और संग्राम में दशग्रीव रावण को भी जीतिलिया और अचल राज्य बिभीषण शरणागत को देदिया ऐसे बचन सुनतेही सीता के हृदय में अपना संकल्प पूरा हुआ जानिकर आनन्द छा गया ७ ॥ ८ ॥छन्द ॥ अतिआनन्द से तनतो पुलकितऔर नेत्र सजल बारं बार स्वयंलक्ष्मी कहतीहैं हे हनुमान मैं तेरे को क्यादूं इस बाणी के समान तीनि लोक में कुछभी तो नहींहै ॥ तबहनुमानने कहा हेमाता जो मैंने संग्राममें दल समेत रावण को जीति कर अपने स्वामी रामचन्द्र को देखाहै सो मैंतो समस्त बिश्वका राज पाचुका ॥ दोहा ॥ ऐसे मनोहर वचन हनुमान के सुनतेही सीताने कहा हे हनुमान समस्त सद्गुण तेरे हृदय में बसो और अनन्त लक्ष्मण समेत श्री राम सदा तेरे को सानुकूल रहो ॥ २८ ॥

तब हनुमंत राम पहं जाई । जनक सुता की कुशल सुनाई १
सुनि संदेश भानुकुल भूषण । बोलि लिये युवराज बिभीषण २
मारुत सुत के संगहि धावहु । सादर जनक सुतहिलैआवहु ३
तुरतहिं सकलगये जहं सीता । सेवहिं सब निशिचरीबिनीता ४
बगिबिभीषण तिनहिं सिखावा । सादरतिन्हसीतहिअन्हवावा ५
वहु प्रकार भूषण पहिराये । शिविका रुचिर साजिपुनि लाये ६
तापर हर्षि चढ़ी बैदेही । सुमिरि राम सुख धाम सनेही ७

सीता प्रथम अनल महं राखी । प्रगट कीन्ह चहै अंतरसाखी ८
दो० तेहि कारण करुणा यतन कहे कछुक दुर्बाद ।
सुनत यातु धानी सकल लागी करण बिषाद ॥ २६ ॥

स्वामी की अपने पर सदा कृपा ऐसा अति अभिमित वर जब सीता से पा चुके तबतो हनुमान ने राम के पास जाकर सीताकी मंगल कुशल सुनाई १ सीता का कुशल संदेश सुनिकर भानुकुल भूषण रामचन्द्र नेयुवराज अंगद और लंकापतिबिभीषण को बुला लिया और कहा २ हनुमान के साथ जाओ और बड़े आदरसमेतसीता को लेआओ ३ रामकी आज्ञा होतेही सब सीता के पासगये जहां अनेक राक्षसींहाथ जोरे सेवा करि रहीं हैं ४ उनको बिभीषणने सिखाया तब उन्होंने सीता को उबटि कर अन्हवाया ५ और अनेक भांति आभूषण पहिराये और परम सुन्दर पालकीसजि लाये ६ उस पर सीता परम सनेही श्रीराम को स्मरण करके चढ़ीं ७ अबतो रामचन्द्र ने जो सीता को प्रथम पंचबटी में अग्नि में प्रवेश कराया रहै उनको अग्नि से प्रगट करने के निमित्त और सीता का पातिब्रत धर्म शुद्ध रहने का अंतर साक्षी होने के लिये स्वामी सीता से सपथ लेना चाहते हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ इस कारण करुणानिधान रामचन्द्र ने सीता को अतिही बड़े दुर्बचन कहे उनको सुनतेही सब यातुधानी बिषाद करने लगीं ॥ २६ ॥

प्रभुके बचन शीश धरि सीता । बोली मन क्रम बचन पुनीता १
लक्ष्मण होहु धर्म के नेगी । पावक प्रगट करहु तुम बेगी २
सुनि लक्ष्मण सीता की बानी । बिरह बिबेकधर्म नय सानी ३
लोचन सजल जोरिकरदोऊ । प्रभुसन कछु कहिसकत न ओऊ ४
देखि राम रुख लक्ष्मण धाये । पावक प्रगट काठ बहु लाये ५
पावक प्रबल देखि बैदेही । हृदय हर्ष भय नहिं कछु तेही ६
जो मन बच क्रम ममउरमाहीं । तजि रघुनाथ आन गतिनाहीं ७
तौ कृशान सबकी गति जाना । होहु मोहिं श्रीखंड समाना ८

स्वामी के बचनों को परमहित मानिकर शीश पर धारण किये और तन मन बचन से परम विशुद्ध सीता लक्ष्मण प्रति बोलीं १ हेलक्ष्मण तुम्हारे ही अपचार से स्वामी ने मेरा त्याग कियाहै तातें अब फिरि मेरेको स्वामी से मिलाने का तुम्हाराही नेग है तुम मेरे अपराध को क्षमा करिके धर्मके नेगी होकर बेगही अग्नि प्रकट करो मैं तुम्हारे हाथ की अग्नि में प्रवेश करिके स्वामी की शपथ करि दिखाऊंगी २ जबऐसी बिबेक बियोग और पाति ब्रत धर्म नीति संयुक्त सीता बाणी लक्ष्मण ने सुनी नेत्रतो

सजल होगये हाथ जोरिलिये परंतु स्वामी से कुछ कहि नहीं सकते हैं ३।४ तब लक्ष्मण ने लोकापवाद की भयसे स्वामी का भी ऐसाही रुख देखा तबतो लक्ष्मण ने अग्नि प्रज्वलित करिकै बहुत सा काष्ठ लगा दिया ५ अग्नि प्रज्वलित देखिकर सीताको हर्ष भय कुछभी न हुआ औ प्रतिज्ञा करिकै समस्त सुर सिद्ध मुनि और सेनाके आगे यह बचन बोलीं ६ जो मन बचन और कर्म से अपने प्राणपति श्रीराम राघव को छोड़िकर मेरे को अन्य गतिनहो अर्थात् जो मैं अनन्य गति अनन्य भोग अनन्य होऊं तो हे अग्निदेव आप सर्व शरीरव्यापक और सब के अंतःकरण के साक्षी हो मेरे को श्री खंड चंदन के समान शीतल होजाओ ७।८॥

छं० श्रीखंडसमपावकप्रबेशकियोसुमिरिप्रभुमैथिली।
जयकोशलेशमहेशबंदितचरणरतिअतिनिर्मली॥
प्रतिबिंबअरुलौकिककलंकप्रचंडपावकमहंजरे।
प्रभुचरितकाहुनलखासबसुरसिद्धमुनिदेखहिंखरे॥
धरिरूपपावकपाणिगहिश्रीसत्यजगश्रुतिबिदितजो।
जिमिक्षीरसागरइंदिरारामहिसमर्पी आनिसो॥
सोरामबामबिभागराजतिरुचिरतनशोभाभली।
नवनीलनीरजनिकटमानहुंकणकपंकजकीकली॥

दो० बरषहिं सुमन हर्ष सुर बाजहिं गगन निशान।
गावहिं किन्नर सुर बधू नाचहिं चढ़ी बिमान॥
जनक सुता समेत प्रभु शोभा अमित अपार।
देखि भालु कपि हरषे जय रघुपति सुखसार॥ ३०॥

इस प्रकार प्रतिज्ञा करि राम स्वामी का स्मरण किया और चन्दन की नाईं प्रज्वलित अग्निमें प्रबेश करिगईं जय कोशलेन्द्र की जिन के चरणों को महादेव निर्मल प्रीति सेबन्दते हैं॥ प्रतिबिम्ब तौ लोप होगया और लौकिक कलंक भी दूरि होगया मानों अग्निही में भस्म होगये यह स्वामी का चरित्र किसी को भी न लखिपरा समस्त सुर सिद्ध मुनि खड़े देखतेही रहे॥ तबतो आप अग्नि देव रूप धरिकर जो बेद बिदित सत्य श्रीहै उसको कन्या की भांतिहाथ पकरे लिये आये और सीता की शुद्धता की साक्षी भरिकर जैसे क्षीर सागर ने लक्ष्मीबिष्णु को समर्पण की तैसेही अग्निदेवने सीताराम को समर्पि दी सो सीताराम के बाम भागमें राजती हैं जिसके रुचिर तन की शोभा महा सुन्दर है मानों नील कमल के नबीन प्रफुल्लित पुष्प के समीप स्वर्ण कमल की कली है॥ दोहा॥ अबतो ऐसे आनन्द को देखकर देवता पुष्प बरषाते गह

चिक्कारहे ७ तातें हेखलखंडन हेमहि मंडन हेउमामहेश बंदितपाद पंकज हेनृपना-यकराम स्वामी मेरेको आप यही बरदान दीजिये कि सदा शुभदायक आपके चरण कमलों में मेराप्रेमरहे ॥ ८ ॥ दोहा ॥ इसप्रकार चतुरानन स्वयंभू ब्रह्मा ने पुलकित गात रामकीत बिनती करी औरशोभा देखते अघाते नहींहैं ॥ ३१ ॥

तेहि अवसर दशरथ तहं आये । तनयबिलोकिनयनजलछाये १
अनुज सहित प्रभु बंदन कीन्हा । आशिर्बाद पिता तबदीन्हा २
तातसकल तव पुण्य प्रभाऊ । जीतेउं अजय निशाचर राऊ ३
सुनि सुत बचनप्रीति अतिबाढ़ी । नयन सजल रोमावलिठाढ़ी ४
रघुपति पितहिं प्रेमबशजाना । चितै प्रथम दीन्हेउदृढ़ज्ञाना ५
तातें उमा मोक्ष नहिं पावा । दशरथ पुत्र प्रेम मन लावा ६
सगुण उपासक मोक्ष न लेहीं । तिन कहं राम भक्तिनिजदेहीं ७
बार बार करि प्रभुहि प्रणामा । दशरथ हर्षिगयउ सुरधामा ८

जब ब्रह्मा स्तुति करिचुके ताहीसमय श्रीमहाराज दशरथदेवलोकसे तहां आये और दोनों पुत्रोंको देखतेही नेत्रों में जल छागया १ लक्ष्मणसमेत रामचन्द्रने दंडवत् प्रणाम किया और पिता ने आशीर्बाद दिया २ रामचंद्रने कहा हे पिता देखो यह जो मैंने महा दुर्जय राक्षसेश्वर रावण को जीता सब आपही के सत्यादि पुण्यों का प्रभाव है ३ ऐसे रामचंद्र के बचन सुनिकर अति प्रीति बढ़ी नेत्र सजल होगये रोम हर्ष होआया ४ रामचद्रने पिताकोप्रेमके वश जाना तबतो उनकी ओर देखिकर पहिलेही दृढ़ ज्ञान देदिया कि तुम और मेरी माता कौशल्या पूर्व जन्ममें स्वायंभुव मनु और सतरूपा रानी रहे तहां तुमने मेरे से पुत्र भाव प्रेम और मेरे बियोग से अपना मरण मांगे रहे तातें ऐसा हुआ अब तुम मेरे को परात्पर ब्रह्म वासुदेव जानो ५ इसी से हेपार्बती दशरथ ने मोक्ष नहीं पाई रहे कि दशरथने पुत्र प्रेम में मन लाये रहें और दो प्रयोजनों से यहां दशरथ का आना हुआ एक तो राम के मिलने का उनके क्षोभ रहा दूसरे राम को वन देने से राजाने भरत सहित कैकेयी का त्याग कियारहे उनको भारत्वअरु पुत्रत्वमें ग्रहण करीया ६ और हे पार्बती भगवद्भक्त मोक्षाभिलाषी होते भी नहीं हैं उनको स्वामी अपनी अनपावनी भक्तिही देते हैं ७ फिरतो दशरथ प्रथम जन्म का ज्ञान पाकर बारबार अपने स्वामीवासुदेव को प्रणाम करिके हर्ष समेत सुर लोक को चले गये ॥ ३२ ॥

दो० अनुज जानकी सहित प्रभु कुशल कोशलाधीश ।
शोभा देखि हर्ष मन बिनय करत सुर ईश ॥

छं० दे भक्ति रमा निवास त्रास हरण शरण सुख दायकं ।
सुख धाम राम नमामि काम अनेक छबि रघुनायकं ॥
सुर वृंद रंजन द्वंद भंजन मनुज तन अतुलित बलं ।
ब्रह्मादिक शंकर सेव्य राम नमामि करुणा कोमलं ॥
दो० अब करि कृपा बिलोकि मोहिं आयसु देहु कृपाल ।
काह करों सुनि प्रिय बचन बोले दीनदयाल ॥ ३२ ॥

फिरितो लक्ष्मण सीता समेत अति कुशल कोशलाधीश श्रीरामचंद्रकी शोभा देखि कर प्रसन्न मन सुरेश इंद्र स्वामी की स्तुति करने लगे ॥ छन्द ॥ हे रमा निवास विष्णु बासुदेव स्वामी मेरे को अपनी भक्ति दीजिये शरणागतों के त्रास हर और सुखदायक स्वामी मैं आपको प्रणाम करता हूं ॥ सुखधाम राम को प्रणाम करता हूं कोटि काम सुन्दर रघुनायक को प्रणाम करता हूं ॥ सुर वृन्दों के आनन्द दायक द्वन्द कहें सुख दुःख जन्म मृत्यु स्वर्ग नर्कादि के भंजन स्वयं हरि मनुष्यरूप अप्रमेय बल ब्रह्मादि शंकरादि सेव्यराम को मैं प्रणाम करता हूं जो करुणा से अति कोमल चित्त हैं ॥ दोहा ॥ इस प्रकार विनती करि हाथ जोरि फिरिकहा हे स्वामी अब आप मेरे पर कृपा दृष्टि से देखिकर आज्ञा दीजिये कि मैं या समय स्वामीका कौनसा कार्य्य करूं ऐसे इंद्रके प्रियबचन सुनिकरदीनदयाल रामस्वामीबोले ॥ ३२ ॥

सुनिसुरपति कपिभालुहमारे । परेसमर निशिचरन्हिजोमारे १
ममहितलागि तजेइन्हप्राणा । सकलजियाहु सुरेश सुजाना २
सुनुखगेश प्रभुकी यहबानी । अतिअगाध जानहिं मुनिज्ञानी ३
प्रभु सक त्रिभुवन मारि जियाई । केवल शक्रहि दीन्हिबड़ाई ४
सुधा बर्षि कपि भालु जियाये । हर्षि उठे सबप्रभु पहं आये ५
सुरअंशिकसबकपि अरुरिच्छा । जियेसकल रघुपतिकीइच्छा ६
राम सरिसको दीन हितकारी । कीन्हे मुक्ति निशाचर झारी ७
खल मल धाम काम रतरावण । गतिपाईजो मुनिबर पावन ८
दो० सुमन बर्षि सब सुर चले चढ़ि चढ़ि रुचिर बिमान ।
देखि सुअवसर राम पहं आये शंभु सुजान ॥ ३३ ॥

सुनु हे सुरपति मेरे ये रीछ बानर राक्षसोंके मारे संग्राम भूमि परे हैं मेरेकार्य्य के लिये इनने अपने प्राण त्यागे हैं उन सबको अमृत की बर्षासे जिया दे २ सुनो

हे गरुड़ श्री रामचन्द्रके बचन अति अगाध हैं इनको ज्ञानी मुनिही जानते हैं ३ रामस्वामी तो त्रयलोकको मारि कर जिया सकते हैं यहतो इन्द्रको केवल बड़ाई देनेही के लिये आज्ञा दी गई ४ जब इन्द्रने अमृत वर्षा कर रीछ बानर जियाये तबप्रसन्न होकर उठे और सब रामके पास आये ५ देवताओंके अंश सबरीछ बानर रहे तातें सब स्वामीकी इच्छा से भी उठे ६ राम समान दीन हितकारी हे गरुड़ कोईभी नहीं है देखो अपने द्रोहियों को भी मुक्त करिदिया ७ महा खल मनुजाद कहे मनुष्य भक्षक पापोंका धामकाथी रावणको सो परमगतिदिया जो मुनिवर भीनहीं पाते हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ फिरि तो राम पर पुष्प वर्षा कर सब देवता अपने अपने बिमानों पर चढ़ि कर चले गये तबतो सावकाश समय देखिकर रामके पाससुजान श्री शिवजी आये ॥ ३३ ॥

दो० परम प्रीति कर जोरि युग नलिन नयन भरि बारि ।
पुलकित तन गद गद गिरा बिनय करत त्रिपुरारि ॥
मामभिरक्षय रघुकुल नायक । धृतबर चापरुचिर करशायक १
मोह महाघन पटल प्रभंजन । संशय बिपिन अनलसुररंजन २
अगुणसगुणगुणमंदिर सुन्दर । भ्रमतम प्रबलप्रतापदिवाकर ३
काम क्रोध मद गज पंचानन । बसहु निरंतर जनमन कानन ४
भव बारिधि मंदर पर मंदिर । बारय तारय संश्रिति दुस्तर ५
श्यामगात राजीव बिलोचन । दीनबंधु प्रणतारति मोचन ६
अनुज जानकी सहित निरंतर । बसहु राम नृप ममउरअंतर ७
मुनिरंजन महि मंडलमंडन । तुलसिदास प्रभुत्राशबिखंडन ८
दो० नाथ जबहिं कोशल पुरी होइहि तिलक तुम्हार ।
कृपासिंधु मैं आइहौं देखन चरित उदार ॥ ३४ ॥

बड़ीतो प्रीति हाथ जोरि कमलसे सुन्दर नेत्रोंमें जल भरि पुलकित गात और गदगद बाणीसे त्रिपुर मर्दन श्री महादेव रामचंद्र की स्तुति करते हैं ॥ चौपाई ॥ हे रघुकुल नायक मामभिरक्षय हम दासोंकी सब ओरसे रक्षा करो आपने यह धनुष बाण हमारी रक्षाहीके निमित्त धारण किया है १ महा मोह मेघको आप पवन हो संशय बनको अग्नि हो देवरंजन हो २ मायके गुणोंसे निर्गुण हो दिव्य अप्राकृत गुणोंसे सगुण हो भ्रम तमको सूर्य्य हो ३ काम क्रोध मद मतंगोंको सिंह होते मेरे मन बनमें निरंतर बसो ४ संसार समुद्रको मंदराचल हो परम धाम हो ते हमको इस दुस्तर संसारसे तारो और दूरि करो ५ आपजो सुन्दर श्यामल अंग हो कमल

लोचन हो दीनबंधु हो प्रणतारति मोचनहो ६ ते लक्ष्मण सीता समेत निरंतर इस राम भूप रूपसे मेरे हृदयमें बसो ७ हे मुनि रंजन हे महि मंडल मंडन हे तुलसिदासके प्रभु हेभय त्रासखंडन ॥ ८ ॥ दोहा ॥ हेनाथ जो समय आपका श्री अयोध्या में राज्याभिषेक होगा तब हे कृपासिंधु मैंभी उसउदार चरित्रकेदेखनको आऊंगा ३४॥

करिबिनती जब शंभु सिधाये। तबप्रभु निकट बिभीषण आये १
नाइ चरण शिरकह मृदुबाणी। बिनय सुनिय प्रभु शारंगपाणी २
सकुल सदल प्रभुरावणमारा। पावन यश त्रिभुवन बिस्तारा ३
दीन मलीन हीन मति जाती। मोपर कृपा कीन्ह बहुभांती ४
अब जनग्रह पुनीत प्रभु कीजे। मज्जन करिय समर श्रमछीजे ५
देश कोश मंदिर संपदा। देहु कृपाल कपिन कहं मुदा ६
सबबिधिनाथमोहिं अपनाइये। पुनिमोहिं सहितअवधपुरजाइये ७
सुनत वचनप्रभु दीनदयाला। सजल भयेदोउ नयन बिशाला ८

इस प्रकार जब अस्तुति करिके महादेव भी चले गये तब रामचंद्रके पास बिभीषण आये १ चरणोंको शिरनायअति कोमल बाणी बोलेहेशारंगपाणि स्वामी कुछमेरी बिनती आप सुनिये २ दल परिवार समेत आपने रावणको मारा यह पावन यश आपका त्रयलोक में होगया ३ और महा दीन अतिमलीन हीन मतिहीन जातिऐसे मेरे पर सब भांति आपने कृपाकरी ४ अब आप अवधि बीते पर लंकामें प्रवेश करिके दास के घरको पवित्र करें तहां जटानिवारण करिके स्नानकरें संग्राम श्रमदूरि करें और यह समस्त देश कोश संपदा मंदिर प्रसन्न मन सब बानरों को बांटि दीजिई ६ सब भांतिसे हे नाथ मेरेको अपना किंकर करिलीजिये तबमेरे समेत आप अयोध्या को पधारें ७ ऐसे विभीषण के वचन सुनतेही दीन दयाल स्वामी रामचंद्र के बिशाल लोचन सजल होगये और बोले॥ ८ ॥

दो० तोरकोश ग्रह मोरसब सत्यबचन सुनुतात।
भरत दशा सुमिरतमोहिं निमिषि कल्प समजात॥
तापस बेष शरीर कृश जपत निरंतर मोहिं।
देखहु बेगि सो यतन करुसखा निहोरों तोहिं॥
बीते अवधि जाउंजो जियत न पावहुं बीर।
भरतप्रीति सुमिरत प्रभु पुनिपुनि पुलक शरीर॥
करेहु कल्प भरि राजतुम सुमिरेहु मोहि मनमाहिं।

पुनि मम धाम सिधाइहौ जहां संत सबजाहिं ३५॥

तेराकाश और तेराघरतो सबमेराहीहै मैंसत्य कहताहूं परंतु सुनुहे सखा भरत भाई की दशा चिन्तवनकरते अबमेरेको एक एक पलककल्पकेसमान जाताहै तापस तो जिसका वेषहै औ कृशशरीर है निरंतर मेरानाम जपता है ऐसे भरतसे भाई को अब मैं दो सहस्र कोशसे कैसे मिलि सकताहूं अवधि तो बीतनेपर आगई तातेंजैसे मैं उसको देखूंसो उपायकरु मैं तेरेको निहारताहूं और जोमैं अवध बीतेपर जाउंगा तो उसभाईसत्यबादीकोजीतानपाऊंगा क्योंकि चलतीबारसो मेरेसेसपथकरिकेकहिगयाहै ॥ गीतावल्यां ॥ तुलसी बीते अवधि प्रथमदिन जो रघुनाथ न ऐहो । तो प्रभुचरण सरोज सपथ जीवत फिरि जनहिं न पैहो॥ इसप्रकारभरतकी दशासुमिरते रामस्वामी बार बार पुलकित होहो जातेहैं तातें मेरेको बेगि पहुंचाओ और तुमकल्प पर्य्यन्त यहां का राज्य करो और सदामेरा स्मरण करो कल्पांतमें मेरेधाम वैकुंठको जावोगे जहां मेरेसब भक्त जातेहैं ॥ ३५ ॥

सुनत बिभीषण बचन राम के । हर्षि गहे पद कृपा धामके १
बानरभालु सकल हर्षानें । गहि पद प्रभु गुण बिमलबखाने २
बहुरिबिभीषणभवनसिधायउ । मणिगणबसनबिमानभरायउ ३
लैपुष्पक प्रभु आगे राखा । हंसि करि कृपा सिंधु तब भाषा ४
चढ़ि बिमान सुनुसखा बिभीषण । गगन जाइबर्षहु पटभूषण ५
नभ पर जाइ बिभीषण तबहीं । बर्षि दियेमणिअम्बर सबहीं ६
जोइजोइ मनभावहिसोइ लेहीं । मणिमुख मेलिडारिकपिदेहीं ७
हंसहिं राम सिय अनुज समेता । परम कौतुकी कृपानिकेता ८
दो० मुनिजेहि ध्यान न पावहिं नेति नेति कह बेद ।
कृपासिन्धु सोइ कपिन सन करत अनेक बिनोद ॥ ३६ ॥

बिभीषण ने रामचद्र के बचन सुनतेही हर्षितहोकर चरण गहिलिये कि स्वामी ऐसाही करूंगा १ वानर भालु भी सब हर्षित होगये और चरण छूछूकर रामस्वामी की प्रशंसा करने लगे २ फिरि तो बिभीषण लंका को गये और जाकर मणि गण और बस्त्रों से बिमानभरवाया ३ सोकुबेरका पुष्पक बिमान लाइ कर स्वामी को भेट किया तब रामचंद्र ने हंसिकर कहा ४ हे सखा इस बिमान पर चढ़िकर आकाश पर जाओ और तहां ते ये बस्त्र और भूषण बर्षाओ ५ तबतो आकाश पर जाकर बिभी-षण ने मणि बस्त्र सब बर्षा दिये ६ जो जिस के मन भावता है सो लेते हैं और मणितो मुख में डारि कर बानर फेंकि देते हैं ७ सीता लक्ष्मण समेत राम यहकौतुक

देखि देखि हंसते हैं कृपा निकेत स्वामी वही ही कौतुकी हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ मुनिजन जिन स्वामी को ध्यान में भी नहीं पाते हैं और बेद नेति नेति कहते हैं ते कृपाल स्वामी बानरों के साथ अनेक बिनोद करते हैं ॥ ३६ ॥

दो०। उमायोग जपदान तप नाना व्रत मखनेम।
रामकृपा नहिं करहिं तस जस निष्केवल प्रेम ॥

भालुकपिन्ह पट भूषण पाये। पहिरि पहिरि सबप्रभुपहंआये १
चितै सबनि पर कीन्ही दाया। बोले मधुर बचन रघुराया २
तुम्हरे बल मैं रावण मारा। तिलक बिभीषण कहंपुनि सारा ३
निजनिज गृह अबतुमसबजाहू। सुमिरेहुमोहि डरेहुजनिकाहू४
सुनत बचन प्रेमाकुल बानर। जोरि पाणि बोले सब सादर ५
प्रभु जो कहहु तुमहिं सब सोहा। हमरेहोत बचनसुनिमोहा ६
दीन जानि कपि किये सनाथा। तुम त्रैलोक ईश रघु नाथा ७
देखिराम रुखबानर रिच्छा। प्रेम मगन नहिं गृह की इच्छा ८

दो०। कहि न सकहिं कछु प्रेमबश भरि भरि लोचन बारि।
सन्मुखचितवहिंरामतन नयन निमेष बिसारि ॥ ३७ ॥

सुनो हे पार्वती योग से जप से दानसे तपसे नानाचांद्रायणादिक ब्रतोंसे यज्ञोंसे नियमों से रामस्वामी ऐसी कृपा जीव पर नहीं करतेहैं जैसी निर्मल प्रेमसे करते हैं क्योंकि उनकर्मों का फल ब्रह्मलोकपर्य्यन्त नियत है और प्रेम से भगवद्धाममिलता है ॥ चौपाई ॥ भालु बानरों ने बस्त्राभूषण पाये ते पहिर कर राम के पास आये १ सबको देखकर उन पर दया की और अति मधुर बचन बोले २ तुम्हारेही बल से मैंने रावण को मारा और बिभीषण को राज्य तिलक किया ३ अब तुम सब अपने अपने घरोंको जाओ मेराही स्मरण करना और किसी से न डरना ४ ऐसे स्वामी के बचन सुनतेही प्रेम में ब्याकुल हो गये और हाथ जोर कर सब बोले ५ हे स्वामी आप जो कहो सो सब आप को सोहता है परन्तु हमको आप के बचन सुनि कर मोह होता है ६ दीन जानि कर आपने हमको सनाथ किया है आप तो त्रयलोक नाथ हैं ७ अबतो रामरुख देखि रीछ बानर प्रेम में मगन होगये घर जाने की किसी की इच्छा नहीं है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ प्रेम के बश कुछ कहितो सकते नहीं हैं नेत्रों में जल भरि भरि लेते हैं और पलकों को रोकि कर राम के सन्मुख देखते हैं ॥ ३७ ॥

अतिशय प्रीति देखिरघुराई। लीन्हें सकल बिमान चढ़ाई १

मनमहं विप्रचरण शिरनावा । उत्तरदिशिहि बिमान चलावा २
चलत बिमान कुलाहल होई । जय रघुबीर कहै सब कोई ३
सिंहासन अति उच्चमनोहर । श्री समेत बैठे प्रभुतापर ४
राजत राम सहित भामिनी । मेरुशृंग जनुघन दामिनी ५
रुचिर बिमान चलेउ अतिआतुर । कीन्हीं सुमन वृष्टि हर्षेसुर६
परम सुखद बह त्रिबिधि बयारी । सागर सरिसर निर्मलवारी७
शगुण होंहिं सुन्दर चहुंपासा । मनप्रसन्न निर्मल सबआसा ८
दो० जहंजहं कृपासिंधुबन कीन्हबास बिश्राम ।
सकल दिखाये जानकिहि कहेसबनिके नाम ॥ ३८ ॥

श्रीरामचंद्र ने उन की अतिशय प्रीति देखिकर सब के सब ब्रह्मरचित मनोहर दिब्य बिमान पर चढ़ा लिये १ फिरि तो ब्रह्मण्य देव स्वामी रामचन्द्र ने द्विजदेवों के चरणों को मनमें प्रणाम किया और उत्तर दिशा को बिमान चलादिया २ बिमान के चलते बड़ा आनन्द कोलाहल हुआ जय राम जयश्रीराम सब उच्चारने लगे ३ जो सिंहासन अति उच्च और मनोहर है उसपर सीता समेत श्रीराम बिराजते हुये ४ अब उस बिमान के उच्चासन पर श्याम गौर सीताराम कैसे शोभा देते हैं मानों कण का चल के शृंगपर मेघ और सौदामिनीहीं शोहते हैं ५ जब सुन्दर बिमान चिकूटा चल से चला तब तो देवता हर्षित होगये और पुष्पों की वर्षा करने लगे ६ परमानन्द दायनी शीतलमंद सुगन्ध पवन बहने लगी समुद्र नदी सरोवरों के जल निर्मल होगये ७ चारों दिशा में सुन्दर शगुण होने लगे सब प्राणियों के मन प्रसन्न होगये दशहू दिशा निर्मल होगईं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ चले आते में जहांजहां कृपासिंधु श्रीरामचन्द्र ने सीता के बियोग में बनमें बास बिश्राम किये रहैं ते सब सीताको दिखाये और सब के नाम बताये ॥ ३८ ॥

तुरत बिमान तहांचलि आवा । दंडक बन जहंपरम सुहावा १
कुंभजादि मुनि नायक नाना । गये राम सबके अस्थाना २
सकल ऋषिन्ह सनपाइ अशीशा । चित्रकूट आये जगदीशा ३
तहंकरि मुनिन केर संतोषा । चला बिमान ध्यान तें चोषा ४
बहुरि रामजानकिहि दिखाई । यमुना कलिमल हरणि सुहाई५
पुनिदेखी सुरसरी पुनीता । रामकहा प्रणाम करु सीता ६

तीरथ पतिपुनिदीख प्रयागा। निरखत कोटि जन्म अघभागा ७
दीख परम पावन पुनिबेनी। हरनि शोकसुरलोक नसेनी ८
दो० पुनिप्रभु आइ त्रिबेणी हर्षित मज्जन कीन्ह।
कपिन्ह सहित बिप्रनकहं दानबिबिधि बिधिदीन्ह ॥३९॥

तुरंतही बिमान तहां आगया जहांपरम सुहावन दंडक बन है. १ तहां जो अगस्ति आदि मुनीश्वर रहते हैं उन सबों के आश्रमों में रामस्वामी गये २ फिरि उन से अशीश पाकर चित्रकूट में जगदीशराम आगये ३ तहां अत्रि आदि मुनि वर्य्यों का संतोष करिके ध्यान से भी अति बेगवान बिमान चला ४ फिरि राम ने कलिमल हरणी श्री यमुना कलिन्दनन्दिनी आ दिखाई ५ तिसपीछे परम पावन श्रीगंगा आ देखी राम ने कहा हे सीते यह श्रीगंगा है इस को प्रणाम पूजनकरो ६ ता पीछे तीरथ राज प्रयाग देखा जिस के देखतेही जन्मांतरों के पाप नाश होते हैं ७ फिरि परम पावनी गंगा यमुना की वेणी देखी जो शोक हरणी और भगवद्धाम की नसेनी है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ फिरि स्वामी ने त्रिबेणी पर आकर वानरों समेत प्रसन्न मन स्नान किये और अनेक प्रकार के तीरथ बासी ब्राह्मणों को दान दिये ॥ ३९ ॥

प्रभु हनुमंतहि कहा बुझाई। धरिबटु रूप अवध पुर जाई १
भरतहि कुशल हमारि सुनावहु। समाचार लै तुमचलि आवहु २
तुरत पवन सुत गवनत भयऊ। तब प्रभु भरद्वाज पहं गयऊ ३
मुनि पदबंदि युगल कर जोरी। चढ़िबिमान प्रभु चले बहोरी ४
सुरसरि लांघि यान जबआवा। उतरेउ तट प्रभुआयसु पावा ५
सुनतहिं गुह धायउ प्रेमाकुल। आवा निकट परमसुखसंकुल ६
प्रभुहि बिलोकि सहित बैदेहीं। परेउ अवनि तनसुधिनहिं तेहीं ७
परम प्रीति बिलोकि रघुराई। हर्षि उठाइ लीन्ह उरलाई ८

जब सबस्नान बेणीका करिचुके तब रामचंद्रने हनुमानसे समुझाकर कहा कितुम बटुवेष धरिकर अयोध्या के समीप नन्दिग्राम में जाओ तहां भरत को सीता लक्ष्मण समेत हमारे आने के मंगल कुशल समाचार सुनाओ और उनकेसमाचार लेकर शृंग बेरि में हमारे पास आजाओ २ स्वामी की आज्ञा पाइ जब हनुमान अयोध्याको गये तब रामचन्द्रभरद्वाजके पासगये ३ कहाकि हेमहाराज आप मेरेको यहबरदान दीजिये जहांजहां मेरे बानर भालुरहैं तहां तहां कन्द मूलफल बहुत हुआकरें ऐसा बरमांगि मुनि के चरणों को प्रणाम करि बिमान परचढ़ि चलि दिये जब गंगाको लांघि बिमान शृंग बेरिपुर में आगया तबतो स्वामी की आज्ञासे पृथिवी परउतरा ५ सुनतेही निषा-

द पति गुह प्रेमाकुल दौरा और आनन्द भरा स्वामीके पास आया ८ अपने प्रभुराम लक्ष्मणको सीता समेत देखि कर पृथिवी परगिरि परा अतिआनन्दसे तनकी संभारनहीं रही ऐसी उसकी परम प्रीति देखिकर रामचन्द्रने उठाकर हृदयसे लगालिया ॥ ८ ॥

छं० लियहृदयलाइ कृपानिधान सुजानराम रमापती ।
बैठारि परमसमीपपूछी कुशलसो करु बीनती ॥
अब कुशल पदपंकज बिलोकि बिरंचि शंकर सेब्यजे ।
सुखधाम पूरणकामराम नमामिराम नमामिते ॥
सबभाँति अधम निषादजो प्रभुभरत जिमि उरलायऊ ।
मतिमंद तुलसीदास सोप्रभु मोहबस बिसरायऊ ॥
यहरावणारि चरित्रपावन रामपद रतिप्रदसदा ।
कामादि हरबिज्ञान करसुरसिद्ध मुनिगावहिं मुदा ॥

दो० समरबिजय रघुपति चरित सुनहिंजे सदा सुजान ।
बिजय बिबेक बिभूति नित तिनहिं देहिं भगवान ॥
यह कलिकाल मलाय तन मन करि देखुबिचार ।
श्री रघुनायक नामतजि नाहिन आन अधार ॥ ४० ॥

कृपानिधान परम सुजान रमापति रामने उस निषाद को हृदय से लगालिया और अति समीप बैठारिकर कुशल पूछी तबतो निषाद बिनती करने लगा अब आप के चरण कमलों कोदेखि कर कुशल हुई जो आपके चरण ब्रह्मा महादेव कोभी से व्यहैं हे सुखधाम हे पूर्णकाम राम आपको मैं बारंबार प्रणाम करताहूं सबप्रकार से अधम निषादको जिन कृपाल स्वामी रामने भरतके समान हृदयसे लगालिया अरेमति मंद जीव ऐसेदयाल स्वामी सो तूने मोहके बसबिसारि दिया यहरावणारि श्री राम का पावन चरित्र सदा राम पदकी प्रीतिका दाताहै कामक्रोध लोभ मोह का हर्त्ता है बिज्ञान कर्ता है जिसको ब्रह्मा शिवादि सब देवता सिद्धमुनि परम प्रसन्न गाते हैं यह श्री रामचन्द्रका समर बिजय यशहै जो सुजान इसको सदा कहते सुनते हैं उन सकामियों कोतो बिजय बिभूति और अकामियों को ज्ञानभक्ति वैराग सदा राम भगवान देतेहैं यह कलियुग पापका घरहै हेमनतू बिचारि देखु श्रीरामनामको छोड़ि दूसरा कोई उपाय नहीं है ॥ ४० ॥

इति श्री शुकदेव कृत मानसहंस भूषणे रामचरित्रमानसे युद्धकांडे षष्ठमस्सो पानस्समाप्तः ॥

श्रीगणेशायनमः

अथतुलसीदासकृतरामायणउत्तरकाण्डसटीकलिख्यते॥

श्लो० जित्वालंकपतिं ससेनसकुलंसीतान्वितंसानुजं ।
स्थित्वापुष्पकयानसेनसहितायोध्यापुरीमागतं ॥
भ्रातानंदप्रदं प्रजासुखकरं राज्याभिषेकंगतं ।
त्रैलोकाधिपतिं चराचरपतिं सीतापतिंसंश्रये ॥

दो० रिपुरण बधि सीता अनुजसहित संग कपिभीर ।
आवत कौशलपुर कुशल जय जयजय रघुबीर ॥

यह सातवां उतरकांडराम चरित्र मानस सातो कांडों में ऐसा उत्तम है जैसे बेदेषुपौरुषंसूक्तं धर्मशास्त्रेषुमानव: ॥भारतेभगवद्गीतापुराणेषुचवैष्णव: १ निम्नगाणांयथा गंगादेवानामच्युतोयथा ॥ वैष्णवानांयथाशंभू सप्तकांडेष्विदन्तथा २ अर्थात् जैसे बेदोंमें पुरुष सूक्त सर्वोत्तम है स्मृतियों में मनुस्मृति है भारत में भगवद्गीता है पुराणों में विष्णु पुराण है सरिताओं में जैसे सुरसरी गंगा है देवताओंमें जैसे विष्णु भगवान् हैं वैष्णवों में सर्वोत्तम जगदागुरुजैसे श्री शिवशंकर हैं तैसेही सातोंकांडों में यह उत्तरकांड उत्तम है ॥ क्योंकि इसकांड में जीवों का परम हित रूप भगवच्चरणाबिन्दों का प्रेमसर्वोपरि सिद्धोपाय जैसे और कांडों में यथा प्रसंग कहारहे यहां स्पष्टसर्वत्र पैज पूर्बक कहा है ॥ पचास ५० चौपाइयों में राम चरित्र है चालीस ४० चौपाइयों में नीलाचल की कथा है उसके चारों शृंगोंप्रति दश दश चौपाइयों का मान रक्खा है शेष कथा पचास चौपाइयों में कही है सब १४० चौपाई हैं इसमें क्षेपक अतिअल्प है बहुधा पूराही प्रमाण है प्रारंभ में हनुमान का भरत के पास आगमन भरत का प्रजामाता समेत राम के मिलने को जाना रामचन्द्र का नगर प्रवेश राज्या भिषेक देवास्तुति बानरों की बिदा राम राज्य बर्णन सनकादिक आगमन प्रजाको उपदेश बशिष्ठ का राम के पास जाना गुप्त बैकुंठ यात्रा यह ५० चौपाइयों का प्रथम खण्ड पार्बती की प्रश्न महादेव की नीलाचल पर यात्रा गरुड़ का मोह भुशुंडि के पास जाना राम चरित्रका पूर्वानुवाक गरुड़ को प्रबोध कागभुशुण्डि का मोह यह ४०

चौपाइयोंका दूसरा खंड भुशुंडिकी जन्मकथा कलिदोषगुण भुशुंडि को शाप लोमस समागम लोमस का शापनुग्रह ज्ञानदीपक भक्तिचिन्तामणि अंत में मानसरोग गरुड़ की वैकुंठ यात्रा पार्बतीको प्रबोध कथाकी समाप्ति यह ५० चौपाइयोंकातीसराखंडहुआ ॥

श्लो० केकीकंठाभनीलंसुरवरबिलशद्विप्रपादाब्जचिन्हं ।
शोभाढ्यंपीतबस्त्रं सरसिजनयनं सर्बदासुप्रसन्नं ॥
पाणौनाराचचापंकपिनिकरयुतंबन्धुनासेब्यमानं ।
नौमीड्यंजानकीशंरघुबरमनिशंपुष्पकारूढ़रामं ॥ १ ॥
कोशलेंद्रपदकंजमंजुलौ कोमलाम्बुजमहेशबन्दितौ ।
जानकीकरसरोजलालितौचिन्तकस्यमनभृंगसंगिनौ॥२
कुन्दइन्दुबरगौरसुन्दरं अम्बिकापतिमभीष्टकामदं ।
कारुणीककलकंजलोचनं नौमिशंकरमनंगमोचनं ॥ ३॥

उत्तर कांड के प्रारंभ में गुसाईं तुलसीदास जी लंका जीति पुष्पक बिमान पर चले आते अपने इष्ट देव श्री रामचन्द्र को प्रणाम करते हैं ॥ जो श्रीरामचन्द्रमयूर के सचिक्कननील कंठ के समान तो सुन्दर श्याम वर्ण हैं और बक्षस्थल में भृगुलता का चिन्ह है कोटि काम शोभा सम्पन्न हैं पीतांबर धारण किये हैं कमल पत्र से आयत नेत्र हैं सर्बदा अति प्रसन्न हैं दक्षिण भुजा में नाराच बाणहैं बाम में शारंग धनुष है बानरों की सेना सहित हैं लक्ष्मण करिके सेवित हैं ऐसे ईड्य कहे प्रशंसनीय लंकाको बिजय किये पुष्पक बिमान पर बिराजे चले आते सीता पति रघुबर्य्य रामको निरंतर मैं प्रणाम करता हूं ॥ १ ॥ कोशलेन्द्र कहे कोशलपुरी श्रीअयोध्याधिपति राम के युगुल चरण कमल अति उज्ज्वल और दोनों परम कोमल दोनों अज महेश बंदित दोनों सीता के कर सरोजों से लालित दोनों चिन्तकों के मन मधुकर कसाथी हैं ॥ २ ॥ अबग्रन्थ के मुख्य आचार्य्य वर्य्य श्रीशिवजी को प्रणाम करते हैं ॥ जो श्री शिवशंकर कुंद पुष्प चंद्रमा शंख के समान तो गौर वर्ण हैं अम्बिका श्री पार्बती के पति हैं सेवकों को अभीष्ट कहे बांछित कामना के दाता हैं कारुणीक कहे बड़े दयालु हैं कमल से सुन्दर नेत्र हैं तिन अनंग मोचन श्रीशिव को प्रणामहै ॥ ३ ॥

दो० रहा एकदिन अवधिकर अति आरत पुर लोग ।
जहं तहं शोचहिं नारि नर कृशतनु राम बियोग १ ॥
सगुण होहिं सुन्दर सकल मन प्रसन्न सब केर ।
प्रभु आगमन जनाव जनु नगर रम्य चहुंफेर ॥ २ ॥

कौशिल्यादि मातु सब मन अनन्द अस होइ ।
आये प्रभु सिय अनुजयुत कहन चहत अब कोइ ॥ ३ ॥
भरत नयन भुज दक्षिण फरकत बारहिं बार ।
जानि सगुण मनहर्ष अति लागे करन बिचार ॥ ४ ॥

यहां अयोध्यामें जबसे सीता लक्ष्मण समेत रामचित्रकूटसे दंडकवनको सिधारेतब सेअनेक अयोध्यावासी उसको शताब्धि योजन पर्य्यन्त बारबार देखिदेखि आये कहीं भीखोज न पाया अवधिके अवसान आनेपर जबएकही दिनरहिगया और स्वामी के आनेकी कुछभी सुधिसंभार न पाई तबतो समस्त पुरबासी घबराये और जहां तहां अति आरत नारिनर शोच करनेलगे औररामके वियोगसे कृशतन होगये जबऐसीअति बिकलता सबको हुई तबतो जनरंजन स्वामीकी कृपासे सुन्दर सगुण सबको होनेलगे औरसबके मनभी प्रसन्न होगये मानों स्वामीका आगम नहीं जनावतेहैं और नगरभी सर्वत्र परमरम्य होगया १।२ कौशिल्यादिक माताओंके मनमें ऐसा आनन्द होने लगा मानों सीता लक्ष्मण समेत रामआये ऐसा मंगलसंदेश कोई अभीद्वारसे आकर कहेंहीं देताहै ३ नन्दिग्राममें भरतके दक्षिण नेत्रऔर भुजा बारंबार फरकतेहैं ऐसे सगुणोंको जानिकर मनमें आनन्दतो होताहै परंतु अनुमान करने लगे ॥ ४ ॥

रहा एकदिन अवधि अधारा । समुझत मन दुख भयो अपारा १
कारणकवननाथनहिंआयउजानिकुटिलकिधौंमोहिबिसरायउ २
अहह धन्य लक्ष्मण बड़ भागी । राम पदारबिंद अनुरागी ३
कपटी कुटिलमोहिं प्रभुचीन्हा । तातें नाथ साथ नहिं लीन्हा ४
जोकरणीसमुझहिं प्रभु मोरी । नहिं निस्तार कल्पशत कोरी ५
जन अवगुणप्रभु मान न काऊ । दीनबंधु अति मृदुल सुभाऊ ६
मोरे जिय भरोस दृढ़ सोई । मिलिहैं राम सगुण शुभ होई ७
बीते अवधि रहै जो प्राणा । अधम कवन जग मोहिं समाना ८
दो० राम बिरह सागर महं भरत मगन मन होत ।
बिप्र रूप धरि पवन सुत आइ गये जनु पोत ॥ १ ॥

चौदह वर्षकी अवधिमें मेरे प्राणोंका आधारतो एकही दिन रहाहै और स्वामीकी ओरसे बाट चली नसंदेशा आया यह समुझते तोभरतके मनको अपार दुःख हुआ १ कौन कारणहै जोस्वामी अबतक नहींआये कुटिल जानिकर कहीं मेरेको बिसारि तो न दियाहो २ अहह आनन्दे हम तीनों भाइयों में एक लक्ष्मण तो बड़भागी हुआ सो

धन्यहै जोसबको तृणके समान त्यागि करके बलराम चरणही का अनुरागी हुआ ३ मेरेको तोस्वामीने कपटी और कुटिलही जाना इसीसे साथनहीं लिया ४ जो स्वामी मेरीही करणी समुझैगा तौतो मेरा निस्तारा कोटि कल्प पर्य्यन्तभी न होगा ५ परंतु रामभक्त बत्सलहैं उन्होंने अपने अनन्य जनोंका अवगुण कभी माना नहींहै क्योंकि दीनबंधु औरअति कोमल उनका सहज स्वभावहै ६ उसी का मेरेको दृढ़ भरोसा है किस्वामी मेरेको मिलैहींगे सगुणभी शुभ होतेहैं ७ जो अवधि बीते परभीमेरे प्राणबने रहैं तौफिरि मेरे समान दूसरा अधम कौनहै ॥ ८ ॥ दोहा ॥ इस प्रकार राम बियोग केसमुद्र में भरतका मन बूड़ाही जाता रहै कि इतनेही में बिप्र वेष बनाये हनुमान जलयान की नाईं आगये ॥ १ ॥

दो० बैठे देखि कुशासन जटा मुकुट कृश गात ।
राम राम रघुपति जपत श्रवत नयन जल जात ॥

देखत हनूमान अति हर्षेउ । पुलकिगात लोचन जल बर्षेउ १
मनमहँ बहुतभांति सुखमानी । बोलेउ श्रवण सुधासमबानी २
जासुबिरह शोचहु दिन राती । रटहु निरंतर गुणगण पाती ३
रघुकुलतिलक सुजनसुख दाता । आवतकुशल देवमुनित्राता ४
रिपुरणजीतिसुयशसुरगावत । सीताअनुजसहित प्रभुआवत ५
सुनत बचन बिसरे सब दूषा । तृषावन्त जिमि पाइ पियूषा ६
कोतुम तात कहांते आये । मोहिं परम प्रिय बचन सुनाये ७
मारुत सुत मैंकपि हनुमाना । नाम मोर सुनु कृपा निधाना ८

दूरिसे हनुमानने भरतको कुशासन परतो बैठा देखा कि मस्तक पर जटा जूट बांधे हैं राम बियोगके संतापसे कृश शरीर है राम राम राम जपतेहैंकमलसे सुन्दर नेत्रोंसे जल बर्षता है ॥ चौपाई ॥ ऐसा भरतका प्रेम देखतेही हनूमान हर्षित हो गये पुलकित गात और नेत्र जल बर्षने लगे १ मनमें बड़ा सुख मानि कर भरत के श्रवणोंको सुधा के समान मधुर बचन बोले २ हे भरत अब तुम शोच मति करो जिनके बियोग से तुम अहर्निशि शोच किया करते हो और जिनके गुण गणों को सदा रटा करते हो ३ ते रघुकुल तिलक सज्जनानन्द दायक देव मुनि रक्षक राम कुशल पूर्बक आते हैं ४ अपने शत्रु लंकापति रावणको रणमें जीति कर जिनका सुयश देवता गाते हैं सीता लक्ष्मण समेत ते राम पुष्पक बिमान पर बैठे चले आते हैं ५ ऐसे आनन्दमूल बचन सुनतेही भरतके समस्त दुख दूरि होगये मानों अति क्षुधातुर को अमृत मिला ६ पूछने लगे हे तात तुम कौन हो और कहांसे आतेहो

जो तुम मेरेको ये परम प्यारे बचन सुनाते हो ७ हनुमानने कहा मैं पवनका तो पुत्र हूं बानर जाति हूं हनुमान मेरा नामहै राम स्वामीकी आज्ञासे विप्रवेष होकर तुम्हारेको स्वामी के आगमनके मंगल समाचार सुनाने को आया हूं ॥ ८ ॥

दीनबंधु रघुपति कर किंकर । सुनत भरत भेटेउ उठि सादर १
मिलतप्रेमनहिंहृदयंसमाता । नयनश्रवत जल पुलकितगाता२
कपितव दरशसकल दुखबीते । मिले आज मोहिं रामपिरीते ३
बार बार पूछी कुशलाता । तुम कहं देउं कहा सुनु भ्राता ४
यह संदेश सरिस जग माहीं । करि बिचार देखेउं कछुनाहीं ५
नाहिन तात उऋण मैं तोहीं । अब प्रभु चरित सुनावहु मोहीं ६
तब हनुमंत नाइ पद माथा । कहे सकल रघुपति गुण गाथा ७
कहु कपि कबहुं कृपालु गुसाईं । सुमिरत मोहिं दासकीनाईं ८
दो० राम प्राण प्रिय नाथ तुम सत्य बचन मम तात ।
पुनि पुनि मिलत भरत सुनि प्रेम न हृदय समात ॥ ३ ॥

दीनबंधु श्री रामचन्द्रको किंकर हूं भगवद्भक्त सुनतेही बड़े आदरसे उठिकर भरत हनुमानको मिले १ मिलते समय प्रेम भरतके हृदयमें समाता नहीं है नेत्र तो जलसे श्रवते हैं और अंग पुलकित हैं २ बोले हे हनुमान तेरे दरशनसे मेरेसब संताप दूरि होगये आज मेरेको रामके प्यारे मिले तातें ३ बारंबार हनुमानसे कुशल प्रश्न करिके बोले हे भाई मैं या समय तेरेको क्या दे दूं ४ इस संदेशके समानतो संसारमें कोई भी पदार्थ नहीं है मैंने मनमें बिचार करिके देखि लिया ५ तातें हे हनुमान मैंतो तेरे ऋणसे उऋणतो होही नहीं सकता हूं अब तुम मेरेको स्वामी के चरित्र सुनाओ ६ तबतो हनुमानने भरतको प्रणाम करिके सबराम चरित्र कहे० भगवच्चरित्र सुनिकर फिरि बोले कहोतो हे हनुमान कभी कृपाल राम स्वामीदासों का नाईं मेराभी स्मरण करते रहे ॥ ८ ॥ दोहा ॥ तबतो हनुमान बोले हे स्वामी आप क्या पूछते हो आपतो रामको प्राणोंहीके समान प्यारे हो मैं आप से सत्यही कहता हूं ऐसे हनुमान के बचन सुनि कर भरत बारंबार हनुमान से मिलते हैं और हृदयमें प्रेम समाताही नहीं है ॥ ३ ॥

सो० भरत चरण शिर नाइ तुरत गयउ कपि राम पहं ।
कही कुशल सब जाइ हर्षि चले प्रभु यान चढ़ि ॥
हर्षि भरत कोशल पुर आये । समाचार सब गुरुहि सुनाये १

पुनि मंदिर महं बात जनाई । आवत नगर कुशल रघुराई २
सुनतसकल जननी उठिधाईं । कहिप्रभुकुशल भरतसमुझाईं ३
समाचार पुर लोगनि पाये । नर अरु नारि हर्षि उठि धाये ४
दधि दूर्बा रोचन फल फूला । नव तुलसी दल मंगल मूला ५
भरिभरि हेमथारबर भामिनि । गावति चलीं सिंधुरगामिनि ६
अवध पुरी प्रभु आवत जानी । भई सकल शोभा की खानी ७
भइसरयू अतिनिर्मल नीरा । बहहि सुहावनि त्रिबिधिसमीरा ८

भरतके चरणोंको प्रणाम करि तुरंतही हनुमान रामके पास जा पहुंचे औरभरत की कुशल के समाचार जा सुनाये तबतो राम पुष्पक पर चढ़ि अयोध्या को पधारे॥ चौपाई ॥ उहां भरत अति प्रसन्न मन अयोध्या में आये और रामचन्द्र के आगमन के मंगल समाचार बशिष्ठमुनिको सुनाये १ तिस पीछे रनिवासमें जनावा दिया कि राम स्वामी लंका जीति कर आते हैं २ सुनतेही सब माता उठिदौरीं तब रामकी कुशल कहि कर भरतने समुझाई ३ फिरि तो समाचार पुरबासियों ने भी पाये क्यानर क्यानारी सुनतेही उठि धाये ४ दधि, दूर्बा, गोरोचन, पावन फल, फूल नवीन तुलसीदल, ये सब मंगल मूल पदार्थ सुवर्ण के थारों में भरि भरि सौभाग्य-वती मंगलगान करतीं गज गामिनी चलीं ५ । ६ अयोध्या पुरीने जो अपने स्वामी रामको आते जाना समस्त शोभा की खानिहो होगई ७ सरयू गंगा अति निर्मल बहनेलगीं परम सुहावनी शीतलमंद सुगन्ध तीनों बिधिकी पवन चलने लगी॥ ८॥

दो० हर्षित गुरु पुर जन अनुज भूसुर बृंद समेत ।
चले भरत अति प्रेम मन सन्मुख कृपा निकेत ॥
बहुतक चढ़ीं अटारिन्ह निरखहिं गगन बिमान ।
देखि मधुर सुर हर्षित करहिं सुमंगल गान ॥
राकाशशि रघुपति पुरी सिंधु देखि हरषान ।
बढ़े कुलाहल करत जन नारि तरंग समान ॥ ३ ॥

फिरितो अति हर्षित गुरु वशिष्ठ और पुरजन अनुज शत्रुहन और द्विजदेवों के बृन्दों समेत प्रेम भरे मन भरत कृपानिकेत स्वामीरामचन्द्र के सम्मुखचले बहुतक युवती जन अपनी अपनी अटारियों पर चढ़ीं आकाश में दक्षिण दिशा की ओर द्वितीयाके चन्द्रमाकी नाईं बिमानको निरखती हैं जब देखि परताहै तबतो देखि कर मधुर स्वरसे अति हर्षित होकर मंगल गान करती हैं राका कहे पूर्णमाशी के

चन्द्रमाके समान तो श्री रामचन्द्र हैं और अयोध्यापुरी समुद्र है सो समुद्र रामचन्द्रमाको देखिकर मानों उमंगा है पुरतें बाहर बड़े कोलाहल करते आते जो नारि नर हैं सोई समुद्रके तरंगोंके समान हैं ॥ ३ ॥

यहांभानुकुल कमलदिवाकर । कपिनदिखावत नगरमनोहर १
सुनु कपीश अंगद लंकेशा । पावन पुरी रुचिर यह देशा २
यद्यपि सब बैकुंठ बखाना । वेद पुराण बिदित जग जाना ३
अवधसरिसप्रियमोहिं न सोऊ । यहप्रसंग जानहिं कोउकोऊ ४
जन्म भूमि मम पुरी सुहावनि । उत्तरदिशि सरयू बहपावनि ५
जा मज्जनतें बिनहिं प्रयासा । मम समीप नरपावहिं बासा ६
अति प्रिय मोहिं यहांके बासी । ममधामदा पुरी सुखरासी ७
हर्षे कपि सब सुनिप्रभु बानी । धन्य अवध जो राम बखानी ८

यहां पुष्पक बिमान पर बैठे चले आते भानुकुल कमलोंके दिवाकर श्रीरामचन्द्र अपने सखाओंको परम मनोहर कोशल नगर अवधपुर दिखावते हैं १ सुनु हे सुग्रीव, अंगद, लंकापति बिभीषण यह पुरी परम पावन है और यह देश भी परम रम्य है २ यद्यपि सबने बैकुंठ को सर्वोत्तम बखाना है और सर्वोत्तमही है तथापि अयोध्या के समान मेरे को सो भी प्रिय नहीं है इस प्रसंगको कोई कोई बिद्वज्जन जानते हैं क्योंकि अयोध्या का अर्थ अप्रति द्वन्द है अर्थात् जितने स्थान पृथ्वी पर हैं उनमें अयोध्याही सर्वोपरि है जैसा लिखा है ॥ श्लोक ॥ सप्तपुरीचयोग्रामःनवारण्यनवोधरः॥नवैतिनगरख्याताअष्टैतेपटनस्मृता॥ १॥सप्तपंथापंचक्षेचादुर्गमेकोगाबिंशति॥ चतुर्दशानिगुह्यानिमुक्तिद्वाराणिभूतले॥ २॥ इन६२ चोंमें सप्तपुरी अग्रगण्य हैं अयोध्या मथुरामायाकाशीकांचीअवंतिका॥ पुरीद्वारावतीचैयासप्तैतामोक्षदायका ॥१॥इन सातोंमें भी अयोध्याही अग्रगण्य है और जहां इन सातों को भगवदंग कहा है तहां भी अयोध्याहीसर्वोत्तमा है ॥ बिष्णोःपादमवंतिकागुणमतीमध्येचकांचीपुरी ॥ नाभौद्वारवतींवदन्तिहृदयेमायापुरीयोगिनः॥२॥ग्रीवामूलमुदाहरंतिमथुरानाशाग्रवाराणशी एतद्ब्रह्मपदंबदन्तिमुनयोयोध्यापुरं मस्तके ॥ ३॥ कल्पकोटिसहस्राणांकाशीबासस्ययत्फलं ॥ तत्फलंपलमात्रेणकलौदाशरथीपुरे ॥ ३॥ इत्यादिबचनोंसे अयोध्याही सर्वोत्तमहै ३ । ४ और तिस पर मेरी जन्मभूमि है उत्तर दिशा में सरयू गंगा बहती हैं ५ जिसके स्नानहीसे जीवोंको सामीप्य मुक्ति मिलती है ६ और यहांके बासीभी मेरेको अत्यन्त प्यारेहैं और यह पुरी मेरे धाम बैकुंठकी भी दाता है ७ ऐसे श्री रामचन्द्र के मुखके वचन सुनतेही सब हर्षित होगये धन्य अयोध्या जिसको श्री राम बखानते हैं ॥ ८ ॥

दो० आवत देखे लोग सब कृपासिंधु भगवान ।

नगर निकट प्रभु प्रेरित उतरेउ भूमि बिमान ॥
उतरि कहेउ प्रभु पुष्पकहि तुम कुबेर पहं जाहु ।
प्रेरित राम चलेउ सोइ हर्ष बिरह अति ताहु ॥

आये भरत संग सब लोगा । कृशतन श्री रघुबीर बियोगा १
बामदेव बशिष्ठमुनि नायक । देखे प्रभु महि धरि धनु शायक २
धाइधरे गुरुचरण सरोरुह । अनुज सहित अतिपुलकतनोरुह ३
भेटि कुशल पूछी मुनि राया । हमरे कुशल तुम्हारी दाया ४
सकल द्विजन कहं नायउ माथा । धर्म धुरंधर रघुकुल नाथा ५
गहेभरतपुनिप्रभुपद पंकज । नमतजिनहिं सुर मुनिशंकरअज ६
परे भूमि नहिं उठत उठाये । बल करि कृपासिंधु उर लाये ७
श्यामल गात रोम भय ठाढ़े । नव राजीव नयन जल बाढ़े ८

जब रामचन्द्रने समस्त अयोध्या बासियोंको आते देखा तबतो अयोध्याके समीप स्वामी की आज्ञासे बिमान पृथ्वी पर उतरि आया उतरिकर स्वामीने पुष्पकसे कहा कि तुम कैलाश पर अलकापुरी में अपने स्वामी कुबेर के पास चले जाओ सो स्वामीकी आज्ञासे हर्ष बिषाद भरा चला गया ॥ चौपाई ॥ अबतो भरत आयेसाथ में सब अयोध्याबासी चले आते हैं श्री रामके बियोगसे सब दूबरे हैं १ आगेसबके बशिष्ठ और बामदेव हैं उनको देखतेही राम लक्ष्मण दोनों भाइयों ने धनुष बाणों को पृथ्वी पर धरि दौरि कर बशिष्ठ के चरणों पर दंडवत् गिरि परे और पुलकित शरीर होगये २ । ३ प्रेम समेत भेंटिकर बशिष्ठने कुशलपूछी स्वामीने कहा आपकी दयाही हमारे सदा कुशल है ४ फिरि धर्मधुरंधर रघुनाथ स्वामी ने समस्त द्विज देवोंको प्रणाम किया ५ तिसपीछे भरतने रामस्वामीके चरण कमल आ गहे जिनको समस्त सुर मुनि ब्रह्मा शिव नमते हैं ६ पृथ्वी पर परेहैं उठानेसेभी नहीं उठतेहैं तबतो बलकरि रामने उठाकर छातीसे लगा लिये ७ अब दोनों भाइयों के सुन्दर श्यामल तो गातहैं और दोनोंके रोमांच ठाढ़े हैं और कमलसे सुन्दर नेत्रों से जल बहा चला जाता है ॥ ८ ॥

छं० राजीवलोचनश्रवतजलतनललितपुलकावलिबनी ।
अतिप्रेमहृदयलगाइअनुजहिमिलेप्रभुत्रिभुवनधनी ॥
प्रभुमिलतअनुजहिसोहमोपहंजातिनहिंउपमाकही ।
जनुप्रेमअरुशृंगारतनधरिमिलेबरसुखमालही ॥

पूछतकृपानिधिकुशलभरतहिबचनबेगिनआवई ।
सुनुशिवासोसुखबचनमनतेंभिन्नजानजोपावई ॥
अबकुशलकोशलनाथआरतजानिजनदरशनदियो ।
बूड़तबिरहबारीशकृपानिधानमोहिकरगहिलियो ॥
दो० पुनि प्रभु हर्षि शत्रुहन भेंटेउ हृदय लगाइ ।
लक्ष्मण भरत मिले तब परम प्रेम दोउभाइ ॥ ६ ॥

कमल से नेत्र तो दोनों भाइयों के जल को स्रवते हैं और अंगों में मनोहर पुलकावली होरही है ॥ इस प्रकार बड़ेही प्रेम से भरतको हृदयसे लगाकर त्रिभुवनधनी राम मिले ॥ भरत से मिलते समय जैसे कुछ राम सोहते हैं उसकी तो उपमा मेरे से कहतेही नहीं बनती है ॥ मानों प्रेम और शृंगाररस दोनों श्याम स्वरूपहीदेह धरें मिलते हैं ऐसी कुछ कुछ शोभा पाई जाती है ॥ फिरि मिलिकर श्री रामभरत से कुशल पूछते हैं सो आनन्द दशा में मग्न भरत से उत्तर बेगि नहीं आता है सुनों हे पार्वतीजी आनन्द मन बचन तें भिन्न है जो पाताहै सोई उसको जानता है ॥ फिरि धीर धरिकर भरत बोले हे कोशलनाथ स्वामी जो आपने मेरेको अपना दास जानिकर दर्शन दिया तो अब मेरेकोसब भांति कुशल है ॥ बिरहके समुद्र में बूड़ते मेरे को आपने बांह पकरि कर निकारि लिया ॥ दोहा ॥ फिरि तो रामचन्द्र ने भगवतदास शत्रुघ्न को अति हर्षित होकर हृदयसे लगा लिया तब लक्ष्मण और भरत दोनों भाई परम प्रेम समेत मिले ॥ ६ ॥

भरत अनुज लक्ष्मण पुनिभेटा । दुसहबिरह संभव दुखमेटा १
सीता चरण भरत शिरनावा । अनुज समेत परम सुख पावा २
प्रेमातुर सब लोग निहारी । कौतुक कीन कृपाल खरारी ३
अमितरूप प्रगटे तेहि काला । यथायोग मिलि सबहिकृपाला ४
कृपादृष्टि रघुबीर बिलोकी । किये सकल नर.नारि बिशोकी ५
क्षणमहं सबहिं मिले भगवाना । उमा मर्म यह काहु न जाना ६
यहिबिधि सबहि सुखी करिरामा । आगे चले शील गुणधामा ७
कौशल्यादि मातु सब धाईं । निरखिबच्छ जनु धेनु लवाईं ८

फिरि भरत के अनुचर शत्रुहन को लक्ष्मण ने भेंटा और दुःसह बियोग जनित दुःख सब दूरि किया १ तब सीता के चरण कमलों को शत्रुघ्न समेत भरतनेप्रणाम किया और अति आनन्द पाया २ फिरितो कृपाल स्वामी रामचंद्रने सब पुरबासियों

को प्रेमातुर देखिकर ऐसा आश्चर्य्य किया कि उस समय अनन्तरूप होगये और यथायोग सबको मिलिकर और कृपा दृष्टि देखिकर सब नारि नर बिशोक करि दिये ३ । ४ । ५ एक क्षण में राम भगवान् सबको मिलि लिये यह मर्म्म है पार्वती किसी को भी न जानिपरा ६ इस प्रकार सबको आनन्द देकर आगे को चले जहां सब माताओं की पालंकी हैं ७ तबतो राम लक्ष्मण को आवते देखिकर सब माता प्रेमातुर कैसी दौरीं हैं जैसे बछराओं को देखिकर लवाई गायें दौरैं ॥ ८ ॥

छं० जनुधेनु बालक बच्छतजिगृह चरनबन परबसगईं ।
दिनअंत पुररुख श्रवतथन हुंकार करिधावत भईं ॥
अतिप्रेम प्रभुसबमातु भेटींबचन मृदु बहुबिधिकहे ।
गइबिषम बिपतिबियोग भवतिन्हहर्ष सुखअगणितलहे ॥

दो० भेटति तनय सुमित्रा राम चरण रतिजानि ।
रामहिं मिलत कैकेयी हृदयबहुत सकुचानि ॥
लक्ष्मण सबमातन्ह मिलि हरषे आशिष पाइ ।
कैकेयिहि पुनिपुनि मिले मनकर क्षोभ न जाइ ७ ॥

राम लक्ष्मण चौदह वर्षके बिछुरे अपने पुत्रोंके मिलनेको प्रेम बिह्वल सबमाता कैसे दौरीहैं मानों गायें प्रातःकाल अपने अपने बारे बारे बछरों को घरछोंड़ कर चरने को बनमें गईरहैं संध्या समय नगरकी ओर दूध श्रवती हुंकार करती चलीआती हैं अति प्रेमसे राम स्वामी सब माताओंको मिले और कोमल बचनों से उनका प्रबोध किया तबतो बियोग जनित उनकी बिषम बिपत्ति सबदूरि होगई और अगणित हर्ष आनन्द प्राप्तहुये ॥ दोहा ॥ सुमित्रा अपनेपुत्र लक्ष्मणको रामचंद्रके चरणोंमें अनन्य प्रीति जानिकर बड़ेही प्रेमसे मिली और रामको मिलते समय कैकेयीने अपने हृदय में बड़ीलज्जा मानी लक्ष्मण सब माताओं कोमिले और उनसे आशिष पाकर हर्षित हुये परंतु कैकेयी को उसकी ग्लानि दूरि होनेके निमित्त बड़ी प्रीति समेत बारबार मिलते हैं और मनसे क्षोभ नहींजाता है किइस निरपराधा की ग्लानि गईवानहीं ॥ ७ ॥

सासुन सबनि मिली बैदेही । चरणन लागि हर्ष अतितेही १
देहिं अशीष पूंछि कुशलाता । होइ अचल तुम्हार अहिवाता २
सबरघुपतिमुखकमलबिलोकहिं । मंगलजानिनयनजलरोंकहिं ३
कणक थार आरती उतारहिं । बार बार प्रभु गात निहारहिं ४
नाना भांति निछावरि करहीं । देहिं अशीष हर्ष उर भरहीं ५

कौशल्या पुनि पुनि रघुबीरहिं । चितवत कृपासिंधुरणधीरहिं ६
हृदय बिचारति बारहिं बारा । कवनि भांति लंकापति मारा ७
अति सुकुमार युगल मेरे बारे । निशिचर सुभट महाबलभारे ८
दो० लक्ष्मण अरुसीता सहित प्रभुहिं बिलोकत मात ।
परमा नंद मगन मन पुनि पुनि पुलकित गात ॥ ८ ॥

सब सासुन के चरन लागि लागि कर सीता जा मिलीं और बड़ा आनन्द हुआ ते सबकुशल पूछती हैं और आशीस देतीहैं कि तुम्हारा अहिवात अचल रहै १ । २ अबतो सबमाता रामचंद्रके मुखकमलको देखतीहैं और मंगल समय जानिकर नेत्रोंके जलको रोकतीहैं ३ सुवर्णके थारोंमें आरती उतारतीहैं और बारबार सुन्दर श्यामल गात को निहारतीहैं ४ अनेक भांतिके भूषण बस्त्र मणिगण निछावरि करतीहैं आशीस देती हैंहर्षितहोतीहैं ५ कौशल्या बार बार कृपासिंधु रणधीर श्रीरामचंद्र को देखती हैं ६ हृदयमें बारबार बिचारतीहैं कि इनने लंका पति रावणको कैसे मारा ७ ये तो दोनोंमेरे पुत्र अतिही सुकुमारहैं और निशाचर महा सुभट और बड़ेबीर बलवान रहैं ॥ ८ ॥ ऐसे लक्ष्मण और सीता समेत रामचंद्रको माता देखतीहैं और परमानन्द में उनके मनमग्नहैं बार बारपुलकित गात होहो जातीहैं ॥ ८ ॥

लंकापति कपीश नल नीला । जामवंत अंगद शुभ शीला १
हनुमदादि सब बानर बीरा । धरे मनोहर मनुज शरीरा २
भरत सनेह शील ब्रत नेमा । सादर सब बरणहिं अतिप्रेमा ३
देखि नगर बासिन कीरीती । सकल सराहहिं प्रभुपद प्रीती ४
तब रघुपति सब सखा बुलाये । मुनिपद लागहु सकलसिखाये ५
गुरुबशिष्ठ कुलपूज्य हमारे । इनकी कृपा दनुज रण मारे ६
ये सब सखा सुनहुं मुनिमेरे । भये समर सागर कहं बेरे ७
ममहित लागि जन्मइनहारे । भरतहु ते मोहिं अधिक पियारे ८
दो० कौशल्या के चरणनि पुनि तिन्ह नायउ माथ ।
आशिष दीन्हि हर्षि तुम प्रियमम जिमि रघुनाथ ॥ ९ ॥

लंकापति बिभीषण कपीश सुग्रीव नल नील जामवन्त अंगद हनुमान आदि सब बानर बीरों ने मनोहर मनुष्य शरीर धरिलिये १ । २ ते सब भरत का स्नेह शील ब्रत नेम और राम के चरणों में अति प्रेम देखिकर सब मनसे सराहते हैं ३ और समस्त पुरबासियों की रीति और भगवत् प्रीति को भी देखिकर सराहते हैं ४ तब

तो राम ने सब सखाओं को बुलाया और सिखाया कि मुनिके चरणों को प्रणामकरो ५ गुरुवशिष्ठ हमारे कुलपूज्य हैं उन्ही की कृपा से मैंने निशाचरों को संग्राम में मारा है ६ हे महाराज ये सब मेरे सखा हैं संग्राम सागर में मेरेको येही जलयान हुयेहैं ७ मेरे हित के निमित्त इन ने अपने प्राण पर्य्यंत हारदिये हैं ताते मेरे को भरत से भी अधिक प्यारे हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ तिस पीछे उन सबों ने राम की माता कौशल्या के चरणों को शीश जा नवाये कौशल्या ने प्रसन्न होकर अशीश दी और कहा कि तुम मेरे रामही के समान प्यारे हो ॥ ९ ॥

दो० सुमन वृष्टिनभ संकुल भवन चलेसुख कंद ।
चढ़ीअटारिन देखहिं नगर नारि बरवृंद ॥

कंचन कलश बिचित्र संवारे । सबनिधरे रचिनिजनिज द्वारे १
बंदन वार पताका केतू । सबनि बनाये मंगल हेतू २
बीथीं सकल सुगंध सिंचाई । गजमणि रचिबहु चौकपुराई ३
नानाभांति सुमंगल साजे । हर्षि नगर निशान बहुबाजे ४
जहंतहं नारि निछावरि करहीं । देहिं अशीश हर्षउर भरहीं ५
करहिं आरतीआरति हरकी । रघुकुल कमलबिपिन दिनकरकी६
पुर शोभा संपति कल्याना । निगम शेष शारदा बखाना ७
तेउ यह चरित देखिठगि रहहीं । उमातासु गुणनर किमिकहहीं८
दो० नारि कुमुदिनी अवध सर रघुपति बिरह दिनेश ।
अस्त भये बिकसित भईं निरखि राम राकेश ॥ १० ॥

सब को मिलिकर जब आनन्द कंद श्री राम अयोध्या को पधारे ता समय फूलों की वर्षा से आकाश संकुल है और अटारियों पर चढ़ी नगर में सौभाग्यवती युवतियों के वृन्द देख रही हैं ॥ चौपाई ॥ नगर में पुरवासियों ने मंगल समय जानिकर चित्र विचित्र सुवर्ण के कलश सबों ने रचि रचिकर अपने अपने द्वारोंपर रखदिये १ बंदनवारे पताका ध्वजा सबों ने मंगल के कारण बनाये २ गलीं समस्त सुगन्धों से सींचीगईं गजमुक्ताओं के द्वारद्वार चौके पुराये गये ३ और भी अनेक भांति के सुमंगल सबोंने सजाये आनन्द के कारण नगरमें अनेक गहगहे बाजे बाजने लगे ४ जहांतहां अपने अपने द्वारोंपर युवती जन निछावरि करती हैं अशीश देती हैं हर्षित होती हैं ५ प्रणतारतिहर श्रीराम की आरती करती हैं जो श्रीराम समस्त रघुकुल कमल के आनन्द दायक सूर्य्य के समान हैं ६ सुनो हे पार्वती ता समय पुर की शोभा और संपति और कल्याण को वेद शेष शारदा बखानते हैं ७

तभी तो यह चरित्र देखिकर ठगेही से रहिजाते हैं उसको भला मनुष्य अल्पबुद्धि कैसे कहि सक्ते हैं ॥ ८ ॥ दो० ॥ नारीतो मानों कुमुदिनी रहैं और अयोध्या सरोवर रहै राम के बिरह का सूर्य्य रहै उसके संतापसे संकुचितरही जब बियोगका सूर्य्य अस्त होगया और रामरूपीशशका उदयहुआ तब उसके देखतेही प्रफुल्लित होगईं१० ॥

दो० होहिं सगुणशुभ बिबिधि बिधि बाजहिं गगननिशान ।
पुरनर नारि सनाथ करि भवन चले भगवान ॥

प्रभु जाना केकयी लजानी । प्रथम तासु गृह गयउ भवानी १
ताहिप्रबोधिबहुतसुखदीन्हा । पुनिनिजभवनगवनप्रभुकीन्हा२
कृपासिंधु जबमन्दिर गयऊ । पुर नरनारि सुखीसब भयऊ ३
गुरुबशिष्ठ द्विज लिये बुलाई । आजु सुदिन शुभ घरीसुहाई ४
सबद्विजदेहु हर्षि अनुशासन । रामचन्द्र बैठहिं सिंहासन ५
मुनि बशिष्ठ के बचन सुहाये । सुनत सकल बिप्रनमन भाये ६
कहहिं बचन मृदु बिप्र अनेका । जगअभिराम रामअभिषेका ७
अबमुनिवर बिलंब नहिंकीजै । महाराज कहँ तिलक करीजै ८

दो० तबमुनि कहेउ सुमन्त सन सुनत चले हरषाइ ।
रथअनेक गजबाजि बहु तुरत संवारे जाइ ॥ ११ ॥

अबसुन्दर मंगल शगुन होतेजातेहैं और आकाशमें दुन्दभी बाजतीहैं पुरकेसबनर नारियोंको सनाथ करिके राजमंदिर को श्रीराम पधारे ॥चौपाई॥ रामचन्द्रने कैकेयीको अतिलज्जित जाना ताते हे पार्वती प्रथम उन्हींके घरगये १ तहां कालकर्मके शिर दोष देकर उनको प्रसन्नकिया तब अपने भवन को पधारे २ जब कृपासिंधु स्वामी मंदिर में बिराजे तब सब पुरबासी सुखीहुये ३ उसी समय वशिष्ठ ने द्विजदेवों को बुलाया और कहा आज सुन्दर दिन और शुभ मुहूर्त्त है ताते सब द्विज देव प्रसन्न होकर आज्ञा कीजिये तो रामचन्द्र सिंहासन पर बैठें ५ ऐसे वशिष्ठ मुनिके सुहाये बचन सुनतेही ब्राह्मणोंके मनमें अतिही भाये ६ सब द्विजदेव प्रसन्न होकर कहने लगे हे मुनिराज रामका तिलक तो जगदानन्द दायकहै ७ अब इसमें आप बिलम्ब न करें वेगही श्रीमहाराज रामचन्द्र को राज्याभिषेक कीजिये ८ ॥ दोहा ॥ जबसब द्विज देवोंकी आज्ञा होगई तबतो वशिष्ठने सुमन्तसे कहा सो सुनतेही प्रसन्न होकर चले अनेक रथ हाथी घोड़े तुरंतही जा सजाये ॥ ११ ॥

दो० जहंतहं धावन पठै पुनि मंगल द्रव्य मंगाइ ।

हर्षिसुमन्त बशिष्ट पद पुनिशिर नायउ आइ ॥
अवधपुरी अति रुचिर बनाई । देवन सुमन वृष्टि झर लाई १
राम कहा सेवकनि बुलाई । प्रथम सखन अन्हवावहु जाई २
सुनत बचन जहंतहं उठिधाये । सुग्रीवादि तुरत अन्हवाये ३
पुनिकरुणानिधि भरत हंकारे । निजकर जटा राम निरवारे ४
अन्हवाये प्रभु तीनों भाई । भक्त बछल कृपाल रघुराई ५
भरत भाग्य प्रभु कोमलताई । शेष कोटिशत सकहिं न गाई ६
पुनि निज जटा राम बिवराये । गुरु अनुशासन पाय नहाये ७
करि मज्जन प्रभु भूषण साजे । अंग अनंग कोटि शत लाजे ८

फिर जहां तहां धावनों को भेजि मंगल द्रव्यें मंगाकर बशिष्ट के चरणों को शिर आ नवाया ॥ चौपाई ॥ अवध पुरी तो अतिही रुचिर बनाई गई और देवताओं ने फूलोंकी झरीलगादी १ रामने सेवकों को बुलाकरकहा पहिले हमारेसखाओं को स्नान कराओ २ वचन सुनतेही जहांतहां सेवक उठिदौरे सुग्रीवादिकों को तुरंतही स्नान करादिये ३ फिरतो करुणा निधान स्वामी ने भरत बुलाये और अपनेही हाथों से उनके जटा निरवारे ४ फिरितो रामचन्द्र ने तीनों भाइयों को अन्हवाया बड़ेही भक्त वत्सल और कृपाल स्वामीहैं ५ भरत के तो भाग्य और रामकी कोमलता को शतकोटि शेषभी नहीं कहि सकतेहैं ६ सबसे पीछे रामचन्द्र ने अपने जटा बिवराइ कर सुन्दर अलका वली बनाईं और गुरु देव की आज्ञा पाइकर नहाये ७ जब मज्जन करके रामचन्द ने भूषण सजे तबतो एक एक अंग की शोभा देखिकर सौ सौ करोर काम लजे ॥ ८ ॥

दो० सासुन सादर जानकिहि मज्जन तुरत कराइ ।
दिब्य बसन मणि भूषण अंगअंग सजे बनाइ ॥
राम बाम दिशि शोभित रमा रूप गुण खानि ।
देखि मातु सब हर्षित जन्म सफल निजजानि ॥
सुनु खगेश तेहि अवसर ब्रह्मा शिव मुनि वृंद ।
चढ़ि विमान आये सकल सुर देखन सुख कंद ॥

भीतर रनिवासमें बड़ेप्रेमसे सासुनने सीताको सुगन्धोंसे उबटिकर मज्जनकरवाया और दिब्यवस्त्र भूषण अंग अंग में बनाकर पहिराये जो सीता साक्षात् जगन्माता स्वयंलक्ष्मी समस्तरूपा औरगुणोंकीखानि ॥ कांतस्ते पुरुषोत्तमः फणिपतिः शय्यासनंबाहन

वेदात्माविहंगेश्वरोयवनिका माया जगन्मोहनी ॥ ब्रह्मेशादिसुरब्रजः सदयतस्त्वद्दास
दासीगणः श्रीरित्येवचनामते भगवतीब्रूमः कथंत्वांवयम् अर्थात् जिसलक्ष्मीके कांतपति
तो पुरषोत्तम नारायणहैं शेष शय्यासनहैं वेदात्मा गरुड़ बाहनहैं जगन्मोहनी माया
जिनकी यवनिका कहैं चिकहैं ब्रह्मा शिवादि समस्त देवगण पत्नियों समेत जिसके
दासदासी गणहैं श्रोऐसा जिसका सर्वोत्तम नामहै सोसीता रामके बामभागमें सोह-
तीहैं उसको देखकर माता सब हर्षित होतीहैं और अपनेअपने जन्मोंको सफलजान-
तीहैं सुनो हेगरुड़ ऐसा परम महोत्सव रामचंद्रके राज्याभिषेक का अयोध्या में
जानिकर ब्रह्मा महादेव औरसब मुनीश्वरोंके वृन्द औरसंपूर्ण देवजाति अपनेअपने
बिमानों पर चढ़िचढ़ि आनन्द कंद श्री रामचंद्रके देखनेको सब आकाशमें छागये ॥

प्रभुबिलोकिमुनिमन अनुरागा । तुरतदिव्य सिंहासन मांगा १
रबिसम तेजसोबरणि न जाई । बैठे सकल द्विजन्ह शिर नाई २
जनक सुता समेत रघुराई । पेषि प्रहर्षे मुनि समुदाई ३
वेद मंत्रतब द्विजनि उचारे । नभ सुर मुनिजय जयति पुकारे ४
प्रथमतिलकबशिष्ठमुनि कीन्हा । पुनिबिप्रन्हकहंआयसुदीन्हा ५
सुत बिलोकि हरषीं महतारीं । बार बार आरती उतारीं ६
बिप्रन्ह दानबिबिधिबिधि दीन्हे । याचकसकलअयाचककीन्हे ७
सिंहासन पर त्रिभुवन साईं । देखि सुरन्ह दुंदुभी बजाईं ८

रामचंद्रकी शोभा देखिबशिष्ठके मनमें प्रेमउमगा तुरंतही दिव्यसिंहासन मंगाया
१ सूर्य्यके समान जिसका तेजहै उसपर श्री रामचंद्र सबद्विज देवोंको प्रणाम करिके
बिराजे २ सीता समेत श्रीरामचंद्रको सिंहासन पर बिराजमान देखिकर सब मुनि
गनअति हर्षित होगये ३ तबतो द्विजदेव वेदोंके मंच पढ़नेलगे और आकाशमें सुर
मुनि जयजय पुकारते हैं ४ पहिला तिलकतो कुलगुरु वशिष्ठने अपने हाथ से राम
सीताके किया फिरिसब ब्राह्मणोंको आज्ञादेदी ५ राम सीताको देखिकर माता सब
हर्षित होगईं उन्होंने बारबार आरती उतारीं ६ ब्राह्मणोंको भांतिभांतिके दानदिये
और मंगतेसब अयाचक करिदिये ७ अबतो जयलोक नाथ अपने स्वामी रामचंद्रको
राज्यासन पर बिराजमान देखिकर देवताओं,ने दुन्दुभी बजाईं ॥ ८ ॥

छं० नभदुन्दुभीबाजहिंबिपुलगंधर्बकिन्नरगावहीं ।
नाचहिंअप्सरावृंदपरमानंदसुरमुनिपावहीं ॥
भरतादिअनुजबिभीषणांगदहनुमदादिसमेतते ।
गहिछत्रचामरब्यजनधनुअसिचर्मशक्तिबिराजते ॥

श्रीसहितदिनकरवंशभूषणकामबहुछबिसोहहीं ।
नवअंबुधरबरगात अंबरपीतमुनिमनमोहहीं ॥
मुकुटांगदादिबिचित्रभूषणअंगअंगनिप्रतिसजे ।
अंभोजनयनबिशालउरभुजधन्यनरनिरखंतिजे ॥

आकाश में देवता दुंदुभी गह गही बजाते हैं गंधर्वकिन्नर गाते हैं अप्सराओं के वृन्द नाचतेहैं सुरमुनि सब परम आनंद पारहे हैं ॥ लक्ष्मण भरत शत्रुघ्न बिभीषण, अंगद, हनूमान नलनील छत्र चमर व्यजन धनुष असि ढाल शक्ति शूल लिये बिराज ते हैं ॥ श्रीसीता समेत दिनकर वंश भूषण श्रीरामचंद्र कोटिकाम की शोभा से छये हैं नवीन सजल मेघ पटलके समान सुन्दर श्यामल अंगहैं तापर दामिनी के वर्ण पीतांबर मुनि जनों के भी मनको मोहता है ॥ मस्तक पर मुकुट बिराजता है कानों में मकराकृत कुंडल सोहते हैं भुजाओंमें भुज बंद कटकादि कंठमें विचित्र हार रा ते हैं कमल से सुन्दर सुहाये नेत्र हैं हृदय भुजा अति विशाल हैं धन्य भाग्य तिन के जो ऐसी छवि को देखि रहे हैं ॥

दो० यह शोभा समाज सुख कहत न बनै खगेश ।
बरणहिं शारद शेष श्रुति सो रस जान महेश ॥
भिन्न भिन्न अस्तुति करि गे सुर निज निज धाम ।
बंदी वेष धरि वेदतब आये जहं श्रीराम ॥
प्रभु सर्वज्ञ कीन्ह अति आदर कृपानिधान ।
लखा न काहूं मर्म कछु लगे करन गुण गान ॥

यह शोभा यह समाज यह सुख हे गरुड़ कहते नहीं बनता है शारदा शेष वेद वरणन करतेहैं परंतु इस रस को जानते महेश ही हैं ॥ अपनी अपनी अस्तुति करिके जब सब देवता अपने अपने लोकों को गये तब तो वंदीजनों का वेष धारण करिके चारों वेद श्री रामचंद्र के पास आये ॥ सर्वज्ञ शिरोमणि रामने उनका अति आदर किया यह मर्म किसी ने नहीं लखा स्वामी के गुणोंका गान करने लगे ॥

छं० जयसगुण निर्गुण ब्रह्मरूप अनूपभूप शिरोमणे ।
दशकंधरादि प्रचंड निशिचर प्रबलखल भुजबलहने ॥
अवतारनर संसारभार बिभंजि दारुण दुखदहे ।
श्री जयप्रणत पाल कृपालप्रभु संयुक्तशक्ति नमामिहे ॥ १ ॥
तवबिषममाया बशसुरासुर नागनर अगजगहरे ।

भवपंथभ्रमत भ्रमित दिवसनिशि कालकर्म गणनि भरे ॥
येनाथकरि करुणा बिलोके त्रिबिधिदुखते निर्बहे।
रा भवखेदछेदन दक्षहमकहं रक्षराम नमामिहे ॥ २ ॥

हेराज राजेन्द्र अनूप नर राज रूप धारण किये जो आप सगुण निर्गुण परात्पर ब्रह्म राम आपकीजय रावणादिक जो प्रचण्ड निशाचर रहे ते आपने अपनी भुजाओं केवलसे नाश करिदिये नर अवतार लेकर संसारका भार उतारि करसबके दारुण दुःख दूरि किये जय प्रणत पाल जयकृपाल स्वामी आपको हम सीता समेत प्रणाम करतेहैं १ आप की बिषम माया के वस समस्त सुर असुर नाग मनुष्य स्थावर जंगम इस संसारचक्र में भ्रमते हैं और भ्रमित हैं काल कर्म गुण स्वभाव से भरे हैं उनमें से जिनको आपहीने अहेतुकी कृपा कटाक्षसे देखा तेई त्रिबिधि दुखकहे जन्मजरा मृत्यु से छूटेहैं ऐसे भवखेद छेदन में कुशल हे राम हमारी रक्षा करो ॥ २ ॥

छं० येज्ञानमान बिमत्ततव भवहरणि भक्तिनआदरी।
तेपाइसुर दुर्लभपदारथ परतहम देखतहरी ॥
बिश्वासकरि सबआश परिहरि दासतव येहोइरहे।
मा जपिनाम तवबिनुश्रमतरत भवनाथसो स्मरामहे ॥ ३ ॥
येचरणशिव अजपूज्यरज शुभपरसि मुनिपत्नीतरी।
नखनिर्गता मुनिबंदिता त्रैलोक पावनि सुरसरी ॥
ध्वजकुलिश अंकुशकंज युतबनफिरत कंटककिनलहे।
य पदकंजद्वंद मुकुन्दराम रमेशनित्य भजामिहे ॥ ४ ॥

येकेई ज्ञानके अभिमानमें अति उन्मत्त होकर भवबंदि बिमोचनी आपकी परा भक्ति प्रपत्ति को नहीं आदरते हैं ते सुरदुर्लभ पदज्ञान को पाकर भक्ति के निरादरसे फिरि उस पदसेभी भ्रष्ट होजाते हैं हम इसके साक्षीहैं येन्येरबिंदाक्षविमुक्तमानिनस्त्वयीअस्तभावादविशुद्धबुद्धय: ॥ आरुह्यकृच्छ्रेनपरंपदंततोपतंत्यधोनादृतयुष्मदंघ्रय: अर्थात् हेअरबिंदाक्ष ये आपके अभिमुखोंसे अन्य अपने को केवल ज्ञानहीके अभिमान से बिमुक्त मानी हैं और तुम्हारे में भावका अभावहै ते अतिअशुद्ध बुद्धीहै बड़े कष्टसे परंपद ज्ञानको पाकरभी तुम्हारे चरणों के निरादर से फिर गिरपरते हैं और जो दृढ़बिश्वास करिके कर्मोपासन ज्ञानत्रिकांड की आशाको छोड़ि करके केवलआपहीके होरहतेहैं ते कदापि नहींगिरतेहैं आपके नामहीं को जपिकर अनायास संसारसमुद्रके पारहोजाते हैं तथानतेमाधवतावकाःक्वचित्भ्रश्यंतिमार्गात्त्वयिबद्धसौहृदाः त्वयाभिगुप्ता बिचरंतिनिर्भया बिनायकानीकपमूर्द्धसुप्रभो अर्थात् जैसे अन्यमार्ग से गिरतेहैं तैसे

आपके प्रपन्न जनकदापि मार्ग से नहीं गिरते हैं क्योंकि आप करिके अभिरक्षित हैं और आपहीमें सौहृदबांधे हैं तातें उनका विघ्नभी कोई नहीं करसकता है समस्त बिनायक कहे विघ्नकर्त्ताओं के सेनापतियों के शिरपर निर्भय बिचरते हैं ॥ ३ ॥

छं० अव्यक्तमूलमनादितरुत्वचचारिनिगमागमभने ।
षटकन्धशाषापंचबिंशअनेकपर्णसुमनघने ॥
फलयुगुलमधुकटुबिपुलबेलअकेलजेहिआश्रितरहे ।
पल्लवतफूलतनवलनितसंसारबिटपनमामिहे ॥ ५ ॥

ये आपके युगुल चरणजो देवदेव महादेव और जगत्पिता ब्रह्मा के भी पूज्य हैं जिन के पावन रज को परसि कर अहिल्या महा पातक से छूटि गई और जिन युगुल चरणों के नखों से मुनिजन बंदित त्रयलोक पावनी श्रीगङ्गा निकसी है और सुन्दर ध्वजा वज्र अंकुश कमलके चिन्हों से चिन्हित है और बनमें फिरते कण्टकों कोभी उद्धार किया तिन आपके चरण कमल के युगुल को हेरामहेरमापति हमतो निरंतर भजते हैं अर्थात् सदा आप के हृदय मंत्र कोही जपा करते हैं ४ अव्यक्त मूल प्रकृति तो जिसकी मूलहै अनादि बृक्षहै जाग्रत सुप्त सुसुप्ति तुरीय चारों अवस्था त्वचाहैं क्षुधा पिपासा जन्ममृत्यु शोक रोग छवोदेहैं पचीसो तत्व शाखाहैं पर्ण सुमन अपारहैं सुख दुख मीठे करुये दोप्रकारके फलहैं ईश्वर एक थांवराहै जिसके आश्रित रहताहै नित्य पल्लवताहै नित्य फूलता फरताहै नित्य नवीनही रहता है ऐसेसंसार बृक्ष विस्वरूप आपको हम नमतेहैं भागवतमें ऐसा कहा है एकायनोसोदिफलस्त्रिमूलश्चतुःरसःपंचविधःषडात्मा सप्तत्वगष्टबिटपनवाक्षो दशच्छदीद्विखगेह्यादि वृक्षः अर्थात् एक मूल प्रकृति तो इसका अयन थांवराहै सुखदुख दोफलहैं सत रज तम तीनि मूलहैं अर्थ धर्म काम मोक्ष चारि रसहैं शब्दस्पर्श रूप रसगन्ध पांच हैं क्षुधा पिपासा जन्म मृत्यु शोक रोग षडूर्मी हैं चर्म मांस रुधिर अस्थि नख मज्जा शुक्र सातत्व चाहैं पृथिवी जल तेज वायु आकाश मन बुद्धि अहंकार अष्टधा बिटप हैं श्रोत्र रंध्र नेत्ररंध्र नाशिकारंध्र मुख शिश्न गुदा नव छिद्र हैं श्रोत्र त्वचा चक्षु रसना घ्राण कर चरण वाक् गुदलिंग दशस्कन्धहैं जीव ईश्वर दोपक्षी इसपर निवास करते हैं एक जीवात्मा इसके फलोंको भोगताहै दूसरा परमात्मा साक्षीहै ॥ ५ ॥

येब्रह्मअजमद्वैतमनभवगम्यमनपरध्यावहीं ।
तेकहहुजानहुनाथहमतवसगुणयशनितगावहीं ॥
करुणायतनप्रभुसद्गुणाकरदेहुयहबरमांगहीं ।
मनवच
दो० सबके देखतबिकारतजितवचरणहमअनुरागहीं ॥ ६ ॥
...नी कीन्ह उदार ।

अन्तरध्यान भये पुनि गये ब्रह्म आगार ॥
बयनतेय सुनि शंभु तब आये जहं रघुवीर ।
बिनय करत गद गद गिरा पूरित पुलक शरीर ॥ ६ ॥

जो हम साक्षात् आपके मुख कमलसे उत्पन्न हुयेहैं तिनसेभी अधिक बुद्धि मान येकोई आपकेअज अद्वैत अनुभव गम्यमन बुधि बाणीसे परे ब्रह्मरूपको ध्यावते हैं तेई कहो और तेई जानो हम तो जो आपने अपने सौलभ्य गुण से हमारे सुलभता के लिये सगुण रूप धारण कियाहै उसीके परम पावन यशको सर्बत्र गाया है और गातेहैं ताते हे करुणायतन हेसद्‌गुणाकर स्वामी जो हमबर मांगते हैं पर हमारे को या समय दीजिये आप को राज्य मिला है मन कर्म बचन से निर्ब्य-लीक होकर आपके चरणोंहीं में हमप्रेम किया करैं ६ ॥ दोहा ॥ सबके देखतेदेखते बेदों ने ऐसी उदार स्तुति रामचन्द्र की करी फिर अंतरध्यान होकर ब्रह्म लोक को चले गये तबतो हे गरुड़ श्री महादेव रामचन्द्रके पासआये और पुलकावली से पूरित होकर गद गद बाणीसे बिनती करने लगे ॥ ६ ॥

छं० जयराम रमारमणंसमनंभवतापभयाकुलपाहिजनं ।
अवधेशसुरेशरमेशबिभोशरणागतमांगतपाहिप्रभो ॥
रा दशशीशबिनाशनबीशभुजाकृतदूरिमहामहिभूरिरुजा ।
रजनीचरवृन्दपतंगरहेशरपावकतेजप्रचंडदहे ॥ १ ॥
महिमंडलमंडनचारुतरंधृतशायकचापनिषंगबरं ।
मदमोहमहाममतारजनीतमपुंजदिवाकरतेजअनी ॥
मा मनजातकिरातनिपातकियेमृगलोगकुभोगशरेणहिये ।
हतिनाथअनाथनपाहिहरेबिषयाबनपामरभूलिपरे ॥ २ ॥
बहुरोगबियोगनिलोगहयेभवदंघ्रिनिरादरकेफलये ।
भवसिंधुअगाधपरेनरतेपदपंकजप्रेमनजेकरते ॥
य अतिदीनमलीनदुखीनितही जिन्हकेपदपंकजप्रीतिनहीं ॥
अवलंबभवन्तकथाजिनकेप्रियसंततसंतसभातिनके ॥ ३ ॥

हेराम हेरमापति आपकी जय संसार की तापकी भयसे ब्याकुल जो जीव उनकी रक्षा कीजिये क्योंकि उसकेशमन केवल आपहीहो हेअवधेश सुरेश हे समर्थ स्वामी हम आपकी शरण आये हैं हमारी हे प्रभु रक्षा कीजिये ॥ आपने रावणके दशशिर बीश भुजा काटिकर पृथिवी का बड़ा रोग दूर करदिया राक्षसों के वृन्द सलभाके

समान रहैं ते आपने बाणों की प्रचण्ड अग्नि से भस्म कर दिये १ महि मंडल के भूषण हो अति सुन्दरहौ धनुष बाण निषंग धारण कियेहो मदमोह ममता रात्रिके दिवाकर हो मन जात काम किरातने जीव रूपी मृगों को कुभोगोंके बाणोंसे उनके हृदय बेधि दिये हैं उनको मारकर दीनोंकी रक्षा करो बिषयके बनमें बिचारे भूल कर आपरेहैं २ अनेक रोग बियोगोंने जीवजोनाश कियेहैं आपके चरणोंके निरादर का यह फलहै अगाध संसार सागर में ते जीव परेहैं जो आप के चरण कमलों से प्रेम नहीं करतेहैं अतिदीनहैं मलीनहैं नित्य दुखीहैं जिनको आप के चरण कमलोंमें प्रीति नहींहै जिनके आपकी कथाही अवलम्बहै तिनके संतोंहीं का समाज अतिही प्रियतमहै ॥ ३ ॥

नहिंरागनरोषनमानमदातिनकेसमबैभववाबिपदा ॥
यहितेतबसेवकहोतमुदामुनित्यागतयोगभरोससदा ।
करिप्रेमनिरंतरनेमलियेपदपंकजसेवतशुद्धहिये
न सनमाननिरादरआदरहींसबसंतसुखीबिचरंततमही ॥ ४ ॥
मुनिमानसपंकजभृंगमयेरघुबीरमहारणधीरभजे ।
तवनामजपामिनमामिहरीभवरोगमहामदमानअरी ॥
मः गुणशीलकृपापरमायतनंप्रणमामिनिरंतरश्रीरमणं ।
रघुनन्दनिकन्दयद्वंदघनंमहिपालबिलोकयदीनजनं ॥५॥

दो० बार बार बर मागहूं हर्षि देहु श्री रंग ।
पदसरोज अनपायनी भक्ति सदासतसंग ॥
बरणि उमापति राम गुण हर्षि गये कैलास ।
तवप्रभु कपिन्ह दिवाये सबबिधि सुखप्रद बास ॥ १३ ॥

नउनको किसीपर रागहै न द्वेषहै न मानहै न मदहै और उनके बैभव और बिपत्ति दोनों समानहैं इसीसे तुम्हारे सेवक सदा प्रसन्न रहते हैं और योगादि का भी भरोसा नहीं रखतेहैं सदा दृढ़नेम से आपहीपर प्रेम करतेहैं और शुद्ध हृदयसे आपही के चरण कमलों की सेवा करते हैं मान और अपमानको समानहीं आदरते हैं सदा प्रसन्न पृथिवीपर बिचरतेहैं ४ मुनिजनोंके हृदय कमल के आप जो भृंगहो हेरघुबीर हेमहा रणधीर तिन आप को हम भजतेहैं तुम्हाराही नाम जपतेहैं तुम्हीं को प्रणाम करतेहैं आपही संसार रोग मान मद के हरताहो हे रघुनन्दन इसशीत उष्ण सुख दुःखादि द्वन्द्व का निरमूलकरो हे राजराजेन्द्र हम दीनजनोंकीओर देखिये ५ ॥ इस प्रकारपांचमुख शिवनेपांच छन्दोंसे स्तुतिकरी ॥ दोहा ॥ बारंबार आपसे बरमांगताहूं

सोहे श्रीरंग लक्ष्मीपति स्वामी मेरे को प्रसन्न होकर दीजिये अपने चरण कमलों में तो अनपायनी भक्ति और आपके चरणों के समाश्रित भागवतों का सदा सतसंग ॥ इस प्रकार श्रीशिवजी रामचन्द्र के गुणोंको बर्णन करिके प्रसन्न मन जब कैलाश को गये तब रामचन्द्र ने वानरों को सुखदायक बास दिवाये ॥ १३ ॥

सुनुखगेश यह कथा पावनी । त्रिबिधि तापभव दाप दावनी १
महाराज कर शुभअभिषेका । सुनत लहहिं नरबिरतिबिवेका २
जेसकामनरसुनहिं जेगावहिं । सुखसंपतिनानाबिधिपावहिं ३
सुरदुल्लभ सुख करिजगमांहीं । अंतकाल रघुपति पुरजाहीं ४
खगपति रामकथामैं बरणी । स्वमति बिलाशत्रासदुखहरणी ५
नित नव मंगल कोशलपुरी । हर्षित रहहिं लोग सब कुरी ६
नितनवप्रीतिरामपदपंकज । सेवहिं सदाजिनहिं शिवमुनिअज ७
मंगन बहु प्रकार पहिराये । द्विजन दान नाना बिधि पाये ८
दो० ब्रह्मानंद मगन कपि सब कहं प्रभुपद प्रीति ॥
जात न जाने दिवस निशि गये मास षटबीति ॥ १४ ॥

सुनों हे गरुड़ यह मनोहर कथा लोकपावनी है दैहिक दैविक भौतिक तीनों प्रकार की ताप और संसार के दर्पकी नाश करताहै १ इसमें श्री महाराज रामचंद्र का राज्याभिषेकहै इसके सुनतेही अकाम श्रोता तो ज्ञान बैराग्य भक्ति पाते हैं २ और जोसकाम जन सुनते गावतेहैं तेनाना प्रकारके सुखसंपति पातेहैं ३ यहांतो देव दुर्लभ सुख भोगतेहैं और देहावसानमें बैकुंठ को जातेहैं ४ हेगरुड़ यहत्राश दुख की हरणी राम कथा मैंने तुमसे अपनी बुद्धि के अनुसार कही ५ जबसे अयोध्यामें रामराजा हुये तबसे नित नये मंगल होतेहैं औरसब जातिके लोगहर्षित रहतेहैं ६ सबकी नित्यनई प्रीति रामके चरण कमलों में होतीहै जिन चरणोंको सदामहादेव मुनि और ब्रह्मा सेवन करते हैं ७ मांगने सब पहिराये गये और द्विजदेवों ने नाना बिधिके दान पाये ८ ॥ दोहा ॥ ब्रह्मानन्द में छके सब बानर रीछ राम प्रेम से उनको दिन रात जाते जानि न परे छःमास बीति गये ॥ १४ ॥

बिसरे गृह सपनेहुं सुधि नाहीं । जिमिपरद्रोह संत मनमाहीं १
तबरघुपति सब सखा बोलाये । आइ सबन सादर शिरनाये २
प्रेमसमेत निकट बैठारे । भक्त सुखद मृदु बचन उचारे ३
तुमअति कीन्हि मोरि सेवकाई । मुखपर केहिबिधिकरौं बड़ाई ४

तातेतुममोहिंअति प्रियलागे। ममहित लागिभवनसुखत्यागे ५
अनुज राज संपति बैदेही। देह गेह परिवार सनेही ६
सबममप्रियनहिंतुमहिंसमाना। मृषान कहौं मोर यह बाना ७
सबके प्रिय सेवक यहनीती। मोरे अधिक दासपर प्रीती ८
दो० अबगृह जाहु सखा सब भजेहु मोंहि दृढ़ नेम।
सदा सर्बगत सर्बहित जानि करेहु अतिप्रेम॥ १५॥

घरतो उनको ऐसे बिसरि गये स्वप्न में भी सुधि नहीं आतीहै जैसे पराया द्रोह संतोंके मनमेंनहीं होताहै १ तबतो रामचन्द्रने सबसखाओंको बुलाया उन्होंने आकर शीशनवाया २ बड़ी प्रीतिसे निकट बैठारा और भक्त सुखदायक स्वामीने अतिकोमल वचन कहे ३ सुनो हेसखाओ तुम सबने मेरी अति सेवकाई करीहै मुखपर प्रशंसा नहीं कर सकताहूं ४ और तातें तुम मेरेको अतिही प्यारेलगे कि मेरे हितके लिये अपने घरोंके सुख त्यागिदिये ५ मेरेतीनितो छोटेभाई हैं चक्रवर्ती राज्यहै संपतिहै सीताहै देहहै घरहै परिवारहै मित्रहैं येसबमेरे समान प्यारेहैं तुम्हारे समानहीहै मैं कभी मृषानहीं कहताहूं यह मेरा बानाहै ६।७ अनृतंनोक्तंपूर्बमेनचवक्ष्ये कदाचन: सेवक सबहीको प्यारे होतेहै यहनीतिहैं परंतु अधिक प्रीति सेवकों परकिसी की नहींहोतीहै अधिक प्रीति सबकी समीपियों पररहतीहै मेरेअधिक प्रीतिदासोंहीं परहै ८॥ दोहा॥ परंतु अबआप सब अपने अपने घरोंको जाओ अबसेरि होतीहोगी मैंतो सर्वगत सर्बहितहूं ऐसा जानकर प्रेमकरे रहना॥ जानत प्रीतिरीत रघुराई नातेसबहाते कर राखत रामसनेह सगाई। नेह निबाहि देहतजि दशरथकीरतिअचल चलाई। ऐसेहु पितुते अधिक गृद्धपर ममता गुणगरुआई। इत्यादि औरभीजानो १५॥

सुनि प्रभु बचन मग्न सब भये। को हमकहां बिसरि तनगये १
एकटक रहे जोरिकर आगे। कहिनसकहिं कछुअतिअनुरागे २
परम प्रेम तिन्हकर प्रभु देखा। कहा बिबिधिबिधि ज्ञानबिशेषा ३
प्रभुसन्मुख कछु कहैं नपारैं। पुनिपुनि चरण सरोज निहारैं ४
तब प्रभु भूषण बसन मंगाये। नानारंग अनूप सुहाये ५
सुग्रीवहिं प्रथमहिं पहिराये। भरत बसन निजहाथ बनाये ६
प्रभुप्रेरित लक्ष्मण पहिराये। लंकापति रघुपति मन भाये ७
अंगद बैठ रहा नहिं डोला। प्रीति देखि प्रभुताहिन बोला ८
दो० यामवंत नीलादि सब पहिराये रघुनाथ।

उरधरि रामरूप सबचले नाय पद माथ ॥ १६ ॥

श्री रामचंद्र के बचन सुनतेही सब बानर प्रेम में मग्न होगये यह भी नहीं जानते हैं कि हम कौन हैं और कहां हैं ऐसे शरीर बिसरिगये १ रामचंद्र के आगे हाथ जोरि कर एकटक रहिगये अति प्रेम बिह्वल कुछ कहि नहीं सकते हैं २ जब रामचंद्र ने उन का परम प्रेमदेखा तब तो अनेक भांति का बिशेष ज्ञान उन से कहा ३ स्वामी इच्छा देखिकर कुछ कहि तो सकते नहीं हैं बारबार उन के चरण कमलों हीं को देखते हैं ४ तबतो रामचन्द्र ने आभूषण और रंग रंग के अनूपबस्त्र मंगाये ५ प्रथमहिं तो भरत ने अपने हाथों से चुनिकर सुग्रीव को पहिराये ६ फिरि स्वामी की आज्ञा से लक्ष्मण ने लंका पति बिभीषण को पहिराये ७ अंगद चुपकेबैठे रहे कुछ भी न बोले प्रीति देखिकर स्वामी ने उनको न बुलाया ॥ ८ ॥ दोहा ॥ यामवन्त और नल नील आदि सब बानरों को रामचंद्र ने पहिराया ते सब रामचंद्र के चरणों को प्रणाम करिके चलि दिये ॥ १६ ॥

दो० तब अंगद उठिनाइ शिर सजल नयन करजोरि ।
अति बिनीत बोला बचन मनहु प्रेम रसबोरि ॥
सुनु सर्बज्ञ कृपा सुखसिंधो । दीन दयाकर आरत बंधो १
मरती बार नाथ मोहिं बाली । गयो तुम्हारेहि कोंछे घाली २
अशरणशरण बिरद संभारी । मोहिजनि तजहु भक्त भय हारी ३
मोरे प्रभु तुमगुरु पितु माता । जाउं कहांतजि पद जल जाता ४
तुम्हहिं बिचारि कहहु नरनाहा । प्रभुतजि भवन काजममकाहा ५
बालक ज्ञान बुद्धिबल हीना राखहु शरण नाथ जन दीना ६
नीचटहल गृह केसबकरिहौं । पद पंकज बिलोकि भवतरिहौं ७
अस कहिचरण परेउ प्रभुपाहीं । अबजनि नाथकहहु गृहजाहीं ८
दो० अंगद बचन बिनीत सुनि रघुपति करुणासींव ।
प्रभु उठाइ उर लायउ सजल नयन राजीव ॥ १६ ॥

जब सब बिदा हो चुके तब तो उठिकर अंगद ने रामचंद्र को प्रणाम किया सजलनेत्र होगये हाथ जोरिकर अति दीन बचन प्रेमकेभरे बोले ॥ चौपाई ॥ सुनो हे सर्बज्ञ हे कृपा सुखसिंधु हे दीन दयाकर हे आरतंजन बंधु हे नाथ मरते समय मेरा पिता बालि मेरे को आप की गोद में डारि गया है १ । २ मैं अशरण हूं आप अशरण शरण हो इस बिरदको संभारि कर हे भक्त भय हारी स्वामी आप मेरा

त्याग मतकरो २ मेरे तो हो स्वामी आपही गुरुहो आपही पिताहो आपही माता हो मैं आपके चरणकमलों को छांडिकहां जाऊं४ आपहीविचारिकर हे नरनाथ स्वामी कहोकि आपकोछोडिकर घरमेंमेराकौ नकाम है ५ मैं तो बालकहूं ज्ञानबुद्धि बलहीन हूं मैसे दीनको आपही अपने शरणराखिये ६ आपके घर की नीचटहल सब किया करूंगा और आप के चरण कमलों को देखि देखि संसार के पार हो जाऊंगा ७ ऐसे कहि कर अंगद राम के चरणों पर गिरिपरे और बोले कि हे स्वामी अब तो मेरे को घर जानामति कहो ॥ ८ ॥ दोहा ॥ ऐसे अंगदकेदीनवचन करुणा सींवर.मचंद्रने सुनिकर हृदय से उठाकर लगा लिये औ नेत्र सजल होगये ॥ १६ ॥

दो० निज उर माल बसन मणि बालि तनय पहिराइ ।
बिदा कीन्ह भगवान तब बहु प्रकार समुझाइ ॥

भरत अनुज सौ मित्र समेता । पठवन चले भक्त कृत चेता १
अंगद हृदय प्रेम नहिं थोरा । फिरि फिरि चितव रामकीओरा२
प्रभुरुख देखि बिनय बहुभाखी । चलेउ हृदयपद पंकजराखी ३
अतिआदर सब कपिपहुंचाये । भाइन्ह सहित भरतफिरिआये४
तब सुग्रीव चरण गहि नाना । भांति बिनय कीन्हीं हनुमाना५
दिनदश करि रघुपतिपद सेवा । पुनि तब चरण देखिहौंदेवा ६
पुण्य पुंज तुम पवन कुमारा । सेवहु जाइ कृपा आगारा ७
अस कहि कपि पति चले तुरंता । अंगद कहा सुनहु हनुमंता ८

अपनेही हृदयकी माला और अपनेही वस्त्र भूषण सब अंगद को पहिराये और अनेक भांति से राज्यधर्म समुझाइ कर रामचन्द्र ने अंगद को भी बिदा किया ॥ चौपाई ॥ अबतो भरत अनुज शत्रुहन सौ मित्र लक्ष्मण समेत सब के पहुंचाने को चले भक्त कृत चेत अर्थात् जिन भरत ने राम वियोग के ओखे से भक्त जनों को राम प्रेम चेतरा दिया १ अंगद के हृदय में बड़ा प्रेम है तातें लौटि लौटि कर राम की ओर देखते हैं २ स्वामी का रुख देखि बड़ी बिनती करि आज्ञा पाइचले३ बड़े आदर समेत बानरों को दूर तक पहुंचा कर भाइयों सहित भरत जब फिरि आये ४ तब सुग्रीव के चरण गहिकर बहुत भांति की बिनती हनुमान ने करी ५ कि हे महाराज कुछ दिन राम के चरणोंकी सेवा करिके फिरि आपकेचरण आ देखूंगा ६ सुग्रीव ने कहा हे हनुमान तुमतो पुण्य पुंज हो सदा कृपाल स्वामीही कासेवन करो ७ ऐसे कहि कर जब सुग्रीव चलि दिये तबतो अंगद ने कहा हे हनुमानमेरा संदेश सुनेजाओ ॥ ८ ॥

दो० कहेहु दण्डवत प्रभु सन तुमहिं कहहुं कर जोरि ।
बार बार रघुनायकहिं सुरति करायहु मोरि ॥
अस कहि चले बालि सुत फिरि आये हनुमन्त ।
तासु प्रीति प्रभु सन कही मग्न भये भगवन्त ॥
कुलिशहुं चाहि कठोर अति कोमल कुसुमहु चाहि ।
चित खगेश अस राम कर समुझि परै कहु काहि ॥ १८ ॥

मैं तुम से हाथ जोरिकर कहता हूं कि जाकर स्वामी रामचन्द्र को मेरा दंडवत् प्रणाम कहना और सदा सर्बदा स्वामी को मेरा स्मरण कराते रहना ॥ ऐसे कहिकर अंगद तो बिदा हुये और हनुमान राम के पास फिरि आये जो अंगदकी प्रीतिहनुमान ने स्वामी से कही सुनतेही राम अंगद के प्रेम में मग्न होगये ॥ जो रामचन्द्र का चित्त बज्र से भी कठोर और पुष्पसे भी कोमलहै फिरि ऐसा चित रघुनाथ स्वामीका हेगरुड़ भला कौन की समुझमें आसक्ताहै ॥ १८ ॥

पुनिकृपालु लियेबोलिनिषादा । दीन्हे भूषण बसन प्रसादा १
जाहुभवन ममसुमिरन करेऊ । मन क्रमबचन धर्मअनुसरेऊ २
तुम मम सखा भरत सम भ्राता । सदा रहेउ पुर आवत जाता ३
बचन सुनत उपजा सुख भारी । परेउ चरण भरि लोचन बारी ४
चरणनलिनउरधरिगृहआवा । प्रभुस्वभावपरिजनहिं सुनावा ५
रघुपतिचरितदेखिपुरबासी । पुनिपुनि कहहिं धन्यसुखरासी ६
राम राज्य बैठहिं त्रय लोका । हर्षित भये गये सब शोका ७
बैर न कर काहू सन कोई । राम प्रताप बिषमता खोई ८
दो० बरणाश्रम निजनिज धरम निरत बेद पथ लोग ।
चलहिं सदापावहिं सुखहिं नहिंभय शोकनरोग ॥ १९ ॥

फिरितो कृपालु रामस्वामी ने निषाद गुहकोभी बुलालिया उसको भी भूषण बस्त्र प्रसाद दिया और कहा १ बहुत काल हुआ अब तुमभी घरजाओ और तन मन बचनसे धर्महीका आचरण कीजियो२ तुमतो हे सखा भरतके समान मेरेप्यारे होसदा नगर में आते जाते बने रहना ३ ऐसे मनोहर स्वामी के बचन सुनतेही गुह को बड़ा आनन्द हुआ नेत्रों में जल भरि कर रामके चरणों पर गिरपरा ४ रामचन्द्रके चरण कमलों को हृदय में धारणकर अपने घर शृंगबेर पुरमें आया और रामस्वामी

का सुन्दर स्वभाव अपने परिवार को सुनाया ५ अबतो रामचन्द्रके नित्यनवीन चरित्रों को देख अयोध्या वासी का धन्यबाद करतेहैं ६ जबसे राम राज्य परबैठे तबसे तीनोंलोक के शोक जाते रहेसब आनन्दित होगये ७ बैरतो कोई किसीके साथ करताही नहींहैं राम के प्रताप ने विषमता सबके मनसे दूर करदी ८ ॥ दोहा ॥ ब्राह्मण,क्षत्री, वैश्य शूद्र चारों तो वर्ण ब्रह्मचारी, गृहस्थ, वाणप्रस्थ, संन्यासी चारों आश्रम अपने अपने धर्मों में निरत रहते हैं और वेद बिहित मार्ग पर चलते हैं सदासर्बदा सबलोग सुख पातेहैं न किसी को शोकहै न भयहै न रोग है ॥ १९ ॥

दैहिक दैविक भौतिक तापा । राम राज्यनहिं काहुहिं ब्यापा १
सब नर करहिं परस्परप्रीती । चलहिं स्वधर्मनिरत श्रुतिनीती२
चारिहु चरण धर्म जग माहीं । पूरि रहा सपनेहु अघ नाहीं ३
राम भक्ति रत नर अरु नारी । सकल परम गतिके अधिकारी ४
अल्प मृत्यु नहिंकवनिहु पीरा । सब सुन्दर सब बिरुज शरीरा५
नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना । नहिकोउअबुध नलक्षणहीना६
सब निर्दंभ धर्म रत धनी । नर अरु नारि चतुर सब गुनी ७
सब गुणज्ञ सब पंडित ज्ञानी । सबकृतज्ञ नहिं कपट सयानी ८
दो० रामराज्य नभगेश सुनु सचराचर जगमांहि ।
कालकर्म स्वभाव गुण कृतदुख काहुहिं नांहि ॥ २० ॥

दैहिक कहैं जोताप देहजन्य हो दैविक वहैं जो प्रारब्ध जनितहो भौतिक जो किसी प्राणीसे हो येतीनों ताप राम राज्य में किसी को नहीं हुई १ सब लोग परस्पर प्रीति करतेहैं और वेद की नीति के अनुसार सब अपने२ धर्मोंपर चलतेहैं २ सत्य, शौच, तप, दान इन चारों चरणोंसे परिपूर्ण धर्म संसार में पूरित होरहाहै पाप का तो कहीं स्वप्न में भी लेश नहीं रहा ३ सब नर और नारी राम भक्तिपरायण हुये ताते सबके सब मोक्षके अधिकारी हुये ४ किसीको अल्पमृत्यु न हुई किसीको किसी प्रकार की पीरा नहुई सब रूपवन्त और आरोग्य शरीरहुये ५ नकोई दरिद्री हुआ न दुखी हुआ न दीनहुआ नकोई पंडित हुआ न भगवत चिन्हहीन हुआ ६ सब अदम्भ वेद विहित धर्मयुक्त धनी हुये सब नरनारी चतुर और गुणवान हैं ७ सब गुणके ज्ञाता पंडित हैं सब ज्ञानवान हैं सब करे उपकार को मानते हैं कोई कपट सयानी नहीं हैं ८ ॥ दोहा ॥ राम के राज्य में हे गरुड़ सुनो जितने चर अचर जीव संसार में हैं उनमेंसे काल, कर्म, स्वभाव,गुणों का कियाहुआ दुख किसी को भी नहीं हुआ ॥ २० ॥

भूमि सप्त सागर मेखला । एक भूप रघुपति कोशला १
भुवन अनेक रोम प्रति जासू । यह प्रभाव कछु बहुत न तासू २
सो महिमा समुझत प्रभु केरी । यह बरणत हीनता घनेरी ३
सोउमहिमाखगेशजिनजानी । फिरियहिचरिततिनहुंरतिमानी ४
सोउ जानेकर फल यह लीला । कहहिं महामुनिवर दमशीला ५
राम राज्यकर सुख संपदा । बरणि न सकहिं फणीशशारदा ६
सब उदार सब पर उपकारी । बिप्र चरण सेवक नर नारी ७
एकनारि ब्रतनर सबझारी । तिय मन बचक्रम पति हितकारी ८

दो० दंड यतिन कर भेद जहं नर्त्तक नृत्य समाज ।
जीतेहु मनहिं सुनिय अस रामचंद्रके राज ॥ २१ ॥

जंबूद्वीप,प्रलक्षद्वीप,शाल्मलीकद्वीप, कुशद्वीप, क्रौंचद्वीप, शाकरद्वीप, पुष्करद्वीप, सप्तद्वीपावती पृथ्वी जिसके क्षारोदक, दध्योदक, दुग्धोदक, मधूदक, सुरोदक, इक्षुरसोदक शुद्धोदक सात समुद्र मेखला कटिबंध हैं उस समस्त पृथ्वी पर एक कोशलाधीश रामही राजा हुये १ जिस अनन्त स्वामीके रोम रोम प्रति कोटि कोटि अंडकटाह हैं उस सर्वेश्वर स्वामीका यह प्रभाव कुछ बहुत नहीं है किंतु उस महिमाके समझते यह बर्णन करनेमें बड़ी हीनता होती है २ । ३ सो महिमा भी हे गरुडजिन महात्मओं ने जानि ली है फिरि तेभी इसी चरित्रमें प्रीति मानतेहैं ४ क्योंकि उस महिमाका भी फल यही लीला है ऐसे महा महा दमशील मुनीश्वर ॥ स्वयंभूनारद: शंभु:कुमार: कपिलोमनु: ॥ प्रह्लाद: जनकोभीष्मोबलिर्बैय्यासकिर्यम: इत्यादि कहते हैं ५ राम राज्यके सुख संपदा को तो शेष शारदा भी नहीं कहि सकती हैं ६ सब उदार परोपकारी और द्विजदेवों के सेवक हैं ७ सब एकही स्त्रीके ब्रती हैं स्त्रीसब पतिब्रता हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ रामचन्द्रके राज्यमें दंडकेवल यतयोहींके हाथमें दीखता है और नर्त्तकोंके समाज में भेद रहि गया है जीतनेको मनही है ॥ २१ ॥

फूलहिं फलहिं सदातरु कानन । रहहिं एकसंग गजपंचानन १
शीतल सुरभि पवन बह मंदा । गुंजत अलि लैचल मकरंदा २
लता बिटप मांगे मधु चुवहीं । मन भावते धेनु पय श्रवहीं ३
शशि संपन्न सदा रह धरणी । त्रेता भइ कृतयुगकी करणी ४
प्रगटी गिरिन बिबिधिमणिखानी । जगदातमाभूप जगजानी ५

सरितासकल बहहिं बरबारी। शीतल अमलस्वाद सुखकारी ६
सागर निज मर्य्यादा रहहीं। डारहिं रत्न तटनि नर लहहीं ७
सरसिजसंकुल सकलतड़ागा। अतिप्रसन्न दशदिशाबिभागा ८
दो० बिधु महि पूर पियूषहि रवि तप जेतने काज।
मांगे बारिद देहिं जल रामचंद्रके राज ॥ २२ ॥

वृक्ष और बन सदा फूलते फलतेहैं हाथी और सिंह एकही संग बिहरते हैं १ शीतल मंद सुगन्ध सदा पवन बहती है भ्रमर उसकी सुगन्धिसे गुंजते हैं २ लता और वृक्ष मांगतेही मधु चुवते हैं धेनु मन भावता दूध देती हैं३ खेतीसे संपन्न सदा पृथ्वी रहती है त्रेतामें सतयुगकी करणी होरही है ४ पर्बतों पर सब प्रकारके मणि गणों की खानि जगदात्मा स्वामीको जगमें राजा हुआ जानि कर प्रगट होगई हैं ५ नदी सदा उत्तम शीतल और निर्मल स्वादित सुखकारी जल बहती हैं ६ समुद्र सदा अपनी मर्य्यादही पर रहता है तटों पर रत्नोंको डार देता है तहांते लोग उठालेते हैं ७ कमलोंसे पूरित सरोवर सब रहते हैं और दशों दिशाओंके बिभागोंसे आनन्द उमगता है। ८ ॥ दोहा ॥ चन्द्रमा सदा पृथ्वी को अमृत पूरित किये रहताहै सूर्य्य कार्य्यकी सिद्धि पर्य्यन्त तपताहै मेघसदा रामचन्द्र के राज्यमें मांगनेसे जल देते हैं२२॥

कोटिन बाजिमेध प्रभुकीन्हे। दान अनेक द्विजन कहं दीन्हे १
श्रुति पथ पालक धर्म धुरंधर। गुणातीत अरु भोग पुरंदर २
पति अनुकूल सदा रहसीता। शोभा खानि सुशील बिनीता३
जानति कृपासिंधु प्रभुताई। सेवति चरण कमल मनलाई ४
यद्यपि गृह सेवक सेवकिनी। बिपुल सकल सेवा बिधिगुनी ५
निज कर गृह परिचर्य्या करई। रामचंद्र आयशु अनुसरई ६
जिहिबिधिकृपासिंधुसुखमानहिं।सोइकरिसियसेवाबिधिजानहिं
कौशल्यादि सासु गृहमाहीं। सेवहिं सबन्हि मान मद नाहीं ८
दो० जाकी कृपा कटाक्ष सुर चाहत चितवन सोइ।
राम पदारबिंद रति करति सुभावहि खोइ ॥ २३ ॥

अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड प्रति श्रीरामावतार हैं इस कारण एकही कालमें स्वामीने कोटि कोटि अश्वमेध यज्ञकिये और अमित दानद्विजदेवों कोदिये १ परम स्वतंत्र राम-स्वामीको कुछ यज्ञ करने की आवश्यकता नहीं है परंतु स्वामी श्रुतिपथपालक और धर्म धुरंधर हैं ताते समस्त वेदोक्त कर्मकरते हैं गुणातीत भीहैं तौभी इंद्र के समान

भोग भोगतेहैं २ सीता सदा पतिके अनुकूलही रहती हैं शोभाकी खानि सुशीला है अति नम्रही रहती है ३ अपने स्वामी रामचन्द्रके अनन्त प्रभावको जानती है ताते उनके चरण कमलों को मनलगा कर सेवती है ४ यद्यपि घरमें दास दासीगण बहुत है औ सब सेवा बिधिमें कुशल हैं ५ तौभी स्वामी की गृहपरिचर्य्या सीता अपनेही हाथों से करतीहै और उनकी आज्ञाके अनुसार सदा बर्त्ततीहै ६ जिसभांति कृपासिंधु स्वामी सुखमानते हैं सोई सीता करती है सेवाकी बिधिको भलेप्रकार जानती है ७ कौशल्यादिक जो सासुहैं उनसबकी सेवा समानही करतीहै किंचिन्मान मदनहींहै ८ ॥ दोहा ॥ जिसलक्ष्मी की कृपावलोकनि को ब्रह्मादि समस्त देवता चाहते हैं और नहींदेखतीहै सोई सर्बेश्वरी सीता रामचन्द्र के चरण कमलोंमें उस अपने सुभावको छोय कर निरंतर प्रीति करतीहै ॥ २३ ॥

सेवहिं सानुकूल सब भाई । रामचरण रति अति अधिकाई १
प्रभुमुखकमल बिलोकतरहहीं । कबहुंकृपालुहमहिं कछुकहहीं २
राम करहिं भ्रातन पर प्रीती । नाना भांति सिखावहिं नीती ३
हर्षित रहहिं नगर के लोगा । करहिं सकल सुर दुर्लभभोगा ४
अहनिशि प्रभुहिं मनावत रहहीं । श्रीरघुबीर चरण रतिचहहीं ५
द्वय सुत सुन्दर सीता जाये । लव कुश वेद पुराणन गाये ६
दौबिजयीबिनयीगुण मंदिर । हरिप्रतिबिंब मनहुअतिसुन्दर ७
द्वय द्वय सुत सब भाइन केरे । भये रूप गुण शील घनेरे ८
दो० ज्ञानगिरा गोतीत अज माया गुण गोपार ।
सोइ सच्चिदानन्द घन कर नरचरित उदार ॥ २४ ॥

तीनोंभाई स्वामी को सदा सानुकूल सेवतेहैं रामके चरणों में अधिकाइ करप्रीति करतेहैं १ रामचंद्र के मुखकमल की ओर देखते रहतेहैं किकभी कृपालु स्वामी हमारे को कुछ आज्ञाकरैं २ रामचंद्रभी भाइयों परबड़ी प्रीति करते हैं और अनेक भांति की नीति सिखाते हैं ३ पुरके सबलोग सदा प्रसन्न रहते हैं और देव दुर्लभ भोग भोगते हैं ४ अहदिन निशिराति दैवको मनाकर श्रीरामचंद्रके चरणोंमें प्रीति चाहते हैं ५ परमसुन्दर दो पुत्र सीताने जन्मे कुश और लव जिनके नाम हैं बेद पुराण बिख्यात है ६ दोनों बड़े बिजयी बिनयी और गुणमंदिर हैं मानों दोनों रामचंद्र के अतिसुन्दर प्रतिबिंबही हैं ७ दोदो पुत्र तीनों भाइयों के भी बड़े रूप गुण शील-वन्तहुये ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जो सर्बेश्वर स्वामी ज्ञानबाणी इंद्रियों से अग्राह्य अजन्म मायक गुणोंसे पारहै सोई सच्चिदानन्द घन स्वामी उदार नरचरित्र करताहै ॥ २४ ॥

प्रातकाल सरयू करमज्जन । बैठहिं सभा अनुज द्विज सज्जन १
वेद पुराण बशिष्ट बखानहिं । सुनहिं राम यद्यपि सबजानहिं २
अनुजन संयुत भोजनकरहीं । देखिसकल जननीसुखभरहीं ३
भरत शत्रुहन दोनों भाई । सहित पवनसुत उपबन जाई ४
पूछहिं बैठराम गुणगाहा । कह हनुमान सुमति अवगाहा ५
सुनतबिमलगुणअतिसुखपावहिं । बहुरिबहुरिकरिबिनयकहावहिं
सब के गृहगृह होहिं पुराना । राम चरित पावनबिधि नाना ७
नरअरुनारिरामगुणगानहिं । करहिं दिवसनिशिजातनजानहिं ८
दो० अवध पुरीबासिन कर सुख संपदा समाज ।
सहस शेष नहिं कहि सकहिं जहं नृप राम बिराज ॥२५॥

पंचपंचउषःकालःषटपंचारुणोदयः सप्तपंचभवेत्प्रातःशेषःसूर्य्योदयस्मृतः अर्थात् ५५ घरी पीछे उषःकाल होता है ५६ पीछे अरुणोदय होता है ५७ घरी पीछे प्रातःकाल होता है ५८ । ५९ । ६० सूर्य्योदय कहाता है प्रातःकाल सरयू स्नान करि सभा में सब भाई द्विज देव सज्जन बैठते हैं १ तहां वेदपुराण बशिष्ट मुनिबांचते हैं उस को राम स्वामी सुनते हैं यद्यपि जानते सब हैं २ फिरि भाइयों समेत भोजन करते हैं सो देखिकर सब माता बड़ा सुखपावती हैं ३ दोनों भाई भरत शत्रुहन हनुमान समेत उपवन में जाकर रामस्वामी के गुणों की गाथा पूछते हैं अथाह जिन की सुमति ऐसे हनुमान उस को कहते हैं ४ । ५ स्वामी परम पावन गुणों को सुनि बड़ाही सुख पाते हैं और फेरिफेरि बिनती करिकरि के कहाते हैं ६ नगर में सब के घरघर पुराण जिन में आदि से अंत पर्य्यंत परम पावन रामचरित्रही कहे हैं ते बांचेजाते हैं वेदेरामायणेचैवपुराणेभारतेतथा आदौमध्ये तथाचांतेहरिस्सर्वेत्रगीयते ७ अयोध्यापुरी के नर और नारी सब रामचंद्र ही के गुणों का गानकरते रहते हैं रातिदिन जाते नहीं जानते हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ अयोध्याबासियों के सुख संपदा के समाज को सहस्र शेष भी नहीं कहि सक्ते हैं जहां राम स्वामी आपराजा हुये बिराजते हैं २५

नारदादि सनकादि मुनीशा । दरशन लागि कोशलाधीशा १
दिनप्रतिसकलअयोध्याआवहिं । देखिनगरबिरागबिसरावहिं २
जातरूप मणि जटित अटारी । नानारंग रुचिर गच ढारी ३
पुरचहुं पास कोट अति सुन्दर । रचे कंगूरा रंग रंग बर ४
नवग्रह सुन्दर निकर बनाई । मनहु घेरि अमरावति आई ५

हिबहुरंग रचित गचकांचा । जो बिलोकि मुनिवर मन रांचा ६
वल धामऊपरनभचुम्बत । कलश मन हुँरविशशिद्युति निन्दत ७
हुमणिरचितझरोखाभ्राजहिं ।गृहगृहप्रतिमणिदीपबिराजहिं ८
दो० चारुचित्रशाला गृह गृहप्रति रचे बनाइ ।
राम चरित जो निरखत मुनि मन लेत चुराइ ॥ २६ ॥

नारदादिक सनकादिक मुनिवर्य्य कोशलाधीश राम स्वामी के दर्शनों के लिये दिन प्रति सब अयोध्या में आते हैं ते अयोध्या की रचना को देखि बैराग भूलि जाते हैं १ । २ जिस की सुवर्ण की मणि जटित अटारी बर्ण बर्ण की सुन्दर गच बनी हैं ३ नगर के चारों पास अति सुन्दर सुदृढ़ कोट बना है जिस के कंगूरे रंग के रचे हैं ४ और जिस के भीतर नवीन घरों की मंडली कैसी बनी है मानों करि अमरावती ही इस में बसाई है ५ धरती जिस की अनेक रंग के गचकांच से चित जिस को देखिकर मुनिवरों का भी मन रमि जाइ ६ उज्ज्वल स्वेत मंदिरों के चंद्र सूर्य्य के भी निन्दक आकाश को चूमते हुये कलश धरे हैं ७ बहुतभांति मणि रचित झरोखे सोहते हैं घर घर प्रतिमणि दीप बिराजते हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ दर चित्रशाला घरघर प्रतिरची हैं जिनमें मत्स्य, कूर्म, बाराहादि अनन्त भगवद तारों के चरित्र लिखे हैं जो देखते ही मुनिजनों के मनों को चुराते हैं ॥ २६ ॥

सुमनबाटिका सबन लगाई । बिबिधि भांति करियतनबनाई १
लता ललित बहु भांति सुहाई । फूली सदा बसंत कि नाई २
गुंजत मधुकर मुखर मनोहर । मारुत त्रिबिधि सदाबहसुन्दर ३
नाना खग बालकन जियाये । बोलत मधुर उड़ात सुहाये ४
मोर हंस चातक पारावत । भवनन पर शोभा अति पावत ५
जहंतहं देखहिं निज परछाहीं । बहु बिधि कूजहि नृत्य कराहीं ६
शुकशारिका पढ़ावहिं बालक । कहहु राम रघुपति जनपालक ७
राज द्वार सकल बिधि चारू । बीथी चौहट रुचिर बजारू ८
दो० उत्तर दिशि सरयू बहै निर्मल जल गम्भीर ।
बांधे घाट मनोहर स्वल्प पंक नहिं तीर ॥ २७ ॥

पुष्पबाटिका घर घर सबों ने लगाईहैं अनेक भांतके यत्नों से बनाई हैं १ जिन में भांति भांति की सुन्दर सुहाई लताबेलें हैं जो सदा बसंतही के समान फूलती हैं २ मनोहर शब्दसे जिनपर भ्रमर गुंजतेहैं तीनों प्रकार की सुन्दर पवनबहती है ३

जाति जाति के पक्षी बालकों ने पाले हैं कोई तो मधुर बोली बोलते हैं कोई अति सुहाये उड़ने और देखने में हैं ४ सुन्दर मयूर पपीहा परेवा मंदिरों पर बैठे बड़ी शोभा पावते हैं ५ जहां तहां अपनी अपनी परछाहीं गचकाचों में देखि देखि कर अनेक भांति से कूजते और नाचते हैं ६ शुक, तोते, शारिका, मैनाओं को बालक भी यही पढ़ाते हैं अरे राम रघुनायक कहो राम जनपालक कहो ७ राजद्वार अति सुन्दर बना है सुन्दर गली हैं चौरहे हैं अति रुचिर बजार है ॥ ८ दोहा ॥ उत्तर दिशा में सरयू गंगा बहतीहै जिस का निर्मल जल अति गम्भीर है और अति मनोहर घाट बने हैं कीच तो कहीं देखभी नहीं परती है ॥ २७ ॥

दूरिफराख रुचिरसो घाटा। जहंजल पियहिं बाजि गजठाटा १
पनघट परममनोहर नाना। तहं नहिं पुरुष करहिं अस्नाना २
राजघाट सब बिधिसुन्दरबर। मज्जहिं तहां बरणचारिहुनर ३
तीर तीर देवन के मंदिर। चहुं दिशि तिनके उपवन सुन्दर ४
कहुंकहुं सरिता तीर उदासी। बसहिं ज्ञानरत मुनि संन्यासी ५
तीर तीर तुलसिका सुहाई। वृन्द वृन्द बहु मुनिन लगाई ६
पुर शोभा कछु बरणि नजाई। बाहर नगर परम रुचिराई ७
देखत पुरी अखिल अघभागा। बन उपबन बापिका तड़ागा ८
दो० रमानाथ जहं राजहिं सो पुर बरणिकि जाइ।
अणिमादिक सुख संपदा रहीं अवध पुरछाइ ॥ २८ ॥

दूरि और बहुत चौड़ासो घाट है जहां बाजिगज इत्यादि पशु पानी पीते हैं १ पनघट भांति भांतिके मनोहर बने हैं तहां पुरुष स्नाननहीं करते हैं २ राजघाटतो सब बिधि सुन्दरहै तहां चारोंवर्णके पुरुष मज्जन किया करते हैं ३ तीरतीर अनेक देवालय बनेहैं तिन की चारों दिशाओंमें सुन्दरसुहाये उपबनहैं ४ कहीं कहीं सरयूके तट पर ज्ञान परायण संन्यासी निवास करते हैं ५ तीर तीर पर सुन्दर सुहाये तुलसी के वृन्दमुनीश्वरों ने लगाये हैं ६ उस पुरके भीतरकी शोभा कैसे कहीजाती है जिसनगरके बाहरही परम रुचिराईहै ७ अयोध्यापुरी और उसके बन, बाग, बावरी सरोवरों के देखतेही जीवोंके अनेक जन्मोंके संचित पापनाश होते हैं ॥ ८ ॥ जहां साचात् श्रीपति भगवान आपही नरराजरूप बिराजते हैं तहां की शोभा कौन बरणि सकता है अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशिता, बशिता आठो सिद्धैं अयोध्याही में छा रहीहैं ॥ २८ ॥

जबते राम प्रताप खगेशा। उदित भयो अति प्रबल दिनेशा १

पूरि प्रकाश रहा त्रैलोका । बहुतन सुख बहुतन मनशोका २
जिनहिं शोक ते कहहुं बखानी । प्रथम अविद्या निशा नशानी ३
अघ उलूक जहं तहां लुकाने । काम क्रोध कैरव सकुचाने ४
बिबिधि कर्म गुण काल सुभाऊ । येचकोर सुख लहैंनकाऊ ५
मत्सर लाभ मोह मद चोरा । इनहिं निबाह न कवनेहु ओरा ६
धर्म तड़ाग ज्ञान बिज्ञाना । ये पंकज बिकसे बिधि नाना ७
सुख संतोष बिराग बिबेका । बिगत शोक ये कोक अनेका ८
दो० यह प्रताप रवि जासुके उर जब करहि प्रकाश ।
पछिले बाढ़हिं प्रथम जे कहेते पावहिं नाश ॥ २६ ॥

जबसे हे गरुड़ श्री रामचंद्रके प्रतापका अति प्रबल सूर्य्य उदय हुआ है १ और उसका परम प्रकाश तीनों लोकमें पूरि रहा है तबसे बहुतोंको तो सुख हुआ है और बहुतेरों को शोक भी होगया है २ जिनको शोक हुआ है प्रथम उन्हीं को बखानि कर कहता हूं पहिले अबिद्या मोह रात्रिही नाश होगई ३ अविद्या रात्रीके जातेही पाप तो उलूकों की नाईं जहां तहां छिपि रहे और काम क्रोध कैरवभी संकुचित हो गये ४ संचित,क्रियमाण,प्रारब्ध, करमों के गुण, काल, स्वभाव ये चकोरतो कहीं सुखी पातेही नहीं हैं ५ मत्सर और मदमान मोहरूपी चोरोंका तो कहीं किसी भांति निबाहही नहीं है ६ धर्म कहैं सन्मार्ग के सरोवर में ज्ञान बिज्ञान रूप कमल नाना भांति के प्रफुल्लित हो रहे हैं ७ सुख संतोष बैराग बिबेक ये अनेक कोक बिशोक बिचरते हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ यह राम प्रताप का सूर्य्य हे गरुड़ जब जिनके हृदयमें प्रकाश करता है उसके हृदयमें जो पीछे ज्ञान बिज्ञान सुख संतोष कहेहैं ते बढ़ते हैं और पहिले कहे काम क्रोधादि नाश होजाते हैं ॥ २६ ॥

जहंतहंनररघुपति गुणगावहिं । बैठिपरस्पर यहीसिखावहिं १
भजहु प्रणत प्रतिपालकरामहिं । शोभाशील रूपगुणधामहिं २
जलजबिलोचनश्यामलगातहिं । पलकनयनइवसेवकत्रातहिं ३
धृत शर रुचिर चाप तूणीरहिं । संतकंज बनरवि रणधीरहिं ४
लोभमोहमृगयूथकिरातहिं । मनसिजकरिहरिजनसुखदातहिं ५
संशयशोकनिबिड़तमभानुहिं । दनुजगहनघनदहनकृशानुहिं ६
भवबासना मशकहिमराशिहिं । सदाएकरसअजअबिनाशिहिं ७

मुनि रंजन भंजनमहिभारहि । तुलसिदासके प्रभुहिं उदारहिं ८
दो० यहि विधि नगर नारि नर करहिं राम गुण गान ।
सानुकूल सब पर रहहिं संतत कृपा निधान ॥ ३० ॥

जहां तहां घर घर मनुष्य रामचंद्रहीके गुणोंको गाते हैं और परस्पर एकोंकोएक यही उपदेश करते हैं १ अरे भाइयो शरणागत बत्सल शोभा शीलरूप गुण सागर रामको भजो २ राजीव लोचन श्याम सुन्दर पलक नेत्रोंकी नाईं सेवकोंके रक्षक रामको भजो ३ अपनोंकी रक्षा और तद्विरोधियोंके नाशके निमित्त धारण किये हैं चोखे शरासन शायक ऐसे रामको भजो संतकमलबनको सूर्य्यके समान विकाशक रामको भजो ४ लोभ मोह मृग यूथोंके अहेरी रामको भजो काम मातंगके मृगराज रामको भजो ५ संशय और शोक महा अंधकार केदिवाकर रामको भजो सुर श्रुति सन्त बिरोधी दनुजकुल सघन बनके दवाग्निरामको भजो ६ दुष्टबासना मशक दंशके तुषार रामको भजो सदा सर्बदा एक रस अजअबिनाशी रामको भजो ७ मुनि जन रंजन और भवभार भंजन रामको भजो तुलसी दासके स्वामी परम उदार सर्बस्व दातार श्री रामको भजो ॥ ८ ॥ दोहा ॥ इस प्रकार अयोध्याके सब नर नारी सदा रामके गुण ग्राम गाया करते हैं और कृपानिधान रामचन्द्र भी सदा उन पर सानुकूलही रहते हैं ॥ ३० ॥

भ्रातन सहितराम यकबारा । संगपरम प्रिय पवनकुमारा १
सादर उपबन देखन गये । सब तरु कुशुमित पल्लव नये २
जानि समय सनकादिक आये । तेज पुंज गुण शील सुहाये ३
ब्रह्मानन्द सदा लय लीना । देखत बालक बहु कालीना ४
रूप धरे मनु चारिहुं वेदा । सम दर्शी मन बिगत बिभेदा ५
आशाबसनब्यसनयहतिनहीं । रघुपतिचरितहोहिंतहंसुनहीं ६
तहां रहे सनकादि भवानी । जहं घटसंभव मुनिवर ज्ञानी ७
रामकथा मुनिवर बहुबरणी । ज्ञानयोग पावक जिमिअरणी ८
दो० देखि राम मुनि आवत हर्षि दंडवत कीन्ह ।
स्वागत पूछि पीत पट प्रभु बैठन कहं दीन्ह ॥ ३१ ॥

भाइयों समेत रामचंद्र एक समय परम प्यारे पवनपुत्र हनुमान को साथ लेकर सुन्दर बिहार बनके देखनेको गये जिसके समस्त वृक्ष पुष्पित और पल्लवित और नवीनहैं १ । २ ऐसा सुन्दर सावकाश समय जानिकर ब्रह्माके जेष्ठ पुत्र सबकेअग्रज

सनक, सनन्दन, सनातन, सनत्कुमार चारों भाई रामके पास आये तेजके पुंज बड़े गुणवान परम सुन्दर सुहाये हैं २ सदा ब्रम्हानन्दही में लीन रहते हैं देखने में तो पांच पांच बर्षके बालक जानि परते हैं परंतु बहुत कालके हैं ४ कैसे सुन्दर रूप धारण किये हैं मानों चारों वेदही हैं सम दर्शी हैं समस्त बिश्व को तदात्मकही देखते हैं बिभेद शून्य हैं ५ आशा बसन दिगंबर हैं यही एक जिन के व्यसन है जहां भगवच्चरित्र होते हैं तहां कालक्षेप करते हैं ६ या समय हे पार्वती अगस्त्य मुनिके आश्रममें सनकादिक रहैं ७ तहां रामकथा अगस्त्य मुनि ने बहुत भांति से कहीजो ज्ञान योग अग्निकी अरणीहै ॥ ८ ॥ दोहा ॥ सनकादिकोंको आवते देखिकर रामचंद्र हर्षित होगये और संभ्रम उठि कर दंडवत प्रणाम किया फिरि स्वागत कुशल पूछिकर पीतांबर बैठने को आसन दिया ॥ ३१ ॥

कीन्ह दंडवत तीनिहुं भाई । सहित पवनसुत सुख अधिकाई १
मुनिरघुपतिछबि अतुलबिलोकी । भये मग्नमन सकहिं नरोकी २
श्यामल गात सरोरुह लोचन । सुन्दरता मंदिर भव मोचन ३
एकटक रहे निमेष न लावहिं । प्रभु करजोरे शीश नवावहिं ४
तिनकी दशा देखि रघुबीरा । लोचन जल बहपुलक शरीरा ५
कर गहि प्रभु मुनि वर बैठारे । परम मनोहर बचन उचारे ६
आजु धन्यमैं सुनहु मुनीशा । तुम्हरे दरशजाहिं अघ खीसा ७
बड़े भाग्य पाइय सत संगा । बिनहिं प्रयास होइ भव भंगा ८
दो० संतपंथ अपवर्ग कर कामी भवकर पंथ ।
कहहिं संत कबि कोबिद श्रुति पुराण सदग्रंथ ॥ ३२ ॥

फिरि तीनों भाइयों ने हनुमान समेत उनको दंडवत प्रणाम किया और बडा सुख पाया १ सनकादिक रामचन्द्र की अतुलित छबिको देखि कर प्रेम में मग्न होगये बहुतेरा मनको ज्ञान बैराग के बलसे रोकतेहैं तोभी नहींरोकि सकतेहैं क्योंकि ज्ञान बैरागभी तोभगवत प्रेमहीके उपयोगी है २ श्यामल तोमनोहर गातहै कमलसे अति बिशाल लोचनहैं सुन्दरताके सदनहैं भवबंधनके मोचनहैं ३ ऐसेरूपको देखिकरएक टकही रहिगये रामचंद्र हाथजोड़ शीशनवायरहेहैं ४ रामचंद्रने उनकी प्रेमदशा देखी किनेत्रोंसे तोजल बहताहै और पुलकावली शरीरपर होरहीहै ५ तबतो हाथ पकरिकर रामचंद्र ने उनको बैठारा और अतिही मनोहर बचन बोले ६ हेमुनिवर्य्यो महाराज आज मैं धन्यहूं आपके दर्शनोंसे समस्त पापनाश होतेहैं ७ बड़ेभाग्यसे सत्पुरुषों का संग प्राप्तहोताहै जिसके प्रभावसे अनायास संसारके बंधनों से जीवछूटि जातेहैं ८ ॥

दोहा ॥ संतजनतो मुक्तिके पन्थहैं औविषयी लोग नर्कके पंथ हैं ऐसे संतजन और कोविद कबिवेद पुराण इतिहासादि समस्त सद्ग्रंथ कहते हैं ॥ ३२ ॥

सुनिप्रभु बचनहर्षि मुनिचारी। पुलकिततन अस्तुतिअनुसारी १
जय भगवंत अनंत अनामय। अनघ अनेक एक करुणामय २
जय निर्गुणजयजयगुणसागर। सुखमंदिर सुन्दरअति नागर ३
जयइंदिरा रमण जय भूधर। अनुपम अज अनादि शोभाकर ४
ज्ञान निधान अमान मानप्रद। पावन सुयश पुराण वेद बद ५
तज्ञ कृतज्ञ अज्ञता भंजन। नाम अनेक अनाम निरंजन ६
सर्ब सर्बगत सर्ब उरालय। बससि सदाहम कहं प्रतिपालय ७
द्वंदविपति भवफंद बिभंजन। हृद बसु रामकाम मद गंजन ८
दो० परमानंद कृपायतन प्रभु परिपूरण काम।
प्रेम भक्ति अनपायनी देहु हमहिं श्री राम ॥ ३३ ॥

ऐसे रामचन्द्र के बचन सुनिकर चारोंमुनि हर्षित होगये और पुलकित गातहोकर अस्तुति करने लगे १ हे भगवन् हेअनन्त हेनिर्विकार राम स्वामी आपकी जय है अनघ हेअनेकरूपएक हेकरुणामय स्वामी आपकीजय २ हेनिर्गुण हे गुणसागर हेसुख मंदिर हेअतिनागर स्वामी आपकीजय ३ हेलक्ष्मीपति हेधरणीधर आपकीजय हेअद्वितीय अजन्मा अनादिनिधन शोभाकररामस्वामी आपकीजय ४ आप विशुद्धबिज्ञान घन अमानी मानदायक हो आपका पावन यश वेदपुराण कहते हैं ५ तत्त्व कहैं स्वरूपज्ञ कृतज्ञ अज्ञता भंजन अनेक नाम अनाम निरंजन अविद्यालेश वर्जितहो ६ सर्ब कहैं बिश्वरूप हो सर्बगत कहैं देशकाल बस्तु व्यापक हो सर्बहृदय निवासी हो ते राम हमारा सदा परिपालन करो ७ द्वन्दों की विपत्ति और संसार बंधन के निवारकर्ते तुम रामसदा हमारे हृदयमें काममद मोचन सुन्दरश्याम सुरूप बसाकरो ८ ॥ दोहा ॥ हे परमानन्द हे कृपायतन हे परिपूर्णकाम स्वामी हेश्रीरामअपनी अनपायनी प्रेमभक्ति हमको दीजिये ॥ ३३ ॥

देहुभक्ति रघुपतिअति पावनि। त्रिबिधि तापभव दापनशावनि १
भवबारिध कुंभज रघुनायक। सेवतसुलभ सकल सुखदायक २
मन संभव दारुण दुखदारक। दीन बन्धु समता बिस्तारक ३
आश त्राश ईर्षादि निवारक। बिनय बिवेक बिरति बिस्तारक ४
भूप मौलि मणि मंडन धरणी। देहु भक्ति संस्सृति सरि तरणी ५

मुनिमन मानसहंस निरंतर । चरण कमल बंदत अज शंकर ६
रघुकुल केतु सेतु श्रुति रक्षक । काल कर्म स्वभाव गुण भक्षक ७
तारणतरणहरण सबदूषण । तुलसिदास प्रभु त्रिभुवन भूषण८
दो० बार बार अस्तुति करि प्रेम सहित शिर नाइ ।
ब्रह्म भवन सनकादि गे अति अभीष्टबर पाइ ॥ ३४ ॥

हे रघुपति अपनी अति पावनी भक्ति हम को दीजिये जो त्रैताप और संसारके दर्प को नशावनी है १ संसार सागर के शोषक आप अगस्त्य मुनि हो सेवते में सुलभ समस्त सुखदायक हो २ मनसंभूत दारुण दुःख के बिदारक दीन जने के सहायक समताके बिस्तारक हो ३ दुराशा पाश ईर्षादिकों के निवारक बिनय बिबेक बैराग के बिस्तारक हो ४ समस्त राजाओंके शिरोमणि हो पृथ्वी के आभूषण हो संसार नदी की नाव अपनी भक्ति हम को दीजिये ५ मुनिजनों के मनमानस के निरंतर हंसहो आप के चरण कमलों को ब्रह्मा शिव सदा बंदन करते हैं ६ रघुकुलकेतु श्रुतिसेतु के रक्षक काल कर्म स्वभाव गुणके भक्षक हो७ तारणतरण सर्व दोष हरण तुलसी दास के प्रभु त्रैलोक्य बिभूषण हो ॥ ८ ॥ दोहा ॥ इसप्रकार बार बार अस्तुति करिके प्रेम समेत रामचन्द्र के चरणोंको प्रणाम किया और मन भावत बर पाइ कर सनकादिक ब्रह्मलोक को चले गये ॥ ३४ ॥

सनकादिकबिधि लोक सिधाये । भ्रातन राम चरण शिरनाये १
पूछत प्रभुहिं सकलसकुचाहीं । चितवहिं सब मारुत सुतपाहीं२
सुना चहहिं प्रभु मुखकी बानी । जो सुनि होइ सकल भ्रमहानी३
अन्तर्यामी प्रभु सब जाना । पूछत काह कहहु हनुमाना ४
जोरि पाणि तबकह हनुमंता । सुनहु दीन दयाल भगवन्ता ५
नाथ भरत कछु पूछन चहहीं । प्रश्न करतमन सकुचत अहहीं६
तुमजानहु कपि मोर सुभाऊ । भरतहिं मोहिं न अंतर काऊ ७
सुनिप्रभुबचनभरतगहेचरण । सुनहु नाथ प्रणतारति हरण८
दो० नाथ न मोहिं संदेह कछु सपनेहु शोक न मोह ।
केवल कृपा तुम्हारिहि चिदानन्द संदोह ॥ ३५ ॥

सनकादिक जब ब्रह्मलोक को गये तबतो भाइयों ने उठि कर राम के चरणों को प्रणाम किया पूछते तो रामचंद्रसे सब सकुचतेहैं हनुमान की ओर देखतेहैं १।२ स्वामी के मुख के बचन सुना चाहते हैं जो सुनिकर सब संदेह नाश हो जावे ३

अंतर्यामी रामस्वामी ने सब जानलिया पूछने लगे हे हनुमान तुम क्या कहते हो हाथ जोरि कर हनुमान ने कहा हे नाथ भरत आपसे कुछ पूछा चाहते हैं प्रश्न करने में सकुचते हैं ४ । ५ । ६ तबतो रामचन्द्र ने हनुमान से कहा तुमतो हेहनुमान मेरे स्वभाव को जानतेहो भरत से मेरे को कभी कुछ अंतर नहीं है ७ स्वामी के बचन सुनिकर भरत ने उठिकर प्रणाम किया और कहा हे प्रणतारति हरण स्वामी सुनिये ॥ ८ ॥ दोहा ॥ हे नाथन तो मेरे को कुछ संदेह है न शोक है नमोह है हे स्वामी हे सच्चिदानन्द संदोह केवल आपही की कृपा है ॥ ३५॥

करहुं कृपानिधि एक ढिठाई । मैं सेवक तुम जन सुखदाई १
संतन की महिमा रघुराई । बहु बिधि वेद पुराणन गाई २
श्रीमुख तुमपुनिकीन्हबड़ाई । तिनपर प्रभुहिं प्रीतिअधिकाई ३
सुनाचहौं प्रभुतिनकर लक्षण । कृपासिंधु गुणज्ञान बिचक्षण ४
संत असंत भेद बिलगाई । प्रणतपाल मोहिं कहहु बुझाई ५
संतन के लक्षण सुनुभ्राता । अगणित श्रुति पुराण बिख्याता ६
संतअसंतन की असिकरणी । जिमिकुठार चन्दन आचरणी ७
काटे पर सुमलय पुनि भाई । निज गुण देइ सुगंध लगाई ८
दो० ताते सुरशीशन चढ़त जगबल्लभ श्रीखंड ।
अनल दाहि पीटत घननिपर सुबदनतेहिं दण्ड ॥ ३६॥

हे कृपानिधि स्वामी एक ढिठाई करताहूं मैंतो सेवकहूं आप सेवक सुखदायक हैं १ संतजनों की महिमा हे स्वामी वेद पुराणों में बहुत भांति से कहीहै २ और आपने भी अभी अपने श्रीमुख से उनकी प्रशंसा करी और उनपर आपकी प्रीति भी बिशेष जानि परती है ३ तिन संतजनों के लक्षण सुना चाहता हूं हे कृपासिंधु हे गुणज्ञान प्रबीण ४ संत और असंत दोनों के भेद भिन्न भिन्न हे प्रणतपाल आपमेरे से समुझाय कर कहिये ५ यह सुनिकर रामचन्द्र ने कहा सुनोहे भाई संतोके तो लक्षण अगणित वेद पुराणों में कहेहैं मैं कैसे उनको कहि सकता हूं कुछ थोरेहीमे जान लेना ६ संत असंतों की ऐसी करणी जानो जैसी कुठार और चन्दन की आचरणि होतीहै ७ अर्थात् कुठार अपने कठोर गुणमे चन्दनसे शांत शीतल कोभी काटताही है और चन्दन अपने साधु स्वभाव से उसके भी सुगन्ध लगा देताहै ८ ॥ दोहा ॥ ताते चन्दन तो देवताओं के शीशों पर बिराजता है और सब को प्रियलगता है श्रीखण्ड कहाता है और कुठार का मुख उदंड हो अग्नि में दाहिकर घनों से पीटा जाताहै ॥ ३६ ॥

बिषयअलंपट शील गुणाकर । पर दुख दुख सुखसुखदेखेंपर १
सम अभूत रिपु बिमद बिरागी । लोभामर्ष हर्ष भय त्यागी २
कोमल चित दीनन परदाया । ममता ममपद प्रीति अमाया ३
सबहि मान प्रद आप अमानी । भरत प्राण सम ममते प्राणी ४
बिगतकाममममनामपरायण । शांतिबिरतिबिनीतिमुदितामण ५
शीतलता शरलता मयत्री । द्विज पद प्रेम धर्म जनय यत्री ६
शमदमनियमनीतिनहिंडोलहिं।परुषबचनकबहूंनहिंबोलहिं ७
येसब लक्षण बसहिं जासुउर । जानेहु ताहि संत संतत फुर ८
दो० निन्दा अस्तुति उभय सम ममता ममपद कंज ।
तेसज्जन मम प्राणप्रिय गुणमंदिर सुखपुंज ॥ ३७ ॥

समस्त बिषयों से बिरक्त होतेंहैं शील गुणकी खानि होतेहैं पराये दुखसे दुखी और पराये को सुखीदेखने से सुखी होतेहैं १ शत्रु मित्र उदासीन तीनों में समान प्रीति करते अजात शत्रु होतेहैं मद रहित संसार से बैरागी होते हैं लोभ आमर्ष क्रोध, हर्ष, भय शून्य होतेहैं २ कोमल चित्त दीनों पर दया रखतेहैं ममता केवल मेरे चरणों में रखतेहैं धनंमदीयंतवपादपंकजं और निःकपट प्रीति करते हैं ३ सब को मानदायक और आप मानरहित होते हैं हे भरत ऐसेही प्राणी मेरेको प्राण के समान प्यारेहोतेहैं ४ सर्ब कामनाशून्य केवल मम नाम परायण होतेहैं शांतिबिरति बिनीति मुदित इन केघर होते हैं ५ शीतलता शरलता मयत्री के निवास होतेहैं और द्विजदेवों के चरणों मे प्रीति रखते हैं जो समस्त धर्मों को जानते हैं ६ शम दम, नियम नीतिसे नहीं चलतेहैं कटुबचन कभी किसीसे नहींबोलतेहैं ७ येसमस्त लक्षण जिस के हृदय में बसतेहैं उसको हेतात सदासांचा सन्त जानो ८ ॥ दोहा ॥ जिनके निन्दा स्तुति मानापमान दोनों समान हैं ममता केवल मेरेही चरणों में है तेसज्जन मेरेको प्राणप्यारे हैं तेई समस्त ऊपर लिखेगुणों के मंदिर हैं तेई आनन्द निधानहैं ॥ सोइ सर्बज्ञ गुणी सोइ ज्ञाता ॥ सोइ महिमंडन पंडित दाता ॥ धर्मपरायण सोइ कुलत्राता रामचरणजाकरमनराता ॥ ३७ ॥

सुनहु असंतन केर सुभाऊ । भूलेहु संगति करियन काऊ १
तिनकर संग सदा दुखदाई । जिमि कपिलहिं घालै हरहाई २
खलन हृदय अति ताप बिशेषी । जरहिं सदा परसंपति देखी ३
जोकहुं निन्दा सुनहिं पराई । हर्षहिं मनहु परी निधिपाई ४

काम क्रोध मद लोभ परायण । निर्दय कपटी कुटिल मलायण ५
बैर अकारण सबकाहू सों । जो कर हित अनहित ताहू सों ६
झूठहि लेना झूठहि देना । झूठहि भोजन झूठ चबेना ७
बोलहिं मधुर बचन जिमि मोरा । खाहिं महाअहि हृदय कठोरा ८
दो० पर द्रोही परदाररत परधन पर अपबाद ।
ते नर पामर पापमय देह धरैं मनुजाद ॥ ३८ ॥

हे भरत अब तुम असंतों के लक्षण सुनो जिनमें ये लक्षण हों उनकी संगति भूलिकर भी न कीजिये १ क्योंकि उनके संगसे आत्माका बिनाशही होता है जैसे हरहाई गाइ कपिला सूधी गाय का बिनाश करता है २ उन दुष्टों के हृदय में तापतो अतिही बिशेष होता है कि पराई संपति देखतेही जरिमरते हैं ३ जो कहीं पराई निन्दा सुनते हैं तो ऐसे हर्षित होते हैं मानों संपति परी पाई ४ काम, क्रोध, मद, लोभमें सदापरा-यण रहते हैं बड़े निर्दयी और कुटिल पापके घरही होते हैं ५ निःप्रयोजन सबके साथ बैरही रखते हैं जो कोई उनका हित करै उसकाभी अनहित ही करते हैं ६ झूठही उनका लेना झूठही देना होत है अति झूठको भोजन और थोरे झूठको चबेना मानते हैं ७ मयूरोंके समान तो अति मधुर बचन बोलते हैं और हृदय ऐसे कठोर होते हैं कि महाबिषधर सर्पको पचाइ जाते हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ परद्रोही होते हैं परदाराrत होते हैं परधन गाहक होते हैं परनिन्दक होते हैं ते मनुष्य देह धारण किये मानो पापरूप राक्षसही हैं ॥ ३८ ॥

लोभहि ओढ़न लोभहि डासन । शिश्नोदर पर यम पुर त्रासन १
जो काहूकी सुनहिं बड़ाई । स्वास लेहिं मनु जूड़ी आई २
जो काहूकी देखहिं बिपती । सुखी होहिं मानहु जग नृपती ३
स्वारथ रति परिवार बिरोधी । लंपट काम लोभ अति क्रोधी ४
मात पिता गुरु बिप्र न मानहिं । आपगये अरु घालहिं आनहिं ५
करहिं मोह बश द्रोह परावा । संत संग हरि कथा न भावा ६
अवगुण सिंधु मंद मति कामी । वेदबिदूषक परधन स्वामी ७
बिप्र द्रोह परद्रोह बिशेषी । दंभ कपट जिय धरैं सुबेषी ८
दो० ऐसे अधम मनुष्य खल कृतयुग त्रेता नाहिं ।
द्वापर कछुक वृंद बहु होइहहिं कलियुग माहिं ॥ ३९ ॥

लोभही ओढ़ना है लोभही बिछौनाहै शिष्णु इंद्री और उदार भरणमें परायण रहते हैं यमपुर नर्कके भी च.शक्र हैं अर्थात् जिन के आने से नर्कभी भय मानतेहैं १ जो किसीकी कहीं बड़ाई सुनतेहैं तो ऐसी गहरी स्वासलेतेहैं मानों शीत ज्वर आगया२ और जो किसीकी बिपत्ति देखतेहैं तोकैसे सुखी होजातेहैं मानो बिश्वका राज्य पागये ३ सदा स्वार्थही में रत रहते हैं परिवारसे बिरोध रखते हैं निरलंपट अति कामी अति लोभी अति क्रोधीहैं ४ माता, पिता, गुरू, ब्राह्मण किसीको भी नहीं मानतेहैं आपतो आत्माका बिनाश करही चुकेहैं औरों को ऐसाही उपदेश करतेहैं ५ मोहके बश पराया द्रोहही करते हैं संतोंका संग और भगवत्कथा तो सुहातीही नहींहैं ६ समस्त अवगुणों के समुद्र और मतिमंद होते हैं वेदों के निन्दक पराये धनको ते आपना हीं मानतेहैं ७ बिप्रद्रोह और परद्रोह, भगवद्रोह तो बिशेष रखते हैं जीमेंतो दंभ कपट है सुवेषी बनेफिरतेहैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ ऐसे अधम मनुष्य हेभरत सतयुग त्रेता में तो नहींहैं द्वापर में कहीं कहीं कलियुगमें वृन्द के वृन्द होंगे ॥ ३९ ॥

परहित सरिस धर्म नहिं भाई । परपीड़ा सम नहिं अधमाई १
निर्णय सकल पुराणबेद कर । कहेउंतात जानहिं कोबिदनर २
नर शरीर धरि जेपर पीरा । करहिं तेसहहिं महा भव भीरा ३
करहिं मोहबश नर अघनाना । स्वारथ रत परलोक नशाना ४
कालरूप तिनकहं मैं भ्राता । शुभअरु अशुभ कर्म फलदाता ५
अस बिचारि जे परम सयाने । भजहिं मोहिं संसृति दुखजाने ६
त्यागहिं कर्मशुभाशुभदायक । भजहिंमोहिंसुरनरमुनिनायक ७
संत असंतन के गुण भाखे । तेन परहिं भव जिन लखि राखे ८
दो० सुनहु तात माया कृत गुण अरु दोष अनेक ।
गुण यह उभय न देखिये देखिय सोइ अबिबेक ॥ ४० ॥

पराये हितके समान तोहे भरत धर्म नहींहे और पर पीड़ाके समान अधमता नहीं हे ॥ अष्टादशपुराणानि व्यासस्यबचनद्वयं परोपकारपुण्याय पापायपरपीडनं १ यह समस्त पुराण वेदोंका निर्णय मैंने तुमसे कहा इसको विद्वज्जन जानते हैं २ मनुष्य शरीर पाइ कर जो कोई औरोंको सतावते हैं तेमहा भारी नर्ककी भीर सहते हैं३ मोह के बश मनुष्य अनेक पाप करते हैं स्वार्थ में मग्न हैं परलोक नशाते हैं ४ अंत्यसमय पर मैं उनको काल रूप हो जाता हूं क्योंकि शुभ और अशुभ कर्मोंका फलदायक मैंही हूं ५ यही बिचारि कर जोपरम सयानेहैं ते इस संसारको अनित्य और दुखरूप जानि कर मेरीही शरण आते हैं शुभाशुभ दायक कर्मों को त्यागते हैं

और सुर नर मुनि नायक जो। मैं हूं उसीका सेवन करते हैं ६। ७ संत असंतोंके गुण जो मैंने तुमसे कहे जिन मनुष्योंने देखि राखे हैं ते संसार में नहीं परते हैं॥ ८॥ दोहा॥ सुनो हे तात मायाके किये गुण और दोष अनेक हैं उसमें गुण यहहै इन दोनों को न देखना देखनाही अज्ञान है॥ ४०॥

श्रीमुख बचन सुनत सब भाई। हरषे प्रेम न हृदय समाई १
करहिं बिनय अति बारहिं बारा। हनूमान हिय हर्ष अपारा २
पुनि कृपालु निजमंदिर गये। यहिं बिधि चरित करतनितनये ३
बार बार नारदमुनि आवहिं। चरित पुनीत रामके गावहिं ४
नित नव चरितदेखि मुनिजाहीं। ब्रह्मलोक सब कथाकहाहीं ५
सुनिबिरंचिअतिशयसुखमानहिं। पुनिपुनितातकरहु गुणगानहिं
सनकादिक नारदहि सराहीं। यद्यपि ब्रह्म निरतमुनि आहीं ७
सुनिगुणगान समाधिबिसारी। सादरसुनहिंपरम अधिकारी ८
दो० जीवन मुक्त ब्रह्म पर चरित सुनहिं तजि ध्यान।
जे हरि कथा न करहिं रति तिनके हिय पाषाण॥ ४१॥

श्रीमुख भगवन्मुखके बचन सुनतेही सब भाई हर्षित होगये प्रेम हृदयमें नहीं समाता है १ बारंबार स्वामीकी बिनती करते हैं और हनुमानके हृदयमें तोअपार आनन्द हुआ कि स्वामी अपने भक्तोंकी प्रशंसा अपनेही मुखसे करते हैं २ फिरितो कृपालु रामचन्द्र स्वामी मंदिरको पधारे और नित्य नवीन ऐसेही चरित्र करते हैं ३ नारदमुनि बारंबार अयोध्यामें आते हैं और रामचन्द्र के गुण गाते हैं ४ नित्यनवीन चरित्र स्वामीके देखि जाते हैं ब्रह्मलोकमें जाकर सब कथा कहते हैं ५ रामचन्द्रके चरित्रोंको सुनि कर ब्रह्मा बड़ा सुख पाते हैं और कहते हैं हे पुत्र फिरि फिरिमेरे को स्वामीके चरित्र सुनाओ ६ सनकादिक भी नारदकी प्रशन्सा करते हैं यद्यपिब्रह्म परायण हैं ७ रामचंद्रके परम पावन चरित्रोंको समाधि छोड़ि कर परम अधिकारी जन श्रवण करते हैं॥ ८॥ दोहा॥ जीवन्मुक्त और ब्रह्म परायण भी रामचंद्र के चरित्रोंको अपने अपने ध्यान छोड़ि छोड़ि कर श्रवण करते हैं ऐसे मनोहर भगवच्चरित्रोंमें जो लोग प्रीति नहीं करते हैं उन के हृदय पाषाणोंके समान जड़ जानो ४१॥

एक बार रघुबीर बुलाये। गुरु द्विज पुर बासी सब आये १
बैठे गुरु मुनि अरु द्विज सज्जन। बोलेबचन भक्तभय भंजन २
सुनहु सकल पुरजन ममबानी। कहहुं नकछुममताउरआनी ३

नहिं अनीतिनहिं कछुप्रभुताई । सुनहु करहु जो तुमहिं सुहाई ४
सोइ सेवक प्रियतम ममसोई । मम अनुशासन मानहि जोई ५
जो अनीति कछु भाखहु भाई । तोमोहिं बर्जहु भय बिसराई ६
बडे भाग्य मानुष तन पावा । सुर दुर्लभ सब ग्रंथन गावा ७
साधन धाम मोक्ष कर द्वारा । पाइ न जेहि परलोक संभारा ८
दो० सो परंतु दुख पावहि शिर धुनि धुनि पछिताइ ।
कालहिं कर्महिं ईश्वरहिं मिथ्या दोष लगाइ ॥ ४२ ॥

एक समय रामचन्द्र के बुलाये भये वशिष्ठ और सब द्विजदेव और समस्त पुरवासी राजसभा में आये १ तहां गुरु मुनि द्विज देव सज्जन सब बैठे तब भक्तभयभंजन रामचन्द्र बचनबोले २ हे समस्त पुरबासी मेरे बचनमन लगाकर सुनो मैंकुछ ममता से नहीं कहता हूं ३ अनीति नहीं कहता हूं प्रभुता नहीं जानता हूं सुनो करना तब जब तुमको सुहावे ४ सोई मेरा सेवक और अति प्यारा होगा जो मेरा अनुशासन मानेगा ५ और जो मैं कुछ अनीति कहूं तो मेरेको भय छोड़ि कर बर्जि देना ६ बिचार करि देखो कि बड़ेही भाग्यसे यह मनुष्य शरीर मिला है देवताओं को भी दुर्लभ है ऐसा समस्त ग्रन्थ गावते हैं ७ कर्म, योग, तप, तीर्थाटन, दान ब्रत ज्ञान, बैराग, भक्ति, सब साधनों का धाम यही शरीर है और मोक्षकाभी यही द्वारा है सो शरीर पाकर जिसको परलोककी संभार न हुई ॥ ८ ॥ दोहा ॥ सोअंत्य कालमें दुख पाता है और शिर धुनि धुनि कर पछिताता है और काल कर्म ईश्वर को अपना दोष बृथा लगाता है ॥ ४२ ॥

यहि तन कर फल बिषय न भाई । स्वर्गहु स्वल्प अंत दुख दाई १
नरतन पाइ बिषय मन देहीं । पलटि सुधाते शठ बिष लेहीं २
ताहि कबहुं भल कहै किकोई । गुंजा गहै परस मणि खोई ३
आकर चारिलाख चौराशी । योनि भ्रमत यहजिय अबिनाशी ४
फिरत सदा माया कर प्रेरा । काल कर्म सुभाव गुण घेरा ५
कबहुं कि करि करुणा नर देही । देत ईश बिनु हेतु सनेही ६
नर तनु भव बारिधि को बेरो । सन्मुख मरुत अनुग्रह मेरो ७
कर्ण धार सद्गुरु दृढ़नावा । दुर्लभ साज सुलभ करि पावा ८
दो० जो न तरै भवसागरहिं नर समाज अस पाइ ।

सोकृत निंदक मंदमति आतम हनगति जाइ ॥ ४३ ॥

इससर्वोत्तम मनुष्य शरीरका फल बिषय भोगही नहीं है क्योंकि बिषय भोग तो खरकूकर शूकरादि शरीरोंही कोंहै मनुष्यशरीरका तो ब्रह्मलोकादि का प्राप्तहोना भी अति अल्पफल है अंतको दुखही देता है क्षीणेपुण्ये मृत्युलोकेबिशंति ९ ऐसा उत्तम मनुष्य शरीर पाकर जो बिषयाशक्तही रहते हैं तेशठमानों अमृतके पलटे बिषग्रहण करतेहैं २ उसको हेभाइयो कोईभी कभी भलाकहता है जोपारस को फेंकिकर गुंजा घुंघुची चिरिमिठी को लेलेताहै ३ देखोचारि खानिकी चौराशी लाख योनिमें यह अबिनाशी जीवभ्रमा करताहै ४ कालकर्म स्वभाव गुणोंसे घिरा माया प्रेरित भ्रमाकरता है ५ कभी अकारण कृपालु ईश्वर अपनी अहेतुकी कृपा कटाक्ष से देखि कर उसको मनुष्य शरीरदे देताहै ६ तबउस जीवने संसार सागर तरनेका मनुष्य शरीरतो जलयान पाया औरमेरी कृपा सन्मुख पवनपाई ७ सद् गुरु भगवत्संबंधी कुशल कर्णधारकेवट पाये ऐसा अतिदुर्लभ साज भगवत्कृपासे उसकोसुलभहोगया ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जो नर ऐसे उत्तम समाजको भीपाकर इससंसारसागरके पारनजावै सोअधम बड़ाही कृतनिन्द कहै मंदमति है उसने ईश्वर के इतने बड़े उपकार को कुछ नहीं माना आत्मघात गतिको जाताहै ४३ ॥ भागवते ॥ नृदेहमाद्यंसुलभंसुदुर्लभंप्लव सुकल्पं गुरुकर्णधारंमय नुकूलेननभस्वतरितंपुमान्भवाब्धिंनतरेत्सआत्महा ॥

जोपरलोक यहांसुख चहहू । सुनि मम बचनहृदय दृढ़गहहू १
सुलभ सुखद मारग यहभाई । भक्तिमोरि पुराण श्रुति गाई २
ज्ञान अगम प्रत्यूह अनेका । साधन कठिन न मन कहं टेका ३
करै कष्ट बहु पावै कोऊ । भक्ति हीन प्रिय मोहिं न सोऊ ४
भक्तिस्वतंत्र सकल गुणखानी । बिनु सतसंग नपावहिंप्रानी ५
पुण्यपुंज बिनु मिलहिं नसंता । सतसंगति संसृतिकर अंता ६
पुण्य एक जगमहं नहिंदूजा । मनक्रम बचन बिप्र पद पूजा ७
सानुकूल तेहिं पर मुनि देवा । जो तजि कपट करै द्विज सेवा ८
दो० औरहु एक गुप्त मत सबहिं कहौं करजोरि ।
शंकर भजन बिनानर भक्ति न पावहि मोरि ॥ ४४ ॥

तातेंतुम सब जोइस लोकऔर परलोक दोनों लोकोंमें सुख चाहतेहो तोमेरेवचनों कोसुनिकर हृदयमें दृढ़गृहण करो १ सुनोहे भाइयो मैं तुमसब को अति तो सुलभ औरसुखदायक यह मार्ग बतावताहूं किमेरी भक्तिको सबगृहण करो जोवेद पुराणोंमें गाईहै २ ज्ञानमार्ग भी कैवल्यमुक्ति दायकहै परंतु अगम अतिकष्ट साध्यहै और उसमें

अनेक विघ्न हैं और साधनभी उसके महा कठिनहैं मनको कुछभी अवलंब नहींहै ३ अतिकष्ट करनेसे घुनाक्षर न्यायको नाईं कोई बिरला पाताहै भक्ति बिहीनसोभी मेरे को प्रियनहीं लगताहै ४ भक्तिमेरी स्वतंत्रहै समस्त गुणोंकी खानिहै सोभक्ति संतोंके संग बिनानहीं मिलती है ५ पुण्योंके पुंजबिना संतोंका संगनहीं मिलताहै जिस सत् संगतिसे संसारके दुःखोंका अंत होजाताहै ६ सोपुण्य संसारमें एकहीहै दूसरा नहींहै मन,क्रम, बचनसे द्विजदेवोंके चरणोंका सेवन ७ मोसमेत ब्रह्मा शिवादि सबदेवमुनि उसपर सानुकूल रहतेहैं जो निःकपट द्विजदेवोंकी सेवाकरताहै ॥ ८॥ दोहा ॥ और भी एकगुप्त मतमैं तुमसबसे हाथजोरिकर कहताहूं शिव के अवराधन बिना मनुष्य मेरी भक्तिनहीं पातेहैं ॥ जेहिपर कृपा न करहिं पुरारी सोनपाव मुनिभक्ति हमारी ॥ शंकरस्यतुयोभक्तः सप्तजन्मांतरंनरः तस्यैवतुप्रसादेनविष्णुभक्तिंप्रजायते ॥ ४४ ॥

कहहुभक्तिपथकवनप्रयासा । योगन मख जप तप उपबासा १
सरल स्वभाव न मन कुटिलाई । यथा लाभ संतोष सदाई २
मोरदास कहाइ पर आशा । करहि तो कहहु काह विश्वासा ३
बहुत कहहुं का कथा बढ़ाई । येहि आचरण बश्य मैं भाई ४
बैरन बिग्रह आशन त्राशा । सुखमय ताहि सदा सब आशा ५
अनारंभ अनिकेत अमानी । अनघ अरोष दक्ष बिज्ञानी ६
प्रीति सदा सज्जन संसर्गा । तृणसम बिषय स्वर्ग अपबर्गा ७
भक्ति पक्ष हठ नहि शठताई । दुष्ट तर्क सब दूरि बहाई ८
दो० मम गुण ग्राम नामरत गत ममता मद मोह ।
ताकर सुख सोइ जानै परानन्द सन्दोह ॥ ४५ ॥

कहोतो भला भक्तिमार्ग में कौनबात प्रयासहै नतो शम १ दम २ नियम३ आसन ३ प्राणायाम ४ प्रत्याहार ५ ध्यान ६ धारणा ७ समाधि ८ अष्टांग योग करने परता है नकोई यज्ञ की आवश्यकताहै नजपतपव्रत चाहिये १ सरल सुभाव रहना मन में कुटिलता न रखना यथा लाभ में सदा संतोष करना चाहिये २ मेरा दास होकर दूसरे की आशाकरै तौकहो उसको मेरा कौन बिश्वास है यावदन्याश्रयस्तावत्भगवानपितंजनं बिलोकयेन्नकृपयाह्यनन्यजनवत्सलः अर्थात् जबतकजोकोई अन्यदेव काभी आश्रित रहताहै भगवान्भी तबतक उसको कृपासे नहीं देखतेहैं क्योंकि अनन्य जनवत्सलहैं सेवकप्रिय अनन्य गतिसोई३ बहुत बिस्तार क्याकरूं इनआचरणों के सदा बश रहताहूं ४ नतो किसीसे बैर बिरोध राखै न किसीकी आशा औरभय करै उसको दशहूं दिशा आनन्दमय होती हैं ५ अनारंभ सर्व संकल्प संन्यासी रहै

गृहाशक्त न रहै मानरहित पाप बर्जित क्रोध रहित चतुरहो स्वस्वरूप परस्वरूप का ज्ञाताहो ६ भगवज्जनों की संगति से प्रीति राखै नर्क, स्वर्ग, अपवर्ग को समान जानै नर्कस्वर्ग अपबर्ग समाना ७ भक्तिपक्ष का हठ राखै ॥ त्रिभुवनविभवहेतवे प्यकुंठस्मृति जितआत्मसुरादिभिर्बिमृग्यात् नचलतिभगवत्पदारविन्दाल्लवनिमिषार्द्ध मपिसवैष्णवाग्र्यः शाठ्यनकरैदुष्टतर्कोवितंडाबादको दूरिकरै ८ ॥ दोहा ॥ मेरे गुणग्राम मेरे नामों में सदा रत रहै ममता, मद, मोह से बिगत रहै इस रस का सुख सो जानता है जो ब्रह्मानन्द का भक्त होताहै ॥ ४५ ॥

सुनत सुधा सम बचन रामके। गहे सबहिं पद कृपाधाम के १
जननि जनक गुरु बंधु हमारे। कृपानिधान प्राणते प्यारे २
तनधन धाम राम हितकारी। सबबिधितुम प्रणतारति हारी ३
अस शिष तुमबिनदेइनकोऊ। मातु पिता स्वारथ रत ओऊ ४
स्वारथ मीत सकल जगमाहीं। सपनेहुं प्रभु परमारथ नाहीं ५
हेतु रहित जग युग उपकारी। तुम तुम्हार सेवक असुरारी ६
सबके बचन प्रेम रससाने। सुनि रघुनाथ हृदय हरषाने ७
निजनिज गृह गे आयशु पाई। बरणत प्रभु बतकही सुहाई ८
दो० उमा अवध बासी नर नारि कृतारथ रूप ॥
ब्रह्म सच्चिदानन्दघन रघुनायक जहं भूप ॥ ४६ ॥

ऐसे आत्महित अमृत के समान मधुर रामचन्द्र के बचन सुनतेही सबों ने दौरिदौरि कर चरण पकरिलिये और बोले १ हे स्वामी हमकोतो हमारे माता पिता गुरुभाई आपही जानिपरे और प्राणों से भी प्यारेलगे २ तनऔर धनधाम औरहित-कारी सब प्रकार हे प्रणतार्त्तिहरण स्वामी हमारेतो आपही हो ३ ऐसी हित की शीक्षातो आपके बिना कोईभी नहींदेताहै माता पिताभी स्वार्थरत होतेहैं ४ संसार में सबस्वार्थहीके मित्र हैं परमार्थके कोईभी नहींहैं ५ निर्हेतु उपकारीतो इससंसार में दोहीहैं एक आप दूसरे आपके भक्त तीसरा कोईनहींहै ६ ऐसे प्रेम भरे सब प्रजा के बचन सुनिकर श्रीरामचन्द्र हृदय में बड़े हर्षित हुये ७ फिरितो आज्ञा पाइ कर अपने अपने घरोंको गये मार्ग में रामचन्द्र की सुन्दर सुहाई बतकही की प्रशंसा करते जातेहैं ८ ॥ दोहा ॥ अयोध्याबासीतो नारिवानर हेपार्बती सब मुक्तिरूपहीहैं सच्चिदानन्द परिपूर्ण ब्रह्म श्री रघुनाथ जहांके राजाहैं ॥ ४६ ॥

एक बार बशिष्ट मुनि आये। जहां राम सुख धाम सुहाये १
अतिआदर रघुनायक कीन्हा। पद पखारि पादोदक लीन्हा २

राम सुनहु मुनि कह करजोरी। कृपासिंधु यक बिनती मोरी ३
देखि देखि आचरण तुम्हारा। होत मोहं मम हृदय अपारा ४
महिमा अमितवेद नहिंजाना। मैंकेहिं भांतिकहहु भगवाना ५
उपरोहिती कर्म अति मन्दा। वेद पुराण स्मृति कह निन्दा ६
जबन लेउं मैं तबबिधि मोहीं। कहा लाभ आगे सुत तोहीं ७
परमात्मा ब्रह्म नर रूपा। होइहि रघुकुल भूषण भूपा ८
दो० तब मैं हृदय बिचारेउं योग यज्ञ व्रत दान।
जाकहं करिय सो पाइहौं धर्म न यहिसम आन ॥ ४७॥

एक समय गुरु वशिष्ठमुनि जहां श्रीरामचन्द्र अपनेसुख मन्दिरमें विराजेहैं तहां एकान्त में पधारे १ रामचन्द्रने गुरुदेव को आया जानि कर उठिकर बड़ा आदर सन्मान किया चरण प्रक्षालन करिके श्रीपाद तीर्थ लिया २ इस कथनसे लक्षितहोता है कि सीताजी का प्रयाण हो चुका है ऐसे आचरण ब्रह्मादि सेव्य स्वामीके देखि कर वशिष्ठने कर जोरि कर कहा कि हे राम आपके ये आचरण देखिकर मेरे को अपार मोह होता है ३ । ४ आपकी अपार महिमाको वेदभी तो नहीं जानते हैं मैं कौन भांति कहि सकता हूं ५ यह मेरा उपरोहिती कर्म महामन्द होता है श्रुति स्मृति पुराण सब इसकी निन्दा करते हैं जब मेरे पिता ब्रह्माने यह कर्म मेरे को कल्पना किया और मैंने अंगीकार न किया तब ब्रह्माने मेरेको समुझाकर कहा हे पुत्र तेरेको इसमें बड़ाही लाभ होगा ६ । ७ परमात्मा परात्पर ब्रह्म इस सूर्य्यवंशमें नररूप रघुकुलका आभूषण राजाधिराज होगा ॥ ८ ॥ दोहा ॥ तब मैंने सोचा कि जिस ईश्वरकी प्राप्तिके लिये महा कठिन योग यज्ञ, जप, तप, व्रत, दानादि कियेजाते हैं सो मेरेको इस कर्ममें अनायासही मिलेगा तो इसके समान और कोई धर्म मेरे को कर्त्तव्य नहीं है ॥ ४७ ॥

जप तप योग यज्ञ निज धर्मा। श्रुति संभव नाना शुभकर्मा १
ज्ञानदयादम तीरथ मज्जन। जहंलगि धर्म कहतश्रुतिसज्जन २
आगम निगम पुराण अनेका। पढ़े सुने कर फल प्रभु एका ३
तवपद पंकजप्रीति निरंतर। सब साधनकर फलयह सुन्दर ४
छूटहि मल कि मलहिके धोये। घृतकि पाव कोउबारिबिलोये ५
प्रेम भक्ति जल बिनु रघुराई। अभ्यन्तर मल कबहुं न जाई ६
सोइ सर्बज्ञ तज्ञ सोइ पंडित। सोइ गुणज्ञ बिज्ञान अखंडित ७

दक्ष सकल लक्षण युत सोई । जाके पद सरोज रति होई ८
दो० नाथ एक बर मांगहुं राम कृपा करि देहु ।
जन्म जन्म प्रभु पद कमल कबहुं घटै जनि नेहु ॥ ४८ ॥

जप, तप, योग, यज्ञ, निज धर्म कहें वर्णाश्रमधर्म और भी वेद विहित अनेक शुभकर्म ज्ञान, दया, इन्द्री, दमन, तीर्थ स्नान जहां तक धर्म श्रुति सत्पुरुष कहते हैं १ । २ आगम, शास्त्र, तंत्र, निगम, वेद और सब पुराण इतिहासों के पढ़ने और सुननेका फल एकही है ३ आपकेचरण कमलों में निरंतर प्रेम होना सब साधनोंका यही सुन्दर फल है नहीं तो ये सब साधन केवलश्रमदायकही हैं ॥ जोपै जियजानकीनाथनजाने तोसबधर्म कर्मश्रमदायकऐसहिंकहतसयाने ४ कर्मबासनाओं से मलिन मन कर्मोंहों से उज्वल नहीं हो सकता है मैल से धोने से जैसे मैल नहीं जाताहै ॥ कर्मकीचजियजानिसानिचितचाहतकुटिलमलहि मलधोयो ॥ जलके मथने से कोई घृत नहीं पाता है ५ प्रेम लक्षणा भक्ति रूपी जलबिना अंत:करणका मैल कभी नहीं जाता है ६ इस संसार में सोई तो सर्वज्ञहै सोईब्रह्मज्ञ है सोई बिद्वान् पंडित है सोई सर्व गुणोंका ज्ञाता है उसीका अखंड विज्ञान है ७ यद्यपि कुछ भी न जानता हो तथापि सोई दक्ष प्रवीण है पदसरोजके गुह्यार्थ से सोई समस्त भागवत् लक्षणों करिके संपन्न है जिसको आपके चरण पंकजों में प्रेमहै ॥ ८ ॥ दोहा ॥ ताते हे स्वामी मैं आपसे यही एक बर मांगता हूं कि जन्मजन्म आपके पद पंकजों का प्रेम मेरे हृदयसे कभी न घटै क्योंकि जो आपका प्रेमहै तोसर्ब गुण हैं प्रेम बिना गुणभी बृथा ॥ आराधितोयदिहरिस्तपसाततःकिं नाराधितोयदिहरिस्तपसा तत;किं अंतर्गतोयदिहरिस्तपसाततःकिं नांतर्गतोयदिहरिस्तपसाततःकिं ॥ ४० ॥

असकहि मुनि बशिष्ट गृह आये । कृपासिंधुके मनअति भाये १
हनूमान भरतादिक भ्राता । संग लिये सेवक सुखदाता २
पुनि कृपालु पुर बाहिर गये । गज रथ तुरंग मंगावत भये ३
देखिकृपाकरि सकलसराहे । दियेउचित जिन जिन जोचाहे ४
हरण सकल श्रम प्रभु श्रमपाई । गये जहां शीतल अमराई ५
भरत दीन्ह निज बसन डसाई । बैठे प्रभु सेवहिं सब भाई ६
मारुत सुत तब मारुत करई । पुलकि बपुष लोचनजलभरई ७
हनूमान सम नहिं बड़भागी । नहिंकोउ रामचरण अनुरागी ८
दो० तेहि अवसर मुनि नारद आये करतल बीन ।

गावन लागे रामकी कीरति सदा नवीन ॥ ४६ ॥

ऐसा बर मांगि कर बशिष्ठ मुनि तो अपने आश्रम को आये कृपासिंधु रामचन्द्र को अति प्यारे लगे १ फिरि तो सेवक सुखदायक राम ने हनुमान और भरतादिक भाइयों को साथलिया और नगरके बाहर गये तहां हाथी रथ घोड़ा सबमंगाये २।३ सबकोदेखा और सराहा फिरि जिसने जो मांगे सोई उसको दिये ४ सबके श्रमहरण स्वामी आप श्रम पाकर शीतल पुष्प वाटिका को चलेगये ५ भरत ने अपना बस्त्र बिछादिया उसपर रामचंद्र बैठे और सब भाई सेवा कररहे हैं ६ पवनपुच हनुमान पवन करि रहे हैं पुलकित शरीर और नेत्रोंसे प्रेमका जल बहा चला जाता है ७ हनुमान के समान न कोई बड़भागी है न कोई रामचरण का अनुरागी है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ उसी समय नारद मुनि तहां हाथमें सुन्दर बीणा लिए आये और नित्य नवीन स्वामीकी सुन्दर कीर्त्ति गाने लगे ॥ ४६ ॥

मामवलोकय पंकज लोचन । कृपा बिलोकनि सोचबिमोचन १
नीलतामरस श्याम कामअरि । हृदय कंजमकरंद मधुप हरि २
यातुधान बरूथ बल भंजन । मुनिसज्जन रंजन अघ गंजन ३
भूसुरनव शशिवृन्द बलाहक । अशरण शरण दीनजनगाहक ४
भुजबल बिपुलभारमहिखंडित । खर दूषणबिराधबध पंडित ५
रावणारि सुख रूप भूपवर । जयदशरथ कुलकुमुदसुधाकर ६
सुयशपुराण बिदितनिगमागम । गावतसुरमुनिसंतसमागम ७
कलिमलमथनमानममताहन । तुलसिदासप्रभुपाहिप्रणतजन ८
दो० प्रेम सहित मुनि नारद बरणि राम गुण ग्राम ।
शोभा सिंधु हृदय धरि गये जहां बिधि धाम ॥ ५० ॥

हे राजीव लोचन राम हे सोच बिमोचन स्वामी कृपादृष्टि से मां अवलोकय मेरे को देखिये १ नीलकमल के समान सुन्दर श्याम और महादेव के हृदय कमल की मकरंद भ्रमर स्वामी कृपादृष्टिसे देखिये २ राक्षसोंके समूहोंके बल भंजन मुनिसज्जनों के मन रंजन अघगंजन स्वामी मेरेको कृपादृष्टि से देखिये ३ द्विजदेवोंके बृन्दरूपा खेतीके मेघ हे अशरण शरण हे दीनजन गाहक स्वामीमेरी ओर कृपादृष्टिसे देखिये ४ अपनी भुजोंके अतोल बलसे पृथिवी के भारखंडन हे खर दूषण बिराध के बध में कुशलस्वामी हमारी ओर देखिये ५ हे रावणारि हे सुखरूप हे राजाधिराज हे दशरथ कुल कुमुद के चन्द्रमा आपकी जय ६ आप का सुयशवेद पुराणों में बिदित है सुर मुनि संत सब गावते हैं ७ हे कलिमल मथन हे मान,ममताहन हे तुलसीदास के

प्रभु प्रणत जनों की रक्षा कीजिये ॥ ८ ॥ दोहा ॥ इस प्रकार प्रेम समेत नारद मुनि श्री रामचन्द्र के गुणों का बखानि कर और शोभा सिंधु स्वामीकी मनोहर मूर्त्ति को हृदयमें धारण करिके ब्रह्मलोकको गये ॥ ५० ॥ यह उत्तरकांड का प्रथम खंडहुआ यहां छन्द कहना चाहता रहा परंतु रामचन्द्रकी गुप्त याचाके प्रसंगसे गुसाईंजी के चित्तको उत्साह न रहा इस कारण नहीं कहा ॥

गिरिजा सुनहु बिशद यहकथा । मैंसब कही मोरि मति यथा १
राम चरित शत कोटि अपारा । श्रुति शारदा न बरणै पारा २
जलशीकर महिरजगणिजाहीं । रघुपतिचरितनबरणिसिराहीं ३
बिमल कथा हरि पद दायिनी । भक्ति होय सुनि अनपायनी ४
उमा कहेउँ सोकथा सुहाई । जो भुसुण्डि खगपतिहिं सुनाई ५
कछुक रामगुण कहेउंबखानी । अबकाकहहुं सोकहहु भवानी ६
सुनि शुभ कथा उमाहरषानी । बोली अति बिनीत मृदुबानी ७
धन्य धन्य मैं धन्य पुरारी । सुनेउं राम गुण भव भय हारी ८
दो० तुम्हरी कृपा कृपायतन अब कृत कृत्य न मोह ।
जानेउं राम प्रभाव प्रभु चिदानन्द सन्दोह ॥ १ ॥

सुनो हे पार्बती यहअति निर्मल रामकथा मैंने अपनी बुद्धि समाती तुमसेकही है और रामचरित्र तो अपार शतकोटि उनको तो स्वयं शारदा और अनन्त वेदभी नहीं कहि सक्ते हैं १ । २ जलके कण और पृथिवीकी रज आकाश के नक्षत्रतो गने भी जावें परंतु श्रीरामचन्द्रके चरित्रों का पार नहीं गिनि सकता है रामसहिम्नेऽक्षदा चिद्भैमान्वैगणयतिकश्चान्कोऽपसतिमान्तथापारावारोदकलवचयान्वैरघुपतेःक्वचिन्नव-चौघंवियतिगणनायान्नियतिवै गुणानांतेपारंगमयितुमलंनैवकुशलाः ३ यह निर्मल कथा मुक्तिकी दाता है और अनपायनी भगवद्भक्तिकी भी दाता है ४ अनन्त राम कथाओं में से हे पार्बती मैंने तुमसे सोकथा कहीहै जो कागभुसुंडिने भगव त्पारपदोत्तम श्री गरुड़को सुनाई है ५ कुछ थोरेमे रामचरित्र मैंने तुम से कहे हैं अब तुम और क्या सुना चाहती हो हे पार्बती सो कहो ६ ऐसी शुभ कथा सुनिकर पार्बती अति हर्षित हुई और अति नम्र कोमल बाणी बोली ७ हे त्रिपुरमर्दन स्वामी मैं धन्य हूं धन्य हूं अति धन्य हूं जो मैंने भवभयहरण राम चरित्र आप के मुखसे श्रवण किये ॥ ८ ॥ दोहा ॥ आपकी कृपा से हे कृपायतन स्वामी मैं कृत कृत्य हुई मोह मेरासब दूरिहुआ औरमैंने रामका प्रभाव जानिलिया कि सच्चिदानन्द संदोहहैं ॥ १ ॥

दो० नाथ तवानन शशि श्रवत कथा सुधा रघुवीर ।

श्रवण पुटनि मन पान करि नहिं अघात मति धीर

राम चरित जे सुनत अघाहीं । रस बिशेष जानातिन नाहीं १
जीवन मुक्त महा मुनि जेऊ । हरिगुण सुनहिं निरंतर तेऊ २
भव सागर चहपार जो पावा । राम कथा ता कहं दृढ़ नावा ३
बिषयनकहंपुनिहरिगुणग्रामा । श्रवणसुखदअरुमनअभिरामा ४
श्रवणवंत अस को जगमाहीं । जाहिनरघुपति चरितसुहाहीं ५
तेजड़ जीव निजातम घाती । जिनहिंन रघुपति कथासुहाती ६
राम चरित मानस तुमगावा । सुनिमैं नाथ अमित सुखपावा ७
तुमजो कहाहरि कथा सुहाई । काग भुसुंडि गरुड़ प्रतिगाई ८

दो० बिरति ज्ञान बिज्ञान निधि राम चरण अति नेह ।
बायसतन रघुपति भगति मोहि परम संदेह ॥ २ ॥

परंतु हे नाथ आपके मुख चंद्रमासे जो रामकथामृत श्रवताहै उसको कर्णसंपुट द्वारापान करिकै मेरा मन अघाताही नहीं है॥ चौपाई॥ भगवच्चरित्रों को सुनिकर जो कोई अघायजाते हैं उन्हों ने उसका बिशेष रसनहीं जाना है ॥ १ ॥ क्योंकि बद्ध मुमुक्षु जीवन्मुक्त तीनों प्रकारके जीव हैं उनमें जो जीवन्मुक्त महा मुनीश्वर सनकादि नारदादि हैं ते भी भगवच्चरित्रों को निरंतरश्रवण करते हैं २ और जो मुमुक्षु शौनकादि संसार सागर तराचाहते है उनको तौरक भगवत्कथाही दृढ़नौका है ३ फिर विषयी जो बद्ध जीव हैं उनको भी भगच्चरित्र श्रवण सुखदायक हैं ॥ ४ ॥ श्रवण वंतते ऐसा संसारमें कौनहै जिसको भगवद् गुणानुवाद न सुहावै ॥ ५ ॥ ऐसे लोकाभिराम रामचरित्र जिनको न सुहावैं उनको जड़ जीव पशु वा आत्म घातीही जानना चाहिये ॥ निवर्त्ततर्षै रुप गीयमानाद् भ वौषधाच्छ्रोत्र मनोभिरामात् कउत्तम श्लोकगुणानुवाद त्पुम न्विरज्जेत विनापशुघ्नात् ६ यह जो रामचरित्रमानस आपने कहा सो तौ सुनिकर हे नाथ मैंने बड़ाही सुखपाया ॥ ७ ॥ पीछेसे आपने जो कहा कि यह चरित्र कागभुसुंडिने गरुड़से कहाहै ॥ ८ ॥ दोहा ॥ काकयोनि में ज्ञान वैराग का निधान राम सनेही होना औरअत्यंत दुर्लभ रामभक्त का पाना यह तौ मेरेको अतिही संदेहहै ॥ २ ॥

नर सहस्रमहं सुनहु पुरारी । कोउ एक होइ धर्म ब्रत धारी १
धर्मशील कोटिन महं कोई । बिषय बिमुख बिराग रत होई २
कोटि बिरक्तमध्यश्रुतिकहहीं । सम्यक्ज्ञानसुकृति कोउलहहीं ३

ज्ञानवंत कोटिन महं कोऊ । जीवन्मुक्त सुकृति जग सोऊ ४
तिन सहस्त्रमहं सब सुख खानी । दुर्लभ ब्रह्मलीन बिज्ञानी ५
धर्मशील बिरक्त अरु ज्ञानी । जीवन्मुक्त ब्रह्म पर प्रानी ६
सबते दुर्लभ जोसुर राया । राम भक्ति रत गत मद माया ७
सोहरि भक्ति कागकिमि पाई । बिश्वनाथ मोहिं कहहु बुझाई ८
दो० राम परायण ज्ञान निधि गुणागार मति धीर ।
नाथ कहहु केहि कारण पायो काग शरीर ॥ ३ ॥

क्योंकि सहस्रों मनुष्योंमें तोहे स्वामी कोई बिरलाही धर्मशील होताहै १ कोटि धर्मारूढ़ोंमें कोईएक विषय बासनाही बिरक्त होताहै २ कोटि बिरक्तों में कोई एक सुकृतीयथार्थ ज्ञान पाताहै ३ कोटि ज्ञानियों में कोई सुकृती जीवन्मुक्त होताहै ४ सहस्रों जीवन्मुक्तोंमें समस्त सुखकी खानि अति दुर्लभ ब्रह्मलीन बिज्ञानी होताहै ५ धर्मशीलोंसे दुर्लभ बिरक्त होतेहैं बिरक्तोंसे दुर्लभ ज्ञानी होते हैं ज्ञानियों से दुर्लभ जीवन्मुक्त होतेहैं जीवन्मुक्तोंसे दुर्लभ ब्रह्म परायण बिज्ञानी होतेहैं ६ इन सबसे दुर्लभ हे देवदेव रामभक्तिरत मदमाया रहितहोताहै गीतायां ॥ मनुष्याणांसहस्रेषुकश्चिद्यततिसिद्धयेयततामपिसिद्धानांकश्चिन्मांवेत्तितत्वत: ७सो मुनिदुर्लभ भगवद् भक्ति काकने कैसेपाई हे बिश्वनाथ स्वामी यहतो मेरेको आप समुझायकर कहिये ॥ ८ ॥ दोहा ॥ राम परायण औरज्ञान निधान गुणोंका भवन मतिका धीर उसने हे नाथ कहिये कौनकारणसे काक शरीरपाया ॥ ३ ॥

यहप्रभु चरित पवित्र सुहावा । कहहु कृपालुकागकिमिपावा १
तुमकेहिंभांति सुना मदनारी । कहहु मोहि कौतुक अतिभारी २
गरुड़ महा ज्ञानी गुणराशी । हरि सेवक अतिनिकट निवाशी ३
तेहिंकेहिं हेतु काग सनजाई । सुनी कथामुनि निकरबिहाई ४
कहहुकवनबिधि भासंबादा । दोउ हरि भक्तकाग उरगादा ५
गौरि गिरा सुनि सरल सुहाई । बोले शिव सादर सुख पाई ६
धन्य सती पावनमति तोरी । रघुपति चरण प्रीति नहिं थोरी ७
सुनहु परमपुनीत इतिहासा । जोसुनि होइ शोक भ्रम नाशा ८
दो० ऐसेहि प्रश्न बिहंगपति कीन्ह काग सनजाइ ।
सोसब सादर कहहुं अब सुनहु उमा चितलाइ ॥ ४ ॥

यह रामचरित्र परमपावन अतिसुन्दर हेकृपाल स्वामी काकने कैसे पाया १ और आपने कौनभांति भुसुण्डिके मुखसे सुना सोकहिये मेरेको अतिभारी आश्चर्य्य है २ गरुड़तो महाज्ञानी और गुण राशिहैं हरिसेवकहैं अतिसमीप रहते हैं उन्होंने कौन कारणकाकसे जाकर मुनीश्वरोंके वृंदोंको छोड़िकर कथासुनी ३ । ४ यहभी कहोकौन प्रकार उनका संवादहुआ दोनों कागभुसुंडि और उरगाद गरुड़ भगवद् भक्तहैं ५ ऐसी सुन्दर पार्वतीकी वाणी अतिसरल सुहाई सुनिकर शिवजी बड़ा सुखपाइकर आदर समेत बोले ६ हेसती तेरी ऐसी पावन बुद्धि धन्यहैऔर रामचन्द्रके चरणोंमेंभी तेरी प्रीति थोरीनहींहै किंतु बहुतहै ७ अबतुम यहपरम पवित्र इतिहास श्रवण करोजो सुनिकर शोकभ्रमका नाश होताहै ॥ ८ ॥ दोहा ऐसीही प्रश्न बिहंगपति गरुड़नेकाक भुसुंडिसे जाकर करी रहे सो अबमैं सब तुमसे कहता हूं चित्त लगाकर सुनो ॥ ४ ॥

मैंजिमिकथा सुनी भवमोचनि । सोप्रसंगसुनुसुमुखिसुलोचनि १
प्रथम दक्ष गृह तव अवतारा । सती नाम तब रहा तुम्हारा २
दक्ष यज्ञ तव भा अप माना । तब अति क्रोध तजे तुम प्राना ३
तब अति सोचभयो मन मोरे । दुखी भयउं बियोग प्रिय तोरे ४
गिरि सुमेरु उत्तर दिशि दूरी । नील शैल एक सुन्दर भूरी ५
तासु कनक मय शिखर सुहाये । चारि चारु मेरे मन भाये ६
तिन पर इकइक बिटप बिशाला । बट पीपर पाकरी रसाला ७
शैलोपरि सर सुन्दर सोहा । मणि सोपान देखि मन मोहा ८
दो० शीतल अमल मधुर जल जलज बिपुल बहुरंग ।
कूजत कलरव हंसगण गुंजत मंजुल भृंग ॥ ५ ॥

जिसप्रकार मैंने यह भवमोचनी कथा भुसुंडि के मुखसे सुनी प्रथम सो प्रसंग तुम सुनो १ पूर्वतुम्हारा जन्म दक्षप्रजापतिके घरहुआ तहां तुम्हारा नाम सती रहे २ दक्ष केयज्ञमें तुम्हारा अपमानहुआ तबअति क्रोधसे तुमने प्राणत्याग किया ३ तब अति ही सोच मेरे हृदय में हुआ और हे प्रिया तेरे बियोग से दुखी होगया ४ तब सुमेरुकी उत्तरदिशा में बहुतदूरि नीलनाम एक पर्वत महासुन्दर जो देखा ५ उसके सुवर्णमय सुहाये शिखिर चारिहैं सो देखिकर मेरेको बड़े सुन्दरलगे ६ उन चारों के ऊपर एकएक अतिबिशाल वृक्षहैं एकपर बटहै एकपर पीपरहै एकपर पाकरिहै एकपर रसाल है ७ पर्वतके ऊपरसुन्दर सरोवर है उसकी मणिमय सोपान बनीहैं और अति सुन्दर उसका बनावहै ॥ ८ ॥ दोहा ॥ शीतल निर्मल उसकाजलहै जिसमें अनेकरंग के कमल फूलेहैंउनपर हंसगण सुन्दरशब्दसे कूजतेहैं औरउज्ज्वल भ्रमर गूंजते हैं ५ ॥

तेहिं गिरि रुचिर बसै खग सोई । जासु नाश कल्पांत न होई १
माया कृत गुण दोष अनेका । मोह मनोज आदि अबिबेका २
रहेजोब्यापिसमस्तजगमाहीं । तेहिगिरिनिकटकबहुनहिं जाहीं ३
तहंबसि हरिहिभजैजिमिकागा । सोसुनुउमासहित अनुरागा ४
पीपर तरु तर ध्यान सोधरई । जाप यज्ञ पाकरि तर करई ५
अंबु छांहकर मानस पूजा । तजि हरिभजन काजनहिं दूजा ६
बटतर कह हरिकथा प्रसंगा । आवहिं सुनन अनेक बिहंगा ७
जब मैं जाइ सो कौतुक देखा । उर उपजा आनन्द बिशेखा ८
दो० तब कछु काल मराल तन धरि तहं कीन्ह निवास ।
सादर सुनि रघुपति गुण पुनि आयउं कैलाश ॥ ६ ॥

उस परम रम्य पर्वतपर हे पार्वती सोई पक्षी रहताहै जिसका कल्पांतमें भी नाश नहीं होताहै १ मायाकृत दोषगुण मोह, काम, क्रोध, लोभादि जोसमस्त संसारमेंब्याप्त होरहेहैं उस पर्वतके समीप कभी नहीं जाते हैं २। ३ उस पर्वत पर रहिकर जिसप्रकार हे पार्वतीकागभुसुंडि भगवद्भंजन करताहै सोतुम प्रेमसमेत सुनो ४ पीपरके वृक्षके नीचेतो अति मनोहर बालरामरूप का ध्यान धरताहै जपरूप यज्ञपाकरीके नीचे करताहै ५ अंबकी छाया में मानसी पूजन करताहै भगवद्भजन बिना दूसरा प्रयोजन नहीं रखताहै ६ बटवृक्षके नीचे भगवत्कथा कहा करताहै तहां जाति जातिके अनेक पक्षी सुननेको आतेहैं ७ जबमैंने उस पर्वतपर जाकर ऐसा रहस्य देखा तब हृदय में बिशेष आनन्द उत्पन्न हुआ ॥ ८ ॥ दोहा ॥ तबतो कुछकाल हंसहोकर तहां मैंने निवास किया और प्रेमसमेत रामचरित्र मानस सुनिकर फिरि अपने कैलाश को चला आया ६ ॥

गिरिजाकहेउंसोसबइतिहासा । मैंजेहिंसमयगयउंखगपासा १
अबसो कथा सुनहु जेहिं हेतू । गयउ काग पहं खगकुल केतू २
जबरघुबीर कीन्हरण क्रीडा । समुझतचरित होति मोहिं ब्रीडा ३
इंद्रजीत कर आप बंधावा । तब नारद मुनि गरुड़ पठावा ४
बंधन काटि गयउ उरगादा । उपजा हृदय प्रचंड बिषादा ५
प्रभु बंधन समुझत बहु भांती । करत बिचार उरग आराती ६
ब्यापक ब्रह्म बिरज बागीशा । माया मोह पार परमीशा ७

सो अवतार सुना जगमाहीं । देखा सो प्रभाव कछु नाहीं ८

दो० भव बंधनते छूटहिं नर जपि जाकर नाम ।
खर्ब निशाचर बांधेउ नाग पाश सोइ राम ॥ ७ ॥

यह इतिहास तोहेपार्वती मैने तुमसे संपूर्ण कहा जिस समय में कागभुशुंडि के पास गयारहूं १ अबतुमवहकथासुनो जिसनिमित्त काग भुशुंडिके पास गरुडगये२ जिस समय श्रीरामचन्द्रने लंकामें रणलीला करी जिन चरित्रोंके समुझते मेरेको लाजहोती है३ मेघनादके हाथों से अपनेको बंधादिया तबनारदमुनिने गरुड़को भेजा४ गरुड़ने आकर नागबंधन तो काटिदिया परंतु हृदयमें बड़ाही बिषाद उत्पन्नहुआ ५ ईश्वर कोबंधन समुझते अनेक भांतिके बिचार गरुड करतेहैं कुछ समुझमें नहीं आतहै ६ जो ईश्वर बिश्वब्यापक ब्रह्म बिरज वाचस्पति माया मोहते पार परमेश्वर है उसका अवतार संसारमें हुआ सुना रहैसोप्रभावतो कुछदेखि नहींपरा ७ ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जिस ईश्वरके नामही को जपि कर जीव महाकठिन संसार बंधन को काटते हैं तिस ईश्वर कोतुच्छ राक्षसने नागपाशमें बांधिलिया यहतो असंभव देखिपरताहै ॥ ७ ॥

नाना भांतिमनहिं समुझावा । प्रगट न ज्ञान हृदय भ्रमछावा १
खेद खिन्न मन तर्क बढ़ाई । भयउ मोह बश तुम्हरी नाईं २
ब्याकुलगयउ देवऋषिपाहीं । कहेसि जोसंशय निज मनमाहीं ३
सुनिनारदहि लागि अतिदाया । खगसुनु प्रबलरामकी माया ४
जो ज्ञानिनक रचित अपहरई । बरियाईं बिमोह मन करई ५
जिहिं बहुबार नचावा मोहीं । सोइ ब्यापी बिहंग पति तोहीं ६
महा मोह उपजा उर तोरे । मिटिहि न बेगि कहे खग मोरे ७
चतुरानन पहं जाहु खगेशा । सोइ करेहु जो होइ निदेशा ८

दो० असकहि चले देवऋषि करत राम गुण गान ।
हरिमाया बल बरणत पुनिपुनि परम सुजान ॥ ८ ॥

इस प्रकार अनेक भांति से गरुड़ न मन को समुझाया कुछ भी बोध न हुआ हृदयमें भ्रमही छागया १ खेदखिन्न कहें हियेहार होगया मनमें अनेक तर्क बढ़ाने लगातुम्हारीहीनाईं पार्बती मोहबश वहभीहोगया२ महाब्याकुल नारदहीके पासगया और अपने मनका संदेह उनको सुनाया ३ सुनते ही नारदको अतिदया लगी और बोले सुनुहेगरुड़ हरिकी माया बड़ी प्रबलहै ४ जो ज्ञानियोंके चित्तको भीहरि लेती है ५ और बरियाईं उनके मनमें मोह कर देतीहै जिसने अनेक रमेरेना भीके बाच

नचाये हैं सोई भगवन्माया दुरत्ययतेरे को व्याप्तहुई है ६ महा मोहतेरे हृदयमें हेगरुड़ उत्पन्नहुआहै शीघ्रही मेरे समुझाने से नहीं मिटैगा ७ ताते हेगरुड़ अबतुम मेरे पिता ब्रह्माके पास जाओ जो ब्रह्मा आज्ञा करैं सो करना ॥ ८ ॥ दोहा ॥ ऐसे कहिकर देवर्षि नारद रामचंद्र के गुणोंका गानकरते हुये चले मार्गमें हरिकी मायाका बल बारंबार वर्णन करते चलेजातेहैं ८ ५

तब खगपति बिरंचि पहं गयऊ । निज संदेह सुनावत भयऊ १
सुनिबिरंचि रामहिं शिरनावा । सुमिरि प्रताप प्रेमअतिछावा २
मनमहं करहिं बिचार बिधाता । माया बशकबि कोबिदज्ञाता ३
हरिमाया कर अमित प्रभावा । बिपुल बारजेहिं मोहिं नचावा ४
अगजगमय सब मम उपराजा । नहिं आश्चर्य्य मोहखगराजा ५
तबबोले बिधि गिरा सुहाई । जानमहेश राम प्रभुताई ६
वैनतेय शंकर पहं जाहू । तात अनत जनि पूछेहु काहू ७
तहंहोइहि सब संशय हानी । चलेउ बिहंग सुनत बिधिबानी ८
दो० प्रेमातुर बिहंगपति तब आयउ मोहिं पास ।
जातरहेउं कुबेर गृह रहिहु उमाकैलास ॥ ६ ॥

तब तो खगपति गरुड़ ब्रह्मा के पास गये और अपना संदेह सुनाया १ सुनिकर ब्रह्मा ने राम को प्रणाम किया और राम का प्रभाव समुझि कर हृदय में प्रेम छागया २ अब तो ब्रह्मा मनमें बिचार करने लगे कि माया के बश कबिको-कोबिद ज्ञानी सबही हैं ३ हरि माया का अपार प्रभावहै बहुत बार जिस ने मेरे को भी नचाया है ४ फिरि यह स्थावर जंगम जीवों मय संसार तो मेराही उप जाया है कौन आश्चर्य्य है जो गरुड़ मोहिगया ५ यह विचारि कर ब्रह्मा गरुड़ से बोले कि महेश महादेव राम की प्रभुता को विशेष जानते हैं ताते हे गरुड़ तुम उन्हीं के पासजाओ और कहीं किसी से न पूछो ६ । ७ तहां तुम्हारी सबसंशय दूरिहोजावैगी तबतो गरुड़ ब्रह्मा की बाणी सुनिकर मेरे पास को चले ॥ ८ ॥ दोहा तब गरुड़ अति प्रेमातुर मेरे पास आया ता समय में कुबेर अपने मित्र के पास जातारहूं और तुम हे पार्बती कैलाश पररहीं ॥ ६ ॥

तिहिं मम पद सादर शिर नावा । पुनि आपन संदेह सुनावा १
सुनि ताकर बिनीत मृदुबानी । प्रेम सहित मैं कहा भवानी २
मिलेउ गरुड़ मारग महंमोहीं । कवन भांति समुझावहुं तोहीं ३

तबहि होइ सब संशय भंगा । जब बहु कालकरिय सतसंगा ४
सुनिये तहंहरि कथा सुहाई । नानाभांति मुनीशन गाई ५
जिहिमहं आदिमध्य अवसाना । प्रभुप्रतिपाद्यराम भगवाना ६
नितहरि कथा होइ जहंभाई । पठवउं तहांसुनहु तुमजाई ७
जाइहिं सुनत सकल संदेहा । रामचरण होइहि अतिनेहा ८
दो० बिनुसतसंगन हरिकथा तिहिबिनु मोहनभाग ।
मोहगये बिनुराम पद होइ न दृढ़ अनुराग ॥ १० ॥

उस ने आकर प्रेमसमेत मेरे चरणों को शिरनाया तिसपीछे अपना संदेह सुनाया १ उस की अति नम्र कोमल बाणी सुनिकर मैंने भी प्रेम समेत उससेहे पार्वती यह कहा २ कि हे गरुड़ तुमतो यहां मेरे को मार्ग में मिले यहां मैं तुमको कैसे समुझासक्ता हूं ३ समस्त संशयों का भंग तो तब होता है जब बहुत काल सतसंग किया जाता है ४ तहां नित्यहरि कथा सुनीजावे जो भांतिभांति से मुनीश्वरों ने गाई है ५ जिस में आदि से लेकर मध्य अवसान पर्य्यंत हरिही प्रतिपाद्य हैं जैसे वेदेरामायणेचैवपुराणेभारते तथा आदौमध्ये तथाचांते हरिस्सर्वत्रगीयते ६ तासे जहां नित्यहरि कथा होती है तहां मैं तेरे को भेजता हूं नित्यहरि चरित्र जाकर सुनो ७ सुनतेही तुम्हारे सब संदेह जाते रहैंगे और राम के चरणों में बड़ाही प्रेम होगा ॥ ८ ॥ दोहा ॥ क्योंकि सतसंग बिना तो हरि कथा का श्रवण नहीं होता है और श्रवण बिना मोह नहीं जाता है मोह गये विनारामचरणों में प्रेमनहीं होता है ॥ १० ॥ श्रुत्वाधर्मम्विजानाति श्रुत्वात्यजतिदुर्मतिं श्रुत्वाज्ञानमवाप्नोति श्रुत्वामोक्षंतुगच्छति

मिलहिं नरघुपति बिनु अनुरागा । किये योगजप ज्ञानबिरागा १
उत्तरदिशि सुन्दर गिरिनीला । तहंरह कागभुशुंडि सुशीला २
रामभक्ति पथ परम प्रवीना । ज्ञानीगुण गृह बहु कालीना ३
रामकथा सोकहै निरंतर । सादर सुनहिं बिबिधि बिहंग बर ४
जाय सुनहु तहं हरिगुण भूरी । होइहि मोह जनित दुखदूरी ५
मैं जबतेहि सब कहाबुझाई । चलेउ हर्षि ममपद शिरनाई ६
ताते उमा न मैं समुझावा । रघुपति कृपा मर्म मैं पावा ७
हरि माया बलवंत भवानी । जाहिन मोह कवन अस प्रानी ८

दो० ज्ञानी भक्त शिरोमणि त्रिभुवन पतिकर यान ।
ताहिमोह मायाप्रबल पामर करहिं गुमान ॥ ११ ॥

प्रेमबिना रामनहीं मिलते हैं चाहो जितना जप,योग,बैराग करिमरो आम्नायाभ्यसनं अरण्यरुदनंकृच्छ्रब्रता नान्व हंमेतच्छेदफलानिपूर्त्तिबिषयंसर्वंहुतंभस्मनि तीर्थानामबगाह नानिचगजस्नानंबिनायत्पदद्वंदां भोरुहसंस्मृतिंबिजयतेदेवस्सनारायणः १ उत्तरदिशामें एक नील नाम सुन्दर पर्बत है तहा भशुंडि नाम एक काक रहता है रामभक्ति में अति प्रबीण बड़ाज्ञानी गुण निधान बहुत कालका है २ । ३ राम कथा निरंतर कहता है तहां जाति जातिके पक्षी श्रवण करतेहैं ४ तहां जाइ कर जवतुम रामके अनन्त गुण सुनोगे तब तुम्हारे मोह जनित दुःखसब दूरि होजाइंगे ५ जबमैंनेउस से यह समुझाइ करकहा तबतो मेरे चरणों को प्रणाम करिके चलिदिया ६ तातेहे पार्बती मैंनेउसको नहीं समुझाया राम कृपासे में सबमर्म पागया ७ हरि माया बड़ी वलवान् है जिसको न मोहिलेवै ऐसाकौन प्राणीहै ॥ ८ ॥ दोहा ॥ महाज्ञानी और भक्तों में शिरोमणि और त्रिभुवनपति भगवान् विष्णु का वाहन ऐसे गरुड को तो माया महाप्रबलने मोहिही लिया बड़ा पामर होइ जो गुमान करै ॥ ११ ॥

गयउ गरुड़ जहं बसै भुसुण्डी । मति अकुंठ हरि भक्त अखंडी१
देखत गिरि प्रसन्न मन भयऊ । माया मोह सोच सबगयऊ२
करि तड़ाग मज्जन जल पाना । बटतर गयउ हृदय हरषाना ३
वृद्धवृद्ध विहंग तहंआये । सुनैं रामके चरित सुहाये ४
कथा अरंभ करै सो चाहा । ताही समय गयउ खग नाहा ५
आवत देखि सकल खगराजा । हर्षेउ बायस सहित समाजा ६
अति आदर खगपति करकीन्हा ।स्वागत पूछिसुआसन दीन्हा७
करिपूजा समेत अनुरागा । मधुर बचन तब बोलेउ कागा ८

दो० नाथ कृतारथ भयउमैं तवदरशन खगराज ।
आयसुहोइ सोकरौ अब प्रभुआयहु केहिकाज ॥ १२ ॥

अबतो गरुड़ गये जहां भुशुंडि बसते हैं जिनकी अति तीव्रतो बुद्धिहै और अखंड भगवद्भक्तहैं १ नीलाचलके देखतेही अति प्रसन्नमन हुआ और माया जनित मोह शोच सब दूरिहोगया २ सरोवर में स्नान और जल पान करिके अतिहर्षित हृदय बटकेपास गये ३ तहां वृद्ध वृद्ध पक्षी सुन्दर सुहाये रामचरित्र सुनने को आयेहैं ४ कथाकाप्रारंभही काग भुशुंडि किया चाहतेरहे उसीसमय खगराज गरुड़ पहुंचे काग भुशुंडिने जोपक्षि राज गरुड़को आवते देखा अपने सब समाज समेत प्रसन्न होगये उठिकर अतिही

आदर गरुड़ का किया और कुशल प्रश्नकरिके सुन्दर आसन बैठनेकोदिया ६ । ७ बड़े प्रेम समेत उनका पूजन किया और अति मधुर बचन बोले ॥ ८ ॥ दोहा ॥ हेनाथ आजमें आपके दर्शनसे कृतार्थ होगया अबजो आपका अनुशासन होसोकरूं आपने किसनिमित्त यहश्रमकियाहै ॥ १२ ॥

सुनहुतात जेहिकारण आयउं । सोसब भयउदरशतवपायउं १
अबश्री रामकथा अतिपावनि । सदा सुखददुखपुंज नशावनि २
सादर तात सुनावहु मोहीं । बार बार बिनवौं प्रभु तोहीं १
सुनत गरुड़ की गिरा बिनीता । सरलसप्रेमसुखद सुपुनीता ३
भयउ तासुमन परम उछाहा । लाग कहै रघुपति गुणगाहा ४
प्रथमहिंअतिअनुराग भवानी । रामचरितसरकहेसि बखानी ६
पुनि नारद कर मोह अपारा । कहेसि बहुरि रावण अवतारा ६
प्रभुअवतार कथातेहि गाई । तब शिशुचरित कहेसि मनलाई८
दो० बालचरित कहि बिबिधिबिधि मनमहं परम उछाह ।
ऋषिआगमन कहेसि पुनि श्री रघुबीर बिबाह ॥ १३ ॥

सुनो हे तात जिसनिमित्त मैं तुम्हारे पास आया रहूं सोतो तुम्हारे दर्शनही सेहुआ १ अब तुम श्रीरामचन्द्र की कथा महा पवित्र सुखदायनी दुखदायनी आदर समेत मेरेको सुनाओ मैं बार बार आपकी बिनती करताहूं २।३ ऐसी अतिनम्र और सरल परम पुनीत सुखदायक प्रेमभरी गरुड़ की वाणी सुनतेही काग भुशुंडिके मन में बड़ाही उत्साह हुआ और रामचन्द्र के गुणों की कथा कहने लगे ४।५ पहिले तो बड़े प्रेमसे हे पार्वती इस राम चरित्र को मान सरोबर करके बर्णन किया ६ फिर नारद मुनि का अपार मोह कहा फिरि रावणका जन्म कहा ७ तिसपीछे रामावतार की कथा बखानि कर कही और राम के बाल चरित्र मनलगा कर कहे ८ ॥ ॥ दोहा ॥ अपने इष्टदेव बालक रूप रामको जानकर बड़े उत्साह समेत अनेक भांति से बाल चरित्र कहे फिरि बिश्वामित्र का अयोध्या में आगमन कहा उसी द्वारा श्रीसीता और रघुबीर राम का बिवाह कहा ॥ १३ ॥

बहुरि राम अभिषेक प्रसंगा । पुनि नृप बचन राजरस भंगा १
पुरबासिन कर बिरह बिषादा । कहेसि राम लक्ष्मण संबादा २
बिपिनगमन केवट अनुरागा । सुरसरिउतरि निवास प्रयागा ३
बालमीकि प्रभुमिलन बखाना । चित्रकूट जिमिबस भगवाना ४

सचिवागमन नगर नृपमरणा । भरतागमन प्रेमबहु बरणा ५
करिनृपक्रिया संगपुर बासी । भरत गये जहं प्रभु सुखरासी ६
पुनिरघुपति बहुबिधिसमुझाये । लै पादुका अवध पुर आये ७
भरत रहनि सुरपतिसुत करणी । प्रभु अरुअत्रिभेटपुनिबरणी ८
दो० कहि बिराध बध जेहि बिधि देहतजी शरभंग ॥
बरणि सुतीक्षणप्रीति पुनि प्रभु अगस्ति सतसंग ॥ १४ ॥

फिरि रामचन्द्रके राज्याभिषेक का प्रसंग कहा फिर राजाके बचनसे राजरस की भंगकहा १ पुरवासियों का बिरह बिषाद और राम लक्ष्मण का संबाद कहा २ फिर सीता लक्ष्मण समेत रामकी बनयात्रा कही केवट का प्रेम कहागंगा पार होकर प्रयागराजमें भरद्वाज मुनिका मिलापकहा३ फिरि बाल्मीकि रामचन्द्र का मिलाप और उनकी आज्ञा से चित्रकूट निवास कहा ४ सुमंत का अयोध्या में आना और दशरथ का मरना फिरि भरत का आना और उनका प्रेम कहा ५ राजा की क्रिया करिके पुरबासियों समेत उनका रामके पास जाना ६ फिरि रामचन्द्र के उपदेश से भरतका अयोध्या में आना ७ भरतकी रहनि और इन्द्र के पुत्र जयन्त की खुटाई अत्रिमुनिऔर रामका मिलाप ८ ॥ दोहा ॥ फिर बिराध का बध कहा शरभंग की बैकुंठ यात्रा कही फिरि अगस्ति के शिष्य सुतीक्षण का प्रेम कहा फिर अगस्त्यमुनि और रामचन्द्रका मिलाप कहा ॥ १४ ॥

कहि दंडक बन पावन ताई । गृद्ध मयत्री कही सुहाई १
पुनि प्रभु पंच बटी करिबासा । भंजी सकल मुनिनकी त्रासा २
पुनि लक्ष्मण उपदेश अनूपा । शूर्प नखा जिमि कीन्ह कुरूपा ३
खरदूषण बधबहुरि बखाना । जिमि सब मर्म दशानन जाना ४
दश कंधर मारीच बतकही । जेहिबिधि भई सोसब तेहिकही ५
पुनि माया सीता कर हरणा । श्री रघुबीर बिरह कछु बरणा ६
पुनिप्रभुगृद्धक्रियाजिमिकीन्ही । बधिकबंधशबरिहिगतिदीन्ही ७
बहुरि बिरह बरणत रघुबीरा । जेहिबिधि गये सरोवर तीरा ८
दो० प्रभुनारद संबाद कहि मारुत मिलन प्रसंग ॥
पुनिसुग्रीव मिताई बालि प्राणकर भंग ॥ १५ ॥

फिरिता दण्डकबन की पावनता कहिकर अतिसुहाई जटायुकी मयत्रीकही १ फिरि

रामचंद्रने पंचबटी में रहिकर जैसे सब मुनीश्वरोंकी आशनशाई सोकही २ तिसपीछे लक्ष्मण का उपदेश कहा फिरि शूर्पनखा को बिरूपा करना कहा ३ खरदूषण का बध फेरिकहा रावण के आगे शूर्पनखा का बिलाप कहा ४ रावण मारीचका संभाषण जैसे हुआ सो कहा ५ फिरि मायामयी सीताका हरण और रामचंद्र का बाहिज बियोग बिलाप कहा ६ फिरिजैसे रामचंद्रने गृद्धराज जटायु की ब्रह्ममेध क्रिया करी सो कही कबन्धका बधक्रिया सोकहा शबरी का सत्कार और बैकुंठ प्रयाण कहा ७ फिरि बियोग कथा और बसंतका बर्णन करते हुये जैसे रामचंद्र पंपासर पर प्रहुंचे सोकहा ॥ ८ ॥ ॥ दोहा ॥ तिस पीछे रामचंद्र और नारद का संबाद कहा फिरि मारुती हनुमान के मिलनेका प्रसंग कहा सुग्रीवकी मयची और बालिका बध कहा ॥ १५ ॥

दो० कपिहि तिलककरि प्रभुकृत शैल प्रवर्षण बास ।
बर्णन बर्षा शरद ऋतु राम रोष कपि त्रास ॥
जेहिबिधिकपिपतिकीशपठाये । सीतहिं खोजन सकल सिधाये १
बिबर प्रवेश कीन्ह जेहिभांती । कपिन्ह बहोरि मिला संपाती २
सुनिसब कथा समीरकुमारा । लांघत भयउ पयोधि अपारा ३
लंकाकपि प्रवेश जिमिकीन्हा । पुनिसीतहि धीरज जिमिदीन्हा ४
बनउजारि रावणहिं प्रबोधी । पुर दहि लांघेउ बहुरि पयोधी ५
आये कपि सब जहं रघुराई । बैदेही की कुशल सुनाई ६
सेन समेत यथा रघुबीरा । उतरे जाइ बारि निधि तीरा ७
मिला बिभीषण जेहि बिधि आई । सागर निग्रह कथा सुनाई ८
दो० सेतुबांधि कपिसेन जिमि उतरी सागर पार ॥ ॥
गयउ बशीठी बीर बर जेहि बिधि बालि कुमार ॥ १६ ॥

सुग्रीव को राज्यदेकर रामचंद्रने प्रवर्षण पर्बत पर निवास किया और बर्षा शरद ऋतुका बर्णन किया सो सब कहा फिरि रामका सुग्रीव पर कोप और सुग्रीवका भयभीत होना कहा ॥ चौपाई ॥ जिस प्रकार सुग्रीव ने सीताके खोजने को बानर भेजे सोकहा १ उन्होंने ऋच्छ नाम बिबरमें प्रबेशकिया तहांसे हेमा नामाएक अप्सरा उसकी सहेलीकी सहायता से संपाती जटायु गृद्धका भाई उनको जैसे मिला सोकहा २ संपाती के मुखसे सब कथा सुनिकर पवनपुत्र हनुमान ने जैसे समुद्र उल्लंघन किया सोकहा ३ लंकामें हनुमान ने जैसे प्रवेश किया औ सीता को धीरज दिया सो कहा ४ फिरि बनको उजारि अक्षय मारि रावणको समुझाइ लंकाजलाइ जैसे हनुमान समुद्र उतरि आये सो सब कहा ५ फिरि सबबानरोंने आकर सीता की कुशल

कही सो कहा ६ फिरि सेना समेत रामचंद्र जैसे समुद्रके तटउतरे सो कहा ७ तहां जैसे बिभीषण रामचन्द्र को आमिले सोकहा और समुद्रपर कोप करिके दंड किया औ समुद्र आमिला सोसब कहा ॥ ८ ॥ दोहा ॥ फिरि समुद्रका सेतु बांधिकर बानरोंकी सेना जैसे समुद्रके पारहोगई और बालिकुमार अंगद जैसेबसीठीगये सोसब कहा॥ १६॥

दो० निशिचरकीश लड़ाई बरणीबिबिधि प्रकार ।
कुंभकरण घननादकर बलपौरुष संहार ॥
निशिचर निकर मरणविधिनाना । रघुपति रावण समरबखाना १
रावण बध मंदोदरि शोका । राज बिभीषण देव अशोका २
सीता रघुपति मिलन बहोरी । सुरन कीन्ह अस्तुति करजोरी ३
पुनिपुष्पक चढ़ि कपिन समेता । अवध चले प्रभुकृपानिकेता ४
जेहिबिधि रामनगर निजआये । बायसबिशद चरित सबगाये ५
कहेसि बहोरि रामअभिषेका । पुनि बर्णन नृपनीति अनेका ६
कथा समस्त भुशुण्डि बखानी । जो मैं तुमसन कही भवानी ७
सुनिसब राम कथा खगनाहा । कहतबचन मन परम उछाहा ८
सो० गयउ मोर संदेह सुनेउं सकल रघुपति चरित ।
भयउ राम पद नेह तव प्रसाद बायस तिलक ॥ १७ ॥

फिरि बानर और राक्षसोंकी लड़ाई अनेकप्रकारकी कही तिस पीछे कुंभकर्ण और मेघनाद का बल पौरुषके साथ संग्राम और उनका संहार कहा ॥ चौपाई ॥ राक्षसोंके समूहोंका मरना और राम रावण का अपार युद्ध कहा १ रावण का बध मंदोदरी का बिलाप बिभीषण का राज्य देवताओं का आनन्द कहा २ फिरि सीता रामचन्द्रका मिलापकहा देवताओं की अस्तुतिकही ३ फिरि पुष्पक बिमान पर चढ़कर रामचंद्रका अयोध्या को प्रयाणकहा ४ जिसप्रकार रामचंद्र अपने नगरमें आये सो सब कहा ५ फिरि रामचंद्रका राज्याभिषेककहा तिसपीछे अनेक राज्यनीतिकहा ६ समस्त कथा कागभुशुण्डि ने गरुड़से कही जो मैंने हे पार्वती तुमसे कहीरहे ७ इस प्रकार समस्त राम कथाको सुनि गरुड़ बड़े उत्साह समेत बोले ॥ ८ ॥ सोरठा ॥ सुनो हे बायसतिलक आपके प्रसादसे मेरा सब संदेह दूरिहोगया और सब राम चरित्र श्रवण किये और रामके चरणों में नवीन अति प्रेमउत्पन्न हुआ ॥ १७ ॥

सो० मोहिं भयउ अति मोह प्रभु बंधन रण महं निरखि ।
चिदानंद संदोह राम बिकल कारण कवन ॥

देखिचरित अतिनर अनुहारी । भयउ हृदय ममसंशय भारी १
सोइभ्रम अब हितकरि मैंमाना । कीन्ह अनुग्रह कृपानिधाना २
जो अति आतप ब्याकुल होई । तरुछाया सुख जानै सोई ३
जो नहिं होतमोह अतिमोहीं। मिलतेउं तातकवनिबिधितोहीं ४
सुनतेउं किमि हरिकथा सुहाई ।अति बिचित्र बहुबिधि तुमगाई ५
निगमागम पुराण मतयेहा । कहहिं सिद्धमुनि नहिं संदेहा ६
संतबिशुद्ध मिलहिं परितेहीं । चितवहिं रामकृपा करिजेहीं ७
रामकृपा तव दरशन भयऊ । तव प्रसाद सब संशय गयऊ ८
दो० सुनि बिहंग पति बाणी सहित बिनय अनुराग ।
पुलकि गातलोचन सजल मनहर्षेउ अतिकाग ॥ १८ ॥

रामचन्द्रका रण में बंधन देखिकर मेरे को अति मोह होगया रहै कि सच्चिदानन्द संदोह राम ऐसे बिकल हैं यह कौन कारण है ॥ चौपाई ॥ अतिहीनर की अनुहारि राम चरित्र देखिकर मेरें को अतिसंशय होगई रहै १ सोई भ्रममैंने अब परमहित करिके माना कि कृपानिधान रामस्वामी ने मेरे पर वड़ा अनुग्रह किया २ जो कोई आतप में अति व्याकुल होता है वृक्ष की छाया के सुख को सोईजानता है ३ जो मेरे को अति मोह न होता तो हे तात तेरेको कैसे मिलता ४ और यह सुन्दर राम कथा कैसे सुनता जो अनेक प्रकार से तुम ने अति बिचित्र कही है ५ वेद पुराण शास्त्र सब का यह सम्मत है और सिद्ध मुनि सब कहते हैं और कुछ संदेह भी नहीं है कि बिशुद्ध संत अनन्य देव उसी को मिलते हैं जिस को राम कृपा दृष्टि से देखते हैं ६ । ७ राम कृपा से तो आप के दर्शन हुये और आप के अनुग्रह से सब संशय दूरि होगये ॥ ८ ॥ दोहा ऐसी मनोहर विहंग पति गरुड़ की बाणी नम्रता और प्रेम की भरी सुनिकर कागभुशुण्डि पुलकित तन और सजल नेत्र होकर मन में अति हर्षित होगये ॥ १८ ॥

दो० श्रोता सुमति सुशील शुचि कथा रसिक हरिदास ।
पाइ उमा अस गुप्तमत सज्जन करहिं प्रकाश ॥
बोलेउ काग भुशुंडि बहोरी । नभग नाथ पर प्रीति न थोरी १
सब बिधि नाथ पूज्य तुम मेरे । कृपा पात्र रघुनायक केरे २
तुमहिं न संशय मोहन माया । मोपर नाथ कीन्ह तुम दाया ३

पठय मोहमिसखगपति तोहीं । रघुपति दीन्हि बड़ाई मोहीं ४
तुमनिज मोहकहा खग साईं । सोनहिं कछुआश्चर्य्य गुसाईं ५
नारद शिव बिरंचि सनकादी । ये मुनि नायक आतम बादी ६
मोहन अंध कीन्ह केहि केही । को जग काम नचावन जेही ७
केहि तृष्णा नकीन्ह बौराहा । केहिकर हृदय क्रोधनहिं दाहा ८
दो० ज्ञानी तापस शूरकबि कोबिद गुण आगार ।
केहिकर लोभ बिडंबना कीन्ह नयह संसार ॥ १६ ॥

जबश्रोता सुमति औरसुशील पवित्र कथाका रसिक हरिभक्तपातेहैं तबहे पार्बती अतिगुप्तमतभी सज्जनलोग उससे प्रकाशित करते हैं ॥ चौपाई ॥ ऐसाउत्तम अधिकारी जानिकर फिरि कागभुशुण्डि गरुड़प्रति बोले खगनाथ गरुड़पर बड़ा प्रेमहै १ हेनाथ आपतो मेरे सबप्रकारसे पूज्यहैं और रघुनाथ रामचंद्रके सदा कृपापात्रहैं २ मेरेबिचार से तोआपको न कुछ संशयहै न मोहहै नमायाहै केवल आपने मेरेपर कृपाही कीहै ३ अथवामोहके अखिसे आपको भेजिकर रामचंद्रने मेरेको बड़ाई दीहै ४ औरजो आप अपना मोहही कहतेहो तोयह कुछ आश्चर्य्य भी नहींहै भगवन्मायाके बशबर्ती समस्तजीवहैं ॥ यन्मायाबशवर्त्तिविश्वमखिलं ५ नारदहैं शिवहैं ब्रह्माहैं सनकादिक हैं औरजितने मुनिनायक आत्म बादीहैं ६ इनमेंसे ऐसा कौनहै जिस जिस को मोहने अंधानकियाहो अथवा कामने न नचायाहो ७ तृष्णानेकिसको बौरहानहीं कियाहैकिस का हृदय क्रोधने नहीं दाहाहै ॥ ८ ॥ दोहा जो ज्ञानीहैं तपस्वीहैं शूरहैं कोबिद हैं गुणागारहैं इनमेंसे ऐसा कौनहै जिसको लोभने बिडंबनाइस संसारमें नकरीहो ॥ १६ ॥

दो० श्रीमद बक्र नकीन्ह केहिं प्रभुता बधिर न काहि ।
मृग लोचनि केनयन शर कोअस लाग न जाहि ॥
गुणकृत संनिपात नहिंकेही । कोउ न मानमद तजेउनिबेही १
यौबन ज्वरकेहिनहिं बलकावा । ममता केहिकरयशननशावा २
मत्सर काहि कलंक न लावा । काहिन शोक समीर डुलावा ३
चिंता सांपिनि काहिन खाया । को जगजाहि न ब्यापी माया ४
कीट मनोरथ दारु शरीरा । जिहि न लाग घुनको अस धीरा ५
सुतबित नारिईषणा तीनी । केहिकी मति इनकृतम मलीनी ६
यह सब माया कर परिवारा । प्रबल अमित को बरणै पारा ७

शिव चतुरानन जाहि डराहीं। अपर जीव केहि लेखे माहीं ८

दो० व्यापि रहेउ संसार महं माया कटक प्रचंड।
सेनापति कामादि भट दंभ कपट पाषंड॥ २०॥

श्रीमद संपतिके मदने किसको वक्र नहींकियाहै और ऐश्वर्य्य ने किसको बधिर नहीं कियाहै औरमृगनयनी के नेत्ररूपी बाण ऐसा कौनहै जिसके नहींलगे॥ चौपाई॥ गुणोंका किया सन्निपात किसको नहींहै औरऐसा कोईभी नहीं है जिसने मानमद के त्यागका निवाह कियाहै १ यौवनके ज्वरने किसको नहीं बलकायाहै बिमत्त किया है ममताने किसका यशनहीं नशायाहै २ मत्सरने किसको कलंक नहीं लगाया है शोककी पवन ने किसको नहीं डुलायाहै ३ चिन्ता सांपिनीने इसजगमें किसकोनहीं डसाहै ऐसाकौनहै जिसको मायानहीं व्यापीहै ४ किसके शरीर रूपीकाष्ठमेंमनोऽर्थोंके कीटोंसे घुन न लगाहो ऐसा संसारमें कौनधीरहै ५ पुत्रकलत्र और धन इनतीनोंकी बासनाने किसकी बुद्धिको मलिन नहीं कियाहै ६ यह समस्त मायाही का परिवार महाप्रबल और अपारहै इसको कौनबरणि सकताहै ७ शिव ब्रह्मादिकभी इसमायासे डरतेहैं अपरजीव हे गरुड़ कहो कौन गणना में हैं ब्रह्मेन्द्ररुद्र मुनिमोहनशीललीलां माया परसमधि गम्यपरस्यविष्णोः अर्थात् यह माया पर कहें भगवान विष्णुकी है याते परा कहावती है ब्रह्मेन्द्र शिव औरसमस्त मुनीश्वरों की मोहन शीला और चंचलाहै॥ ८॥ दोहा॥ इसी मायाका प्रचंड कटक संसारमें भरा है कामादिक तो इसके सेनापतिहैं दंभ कपट पाषंड महा प्रबल योधा हैं॥ ९०॥

दो० सो दासी रघुबीर की समुझें मिथ्या सोपि।
छूटन राम कृपा बिनु नाथ कहौं पद रोपि॥

जो माया सब जीव नचावा। जासु चरित लखि काहुन पावा १
सोइ प्रभु भ्रूबिलास खगराजा। नाचनटी इव सहित समाजा २
सो सच्चिदानन्द घन रामा। अज बिज्ञान रूप बल धामा ३
ब्यापक व्याप्य अखण्डअनंता। अखिलअमोघ शक्तिभगवंता ४
अगुण अदभ्र गिरा गोतीता। सब दर्शी अनवद्य अजीता ५
निर्मम निर्बिकार निर्मोहा। नित्य निरंजन सुख संदोहा ६
प्रकृति पार प्रभु सब उरबासी। ब्रह्म निरीहबिरजअबिनाशी ७
यहां मोह करकारण नाहीं। रवि सन्मुख तम कबहुकिजाहीं ८

दो० भक्तहेतु भगवान प्रभु राम धरेउ तन भूप।

कीन्ह चरित पावन परम प्राकृत नर अनुरूप ॥ २१ ॥

इस मायाको कोउ कह सत्य झूठ कह कोउ युगल प्रबल करि माने अर्थात् कोई सत्य कहते हैं कोई झूठ कहते हैं कोई अनिर्बचनीय मानते हैं सो माया यदि भगवद्दासी है तो मिथ्या नहीं हो सकती है और यदि उसको मिथ्याही समुझैं तो भी हे गरुड़ राम कृपा बिना नहीं छूटि सकतीहै यह तो मैं पैज बांधि कर कहता हूं दैवीह्येषागुणमयीममामायादुरत्यया मामेवयेप्रपद्यन्ते मायामेतांतरंतिते ॥ चौपाई॥ जो माया समस्त जीवों को नचावती है और जिसके चरित्र को कोई भी नहीं लखि जाता है सो माया जिस प्रभु की भृकुटी के बिलासही से अपने सब समाज समेत नटी की नाईं नाचती है सो प्रभु सच्चिदानन्दघन रामही हैं अजन्मा हैं बिज्ञान बल रूप के धाम हैं १ । २ । ३ बिश्वब्यापक हैं बिश्वरूप हैं अखण्ड हैं अनन्तहैं समस्त सफल शक्तिहैं भगवान हैं ४ निर्गुण निरंकुश निर्विकार मायातीत नित्य निरंजन सुखके निवासहै ५।६ मायातीत हैं अंतर्यामी हैं ब्रह्महैं अनीह हैं रजोगुण से परे अबिनाशी हैं ७ तहां मोह का भला कौन कारण है सूर्य्यके सन्मुख अंधकार कभी कैसे जा सकता है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ अपने भक्तों के निस्तार के लिये राम ने यह भूपरूप धारण कियाहै और उन्हीं ने काल दोषके लिये परम पावन मनुष्यों के अनुरूप अपार चरित्र किये हैं ॥ २१ ॥

दो० यथा अनेक बेष धरि नृत्य करै नट कोइ ।
सोइ सोइ भाव दिखावहि आपनहोइ न सोइ ॥

असि रघुपतिलीला उरगारी । दनुज बिमोहनिजनसुखकारी १
येमतिमलिन बिषयरत कामी । प्रभु परमोह धरहिंइमिस्वामी २
नयन दोष जाकहं जब होई । पीत बरण शशि कह कहंसोई ३
जबजेहिदिशिभ्रम होइ खगेशा । सोकह पश्चिमउयउदिनेशा ४
नौकारूढ़ चलत जग देखा । अचल मोहबश आपुहि लेखा ५
बालक भ्रमहि नभ्रमहिं गृहादी । कहहिंपरस्पर मिथ्याबादी ६
हरि बिषयक असमोह बिहंगा । सपनेहुनहिं जेहिज्ञानप्रसंगा ७
माया बशमतिमंद अभागी । हृदय यवनिका बहु बिधि लागी ८

दो० काम क्रोध मद लोभ रत गृहाशक्त दुख रूप ।
ते किमि जानहिं रघुपतिहिं मूढ़ परे भव कूप ॥ २२ ॥

जैसे अनेक भेषधर के कोई नट चरित्र करताहै तो तैसे तैसेही भाव दिखावता

है आप सो नहीं होजाताहै १ ॥ चौपाई ॥ ऐसीही श्री रामचन्द्रकी लीला है गरुड़ आसुरी प्रकृति लोगों को बिमोहनी और भक्तजनों को आनन्ददायनीहै १ जो कोई मलिनमति और बिषयाशक्त कामी हैं ते रामपरमोहारोपण ऐसे हे गरुड़ करिलेते हैं २ जैसे जब जिसको नेत्रबिकार होता है सो चन्द्रमा को पीत बरण कहने लगता है ३. और जब जिस को दिशाभ्रम होजाताहै सो सूर्य्य का उदय पश्चिम में कहता है ४ नौकारूढ़ जैसे सब जग को चलता जानता है और मोह के वश आप को अचल मानता है ५ बालक भ्रमते कहीं घर नहीं घूमते हैं तैसेही हे गरुड़ जो मिथ्यावादी मायावादीहैं ते परस्पर भगवदावतारों में मोहारोपण करते हैं ६ भगवद्विषयमें हेगरुड़ ऐसाही उनलोगों को मोह जानो जिनको ज्ञान काप्रसंग स्वप्न में भी नहीं हैं ७ माया के बश हैं मतिके मंद हैं अभागी हैं अज्ञान के आवर्ण जिनके हृदय में अनेक प्रकार के लगे हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ काम,क्रोध, मोह,लोभ,मद में निरत है गृहाशक्त चित्त हैं दुखरूप हैं ते बपुरे भगवज्जन्म कर्मोंको क्या जानि सकते हैं जो मूढ़ संसार अंधकूप में परे हैं ॥ गीतायां जन्मकर्मचमेदिव्य योमावे-त्तितत्वत: त्यक्त्वादेहंपुनर्जन्मनैतिमामेतिसोर्जुन ॥ २२ ॥

दो० निर्गुण रूप सुलभ अति सगुण जान नहिं कोइ ।
सुगम अगम नाना चरित सुनि मुनि मन भ्रमहोइ ॥

सुनु खगेश रघुपति प्रभुताई । कहौं यथा मति कथा सुहाई १
जेहिबिधि मोहभयउ प्रभु मोहीं । सोसब कथा सुनावहु तोहीं २
रामकृपा भाजन तुम ताता । हरि गुणप्रीति मोहिं सुखदाता ३
तातें नहिं कछु तुमहिं दुराऊं । परम रहस्य मनोहर गाऊं ४
सुनहु रामकर सहज सुभाऊ । जनअभिमान न राखहिं काऊ ५
संसृति मूल शूल प्रद नाना । सकल शोक दायक अभिमाना ६
तातें करहिं कृपानिधि दूरी । सेवक पर ममता अति भूरी ७
जिमि शिशुतन ब्रणहोइ गुसाईं । मातु चिराव कठिनकी नाईं ८

दो० यदपि प्रथम दुख पावै रोवै बाल अधीर ।
ब्याधि नाश हित जननी गनै न सो शिशु पीर ॥ २३ ॥

निर्गुण रूप तो ईश्वर का कोई रीति से जानने में सुलभ भी है परंतु सगुण रूपके चरित्रों के आशयको कोई भी नहीं जानि सकता है इसमें सुगम अगम नाना प्रकारके ऐसे चरित्र हैं जिनको सुनि कर मुनीश्वरों के मनमें भी भ्रम होजाताहै ॥ चौपाई ॥सुनो हे गरुड़ रामचन्द्र की प्रभुता को मैंतुमसे यथामति सुंदर सुहाई कथा

कहताहूं १ जिस प्रकार मेरेको हे प्रभु मेह हुआ है सो सब कथा आपको सुनाता हूं २ रामचन्द्र की कृपाके आप भाजन हैं और जो हरि गुण मेरेको सुखदाता हैं ३ उनमें आपकी भी बड़ी प्रीति ताते मैं तुमसे कुछभी नहीं छिपाता हूं परमगुप्त भेद मनोहर तुमसे कहता हूं ४ सुनो हे गरुड़ रामका यह सहज स्वभाव है कि अपने जनका अभिमान नहीं रखते हैं ५ क्योंकि जन्म मरणका तो मूल और समस्त शूलोंका और शोकोंका दाता अभिमानही होता है ६ ताते कृपसिंधु राम उसको दूरि करि देते हैं कि सेवकों पर स्वामी अधिक कृपा रखते हैं ७ जैसे जब किसी बालकके तनमें व्रण होजाता है तो उसकी माता उस व्रणको कठिन हृदय होकर चिरावती है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ यद्यपि सो बालक प्रथम बड़ा दुख पाता है और अधीर होकर रोताहै परंतु उसव्याधि न शकेलिये माताउस बालकको महादुस्सहुमपीरकोकुछभीनहींगिनतीहै॥२३॥

दो० तिमि रघुपति निज दास कर हरहिं मानहितलागि ।
तुलसिदास ऐसे प्रभुहिं कस न भजिय भ्रम त्यागि ॥

राम कृपा आपनि जड़ताई । कहौं खगेश सुनहु मन लाई १
जब जब राम मनुज तनु धरहीं । भक्त हेतु लीला बहु करहीं २
तबतब अवधपुरी महं जाऊं । बालचरित बिलोकि हरषाऊं ३
जन्म महोत्सव देखहुं जाई । वर्ष पांच तहं रहहुं लुभाई ४
इष्टदेव मम बालक रामा । शोभा बपुष कोटि शत कामा ५
निजप्रभु बदननिहारि निहारी । लोचन सफल करहुंउरगारी ६
लघु बायस बपु धरि हरि संगा । देखहुं बाल चरितबहु रंगा ७
अजिर फिरहिं तहं संग उड़ाऊं । जूठनि परै बीनि सो खाऊं ८

दो० एक बार अतिशय सब चरित किये रघुबीर ।
सुमिरत प्रभु लीला सोई पुलकित भयउ शरीर ॥ २४ ॥

तैसेही रामचन्द्र अपने दासके हितके लिये उसका अभिमान दूरि करते हैं ऐसे भक्त बत्सल स्वामीको भ्रम छोड़िकर कैसे न भजिये ॥ चौपाई ॥ रामकीतो कृपा और अपनी जड़ता कहता हूं सो हे गरुड़ तुम मन लगाकर सुनो १ कि जबजब श्रीराम चन्द्र मनुष्यरूप धरते हैं और अपने भक्तोंके लिये अनेक लीला करते हैं २ तब तब मैं अयोध्यामें जाकर रहता हूं तहां बाल चरित्र देखिकर हर्षित होताहूं ३ स्वामी का जन्म महोत्सव जाकर देखता हूं और पांच वर्ष पर्य्यन्त तहीं लुभाय रहताहूं ४ क्योंकि बालरूपही राम मेरे इष्टदेव हैं जिनके शरीरकी शोभा शतकोटि कामसे भीअधिक है ५ अपने स्वामीके सुन्दर मुखारबिन्दको देखि देखिकर नेत्रोंको सफल करता हूं ६

प्राकृत वायसों का सा शरीर धरिकर रामचन्द्रकेसाथभांति भांतिके चरित्र देखता हूं० आंगनमें जहां जहां स्वामी फिरते हैं तहां तहां मैं भी साथ साथ फिरता औरजो जूठनि स्वामीकी गिरतीहैसोई बीनि खाता हूं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ एकबारतो स्वामीनेअति-शयही मनुष्य कैसे चरित्र किये उस लीलाके स्मरण करतेही कागभुशुंडि पुलकित गात होगये ॥ ८४ ॥

कहैं भुशुण्डि सुनहुखगनायक। रामचरित सेवकसुखदायक १
नृपमन्दिरसुन्दर सबभांती। खचितकणक मणिनाना जाती२
बरणि नजाइ रुचिर अंगनाई। जहंखेलहिं नित चारिहुभाई३
बाल बिनोद करत रघुराई। बिचरत अजिर जननि सुखदाई४
मरकत मृदुल कलेवर श्यामा। अंगअंग प्रति छबि बहुकामा५
नवराजीवअरुणमृदु चरणा। पदजरुचिरनखशशिद्युतिहरणा६
ललित अंक कुलिशादिक चारी। नूपुर चारु मधुर रवकारी ७
चारुपुरट मणिरचित बनाई। कटिकिंकिणि कलमुखरसोहाई८
दो० रेखा त्रयसुन्दर उदर नाभि रुचिर गम्भीर।
उर आयत भ्राजत बिबिधि बालबिभूषण चीर ॥ २५ ॥

काग भुशुंडि कहतेहैं सुनोहे गरुड रामचंद्रके चरित्र सदा सेवकोंके सुखदायक हीहोतेहैं १ महाराज दशरथ का मंदिर सबभांतिसे सुन्दर बनाहै जिसके सुवर्ण में अनेक जाति के मणिगण खचेहैं २ और उसकी अंगनाई तो वर्णीही नहीं जाती है जहां निरंतर चारोंभाई खेलतेहैं ३ अनेक प्रकार के बालबिनोद श्रीरामचन्द्र करते हैं और माताओं के आनन्ददायक आंगनमें बिचरतेफिरतेहैं ४ नीलमणिके समान तो सुन्दर श्याम शरीरहै और अंग२ प्रतिकोटि २कामकी शोभा छाईहै ५ नवीन अरुण कमल के समान चरणहैं पदज अंगुली अति रुचिरहैं उनके नख चन्दमा की द्युति कोभी हरतेहैं ६ ध्वजा, अंकुश, कमल, वज्रादि की चारों रेखा सोहतीहैं सुन्दर नूपुर मधुर शब्द करतेहैं ७ अति सुन्दर सुवर्णमणि रचित कटि किंकिणी बनीहैं जिसका मधुर शब्दहै और अति सुहाईहै ८ ॥ दोहा ॥ अति सुन्दर उदरहै जिसमें त्रिबली की तीनि रेखा हैं और गम्भीर नाभिहै हृदय आयतहै जिसमें बाल आभूषण और वस्त्रसोहतेहैं ॥ २५ ॥

अरुण पाणिनख करजमनोहर। बाहुबिशाल बिभूषणसुन्दर १
कंध बाल केहरि दर ग्रीवां। चारु चिबुक आनन छबिसींवां २

कलबल बचन अधर अरुणारे । द्वयद्वय दशन बिशद बिबरारे ३
ललित कपोलमनोहरनासा । सकलसुखद शशिकरसमहासा ४
नीलकंज लोचन भवमोचन । भ्राजत भाल तिलक गोरोचन ५
बिकटभृकुटि समश्रवणसोहाये । कुंचितकच मेचक छबिछाये ६
पीतझीन झगुलीतनसोही । किलकनि चितवनि भावतिमोही ७
रूपराशि नृपअजिरबिहारी । नांचहिंनिजप्रतिबिम्ब निहारी ८

दो० प्राकृत शिशु लीलाइव देखि भयउ मोहिं मोह ।
कवन चरित्र करत प्रभु चिदानन्द संदोह ॥ २६ ॥

अरुण कमल के समान सुन्दर हाथहैं उनके नख और करज अंगुली मनोहर हैं बिशाल भुजाहैं तिनमें अंगद कटकादि भूषण सोहते हैं १ बाल केहरी कैसे उन्नत कन्धे हैं शंखके समान ग्रीवा है अति सुहाई सुन्दर चिबुक है सुखतो छबि की सीमाहीहै २ कलबली तोतरि बोलनिहै अरुण अधरहैं द्वयद्वय ऊपर नीचेको दंतुरी हैं ते अतिउज्ज्वल और बिलग बिलगहैं ३ सुन्दर मनोहर कपोलहैं और नासिका है समस्त सुखदायनी चन्द्रकिरण के समान हास है ४ नीलकमल से दोनों बिशालनेत्र भव मोचनहैं ललाट पर सुन्दर गोरोचनका पीत तिलक सोहता है ५ बांकी भ्रकुटी हैं सुन्दर सोहाये श्रवणहैं घुंघरारे सुचिक्कन श्याम छबिछाये केशहैं ६ पीलीझीनी झगुल तनमें सोहतीहै किलकनि और मनोहर चितवनि मेरेको अतिही भावती है ७ ऐसे रूपराशि दशरथ अजिरबिहारी राम अपने प्रतिबिम्बों को देखिदेखिकर नाचतेहैं ८ ॥ दोहा ॥ ऐसेअतिही प्राकृत बालकोंके अनुहार रामलीला देखकर मेरेको मोह होगया कि ये सच्चिदानन्द संदोह कैसेहैं जो ऐसे अज्ञ बालकों के चरित्र करतेहैं ॥ २६ ॥

इतना मन देखत खगराया । रघुपति प्रेरित ब्यापी माया १
सो माया न दुखद मोहि काही । आनजीव इव संसृत नाही २
नाथ यहां कछु कारण आना । सुनहु सो सावधान हरियाना ३
ज्ञानमय चकित राममोहिं देखा । बिहसे सोसुनु चरित बिशेषा ४
तेहि कौतुक कर मर्म न काहू । जाना अनुज न मात पिताहू ५
जानु पाणि धाये मोहिधरणा । श्यामलगात अरुणकर चरणा ६
तब मैं भाजि चलेउं उरगारी । राम गहन कहं भुजा पसारी ७
जिमिजिमि दूरिउड़ाहुंअकाशा । तहंतहं भुज देखहुं निजपासा ८

दो० ब्रह्मलोक लगिगयउंमैं चितयउं पाछे उड़ात।
युग अंगुल करबीच रह राम भुजहि मोहि तात॥ २७॥

इतनी चिन्तामनमें लातेही हेगरुड़ रामचन्द्र करिकेप्रेरितमाया मेरेको व्यापिगई १ परंतु सो माया मेरेको दुखदायक न हुई क्योंकि और जीवोंके समान मेरे को संसार बंधन नहींहै २ यहां हेनाथ कुछ औरही कारण है सोतुम सावधान होकर सुनो ३ अब जो रामने मेरेको भ्रमसे चकितचित्त देखा सोई हंसिदिये सो चरित्र तुमसुनो ४ उस कौतुकका मर्म न तो भाईने जाना न मातापिताने जाना ५ हाथपाओंसे मेरेपकरने को दौरे श्यामलतो गात है और हाथ पाउं अरुण हैं ६ तबमैं तहांसे भागा और राम ने पकरने को भुजा पसारी ७ अब जैसा मैं ऊपरको उड़ता जात हूं तहां तहां राम की भुजा को अपने पासही देखताहूं॥ ८॥ दोहा॥ ब्रह्मलोक पर्य्यंत चलागया और पीछे देखा तो रामभुजा को और मेरेको दोही अंगुलका अंतर दिखाई परा॥ २७॥

सप्तावरण बेधि करि जहां लगे गति मोरि।
गयउं तहां प्रभु भुज निरखि ब्याकुल फिरेउं बहोरि॥

मूंदेउं नयन त्रसित जब भयऊं। पुनिचितवत कोशलपुरगयऊं १
मोहि बिलोकि राम मुसुकाहीं। बिहसत तुरत गयउं मुखमाहीं २
उदर मांझ सुनु अंडज राया। देखेउं बहु ब्रह्मांड निकाया ३
अति बिचित्र तहं लोक अनेका। रचना अधिक एक ते एका ४
कोटिन चतुरानन गौरीशा। अगणित उड़गण रविरजनीशा ५
अगणित लोकपाल यमकाला। अगणित भूधर भूमि बिशाला ६
सागर सरिता बिपिनि अपारा। नाना भांति सृष्टिबिस्तारा ७
सुर मुनि सिद्ध नागनर किन्नर। चारि प्रकार जीव सचराचर ८

दो० जोनहिं देखा नहिं सुना जो मनहू न समाइ॥ २८॥
सोअद्भुत देखत फिरहुं बरणि कवनि बिधिजाइ॥

ब्रह्मलोकके ऊपर पृथ्वी, जल, अग्नि, बायु, आकाश, प्रकृति, महत्तत्व ये सबएकसे एक दशगुणे जो सातों आवर्ण ब्रह्मांडके हैं उनको बेधिकर जहां तक मेरी गति रहे तहां तकमैं गया तहांभी जब रामभुजाको पीछे चलेआतेही देखा तबतो ब्याकुल हो होकर फेरि फिरा॥ चौपाई॥ जबअति भयभीत हुआ तब नेत्रमूंदि लिये फिरि जो देखा तो अयोध्याही में आगया १ मेरे को देखि कर राम मुसुकाने लगे हंसतेही मैं उनके मुख में चलागया २ अब तो राम के उदर में हे अंडजराज गरुड़ मैंने अनेक

ब्रह्मांडों के समूह देखे ३ तहां अद्भुत अनेक लोक देखे और एकते एककी अधिकरचना देखी ४ कोटि ब्रह्मा कोटिन गौरीश शिव देखे तैसेही तारागण सूर्य्य चन्द्रमा देखे ५ अनेक इन्द्र, वरुण कुबेरादिक लोकपाल देखे अगणित यम काल देखे अगणित भूमि और पर्वतदेखे ६ अगणित समुद्र सरिता बन अनेक भांति सृष्टिका बिस्तार देखा ७ देवता, मुनि, सिद्धि, नाग, नर, किन्नर चारिखानिके चराचर जीव देखे ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जो कभी देखा नहीं सुना नहीं जो मनमें भी न समासके सो परम अद्भुत देखता फिरूं उसका बर्णन कौन भांति से कियाजावै ॥ २८ ॥

दो० एकएक ब्रह्मांड महं रहेउं बर्षशत एक ।
यहि बिधि देखत फिरेउं मैं अंडकटाह अनेक ।

लोकलोकप्रतिभिन्नबिधाता । भिन्नबिष्णुशिवमुनिदिशित्राता १
नर गन्धर्ब भूत बैताला । किन्नर निशिचर पशु खग व्याला २
देव दनुजगण नाना जाती । सकल जीव तहं आनहिं भांती ३
महीसरित सागर गिरि नाना । सबप्रपंच तहं आनहिं आना ४
अंडकोश प्रति निजनिज रूपा । देखेउं जिनिसअनेक अनूपा ५
अवधपुरी प्रति भुवन निहारी । सरयू भिन्नभिन्न नर नारी ६
दशरथ कौशल्यादिक माता । बिबिधिभांति भरतादिकभ्राता ७
प्रति ब्रह्मांड राम अवतारा । देखेउं बाल बिनोद उदारा ८

दो० भिन्न भिन्न सबदीख मैं अति बिचित्र हरियान ।
अगणित भुवनन फिरेउं प्रभु राम न देखेउं आन २९ ॥

एकएक ब्रह्मांड में हे गरुड मैं सौसौ बर्षरहा इसी प्रकार अनन्त कोटि ब्रह्मांड देखताफिरा ॥ चौपाई ॥ अगड अगड प्रतिभिन्न २ ब्रह्मा देखे बिष्णु देखे शिवदेखे मुनि देखे दिग्पाल देखे १ मनुष्य भिन्न देखे भिन्नगन्धर्ब देखे भूतदेखे बेताल देखे किम्पुरुष देखे राक्षस देखे पशुदेखे पक्षीदेखे नागदेखे २ नाना जातिके देवदैत्यों के गण देखे समस्त जीव और औरही भांतिके देखे ३ नाना भांतिकी पृथिवी देखीं सरिता देखीं समुद्रदेखे पर्वतदेखे सब रचना तहां औरहीं और भांति की देखीं ४ ब्रह्मांड ब्रह्मांड प्रति अपने अपने रूप की अनेक जिनिसि देखी ५ अयोध्यापुरी अंड प्रति न्यारीही भांतिकी देखी भिन्नसरयूदेखी भिन्नहीं पुरबासी देखे ६ दशरथ औरही भांति के देखे कौशल्यादिक माताभी औरही भांतिकी देखीतैसेही भांतिभांतिके भरतादिक भाईदेखे ७ ब्रह्मांड प्रति रामावतार देखा तहां अति उदार बाल बिनोद देखा ८ ॥

दोहा ॥ सब प्रपंच तोहे गरुड़ मैंने भिन्न भिन्न और अति बिचित्र देखा और अनेक ब्रह्मांड में फिरा परंतु रामऔर भांतिके कहींभी न देखे ॥ २९ ॥

दो० सोइ शिशुपन सोइशोभा सोइ कृपाल रघुबीर ।
भुवन भुवन देखत फिरेउं प्रेरित मोह समीर ॥

भ्रमत मोहिं ब्रह्माण्ड अनेका । बीते मनहुं कल्प शत एका १
फिरतफिरतनिजआश्रमआयउं । तहंपुनिरहिकछुकालगवायउं २
निजप्रभुजन्म अवधसुनिपायउं । निर्भरप्रेममगन उठिधायउं ३
देखेहुं जन्म महोत्सव जाई । जेहि बिधि प्रथम कथा मैंगाई ४
राम उदर देखेहुं हरियाना । देखत बनै न जाइ बखाना ५
तहंपुनि देखेउं राम सुजाना । माया पति कृपाल भगवाना ६
करहुं बिचार बहोरि बहोरी । मोह कलिल व्यापितमतिमोरी ७
उभयघरी महं मैं सब देखा । भयउं भ्रमित मनमोह बिशेषा ८

दो० देखिकृपाल बिकल मोहिं बिहसे तब रघुबीर ॥
बिहसतही मुखबाहिर आयउं सुनु मति धीर ॥ ३० ॥

सोईते बालपन देखा सोई शोभा देखी सोई कृपाल राम देखे मोहकी पवन का प्रेरा अंड अंडप्रति देखता फिरा ॥ चौपाई ॥ इसी प्रकार अनेक अंडकोश में भ्रमते भ्रमते मेरेको ऐसा जान परा मानों सौकल्प बीतिगये १ हरएक ब्रह्मांड में फिरता फिरता अपने आश्रम में आजाऊं और तहां रहिकर कुछकाल बिताऊं २ जबअपने स्वामीका अयोध्यामें जन्महुआ सुनिपाऊं तब निर्भर प्रेममें मग्नउठि दौरूं ३ तहां तहां स्वामी का जन्म महोत्सव जा देखूं जैसा बालकांडमें तुमको सुनायाहै ४ यह सब रामहीके उदर में देखता फिरूं सो कुछ कहा नहीं जाता है ५ फिर तहांराम को मैंने सुजान रूप और मायापति भगवान् माधव रूप देखा ६ बारंबार बिचार करताहूं परंतु मोहकी कर्दम कीचमें सनी बुद्धितातें कुछभी समुझ में न आया ७ यह सब चरित्र मैंने दोही घरीमें देखा मनमें बिशेषमोह तातें भ्रमित होगया ८ ॥ दोहा ॥ तब तो कृपाल स्वामी मेरेको बिकल देखकर जो हंसे सो हंसतेहीमें मुख के बाहर हे गरुड़ आगया ॥ ३० ॥

॥ यहनीलाचलतीसशिखिरकामानहुआ ॥

दो० सोइ लरिकाई मोहिंसन करन लगे पुनि राम ।
कोटि भांति समुझावहुं मन न लहै बिश्राम ॥

देखि चरित यहसो प्रभुताई । समुझत देह दशा बिसराई १
धरणि परेउं मुखआव न बाता । त्राहित्राहि आरत जनत्राता २
प्रेमा कुलप्रभु मोहिं बिलोकी । निज माया प्रबल्यता रोकी ३
कर सरोजप्रभु ममशिर धरेऊ । दीनदयालसकलदुख हरेऊ ४
कीन्ह राममोहिं बिगतबिमोहा । सेवक सुखद कृपा संदोहा ५
प्रभुता प्रथम बिचारि बिचारी । मन महं हर्ष होइ अति भारी ६
भक्त बछलता प्रभु की देखी । उपजी मम उर प्रीति बिशेषी ७
सजलनयन पुलकितकरजोरी । कीन्ही बहुबिधि बिनयबहोरी ८
दो० सुनि सप्रेम मम बाणी देखि दीन निज दास ॥
बचन सुखद गंभीर मृदु बोले रमा निवास ॥ ३१ ॥

सोई बालचरित्र मेरेसाथ फिरि स्वामीकरने लगे कोटि भांतिसे समुझताहूं परंतु मनबिश्राम नहीं पाताहै ॥ चौपाई ॥ इसचरित्रको तोदेखते औरउस प्रभुताई कोसमुझते मेरेको देहकी दशा बिसरि गई १ पृथ्वीपर गिरि परा मुखसेबात नआई केवलइतना हीकहा किहे आरतबत्सल स्वामी मेरी रक्षाकरौ २ ऐसा प्रेममें बिकल स्वामीने मेरेको देखिकर अपनी मायाकी प्राबल्यता रोकिली ३ अपना करकमल मेरे माथेपर रखदिया औरदीन दयालने मेरासब दुख हरिलिया ४ और मुझको मोह रहित करिदिया ऐसे रामस्वामी सेवकोंके सुखदायक औरकृपाके संदोह कहें निवासहैं ५ अबतो प्रथम जो स्वामीकी प्रभुतादेखि आयारहूं उसको बिचारि बिचारिकर मेरेमनमें अतिही हर्षहोने लगा ६ औरस्वामीकी भक्त बत्सलता देखिकर हृदय में बड़ीही प्रीति उत्पन्नहुई ७ सजलतो मेरेनेत्र होगयेऔर पुलकित शरीर होगया हाथजोरिकर अनेकभांति बिनती करी ॥ ८ ॥ दोहा ॥ तबतो सप्रेम मेरीबिनती को सुनि दीन और अपना दासजानि कर अति सुखदायक औ गंभीर कोमल बचन रामस्वामी बोले ॥ ३१ ॥

दो० काग भुशुंडि मांगु बर अति प्रसन्न मोहिं जानि ।
अणिमादिक सिधि अपरनिधि मोक्ष सकल गुण खानि ॥
ज्ञान विबेक बिरति बिज्ञाना । मुनि दुर्लभ गुणजे जगजाना १
आज देहुं सब संशय नाहीं । मांगु जो तोहि भाव मन माहीं २
सुनि प्रभु बचनउमग अनुरागा । मनअनुमान करनतबलागा ३
प्रभुकह देन सकल सुख सही । भक्ति आपनी देन न कही ४

भक्तिहीन गुणसुख सब कैसे । लवण बिना बहु व्यंजन जैसे ५
भक्ति हीन सुख कवने काजा । अस बिचारि बोलेउ खगराजा ६
जो प्रभु होइ प्रसन्न बर देहू । मोपर कृपा करहु अरु नेहू ७
मन भावत बर मांगहु स्वामी । तुम उदार उर अंतरयामी ८
दो० अबिरल भक्ति बिशद तव श्रुति पुराण जो गाव ।
जेहिं खोजत योगीशमुनि प्रभु प्रसाद कोउ पाव ॥ ३२ ॥

हेकागभुशुंडि बरंब्रूहि बरमांग मेरेको अपनेपर अतिप्रसन्न जानिकर जो तूचाहे अणिमामहिमादिक सिद्धि और निधि औरसमस्त सुखकी खानिमोक्ष ॥ चौपाई ॥ ज्ञान औरबिबेक, बैराग, बिज्ञान और मुनिजनोंको भीदुर्लभ गुणजो तूसंसार में जानै आज तेरेको सबदूंगा तातें जोतेरे मनमें भावै सोमांगिले १ । २ ऐसेस्वामीके बचन सुनिकर अनुराग उमगा औरमनमें अनुमानकरने लगा किस्वामीने समस्तगुण औरसुखतो ठीक देनेकहे परंतु अपनी भक्तिनहीं देनेकही ३ । ४ भक्तिबिहीन समस्तगुण औरसुख कैसे वृथा हैं जैसेएक लवण बिना अनेक ब्यंजन होतेहैं ५ भक्तिबिना सुखमेरे कौन काम केहैं यह बिचारिकर हेगरुड़ मैंस्वामीसे बोला ६ हेस्वामी जोमेरेको आप प्रसन्नहोकर बरदेतेहो और मेरेपर कृपा औरप्रेम करतेहो तोमैंअपना मन भावता बरआपसे मांगताहूं आपतो अतिउदार और अंतर्यामीहो ७ । ८ ॥ दोहा ॥ अबिरल कहैं तेलकी धारके समान निरंतर और उज्ज्वल आपकी भक्तिजो वेदपुराणोंमें कहीहै औरजिसके योगीश मुनि सब खोजतेहैं जाकी कृपासे कोई बिरला पावता है ॥ ३२ ॥

दो० भक्त कल्प तरु प्रणत हित कृपासिंधु सुखधाम ।
सोइ निज भक्ति मोहिं प्रभु देहु दयाकरि राम ॥
एवमस्तु कहि रघुकुल नायक । बोले बचन परम सुखदायक १
सुनु बायस तैं सहज सुजाना । काहे न मांगसि अस बरदाना २
सबसुख खानि भक्तितैंमांगी । नहिंकोउतोहिं समानबड़भागी ३
मुनिजोकोटि यतननहिं लहहीं । जेजपयोग अनलतनदहहीं ४
रीझेउं देखि तोरि चतुराई । मांगेसि भक्ति मोहिं अति भाई ५
सुनु बिहंग प्रसाद अब मोरे । सब शुभ गुण बसिहैं उरतोरे ६
भक्ति ज्ञान बिज्ञान बिरागा । योग चरित्र रहस्य बिभागा ७
जानब तैं सबही कर भेदा । मम प्रसाद नहिं साधन खेदा ८

दो॰ माया संभव भ्रम सब अब न ब्यापिहैं तोहिं ॥
जानेहु ब्रह्म अनादि अज अगुण गुणाकर मोहिं ॥ ३३ ॥

हे भक्तोंके कल्पवृक्ष हे शरणागतोंके हितकारी कृपासिंधु हे सुखधाम राम स्वामी सोई अपनी भक्ति मेरेको दया करिके आप दीजिये ॥ चौपाई ॥ ऐसी मेरी उत्तम याचना सुनिकर एवमस्तु कहिकर रघुकुलनायक राम परमसुखदा यक बचन बोले १ सुनु हे बायस तूतो स्वभावही ते सुजान है ऐसा बरदान क्यों न मांगे २ समस्त सुखकी खानि मेरी भक्ति तूने मांगी तो तेरे समान बड़भागी कौन है ३ जिस मेरी भक्तिको मुनिजन अनेक यत्नोंसे भी नहीं पाते हैं जो जप करतेहैं योग साधते हैं पंचाग्नि तपते हैं ४ सो मैं तेरी चतुराई देखिकर बड़ा प्रसन्न हुआ कि मेरेलुभानेपर भी तूने भक्तिही मांगी यह तेरी चतुराई मेरे को बहुतहीभायी ५ सुनु हे भुशुण्डि अबमेरे अनुग्रहसे तेरे हृदयमें समस्त सद्गुण निबास करेंगे ६ भक्तिके सायही ज्ञान बिज्ञान, बैराग, योगचरित्र, रहस्योंके बिभाग तू सबके भेद जानि जायगा केवल मेरे अनुग्रहही से कुछ साधनोंका खेद तेरे को न होगा ७ ॥ ८ ॥ दोहा ॥ माया संभव भ्रम अब तेरेको कोई भी नहीं ब्यापैंगे सदा मेरेको अनादि अजन्मा अबिद्या गुण बर्जित दिव्य गुणाकार ब्रह्म जानना ॥ ३३ ॥

दो॰ मोहिं भक्त प्रिय संतत अस बिचारि सुनु काग ।
काय बचन मन पद कमल करसि अचल अनुराग ॥

अबसुनु परमबिमल ममबानी । सत्यसुगम निगमादि बखानी १
निजसिद्धान्त सुनावहुंतोहीं । सुनिमन धरुसब तजिभजुमोहीं २
मम माया संभव संसारा । जीव चराचर बिबिधि प्रकारा ३
सबमम प्रियसबमम उपजाये । सबतेअधिक मनुजमोहिंभाये ४
तिनमहं द्विजद्विजमहंश्रुतिधारी । तिनमहंनिगमधर्मअनुसारी ५
तिनमहंप्रिय बिरक्तपुनि ज्ञानी । ज्ञानिहुंते अतिप्रिय बिज्ञानी ६
तिनसबमहंमोहिंप्रियनिजदासा । जेहिगतिमोरिनदूसरिआशा ७
पुनिपुनिसत्यकहौंतोहिंपाहीं । मोहिसेवकसमप्रियकोउनाहीं ८

दो॰ शुचि सुशील सेवक सुमति प्रिय कहु काहि न लाग ॥
श्रुति पुराण कह नीति अस सावधान सुनु काग ॥ ३४

मेरेको सबसे अधिक सदा भक्तही प्यारा है यह बिचारिकर हे भुशुंडि तन मन बचन से मेरे चरण कमलोंमें प्रेम करते रहना ॥ चौपाई ॥ अब तू परम उत्तम मेरी

बाणी सुनु जो सत्य और सुगम है और निगमादि सब सद्ग्रन्थों में कही है गीतायां॥ सर्वगुह्यतमंभूयः शृणुमेपरमंवचः इष्टोऽसिमेदृढमतिस्ततोवक्ष्यामितेहितं १ अपना सिद्धांत जीवोंका परमहित मैं तेरेको सुनाता हूं सो सुनिकर मनमें धारणकरु अर्थात् मन्मनाभवमद्भक्तोमद्याजीमांनमस्कुरु सबतजि॥सर्वधर्मान्परित्यज्य॥भजुमोहीं॥मामेकं शरणंव्रज २ क्योंकि यह समस्त संसार मेरीही मायासे उत्पन्नहै जिसमें चराचर जीव अनेक प्रकारके हैं ३ ते सब मेरे प्यारे हैं क्योंकि मेरेही उपजाये हैं तिन सबमें मनुष्य मेरेको अधिक प्यारेहैं ४ मनुष्योंमें द्विज प्यारेहैं उनसे वेदपाठी अधिक प्यारे हैं तिनसे वैदिक धर्मानुसारी प्यारे हैं ५ तिनसे वैरागी प्यारे हैं तिनसे ज्ञानी प्यारे हैं ज्ञानियोंसे विज्ञानी अति प्यारे हैं ६ उन सबमें जो मेरा दास होजावै अर्थात्जो चराचरमें मेरा भक्त हो अथवा मनुष्योंमें कोई वर्ण वा द्विजातियोंमें कोई भक्तहो सो मेरेको सबसे अधिक प्यारा है जिसको केवल मेरीही गति दूसरे का आश भरोसा नहीं है ७ बार बार मैं तेरेसे सत्य कहता हूं कि मेरेको सेवक के समान तो कोई भी प्यारा नहीं है ॥ ८ ॥ दोहा पवित्र और सुशील सुमति सेवक कहो किसकोप्यारा नहीं लगता है वेद पुराण यह नीति सब कहते हैं उसका दृष्टांत हे काग तू सावधान होकर मेरे से सुनु ॥ ३४ ॥

एक पिताके बिपुल कुमारा । होहिं पृथक गुण शीलाचारा १
कोउ पंडित कोउ तापसज्ञाता । कोउ धनवंत शूर कोउ दाता २
कोउ सर्बज्ञ धर्मरत कोई । सब पर पितहिं प्रीति सम होई ३
कोउ पितु भक्त बचन मन कर्मा । सपनेहु जान न दूसर धर्मा ४
सो सुत पितु प्रियप्राण समाना । यद्यपि सो सब भांति अयाना ५
यहि बिधि जीव चराचर जेते । त्रिजग देव नर असुर समेते ६
अखिल बिश्व यह मोर उपाया । सब पर मोरि बराबर दाया ७
तिनमहं जोपरिहरि मदमाया । भजहिं मोहिं मनबचअरुकाया ८
दो० पुरुष नपुन्सक नारि महं जीव चराचर कोइ ॥
सर्ब भाव भजु कपट तजि मोहि परम प्रिय सोइ ३५ ॥

एक पिता के अनेक पुत्र होते हैं उन सबके गुण शील आचरण पृथक् पृथक्ही होतेहैं १ कोई तो उनमेंसे पंडित होताहै कोई ज्ञानी होता है कोई धनवान्होता है कोई दाता होता है कोई सर्वज्ञ होता है कोई धर्मिष्ठ होता है पिताकी प्रीति उन सब पर एकसी होती है २ । ३ और कोई पुत्र केवल पिताकी सेवामें परायणतन मन बचन से है दूसरा कोई धर्म नहीं जानता है तो सोई पुत्र पिता को प्राण के समान प्यारा होता है यद्यपि सो सबही विधि अज्ञान है ४ । ५ इसी प्रकार जितने

चराचर जीव देव, मनुष्य, तृजग स्थावर हैं समस्त बिश्व मेरीही रची है सबपर मेरी एकहीसी दया है ६ । ७ उनमें से जो मद, मायाको छोड़ि केवल तन, मन, बचन से मेरेहीको भजते हैं ॥ ८ ॥ तो पुरुष होइ वा नपुंसक होइ अथवा स्त्री होइ वा चराचरमें कोई होइ जो सर्ब भाव मेरेही को भजता है मेरेकोभी सोई परम प्यारा होताहै ॥ येयथामांप्रपद्यंते तान्तथैवभजाम्यहं ॥ ३५ ॥

सो० सत्य कहौं खग तोहिं शुचि सेवक मम प्राण प्रिय ।
अस बिचारि भजु मोहिं परिहरि आश भरोस सब ॥

कबहुंन काल व्यापिहै तोहीं । सुमिरसि भजसि निरंतरमोहीं १
प्रभुबचनामृतसुनिनअघाऊं । पुलकिततनमनअतिहरषाऊं २
सोसुख जानै मन अरु काना । नहिं रसना पर जाइ बखाना ३
प्रभुशोभासुखजानहिंनयना।किमिकहिसकहिंतिनहिंनहिबयना
बहुबिधिमोहि प्रबोधि सुखदेई । लगे करन शिशु कौतुक तेई ५
सजलनयन कछुमुखकरि रूखा । चितैमातु लागीअति भूखा ६
देखि मातु आतुर उठि धाई । कहिमृदु बचन लिये उर लाई ७
गोद राखि कराइ पय पाना । रघुपति चरित ललितकरगाना ८

सो० जेहि सुख लागि पुरारि अशिव बेष कृत शिव सुखद ।
अवधपुरी नर नारि तेहि सुखमहं संतत मगन ॥ ३६ ॥

हे भुशुण्डि मैं तेरेसे सत्यही कहता हूं कि मेरेको सर्ब गुणशून्य केवल सेवकही प्राणोंके समान प्यारा है यह बिचारिकर समस्त धर्मोंकी आशा और भरोसा छोड़ि केवल मेरीही शरणहो ॥ चौपाई ॥ कभी तेरेकोकाल नहीं ब्यापैगा ॥ अहंत्वांसर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामिमाशुच निरंतर मेरेही को सुमिरते भजते रहना १ ऐसे अमृत के समान स्वामी के बचन सुनते मेरी तृप्ति नहीं होती तनतो पुलकित और मन में आनन्द बढ़ने लगा २ उस आनन्द को हे गरुड़ मेरे मन और कानही जानते हैं रसना से बखान नहीं किया जाता है ३ और स्वामीकी शोभाके सुखको मेरे नेत्रही जानतेहैं ते कहि कैसे सकैं उनके बाणी नहीं है ४ फिरितो राम स्वामी मेरेको अनेक भांति समुझायकर और आनन्द देकर तेई अपने बालकौतुक करने लगे ५ कि माताकी ओर देखि सजलतो नेत्र और रूखा सा मुख करि लिया मानों अतिही भूख लगी है ६ सो दशा देखतेही माता उठिदौरी कोमल बचन कहिकर हृदयसे लगा लिये ७ गोद में बैठारि दूध पिवाय राम के बाल चरित्र गाने लगी ॥ ८ ॥ जिस सुखके लोभ से त्रिपुरमर्दन शिवजीने बिष्णु भगवान की आज्ञासे यह अमंगल बेष अपने पर धारण

करि लिया है उस आनन्द में अयोध्या के नर नारी सदा मग्न रहते हैं पद्मपुराणे विष्णुरुवाच॥ त्वंचरुद्रमहाभागमोहनार्थंसुरद्विषां पाषंडाचरणंधर्मंकुरुष्वसुरसत्तम१ एवं देवहितार्थायवृत्तिंवेदबिगर्हितां विष्णोराज्ञांपुरस्कृत्यकृतंभस्मादिधारणं ॥ ३६ ॥

सो० सोई सुख लवलेश जिहिं बारेक सपनेहु सुनेउ ।
ते नहिं गणहिं खगेश ब्रह्म सुखहिं सज्जनसुमति ॥
मैं पुनि अवध रहेउं कछुकाला । देखेउं बाल बिनोद रसाला १
रामप्रसाद भक्ति बरपायउं । प्रभु पदबंदि निजाश्रमआयउं २
तबते मोहिं न ब्यापी माया । जबते रघुनायक अपनाया ३
यहसब गुप्तचरित मैं गावा । हरि माया जिमि मोहिं नचावा ४
निजअनुभवअबकहहु खगेशा । बिनुहरिभजन न जाहिंकलेशा ५
राम कृपा बिनु सुनु खगराई । जानि न जाइ राम प्रभुताई ६
जाने बिना न होइ प्रतीती । बिना प्रतीति होइ नहिं प्रीती ७
प्रीतिबिना नहिंभक्ति दृढ़ाई । जिमि खगपति जलकीचिकनाई८
सो० बिनु गुरु होइ कि ज्ञान ज्ञान कि होइ बिराग बिनु ॥
गावहिं वेद पुराण सुख कि लहिय हरिभक्ति बिनु ॥ ३७

जिस आनन्दमें अयोध्यावासी मग्न रहते हैं उस आनन्द के समुद्र के बिंदु का किंचित्लेश भी जिन सुमति सज्जनों ने स्वप्नमें भी सुना है ते सुमति सज्जन ब्रह्मानन्द को भी कुछ नहीं गनते हैं ॥ चौपाई ॥ तिस पीछेमैंने अयोध्यामें कुछकाल और रहिकर अति उदार स्वामीका बालचरित्र देखा १ रामकीकृपा से भक्तिबर मैंने पाया और स्वामीके चरणोंको प्रणाम करि अपने आश्रम को चला आया २ तब से मेरे को माया नहीं ब्यापी है जबसे रघुनायक स्वामीने अपनाया है ३ यह समस्त गुप्तचरित्र मैंने तुमको सुनाया है जैसे भगवन्माया ने मेरे को नचाया है ४ अब मैं अपना यथार्थ ज्ञान हे गरुड़ तेरेसे कहता हूं कि भगवद्भजन बिना जीवों का क्लेश किसी उपायसे नहीं जाता है ५ रामकी अहेतुकी कृपा बिनातो हे गरुड़ रामकी प्रभुताही नहीं जानी जाती है ६ और प्रभुता जाने बिना भगवदवतारों में प्रतीति नहींहोती है और प्रतीति बिना प्रीति कैसे होतीहै प्रीति बिना भक्ति स्थिर नहीं रहती है जैसे जलकी चिकनई जलसूखे पीछे जाती रहतीहै ७ ॥ ८ ॥ सोरठा ॥ गुरुके बिना कहीं ज्ञान होता है और ज्ञान कहीं बैरागके बिना होताहै तैसेही वेद पुराण सब॥ कहते हैं कि जीव भगवद्भक्ति बिना बिश्राम कभी नहीं पा सकता है ॥ ३७

सो० कोउ बिश्राम कि पाव तात सहज संतोष बिनु ।
चलै कि जल बिनु नाव कोटि यतन पचि पचि मरिय ॥
बिनुसंतोष कि कामनशाहीं । काम अछत सुख सपनेहुं नाहीं १
रामभजनबिनुमिटहिकि कामा । थलबिहीनतरुकबहुंकिजामा २
बिनु बिज्ञान कि समता आवै । कोउ अवकाश कि नभ बिनु पावै ३
श्रद्धा बिना धर्म नहिं होई । बिनु महि गंध कि पावै कोई ४
बिनु तप तेज कि कर बिस्तारा । जल बिनु रस कि होइ संसारा ५
शील कि मिल बिनु बुध सेवकाई । जिमि बिनुतेज नरूपगुसाईं ६
निज सुखबिनु मनहोइकिथीरा । परसकिहोइ बिहीन समीरा ७
कवनिहु सिद्धिकिबिनुबिश्वासा । बिनुहरिभजननभवभयनाशा ८
दो० बिनु बिश्वास भक्ति नहिं तिहि बिनु द्रवहिं न राम ॥
राम कृपा बिनु सपनेहुं जीव कि लह बिश्राम ॥ ३८ ॥

सौभाविक संतोष बिना कोई बिश्राम नहीं पाता है जैसे जल बिना नाव कोटि उपायसे भी नहीं चलती है चौपाई क्योंकि संतोष बिना कामना नहीं सिराती है और कामना बिना गये बिश्राम स्वप्न में भी नहीं होता है १ राम भजन बिना कामना नहीं मिटती है जैसे थल बिना बृच नहीं जमता है २ जैसे बिज्ञान बिना समता नहीं आती है और आकाश बिना अवकाश नहीं मिलताहै ३ जैसे श्रद्धा बिना धर्म नहीं होता है और पृथ्वी बिना गन्ध नहीं मिलती ४ जैसे बिना तपके तेजका बिस्तार नहीं होता है और बिना जलके रस नहीं होता है ५ जैसे बुधजनोंकी सेवा बिना शील नहीं मिलता है और बिना तेजके रूप नहीं होता है ६ जैसे आत्मानुभव सुख बिना मन स्थिर नहीं होता है और पवन बिना स्पर्श नहीं होता है ७ जैसे किसी कार्य्य की सिद्धि अथवा अणिमादि सिद्धि बिश्वास बिना नहीं होती है तैसेही हे गरुड़ बिना भगवद्भजन संसार की त्रासका नाश नहीं होता है । ८ ॥ दोहा ॥ जबतक जीवका भगवदवतारों में बिश्वास नहीं तबतक भक्ति नहीं होतीहै और जब तक भक्ति नहीं होती है तब तक राम कृपा नहीं करते हैं और जबतक रामकृपा नहीं करते हैं तब तक हे गरुड़ इस जीवको बिश्राम नहीं मिलताहै ३८ ॥

सो० अस बिचारि मति धीर तजि कुतर्क संशय सकल ।
भजहु राम रघुवीर करुणाकर सुन्दर सुखद ॥
निजमति सरिस नाथ मैं गाई । प्रभुप्रताप महिमा खगराई १

कहेउंन कछुकरि युक्तिबिशेषी । यहसब मैं निज नयननिदेखी २
महिमा नाम रूप गुणगाथा । सकल अमित अनंत रघुनाथा ३
निजनिजमतिमुनिहरिगुणगावहिं।निगमशेषशिवपारनपावहिं ४
तुम्हहिं आदिखगमशकप्रयंता । नभउड़ाहिंनहिंपावहिंअंता ५
तिमिरघुपति महिमाअवगाहा । तातकबहुं कोउपाव किथाहा ६
राम काम शतकोटि सुभगतन । दुर्गा कोटि अमित अरिमर्दन ७
शक्रकोटिशत सरिस बिलासा । नभशतकोटि अमितअवकाशा ८
दो० मरुत कोटिशत बिपुल बल रबि शत कोटि प्रकाश ।
शशि शत कोटि सुशीतल शमन सकल भव त्रास ॥ ३६

ऐसा बिचारि कर हे मतिधीर गरुड़ भगवदवतारों में समस्त कुतर्क और संशय छोड़ि कर रघुबीर रामही का भजन करो येही राम करुणाकर हैं परम सुन्दर हैं समस्त सुखदायक हैं इनसे परे और कोई नहीं है रामंसत्यपरब्रह्म रामात्किंचिन्न-विद्यते ॥ चौपाई ॥ अपनी बुद्धिके समान हेनाथ मैंने रामके प्रतापकी महिमा तुमसे कही १ यह सब मैंने अपनी आंखोंका देखा कहा है कुछ युक्ति विशेष नहींहै २ राम की महिमा, रामके नाम रामके गुणोंकी गाथा सब अमित है क्योंकि रामअनन्त हैं३ अपनी अपनी बुद्धिके अनुसार मुनीश्वर रामके गुण जहांतक उनसे बनता है बढ़ा कर कहि लेते हैं परंतु पार तो न वेद पाते हैं न शेष पाते हैं न शिव पाते हैं ४ तुमसे लेकर मशक पर्य्यंत पक्षी आकाशमें जैसे उड़ते हैं और उसका पार कोई भी नहीं पाता हैं तैसेही रामकी महिमा अथाहहै उसकी थाहकैसे कोईपा सकताहै५।६ शतकोटि कामके समान राम सुन्दर हैं और अमित कोटि दुर्गा देवी के समान अरिमर्द्दन हैं ऐसा कहने से भी क्या रामकी महिमा का पार मिलता है ७ शतकोटि इन्द्रके समान रामका ऐश्वर्य्य है और शतकोटि आकाशके समान रामका अवकाश है ॥ ८ ॥ शतकोटि पवनके समान रामका बल है और शतकोटि सूर्य्य के समान प्रकाश है शतकोटि चन्द्रमाके समान शीतल हैं ॥ ३६ ॥

दो० काल कोटि शत सरिस अति दुस्तर दुर्ग दुरंत ।
धूमकेतु शतकोटि सम दुराधर्ष भगवंत ॥
प्रभुअगाध शतकोटि पताला । शमन कोटिशत सरिसकराला १
तीरथअमित कोटिसम पावन । नाम अखिल अघपुंजनशावन २
हिमगिरिकोटिअचल रघुबीरा । सिंधुकोटि शत सम गम्भीरा ३

कामधेनु शत कोटि समाना । सकल काम दायक भगवाना ४
शारद कोटि अमित चतुराई । बिधि शतकोटि सृष्टि निपुणाई ५
बिष्णु कोटि शत पालन कर्त्ता । रुद्र कोटि शत सम संहर्ता ६
धनद कोटि शत सम धनवाना । माया कोटि प्रपंच निधाना ७
धराधरण शतकोटि अहीशा । निरवधि निरुपमप्रभु जगदीशा ८

शतकोटि कालके समान राम दुस्तर हैं दुर्ग हैं दुरंत हैं शतकोटि अग्निके समान दुराधर्षहैं ॥ चौपाई ॥ पातालते शतकोटि गुणे अगाध हैं बज्रसे शतकोटि गुणे कराल हैं १ अमित कोटि तीर्थोंके समान पावनहैं जिन स्वामीका नाम पाप नशावन है २ कोटि हिमाचलके समान राम अचल हैं शतकोटि समुद्रके समान गम्भीर हैं ३ शतकोटि कामधेनुके समान कामदायक हैं ४ शतकोटि शारदाके समान चतुर हैं शतकोटि ब्रह्माके समान सृष्टिकर्त्ता हैं ५ शतकोटि बिष्णुके समान पालनकर्त्ता हैं शतकोटि रुद्रके समान संहार कारक हैं ६ शतकोटि कुबेर के समान धनवानहैं मायासे भी कोटि गुणे प्रपंचनिधान हैं ७ शेषसे भी शतकोटि गुणे धराधरण हैं ऐसी अवधि कल्पना कबिजन करिलेते रामतो निरवधि हैं और निरुपम सर्वेश्वरहैं ॥ ८ ॥

छं० निरुपमनउपमाआनरामसमाननिगमागमकहै ।
जिमिकोटिशतखद्योतसमरबिकहतअतिलघुतालहै ॥
एहिभांतिनिजनिजमतिबिलासमुनीशहरिहिं बखानहीं ।
प्रभुभावगाहकअतिकृपालसप्रेमसुनिसुखमानहीं ॥

दो० राम अमित गुण सागर थाह कि पावहि कोइ ।
संतन सन जस कछु सुनेउं तुम्हहिं सुनायउं सोइ ॥

सो० भाव बश्य भगवान सुख निधान करुणाभवन ।
तजि ममता मदमान भजिय सदा सीता रमण ॥ ४० ॥

रामतो हे गरुड़ निरुपम हैं उपमा कोई भी रामके समान हैहीनहीं ऐसे निगमागम कहते हैं फिरि बड़ों बड़ों से शतकोटि गुणा रामको कहने से क्या उपमा पूरी हुई जाती है जैसे शतकोटि खद्योत जुगुनू के समान सूर्य्यको कहने सेभी अति लघुताहीलहतीहै इसीभांति अपनी अपनी बुद्धिबिलासके अनुसार मुनीश्वररामस्वामी को बखानते हैं और रामस्वामी केवल भावहीके गाहक हैं सो उनके प्रेमसेही सुख मानते हैं रामचन्द्र तो हे गरुड़ गुणों के अनन्त समुद्र हैं उनकी थाह कोई कैसे पा सकता है संतों से जैसा कुछ सुना तैसा आपको सुनाया ॥ सोरठा ॥ राम भग-

वान् केवल भावही के वश हैं आनन्दनिधान करुणा भवनहैं ताते ममता और मदमान सबको छोड़ि कर सीतापति रामचन्द्रही का भजन कीजिये ॥ ४० ॥

यह उत्तर कांड का मध्यम खंड हुआ ॥

सुनि भुशुण्डि के बचन सुहाये । हर्षित खगपति पंख फुलाये १
नयन नीर मन अति हरषाना । श्रीरघुपति प्रताप उर आना २
पाछिल मोह समुझि पछितांना । ब्रह्मअनादि मनुज करिजाना ३
पुनि पुनि काग चरण शिरनावा । जानि रामप्रिय प्रेम बढ़ावा ४
गुरु बिनु भवनिधि तरैन कोई । जो बिरंचि शंकर सम होई ५
संशय सर्प ग्रसेउ मोहि ताता । दुखद लहरि कुतर्क भवबाता ६
तव सरूप गारुडि रघुनायक । मोहिं जियायहु जन सुखदायक ७
तव प्रसाद मम मोह नशाना । राम रहस्य अनूपम जाना ८
दो० ताहि प्रशंसि बिबिधि बिधि शीश नाइ कर जोरि ।
बचन बिनीत सप्रेम मृदु बोले गरुड़ बहोरि ॥ १ ॥

ऐसे सुंदर सुहाये कागभुशुंडि के बचन सुनिकर अति आनन्दित गरुड़ने अपने पंख फुलादिये १ नेत्रों में प्रेमका जल भरिआया मनमें अति हर्षित होगये श्रीराम का प्रताप हृदय में निश्चित होगया २ पछिला अपना मोह समुझि कर पछिताये कि अनादि ब्रह्म को मनुष्य करके जाना ३ बारंबार कागभुशुण्डिके चरणों को शीश नवाया और राम का परम प्यारा जानकर उनपर प्रेम बढाया और बोले ४ सत्यहै हेनाथ गुरु बिना संसार समुद्र को कोई भी नहीतरि सकता है यदि ब्रह्मा शिवके समान होतोभी ५ संशय के सर्प ने हेनाथ मेरेको डसा रहे ताते अति दुखदायक कुतर्क लहरि आती रही ६ आपरूपी गारुड़ी मंत्र वेत्ताबायगी के पास भेजिकर जिन सुखदायक रघुनायक रामने मेरे को जियाइ लिया ७ आपके अनुग्रह से मेरा मोह नाश होगया और अनूपम राम रहस्यभी जाना ८ ॥ दोहा ॥ तिस पीछे कागभुशुण्डि की अनेक भांति प्रशंसा करि शीश नवाय हाथ जोरि कर प्रेम समेत अतिनम्र बचन गरुड़ फेरि बोले ॥ १ ॥

दो० प्रभु अपने अबिबेक ते पूछहुं स्वामी तोहिं ।
कृपासिंधु सादर कहहु जानि दास निज मोहिं ॥
तुम सर्बज्ञ तज्ञ तम पारा । सुमति सुशील सरल आचारा १
ज्ञान बिरति बिज्ञान निवासा । रघुनायक के तुम प्रिय दासा २

कारण कवन देह यह पाई । तात सकल मोहि कहहु बुझाई ३
राम चरित सर सुन्दर स्वामी । पायहु कहां कहहु नभगामी ४
नाथ सुना मैं अस शिव पाहीं । महा प्रलयहु नाश तव नाहीं ५
मिथ्या बचन न ईश्वर कहई । सो मेरे मन संशय अहई ६
अग जग जीव नाग नर देवा । नाथ सकल जगकाल कलेवा ७
अंड कटाह अमित लय कारी । काल सदा दुरतिक्रम भारी ८
सो० तुमहि न ब्यापै काल अति कराल कारण कवन ।
मोहि सो कहहु कृपाल ज्ञान प्रभाव कि योग बल ॥ २॥

हे नाथ मैं अपने अज्ञान से आपसे पूछताहूं सोमेरे को आप अपना दास जानि कर प्रेम समेत कहिये ॥ चौपाई ॥ आपतौ सर्वज्ञ हो और तत् ईश्वर के वेत्ता हो तम माया से परे सुमति सुशील सरल आचरण हो ज्ञान बैराग बिज्ञान के निवास हो और रामचंद्र के प्यारे दास भीहो १ । २ फिरि ऐसा कौन कारण है जो आपने यह देह पाई है सो हे नाथ मेरे को आप समुझा कर कहिये ३ और राम चरित्र मानस परम सुन्दर आपने कहां से पाया सोभी कहिये ४ और हेनाथ मैंने शिवजी के मुख से ऐसा सुना है कि आपका नाश महा प्रलय में भी नही होता है ५ सो ईश्वर कदापि मिथ्या नही कहते हैं यह भी मेरे को संदेह है ६ क्योंकि अग कहैं स्थावर जग जङ्गम जो जीव नागलोक, नरलोक, देवलोक निवासी हैं तेतो सबकेसब हेनाथ कालके कलेवाही हैं ७ अनन्त अंड कटाहों का प्रलयकर्त्ता काल अति अति-क्रम दुस्तर है ८ ॥ दोहा ॥ सोकाल अति कराल तुम को नही व्यापता है इसका कौन कारण है सोहे कृपालु मेरेको आप कहिये कि यह ज्ञान का प्रभावहै वा योग का बलहै ॥ २ ॥

दो० प्रभु तव आश्रम आयउं मोर मोह भ्रम भाग ।
कारण कवन सो नाथ सब कहहु सहित अनुराग ॥
गरुड़ गिरासुनि हरषेउ कागा । बोलेउ उमासहित अनुरागा १
धन्य धन्य तवमति उरगारी । प्रश्न तुम्हारि मोहिंअतिप्यारी २
सुनि तव प्रश्न सप्रेम सुहाई । बहुत जन्मकी सुधि मोहिंआई ३
अब निज कथा कहौं मैं गाई । तात सुनहु सादर मनलाई ४
जप तप मख शम दम ब्रतदाना । बिरति बिबेक योग बिज्ञाना ५

सबकर फल रघुपति पदप्रेमा। तेहि बिनु कोउनलहै सुखक्षेमा६
यहि तन राम भक्ति मैं पाई । तांते मोहि ममता अधिकाई ७
जेहिते कछुनिज स्वारथ होई । तेहिपर ममता करुं सब कोई ८
सो० पन्नगारि अस नीति श्रुति संमत सज्जन कहहिं ।
अति नीचहुं सन प्रीति करिय जानि निज परम हित ॥ ३ ॥

और हेनाथ में जो आपके आश्रम में आया सो आतेही मेरा सब मोह नाशहो गया इसका कौन कारण है यह भी प्रेम समेत कहिये ॥ चौपाई ॥ गरुड़ की वाणी सुनिकर हेपार्बती कागभुशुण्डि प्रेम समेत बोले सुनो हेगरुड़ तुम्हारी बुद्धि धन्य है और तुम्हारी प्रश्न मेरेको अतिप्यारीलगती है २ तुम्हारी सुन्दर सुहाई सप्रेम प्रश्न सुनिकर मेरे को अपने बहुत जन्मों की सुधि आगई ३ अब अपनी कथा मैं तुमसे कहताहूं सो मन लगाकर सुनो ४ किजप,तप,यज्ञ,शम,दम,व्रत,दान,बैराग ज्ञान योग, बिज्ञान है ५ इन सबका फल भगवच्चरणारबिन्दों का प्रेम है उस बिना कोई भी सुख और क्षेम नहीं पाता है ६ सोराम भक्ति मेरे को इस शरीरमें मिली है ताते मेरे को इसी शरीर पर अधिक ममता है ७ जिससे कुछ अपना स्वार्थ होता है उस पर सब कोई ममता करते हैं ८ ॥ दोहा ॥ सुनो हेगरुड़ यहां तो नीतिहै वेद का भी संमत है और सत्पुरुष भी कहते हैं कि अपना परमहित जानि कर अति नीच सेभी प्रीति करै ॥ ३ ॥

दो० पाटकीटते होइ ताते पाटंबर रुचिर ।
कृमिपालै सबकोइ परम अपावन प्राण सम ॥
स्वारथ सकल जीव कहंयेहा । मनक्रम बचन राम पदनेहा १
सोइपावन सोइ सुभग शरीरा । जो तनु पाइ भजै रघुबीरा २
राम बिमुख लहि बिधिसम देही। कबिकोबिदन प्रशंसहिंतेही ३
प्रथम मोहमोहिं बहुत बिगोवा । रामबिमुख सुखकबहुं नसोवा ४
नाना जन्म कर्म पुनि नाना । किये योग जपतप मखदाना ५
कवनि योनि जन्मेउं जेहिनाहीं । मैं खगेश भ्रमिभ्रमि जगमाहीं ६
देखेउं करिसब कर्म गुसाईं । सुखी नभयउं अबहिं की नाईं ७
सुधिमोहिं तातजन्म बहुकेरी । शिवप्रसाद मति मोह न घेरी ८
दो० प्रथम जन्म के चरित अब कहहुंसुनहु बिहगेश

सुनिप्रभुपदरति उपजै जाते मिटै कलेश ॥ ४ ॥

देखो कि पाट महा अपावन कीट से होता है जिस के बहु मोल्य पाटम्बर बनते हैं इस लिये उस अपावन कीट को भी प्राणों के समान सब पालते हैं ॥ चैापाई जीव का समस्त स्वार्थ यही है कि तन, मन, बचनसे रामके चरणोंमें प्रेम होय १ सोई शरीर पावन है और सोई सुन्दर है जिस शरीर को पाकर श्रीरामचंद्र का भजन करै २ और रामबिमुख तो ब्रह्मा के समान तन को भी कोविद कवि प्रशन्सा नहीं करतेहैं३स्वपचोऽपिमहीपालबिष्णुभक्तोद्विजाधिकः बिष्णुभक्तिविहीनस्तुद्विजोऽपिस्वपचाधमः पहिले मोह ने मेरे को बहुतही बिगोयारहै रामबिमुख रहूं ताते कभी सुख न पाया ४ नाना जन्मधरे नाना कर्मकरे योग, जप, तप, यज्ञ किये दानदिये ५ कौन सीयोनि है जिस में बारंबारनहीं जन्मा ६ सब प्रकार के कर्म भी करि छोड़े परंतु अब की नाईं सुखी नहीं हुआ ७ और हे नाथ मेरे को सुधि भी बहुत जन्मों की है शिवजी के अनुग्रह से मेरी मति को मोह ने नहीं घेरा ॥ ८ ॥ दोहा ॥ अब मैं हे नाथ अपने प्रथम जन्मों के चरित्र तुम से कहता हूं सो आपसुनो जो सुनिकर स्वामी के चरणों में प्रीति होगी औरक्लेश सब दूरि होंगे ॥ ४ ॥

दो० पूरबकल्प एकप्रभु कलियुग मलकरमूल।
नर अरुनारि अधर्मरत सकलवेद प्रतिकूल
तेहिकलियुग कोशलपुर जाई । जन्मत भयउं शूद्रतनु पाई १
शिवसेवक मन क्रम अरु बानी । आनदेव निंदक अभिमानी २
धन मदमत्त परम बाचोला । उग्रबुद्धि उर दंभ बिशाला ३
यदपि रहेउं रघुपति रजधानी। तदपि नकछुमहिमातबजानी४
अब जाना मैं अवध प्रभावा । निगमागम पुराण असगावा ५
कवनेहुं जन्म अवध बस जोई । राम परायण सो नरहोई ६
अवध प्रभाव जान तब प्राणी । जबउर बसहिं रामधनु पाणी ७
सो कलिकाल कठिन उरगारी । पापपरायण सब नरनारी ८
दो० कलिमलग्रसे धर्म सब लुप्तभये सदग्रंथ ।
दंभिन निज मति कल्पिकरि प्रगट किये बहुपंथ ॥ ५ ॥

पूर्व किसी एककल्प में महा मल मूल हे नाथ कलियुग रहे उस में समस्त नर नारी अधर्म ही में रत और वेद प्रतिकूलरहे ॥ चैापाई ॥ उस कलियुग में मैं शूद्र शरीर पाकर अयोध्या में जन्मता हुआ १ तहां तन, मन, बचन से अपने वर्ण के

अनुरूप केवल शिवही को तो भक्त हुआ आनदेव का निन्दक और अभिमानी रहा २ धन के मद में उन्मत्त और बड़ा बकवादि उग्र कहैं घोर तामसीबुद्धि ताते हृदय में बड़ा दम्भरहा ३ यद्यपि हे गरुड़ मैं अयोध्या ही में रहा तौ भी तब मैंने उस का कुछ भी प्रभाव न जाना ४ अयोध्या के प्रभाव को अबमैंने जाना कि निगमागमादि ग्रन्थों में ऐसा कहा है ५ कि किसी योनि में जो जीव अयोध्या में बसेगा सो राम परायण होगा ६ अयोध्या के प्रभाव को प्राणी तब जानता है जब उस के हृदय में धनुर्धर राम बासकरते हैं ७ सो कलियुग हे गरुड़ महा कठिन रहा कि उस में नर वानारीसब पापपरायण ही रहे ॥ ८ ॥ दोहा ॥ कलियुग के पाप ने धर्म तो सब नाश करिदिये सद्ग्रन्थ कहैं वेदांत सात्विक तंत्र पुराण इतिहास धर्म शास्त्र तो सब लोपहोगये अवैदिक अशास्त्रज्ञ दंभी पाषण्डियोंनेअपनी अपनी बुद्धि से कल्पना करिके अपने अपने नाम के अनेक पन्थ प्रगटकरिदिये ॥ ५

दो० भये लोग सब मोह बश लोभग्रसे शुभ कर्म ।
सुनु हरियान ज्ञान निधि कहौं कछुक कलि धर्म ॥

बरण धर्मनहिं आश्रम चारी । श्रुति बिरोध रतनर अरुनारी १
द्विजश्रुतिबंचकभूपप्रजाशन । कोउनहिंमाननिगमअनुशासन २
मारग सोइ जाकहं जोभावा । पंडित सोइ जो गाल बजावा ३
मिथ्या रंभ दंभ रत जोई । ता कहं संत कहैं सब कोई ४
सोइ सयान जो पर धन हारी । जो करु दंभसो बड़आचारी ५
जोकरि कूट मसखरी जाना । कलियुग सोइगुणवंत बखाना ६
निराचार जो श्रुति पथ त्यागी । कलियुग सो ज्ञानी बैरागी ७
जाके नखअरुजटा बिशाला । सोइ तापसप्रसिद्ध कलिकाला ८

दो० अशुभ भेष भूषण धरैं भक्ष्य अभक्ष्यहिं खाहिं ।
तेइ योगी तेइ सिद्ध नर पूज्यते कलियुग माहिं ॥ ६ ॥

कलियुगमें हेगरुड़ समस्तलोग मोहके बश होगये औरलोभने सबशुभकर्म नाश करदिये अबमैं उसकलियुगके धर्मतुमसे कुछथोड़ेसे कहताहूं सोसुनो चौपाई ॥ नतो बर्णों के धर्मकिसी बर्णमें रहे न आश्रमोंके धर्मकिसी आश्रममें रहे वेदों के बिरोध में परायण सबनर औरनारी होगये १ कलियुगके द्विजलोग श्रुतिबंचक होगये अर्थात् जोअर्थश्रुतियों का ऋषियोंने पुराण स्मृतियोंमें कियाहै उसके बिपरीत करनेलगे और कलियुगके राजा प्रजाही को खानेलगे वेदोंकी आज्ञा तोकोई मानता ही नहींहै २ कलियुगमें मार्ग सोईहै जोजिसको सुहावेऔपंडित सोईहै जोचपल बाचालहोय ३ जो

मिथ्या संकल्पी और दंभ परायणहो उसीको कलियुगमें सबलोग संतकहतेहैं ४ जो पराये धनको हरि लेतेहैं तेकलियुगमें सयाने कहातेहैं औरजो दंभकरते हैं ते बड़े आचारी ठहरातेहैं ५ जोकोई कूटऔर भंडपन करिजानतेहै कलियुगमेंसोई गुणवान् गिना जाताहै ६ जोवेद मार्ग को छोड़ि निराचार रहताहै कलियुगमें सोई ज्ञानीऔर सोई बैरागी कहाताहै ७ बशिष्टस्मृतौ ॥ भ्रष्टोय:स्वाश्रमाचारात्पतित:सबिधीयते चतुर्णामपिबर्णानामाचारोधर्मपालनं जिसके बड़ेबड़े नखऔर बिशाल जटाहों कलिकालके तेई तपस्वीहैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जोमहा अपावन उग्रअमंगल बेषऔर भूषण धारणकिये हैंऔर भक्ष्यअभक्ष्य सब खातेहैं कलियुग में तेईयोगी तेई बड़े सिद्ध कहाते हैं और तेई घरघर पूजे जाते हैं ॥ ६ ॥

सो० जो अपकारी चार तिनकर गौरव मान्य तेइ ।
मनक्रम बचन लवार ते बक्ता कलि काल महं ॥

नारि बिबश नर सकल गुसाईं । नाचहिं नट मर्कट की नाईं १
शूद्र द्विजन उपदेशहिं ज्ञाना । मेलि जनेऊ लेहिं कुदाना २
सबनर काम लोभ रत क्रोधी । देव बिप्र श्रुति संत बिरोधी ३
गुणमंदिर सुन्दरपति त्यागी । भजहिं नारि परपुरुषअभागी ४
सौभागिनी बिभूषण हीना । बिधवन कर शृंगार नवीना ५
गुरु शिष बधिर अंधकर लेखा । एक न सुनहिं एक नहिं देखा ६
हरै शिष्य धन शोक नहरई । सो गुरु घोर नर्क महं परई ७
मातुपिताबालकनबुलावहिं । उदरभरहिंसोइधर्म सिखावहिं ८

दो० ब्रह्म ज्ञान बिनुनारि नर कहैं न दूसरि बात ।
कौड़ी लालच लोभ लगि करहिं बिप्रगुरु घात ॥ ७ ॥

जो परकार्य्य बिनाशकहैं औपिशुनहैं उन्हींका कलियुगमें गुरुत्वहै औरतेईमान्य हैं औरजो तन,मन, बचन से निरे लवारहीहैं तेईकलियुगमें बक्ताहैं ॥ चौपाई ॥ नारियों के वश समस्त नर हैं हेगरुड़ ऐसेनाचते फिरतेहैं जैसेनटके भयसे बंदर नाचतेहैं १ शूद्रलोग ब्राह्मणोंको उपदेशतेहैं ऐसा न चाहिये किकेवल जनेऊही डारिकर जोदान लेलेतेहैं२ सबलोग काम,क्रोध,लोभ,परायणहैं देवता द्विज,देव,वेद,संतजनोंके बिरोधी हैं ३ गुण संपन्न परम सुन्दर पति को छोड़ि अभागिनी पर पतिहो को सेवतीहैं ४ सौभागिनी तो निराभूषण हैं और विधवाओंके नित्यनवीन शृंगार हैं५ कलियुगके गुरु शिष्य अंधे बहिरेही हैं गुरु तो अशास्त्रज्ञहैं कुछ देखाहीनहीं श्रुतिस्मृतिउभौनेत्रौ ब्रह्मणानांप्रकीर्त्तितौ एकेनबिकल: काणाद्वाभ्यामंधइति स्मृत: अर्थात् श्रुतिबेदस्मृति

धर्मशास्त्र येदोनों ब्राह्मणों केनेच कहेहैं जोकोई इनदोनोंमेंसे एकको नहीं जानता है सो एक नेचहीन कानाहै जोदोनों नहीं जानता है सोतो निरा अंधाही है सो कलियुगमें घरघर ऐसेअंधेही गुरुहैं औरशिष्यसबबहिरे हैं क्योंकि जोकोई उनसे कहै कि ऐसे अंधोंका शिष्य होना नचाहिये तौतिबजबहिरे उनका कहना सुनतेही नहीं हैं ६ जोगुरु केवल शिष्यका धनही हरि जानताहै शोकनहीं हरिसकताहै ऐसाअस गुरु महा घोरनर्कहीमें परताहै ७ कलियुगके मातापिता बालकोंको बुलातेहैं उनका उदर भरतेहैं और उदर भरनेहीका धर्म सिखाते हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ ब्रह्मज्ञान बिना नर वा नारी दूसरी बातही नहींकहते हैं और कौड़ी के लोभ केलिये गुरुब्राह्मण कावध करि गेरते हैं और कहते हैं यःयेनंवेत्तिहंतारंयश्चैनंमन्यतेहतं उभौतौनबि जानीतोयंहंतिनहन्यते ॥ १ ॥

दो० बादहिं शूद्र द्विजन सन हमतुमते कछुघाटि ।
जानैब्रह्म सो बिप्र बर आंखि दिखावहिं डाटि ॥

पर त्रिय लंपट कपट सयाने । मोह द्रोह ममता लपटाने १
तेइ अभेदबादी ज्ञानी नर । देखामैं चरित्र कलियुग कर २
आपगये अरु तिनहूं घालहिं । जेकोउ सन्मारग प्रतिपालहिं ३
जे बरणाधम तेलि कुम्हारा । स्वपच किरात कोल्ह कलवारा ४
नारि मुई घर संपति नाशी । मूड़ मुड़ाइ होहिं संन्याशी ५
बिप्र निरक्षर लोलुप कामी । निराचार शठ वृषली स्वामी ६
शूद्र करहिं जप तप ब्रत नाना । बैठि बरासन कहहिं पुराना ७
सबनर कल्पित करहिं अचारा । जाइन बरणि अनीति अपारा ८

दो० भये बरण शंकर कलि भिन्नसेतु सब लोग ।
करहिं पाप पावहिं दुख भय रुज शोक बियोग ॥ ८ ॥

शूद्रलोग द्विजदेवोंसे लोक परलोक बिनाशक मिथ्याबादकरतेहैंकिहम तुमसे कौन बात में घाटि हैं जो सप्तधातुका शरीरतुम्हाराहै सो हमाराभी है ब्राह्मण होना कुछ जाति परनहीं है जो ब्रह्मको जानै सोई ब्राह्मणहै ऐसे कहिकर आंखि दिखाते हैं ॥ चौपाई ॥ जो परदाराभिमर्षीहैं कपट प्रवीणहैं मोह,द्रोह, ममतामेंलपिटेहैं१तेई अभेद बादी बडे ज्ञानी कहावतेहैं किइनके स्वपर बुद्धिनहींहै ॥ब्रह्मैवमेतदखिलंनहिंकिंचिद- स्तितस्मान्नमेसखिपरापरभावदृष्टिः जारेपतौनिजपतौचमानरागाव्यर्थंकिमर्थमसतीतिजन बदन्ति २ आपतो गयेहीहैं और उनकोभी गेरतेहैं जोकोई बिरले बिचारे सन्मार्ग कहै सनातनवैदिक धर्मकोप्रतिपालनकरतेहैं३कलियुगमेंजो बर्णबाह्य तेलकार,कुलाल,स्वपच

किरात, कोल्ह, कलारहैं उनकीजहां स्त्रीमरी और निर्धनहुयेतहां मूंड़मुड़ाइ करसंन्यासी होजातेहैं ४। ५ ब्राह्मण कलियुगके निरेनिरच्छर और लोलुप बड़े कामी भ्रष्टाचार मूर्ख दासीके पति ६ शूद्र कलियुगमें धर्मके बिरुद्ध नाना प्रकार जप,तपब्रत,करते हैं और उत्तमासन पर बैठि कर पुराण बांचतेहैं ७ सब मनुष्यकल्पित आचरही करतेहैं ऐसी अपार अनीति कलियुगकी कुछकही नहीं जातीहै ॥ ८ ॥ दोहा ॥ सब वर्णशंकर और भिन्नमर्य्यादा कलियुग में होगये पापही करतेहैं ताते दुख,भय,रोग,शोक,बियोग होपातेहैं ॥ ८ ॥

दो० श्रुति संमत हरि भक्तिपथ संयुत बिरति बिबेक ।
हठिन चलहिं नर मोहबश कल्पहिं पंथअनेक ॥

तोमर छन्द ॥

बहुदामसवांरहिं धामयती। बिषयाहरिलीन्हिरहीबिरती १
तपसीधनवंतदलिद्र गृही। कलिकौतुकबातनजातकही २
कुलवंतनिकारहिं नारिसती। गृहआनहिं चेरिनिबेरिगती ३
सुतमानहिं मातपिताजबलौं। अबलाननदीखनहींजबलौं
धनवंतकुलीनमलीनअपी। द्विजचिन्हजनेउउघारतपी ५
नहिंमानहिं वेदपुराणनजो। हरिसेवकसंतसहीकलिसो ६
कबिवृन्दउदारधुनीनसुनी। गुणदूषकब्रातनकोपिगुनी ७
कलिबारहिं बारदुकालपरै। बिनुअन्नदुखीसबलोगमरैं ८

दो० सुनु खगेश कलि कपट हठ दंभद्वेष पाषंड ।
मानमोह मारादि मद व्यापि रह्यो ब्रह्मंड ॥

बेदोंके संमत एक भगवत् भक्तिमार्ग जो ज्ञानबैराग संयुक्तहै सोईहै सो उसमार्गतो हे गरुड़ कलियुग में मोह पाषंडके बश कोईहठि कर नहीं चलते हैं अपनी अपनी बुद्धिसेअनेक पंथाकल्पनाकरतेहैंबिष्णुपुराणे। कलौजगत्पतिंबिष्णुंसर्वस्रष्टारमीश्वरंनार्चयिष्यंतिमैत्रेयपाषंडोपहता जनाः भागवते कलौनराजन्जगतांपरंगुरुंचैलोक्यनाथानतपादपंकजं प्रायेणमर्त्याभगवंतमच्युतंइच्छन्तिपाषंडबिभिन्नचेतसाः ।गीतायां। नमांदुःकृतिनो मूढाप्रपद्यंतेनराधमाःमाययापहृतज्ञानाआसुरंभावमाश्रिताः॥चौपाई ॥कलियुगकेसंन्यासी धनकी संचय करतेहैं जिसबिरति से संन्यासीहुये रहैं सोबिषयोंनेहरिली १ कलियुग के तपस्वीतो धनमान्हैं औ गृहस्थ दरिद्रीहैं इसकलिकालकेकौतुककीबात हेतातकही नहीं जातीहै २ कुलवन्त बिवाहिता पतिब्रता कोतो त्याग करतेहैं निर्लज्ज होकर

दासीका सेवन करते हैं ३ पुत्र माता पिताको तभीतक मानतेहैं जबतकस्त्रीकामुख नहीं देखते ४ धनमान्हीं कुलीनगनेजातेहैं कैसेही मलीनहों ब्राह्मणोंका चिन्ह केवल यज्ञसूत्रही रहिगया और तपस्वियोंका नग्न रहना ५ जो वेदपुराणोंकासत्यनहींमानते हैं तेई भागवत संत कहाते हैं ६ कवीश्वरों के तो समूह हैं दाताओंकी धुनि भीनहीं सुनाई परती गुण दूषकोंके तो वृन्दहैं गुणी कोईभी नहीं ७ कालिमें दुकाल बारंबार परते हैं अन्नबिना सब लोग मरे जातेहैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ कलियुगमें सबके उदरमेंकपट हठ, दंभ, पाषंड, द्वेष, मोह, मान, काम, क्रोध, लोभ, मदही व्याप्त होरहे हैं ॥

दो० तामस धर्म करहिं नर जप तप मख ब्रत दान ।
देवन बर्षहिं धरणी बये न जामहिं धान ॥

तोमरछन्द

अबलाकचभूषणभूरिक्षुधा धनहीनदुखीममताबहुधा १
सुखचाहहिंमूढ़नधर्मरता मतिथोरिकठोरनकोमलता २
नरपीडितरोगनभोगकहीं अभिमानबिरोधअकारणहीं ३
लघुजीवनसंबतपंचदशा कल्पांतननाशगुमानअसा ४
कलिकालबिहालकियेमनुजानहिंमानतकोउअनुजातनुजा ५
नहिंतोषबिचारनशीतलता सबजातिकुजातिभयेमंगता ६
ईर्षापरुषाक्षरलोलुपता भरिपूरिरहीसमताबिगता ७
तनपोषकनारिनरासगरे परनिन्दकजेजगमेंबगरे ८

दो० सुनु ब्यालारि काल कलि मल अवगुणआगार ।
गुणहु बहुत कलियुगकर बिनु प्रयास निस्तार ॥

जो धर्म कलियुग में करते हैं सो सब मनुष्य तामसीही करते हैं जप करै तो तामसी तप तपैं तो तामसी यज्ञ करैं तो तामसी ब्रत रहैं तो तामसी दान देइतो तामसी सात्विक धर्मों का लेश भी नहीं उन धर्मों के परिपाक से इन्द्र पृथ्वी पर नहीं बर्षते हैं औ बोने से अन्न नहीं उपजते हैं इसी लिये ऐसा भरद्वाज ने कहा है सात्विकैरेववर्तेतसात्विकस्तुसमाचरेत् राजसंतामसंचैवदूरत:परिवर्जयेत् ॥ गीतायां ॥ ऊर्द्धंगच्छन्तिसत्वस्थामध्येतिष्ठन्तिराजसा: जघन्यगुणवृत्त्यायामधोगच्छन्तितामसा: ॥ छन्द ॥ कलियुग में स्त्रियों का शृंगार केशही रहि गया और क्षुधा बहुत हो गई धनसे हीन दुखी हैं और ममता अनेक प्रकार की है १ धर्म तो कोई नहीं करता है सुख सब चाहते हैं मंद बुद्धि हैं सोभी कठोर कोमल नहीं २ रोग से सब

पीड़ित हैं भोग कहीं भी नहीं अकारण अभिमान और बैर करते हैं ३ कलि में पचाशवर्ष पर्य्यन्त अल्पजीवन है तिस पर गुमान ऐसा है कि कल्पांत मेंभी नाश न होगा ४ कलिकाल ने सब मनुष्य शोकाकुल कर दियेहैं न कोई भगनी को मानता है न बेटी को ५ न तो किसी के संतोष है न कुछ बर्णाश्रम का बिचार है नशांति है जाति कुजाति सब मंगते होगयेहैं ६ ईर्षा, परस्परकटुभाषण, लम्पटता संसार में पूरि रही है समता दूरि हो गई ७ समस्त नारि नर तनपोषक और परनिन्दकही जग में फैलि गये ॥ ८ ॥ दोहा ॥ सुनो हे गरुड़ कलिकाल पाप और अवगुणों का मूल तोहैही परंतु गुणभी बड़ा है अनायास निस्तार हो जाता है ॥

दो० कृतयुग त्रेता द्वापर पूजामख अरुयोग।
जो गति होइ सो कलिहरि नामते पावहिं लोग ॥

कृतयुग सब योगी बिज्ञानी। करि हरि ध्यान तरैं भवप्रानी १
त्रेता बिबिधि यज्ञ नर करहीं। प्रभुहिं समर्पि कर्म भवतरहीं २
द्वापर करि रघुपति पद पूजा। नर भव तरहिं उपाय नदूजा ३
कलियुग केवल हरिगुण गाहा। गावत नरपावतभव थाहा ४
कलियुग योगन यज्ञ न ज्ञाना। एक अधार राम भगवाना ५
सबभरोसतजि जोभजुरामहिं। प्रेमसहित गावहिं गुणग्रामहिं ६
सोभव तर कछु संशय नाहीं। राम प्रताप प्रगट कलिमाहीं ७
कलि कर एक पुनीत प्रतापा। मानस पुण्य होइ नहिं पापा ८

दो० कलियुग सम नहिं आन युग जो नर करु बिश्वास।
गाय राम गुण गण बिमल भव तरु बिनहिं प्रयास ॥ ६ ॥

देखोजो उत्तम गति सतयुगमें अष्टांगयोग से होतीहै और त्रेता में यज्ञोंसेद्वापर मेंभगत्पूजनसे कहीहैसे ईकलियुगमें भगवन्नामोच्चारणहीसेजीवोंको मिलतीहै॥चौपाई॥ सतयुगमेंतो सबयोगीओरसब बिज्ञानीरहेते समाधिस्थ भगवत् ध्यानकरिके संसार को तरतेरहे१ त्रेतामेंजबबर्णाश्रमभेद होगया तबतो मनुष्य भांतिभांतिके यज्ञकरने लगे और उस कर्मको भगवत्समर्पण करिके संसारके पार जाने लगे २ द्वापर में जबयज्ञों की सामर्थ्य न रही तब केवल भगवत् पूजनहीं से संसार का पार पाने लगे ३ और कलियुगमें केवल भगवद्गुणों के गाथाही गाने से अगाध संसार सागर कीजीव थाह पाते हैं ४ कलियुग में न तो योग सधि सकता हैन यज्ञ हो सकतेहैं नज्ञान प्राप्त होता एक राम भगवानही आधार हैं ५ ताते जो कोई इन सबका भरोसा छोड़ि कर केवल रामहीं को भजता है और प्रेम समेत उन के गुणग्राम गाता है

से परम दुस्तरसंसारको तरहोजाताहै कुछ संशय नहीं है कलि में राम का प्रताप प्रत्यक्ष है ६ । ० कलियुग का एक बड़ा प्रताप पुनीत यह है कि मानसी पुण्य तो होता है पापमानसी नहीं होता है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ कलियुग के समान तो औरयुग कोई भी नहीं है जो मनुष्य विश्वास करै तो राम के गुणगणों को गाइ कर संसार सागर को बिना प्रयासही तरिजावे ॥ ६ ॥

दो० प्रगट चारिपद धर्मके कलि महंएक प्रधान ।
येनकेन बिधि दीन्हेउ दान करैं कल्यान ॥

कृत युग धर्म होहिं सब केरे । हृदय राम माया के प्रेरे १
शुद्ध सत्व समता बिज्ञाना । कृत प्रभाव प्रसन्न मन जाना २
सत्व बहुत रज कछुरत कर्मा । सब बिधि सुखत्रेता कर धर्मा ३
बहुरज स्वल्प सत्व कछु तामस । द्वापर धर्म हर्षमय मानस ४
तामस बहुत रजोगुण थोरा । कलि प्रभाव बिरोध सब ओरा ५
बुधयुग धर्म समुझि मनमाहीं । तजि अधर्म रति धर्म कराहीं ६
कालधर्म नहिं ब्यापहिताही । रघुपति चरण प्रीतिअतिजाही ७
नटकृतकपट बिकटखगराया । नटसेवकहिं न ब्यापहिमाया ८
दो० हरिमाया कृतदोष गुण बिनहरि भजन न जाहिं ।
भजिय रामतजिकामसब असबिचारिमनमाहिं ॥ १० ॥

सत्य, शौच, क्षमा, दया ये चारिपद धर्मके प्रसिद्धहैं कलियुगमें चौथाहीपद रह गयाहै ताते जोकोई किसी बिधि से देताहै तो केवल दानही कल्याण करता है ॥ चौपाई ॥ सतयुग में तो सबही के हृदय में ईश्वरकी माया के प्रेरित धर्म होतेहैं १ सतयुगके प्रभावसे शुद्ध सतोगुण और समता विज्ञान रहे ताते सदा सबके मन प्रसन्न रहैं २ त्रेता में सतोगुण बहुत कुछ रजोगुण मिश्रित धर्मरहा ताते सबसुखी रहैं ३ द्वापर में रजोगुण बहुत थोरा सतोगुण कुछ तमोगुण भी मिला धर्म हुआ ताते सबके मनमें हर्ष और भयरहा ४ तामस तो बहुत थोरासा रजोगुण यह कलि-युगका प्रभावहै ताते चारों ओर विरोधही होगया ५ ताते विद्वान्जन युगका धर्म मनमें समुझि कर अधर्मको छोड़ि सनातन धर्महो पर चलतेहैं ६ काल धर्म उसको नहीं व्यापताहै जिसकी प्रीति भगवच्चरणारबिंदोंमें होतीहै ७ जैसेनटकी करी माया महाबिकट होतीहै परंतु जो उनका सेवक होता है उसको नहीं व्यापती है ॥ ८ दोहा ॥ ऐसेही हरिकी मायाके दोष गुण भी हरिकी सेवकाई बिना नहीं जाते हैं

ताते यही सिद्धांत बिचार कर सर्वे कामनाओंको छोड़िकर श्री रामचन्द्र का भजन कीजिये ॥ १० ॥

दो० तेहिं कलिकाल बर्षबहु अवध बसेउं बिहगेश ।
परेउ दुकाल बिपत्ति बश तब मैं गयउं बिदेश ॥

गयउं उजैनी सुनु उर गारी । दीन मलीन दरिद्र दुखारी १
गये काल कछु सम्पति पाई । तहं पुनि करहुं शंभु सेवकाई २
बिप्र एक वैदिक शिव पूजा । करै सदा तेहिं काजन दूजा ३
परमसाधु परमातमबिन्दक । शंभु उपासक नहिं हरिनिन्दक ४
तेहि सेवहु मैं कपट समेता । द्विज दयाल अतिनीति निकेता ५
बाहिज नम्र देखि मोंहिं साईं । बिप्र पढ़ाव पुत्र की नाईं ६
शंभुमंत्रद्विजबरमोहिंदीन्हा । शुभउपदेशबिबिधिबिधिकीन्हा ७
जपहुं मंत्रशिव मन्दिर जाई । हृदयदम्भअहमिति अधिकाई ८

दो० मैं खलमल संकुल मति नीच जाति बश मोह ।
हरिजन द्विज देखे जरौं करौं बिष्णु कर द्रोह ॥ ११ ॥

उस कलियुग में हे गरुड़ मैं बहुत बर्ष अयोध्याही में बसा जब दुकाल परातब बिपत्ति का मारा बिदेश को चलागया ॥ चौपाई ॥ महा दीन अति मलीन चलते चलते उज्जैनी पुरीमेंपहुंचा १ तहां कुछकाल बीते संपति पागया तबतो फेरि शिवका आराधन करने लगा २ एक ब्राह्मण तहां शिवकी वैदिक पूजा करतेरहैं उनको और दूसरा कुछ कार्य्य नहींरहै ३ परम साधु और परमात्मा के वेत्ता ज्ञानी रहैं शिवके उपासकरहे हरि निन्दक नहीं रहैं ४ उनकी सेवा मैं कपट समेत करने लगा द्विज तो बड़े दयाल और नीतिके निधानहीं रहैं ५ मेरेको ऊपरसे अति नम्र देखिकरपुत्र के समान पढ़ाने लगे ६ और सर्वोत्तम शिवका मंत्र उन्होंने मेरेको दिया और अनेक भांति से शुभ उपदेश किया ७ उसीमंत्र को मैं शिव के मंदिर में जाकर जपा करूं हृदय में दम्भ और अहंकार दिन दिन अधिकही होता जाय ॥ ८ ॥ दोहा ॥ मैं नीच पापकी भरी बुद्धि मोह के बश हरिजन द्विज देवों को तो देखतेही जरि मरूं और बिष्णु भगवान का द्रोहही करूं ॥ ११ ॥

सो० गुरु नित मोहिं प्रबोध दुखित देखि आचरण मम ।
मोहिं उपजै सुनि क्रोध दंभिहिं नीति कि भावई ॥

एक बार गुरु लीन्ह बुलाई । मोहिं नीति बहु भांति सिखाई १

शिवसेवा कर फलसुत सोई । अबिचल भक्ति राम पद होई २
रामहि भजहिं तातशिवधाता । नर पामर की केतिक बाता ३
जासुचरण अजशिवअनुरागी । तासुद्रोह सुखचहसि अभागी ४
हरकहं हरिसेवक गुरुकहेऊ । सुनि खगनाथ हृदयममदहेऊ ५
अधम जाति मैं बिद्या पाये । भयउं यथा अहि दूध पियाये ६
मानीकुटिल कुभाग्य कुजाती । गुरु कर द्रोह करौं दिन राती ७
अतिदयालुगुरुस्वल्पनक्रोधा । पुनिपुनिमोहिंसिखावहिंबोधा ८

गुरुदेव हे गरुड़ नित्य मेरे दुष्ट आचरणोंको देखि समुझाया करै सो सुनिकर मेरे को बड़ा क्रोध उपजा करै क्योंकि दंभीको नीति कहां सुहाती है ॥ चौपाई ॥ एक बार गुरुदेवने मेरेको बुला लिया और अनेक भांतिसे नीति सिखाकर कहा १ सुनुहे पुत्र शिवकी सेवा करनेका तो यही परमोत्तम फल है कि अनपायनी भक्ति राम के चरणोंमें इस जीवकी होजावे २ रामको तो हे तात शिवभी सेवते हैं और ब्रह्माभी भजते हैं मनुष्य विचारोंकी कितनी बात है ३ जिन रामके चरणोंके ब्रह्मा शिवही सेवक हैं तिनसे बैर बांधिकर अरे मन्दभागी तू सुख चाहता है ४ जो गुरुनेशिव को बिष्णुका सेवक कहा सो तो सुनतेही हे गरुड़ मेरा हृदय जरिही तो गया ५ मैं नीच जाति बिद्याको पाकर कैसा होगया जैसा दूध पियानेसे सर्प होताहै ॥ उपदेशो हिमूर्खाणां प्रकोपायनशांतये पयःपानंभुजंगानां केवलंबिषबर्द्धनं ६ बड़ा अभिमानी बड़ा कुटिल मंदभागी नीचजाति अब मैं दिन रात्रि गुरुदेवहीका द्रोह कियाकरूं ७ गुरुदेव अतिदयालु किंचित्भीक्रोधनहींकरैबारंबार मेरेको ज्ञानही सिखाया करैं८ ॥ १२

जेहिते नीच बड़ाई पावा । सोप्रथमहिं हठि ताहि नशावा १
धूम अनल संभव सुनु भाई । तेहि बुझाव घन पदवी पाई २
रज मग परी निरादर रहई । सब कर पदप्रहार नित सहई ३
मरुत उड़ाव प्रथमतेहिं भरई । पुनि नृप नयन किरीटन परई ४
सुनुखगपतिअससमुझिप्रसंगा । बुधनहिंकरहिंअधमकरसंगा ५
कबिकोबिदअसगावहिंनीती । खलसनकलहनभलिनहिंप्रीती ६
उदासीन नित रहिय गुसाईं । खलपरिहरिय श्वानकी नाईं ७
मैं खल हृदय कपटकुटिलाई । गुरुहित कहहिं नमोहिंसुहाई ८
दो० एक बार हर मंदिर जपत रहेउं शिव नाम ।

गुरु आयउ अभिमान ते उठि नहिं कीन्ह प्रणाम ॥ १३

सुनो हे गरुड़ नीच जिस से बड़ाई पाते हैं प्रथम उसी को अवश्य नशाते हैं १ देखो धूम अग्निसे उत्पन्न होता है सो मेघ होकर उसी को बुझाता है २ और रज मार्ग में निरादर परी रहती है सदा सबका चरण प्रहार सहा करती है जब पवन उसको उच्चस्थान आकाशमें पहुंचातीहै तब प्रथमतो उसीको बिगारतीहै फिरिराजाओं के नेत्र और मणि जटित मुकुटों पर परती है ३ । ४ यही बिचारि कर हे गरुड़ बुद्धिमान नीचोंका संग नहीं करते हैं ५ क्योंकि कोबिद कवि यह नीति कहते हैं कि दुष्टोंसे न तो कलह भली होतीहै न प्रीति ६ सदा उनसे उदासीनही रहना चाहिये दुष्ट का त्याग कुत्ते के समान करना चाहिये ७ सो मैं महादुष्ट हृदय में कपट और कुटिलता ताते गुरुदेव तो मेरे परमहितकी कहैं परंतु मेरेको न सुहावै ॥ ८ ॥ दोहा॥ एक बार महादेव के मंदिर में उनके नामोंका जप करता रहूं तहां गुरुदेव आये और मैंने अभिमानके मारे उनको उठि कर प्रणाम न किया ॥ १३ ॥

दो० सो दयालु नहिं कछु कहेउ उरन रोष लव लेश ।
अति अघगुरु अपमान तें सहि नहि सके महेश ॥

मंदिर मांझ भई नभ बानी । रे हतभाग्य अधम अभिमानी १
यद्यपि तवगुरुकीन्ह न क्रोधा । अतिदयालचित सम्यकबोधा २
तदपि शाप दैहौं शठ तोहीं । नीति बिरोध सुहाइ न मोहीं ३
जो नहि करौं दंड खल तोरा । भ्रष्ट होइ श्रुति मारग मोरा ४
शठ जे गुरु सन ईर्षा करहीं । रौरव नर्क कोटि युग परहीं ५
त्रजग योनिपुनिधरहिं शरीरा । अयुत जन्म भरिपावहिंपीरा ६
बैठि रहेसि अजगर इव पापी । सर्प होहु खल मल मति ब्यापी ७
महा बिटप कोटर महं जाई । रहुरे अधम अधो गति पाई ८

दो० हा हा कार कीन्हगुरु सुनि दारुण शिव शाप ॥ १४ ॥
कंपित मोहिं बिलोकि अति उर उपजा परिताप ॥

गुरु तो हेगरुड़ परमदयालु उन्होंने तो न कुछ कहा नकुछ कोप किया परंतु असह्यापचार गुरु देवके अपमान करनेसे महादेव नहीं सहिसके ॥ चौपाई ॥ मंदिर के अंतरालय में आकाश बाणीहुई सुनु रेमंदभाग्य अरे अधम अरे अभिमानी यद्यपि तेरे गुरुने तेरे पर कुछभी क्रोध नहीं किया क्योंकि तेअति दयालु चित्त और यथार्थ ज्ञानीहैं उनके मानापमान समानहैं । १ । २ । तौभी मैं तेरे को शाप दूंगा क्योंकि

निज पद भक्ति देहु प्रभु पुनि दूसर बर देहु ॥
तव माया बश जीवजड़ संतत फिरहिं भुलान ।
तेहिपर क्रोध न करियप्रभु कृपासिंधु भगवान ॥
शंकर दीनदयाल प्रभु यहि पर होहु कृपाल ।
शाप अनुग्रह होइ जेहिं नाथ थोरेही काल ॥

जो सर्वज्ञ शिव स्वामीने यह बिनती सुनी और ब्राह्मणका अपने पर प्रेम देखा सोई आकाशबाणी मंदिरमें फेरि हुई कि हे द्विजवर जो तू चाहताहो सोवर मांगि ले यह सुनिकर गुरुदेव बोले कि हे नाथ जो आप मेरे पर प्रसन्न हैं और आप का दीनों पर प्रेम है तो मेरेको अपने चरणोंकी भक्ति दीजिये और फिरि दूसराबर यह दीजिये कि आपकी मायाके बश ये जीव जड़ सदा भूले फिरतेहैं इनपर आप क्रोध न कीजिये आपतो कृपासिंधु हो और ईश्वरहो ताते हे शंकर हे दीनदयाल स्वामी इस पर ऐसे कृपालु हूजिये जिस से थोरेही काल में शाप अनुग्रह होजावे ॥

यहि कर होइ परम कल्याना । सोइ करहु अब कृपानिधाना १
बिप्र गिरा सुनि पर हित सानी । एवमस्तुइति भइ नभ बानी २
यदपि कीन्ह यहिं दारुणपापा । मैंपुनि दीन्ह क्रोधकरिशापा ३
तदपि तुम्हारि साधुता देखी । करिहौं यहि पर कृपा बिशेषी ४
क्षमा शील जे पर उपकारी । ते द्विजप्रिय मोहिं यथा खरारी ५
शापमोर द्विजवृथान जाइहि । जन्मसहस्र अवशियह पाइहि ६
जन्मतमरत दुसह दुखहोई । यहिस्वल्पहु नहिंब्यापिहिसोई ७
कवनेहुजन्म मिटहिनहिं ज्ञाना । सुनहुशूद्र ममबचन प्रमाना ८

जिसमें इसका परमहित होजावे सोई कुछ हे कृपानिधान स्वामी आप कीजिये १ ऐसी परहित सानी ब्राह्मणकी बाणी सुनि कर एवमस्तु यह आकाश बाणी हुई २ यद्यपि इसने महादारुण पाप किया और मैंने क्रोध करिके इसको शाप भी दिया ३ तथापि अब तुम्हारी साधुताको देखिकर इसपर मैं बिशेष कृपा करूंगा ४ जो क्षमा शील और पर उपकारी होते हैं ते मनुष्य हे द्विज मेरेको रामही के समान प्यारे होते हैं ५ शापतो मेरा भी द्विज अन्यथान होगा जन्मतो सहस्रों यह अवश्यही पावैगा ६ परंतु जन्मते और मरते समय जो महा दुसह दुःख होता है सो इसको कुछभी न व्यापैगा ७ और किसी जन्ममें इसका ज्ञान न मिटैगा यह कहि कर मेरे प्रति बोले अरे हे शूद्र तू मेरे बचन सुनि ले ८ ॥ १५ ॥

रघुपति पुरी जन्म तब भयऊ । पुनि तैं मम सेवा मन दयऊ १
पुरी प्रभाव अनुग्रह मोरे । राम भक्ति उपजहि उर तोरे २
सुनु मम बचन सत्य अब भाई । हरि तोषन ब्रत द्विजसेवकाई ३
अबजनि करहि बिप्र अपमाना । जानेसु संत अनंत समाना ४
इन्द्र कुलिशमम शूल बिशाला । काल दंड हरि चक्र कराला ५
जो इन कर मारा नहिं मरई । बिप्र द्रोह पावक सो जरई ६
अस बिबेक राखेहु मन माहीं । तुमकहं जग दुर्ल्लभकछुनाहीं ७
औरहु एक आशिषा मोरी । अप्रतिहत गति होइहि तोरी ८

श्री रामचन्द्र की पुरी अयोध्या में तेरा जन्म हुआ और फिरि तूने मेरी सेवामें मन लगाया सो इन दोनोंका फल राम की भक्तिही है ताते रामभक्ति तेरे हृदयमें उत्पन्न हो जाय १ । २ हे भाई अब तू भक्ति पाकर भागवत हुआ ताते अब तू मेरा उपदेश सुनु कि हरि की प्रसन्नता का कारण द्विजदेवोंकी सेवकाईही है ३ अबकभी द्विजदेवोंका अपमान न करना सदा संतोंको अनन्त भगवानही के समान जानना ४ इन्द्र का तो वज्र और मेरा त्रिशूल यमका काल दण्ड बिष्णुका सुदर्शनचक्र जोकोई इनकाभी मारा न मरै द्विजदेवोंके द्रोहकी अग्नि में सोभी भस्म हो जाताहै ५।६ ऐसा ज्ञान हृदयमें रखना तुमको संसारमें कुछभी दुर्लभ न होगा ७ औरभी एक मेरीतेरे को अशीष है कि तेरी प्रतिहतगति नहोगी ॥ ८ ॥ १६ ॥

दो० सुनि शिव बचन हर्षि गुरु एवमस्तु इति भाषि ।
मोहिं प्रबोधि गयउ गृह शंभु चरण उर राखि ॥
प्रेरित काल बिंध्य गिरि जाइ भयउ मैं ब्याल ।
बिनु प्रयास तन सो पुनि तजेउं गये कछु काल ॥
जो तन धरौं तजौं पुनि अनायास हरियान ।
जिमि नूतन पट पहिरे नर परिहरै पुरान ॥
शिवराखी श्रुतिनीति अरु मैंनहि पायउं क्लेश ।
यहिंबिधि धरेउं बिबिधि तन ज्ञान न गयउ खगेश ॥

ऐसे शिवजीके बचन सुनि कर गुरुदेव प्रसन्न होगये और एवमस्तु यह कहि कर मेरा प्रबोध किया और शिवजीके चरण हृदयमें धरिकर घर को चले गये ॥ कालप्रेरित बिंध्याचल पर मैं सर्प जा हुआ कुछ काल बीते सो शरीर भी अनायास

मैं ने त्यागि दिया अब तौ इस प्रकार जो शरीर धरूं उसी को अनायास त्याग करूं जैसे मनुष्य पुराने बस्त्रको त्याग करि के नवीन पहिरि लेताहै शिवजीने तो अपनी वेद रीति निबाही और उनकी कृपासे मैं ने कुछ भी क्लेश नपाया इसी प्रकार भांति भांतिके शरीर मैं ने धरे और शिव जीकी कृपासे हेगरुड़ मेरा ज्ञान नहीं गया ॥

त्रिजगदेव नरजोइ तनधरऊं । तहं तहं राम भजन अनुसरऊं १
एक शूल उर बिसर नकाऊ । गुरु कर कोमल शील सुभाऊ २
चर्म्म देह द्विज कर मैं पाई । सुर दुर्लभ पुराण श्रुति गाई ३
खेलौं तहां बालकन मीला । करौं सकल रघुनायक लीला ४
प्रौढ़ भये मोहिं पिता पढ़ावा । समुझौं सुनौं गुनहु नहि भावा ५
मन ते सकल बासना भागी । केवल रामचरण लय लागी ६
कहुखगेश अस कवन अभागी । खरी सेव सुरधेनुहिं त्यागी ७
प्रेममगन मोहिं कछुन सुहाई । हारेउ पिता पढ़ाइ पढ़ाई ८

तृजगों में देवोंमें मनुष्योंमे जो जो शरीर धरूं तहां तहां रामकीभक्तिही करूं १ एक शून मेरे हृदयसे कभी नभूले गुरु देवका कोमल शील और सुभाव २ पछिली देह मैंने ब्राह्मण की पाई जो वेद पुराणोंमें देव दुर्लभ कही है ३ तहां जब बालकों में मीला कहें बाल केलि खेलने को जाऊं तो सकल राम चरिचही बनाया करूं ४ प्रौढ़ कहें कुमार पौगंड अवस्थामें मेरेको जो कुछ पिता पढ़ावें उस को समुझौं और सुनौं गुणौं परंतु सुहावे नहीं ५ मनसे समस्त बासना दूरिहोगईं केवल रामचन्द्रके चरणोंमें मेरी लव लगी ६ कहो हेगरुड़ ऐसा कौन मंदबुद्धि होगा जो कामधेनु को छोड़ि कर खरीका सेवन करैगा ७ प्रेममें मग्न मेरे को कुछभी नसुहावे पिता पढ़ाइ पढ़ाइ कर हारि गये ॥ ८ ॥ १० ॥

भये कालबश जब पितु माता । मैं बन गयउं भजन जनत्राता १
जहंजहं बिपिन मुनीश्वरपावहुं । आश्रमजाइजाइ शिरनावहुं २
बूझौंतिनहिं रामगुण गाहा । कहहिं सुनहु हर्षितखगनाहा ३
सुनतफिरौं हरिगुण अनुबादा । अव्याहत गति शंभुप्रसादा ४
छूटी त्रिबिध ईषणा गाढ़ी । एक लालसा उर अति बाढ़ी ५
रामचरण बारिज जबदेखौं । तबनिजजन्म सुफलकरि लेखौं ६
जेहिं पूछौं सोइ मुनि अस कहई । ईश्वर सबभूत मय अहई ७

निर्गुण मत नहिं मोहिं सुहाई। सगुण ब्रह्म रति मोहिं अधिकाई ८

जब माता पिता दोनों काल बश होगये तब मैं जनरक्षक रामचन्द्र के भजन करने को बनमें चला गया १ जहां जहां बनमेंमुनीश्वरों को पऊं तहां तहांउनको जाकर प्रणाम करूं २ और उनसे रामचंद्र के गुणों की कथा पूछूं और उनके मुखसे प्रसन्न मन सुनूं ३ इसी प्रकार भगवद्गुणानुबाद सुनता फिरूं शिवजी की कृपा से मेरी गति अव्याहत रहे ४ सुत,वित,नारि ये त्रिबिधि गाढ़ी ईषणा तो मेरी दूरि होगईं एक लालसा हृदय में बढ़ी ५ कि रामचंद्र के चरणकमल जबनेत्रों से देखि पाऊं तब अपने जन्मको सफलमानूं ६ सो जिस मुनिसे पूछूं सो यही कहै कि ईश्वर तो सर्बजीवमय हैं अपने आपहीं में देखो ७ यह निर्गुण मत मेरे को नहीं सुहावे सगुण ब्रह्महीं की प्रीति हृदय में बढ़ती जावे ॥ ८ ॥ १८ ॥

दो० गुरु के चरण सुरति करि रामचरण मन लाग।
रघुपति यश गावत फिरौं क्षण क्षण नव अनुराग॥
मेरु शिखर बट छाया मुनि लोमस आसीन।
देखि चरण शिर नायउं बचन कहेउं अति दीन॥
सुनि मम बचन बिनीत मृदु मुनि कृपालु खगराज।
मोहिं सादर पूछत भयउ द्विज आयहु केहिं काज॥
तब मैं कहा कृपानिधि तुम सर्बज्ञ सुजान।
सगुण ब्रह्म अवराधन मोहिं कहहु भगवान॥

गुरुदेव के चरणों का स्मरण करिके रामचंद्र के चरणों में मैंने मन लगाया तातें श्री रामचंद्रही का यश गाता फिरूं क्षण क्षण प्रति नवीन प्रेमही बढ़ता जावे। चलते चलते जहां सुमेरु के पर्बतके शिखिर पर ब्रह्मा के पुत्र लोमस निवासकरते रहैं तहां पहुंचा और उनके समीप जाकर उनको प्रणाम किया और अति दीन बचन उनसे कहे॥ तबतो मेरे अति नम्र बचन सुनिकर हेगरुड़ मुनि तो परम कृपालु रहैं मेरे को बड़े आदर से पूछते हुये कि द्विज तुम मेरे पास किस निमित्त आये हो॥ तब मैंने उनसे कहा कि हे कृपासिंधु आप तो सर्बज्ञ हैं और सुजानहैं सगुण ब्रह्म के अवराधन का उपदेश मुझसे आप कहिये॥

तब मुनीश रघुपति गुण गाथा। कहीकछुक सादर खगनाथा १
ब्रह्म ज्ञान रतमुनि बिज्ञानी। मोहिं परम अधिकारी जानी २
लागे करन ब्रह्म उपदेशा। अज अद्वैत अगुण हृदयेशा ३
अकल अनीह अनाम अरूपा। अनुभव गम्य अखंडअनूपा ४

मन गोतीत अमल अबिनाशी । निर्बिकार निरबधि सुखराशी ५
सो तैं ताहि तोहिं नहिं भेदा । बारि बीचि इव गावहिं वेदा ६
बिबिधिभांतिमुनिमोहिं समुझावा । निर्गुणमतममहृदयनआवा ७
तब मैं कहेउं नायपद शीशा । सगुण उपासन कहहु मुनीशा ८

तब तो हे गरुड़ लोमस मुनि ने रामचन्द्र के गुणों की कथा मेरी प्रार्थना से थोरी सी प्रीति समेत कही १ ब्रह्मज्ञान में निरत बिज्ञानी मुनि मेरे को परम अधिकारी जानि कर ब्रह्म का उपदेश करने लगे कि जिस जगज्जन्मादि कारण को तू चाहता है सो तो ब्रह्म अजन्मा अद्वैत है उससे भिन्न और कुछ नहीं है निर्गुण है अंतर्यामी है २ । ३ कलातीत है ईहा चेष्टा रहित अनाम अरूप ज्ञान गम्य अखंड अनूप है ४ इन्द्री और मन से परे निर्मल अबिनाशी निर्बिकार अवधिशून्य आनन्द निधान है ५ तत्वमसि तदेवत्वमसिअर्थात्सो ब्रह्मतुहीतो है उस मेंऔरतेरेमें कुछभेदनहींहै जलभेद औरतरंगकी नाईं ब्रह्म जीव को वेद कहतेहैं ६ अनेकभांतिसे मुनि ने मेरे को समुझाया भी परंतु निर्गुण पद का ऐसा रुमत मेरे मन में हे गरुड़ न समाया ७ तब मैंने उन को प्रणाम करिकेफिरि कहा कि हे मुनीश आप सगुण उपासना कहिये ॥ ८ ॥ १६ ॥

राम भक्ति जल ममनमीना । किमि बिलगाय मुनीश प्रवीना १
सोइ उपदेश करिय करिदाया । निजनयनन देखौं रघुराया २
भरिलोचन बिलोकि अवधेशा । तब सुनिहौं निर्गुण उपदेशा ३
मुनिपुनि कहिहरि कथा अनूपा । खंडिसगुण मत अगुणनिरूपा ४
तब मैं निर्गुण मतकरि दूरी । सगुण निरूपेउं करिहठभूरी ५
उत्तर प्रति उत्तर मैं दीन्हा । मुनितन भयउ क्रोध करिचीन्हा ६
सुनु प्रभु बहुत अवज्ञा किये । उपज क्रोध ज्ञानिहु के हिये ७
अति संघर्षण करै जो कोई । अनल प्रगट चंदन ते होई ८

दो० बारंबार सकोप मुनि करहिं निरूपण ज्ञान ।
मैं अपने मन बैठि तब करहुं बिबिधि अनुमान ॥ २० ॥

राम की भक्तिरूपी जल में मेरा मन मीन हो रहा है सो हे मुनीश कैसे उससे भिन्न होता १ तातें सो उपदेश आप कृपा करिके कीजिये कि अपनेनेत्रों से मैं राम को देखूं २ नेत्रों भरिकर एक बार राम को देखिकर तब आप का यह निर्गुण उपदेश सुनूंगा ३ मुनि ने मेरे कहने से फेरि कुछ हरि चरित्र कहिकर सगुण का खंडन

करि निर्गुण का निरूपण किया ४ तब तो मैंने भी निर्गुणमत को छोंडकर सगुणमत का निरूपण बड़े हठ से किया ५ जब मैंने उत्तर प्रत्युत्तर दिया तब तो मुनि के हृदय में क्रोध का चिन्ह हो आया ६ सुनो हे गरुड़ बहुत अवज्ञा करने से ज्ञानियों के मन में भी क्रोध उत्पन्न होता है ७ क्योंकि अतिघर्षण करने में तो परम शीतल चन्दन से भी अग्नि प्रगट होती है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ अब मुनितोबड़े कोप से बारंबार मेरे को ज्ञान उपदेश करते हैं और मैं बैठा बैठा अपने मन में अनेक प्रकार के प्रमाण अनुमान करने लगा ॥ ८ ॥ २० ॥

दो० क्रोधकि द्वैत बुद्धिबिनु द्वैतकि बिनु अज्ञान ।
मायाबश परिछिन्न जड़ जीवकि ईशसमान ॥

कबहुंकिदुखसबकर हितताके । तेहिंकि दरिद्र परस मणिजाके १
परद्रोही कि होइ निश्शंका । कामी पुनि कि रहै अकलंका २
बंशकि रहद्विज अनहित कीन्हे । कर्म कि रहैं स्वरूपहि चीन्हे ३
काहुहिसुमतिकिखलसंगजामी । शुभगतिपावकिपरत्रियगामी ४
भवकिपरहिं परमातम बिंदक । सुखीकि होइंकबहुं हरिनिंदक ५
राजकि रहै नीति बिनु जाने । अघकि रहै हरि चरित बखाने ६
पावन यशकि पुण्यबिनु होई । बिनु अघ अयश किपावै कोई ७
अघ कि बिना तामस कछु आना । धर्मकिदया सरिसहरियाना ८

अबमैं हेगुरु ऐसे बिचार करने लगा कि क्रोध क्याकहीं द्वैतबुद्धि बिना होताहै और द्वैत अज्ञान बिना नहीं होताहै जो जीवमाया के बश और आच्छादित जड़है सो ईश्वर के समान कैसे हो सकता है ॥ चौपाई ॥ जिसके सदा परहित है उसको दुख कैसे होता है और जिसके पारस मणिहै उसके दरिद्र कहां १ परद्रोही क्यानिश्शंक होताहै और कामी कहीं अकलंक रहताहै २ बंश कहींद्विजदेवों के द्रोहसे चलताहै कर्म कहीं स्वरूपके जानेपीछेहोतेहैं ॥ ३ ॥ किसीको सुबुद्धि कहींदुष्टों के संगमें हुईहै परदारारतोंने कहीं उत्तम गतिपाईहै ४ परस्वरूप के बेत्ता कहीं संसार में फिरि आते हैं भगवन्निंदक कहीं सुखी होतेहैं ५ राजाकहीं नीति बिना जाने रहतेहैं पाप कहीं भगवच्चरित्र बखानेपीछे रहते हैं ॥ यत्कीर्त्तनंयत्स्मरणंयदीक्षणंयद्वंदनंयच्छ्रवणंयदर्हणं लोकस्यसद्योबिधुनोतिकल्मषंतस्मैसुभद्रश्रवसेनमोनमः६पवित्र यशकहीं पुण्यबिना होता है पापबिना कोईक्या अपयश पताहै ७ तामस बिना क्या कोई पापहोता है दया के समान क्याकोई दूसरा धर्म है ॥ ८ ॥ २१ ॥

लाभकि कछुहरिभक्तिसमाना । जेहि गावहिं श्रुति संतपुराना १

हानिकि जगयहि सम कछुभाई । भजियन रामहिं नरतन पाई २
यहिबिधि अमितयुक्ति मनगुणहू । मुनि उपदेश न सादर सुनहू ३
पुनि पुनि सगुण पक्ष मैं रोपा । तबमुनि बोले बचन सकोपा ४
मूढ़ परम सिख देहु नमानसि । उत्तर पर उत्तर बहु आनसि ५
सत्य बचन बिश्वास न करही । बायस इव सबही ते डरही ६
शठ स्वपक्षतव हृदय बिशाला । सपदि होहु पक्षी चंडाला ७
लीन्ह शाप मैं शीश चढ़ाई । नहिं कछु भय न दीनता आई ८
दो० तुरत भयउं मैं काग तब पुनि मुनि पदसिर नाइ ।
सुमिरि राम रघुबंशमणि हर्षित चलेउं उड़ाइ ॥ २२ ॥

इसी प्रकार लाभक्या कोई दूसरा भगवत्भक्ति के समान है जिसको समस्तवेद इतिहास पुराण और सब महर्षि संत गावते हैं १ तैसेही हानिक्या इससेभी कोई अधिक है कि मनुष्य जन्मपाकर भगवद्भजन न करै २ इस प्रकारकी अनेकयुक्ति मन में बिचारी और मुनिके उपदेश को नसुनो ३ जबमैंने बारंबार सगुण पक्षही आरोपण किया तबतो मुनि सकोपवचन बोले ४ अरेमूढ़मैं तेरेको परम उत्तम उपदेश देता हूं सोतो नहीं मानता है और उत्तर प्रत्युत्तरहो देता चला जाताहै ५ सत्यबचनों परभी बिश्वास नहीं करताहै काकके समान सबही से डरता है ६ अरे शठ तेरे हृदयमें अपना हठपक्ष बड़ाहै ताते दुष्ट तू अभी पक्षी चांडाल काकहोजा ७ जो मुनिने मेरेको शापदिया सोई मैंने माथे मानि लेलिया न कुछ मेरेकोभय हुई ॥ ८ ॥ दोहा ॥ तुरंतही मैं काक होगया और मुनिके चरणों को प्रणाम करिके प्रसन्न मन अपने स्वामी रामको स्मरण करिके उड़ि चला ॥ २२ ॥

दो० उमा जो रामचरण रत बिगत काम मद क्रोध ।
निज प्रभु मय देखहि जगत केहिं सन करहिं बिरोध ॥

सुनु खगेश नहिं मुनिकरदूषण । उर प्रेरक रघुबंश बिभूषण १
कृपा सिंधु मुनिमति करि भोरी । लीन्ही प्रेम परिक्षा मोरी २
मनबच कर्म मोहिंनिज जाना । मुनि मति पुनि फेरीभगवाना ३
मुनि मम सहन शीलता देखी । राम चरण बिश्वास बिशेषी ४
अतिबिस्मय पुनिपुनिपछिताई । सादरमुनिमोहिं लीन्हबुलाई ५
ममपरितोषबिबिधि बिधिकीन्हा । हर्षित राममंत्रमोहिं दीन्हा ६

बालकरूप राम कर ध्याना । कहेउ मोहि मुनि कृपा निधाना ७
सुन्दरसुखद मोहिं अतिभावा । सो प्रथमहिं मैंतुमहिं सुनावा ८

सुनो हे पार्वती जो भगवद्भक्त रामचरण परायण और काम, मद, क्रोधरहित हैं ते समस्त विश्व को भगवद्रूपही देखते हैं फिरि विरोध किस के साथ करैं राममहिम्न॥त्वमिंद्रस्त्वं सोमस्त्वमसितरणिस्त्वं हुतवहस्त्वमापस्त्वं भूमिस्त्वमसिपवनस्त्वंचगगनं विरंचिस्त्वं रुद्रस्त्वमसिसकलं दृश्यसियतस्त्वदन्यंवस्त्वे कंनहिजगति भूमन्रघुपते ॥ चौपाई ॥ सुनो हे गरुड़ इसमें मुनिका कुछ भी दोष नहींहै सब के हृदय में प्रेरकतो रघुबंश भूषण रामही हैं १ कृपासिंधु रामस्वामी ने मुनिकी मति भोरी करिके मेरे प्रेम की परीक्षा करी रहै २ जब कर्म मन बचनसे मेरे को अपना ही जानि लिया तब तो मुनि की मति स्वामी ने फिरि फेरि दी ३ मुनि ने मेरी सहन शीलता देखी और राम के चरणों में अतिप्रीति देखी ४ तबतो उनको बड़ा दुख हुआ और बार बार पछिताइ कर बड़े प्रेम से मेरे को बुला लिया ५ अनेक भांति से मेरा प्रबोध किया औरप्रसन्न होकर षडक्षर रामतारक मंत्र मेरे कोदिया ६ और बालक रूप रामचन्द्र का ध्यान मेरे से कहा ७ परम सुन्दर मेरे को अतिही भाया सो मैं आपको पहिलेही सुनाइ आया ॥ २३ ॥

मुनिमोहिं कछुक काल तहंराखा । राम चरित मानस तबभाषा १
सादर मोहिं यह कथा सुनाई । पुनि बोले मुनि गिरा सुहाई २
राम चरित सर गुप्त सुहावा । शंभु प्रसाद तात मैं पावा ३
तोहि निज भक्तराम कर जानी । तातें मैं सब कहेउं बखानी ४
राम भक्ति जिनके उर नाहीं । कबहुं न तात कहेहु तिनपाहीं ५
मुनिमोहिबिबिधि भांतिसमुझावा । मैंसप्रेममुनि पदशिरनावा ६
निजकर कमलपरसि ममशीशा । हर्षित आशिषदीन्हिमुनीशा ७
रामभक्ति अबिरल उर तोरे । बसहु सदा प्रसाद अब मोरे ८

दो० सदा राम प्रिय होहु तुम शुभ गुण भवन अमान ।
काम रूप इच्छा मरण ज्ञान बिराग निधान ॥ २४ ॥

मुनिने मेरेको कुछ काल तहां ठहराया औरयह रामचरितमानस मुझसे कहा १ बड़े प्रेमसे यह कथा सुनाइकर फेरि सुन्दर सुहाई वाणी बोले २ सुनु हे तात यह रामचरित्रमानस परम गोप्य है शिवजीकी कृपा से मैंने प्राया है ३ सो जब तेरे को राम का निज भक्त जान लिया तब मैंने तेरेसे कहा है ४ तू भी जिनके रामभक्ति हृदय में नहो उनसे कभी न कहना ५ इस प्रकार मुनि ने मेरे को अनेकभांति से

समुझाया और मैंने प्रेम समेत उनके चरणों को शीश नवाया ६ तबतो मुनि ने अपनाकर कमल मेरे मस्तकऊपर धरि कर प्रसन्न मनअशीष दी ७ कि अविरल रामकी भक्ति तेरे हृदय में मेरी कृपा से सदा बसाकरै ॥ ८ ॥ दोहा ॥ सदा तुम राम के प्यारे और शुभ गुणों के धाम मानवर्जित हो व काम रूप औ इच्छा मरण ज्ञान वैराग के निधान होव ॥ २४ ॥

दो० जेहि आश्रम मुनि बसहु तुम सुमिरत श्री भगवान ।
ब्यापै तहं नअबिद्या योजन एक प्रमान ॥

कालकर्म गुणदोष सुभाऊ । कछुदुखतुमहिं नव्यापहि काऊ १
राम रहस्य ललित बिधि नाना । गुप्त प्रगटइतिहास पुराना २
बिनुश्रम तुम जानहु सब सोऊ । नितनव भक्ति रामपदहोऊ ३
जो इच्छा करिहहु मन माहीं । हरि प्रसाद कछुदुर्लभ नाहीं ४
सुनिमुनि आशिषसुनु मतिधीरा । ब्रह्मगिराभइगगन गंभीरा ५
एवमस्तु तवबच मुनि ज्ञानी । यह ममभक्त कर्म मन बानी ६
सुनिनभ गिराहर्ष मोहिं भयऊ । प्रेममग्न सबसंशय गयऊ ७
करिबिनती मुनि आयसुपाई । पद सरोज पुनिपुनि शिरनाई ८

जिस आश्रममें तुम भगवानका स्मरण करतेहुये बास करोगे तहांयोजन पर्य्यन्त अबिद्या मायान व्यापैगी ॥ चौपाई ॥ काल,कर्म, सुभाव, गुण इनकादुख तुमको कभी न ब्यापैगा १ औरअति मनोहर रामके नाना प्रकारके रहस्य गुप्त वा प्रगट औरसबइतिहास पुराण इनसबकोभीतुम बिनाही श्रमजानि जाओ औरनित्य नवीन रामकेचरणों में तुम्हारी भक्तिबढ़ाकरै २।३ और जोइच्छातुममनमेंकिया करोगे सोभी रामकीकृपा सेदुर्लभ नहीं होवैगी ४ ऐसे मुनिके बरदान सुनिकर हे मतिधीर परम गंभीर ब्रह्म बाणी हुई ५ हेज्ञानी मुनि तुम्हारी बाणी सबसत्य होगी यहकर्म,बचन, मनसे मेरा भक्त है ६ ऐसी आकाश बाणी सुनि कर मेरे को बड़ा हर्ष हुआ प्रेममें मग्न होगया संशयसब दूरि होगये ७ फिरि मुनिकी बिनती करि आज्ञा पाइ और वारंबार उनके चरण कमलों को शीश नवाइ ॥ ८ ॥ २५ ॥

हर्षसहित यहिआश्रम आयउं । प्रभु प्रसाद दुर्लभबर पायउं १
यहां बसत मोहिंसुनु खगईशा । बीते कल्प सात अरु बीशा २
करौं सदा रघुपति गुण गाना । सादर सुनहिं बिहंगसुजाना ३
जबजब अवध पुरी रघुबीरा । धरहिं भक्तहित मनुज शरीरा ४

तबतब जाइ रामपुर रहऊं । शिशुलीला बिलोकि सुखलहऊं ५
पुनिउर राखिराम शिशुरूपा । निजआश्रम आवहुं खगभूपा ६
कथा सकल मैं तुमहिं सुनाई । काग देह जेहि कारण पाई ७
कहेउं तात सबप्रश्न तुम्हारी । राम भक्ति महिमा अतिभारी ८
दो० ताते यहतन मोहि प्रिय भयउ राम पद नेह ।
निज प्रभु दरशन पायउं गयउ सकल संदेह ॥ २६ ॥

हर्षसमेत इस आश्रममें आगया स्वामीके अनुग्रह से दुर्लभ वर पाये १ यहांइस आश्रममें बसते हुये हेगरुड़ मेरेको सत्ताइश कल्पबीते २ सदा रामचन्द्रके गुणगान किया करता हूं उनको येसब सुजानपक्षी सुना करतेहैं ३ जब जब कल्प कल्पप्रति अयोध्यापुरीमें भक्तहित श्रीरामचन्द्र अवतार लेतेहैं४ तबतबमैं अयोध्या मेंजारहता हूं और स्वामीकी बाल लीला देखि कर बड़ा सुख पाताहूं ५ फिरि रामचन्द्र केबाल रूपहीकेध्यानको हृदयमें धरिकर अपने आश्रमको चला आताहूं ६ यह समस्तकथा मैंने आपको सुनाई जिसकारणसे मैंने यह कागदेह पाईहै ७ हेतात जोआपने मुझ सेप्रश्न करीरहै कितुमने काग देह क्यों पाई और यह राम चरितमानस कहां पाया औरकाल क्योंनहीं ब्यापताहै औरतुम्हारे आश्रममें आतेही मेरे संदेह कैसे जाते रहे यहज्ञानका प्रभावहै कियोगका बलहै सोनतोज्ञान का प्रभाव है न योग का बल है यह अतिभारी महिमा सबरामभक्तिहीकीहै ॥८॥ दोहा ॥ इससेयहीतनमेरेकोप्याराहै किइसी शरीरमें मेरेको राम भक्ति मिलीहै और सब संदेह दूरि हुयेहैं ॥ २६ ॥

दो० भक्तिपक्ष हठ करि रहेउं दीन्हमहा मुनि शाप ।
मुनि दुर्लभ वर पायउं देखहु भजन प्रताप ॥

जे असजानि भक्ति परि हरहीं । केवल ज्ञान हेतु श्रम करहीं १
ते जड़ कामधेनु गृह त्यागी । खोजत आप फिरहिं पय लागी २
सुनु खगेश हरि भक्ति बिहाई । जेसुख चाहहिं आन उपाई ३
तेशठ महासिंधु बिन तरणी । पैरि पार चाहहिं जड़ करणी ४
सुनि भुशुण्डके बचन भवानी । बोलेउगरुड़ हर्षि मृदुबानी ५
तव प्रसाद प्रभु ममउर माहीं । संशयशोक मोह भ्रम नाहीं ६
सुनेउं पुनीत राम गुण ग्रामा । तुम्हरी कृपा लहेउं बिश्रामा ७
एक बात प्रभु पूछहु तोहीं । कहहु बुझाइ कृपा निधि मोहीं ८

भक्तिके पक्षका हठ मैंने न छोड़ा तो महा मुनीश्वरने मेरेको शापभी दिया परंतु भजनके प्रभावसे उन्हीं मुनिके द्वारा मैंने मुनिदुर्लभ वर पाये भजनके इस प्रभाव को देखो ॥ चौपाई ॥ जो ऐसी महिमा जानिकर भी भक्तिको छोड़िकर केवल ज्ञान ही के लिये श्रम करते हैं ते कैसे जड़ हैं कि कामधेनु को छोड़ि कर दूधके लिये आकोंको खोजते फिरते हैं ॥ श्रेयस्रुतिंभक्तिमुदस्यतेविभोक्लिश्यंतिये केवलबोधलब्धये तेषामशौक्लिशलएवशिष्यते नान्यद्यथास्थूलतुषावघातिनां २ सुनो हे गरुड़ भगवद्भक्तिको छोड़ि जो अन्य साधनोंसे सुख चाहते हैं ते शठ मानों महा सागरको नाव विना पैरिकर पार गया चाहते हैं ३ । ४ ऐसे भुशुंडिके वचन सुनि हे पार्वती प्रसन्न होकर कोमल वचन बोले ५ तुम्हारे अनुग्रह से हे नाथ मेरे हृदय में संशय और शोकादि कुछनहीं है ६ क्योंकि आपके मुखसे पवित्र रामकेगुण सुने और विश्रामपाया७ एक बात आपसे पूंछता हूं सो मेरेको हे कृपानिधि समुझाइ कर कहिये ॥ ८ ॥२०

कहहिं संत मुनि वेद पुराना । नहिं कछु दुर्लभ ज्ञानसमाना १
सोइमुनि तुमसन कहेउं गुसाईं । नहिं आदरेहु भक्तिकी नाईं २
ज्ञानहिं भक्तिहिं अंतर केता । सकल कहहुप्रभु कृपानिकेता ३
सुनि उरगारि बचनसुख माना । सादर बोलेउ कागसुजाना ४
भक्तिहिंज्ञानहिं नहिं कछुभेदा । उभयहरहिं भवसंभवखेदा ५
तात मुनीश कहहिं कछु अंतर । सावधानसो सुनु बिहंगबर ६
ज्ञान बिराग योग बिज्ञाना । येसब पुरुष सुनहु हरियाना ७
पुरुषप्रताप प्रबल सबभांती । अबला अबलसहज जड़जाती ८

दो० पुरुष त्यागि सक नारिहि जो बिरक्त मति धीर ।
नतु कामी बिषया बिबश बिमुख जोपद रघुबीर ॥ २८ ॥

कि संत मुनि वेद पुराण सब कहतेहैं कि ज्ञानके समान कुछभी दुर्लभ नहींहै१ गीतायां।नहिज्ञानेनसदृशःपवित्रमिहविद्यते ज्ञानंलब्ध्वापरांशांतिमचिरेणाधिगच्छति सोई ज्ञान लोमस मुनि ने आपसे कहा और आपने उसको भक्तिकी नाईं न आदरा२ सो ज्ञानमें और भक्तिमें कितना अंतर है यह सब मेरेको आप कहिये ३ ऐसे गरुड़ के वचन सुनि कर बड़ा सुख माना और प्रेम समेत भुशुंडी बोले ४ ज्ञान भक्ति में यद्यपि कुछ अंतर नहीं है क्योंकि संसार जनित खेद को दोनों हरते हैं ५ तथापि हे तात मुनीश्वर कुछ अंतर कहते हैं उस को हे बिहंगवर गरुड़ आप सावधान चित्त होकर सुनिये ६ कि ज्ञान, योग, बैराग, विज्ञान ये सब पुरुषवर्ग हैं ७ पुरुष का प्रतापतो सबही भांतिसे प्रबल होताहै और अबला स्त्रीतो अबल और जड़ जाति

सहजही होती है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ पुरुष तो स्त्रीको त्यागि सकतेहैं जो बिरक्त और मतिधीर होते हैं और जो कामी और बिषयों के बिबश और भगवद्विमुख हैं ते कदापि नहीं त्याग सकते हैं ॥ २८ ॥

सो० सोमुनि ज्ञान निधान मृग लोचनि बिधु मुख निरखि।
बिकल होहिं हरि यान नारि बिश्व माया प्रगट ॥

यहां न पक्ष पात कछु राखौं। बेद पुराण संत मत भाखौं १
मोह न नारि नारि के रूपा। पन्नगारि यह नीति अनूपा २
माया भक्ति सुनहु तुम दोऊ। नारि बर्ग जानहिं सब कोऊ ३
पुनि रघुबीरहिं भक्ति पियारी। माया खलु नर्त्तकी बिचारी ४
भक्तिहिं सानुकूल रघुराया। तातें तेहि डरपति अति माया ५
राम भक्ति निरुपम निरुपाधी। बसै जासु उर सदा अबाधी ६
तेहि बिलोकि माया सकुचाई। करिनसकै कछुनिज प्रभुताई ७
असबिचारिजे मुनिबिज्ञानी। याचहिं भक्तिसकलगुणखानी ८

दो० यह रहस्य रघुनाथ कर बेगि नजानहि कोइ।
जाने तेरघुपति कृपा सपनेहुं मोहन होइ ॥ २९ ॥

सोज्ञान निधान मुनिभी मृगलोचनीके मुखचन्द्रमाको देखिकरहेगरुड़व्याकुलहोय हो जातेहैं बिश्वमें नारी प्रत्यक्ष मायाहै ॥ चौपई ॥ यहां अबमैं हेगरुड़ नतो किसी का पक्ष करताहूं नपात करताहूं जोकुछबेद पुराण और संतमतहै सो कहताहूं १ कि नारी नारीके रूपसे नहीं मोहतीहै हेगरुड़ यहनीति तो प्रत्यक्ष प्रमाणहै २ सोयोग ज्ञान बैराग्यतो पुरुष बर्ग हैं और भगवन्माया नारिबर्ग है उनको क्षण मात्रमें मोहि सकतीहै परंतु माया और भगवद्भक्ति येतो दोनों नारिबर्गही हैं सब जानतेहैं३ तिसपर रामचन्द्र को भक्ति अतिप्यारी पाट महिषीके समानहै औरमाया मोहनी नटनीके समान नर्त्तकीहै ४ भक्तिपर रामसदा सानुकूल रहतेहैं ताते भक्तिको माया डराया करतीहै ५ रामभक्ति निरूपम और निरुपाधिहै सोभक्ति जिसके उरमें बसत है ६ उस जीवकोदेखि कर माया भयभीत होजाती है अपनी प्रभुता उसपर कुछभी नहींकर सकतीहै ७ यहीबिचारिकर जोबिज्ञानी मुनिहैं तेभी समस्त गुणोंकी खानि भक्तिही को याचा करते ॥ ८ ॥ इस रामरहस्यको कोई सहसानहीं जानताहै और जब जानि लेताहै तब रामकीकृपासे उसको स्वप्न में भी मोह फिरिनहीं होताहै२९

दो० औरहु ज्ञान भक्ति कर भेद सुनहु सुप्रबीन।

जोसुनि होयराम पद प्रीति सदा अव छीन ॥

सुनहु तातयह कथा कहानी । समुझत बनै न जाइ बखानी १
ईश्वर अंश जीव अबिनाशी । चेतन अमल सहज सुख राशी २
सो माया बश भयउ गुसाईं । बंधेउ कीर मर्कट की नाईं ३
जड़ चेतनहिं ग्रंथि परि गई । यदपि मृषा छूटत कठिनई ४
तबते जीव भयउ संसारी । छूट न ग्रंथि नहोय सुखारी ५
श्रुतिपुराण बहुकहहिं उपाई । छूटन अधिकअधिक उरझाई ६
जीव हृदय तकमोह बिशेषी । ग्रंथि छूटि किमि परै न देखी ७
अस संयोग ईश जोकरई । तबहु कदाचित सो निरु बुरई ८

एकतो ज्ञानभक्तिमें यहभेदहै किज्ञानीको माया मोहि लेतीहै और भगवत्प्रपन्न केपास नहीं कटकतीहै अबतुम ज्ञानभक्तिका औरभी भेद हेगरुड़ सुनोजो सुनिकर तुम्हारी रामके चरणोंमें अचल प्रीति होजायगी ॥ चौपाई ॥ अवहे गरुड़ इस अकथ दुस्तर कहानीको तुमसुनो किनतो समुझते बनतीहै नकहनेमें आतीहै १ चिदचिद्विशिष्ट ईश्वर का यहजीव अबिनाशी अंशकहैं अंगहै चेतनहै निर्मलहै आनन्द स्वरूपहै २ सोजीवईश्वरके अचिंत्यांश मायाके बश होके अपने अज्ञानसे तोते और बंदरकी नाईं बंधाहै ३ जड़माया औरचैतन्य जीवमें ग्रंथि होगईहै ग्रंथियदापि मृषा होतीहै तैाभी उसका छूटना कठिनहै ४ तबसे यहजीव संसारी कहें बद्धहोगयाहै नग्रंथि छूटै नसुखीहोवै ५ वेदपुराण इसके छूटनेकेअनेक उपाय कहतेहैं परंतुउनसे छूटता तानहींहै अधिक अधिक बंधताही जाताहै ६ क्योंकि जीवके हृदयमें मोह काबड़ा अंधेराहै ग्रंथिछूटै कैसे देखितो परतीही नहींहै ७ जोकहीं ऐसासंयोगईश्वर करि देवै तैाभी कदाचित् छुटैतो छूटै विघ्नोंके मारेकुछदृढ़ भरोसा छूटनेका नहीं॥८

सात्विकि श्रद्धाधेनु सुहाई । जो हरि कृपा बसै उर आई १
जपतप ब्रत यम नियम अपारा । जेश्रुति कहे सुधर्मा चारा २
ते तृण हरित चरै सोगाई । भाव बत्स शिशु पाइ पल्हाई ३
नोइनिवृत्ति पात्र बिश्वासा । निर्मल मन अहीर निज दासा ४
परम धर्म मय पय दुहि भाई । अवटै अनल अकाम बनाई ५
तोष मरुत तब क्षमा जुड़ावै । घृतसम जावन देइ जमावै ६
मुदिता मथै बिचार मथानी । दम अधार रजु सत्य सुबानी ७

तब मथि काढ़िलेइ नवनीता। बिमल बिराग सुभग सुपुनीता ८

प्रथम उस अंधेरेको नाश चाहिये उसके लिये राजसी तामसी श्रद्धाको छोड़ि जो भगवत् कृपासे सात्विकी श्रद्धा रूपी कामधेनु इसके हृदयमें आवसै १ तब जप,व्रत यम, नियमादिक जो बेदोंमें धर्माचार कहेहैं तेई सुन्दर हरित तृण उस गाईको चरावै और भावके बालबत्स से उसको पल्हावे २। ३ निवृत्तिकी नेती से उसके चरण बंधन करे बिश्वास के दृढ़ पात्र में निर्मल मनदोहक उसधेनु से परम धर्ममय दूध दुहि कर अकाम की अग्निसे औटे ४। ५ फिरि संतोषकी पवनसे क्षमा उसको शीतल करै धीरजको यथा योग्य जावन देकर समता उसको जमावे ६ फिरि प्रसन्नता उसको बिचार की मथानी में मथै तहां दमको अधिकार और सत्यताकी रज्जु चाहिये ७ इस प्रकार उसको मथिकर बिमल बैराग का नवनीत काढ़िलेवे ॥ ८॥

दो० योग अग्नि करि प्रगट तब कर्म शुभा शुभलाइ।
बुद्धि सिरावै ज्ञान घृत ममता मल जरिजाइ॥
तब बिज्ञान निरूपिणी बुद्धि बिशद घृतपाइ।
चित्तदिया भरि धरै दृढ़ समता दियटि बनाइ॥
तीनि अवस्था तीनि गुण तेहिकपासते काढ़ि।
तूल तुरीय संवारि पुनि बाती करै सुगाढ़ि॥
सो० यहिबिधि लेसैदीप। परम तेज बिज्ञान मय॥
जातहिं तासु समीप। जरहिं मदादिक शलभ सब॥ ३१

तबशम, दम, नियम, आसन, प्राणायाम, ध्यान, धारणा, समाधि अष्टाङ्गयोगकी अग्नि प्रगटकरै और शुभा शुभ कर्म उसमें होमिकर उसनवनीत को तावे फिरि ज्ञान रूपी घृतको बुद्धिशीतलकरै अहंकार ममता का समस्त मल नाश हो जावे तबतो बिज्ञान निरूपिणी बुद्धि उसउज्ज्वल निर्मल घृतको पाकर चित्तके दियेमें समताकी दियटिपर भरिकर दृढ़स्थापनकरै फिरिजाग्रत,स्वप्न,सुषुप्ति,तीनों अवस्था और सत,रज,तमतीनों गुण रूपी कपासमेंसे काढ़ि करतुरीय चतुर्थ अवस्था रूपीतूल को संभारि कर अतिगाढ़ी बाती करै॥ सोरठा। इस प्रकार उसदीपक को प्रज्वलित करै जिसको बिज्ञान मय परम तेजहै उसके निकट जातेही मदादिक पतंगा सबनाश होजावैं॥ ३१॥

सोहमस्मि इति वृत्ति अखंडा। दीपशिखा सोइ परम प्रचंडा १
आतम अनुभव सुखसुप्रकाशा। तब भवमूल भेद भ्रम नाशा २
प्रबल अबिद्या कर परिवारा। मोह आदि तम मिटै अपारा ३
तब सोइ बुद्धि पाइ उजियारा। उर गृह बैठि ग्रंथि निरवारा ४

छोर न ग्रन्थि पाव जो सोई। तो यह जीव कृतारथ होई ५
छोरत ग्रंथि जानि खगराया। बिघ्न अनेक करै तब माया ६
ऋद्धि सिद्धि प्रेरै बहु भाई। बुद्धिहिं लोभ दिखावहिं आई ७
कलबल छल करि जाइसमीपा। अंचल बात बुझावहि दीपा ८

सो तो मैंहीहूं यह अखंड वृत्ति जोहै सोई परम प्रचंड उस दीपकी शिखा है १ आत्मानुभव कहें स्वस्वरूप का ज्ञान तिसका आनन्द सोई उसका प्रकाश हुआ तब संसार के मूल भेद भ्रम का नाश होजाता है २ मोहादिक जो महा प्रबल अविद्या माया का परिवार रूपी अंधकार सब मिटि जाता है ३ तब सो विज्ञान निरूपिणी बुद्धि उस उजियारे को पाकर हृदय के निवात घरमें बैठिकर उस जड़चेतन की ग्रन्थि को खोले ४ जो तौ सो बुद्धि उस ग्रन्थि को छोरने पावे तौ तो वह जीव कृतार्थ होजावे ५ और जो उसको ग्रन्थि छोरते माया जानि लेवे तो फिरि माया अनेक बिघ्न करै ६ प्रथम तोउसके पास ऋद्धि सिद्धि प्रेरिकर बुद्धिको लोभ दिखावे ७ फिरि अनेक छलछन्द करिकरि उसके पासजाइ अंचलकी पवनसेदीपकको बुझादेवे८॥३२॥

होय बुद्धि जो परम सयानी। तिनतन चितवन अनहित जानी १
जो तेहिं बिघ्न बुद्धिनहिं बाधी। तो बहोरि सुर करहिं उपाधी २
इन्द्री द्वार झरोखा नाना। तहं तहं सुर बैठहिं करि थाना ३
आवत देखहिं बिषय बयारी। ते हठि देहिं कपाट उघारी ४
जब सु प्रभंजन उर गृह जाई। तबहिं दीप बिज्ञान बुझाई ५
ग्रंथि न छूटिमिटासो प्रकाशा। बुद्धि बिकलभइ बिषय बतासा ६
इन्द्री सुरन न ज्ञान सुहाई। बिषय भोग पर प्रीति सदाई ७
बिषय समीर बुद्धि कृत भोरी। यहिबिधिदीपक बारु बहोरी ८
दो० तब फिरि जीव बिबिध बिधि पावहि संसृति क्लेश।
हरि माया अति दुस्तर तरिन जाइ बिहंगेश॥ ३३॥

जो बुद्धि परम चतुर हो तो अपना अनहित जानि कर उन ऋद्धि सिद्धि की ओर न देखै १ जो उन बिघ्नों से बुद्धि न बाधी तो फिरि इन्द्रियोंके देवता उपाधि करते हैं २ अपनी अपनी इन्द्रियों के द्वारों के झरोखों में देवता यथा स्थान आ बैठते हैं ३ ते जब बिषयों की पवन को आते देखते हैं तो हठिकर कपाट खोलि देते हैं ४ जभी सो पवन हृदय भवन में गई तभी बिज्ञान का दीपक बुझिगया ५ ग्रन्थि तो छूटी नहीं और प्रकाश मिटि गया बुद्धि बिषयों की पवन से व्याकुल हो।

गई ६ इन्द्री देवताओं को ज्ञान कहां सुहाता है उनकी तो प्रीति सदा विषयभोगों ही पर रहती है ७ सो बिषयों की पवनने जब बुद्धि को भोरा कर दिया तो ऐसे कष्टसाध्य दीपक को क्या फिरि कोई बारि सकता है ॥ ८ ॥ तब तो फिर यह जीव अनेक भांति संसार के क्लेशों को पावता है यह हरि की माया अति दुस्तर है बिना भगवत् भक्ति तरीही नहीं जाती है ॥ दैवी ह्येषागुणमयीममायादुरत्यया मामेवयेप्रपद्यं तेमायामेतांतरंतिते ॥ ३३ ॥

दो० कहत कठिन समुझत कठिन साधन कठिन बिबेक ।
होइ घुनाक्षर न्याय ज्यों पुनि प्रत्यूह अनेक ॥

ज्ञान पंथ कृपाण की धारा । परत खगेश होइ नहिं बारा १
जो निरबिघ्न पंथ निर बहई । तो कैवल्य परम पद लहई २
अति दुर्लभ कैवल्य परमपद । संत पुराण निगमआगम वद ३
रामभजत सोइ मुक्ति गुसाईं । अन इच्छित आवत बरियाईं ४
जिमिथलबिनुजलरहिनसकाई । कोटिभांति कोउ करै उपाई ५
तथा मोक्षसुखसुनु खगराई । रहि न सकै हरि भक्ति बिहाई ६
भक्ति करतबिनु यतन प्रयासा । संसृति मूल अविद्या नाशा ७
अस बिचारि जे परम सयाने । मुक्ति निरादरि भक्ति लुभाने ८

दो० सेवक सेव्य भाव बिनु भव न तरिय उरगारि ।
भजिय रामपद पंकजहिं असर्सिद्धांत बिचारि ॥ ३४ ॥

बिबेक तो हेगरुड़ कहने में कठिन और समुझने में भी कठिन है तो उसके साधनों की कठिनता क्या कहनाहै जैसे किसी घुन कीट विशेष पर दैवयोग से कभी कोई अक्षर बन जावै इसी भांति ऐसा ज्ञान कल्पोंमें कभी किसी जीवसे बनि परता है तिस पर भी तब उसको अनेक बिघ्न खड़े होते हैं ॥ चौपाई ॥ ज्ञान मार्ग तोहे गरुड़ कहनेही को हैं क्योंकि उसमें खड्ग धारही के समान चौराव है उस परसे गिरने में कुछ बार नहीं लगतीहै १ जो निर्विघ्न उस मार्ग में निभि जावे तोकेवल ज्ञानी परमपद मुक्ति पा सकता है २ जो मुक्ति परमपद केवल ज्ञानियों को अति दुर्लभ है यह बचन वेद पुराण संत सब कहते हैं सोई मुक्ति परमपद रामकेशरण होतेही भगवद्भक्तों को अनचाहा बरियाईं आती है ३ । ४ जैसे कोटि उपाय करने से भी बिना थलके जल नहीं ठहर सकता है तैसेही मोक्ष का आनन्द हे गरुड़ हरि भक्त को छोड़ि कर नहीं रहि सकता है ५ । ६ और भक्ति करते तो बिना यत्न बिना प्रयास संसार की अविद्या माया का आपही नाश होजाता है ७ यही बिचारि

कर जो परम चतुर कहें शुक बाल्मीकि पराशरादि और सनकादि नारदादि सबमुक्ति को छोड़ि भक्तिही पर लुभाने हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ सेवक और सेव्यभाव बिना है गरुड़ कोई भी संसार को नहीं तरि सकता है यह वेद वेदांत सब का सिद्धांत बिचारि कर श्री रामचन्द्र के चरणकमलों का ही भजन कीजिये ॥ ३४ ॥

दो० जो चेतन को जड़ करै जड़हि करै चैतन्य ।
अस समर्थ रघुनायकहिं भजहिं जीव ते धन्य ॥
कहेउं ज्ञान सिद्धांत बुझाई । सुनहु भक्ति मणि की प्रभुताई १
राम भक्ति चिंतामणि सुन्दर । बसै गरुड़ जाके उर अंतर २
परमप्रकाश रूप दिन राती । नहिं कछु चहियदीपघृतबाती ३
मोह दरिद्र निकटनहिं आवहि । लोभबातनहिं ताहिबुझावहि ४
प्रबल अबिद्या तम मिटिजाई । हारत सकल शलभ समुदाई ५
गरलसुधा सम अरिहित होई । तेहिंमणिबिनुसुखपावनकोई ६
व्यापहिं मानस रोगनभारी । जिनके बश सब जीव दुखारी ७
चतुर शिरोमणि ते जगमाहीं । जे मणि लागि सुयतनकराहीं ८

जो स्वामी चेतन जीव को तो जड़ करते हैं और जड़ माया को चेतन करते हैं ऐसे समर्थ रघुनायक रामही को जो जीव भजते हैं तेई हे गरुड़ धन्य हैं ॥ चौपाई ॥ ज्ञानके दीपक कासिद्धांत तो हेगरुड़ मैंने तुमसे समुझा कर कहा अब तुम भक्ति चिन्तामणि की महिमाको सुनो १ रामभक्ति सुन्दर चिन्तामणि है गरुड़ जिस जीव के हृदय में निवास करती है २ दिन राति तो उसके हृदय में आपही परम प्रकाश रूप रहती है न उसको दिया चाहिये न घृत बाती चाहिये ३ मोह दरिद्र उसके पास नहीं आता है औरलोभ की पवन भी उसकोनहीं बुझाती है ४ अविद्या माया का प्रबल अंधकार सब मिट जाता है और कामादि शलभा का समुदायसब मूंड़ मारि हारि जाते हैं ५ गरल बिष उसको अमृत होजाता है और शत्रु सबमित्र बनिजातेहैं उसकेबिना कोईभी सुख नहीं पाताहै ६ महा भारी मानसरोग भी उसको नहींव्यापते हैं जिनके मारे सब जीव दुखी हैं ७ चतुरों के शिरोमणि संसार में तेई जीव हैं जो इस मणि के खोजनेके लिये यत्न करते हैं ॥ ३५ ॥ ८

सोमणि यदपि प्रगट जग अहई । रामकृपा बिनु कोउनलहई १
सुगम उपाय पाइबे केरे । नर हतभाग्य देहिं भट भेरे २
पावन पर्वत वेद पुराना । राम कथा रुचिराकर नाना ३

मर्मी सज्जन सुमति कुदारी। ज्ञान बिराग नयन उरगारी ४
भावसहित खोजहि जोप्रानी। पावभक्तिमणिसब सुखखानी ५
मोरे मन प्रभु अति बिश्वासा। राम ते अधिक राम के दासा ६
रामसिंधु घन सज्जन धीरा। चंदन तरु हरि संत समीरा ७
असबिचारि जो करु सतसंगा। रामभक्ति तेहिं सुलभबिहंगा ८
दो० ब्रह्म पयोनिधि मंदर ज्ञान संत सुर आहि।
कथासुधामथि काढ़हीं भक्ति मधुरता जाहि। ३६

सोमणिहे गरुड़ यद्यपि संसारमें प्रगटहै तौ भी रामकी कृपाबिना कोई भी नहीं पाते हैं ॥ १ ॥उसके पाउनेके उपाय भी सुगमहैं परंतु मंदभागी जीव भटभेरे देते हैं २ वेदपुराणतो इसमणिके परम पावन पर्वतउनमेंहैं भगवत्कथा अतिरुचिर आकर खानिहै ३ भगवज्जन उसके भेदीहैं अन्य लोग नहीं जानते हैं ॥ नारायणपराबिप्रा धर्मगुह्यंपरंबिदु: करुणासाधव:शांतास्त्वद्विधानतथापरे ॥ सुमतिकहैं व्यवसायात्मका बुद्धि खोदनेकी कुदारी है ज्ञान बैराग हे गरुड़ नेत्रहैं ॥ ४ ॥ प्रीति समेत जो प्राणी उसको खोजते ते उसभक्तिमणि समस्त सुखकीखानिको पातेहैं ५ मेरेमनमें तौ हेनाथ दृढ़ विश्वास है कि रामके दास रामसे भी अधिक हैं ६ राम तो जलराशि समुद्र हैं और रामके दास मेघहैं जो रामतत्व जलको सर्बत्र बर्षाते हैं और रामतो चन्दन हैं रामके दास पवन जो उसकी सुगन्धको सर्बत्र पहुंचावते हैं ७ ऐसा बिचारिकर हे गरुड़ जो भगवज्जनों का संग करैगा उसको राम भक्ति सुलभ होगी ॥ ८ दोहा॥ ब्रह्म वेद तो पयोनिधि है ज्ञान बुद्धि मंदराचल है संत जन देवगण हैं ते बुद्धि मंदराचलसे वेद समुद्र को मथिकर भगवत्कथा अमृत काढ़ते हैं जिसमें भक्तिसुन्दर मधुर रस है ॥ ३६ ॥

दो० बिरति चर्म असि ज्ञान मद लोभ मोह रिपु मारि।
जय पाइय हरिभक्ति सो देखु खगेश बिचारि॥

पुनिसप्रेमबोलेउ खगराऊ। जो कृपालु मोहिं पर अति भाऊ १
नाथ मोहिं निज सेवक जानी। सप्तप्रश्न मम कहहु बखानी २
प्रथम सो कहहु नाथ मतिधीरा। सबते दुर्लभ कवन शरीरा ३
बड़दुख कवन कवन सुखभारी। सो संक्षेपहिं कहहु बिचारी ४
संत असंत मर्म तुम जानहु। तिनकर सहज सुभावबखानहु ५
कवनपुण्यश्रुतिबिदितबिशाला। कहहु कवनअघपरमकराला ६

मानस रोग कहहु समुझाई। तुम सर्बज्ञ कृपा अधिकाई ७
तात सुनहु सादर अति प्रीती। मैं संक्षेप कहहुं यह नीती ८

बैरागकी ढाल और ज्ञान के खड्ग से लोभ मोहादि बैरियों कोमारि कर जो विजय होतीहैसो भगवद्भक्तिहै अर्थात् भगवद्भक्तिही सबका फल है ॥ चौपाई ॥ फेरि बड़े प्रेम से गरुड़ भुशुण्डि से बोले हे नाथ जो आपका मेरे पर बड़ा प्रेम है तो मेरे को अपना सेवक जानिकर सात प्रश्न आप मेरी ओर कहिये १। २ प्रथम तो हे नाथ यह कहिये कि सबसे दुर्लभ कौन सा शरीरहै ३ बड़ा दुःख कौनसाहै और सुख भारी कौनसा है यह संचेपही से कहिये ४ संत असंतों का मर्म भी आप जानते हो उनका सहज स्वभाव कहिये ५ कौनसा पुण्य वेदमें बिदित बड़ाहै और कौन सा पाप महा कराल है ६ और मानस रोगों का जो आपने नाम लिया सोभी मेरेको विस्तार से समुझाकर कहिये कि ये कौन रोग हैं आप तो सर्बज्ञ हैं और मेरे पर आपकी कृपा अधिक है सो कृपा अधिकाइ कर कहिये ७ तब तो भुशुण्डि बोले हे तात अति प्रीति से सुनोमैं यह सब नीति संचेप सेहीकहता हूं ॥ ८ ॥३०॥

नर तन सम नहिं कवनिहु देहीं। जीव चराचर याचत जेही १
नर्क स्वर्ग अपबर्ग नसेनी। ज्ञान बिराग भक्ति शुभ देनी २
सोतनुधरिहरि भजहिं न जेनर। होहिं बिषय रतमंदमंदतर ३
कांच किरिच बदले तेलेहीं। करते डारि परस मणि देहीं ४
नहिंदरिद्र समदुख जगमाहीं। संतमिलनसम सुखकछुनाहीं ५
पर उपकार बचन मनकाया। संत सहज स्वभाव खगराया ६
संत सहहिं दुख परहित लागी। परदुखहेतु असंत अभागी ७
भूरजतरुसम संतकृपाला। परहित नितसह बिपतिबिशाला ८

मनुष्य शरीर के समान हे गरुड़ कोई शरीर नहीं है सब चराचर जीव इसको ईश्वरसे याचते हैं १ नर्कलोक स्वर्ग लोक बेकुंठ लोक की यही नसेनी है और ज्ञान बैराग भक्ति पर्य्यन्तकी यही दाता है २ऐसा उत्तम शरीर पाकरभी जो भगवत्प्रपन्न नहीं होते हैं औरजो बिषय खर,कूकर,शूकरादि शरीरमें भी मिलते हैं उन्हींबिषयोंमें आशक्त होकर अपनी आयुको बृथा खोते हैं ते मंदसे भी महामंद हैं ३ जैसे कोई दैवयोगसे पाई हुई पारसमणि को तो हाथसे डारि देवै और उसके पलटे कांच की चीप उठालेवै ऐसेही मूढ़हैं गरुड़ उनको जानो ४ दरिद्रके समान इस संसारमें कोई भी दुःख नहीं है जिसके आगे सब दुख भूलि जातेहैं ॥ बासुदेवजराकष्टंकष्टंनिर्धन जीवनं पुत्रशोकमहाकष्टंकष्टात्कष्टतरंक्षुधा ॥ और संत समागम के समान कोई आनंद नहीं है ५ तन,मन, बचन से परोपकार करना यह संतोंका हे गरुड़ सहज स्वभाव

होता है ६ संत तो पराये हितके अर्थ अपनेपर दुःख सहते हैं और असंत अभागे पराये दुखके कारणही होते हैं ६ भूर्जवृक्ष कहैं कपास वा भोजपत्र के समान संत परम कृपालु होते हैं पराये अर्थ बिशाल बिपत्तिप्राण पर्य्यन्तभी सहते हैं ॥ ८ ॥ ३८

सनइव खलपरबंधन करहीं । खालकढ़ाय बिपति सहिमरहीं १
खलबिनु स्वारथ परअपकारी । अहि मूषक इवसुनु उरगारी २
परसंपदाबिनाशिनशाहीं । जिमिशश हतिहिम उपलबिलाहीं ३
दुष्ट उदय जग आरति हेतू । यथा प्रसिद्ध अधम ग्रह केतू ४
संत उदय संतत सुखकारी । बिश्व सुखद जिमि इंदु तमारी ५
परमधर्मश्रुतिबिदितअहिंशा । परनिन्दा समअघ न गरिशा ६
सुनहु तात अब मानसरोगा । जिनते दुख पावहिं सब लोगा ७
मोहसकल ब्याधिनकरमूला । तेहितेपुनि उपजहिं बहुशूला ८

तैसेही सनके वृक्षकी नाईं असंत परबंधनही करते हैं और उसी परबंधनके लिये अपनी खाल कढ़ाते हैं और बिपति भी सहते हैं १ दुष्ट बिना स्वार्थ पराया अपकार करते हैं सर्प और मूषकोंके समान हे गरुड़ २ पराई संपदा को नाश करिके आपभी नाश होजाते हैं जैसे खेतीका नाशकरिके तुषार और ओले बिलाइ जातेहैं३ दुष्टोंका अधिकार पाना भी संसारकी पीड़ाहीका कारण होता है जैसा अधमग्रह पुच्छलतारे केतुका उदय प्रसिद्ध है ४ तैसेही संतोंका उदय सदा सबको सुखहीदेता है जैसे बिश्वकासुखदायक सूर्य्य चन्द्रमाका उदय होताहै ५ परम धर्म वेदमेंबिख्यात तो हे गरुड़ अहिंशा है॥ नास्त्यहिंशापरोधर्मः॥ और पर कहैं परमात्मा जगत्कारण जगदीश्वर जगत्पति भगवन्निन्दाके समान कोई दूसरा भारी पापनहीं उसकी निन्दा में बिश्वका निन्दक होता है क्योंकि समस्त बिश्व उसीका कलांश है ६ अबहेतात तुम मानस रोगोंको सुनो जिनसे सब जीव दुख पाते हैं ७ प्रथम सब रोगोंकी मूल तो एक मोह अज्ञान है फिरि उसीसे सब रोग उपजते हैं ॥ ८ ॥ ३९ ॥

काम बात कफ लोभ अपारा । क्रोध पित्त नित छाती जारा १
प्रीति करहिं जो तीनिहु भाई । उपजहि सन्निपात दुखदाई २
बिषय मनोरथ दुर्गम नाना । ते सब शूल नाम को जाना ३
ममता दादु कंडु इर्षाई । हर्ष बिषाद गरह बहुताई ४
पर सुख देखि जरनि सो क्षई । कुष्ट दुष्टता मन कुटिलई ५
अहंकार अति दुखद डहरुआ । दंभ कपट मद मान नहरुआ ६

तृष्णा उदर वृद्धि अति भारी। त्रिबिधिईषणा तरुण तिजारी ७
युगबिधिज्वर मत्सरअबिबेका। कहंलगि कहौंकुरोग अनेका ८
दो० एक व्याधि बश नर मरहिं जे असाध्य बहु व्याधि।
पीड़हिं संतत जीव कहं सोकिमि लहै समाधि॥ ४० ॥

कामतो मनके लिये वातहै लोभकफहै क्रोधपित्तहै जोनित्य छातीको जरातहै १ जो येतीनों परस्पर प्रीतिकरैं तो महा दुखदाई प्राणांतक सन्निपात हो होजाताहै २ बिषयोंके जोदुर्गम अनेक मनोऽर्थहैं तेईसबशूल रोगहैं ३ ममता मनकी दादुहै ईर्षा खाजुहै हर्ष बिषाद गलाबाईहै और पराये सुखको देखिके जो जरनि सो मनका क्षयी रोग है मनकी कुटिलता और दुष्टतायेहीमनको कुष्टरोग है ५ अहंकार अति दुखदाई डहरुआहै कपट, दंभ, मान, मद नहरूआहै ६ तृष्णा उदर वृद्धिजलंधरो अति भारीहै सुत, वित, नारि ये तीनि ईषणाही प्रबल तिजारीहैं ७ दो प्रकारकाज्वर शीत और उष्णमत्सर और अविवेक हैं अबमैं कहांतक गनाऊं ऐसे रोगतो अनेक हैं॥ ८॥ दोहा॥ एकही रोगसे लोग मरि जाते हैं येतो असाध्य अनेक रोग सदा जीव को पीडा देतेहैं सोभला समाधि मेकल कैसे पाताहै॥ ४०॥

दो० नेम धर्म आचार तप ज्ञान यज्ञ जप दान।
भेषज पुनि कोटिन नहिं रोग जाहिं हरियान॥
यहिबिधि सकल जीवजगरोगी। शोकहर्ष भयप्रीति बियोगी १
मानस रोग कछुक मैं गाये। हैं सबके लखि बिरले पाये २
जाने ते छकु छीजैं पापी। नाश न पावहिं जन परितापी ३
बिषय कुपथ्य पाइ अंकुरे। मुनिहु हृदय का नर बापुरे ४
राम कृपा नाशहिं सब रोगा। जो यहि भांति बनै संयोगा ५
सदगुरु बैद्य बचन बिश्वासा। संयम यह न बिषयकी आशा ६
रघुपति भजन सजीवन मूरी। अनपान श्रद्धा अति रूरी ७
यहि बिधि भलहिंकुरोगनशाहीं। नाहिंतकोटिहु यतननजाही ८

नेमहै धर्महै आचारहै तपहै ज्ञानहै यज्ञहै जपहै दानहै और कोटिन औषधिहैं परंतु इनसे हेगरुड़ येरोग जातेहींनहीहै॥ चौपाई॥ इसीप्रकार समस्तजीवसंसारमें रोगीहैं कभी शोकहै कभी हर्षहै कभी प्रीतिहै कभी बियोगहै १ मानस रोग कुछजो मैंने हेगरुड़ तुमसे कहेहैं सोयेसबके सबसबकेहैं जानि बिरलेही नेपायेहैं २ जाननेसे कुछ छीजि जातेहैं परंतु नाश नहींहोतेहैं ३ बिषयोंके कुपथ्यपाकर उपजेहैं सोमुनी-

श्वरोंके हृदयमें भीतोहै मनुष्य बिचारे कौन गणनामेंहै ४ रामकी कृपासे हेगरुड़ ये सबरोग नाशहोतेहैं जो इस प्रकार का संयोग बनिपरै ५ सद्गुरु तो बैद्यमिलै और उसी के बचनों पर बिश्वास हो बिषय की आशा छोड़ने का संयम करै ६ भगवद्भजन संजीवनी मूरि औषधि होयअति सुन्दर श्रद्धा का अनूपान होय ७ इस प्रकार तो भली भांति से ये कुरोग सब नाश होतेहैं नहीं तो अन्य कोटि उपायों से भी नहीं जाते हैं ॥ ८ ॥

शिवअजशुक सनकादिक नारद । जेमुनिब्रह्म बिचार बिशारद १
सबकर मत खग नायक येहा । करिय राम पद पंकज नेहा २
श्रुति पुराण सब ग्रंथ कहाहीं । रघुपतिभक्ति बिना सुखनाहीं ३
कमठ पीठ जामहिं बरुबारा । बंध्या सुत बरु काहुहि मारा ४
फूलहिंनभ बरुबहुबिधिफूला । जीवन लहसुखहरिप्रतिकूला ५
तृषाजाइ बरु मृग जल पाना । बरुजामहु शश शीश बिषाना ६
अंधकार बरुरविहि नशावहि । राम बिमुखन जीवसुखपावहि ७
हिमते अनल प्रगट बरु होई । बिमुख राम सुखपाव न कोई ८

इसी कारण जगत्गुरु शिव और जगत्पिता ब्रह्मा सबके अग्रज सनकादिक परम भागवत् शुकदेव और नारद और जो महर्षि ब्रह्म बिचारमें प्रवीण हैं उन सबका हे गरुड़ यही संमत है कि रामहीके चरण कमलों में प्रेम कीजिये १ । २ चारों वेद छहूं शास्त्र,तंत्र अठारह,पुराण, स्मृति, इतिहास सब यही कहते हैं कि रघुनायक रामकी भक्ति बिना इस जीवको कहीं भी तो सुख नहीं है ३ अबमैं तुमसे हे गरुड़ प्रण करिके कहता हूं कि कछुयेकी पीठि पर बार अति असंभव हैं सो भलेही जमैं और बांझका बेटा किसीको भलेहीं मारै आकाशमें रंग बिरंगे फूल भलेही फूलै परंतु भगवद्विमुख जीवतो कभी सुख न पावैगा ४ । ५ मृगतृष्णा के जल से प्यास भलेही बुझावै और खरहेके शीश पर शृंग भलेही जमैं अंधकार सूर्य्यको भलेहीनिगलि जाइ परंतु रामसेबिमुखतो जीव कदापि सुख नहीं पावैगा ६ । ७ तुषार से अग्नि भलेही प्रगट होवे भगवत् प्रतिकूल जीव कोईभी सुख नहीं पाता है ॥ ८ ॥ कबित्त ॥ जप योग बिराग महा मख साधन दान दया दमकोटिकरै ॥ मुनिसिद्धसुरेश गणेशमहेश से सेवत जन्मअनेकमरै ॥ निगमागम ज्ञानि पुराण पढै तपसानल में युग पुंज भरै मनसो पनरोपि कहै तुलसी रघुनाथ बिना दुख कौन हरै ॥

दो० बारि मथे घृत होइ बरु शिकता ते बरु तेल ।
बिनु हरि भजन न भव तरिय यह सिद्धांत अपेल ॥

मशकहिं करहिं बिरंचि प्रभु अजहिं मशक ते हीन ।
अस बिचारि तजि संशय रामहिं भजहिं प्रवीन ॥

श्लोक ।

बिनिश्चितंबदामिते नअन्यथाबचांसिमे ।
हरिंनराभजंतिये सुदुस्तरंतरंतिते ॥ १ ॥

जलके मथनेसे घृत भलेही निकसै और बालूके पेरनेसे तेल भलेही निकसै परंतु भगवद्भजन बिना तो संसार नहीं तरा जाता है यह तो हे गरुड़ अपेल सिद्धांत है अश्वमेधशतैरिष्ट्वाबाजपेयशतानिच नयांतिपरमंस्थानंनारायणपरान्मुखाः ॥ योबासुदेवादन्यचमोक्षंप्रार्थयतेऽल्पधी अग्निभ्रांतिसखद्योतंशीतत्राणायकल्पते ॥ मशककोतोराम ब्रह्मा कर सकते हैं और ब्रह्माको मशकसेभी छोटा कर सकते हैं ऐसा बिचारि कर जो परम प्रवीण हैं ते सब संशय छोड़िकर केवल रामही को भजते हैं दूसरे किसी का आशरा नहीं करते हैं सुनो हे गरुड़मैं तुमसे बिनिश्चित कहता हूं येमेरे बचन अन्यथा नहींहैं जो लोग हरिको भजतेहैं ते इस दुस्तर भगवन्मायाको तरतेहीहैं ॥ येनृशंशादुरात्मानःपापाचाररतास्सदा तेयांतिपरमंस्थानंनरानारायणाश्रयाः ॥ अपिचेत्सुदुराचारोभजतेमामनन्यभाक् साधुरेवसमन्तव्यस्सम्यक्विवसितोहिसः चिप्रंभवतिधर्मात्माशश्वच्छांतिंनिगच्छति कौंतेयप्रतिजानीहिनमेभक्तःप्रणश्यति ॥

कहेउ नाथ हरिचरित अनूपा । ब्याससमास स्वमतिअनुरूपा १
श्रुति सिद्धांत यही उरगारी । राम भजिय सब काम बिसारी २
प्रभु रघुपति तजि सेइय काही । मोसेहु शठ पर ममताजाही ३
तुम बिज्ञान रूप नहिं मोहा । नाथ कीन्ह मोहिंपर अतिछोहा ४
पूछेहु राम कथा अति पावनि । शुकसनकादि शंभुमनभावनि ५
सत संगति दुर्लभ संसारा । निमिष दंड भरि एकहु बारा ६
देखु गरुड़ निज हृदय बिचारी । मैं रघुवीर भजन अधिकारी ७
शकुनिअधमसबभांतिअपावन।प्रभुमोहिंकीन्हबिदितजगपावन८

दो० आजु धन्य मैं धन्य अति यद्यपि सब बिधि हीन ।
निजजनजानि राममोहिं संत समागमदीन ॥ ४३ ॥

हे नाथ यह अनूप हरिचरित्र मैंनेजो आपसे कहा है सो कहीं तो व्यासबिस्तार से और कहीं समास संक्षेप से कहा है अर्थात् बाल,अयोध्या, उत्तरकांड तो बिस्तार से कहे हैं और शेष मध्य के चारि कांड संक्षेपसे हैं १ वेद वेदांत का संमत तो है

गरुड़ यही है कि सर्वकामना छोड़ भगवद्भजन कीजिये २ हे नाथ राम को छोड़ि किसके शरण जाइये कि मो सारिखे शठपर भी जिनकी ममता है ॥ कवित ॥ भूमिपाल ब्यालपाल नाकपाल लोकपाल कारण कृपाल मैं सबै को जीकी थाहली । कादर को आदर काहू के नाहिं देखियत सबहि सुहात हैं सुजान सेवा टाहली ॥ तुलसी प्रतीति कहै नाहिं कछु पक्षपात कौनेईश किये कीश भालुखास माहली । रामही के द्वार पै बुलाइ सनमानियत मोसे दीनदूबरे कुपूत कूर काहली ॥ ३ आप तो विज्ञान रूप हो मोह कहां है केवल मेरे पर कृपाही की है ४ जो अतिपावन राम कथा मेरे से पूछी है ५ सतसंगति इस संसार में निमिषमात्र एक बार भी दुर्लभ है ६ हे गरुड़ अपने हृदय में विचारि देखो मैं राम के भजन का अधिकारी कहां रहूं ७ पक्षियों में अधम सब भांति से अपावन सो प्रभुने मेरे को जग पावन करिदिया ८ दोहा ॥ आज मैं धन्य हुआ अति धन्य हुआ यद्यपि सब भांति हीन हूं जो मेरे को अपना जन जानि कर आप से संतों का समागम दिया ॥ ४३ ॥

दो० नाथयथामति भाषेउं राखेउं नहिं कछुगोइ ।
चरित सिंधु रघुनाथ कर हाथकिपावहि कोइ ॥ १२ ॥
सुमिरि रामके गुणगणनाना । पुनि पुनिहर्षिभुशुंडि सुजाना १
महिमा निगम नेति कर गाई । अतुलित बल प्रताप प्रभुताई २
शिव अज पूज्य चरण रघुराई । मो पर कृपा परम मृदुलाई ३
अस स्वभाव कहुंसुनहुं न देखहुं । केहिंखगेशरघुपतिसमलेखहुं ४
साधक सिद्ध बिरक्त उदासी । कवि कोविद कृतज्ञ संन्यासी ५
योगी शूर सुतापस ज्ञानी । धर्म निरत पंडित बिज्ञानी ६
तरहिं न बिनु सेये मम स्वामी । राम नमामि नमामि नमामी ७
शरण गये मोसेहु अघराशी । होहिं शुद्ध नमामि अबिनाशी ८
दो० जासु नाम भव भेषज हरण घोर त्रय शूल ।
सो कृपालु मोहिं तोहिं पर सदा रहहु अनुकूल ॥ ४४ ॥

हे नाथ जैसी मेरी बुद्धिहै तैसा मैंने आप से कहा कुछ छिपाव नहीं कियाऔर रामचन्द्र के चरित्र तो समुद्र हैं उनकी थाह कौन पाता है ॥ चौपाई ॥ फिरि तो कागभुशुंडि रामचन्द्र के नाना प्रकार के गुण गणों को सुमिरि कर बारंबार हर्षित हुये और बोले १ सुनो हे गरुड़ जिन रामकी महिमा को वेद भी नेति नेति कहते हैं अतोल जिनका बलहै अतोल प्रताप है अतोल प्रभुता है २ त्रैलोक्य नाथ ब्रह्मा शिव के भी पूज्य जिनके चरण हैं ऐसे बड़े रघुनाथ मेरे पर कृपाकरैं तो यह परम

कोमलता है ३ ऐसा स्वभाव तो मैं कहीं किसी का भी तो न सुनता हूं न देखताहूं फिरि हे गरुड़ कैसे किसी को राम के समान कहूं ४ कैसेही साधक और कैसेही सिद्ध कैसे ही बिरक्त कैसे ही उदासी कैसे ही कोबिद कबि कैसेही कृतज्ञ कैसे ही संन्यासी कैसेही योगी कैसेही शूर कैसेही तपस्वी कैसेही ज्ञानी कैसेही धर्म परायण कैसेही पण्डित कैसेही बिज्ञानी होय मेरे स्वामीराम के बिना सेवन करे संसार के पार न जावेंगे तिनस्वामीरामको मैं बारबार प्रणाम करता हूं ५ । ६ । ७ ॥ भागवते तपस्विनोदानपरायशस्विनोमनस्विनोमंत्रविदः । सुमंगलाः क्षेमंनविंदंतिविनायदर्पणं । तस्मैसुभद्रश्रवसेनमोनमः ॥ और जिसस्वामी के शरण होने से तो मो सरीखे पापीभी बिशुद्ध होजाते हैं तिन अबिनाशी राम को मैं प्रणाम करता हूं ॥ किरातहूणांध्र पुलंदपुल्कशाआभीरकंकायवनाखसादयः येन्येचपापायदुपाश्रयाश्रयाशुद्धंतितस्मैप्रभुविष्णवे नमः ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जिन राम स्वामी का नाम हे गरुड़ संसार रोग की औषधि है जो महाघोर त्रिबिध शूलों को हरैहैतेई राम कृपाल मेरे तेरे श्रोता बक्ता दोनों पर सदा सानुकूल रहो ॥ ४४ ॥

दो० सुनि भुशुण्डिके बचन सुठि देखि राम पद नेह ।
बोलेउ प्रेम सहित गिरा गरुड़ बिगत संदेह ॥

मैंकृत कृत्य भयउं तव बानी । सुनि रघुबीर भक्ति रस सानी १
मोपहं होइ न प्रति उपकारा । बंदौं तव पद बारहिं बारा २
पूरण काम राम अनुरागी । तुम सम तात न कोउ बड़भागी ३
संत बिटप सरिता गिरिधरणी । परहित हेतु सबन की करणी ४
संत हृदय नवनीत समाना । कहा कबिन पै कहिनहिं जाना ५
निज परिताप द्रवहिं नवनीता । परदुख द्रवहिं संत सुपुनीता ६
जीवनजन्म सफलमम भयऊ । तव प्रसाद सबसंशय गयऊ ७
जानेहुसदा मोहिंनिजकिंकर । पुनिपुनिउमा कहेउबिहंगबर ८

दो० तासु चरण शिर नाइ करि प्रेम सहित मति धीर ।
भयउ गरुड़ बैकुंठहि हृदय राखि रघुबीर ॥ ४५ ॥

ऐसेसुन्दर सुहाये कागभुशुण्डिके बचन सुनि और रामकेचरणोंमें उनका प्रेमदेखि गरुड़ बिगत संदेह बचन बोले ॥ चौपाई ॥ हे नाथ श्री रामचन्द्र के भक्ति रस की सानी आपके मुखकी बानी सुनि कर मैंतो कृत कृत्य होगया अर्थात् समस्त कृत्य करि चुका १ परंतु इसका प्रत्युपकार पलटामें कुछ नहीं कर सकता हूं ताते बार बार आपके चरणोंको प्रणाम करता हूं २ आपतो केवल रामानुरागी हैं ताते परिपूर्ण

काम हैं आप के समान हे नाथ कौन बड़भागी हैं ३ सत्यहै कि संतजन और बृक्ष सरिता, पर्बत, धरणी ये सब परहितहीके निमित्त देह धरतेहैं ४ संतजनोंका हृदय कबि जनोंने नवनीत माखनके समान कोमल कहा हैं परंतु बिचारिकर नहींकहा ५ क्योंकि माखन तो अपनेही तपानेसे पिघिलता है परंतु परम बिशुद्ध संत जनों का हृदय पराये संतापसे द्रवता है ६ मेरा तो जीवन और जन्म हे नाथ आपके समागमसे सफल होगया और आपके अनुग्रहसे सब संशयभी दूरि हुआ ७ अब आप मेरेको सदा अपना सेवक जानना बारंबार हे पार्बती ऐसेगरुड़ने भुशुंडिसे कहा ॥ ८॥ दोहा ॥ फिरि भुशुंडि के चरणोंको प्रेम समेत शिरनवाइ श्री रामचन्द्र का स्मरण करते गरुड़ बैकुंठको चले गये ॥ ४५ ॥

दो० गिरिजा संत समागम सम न लाभ कछु आन ।
बिनु हरि कृपा न होइ सो गावहिं वेद पुरान ॥

कहेउं परम पुनीत इतिहासा । सुनत श्रवण छूटहिं भवपासा १
प्रणत कल्पतरु करुणा पुंजा । उपजै प्रीति राम पद कंजा २
मन क्रम बचन जनित अघ जाई । सुनै जो कथा श्रवण मनलाई ३
तीर्थाटन साधन समुदाई । योग बिराग ज्ञान निपुणाई ४
नाना कर्म धर्म ब्रत दाना । संयम दम जप तप मख नाना ५
भूत दया द्विज गुरु सेवकाई । बिद्या बिनय बिबेक बड़ाई ६
जहं लगि साधन वेद बखाने । सब कर फल हरि भक्ति भवाने ७
सो रघुनाथ भक्ति श्रुति गाई । राम कृपा काहू यक पाई ८

दो० मुनि दुर्लभ हरि भक्ति नर पावहिं बिनहिं प्रयाश ।
जो यह कथा निरंतर सुनहिं मानि बिश्वाश ॥ ४६ ॥

हे पार्बती संसारमें संत समागमके समान दूसरा कोईभी लाभ नहीं है सो संत समागम भगवत्कृपा बिना नहीं होताहै यह वेद पुराण सब कहते हैं ॥ चौपाई ॥ यह परम पावन इतिहास जो मैंने तुमसे हे पार्बती कहा इसके सुननेसे भव बंधन छूटता है १ और प्रणतपाल करुणापुंज रामचन्द्र के चरण कमलोंमें प्रेम उपजताहै २ तन मन बचनके किये पाप सब नाश होते हैं जो इसको श्रवणोंसे मन लगाकर सुनते हैं ३ तीर्थोंका पर्य्यटन करना और समस्त साधनोंका करनायोग बैराग ज्ञानमें निपुण होना ४ नानाप्रकारके कर्म, धर्म, ब्रत, दान, संयम, जप, तप, मख ५ जीवोंपर दया और द्विज, देव, गुरुजनोंकी सेवा करना, बिद्या पढ़ना, नीति निपुणहोना, बिबेक और बड़ाई ६ जहांतक साधन वेदोंने बखाने हैं सबका फल एक हरि भक्तिही हेभवानि

है ० सो उस हरि भक्ति को वेद कहते हैं कि ये सब कर्म करनेसे भगवत्कृपा से किसी बिरलेहीने पाई है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ ऐसी अति दुर्लभ हरिभक्तिको मनुष्य बिनाही प्रयास पाजाते हैं जो इस कथा को विश्वास मानि कर सुनते है ॥ ४६ ॥

सोइ सर्बज्ञ गुणी सोइ ज्ञाता । सोइ महि मंडन पंडित दाता १
धर्म परायण सोइ कुल त्राता । राम चरण जाके मन राता २
नीति निपुणसोइ परम सयाना । श्रुति सिद्धांतनीक तेहिजाना ३
सोईकबिकोबिद सोइ मतिधीरा । जो छल छाडि भजै रघुबीरा ४
धन्य सोभूप नीति जो करई । धन्य सो द्विज निजधर्म न टरई ५
सोधन धन्यप्रथम गतिजाकी । धन्य पुण्य रतमति सोइपाकी ६
धन्य देश सो जहं सुर सरी । धन्य नारि पति ब्रत अनुसरी ७
धन्य घरी सोइ जब सतसंगा । धन्य जन्म द्विज भक्ति अभंगा ८
दो० सोकुल धन्य उमा सुनु जगत पूजि सुपुनीत ।
श्री रघुबीर परायण जेहिनर उपज बिनीत ॥ ४७ ॥

मेरेजानमें तोहेपार्बती सोईसर्बज्ञहै सोईगुणीहै सोईज्ञानीहै सोईपृथ्वीकाआभूषणहै सोई बड़ा पंडित है सोईबड़ा दाताहै १ सोई नीति वेत्ताहै सोईधर्म परायण है सोई कुलका रक्षकहै जिसका मन भगवच्चरणारबिंदे में लगाहै २ सोईपरम चतुरहै वेदों का सिद्धांत संमत उसीने यथार्थ जानाहै ३ सोईकोबिद कबिहै सोईमतिधीर है जोनिर्ब्य-लीकहो श्रीरामचंद्रही को भजताहै दूसरा कोईनतो सर्बज्ञहै नगुणीहै नज्ञानीहै नकुछ है ४ राजातो हेपार्वती सोधन्यहै जोनीति पर चलता है द्विजसो धन्यहै जो अपने धर्मसे नहीं चलताहै ५ धनसो धन्यहै जोसुकृतमें जाताहै बुद्धि सोधन्यहै जोपुण्यमें रतहै ६ देशसो धन्यहै जहां श्रीगंगाबहतीहैं स्त्रीसो धन्यहै जो पतिव्रताहै ७ घरी सोधन्यहै जिसमेंसंतसमागमहोताहै जन्मसोधन्यहै जिसमें द्विजदेवोंकी अभंगभक्तिहो ८ दोहा ॥ तैसेही हेपार्बती कुल सोई धन्यहै सोई जगत् पूज्य है सोई अति पावन हैजिसकुलमें रामपरायणभागवतजन्मै॥कुलंपबित्रंजननीकृतार्थाबसुंधराभागवतीचधन्या॥ स्वर्गस्थितायेपितरोऽपिधन्यायेषांकुलेवैष्णवनामधेयं॥आस्फोटयंतिपितरः प्रनृत्यंतिपितामहाः ॥ वैष्णवोनः कुलेजातःसनः संतारयिष्यति ॥ ४७ ॥

मति अनुरूप कथा मैं भाखी । यद्यपि प्रथम गुप्त करि राखी १
तव उर प्रीति देखि अधिकाई । तब मैं रघुपति कथा सुनाई २
यहनहिंकहियशठहिंहठिशीलहिं।जोमनलाइनसुनहरिलीलहिं ३

कहियनलोभिहिंक्रोधिहिंकामिहिं।जोनभजहिंसचराचरस्वामिहि
द्विजद्रोहिहिं नसुनाइयकबहूं । सुरपति सरिस होइनृप जबहूं ५
राम कथा के ते अधिकारी । जिनके सत संगति अति प्यारी ६
गुरु पद प्रीति नीति रत जेई । द्विज सेवक अधिकारी तेई ७
ता कहं यह बिशेष सुख दाई । जाहि प्राण प्रिय श्री रघुराई ८
दो० राम चरणरति जो चहहिं अथवा पद निर्बान ।
भाव सहित सो यह कथा करैं श्रवण पुटपान ॥ ४८ ॥

अपनी बुद्धिके अनुसार हे पार्बती मैंने तुमसे कही यद्यपि पहिले मैंनेइसको बनाकर अपने मनहीमें गुप्त राखाहै इसीसे इसकानाम रामचरितमानस है १ जब तेरे हृदयमें विशेष रामकीप्रीति देखी तबतेरेकोयह रामकथासुनाईहै २ इसकोशठसे नहीं कहना चाहिये हठशीलसे नकहिये जोमन लगाकर रामलीला को नसुनै ३ लोभीसेन कहिये क्रोधीसे नकहिये कामीसे नकहिये जो चराचर स्वामी रामको नभजै ४ द्विज देवद्रोही कोकभी न सुनाइये यदिइंद्र केसमान राजा हो यतोभी५ इस राम कथाके तोहे पार्वती तेई अधिकारी हैं जिनको संतोंकी संगति प्यारीहै ६ गुरुदेवके चरणोंमेंजिनकी प्रीतिहै औनीतिरतहैं द्विजदेवोंके सेवकहैं तेअधिकारी हैं ७ औरतिसको तोयह कथा बिशेषही सुख दाताहै जिसको श्रीरामचन्द्र प्राणोंप्रियतमहैं ८ ॥ दोहा ॥ जोकोई राम भक्तिचाहै अथवा निर्बाण पदचाहै सो भावसमेत इसकथा ऽमृत को श्रवण पुट भरि भरि पान करै ॥ ४८ ॥

राम कथा गिरजामैं बरणी । कलिमल शमनि मनो मलहरणी १
संसृति रोग सजीवन मूरी । रामकथा गावहिं श्रुति शूरी २
यहिमां रुचिर सप्त सोपाना । रघुपति भक्तिकेर पंथाना ३
अति हरिकृपा जाहिपर होई । पांवदेइ यहि मारग सोई ४
मन कामना सिद्धि नर पावा । जो यह कथाकपट तजि गावा ५
कहहिं सुनहिं अनुमोदन करहीं । तेगोपद इव भवनिधि तरहीं ६
सुनि सब कथा हृदय अति भाई । गिरिजा बोलीगिरा सुहाई ७
नाथ कृपागत मम संदेहा । राम चरण उपजा नव नेहा ८
दो० मैं कृतकृत्य भइउं अब तव प्रसाद बिश्वेश ।
उपजी राम भक्ति दृढ़ बीते सकल कलेश ॥ ४९ ॥

यह राम कथा हे पार्बती जो मैंने तुमसे कही कलिके पापोंकी नाशकर्त्ता है और मनके मैलोंकी हर्त्ता है १ संसार रूपी रोगको सञ्जीवन मूरिहै ऐसा इस राम कथा को वेद और शूरी अर्थात् शेश, गरुड़, बिष्वक्सेन, बैकुंठ निवासी भगवत् पार्षद कहतेहैं २ इस राम चरितमानस में अति सुन्दर, सातकांड जो हैं सोई सात सोपान कहे हैं तिसब राम भक्तिके परम पावन पंथहैं ३ जिसजीव पर अहेतुकी भगवत् कृपा होती है सोई इस मार्ग मे पांव देतेहैं ४ जो सकाम होताहै सोअपनी मन कामना निस्संदेह पाताहै जो इसकथा को कपट तजिकरि कहता सुनताहै ५ और जो निःकाम इसको कहते सुनते और प्रशंसा करते हैं ६ तेतो हे पार्बती इस संसारसागर को गोपदके समान तर जातेहैं सुनो हे भरद्वाज यह सब कथासुन कर हृदयमे अतिही भाई और प्रेम समेत अति सुन्दर बाणी पार्बती महादेव से बोलीं ७ हे नाथ आपकी कृपसे मेरा समस्त सन्देह दूर होगया और रामचन्द्र के चरणों में नवीन प्रेम उत्पन्न हुआ ॥ ८ ॥ दोहा ॥ हे बिश्वनाथ स्वामी आपकी कृपा से मैं कृतकृत्य होगई श्रीरामचन्द्र की दृढभक्ति मेरे हृदयमें उत्पन्न हुई और सब शोक संदेह मेरे दूर होगये । ४६

यह शुभ शंभु उमा संबादा । सुख संपादन शमन बिषादा १
भवभंजन गंजन संदेहा । जन रंजन सज्जन प्रिय एहा २
राम उपासक जेजग माहीं । यहि सम प्रिय तिनके कछुनाहीं ३
रघुपति कृपा यथा मति गावा । मैंयह पावन चरित सुहावा ४
यहि कलिकाल न साधन दूजा । योग यज्ञ जप तप ब्रत पूजा ५
रामहिं सुमिरिय गाइय रामहिं । संतत सुनिय राम गुणग्रामहिं ६
जासु पतित पावन बड़ बाना । गावहि कबि श्रुति संत पुराना ७
ताहिभजिय मन तजि कुटिलाई । रामभजे गति केहिं नहि पाई ८

याज्ञवल्क्य कहतेहैं सुनोहे भरद्वाज यह अति मंगल उमाशंभु संबाद परमानन्द का दाताहै और समस्त बिषादों का नाशकर्ताहै १ भवकहैंजन्म मरण का हर्त्ता और समस्त संदेह निवारक हे श्रोता बक्ताओं का आनन्द दायक है भगवज्जनों का तो अत्यन्त प्यारा है २ और जो राम उपासक इस संसारमें हैं उसको तो हेभरद्वाज इसके समान कुछभी प्यारानहीं है सो आपके पूछनेसे मैंने तुमसे कहा तुमतो सब जानतेही रहे यह आपने अपने संतसुभाव से जीवोंका उपकार किया और मेरेको आनन्द दिया यहसुन कर भरद्वाज ने प्रणाम किया याज्ञवल्क्यने अशीष देकर अपने आश्रमको प्रयानकिया ३ गोसाई तुलसीदास कहते हैं कि केवल श्री रामचन्द्रही की कृपा से मैंने इस परम पावन रामचरित्र यथा मति कहा है ४ इस कारण कि इस कलिकालमें दूसरा कोई भी साधन नहींहै न तो योगहै न यज्ञहै न कोई जपहै न तपहै न ब्रतहै न पूजा

है ५ ताते इनसबका भरोसा छोड़ कर रामही काता स्मरण कीजिये रामहीके गुणगाइये रामही के गुणों को श्रवण कीजिये ६ जिस स्वामी के अति बड़े पतित पावन बाने को समस्त कबि चारो वेद अठारहों पुराण और सब संतगातेहैं ७ उस राम स्वामी को कुटलता छोड़ कर रेमन सदा भजिये देखुतो रामके भजन से किस पतित ने पावनगति नहीं पाई है ॥ ८ ॥

छं० पाईनगतिकेहिंपतितपावनरामभजिसुनुशठमना ।
गणिकाअजामिलब्याधगृद्धगजादिखलतारेघना ॥
आभीरयवनकिरातखसस्वपचादिअतिअघरूपजे ।
कहिनामबारेकतेपिपावनहोहिंरामनमामिते ॥
रघुबंशभूषणचरितयहनरकहहिंसुनहिंजेगावहीं ।
कलिमलमनोमलधोइबिनुश्रमरामधामसिधावहीं ॥
शतपंचचौपाईमनोहरजानिजोनरउरधरै ।
दारुणअबिद्यापंचजनितबिकारश्रीरघुबरहरै ॥

सुनोतो रे महामूढ़ मन श्री रामचन्द्र को भजिकर कौन से पतित ने पावन गति नही पाई है देखो सर्व शास्त्र बिख्यात गणिका अजामिल ब्याध गृद्ध गजेन्द्रादि अनेक पतित राम भजन ने तारे हैं फिरि जिन राम स्वामी के नामोच्चारण से जो आभीर हैं यवन हैं किरातहैं खसिया हैं और स्वपचादिक जो अति नीच हैं तेभी पावन होतेहैं तिन रामस्वामी कोमेराप्रणामहैरघुवंश बिभूषणश्री रामचन्द्रके इसचरित्रको जोमनुष्य कहते हैं सुनते हैं औरजो गान करतेहैं ते कलिके समस्त पापोंको मन के समस्त बिकारों समेत धोइ कर अनायास भगवद्धामको जाते हैं और ५०० पंचशत परम मनोहर चौपाइयोंको अर्थात् १७५ राम जन्मसे लेकर सीता स्वयंबर तक बाल कांड की और ३२५ अयोध्याकांड समस्तकी जो बिस्तारसे बर्णन है उनको जानिकर जो सदा हृदयमें धारण करते हैं उनकी महा दारुण अबिद्याको पंच बिषय जनित समस्त बिकारों समेत श्री रामचन्द्र हरते हैं ॥

छं० सुन्दरसुजानकृपानिधानअनाथपरकरप्रीतिजो ।
सोएकरामअकामहितनिर्बाणप्रदसमआनको ॥
जाकीकृपालवलेशतेमतिमंदतुलसीदासहूं ।
पायोपरमबिश्रामरामसमानप्रभुनाहींकहूं ॥

दो० मोसम दीन न दीन हित तुम समान रघुबीर ।

असि बिचारि रघुबंश मणि हरहु बिषम भव भीर ॥
कामिहिं नारि पियारि जिमि लोभिहिं प्रिय जिमिदाम ।
तिमि रघुनाथ निरंतर प्रिय लागहु मोहिं राम ॥

जो स्वामी परमतो सुन्दर हो और सुजान शिरोमणि हो और कृपासागर हो और अनाथ दीनजनोंपर निष्प्रयोजन प्रीति कर्ता हो सोतो एक राम स्वामीही है जिसको अकाम जनभी चाहते हों और अकाम हित और निर्बाण दायक के समान दूसरा कौन है ॥ हरि तजि भजिये और काहि ॥ नाहिं कोउ रामसोंममता प्रणत पर जाहि ॥ कणक कशिपु बिरंचि को जन कर्म मन अरु बात ॥ सुतहि दुखवत बिधिहि न बरज्यो कालके घर जात । शंभु सेवक जानि जग बहु बार दिये दशसीश ॥ करत राम बिरोधसो सपनेहुं न बर्ज्यो ईश । और देवनकी कहिये कहा स्वार्थहीके मीत काहु कबहुंन राखि लीन्हों शरणगये सभीत ॥ कोन संपतिदेत सेवत लोकहूंयहरीति दास तुलसी दीन पर एक रामही की प्रीति ॥ जिसकी कृपासागर के लव के लेश से मतिमंद तुलसीदास ने भी परम बिश्राम पाया तो यह तो मैं पांव रोपिकर अस्वर कहता हूं कि रामके समान दूसरा स्वामी कोई कहींभी तो नहीं है ॥ सत्यंसत्यंपुन स्सत्यंभुजमुत्थायचोच्यते नवेदाच्चपरंशास्त्रंनदेवःकेशवात्परः ॥

दो० मोसम दीन नदीन हित तुम समान रघुबीर ।
असि बिचारि रघुबंश मणि हरहु बिषम भव भीर ॥
कामिहिं नारि पियारि जिमि लोभिहिं प्रिय जिमि दाम ।
तिमि रघुनाथ निरंतर प्रिय लागहु मोहिं राम ॥ ५० ॥

इसप्रकार इसरामचरित्रमानस को गुसाईं तुलसीदास ने परिपूर्ण किया और इसके सातों कांडोंमें चारोवेद, छहूंशास्त्र, अठारह पुराण, बीशस्मृति, इतिहास, तंत्रोक्तसिद्धांत संमत बासुदेव भगवान् बिष्णुका रामरूपमें परत्वऔर जगत्कारणत्व दीनबत्सलत्व सर्बेश्वरत्व, पतितपावनत्व, अकारणकृपालत्व, सर्बलोक शरण्यत्व दरशाया और अपना हार्दवद्ध जीवोंके उद्धारके निमित्त केवल भगवत्प्रपत्तिही ब्रह्मा, शिव, सनकादिक नारद, बशिष्ठ, बिश्वामित्र, जनक, बाल्मीकि, अत्रि, सुतीक्ष्ण, अगस्त्य, भरद्वाज, याज्ञबल्क्य, लोमस, कागभुशुंडि, शुक, व्यासादि द्वाराप्रत्यक्षकर दिखाई ॥

अब गुसाईंजी अपनेजो दीनतादि संबंध रामस्वामीसे हैं सोदरशाते हुये प्रार्थनाकरते हैं किहे रघुबीर स्वामीमेरे समानतो इस संसारमें दीन नहींहै औरआपके समान कोई दीन हितकारी नहींहै इसीप्रकार औरअनेक संबंधमेरे बिचारिकर हेरघुबंशमणि इस महादुस्सह जन्म जरा मरण भवभीरको हरिये ॥ तूदयालुदीनहौंतूदानिहौंभिखारी ॥ हौं प्रसिद्धपातकीतूपापपुंजहारी ॥ नाथतूअनाथकोअनाथकौनमोसो ॥ मोसमानआरतनहींआरत हरतोसों ॥ ब्रह्मतूहौंजीवतूहैठाकुरहौंचेरो ॥ तातमातुगुरुसखातूसबबिधिहितमेरो ॥ तोहिं

मोहिंनातेअनेकमानियेजोभावै॥ज्यौंत्यौंतुलसीकृपालुचरणशरणपावै ॥ गीतायां ॥ पिता-हमस्यजगतोमाताधातापितामहः वेद्यपबित्रमोंकारः ऋग्सामयजुरेवच॥गतिर्भर्त्ताप्रभुःशाचीनिवासंशरणंसुहृद्प्रभवः प्रलयस्थानंनिदानंबीजमव्ययं ॥ दोहा ॥ कामी को जैसे तन, मन, बचन, धनसेस्त्री प्यारी होतीहै और लोभी को धन प्यारा होताहै ऐसेही हे रघुनाथ स्वामी आपमेरेको निरंतर प्यारे लगो ॥ ५० ॥

यह उत्तरकांड का तीसरा खंडहुआ और ग्रंथभीपरिपूर्णहुआ

॥ श्लोक ॥

यत्पूर्वंप्रभुनाकृतंशुकबिनाश्रीशंभुनादुर्गमं श्रीमद्रामपदाब्जभक्ति मनिशंप्राप्तैवरामायणं मत्वातद्रघुनाथनामनिरतःस्वांतस्तमश्शांत येभाषाबद्धमिदंचकारतुलसीदासस्तथामानसं॥पुण्यंपापहरंसदा शिवकरंबिज्ञानभक्तिप्रदं मायामोहभवापहंसुबिमलंप्रेमांबुपूरंशुभं श्रीमद्रामचरित्रमानसमिदंभक्त्यावगाहंतिये तेसंसारपतंगघोर किरणैर्दह्यंतिनोमानवाः २

॥ इतिरामचरित्रमानसम् ॥

अबश्री गुसाईं तुलसीदासइस रामचरित्रमानसका माहात्मकहतेहैं जिसरामचरित्र मानसको पूर्वअति समर्थ सुकबि श्रीशिवजीने जैसादेव भाषा संस्कृत में कहाहै उसी को श्रीमान् कौशलेंद्र रामचन्द्र की भक्तिका प्राप्ति मानिकर अबमैं रामनामनिरत तुलसी दास अपने अंतःकरणकी शांतिके लिये अति सुगम तैसाही उसमानसको भाषा बद्ध करताहूं १ यह मानसरोवररूप रामचरित्र रामायण अति पावनहै औरमनके मैलपापों को हरताहै सदाकल्याण कर्ताहै बिज्ञानरूपा भक्ति भगवत्प्रपत्तिका दाता है अबिद्या मायाजनित मोह औरजन्मजरामरण का हंताहै अत्यन्त निर्मलहै भगवत्प्रेम जलसे परिपूर्णहै और सुमंगलहै इसको जोमनुष्य प्रेमपूर्वक अवगाहतेहैं तेसंसार रूपी प्रचंड मार्त्तण्डकी दैहिक दैविक भौतिक महाघोर त्रैताप किरणों से नहीं संतप्त होते हैं २

श्रीमतेरामानुजायनमः

मंगलंश्रीनिवासाय रामभद्रायमंगलं मंगलंकौशलेंद्राय रामचंद्रायमंगलं मंगलंभगवान्विष्णुःमंगलंगरुड़-ध्वजःमंगलंपुण्डरीकाक्षः मंगलायतनोहरिः

इति श्री शुकदेव कृत मानस हंस भूषणे रामचरित्र मानसे उत्तरकांडे सप्तमस्सो यानस्समाप्तः ॥

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
प्रेम रत्न	मुतफ़र्क़ात	वैद्यक भाषा	भाषा तत्त्व प्रकाश
युगल विलास	ध्यानेश्वर की कथा	निघण्ट	ज्योतिष
चित्र चन्द्रिका	ज्ञान माला	अमर विनोद	मुहूर्त्त गणपति
बारह मासा बलदेव	गोपी चंद भरतरी	वैद्य जीवन	मुहूर्त्त चक्र दीपिका
मनोहर लहरी	कथा श्री गंगा जी	औषधिसंग्रह कल्प	मुहूर्त्त चिन्तामणि स·
गंगा लहरी	अवध यात्रा	वज्री	मुहूर्त्त मार्त्तण्ड स·
यमुना लहरी	भरतरी गीत	अमृतसागर बड़ा व छो·	मुहूर्त्त दीपक
जगद् विनोद	दानलीला बनमालीला	वैद्य मनोत्सव	बृहज्जातक सटीक
शृंगार बत्तीसी	दोहावली रत्नावली	ज्योतिष भाषा	जातकालङ्कार
राग	गोकर्ण माहात्म्य	जातक चंद्रिका	जातकाभरण
राग प्रकाश	श्री गोपाल सहस्रना·	जातकालंकार	होरा मकरन्द
लावनी	कथा सत्यनारायण स·	दैवज्ञ भरण	संस्कृत उर्दू टी· स·
क़िस्सा वग़ैरह	हनुमान बाहुक	ज्ञान स्वरोदय	मनुस्मृति
नानार्थनौसंग्रहावली	जनक पच्चीसी	रमल सार	विष्णु हारीत
ब्रह्मसार	हरिहर सगुण निर्गु-	इंद्रजाल	महिम्न स्तोत्र
शिव सिंह सरोज	ण पदावली	संस्कृत की पुस्तकें	व्रतार्क
भक्त माल	बनयात्रा	लघुकौमुदी	याज्ञवल्क्य स्मृति
इन्द्र सभा	कायस्थ वर्ण निर्णय	सिद्धान्त चन्द्रिका	संस्कृत भाषा टी·
विक्रम विलास	विहार विंद्रावन	अमरकोष तीनों का· स·	अमर कोश
बैताल पच्चीसी	समर विहार विंद्राव	पञ्च महायज्ञ	याज्ञवल्क्य स्मृति
सिंहासन बत्तीसी	कल्प भाष्य	निर्णय सिन्धु	सन्ध्या पद्धति
पद्मावती खंड	दरसी	सङ्ग्रह शिरोमणि	व्रतार्क
शुक बहत्तरी	अक्षरावली	भगवद्गीता सटीक	भगवद्गीता टी· ह· वं·
बकावली सुमन	स्वयम्बोध	दुर्गा पाठ सटीक	भगवद्गीता टी· ज्ञा· सि·
चहार दरवेश	ज्ञान चालीसी	विष्णु भागवत	गीत गोविंद
क़िस्सा हातम ताई	दोहावली	भविष्योत्तर पुराण	कथा सत्यनारायण
[illegible]या	बाला बोध	अपराध भञ्जन स्तोत्र	परमार्थ सार
क़ि[illegible]ुल सनोवर	विद्यार्थी की प्रथम पु·	दुर्गा स्तोत्र	शार्ङ्ग संहिता
स· रजनी चरित्र	किताब जंत्री	कायस्थ कुल भास्कर	पाराशरी सटीक
रा· सन् का इतिहास	गणित कामधेनु	कायस्थ धर्म निरूपण	शीघ्र बोध सटीक
[illegible]ला हरण	लीलावती	तथा छोटा	लघु जातक
[illegible]ती विलास	पटवारियों की पु· ५ भा·	मथुरा सभा	षट् पञ्चाशिका